

प्रस्तावना.

सर्व दर्शनवालां ब्रह्माचर्य व्रतनी पुष्टि करे हे. परंतु जे प्रकारनी पुष्टि जैनदर्श-नमां प्रदर्शित करेली हे ते पुष्टि अन्यदर्शनी होना प्रंथो अवलोकन करतां जाग्येज दृष्टि पथे आवशे. बाह्यथी ब्रह्मचर्य तथा अञ्चंतरथी ब्रह्मचर्य शुं शुं हे ते अन्यम-तियो जाणवानेज असमर्थ हे. तेवी समजण सर्वे प्रणीत इानना जाणपणा शि-वाय प्राप्त थई शकतीज नथी. चंदराजाना रासमां ब्रह्मचर्य व्रतनी अनुपम पुष्टि हे.

कवि मोहन विजयजी महाराजे आ रासनी जे रचना करी है तेमां पदनी खाखि त्यता, अर्थनी गौरवता. फफफमक विगेरे एवी तो सुंदर रीते बतावेल है के वांच-नारने वारंवार अमुक ढाखो वांचता हुई छत्पन्न थाय है जे जे स्थक्षे जे जे रस-मय रचनानी आवस्यकता खागी ते ते स्थखे ते ते रसनुं पोषण करवामां कोइएण प्रकारनी खामी राखी नथी.

विद्यादृष्टि ना स्था नवा जमानामां कविताना तथा गद्य रचनाना यंथना होंशी-खा वाचक सज्जनो स्था यंथने पोताना हाथमांथी पण वांचता वांचता ठोमता नथी.

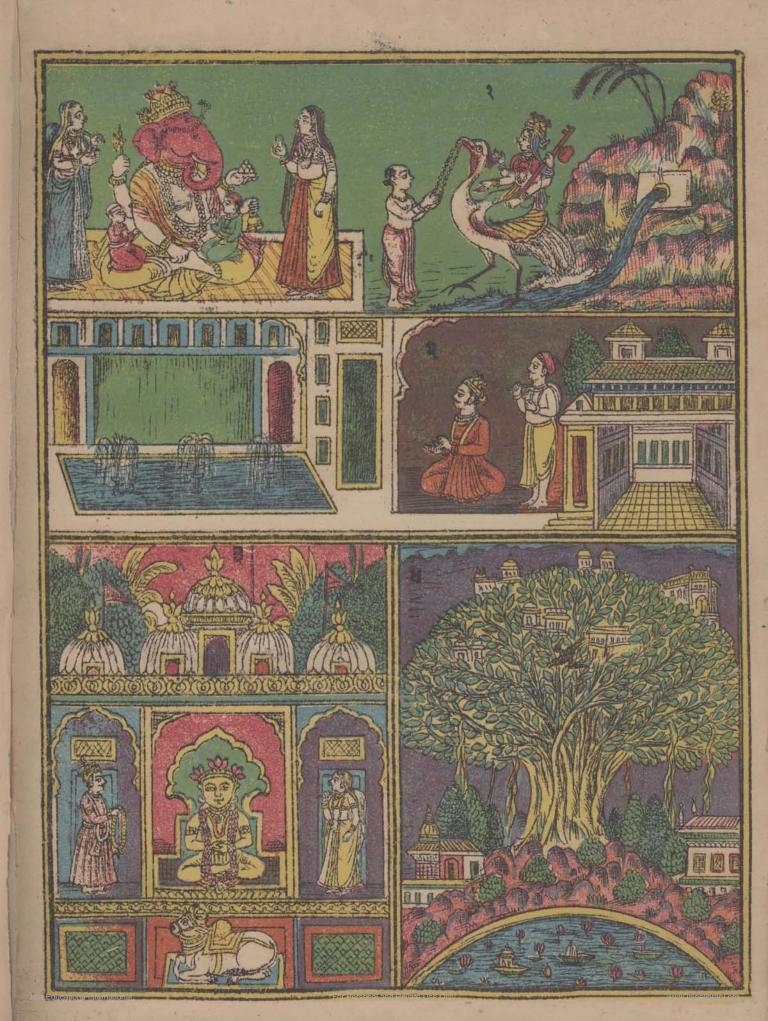
श्रा ग्रंथ जो के ग्रजराती जाषानी पद्य रचनामां रचायेखों हे तो पण तेमां केट-खा एक स्थखे कवितानो जाग वाचक वर्गने किन खागवाथी केटखाएक ग्रहस्थों तरफथी तेनुं सरख ग्रजराती जाषांतर करावी जाषांतर सिहत मूख रास हपावी प्र-सिद्ध करवामा श्रावशे तो वांचनाराजेने बहुज खाजकारक थशे एवी सूचना वाखी मागणी यतां श्रा ग्रंथ श्रमोए संकिप्त ग्रजराती जाषांतर सिहत प्रसिद्ध करेख हे-जेथी वांचक वर्गने खाज मखशे तो श्रमे श्रमारो प्रयास सफख थयो मानीशुं-

या यंथमां मतिदोषथी कांइ पण जूल चूक थइ होय तेने माटे वाचक सज्जनो-नी कमा मागी मिन्नामि जुक्कम चाहीए ठीए.

मुंबई संवत १ए६१ माहा सुद ५ ह्यी. जीमसिंह माणक हा. जाणजी माया.

अनुक्रमंणिका.

नंब	र विषय	पृष्टांक.
₹	प्रथम जल्लास-चंदराजानो जनमः, वीरसेननी दिक्ताः, वीरमतीने विधापार	त
	थइ; राणी ग्रणावलीने जोलववानी वीरमतीनी कपट जाल	
	विमलपुरीमां सासु, वहु, तथा चंदनुं श्रावबुं-	3
হ	द्वितीय बह्वास-चंदराजा श्वने सिंह्ख राजनो विमल पुरीमां मेलाप	T;
	सिंहस युवराज कनकध्वजनुं श्राख्यानः कुक्षि कनकध्वजन	
	बदले चंदराजानुं प्रेमलालही साथे जाडानुं परणेतर; चंदः	उं
	माता तथा पत्नी साथे श्रानापुरी पाढुं श्रावदुं–	६१
Ę	तृतीय ज्ञ्लास-विमलपुरीमां प्रेम लालहीनी दयाजनक अवस्था, चंदन	
	विरद्दथी तेनुं फ़ुरवुं; वीरमतीने चंदना कार्यनी खबर पनर्व	1;
	श्यने तेथी तेणीनुं चंदने कुकडानुं रूप श्रापवुं; कुकडा	तुं
	शिवमाला नटीने ऋर्पण-	१₹४
ีย	चतुर्थ उल्लास-श्री विमसाचल उपर सूर्यकुंडना प्रजावे चंदराजानुं एन	[:
	पुरुश रूप प्राप्त थवुं; वीरमतीनो वध; आजानगरीए चंद्	<u>न</u> ुं
	पुतरागमनः संयम महणः स्रने मोक्त-	श्रर



श्री सिद्धचकाय नमः

अथ चंद राजानो रास प्रारंभः

१८८० ॥ दोहा ॥

प्रथम धराधव तिम प्रथम, तीर्थंकर आदेय ॥ प्रथम जिएंद दिएंद सम, नमो नमो नाजेय ॥ १॥

स्त्रर्थ ॥ प्रश्रम राजा, तेमज प्रथम तीर्थकर स्त्रने प्रथम जिनेंड एवा श्री नाजिराजाना पुत्र रूपजदेवज-गवंत जेर्ड सूर्य समान महातेजस्वीडे तेर्डने वारंवार नमस्कार स्रार्ड ॥ १ ॥

श्रमितकान्ति श्रञ्जत शिखा, शिर जूषित सोछाइ॥ प्रगट्यो पद्मप्रह थकी, सिंधु सलिख प्रवाह॥१॥

श्चर्थ ॥ श्चपरिमित कान्तिवाली, मस्तक छपर सुशोजित एवी जेमनी अद्भुत शिखा, जाणे पद्मब्रह श्वकी सिंधुनदीना जलनो प्रवाह छस्साहश्री प्रगट्यो होय, तेवी देखायछे ॥ २ ॥

क्रुधासही केवल खही, दीधुं प्रथमज मात ॥

जननीवत्सल एमजे, तेजगजात सुजात ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेर्जए क्रुधाने सहनकरी केवलकान प्राप्तकर्यु श्रने जे प्रथम मातानेज श्राप्युं, एवा जननीव-त्सल प्रज्ञ श्रा जगत्मां एकज जत्तम जन्म्याजे ॥ ३ ॥

जासवंश स्थवतंस सम, प्रजुतायुक्त सुजुक्ति ॥ विल्रसि मुकर निवासमे, वरी वधू जे मुक्ति ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ जेमनो वंश श्चान्त्रपण समानने श्चने जेमने प्रजुता साथे उत्तम जोगविद्यासने, तेमन्तां परि-श्वामे श्चारिसा जुवनमां केवद्यक्षान रूप विद्यास पामी मुक्तिरूप स्त्रीने जेर्ज वरेद्याने ॥ ४ ॥

खघु वय इन्चा इक्तुनी, पारण दिनपण तेह ॥ भिष्ट इष्ट प्रजुने सदा, मीठो मंगल एह ॥ ५ ॥

श्चर्य ॥ बाखवयमां प्रजुने शेखडीनी इज्ञा श्रइहती श्चने जे प्रजुने पारणाने दिवसेपण प्राप्तश्रइहती एवी ते मीठी वस्तु छत्तम मंगल रूप होवाश्री प्रजुने प्राप्तश्रतां प्रजु पण मीठो मंगल कहेवायछे ॥ ५ ॥

> गणधर द्वादश र्छागका, धारक सूत्र कदेव ॥ जंगमनाण तणा जलिधि, पुंडरीक प्रणमेव ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ बार श्चंगने धारण करनारा, सूत्रना कथन करनारा श्चने ज्ञानना जंगम समुद्ररूप श्री पुंडरिक मण्धरने प्रणाम करूंढुं ॥ ६ ॥

तुं वरदा तुं शारदा, सचराचर श्राजास ॥ कहेतां शीक्ष संबंधनो, वस मुज मुख श्रावास॥ ७॥ श्रर्थ ॥ हे सरस्वति । तमे वरदान श्रापनारठो श्रने स्थावर जंगम सर्व पदार्थोमां तमे प्रकाशी रह्यांठो ते श्रा शियक्ष संबंधी रासनी रचना करवामां मारा मुख रूप मंदिरमां निवास करो ॥ ९॥

गुरू दरियो जरियो गुणे, तरियो किणविध जाय ॥

जास श्रकथ उपकार जर, प्रणमुं तेहना पाय ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ गुणोथी परिपूर्ण एवो गुरू रूपी समुद्ध कोनाथी तथों जाय, जेमनो उपकारनो समृह कही शकाय तेवोनथी, एवा गुरूना चरणमां हुं प्रणाम करूं हुं ॥ ए ॥

चंद नरिंद तणो रचुं, शीख गुणें सुचरित्र ॥ श्रोता श्रुति जूषण निपुण, परमधर्म सुपवित्र ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हुं चंद राजानुं शियल गुण्यी भूषित एवं उत्तम चरित्र रचुं ढुं, जे चरित्र श्रोतार्चना कानने आजुषण्रूषण् बुद्धिवालुं अने परम धर्म युक्त होवाथी बहुज पवित्रते ॥ ए ॥

एइ कथा रस आगले, मुधा सुधा आयास ॥

ते सांजलजो रस रसिक, कविजन वचन विलास ॥ १०॥

श्चर्य ॥ श्चा कथा रसनी श्चागस श्चमृत मेखववानो प्रयास करवो ते वृथाहे तेथी हे रसमां रसिक एवा पुरूषो कविजननां वचननो विखास सांजलजो ॥ १० ॥

मधुर कथा रचना मधुर, वक्ता मधुर तेम होय ॥ मधुर एतो दीचे मधुरता, जो होय श्रोता कोय ॥ ११॥

अर्थ ॥ जे मधुर कथा होय तेनी रचना मधुर होया तेम वक्तापण मधुर होया पण जो तेमां कोइ श्रोता जित्तम होयतो ते मधुरता पण जत्तम प्रकारनी थायडे ॥ ११ ॥

॥ ढाल पेहेबी ॥ देशी चोपाईनी ॥

जंबुद्धीप जोयण लखजाम, जंबुवृद्ध शोजित उद्दाम ॥

उत्तर कुरु पुर्वोर्कें तेइ, जंबुनदमय श्रतिससनेह्॥ १॥

श्चर्य ॥ जंबू नामना वृक्ष्यी सुशोजित श्चने जत्कट एवो खाख योजनना विस्तारवादो जंबुदीपने, तेना पूर्व श्चर्धजागमां जत्तर कुरूने, जे सघखो जंबुनद नामना सुवर्षश्ची व्याप्तने ॥ १ ॥

> पजमवेदि चिकं दिशि मनोहार, मध्यपिठ वम जोयणविस्तार ॥ कंचो मणिमय जोयणचार, ते जपर जंबु तरूसार ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ तेनी चारे दिशाए मनोहर पद्मवेदिका हे. तेना मध्य पीठ छपर एक योजन विस्तारवाखी वडहे. तेछपर चार योजन ऊंचो एक मिएमय जंबु वृक्ष्हे ॥ २ ॥

मूल वयर कंदे श्रारीठ, खंध वैडूर्य मयी सुगिरिछ ॥
ते तरू खंधे गांज श्राठ, चोविस गांज विम एमपाठ ॥ ३॥

श्चर्य ॥ तेनुं मृत वज्रमिषमयहे, तेनो कंद अरिष्ट मिष्मयहे, तेनां थडीयां वैडूर्य मिष्मयहे. ते वृक्तुं अड आह गानुहों अने चोवीश गानहे एवो पष् कोइ हेकाणे पान हे ॥ ३ ॥ शाखा चार पोहोंसी दो कोश, श्रायत पन्नर कोश उक्कोस ॥ सिद्धायतन विडमने श्रय, देव श्रणाडी रक्कक ऊप ॥ ४॥

अर्थ ॥ तेनी चार शाखर्ज वे वे कोश पोहोली है, वली ते लंबाई छाने कंचाईमां पन्नर कोश प्रमाणहे. तेना आग्र उपर सिद्धायतन है, जेनो रक्षक अणाढी र्ज नामे उग्र देवता है ॥ ॥॥

कंचन शाला प्रशालारूप, रयण वैडूर्य पलास श्वनूप ॥ तवणिक्रमय यश वृत्त विवृद्ध, जंबुनद पहलव सुप्रसिद्ध ॥ ५ ॥

श्रर्थ ॥ तेनी शाखा श्रने प्रशाखा सुवर्णनीके, तेना श्रनुपम पांदडां वैडूर्य रत्नमयके. वसी सुवर्णमय ते वृक्ष यश श्रने वृत्तांतश्री वृद्धि पामेद्योके. तेनां सुवर्णमय पद्मवो प्रसिद्धके ॥ ए ॥

राजत विममें पुण्फ फलपूर, शास्वत जंबुतरू ससनूर ॥ जंबुबहु बीजांवे समीप, यह प्रया तेणे जंबुद्दीप ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ तेनां पुष्प श्चने फलना समूह घणां शोजी रह्यांहे. श्चा प्रमाणे ते जंबुवृक्त शास्त्रत श्चने तेजथी प्रकाशी रहेलहे. तेनी नजीक बीजा श्चनेक जंबु वृक्षोहे. श्चावीरीते जंबुवृक्षशीज तेनी जंबु द्वीप एवी प्रख्याति श्वइ हो ॥ ६ ॥

तिहां पट खंडची जारहवास, श्रष्टमी चंद्र समो सुप्रकाश ॥ केत्र सकलघी उत्तम एप, जिहां सिद्धाचलतीर्घ विशेष ॥ ७ ॥ श्रर्थ ॥ तेमां ठ खंडवालो श्रा जरतकेत्र श्रष्टमीना चंद्र जेवो प्रकाशितके. ते सर्व केत्रोमां उत्तम केत्रके. कारणके त्यां सिद्धाचल नामनं पवित्र तीर्थ सर्वथी विशेषके ॥ ७ ॥

> गंगा सिंधु जिद्दां निम्नगा, चऊद चऊद सहस नदी मगा॥ सामा पचवीश खारयदेश, बीजा खार्य नही खबसेश॥ ए॥

अर्थ ॥ ज्यां गंगा अने सिंधु नामनी नदीर्छ, चौद चौद हजार नदीर्छनी साथे रहेखीर्छ, जेमां साडी पचवीरा आर्य देशर्छ, बाकीनो एक पण आर्यदेश नथी ॥ ए ॥

मध्यखंम ते जारहतणो, पूरवदेश तिहां सोहामणो ॥
रविपण उदय पामे जिणदेश, खहे जिनवर तिहां ज्ञान विशेष ॥ ए॥
श्चर्ष ॥ जरतकेत्रना मध्यखंडमां श्चति सुशोजित पूर्वदेश श्चावेद्योग्ने; जे देशमां सूर्य उदय पामेग्ने श्चने ज्यां श्रीजिनेश्वर भगवंत केवल्रज्ञान प्राप्तकरेग्ने ॥ ए॥

निशिपतितेदेशे संचरे, सोख कला ते तव अनुसरे ॥
गंगापण तिण दिशि परवरी, देशतणो एम अतिशयचरी ॥ १० ॥
अर्थ ॥ ते देशमां ज्यारे चंकमा संचरेबे त्यारे तेने सोख कला प्राप्त व्यायबे. गंगानदी पण ते दिशामां वहेबे. आवीरीते ते देश महत्वतावालो गणायबे ॥ १० ॥

तिहां नगरी एक आजापुरी; श्रिविलवस्तु शोजालंकरी॥ लंकापण शंका मन धरे, श्रवका सलकी न शके खरे॥ ११॥ श्चर्य ॥ ते देशमां श्चाजापुरी नामनी एक नगरी है. जे नगरी सर्व वस्तुर्जनी शोजाथी श्चखंकृतहै. ते नगरीनी शोजापासे खंका पण पोतानी शोजामाटे शंका धारण करेहे श्चने श्चखकापुरी तो ते नगरी पासे छजी पण रहीशके तेमनथी ॥ ११ ॥

चोराशी चौटां विस्तार, जगती सम उत्तंग प्राकार ॥

कत्तम जनगण तेणें संकीर्ण, राजमार्ग बहु मणिय विकीर्ण ॥ ११॥

श्चर्य ॥ ते नगरीमां चोराशी चौटां हे, जगतीना कोट जेवो तेनो ऊंचो कोटहे. तेमां छत्तम मनुष्यो-नीज वस्तीहे श्चने ज्यां राज्यमार्गमां घणां मणिखेनो विस्तारहे ॥ १२ ॥

वर्ण सुवर्णे पूजित सर्व, दाने रविसुत होय श्रगर्व॥

धनपति कठिन मेरू श्रधिकार, ते गुण जनमें नहीय खगार ॥ १३ ॥

श्रर्थ ।। त्यां वसनारा सर्व जत्तमवर्णो सुवर्णश्री प्जितहता. तेर्जना दानश्री दातार कर्ण पण गर्व रहित थाय एम हतुं. सुवर्णनो मेरू धनपति इतां किन्न पण त्यां वसनारा खोकोमां तेवो गुण नहतो ॥ १३ ॥

व्यापारी जारी धनपात्र, नारी निरूपम निर्मेख गात्र॥

देरा देव सेवे बहु जेव, कह्युं पुर वर्णन करि संखेव ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ त्यांना व्यापारी व बहु धनवान इता. स्त्री व निरूपम श्चने निर्मेख गात्रवाली इती श्चने खोको देव देरासरनी बहु प्रकारे सेवा करताहता. श्चाप्रमाणे संदेपमां तेनगरी वर्णवी हे ॥ १४ ॥

राज्यकरे वीरसेन नरेश, जास प्रजाव श्रिरे खहे रूषि वेष ॥

देवल दंनादिक उपमाय, पुरमां एहवो नृपनो न्याय ॥ १५॥

श्चर्य ॥ ते श्चाजापुरीमां वीरसेन नामे राजा राज्य करतो हतो. जे राजानी शक्ति एवी हती के तेना शत्चुर्छ तेना प्रजावश्री मुनिनो वेष खड़ जागी जाताहता. देवाखयना दंडनी ऊपमाजेवो नगरमां राजानो न्याय श्रतो हतो ॥ १५ ॥

वीरमती पटराणी तास, विलसे विषयिक जोग विलास ॥ जेइनो सुखदेखी सुरवंश, जूषण श्रहनिशकरे प्रशंस ॥ १५॥

श्चर्य ॥ राजा वीरसेनने वीरमतीनामनी पटराणीहती, तेनी साथे राजा विषयजोगना विद्यासमां श्चानंद करतो हतो. जेनुं सुख देखीने देवतार्जना वंशमां श्चान्नरूषण रूप एवो इंद्र पण निरंतर तेनी प्रशंसा करतो हतो ॥ १६ ॥

च्रित्र पी ठिका पेहे सीढाल, मोहन विजये कही रसाल ॥

श्रोता सुणजो तजि व्याघात, श्रागल श्रति मीठीहे वात ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ आ चरित्रनी पीठिका रूप अने रिक एवी पेहेलीढाल श्री मोहनविजयजी ए कहेलीढे. हे ! श्रोतार्ज ! हवे विदेपनो त्यागकरी सांजलजो. आगल घणी मीठी वात आवेढे ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

एहवे आव्या नगरीए, सोदागर शिरदार ॥ बहु मोला घोमातणा, करवाने व्यापार ॥ १ ॥ श्चर्य ॥ एकदा ते श्चाजापुरीमां घणां किंमती घोडार्जना न्यापार करवाने जत्तम सोदागर श्चावी चन्या॥१॥ कुक्कन कंधा खडुकना, जलट कटोरा चक्क ॥ गति श्चर्धीक मन पवनथी, जंगम तक्क विपक्क ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ ते घोडार्जना कांध कुकडार्जना जेवाहता. तेजनी श्चांखो विशाख श्चने तीहण्हती. तेजनी गति मन श्चने पवनश्री पण श्चिक हती श्चने तेज जाणे पांखो विनाना चाखता गरूम होयतेवा खागता हता॥२॥

वीज जबुका जेम श्रवल, दृढवपु निक्षय प्रचंड ॥ खुराघात पडतालथी, करे गिरि खंमोखंम ॥ ३॥

श्चर्य ॥ वीजलीना जबकारानी जमे ऋणमां श्वलदय थर जाय तेवा हता. तेमनां शरीर हढ हतां श्चने नालो प्रचंडहती. तेर्च पोतानी खरीचना श्चाघातथी पर्वतना खंडेखंड करे तेवाहता ॥ ३ ॥

तेजी तुरकी हंसला, कंबोजा एराक ॥ पाणीपंथा काबसी, जाति श्रनेक ऊठाक ॥४॥

श्चर्य ॥ तेर्जनी तेर्जी, तुरकी, इंसला, कंबोज, एराक, पाणी पंथा, काबली ऐवी श्चनेक जातिर्ज इती ॥४॥ त्रूपे एवा इयवरा, श्चाठ्या जाण्या जाम ॥

सोदागरने धनदइ, सीधा सघला ताम ॥ ५॥

श्चर्य ॥ श्चावा जत्तम घोडाउँ श्चाव्याने एवी वात राजाना जाणवामां श्चावतां, तेणे सोदायरने इव्य श्चापी, सर्वे घोडा खरीदी खीधा ॥ ५ ॥

> एक तुरंगम तेहमां, श्रति उत्तम श्राकार ॥ रंज्यो जूप लह्यो नही; तेहनो वकाचार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ ते घोमार्जमां एक अति जत्तम आकारवालो घोडो हतो, जेनी जपर राजानो बहुज रागथयो-परंतु ते घोडो विपरीत गतिवालो हतो तेनुं जाए पूणुं राजाने थयुं नही ॥ ६ ॥

साजकरी तेउपरें, नृपति थयो श्रसवार ॥ मृगया हित सेना सहित, गयो गइन कांतार ॥ ९॥

अर्थ ।। एक वखते राजा तेना छपर स्वारी करवा सारू तेने तैयारकरी तेना छपर वेसी मृगया के॰ शिकार करवाने घोर वनमां सेना सहित गयो ।। प्र ।।

॥ ढाल बीजी ॥ चैत्रे चतुर्जुज नाव्या, राधाजी करेरे विचार ॥ एदेशी ॥ श्रयवा सुरति महिनानी देशी ॥

जूमिसर श्रववेसर, कानन फेरे तुखार ॥ वन श्वापद कर्या श्राकुखा, तरू तरू थया श्रसवार ॥ मृग संबर ससकादिक घाले घेरे धंध ॥ परमाधामी वस पड्या, जेम नारकी संबंध ॥ १॥

श्रर्थ ॥ हवे राजार्च वनमां घोडाने फेरवतां फेरवतां वनना शिकार करवा खायक सर्व प्राणीर्जने श्राकुल क्यां, दरेक काडे काडे घोडेस्वारो फरी वहया, जेम परमाधामीर्ज पोताने वशपडेखा ना-रकीर्जने घेरीले, तेम मृग, सावर श्रने ससलां विगेरे प्राणीर्जने तेमणे घेरी खीधा ॥ १ ॥

एक मृग यूथविद्धरो, दीठो तव जूमीश ॥ तुरग कर्यो तेकेडे, हिंसारव सुजगीश ॥ इरिण घणो फाबेचड्यो, ते पकड्यो नविजाय ॥ जस जिवित स्रति तेहने, कोइथीकांइन थाय॥१॥

श्चर्य ॥ तेवामां खगना टोखामांथी एक मृग बुटो पडी गयेखो राजाना देखवामां श्चाब्यो, तेनो शिकार करवाना चरसथी राजाए घोडाने तेनी पाउख इंकार्योः ते खग घणो फाखे चड्यो श्चने राजाथी पकमायो नहीं. ज्यां सुधी श्चायुष्य होय त्यां सुधी कोइथी कांइपण थतुं नथीः ॥ २ ॥

सेना कोइ किहां रही, एकाकी राजान ॥ वक्र शिक्तित ते श्रश्वनी, गति न बही तिखमान ॥ मृग फुर्वी जिम कूदी, जूदी पक्की वाट ॥ तुरंग पयोधित रंगज्युं, रंगकरे बहु घाट ॥ ३॥

अर्थ ॥ राजानी सेना तो क्यांई रही, ते एकलो यह पड़्यो. ते घोडो वक (विपरीत) शिक्षा पाम्यो हतो, तेनी गति तिल्लमात्र पण राजाना जाणवामां आवी नहीं. पेलो मृग तो कुदीने जुदे मार्गे चाह्यो गयो. हवे आ घोनो समुद्रनां मोजानी जेम बहु प्रकारना रंग करतो छ छलवा लाग्यो ॥ ३ ॥

वाग वसे निव श्रावे, व्याकुल श्रयो महिपाल ॥ घोडे शोना मांहे, उलंघी सूमि विशाल ॥ खेंची राख्यो निव रहे, वहे जिम पवन प्रचार ॥ नासा वाजे बहासनी, पग न ठवे छिम सार ॥ ४॥

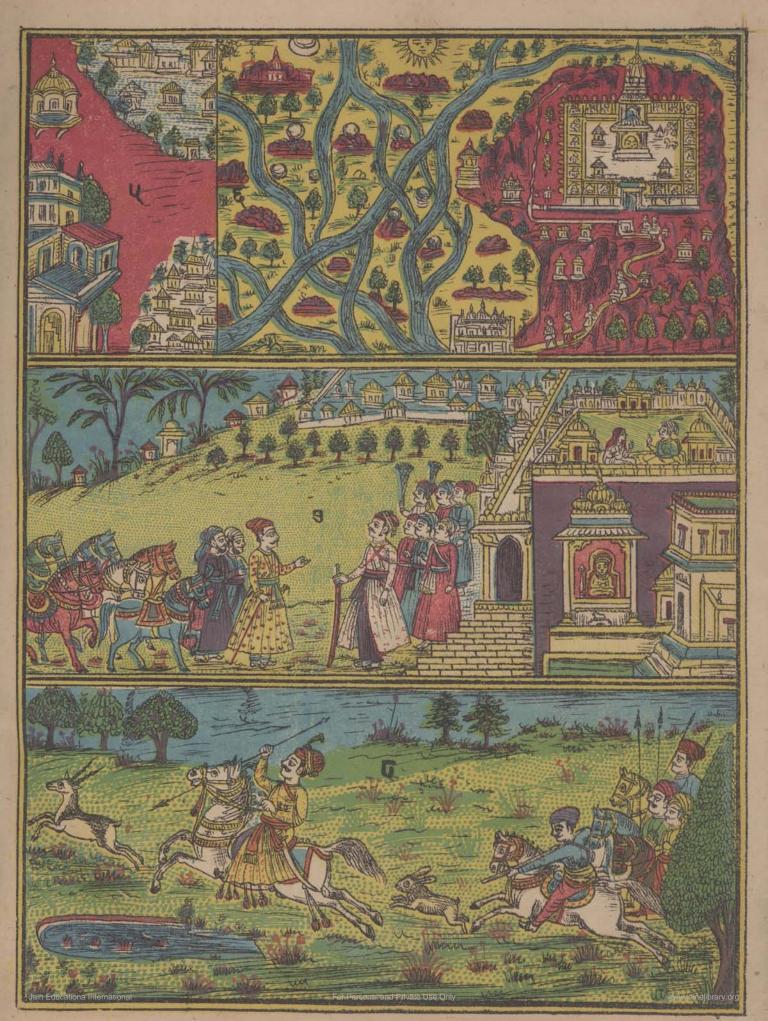
श्रश्री।। ज्यारे ते कोइ ठेकाणे टक्यो नहीं एटखे राजा ज्याकुल यथा लाग्यो ने घोडाए श्रहप कालमां विशास प्रमि ज्ञांघन करी दीधी. राजा घणो खेंची राखे तो पण ते रहेतो नथी. जेम पवन चाले तेम चाहयो जाय हे. नासिकाना श्रवाजश्री गाजता ते श्रश्यना पग भूमि जपर हवता न हता.॥ ॥॥

तुरंगनी दपट श्राने विक्षि, रूपट श्रानिलनी गूढ ॥ वनगिरि तरूवर निरस्त्री, नरवर थयो दिग्मूढ ॥ पुष्करणी हित करणी, धरणीधव तिहां दीछ ॥ वम तरूवर एक गव्हर, छपकंछे उक्किछ ॥ ५ ॥

श्चर्य ॥ ते घोडानी दोड, पवननी गूढ ऊपट श्चने वनिगरिना वृद्योने निरखी राजातो दिग्मूढ गई गयो. श्चागढा जातां राजाए एक दितकारी वापिका दीठी. तेना कांठा ऊपर एक घणुं ऊत्कृष्ट गहन वडनुं वृक्ष जोवामां श्चान्युं ॥ ५ ॥

नृपशोचे हयमोचुं, पोहचुं जो तरू माल ॥ खेंच्यो पोहोचेवा वे घणो, इम श्राकोचे त्रूपाल ॥ मनजाट्यो तरू श्राट्यो, सघलो फाट्यो दाव ॥ धाईने वमवाई, तुरत संबाई राव ॥ ६ ॥

श्चर्य ।। ते जोइ राजाए विचार्यु के, श्चा घोडाने होडी श्चा वडनी शाखाए पोहोचुं श्चने तेने खेंच-वाथी त्यां पोहोंचारो वल्ली मननी धारणा प्रमाणे श्चा वृद्ध श्चान्युं श्चने सघलो दाव बराबर फान्यो है. श्चावुं विचारी राजाए धाइने ते वमनी वडवाई पकडवा हाथ पोचा कर्या ॥ ६ ॥



www.jainelibrary.org

कुंबली बाग पनीजव, तब रेवंत छादेन ।। धंजपरें यह जनो महिपति पाम्यो छाचंन ॥ वक शिक्षित ते जाण्यो, नाण्यो रोष प्रकाश ॥ ताण्यो छाति छापिठाण्यो, फोकट कीध प्रयास ॥ ७॥

श्रर्थ ॥ तत्काख घोमानी खगाम पडीगइ एटखे तरत ते घोडो दंज रहित यह संजनी जेम छजी रह्यो-ते जोइ राजा श्राश्चर्य पामी गयो घोडाने विपरीत शिक्षावाखो जाणी मनमां रोप श्रान्यो नहीं श्रने विचार्युके श्ररे में श्रजाणपणे तेने खेंची ताणी श्रा बधो फोगट प्रयास कर्यो ॥ ७ ॥

सक्रप तवनृप ऊतर्यो, बांध्यो हय वटग्रांहि॥ पाणी पीवा कारणे, पेग्रो पुष्करणी मांहि॥ जलपूरी ससन्री, जूताटंक समान। घटित जटित बहु फटिकना, निवक निवड सोपान॥ ए॥

श्चर्य ॥ पठी राजा दयाद्ध यह नीचे जतयों श्चने ते श्चश्वने वडनी ग्राया नीचे बांध्योः पोते पाणी पी-वाने वापिकानी श्चंदर जतयों. ते वापिका जलथी परिपूर्ण हती. जाणे पृथ्वीरूपी स्त्रीनां श्चाकोटां होव तेवां घडेखां श्चने जनेखां तेनां फटिकनां घाटां पगथीश्चां हतां. ॥ ए ॥

> विमस कमल जस उपरें, परिमस बहुस प्रकार ॥ गुण लीणा खर जीणा, प्रीणा द्विरेफ जंकार ॥ नफरीसम सफरी तिहां, अविर्फार फरीय अनेक ॥ पंथ श्रम मंथर पथिकने, पुठथी करे जसरेक ॥ ए॥

श्चर्य ॥ तेना निर्मल जलनी ऊपर बहु प्रकारनो सुगंध पसरी रह्यो इतो. जेमां गंध गुणमां खीन एवा मधुकरो त्रीणा खरे झंकार करी रह्या इता. बली ते जपर मोटी माठली श्रे श्रेनेक रीते स्फुरणायमान यती इती श्रेन मार्गना श्रमश्री मंद श्रयेखा मुसाफरोना श्रमने पोताना पुंठमाश्री जल सिंचन करती इती।।ए॥

> मंद समीरनें ठंदे, उदित सानंद तरंग ॥ प्रगटेजास प्रसंगयी, श्रंग सुरंग श्रनंग ॥ सीतल ठाया माया, माय सरखी तेदा ॥ निरखी नयणें हरल, नरवर पाम्यो नेह ॥ १०॥

श्चर्य ॥ मंद मंद वाता पवनना योगश्ची ते वाविकाना तरंगो श्चानंद सिंदत छिदत श्वता हता. जेर्जना प्रसंगश्ची श्चंग छपर रंग करतो श्चनंग (कामदेव) प्रगट श्वतो हतो. श्चावी माता जेवी तेनी शितख डा-यानी मायाने नथनश्ची नीरखीने राजा श्चत्यंत प्रसन्न श्रयो ॥ १०॥

विधिपूर्वक जल पीधु, कीधुं मज्जन तेम ॥ जखकीडा तजी बीडा, कीधी पूरण प्रेम॥श्रित श्रानंदे नरींदे, पीधो पद्ममकरंद ॥ तरण चरण कमणादिक, खेक्षे नव नव ढंद ॥ ११ ॥

श्चर्य ।। राजाए विधिपूर्वक जलपान करी तेमां स्नान कर्युः श्रोमीवार खज्जा होमी पूर्ण प्रेमथी जलकीड करी पही श्चित श्चानंद पामी नरपतिए कमलनो मकरंद (रस) लीधो श्चने तरवानी श्चने चरण कमछ विगेरे कीडार्नश्ची नव नव रंगे खेलवा लाग्यो ॥ ११ ॥

पुष्करणी बहुवरणी, शोजावी धरणीश ॥ जखग हिर्या उत्तर्या, पहिर्या वस्त्र जगीश ॥ वाविजोवे नृपहोवे, राजी चित्त अनंत ॥ जाही एक विशाही, तामनिहाही एकंत ॥ १२ ॥

अर्थ ।। ते बहुवर्ष वापिकाने राजाए शोजावी. पठी स्नान वस्त्र छतारीने बीजां वस्त्रो पेहेर्यो राजा चि-समां अनंत पर्षे राजी श्रद्र गयो त्यां आगल एकांतमां एक विशास जाली जोवामां आवी ॥ १२ ॥

कांखी जोवे जाखिका माखिकाविविध सोपान॥नृप तिहां यहने ऊतर्यो,

कर कर वाख प्रधान ॥ श्रागल जातां पातासमां, दीठो वन विस्तार ॥ निरजय नृप वीराप्रणी, सत्वसला सहचार ॥ १३ ॥

श्चर्य ॥ तेजादीने बराबर जोतां विविध पगथीश्चांनी मादा जोवामां श्चावी राजा हाथमां मुख्य खड़ स्व पगथीश्चांनी श्रेणिथी कतयों. त्यांथी श्चागद्व जातां पाताद्वमां एक विस्तारवाद्वं वन जोवामां श्चाव्यं तेमां सत्त्वकेतां बद्ध जेनो सहचर सखा है एवो ते वीरायणी राजा त्यां निर्जय हतो ॥ १३ ॥

धन्या कोइक कन्या, तेहनो स्वर सुणीकान ॥ विस्मय श्रातिपाम्यो तिहां, मन मांहे राजान ॥ ए श्रासराख पाताखमें, एस्यो वन विसवाद॥किम इहां रहे कोइ बाखिका, करि करि करूणा साद॥ १४॥

श्चर्य ॥ त्यां कोइ धन्य कन्यानो स्वरं कानमां सांजली राजा मनमां श्वति विस्मय पाम्योः तेणे विचार्यु के, श्वाचा गहन पातालमां श्वावुं वन क्यांथी ?श्वहीं बालिका कोण हहो. जे करूणाना स्वरं कर्यों करे हे ॥१४॥

> नगन खडग करी चडवडी, श्रांषी मन उपकार ॥ तत्क्षण तिहां जइ ऊपो, शब्दतणे श्रनुसार ॥ वचन तषी रचनायें, पत्रणी बीजी ढाख ॥ मोइन विजये कहे सुषो, श्रागस वात रसास ॥ १५॥

श्चर्य ।। तत्काख राजा नागी तखवार करी मनमां उपकार बुद्धि खावी ते शब्दने श्चनुसारे त्यां जड़ने उन्नो रह्यो. श्चा प्रमाणे वचननी रचनाथी श्री मोहनविजयजी ए बीजी ढाख कही है हवे श्चागख रिसक वात श्चावरों ते श्रवण करो ।। १५ ॥

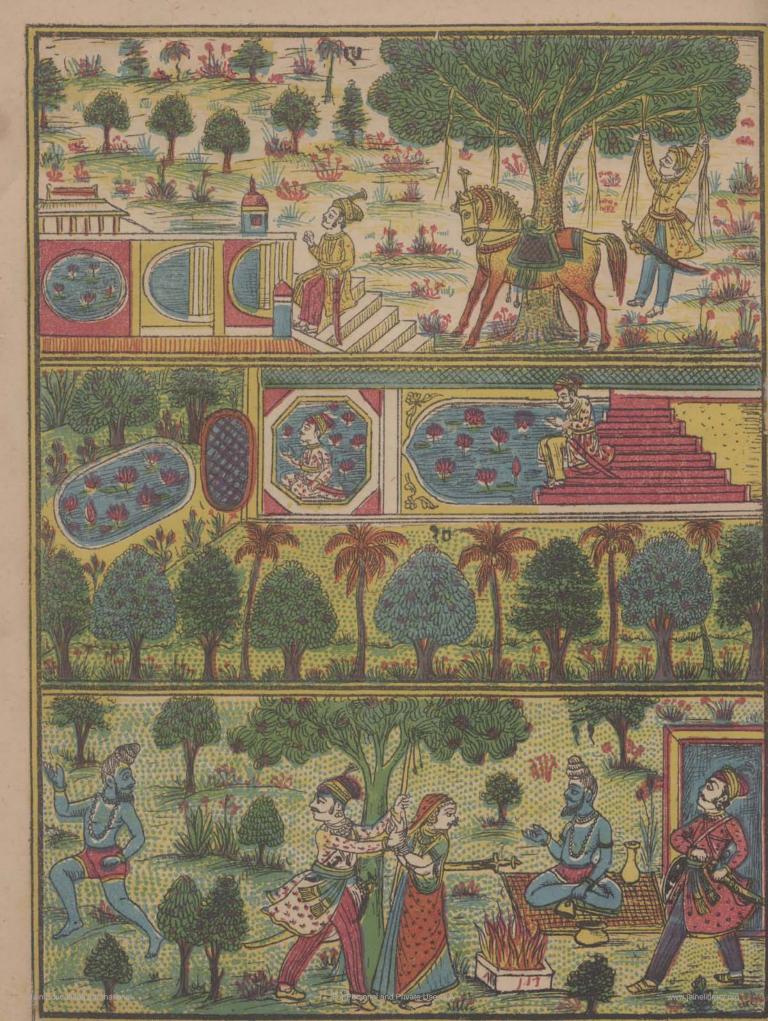
॥ दोहा ॥

हगमुजित योगी सरू, इकतिहां निरखे जूप॥ करजपमाल बहु कुसुम, धूप धूम छति रूप॥१॥

श्चर्य ॥ राजा त्यां गयो तेवामां एक जोगी दृष्टि मीचीने रहेलो जोवामां आव्यो. तेना हाथमां जप माख हती. तेना श्चंग कपर घणां पुष्प, धूप श्चने धूम प्रसरी रह्यां हतां ॥ १ ॥

पनी श्रवे मुख श्रागक्षे, श्रसी उघाडी एक ॥ श्रिक्कंम तिम परजक्षे, नृप जाए्यो श्रविवेक ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेनी आगख एक जघामी तरवार पडी हती. तेनी आगख अग्निनो कुंम प्रज्वली यतो हतो. राजाए आ सर्व तेनो अविवेक जाणी लीघो ॥ २ ॥



निवम बंध बांधी थकी, दीठी कन्या ताम ॥ रूदन करे मुख उचरें, एम वचन श्रजिराम ॥ ३॥

श्रर्थ ॥ तेनी आगल मजबूत बंधथी बांधेली कन्या जोवामां आवी. मुखर्थी पोकारी रूदन करती आ प्रमाणे कत्तम वचन कहेती हती ॥ ३ ॥

कर वाहर आजा नृपति, वनितानी इणवार ॥

विटल जटिल बलि श्रापशे, नहितो श्रम्नि मजार ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ हे श्राजानगरीना राजा, श्रा वखते वनितानी वार कर. नहींतो श्रा च्रष्ट तापस योगी श्रामिमां मारूं बिदान श्रापी देशे ॥ ४॥

नारि वचन एइवुं प्रगट, निसुणी निज श्रनिधान ॥ मुख श्रागल श्रावी नृपति, इक्षुएशुं करी शान ॥ ५ ॥

श्चर्य ॥ ते नारीनुं एवं प्रगट वचन अने तेमां पोतानुं नाम सांजली राजा तेना मुख आगल शान करी इसवेथी आवी ऊजो रह्यो ॥ ए ॥

मिं खड़ ते जटिखने, बोलाव्यो नर राय ॥ मुक्तश्रावे श्रवला तणो, बिल इम किम देवाय ॥ ६॥

श्चर्य ॥ राजाए खड्ग खड्ने तापसने बोलाञ्योः श्चरे ५ छ, मारी श्चागल श्चाम श्चवलानुं विलिदान केम श्चपाय ? ॥ १ ॥

रे! निर्घृण निर्दय नितुर, रे! पापी मतिहीन ॥
मूक मनोहर माननी, रे! परिघह कोपीन ॥ ७॥

श्चर्य ॥ श्चरे! घृणा रहित, श्चरे! निर्दय, श्चरे! कूर, हे! बुद्धिहीन पापी, हे! कोपीननो परिग्रह करनारा तापस! श्चा मनोहर मानिनीने बोडीदे ॥ ७ ॥

या साहमो ठोमीश नहीं, योगी निसुणी एम ॥ नाठो ध्यान तजी इसें, बांठी निज तनु खेम ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ तुं मारी सामो श्चाब्यः हुं तने छोडीशनहीं श्चावां वचन सांजली ते योगी पोताना शरीरनी कुशलता इही ध्यान छोडीने नाशीगयो ॥ ए ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

प्राणी कर्मसमो नही कोय ॥ श्रयवा ॥ देव तणी क्रिक्त जोगवी श्राव्यो ए देशी ॥ गयो जोगी नाठो वन मांहे, नृपे पण केड नकीधी ॥ विद्या साधन केरी तेहनी, सामग्री सिव खीधीरे ॥ सूरिजन सत्त्व समो नही कोइ ॥ देव दानव विद्याधर मृगपति, सत्त्वेसिव वश होई रे॥ सूरिजन० ॥ एश्रांकणी ॥ १॥

दान्व विद्याधर मृगपात, सरवसाव वश हाइ र ॥ सूरिजनण ॥ एश्वाकण। ॥ र॥ श्रा श्र्यं ॥ ते जोगी वनमां नाशी गयो. राजाए तेनी केड न खीधी पण तेनी विधि साधवानी सर्व सामग्री खई खीधी. हे सूरिजन! जगत्मां सत्त्व समान कोइ नथी. देव, दानव, विद्याधर श्राने केसरीसिंह तेर्जपण सत्ताथी वश श्रायत्वे ॥ र ॥

बंधन होमी ते बालानां, बहु आदरे बोलावी ॥

रे नृष्पुत्री निरूपम रूपा, एइने वश केम श्रावीरे ॥ सू० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पठी राजाए ते बालाने बंधन ठोमी बहु आदरश्री बोलावी के, हे श्रानुपम रूपवती सुंदरी, तुं श्रा तापसने वहा केम श्रई? ॥ २ ॥

श्राजानगरीनो जे राजा, ते केम प्रीतम ताहारो ॥

केहनी तुं पुत्री कहे मुज आगल, जय मत आणीश माहारो रे ॥ सू० ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ आजानगरीनो राजा, ते केम तारो प्रीतम थाय? तुं कोनी पुत्री छं ते मारी आगल जणाव मारो जय जरापण राखीश नहीं ॥ ३ ॥

बाला सुकुमाला, वचन रसाला पत्रणे ॥ करी घूंघट निज त्रीतम त्रीढी, योगी त्रय मन न गणे रे ॥ सू० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ते सुकुमार अने विशाल हृदयनी बाखा रसमय वचनो बोखी अने पोतानो पति जाणीने वस्त्रनो घुंघट कर्यो. अने तेणीए मनमां योगीनो जय गुष्यो नहीं ॥ ४॥

श्राजापुरथी पचवीश जोयण, पद्मपुरी श्रति वारू ॥

तिहां नृप पद्मशेखर श्रखवेशर, शुरवीर शिर दारू रे ॥ सू० ॥ ८ ॥ श्रश्रं ॥ श्रजापुरीश्री पचविश योजन श्रति सुंदर एवी पद्मपुरी नामे नगरी हे; तेमां पद्मशेखर नामे राजा हे जे शूरवीर पुरुषोना मस्तकमां शिरोमणि हे ॥ ८ ॥

रतिरूपा तेइनी पटराणी, शारदा रूपसमाणी॥

चंडावति हुं तेहनी पुत्री, जिनधर्मिजग जाणीरे ॥ सू० ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ ते पद्मशेखर राजाने रित जेवी रूपवाखी शारदा नामे राणी हे. तेनी चंद्रावती नामे पुत्री हुं हुं. जे जगत्मां जिनधर्मी तरीके जाणिती हुं ॥ ६ ॥

बालकता गई मुफ तनु प्रगटी, यौवन वय ठकुराई ॥ तातें मुफ निरखी मनमाहे, वरचिंता निरमाईरे ॥ सूणा उ॥

श्रर्थ ॥ मारूं बालक वय वीत्या पढ़ी मारा शरीरमां यौवन वयनी ठकुराई प्रगट यई. एक वखते मने यौवनवती जोइ, पिताना मनमां वरनी चिंता छप्तन्न यई ॥ ७ ॥

एहवे एक निमित्तिये छावि, निमित्त प्रकार्युं एह ॥

श्राजानगरी पति ए पुत्री, केरो कंत गुण गेहरे ॥ सूव ॥ छ ॥

अर्थ ॥ एवामां कोइ एक निमित्तिए आवी मारा पिता पासे निमित्त प्रकारयुं, के आजानगरीनो गुए वान राजा आ तमारी पुत्रीनो पति यहो ॥ ए ॥

मात पिता हूवा श्रित इरियत, नैमित्तिकने सन्मान्यो॥

हुं पण श्रिति रोमांचित हुई, प्रीतमनाम पहिचान्यो रे ॥ सू० ॥ ए ॥ अर्थ ॥ ते सांजलीने मातापिता अत्यंत हर्ष पाम्यां; तेमणे ते निमित्तिश्रानुं घणुं सन्मान कर्युं अने पतिनुं नाम जाणी हुं पण अति रोमांचित थई गई ॥ ए ॥ तिनी जल कीमाने कारण, सिहत सखी हुं श्रावी ॥
एणें तिहां कुटिल जिटे में मुजने, ईंड जादों जरमावी रे ॥ सूण ॥ १० ॥
श्रर्थ ॥ एक वखते हुं सखीनिनी साथे नदीमां जल कीडा करवाने गइ हती, त्यां श्राकपटी तापसे मने
ईंडजालमां जमावी दीधी ॥ १० ॥

दृष्टि बंधन सहूनी करीने, अपहरी मुक सपराणी ॥ पुष्करणी जालीये जतारी, ए वनमांहे आणीरे ॥ सू० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ तेषे सर्वनी दृष्टि बंध करीने मने हरी लीधी. पढी मने वापिकानी जालिमांश्री खतारी श्चा वनमां दाखल करी ॥ ११ ॥

मुजवखते तमे इहां पधार्या, संकटची होमावी ॥

श्रंतरजामी तमे गुण सागर, शी कहूं वात बनावी रे ॥ सू० ॥ ११ ॥ श्रश्च ॥ श्रा वखते तमे श्रहीं पधारी मने संकष्टमांथी बोडावी लीधी. श्रंतर्यामी श्राने गुणना सागर रूप एवा तमारी वार्ता शी कहुं ? ॥ १२ ॥

पोतानी नारी जगारी, तेइमां शो पाम चडावुं ॥

मागण होउं तो कीर्त्ति बोक्षं, जश पडहो वजमायुं रे ॥ सू० ॥ १३ ॥ श्रर्थ ॥ तमे तमारी पोतानी स्त्रीने छगारी तेमां हुं शो पाड मानुं ? जो हुं मागण होखंतो कीर्त्ति बोक्षं श्रमे तमारा यशनो पटह बगडादुं ॥ १३ ॥

जबक्यामें एहवे श्राचरणे, तमे वाखेसर महारा ॥

नहितर इणवेखा कुण छावे, पतिविण करवा वाहाररे ॥ सू०॥ १४॥ अर्थ ॥ में तमने छाचरण छपरथी डेखली खीधा हे, तमे मारा वाहाखा हो, नहींतो पति सिवाय छा वेखाए मने वाहार करवा कोण छावे ? ॥ १४॥

वसुधा पति वीरसेन प्रशंसे, तेइने घणी सनमानी ॥

कींधी मुख श्रागल मन हरणी, जेहुंती नार पोतानीरे ॥ सू०॥ १५॥ श्रश्रं ॥ त्यारपठी राजा वीरसेने प्रशंसा करी तेनुं घणुं सन्मान कर्युं श्रने ते मन हरणी बालाने पोतानी श्रागल करी. जे पोतानी स्त्री हती ॥ १५॥

वन श्रतिक्रमि यईने सोपाने, तेइ उलंघी जाली ॥

पुष्करणीथी बाहेर श्राव्यां, जलथी देह पखाली रे ॥ सूण्॥ १६॥ अर्थ ॥ पत्नी ते पगथीश्रानी श्रेणिथी वन उद्घंघन करी पेली जालिमां थई शरीरने प्रक्षालन करी वापिकामांथी बाहेर श्राव्यां ॥ १६॥

सेनासिव श्रावीने पोहोती, प्रणम्यो पृथिवी पाल ॥ मोहनविजये श्रातिहि रसाली, त्रीजी प्रकाशी ढाल रे ॥ सू० ॥ १७ ॥ श्रर्थ ॥ सेनापित त्यां श्रावी पोहोंच्यो श्रने राजा वीरसेनने प्रणाम कर्योः श्रा प्रमाणे श्री मोहन विजयजीए श्रा त्रीजी ढाल प्रकाश करी. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सुन्नट किति मुकुटने, करजोडी कहे जाम ॥ निव नीकलिये एकला, इम मृग माटे स्वाम ॥ १॥

अर्थ ॥ सर्व सुप्तटो पृथ्वीना मुगटरूप राजाने हाथ जोडीने कहेवा लाग्या के हे स्वामी, आवी रीते मृगने माटे एकला नीकलवुं न जोइड ॥ १ ॥

रतन जतन करि राखवा, तुमने नर शिरताज ॥ सज्जनथी छुर्जन घणा, मोहोटाने महाराज ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे! लोकोना शिरताज महाराज, तमारां जेवां रत्नने तो यतना करीने राखवां जोइए. हे महाराज, मोटा पुरुषोने सज्जनथी दुर्जन घणा होय हे ॥ २ ॥

> धावल पगधी धूंसीयें, उढाए जरतास ॥ जे जेहवा नर तेहने, तेहवा होय प्रयास ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे! राजा, धांबलीथी पग खुंबायहे, श्रने जरीयान वस्त्र उंढाय हे, तेम जेवो माणस होय तेवो तेने प्रयास थायहे ॥ ३ ॥

> मोदुं जाग्य जुजाबली, कुसलें मिलया जूप ॥ पण ए कन्या कोण श्रावे, किह्मयें तास स्वरूप ॥ ४॥

अर्थ ॥ स्त्रमारूं मोटुं जाग्य के जे स्त्राप जुजाबली राजा पाता कुशल-केम प्राप्त स्रयाः स्त्रा कन्या कोण हे, तेनं स्वरूप कहो ॥ ४ ॥

> हय पुष्करणी जाखिका, योगी कन्या खेद ॥ श्रवनीशे श्रनिमेषमें, जाख्यो सघखो जेद ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ राजाए विपरीत शिक्तावाला अश्वनी, वापिकानी, जालीनी, योगीनी अने कन्याना संकष्टनी वधी वात जणावी तत्काल तेनो वधो जेद खुटलो कर्यो ॥ ए ॥

सिव सामंत यया खुराी, नृपनी करे प्रशंस ॥ रुयाग त्याग वाचा श्रचल, धन कत्री श्रवतंस ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ते सांजली बधा सामंतो खुशी श्रया श्चने राजानी प्रशंसा करवा लाग्यो के, दान श्चने वचनश्री श्चचल एवा इत्रीय कुलमां श्चान्त्रभण रूप तमने धन्य है ॥ ६ ॥

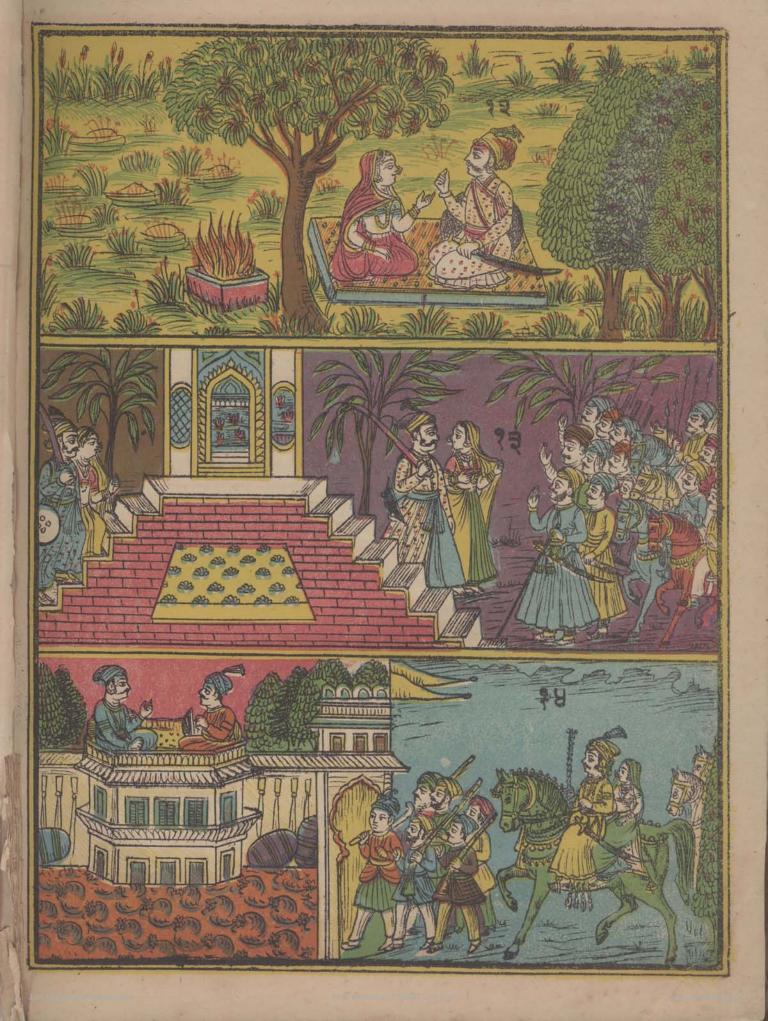
क्षेत्र कन्या सेना सिहत, नृपति श्रयो श्रसवार ॥

श्राव्या निज नगरी तिहां, वरत्या जय जयकार ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ राजा कन्याने खई सेना साथे घोफेखार थयो अने पोतानी नगरीमां आवी पोहोंच्यो. त्यां जय जयकार वरती रह्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोषी ॥

इण सरवरीयारी पाल, आंवा दोय रावलां ललना ॥ ए देशी ॥



खबर करी तत्त्वेव पद्मशेखर जणी ॥ खखना ॥ छे आजापुरी मांहेके पुत्री तुम तणी ॥ खण ॥ वहेखा मखवा काजके राज पधारजो ॥ खण॥ प्रेह्त वचन मन आणिके खाज वधारजो ॥ खण॥ १॥

श्रर्थ ॥ तत्काल ते राजकन्याए पोताना पिता पद्मशेखरने खबर करी के, तमारी पुत्री श्राजानगरीमां है. माटे मलवाने वेला पधारजो, अने मनमां विवेक वचन लावीने श्रापनी लाज वधारजो ॥ १ ॥ तातथी मलवा काज जाणी सुता श्रातुरी ॥ ल० ॥ पद्मपुरीपति तुरत श्राह्यो श्राजापुरी ॥ ल० ॥ श्रादरदे वीरसेन मल्या हेजे घणे ॥ ल० ॥ चंजावती संबंध सयल मांडी कह्यो ॥ ल० ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ पोतानी पुत्री पिताने मलवाने घणी श्चातुर हे एम जाणी पद्मपुरीनो पति पद्मशेखर राजा तत्काल श्चाजापुरीमां श्चाब्योः राजा वीरसेन घणा श्चादरश्री श्चने हेतथी तेने महयो.पही तेणे चंजावतीना संबंधनो सर्व वृत्तांत कही संजलाब्यो ॥ १ ॥

श्रति उठरंगे उठंग धरी निज बालिका ॥ ल० ॥ तातें प्रकाशी प्रगटके हित परनालिका ॥ ल० ॥ पद्मशेखर करजोडी कहे वीरसेनने ॥ ल० ॥ ए मोहोटो उपगारश्रमने तुमे कर्यो ॥ ल० ॥ ३॥

श्रर्थ ॥ पत्नी राजा पद्मशेखरे पोतानी बालिकाने हर्षथी छत्संगमां बेसारी श्रने श्रातिशे श्रंतरना हेतनी परनालिका प्रगट करी बतावी श्रने पत्नी पद्मशेखरे हाथ जोडी वीरसेनने कह्यं के, तमे श्रमारो श्रा मोटो छपकार कर्यों है ॥ ३ ॥

तमगुण अपरंपार के केम जणीजीयें ॥ ख० ॥ ए कन्या शिरताजके राज परिणीजीयें ॥ ख० ॥ धूरथी निमित्त वचनथी एइ तुम गेहनी ॥ ख० ॥ मानी वचन महाराज राखों रीत तेहनी ॥ ख० ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ हे राजा, तमारा श्रपरंपार गुणो हे, तेनो बदलो केवी रीते श्रापी शकाय, पण हे मुगटधारी राजा तमे श्रा कन्याने परणो. श्राजशी श्रा बाला वचनश्रीज तमारी स्त्री श्रई चुकी हे. मारूं वचन स्वीकारी तेनी रीत राखो, एटले तेनी टेक राखों ॥ ॥ ॥

खन्न क्षेवामी शुद्ध तुरत परणावीया ॥ ख० ॥ शशिवदनी मृगनय-णीयें सोहला गावीया ॥ ख० ॥ वीरमतीविण नगरवासी सवि हर-खिया ॥ ख० ॥ वाहला घर ससनेह तणा मेह वरषीया ॥ ख० ॥ ॥ ॥

श्रर्थ ॥ पत्नी राजाए तुरत लग्ननो शुक्र दिवस नक्षी करी ते बंन्नेने परणाव्यां. ते प्रसंगे चंक्र जेवा मु-खवाली मृगनयणी सुंदरीलेए मंगल गीत गायां. मात्र एक राजानी राणी वीरमती शिवाय नगरना बधा लोको हर्षा पाम्या. स्नेही संबधीलेना घरमां स्नेहना मेघ वर्षवा लाग्या ॥ ५ ॥

पद्मशेखर परणावी इम निज श्रंगजा ॥ ख०॥ निज नगरे गयो ताम ते नृपनी क्षेत्र रजा ॥ ख०॥ चंद्रावतीथी वीर नृपति सुख जो-गवे॥ ख०॥ दिन दिन नवके नेहशुं दीहां जो गावे॥ ख०॥६॥ श्चर्य ॥ राजा पद्मरोखर श्चा प्रमाणे पोतानी पुत्रीने परणावी, राजा वीरसेननी रजा खड़ सत्वर पोतानी नगरमां गयो. राजा वीरसेन चंजावतीनी साथे सुख जोगववा खाग्यो. प्रत्येक दिवसे नवा नवा प्रेममां मग्न थवा खाग्यो ॥ ६ ॥

> वीरमित चित्त शोक संबंध वहें सदा ॥ खण्॥ चंडावती मनमांहें न आणे ते कदा ॥ खण्॥ जे जेहने मन प्रेम हुवे जे उपरे॥ ॥ खण्॥ तेहने शोकने खोक कहो कांई करे॥ खण्॥ ॥॥

श्चर्य ॥ राणी वीरमती हमेशां चित्तमां शोक कर्या करती हती, पण चंत्रावतीना मनमां तेनुं कांड् पण खागतुं नहीं. जे जेने मनमां जे छपर प्रेम छपजे,कहो जाइ तेना मनमां शोक शुं करवा होय? ॥॥॥

> चतुर चंडावती चित्त पियुनुं जाखवे ॥ ख०॥ प्रीतम गुण बहुनांति मधुर स्वरें चाखवे ॥ ख०॥ कोइक पुण्यवंत जीवते गर्ने उपनो ॥ ख०॥ चंड सुपनथी सुचित सुत होशे जूपनो ॥ ख०॥ ०॥

श्रर्थ ॥ हमेशां चतुर चंदावती पोताना पितनी मरजी जठावती हती. श्रने प्रियतमना बहु गुणने मधुर स्वरथी गाती हती. एम करतां कोइ पुष्यवंत जीव चंदावतीना गर्जमां श्राव्यो ते वखते राणीने चंद्रनुं स्वप्न श्राब्युं. जेथी राजाने सारा चरित्रवाद्यो पुत्र थशे. ॥ ए ॥

> प्रसव्यो पुत्र रत्न चंडावतीयें तदा ॥ छ० ॥ इष्यों नृपिजम सुमक पामीने संपदा ॥ छ० ॥ दीधा श्ररश्री धनके सयण संतोषीया ॥ छ० ॥ सयणाजणी पकवान थकी श्रति पोषीया ॥ छ० ॥ ए ॥

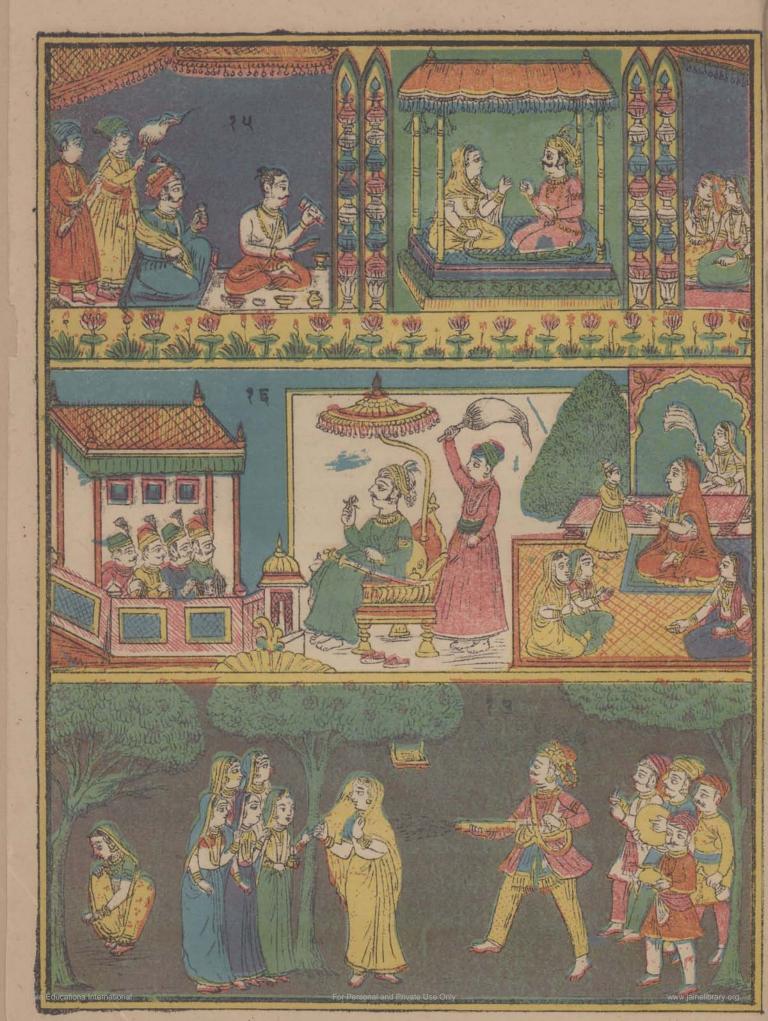
श्चर्य ॥ समय श्चावतां चंडावतीए पुत्रने जन्म श्चाप्यो. जेम निर्धन डव्य पामीने हर्ष पामे तेम राजा हर्ष पाम्योः जत्तम याचकोने दान श्चापी संतोष पमाडया श्चने तेमने पक्वान्न जमाडी पुष्ट कर्यो. ॥ ए ॥

दीधुं बालक नामके चंद्र जयंकरू ॥ ल० ॥ दीपे सुत ससन्रके भूजो दीनकरू ॥ ल० ॥ वृद्धि पामे सुत पांच धावें पालीजतो ॥ ल० ॥ श्रंगुठे पीयूष सुरंगो पीजतो ॥ ल० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ ते पुत्रनुं नाम विजयकारी चंद्र एवं पाड्युं. ते पुत्र तेजना नूरथी जाएे सूर्य होय तेम दीपतो हतो. पांच धावमातार्जथी पाखन थतो ते पुत्र वृद्धि पामतो हतो. श्चने पोताना श्चंगुठामां श्चमृतने पीतो हतो ॥ १०॥

सुत देखी वीरसेन जनम खेखे गणे ॥ ल०॥ श्रित रिखयायत होयते किहानं निव बने ॥ ल०॥ खेल नव नव खेलते बाल पणा घणा ॥ ल०॥ चंडावती वीरसेन जतन राखे घणा ॥ ल०॥ ११॥

अर्थ ॥ ते पुत्रने देखी राजा वीरसेन पोतानां जन्मने क्षेत्रे गणतो हतो. तेना मनमां एवो आनंद आवतो ते कही शकतो नहीं. राजा कुमार बाखपणाना नव नवा खेख खेखतो हतो. चंजावती अने वीरसेन तेनी घणी यतना राखता हता. ॥ ११ ॥



चंदकीरण सम चंड्र कुंवर शोजानिलो ॥ ल० ॥ जीम सुरतरूनो होर वधे दिन दिन जलो ॥ लण्॥ मनमथ सरिखो बालक दीसे फूटरो ॥ ल० ॥ सुललित बचने तेहके बोले परवको ॥ ल० ॥ १२॥ अर्थ ॥ चंद्रनी कलानी जेम शोजतो ते चंद्र कुमार जेम कहप वृक्षनो होड वधे तेम दिन दिन प्रत्ये वधवा लाग्यो. ते बाल कुमार कामदेव जेवो स्वरूपवान् हतो. ते मीठां वचनो बोलबा लाग्यो. ॥ १२ ॥ चंद्रावती निज धर्म मांहे कुशली घणुं ॥ ल० ॥ तास प्रसंगधी जूप तजे हिंसक पणुं ॥ ख०॥ वीरन्पतिने चित्त वसी जिन वासना ॥ ख॰ ॥ शिख्यो जिननी जिनत सुसाधु जपासना ॥ ख॰ ॥ १३ ॥ श्रर्थ ॥ राणी चंद्रावती जैन धर्ममां घणी कुशल हती, तेना प्रसंगश्री राजाए हिंसकपणुं होडी दीधुं. वली तेना चित्तमां जिन धर्मनी वासना वसवाथी ते जिन जिन जिन खने उत्तमसाधुनी उपासना शीख्यो।।१३॥ सत संगति गुण होय जिहां श्रचिरिज किस्यो ॥ ल० ॥ लटथी जमरी होयते संगति फल इस्यो ॥लण। निपजाव्या प्रासाद जला जिन राजना ॥ ल० ॥ वृत धारी बहु रंग संतोष्या साजना ॥ ल० ॥ १४ ॥ श्चर्य ॥ सत्संगधी गुएयाय, तेमां शुं श्राश्चर्य हे ? जुवो ने एखनो कीडो जमरी यई जाय हे. ए संगतिनुं फल है. राजाए जिनराजनो संदर प्रासाद कराव्यो अने वृत धारी हैने साज करी संतोष कर्यो ॥ १४॥ इम करतां सुत चंद्र वर्ष थयो श्राठनो ॥ लण् ॥ सुरगुरु समोवम तेइ कलागुण पाठनो ॥ ल० ॥ चोश्री ढाल रसाल कही प्रीते घणी ॥ खण्॥ इवे मोइन कहे वातते वीरमतीतणी ॥ खण्॥ १५॥ अर्थ ॥ एम करतां चंद्र कुमार आठ वर्षनो ययो, ते कखा गुए पठन करी बृहस्पतिना जेवो ययो. आ प्रमाणेश्रा चोश्री ढाल घणी पीतिश्री कही संजलावी. इवे श्री मोइन विजयजी राणी वीरमतीनी वार्ता कहे छे १ ५

॥ दोहा ॥

क्तुवसंत प्रगटीतिसे, सफल यया सहकार ॥ काम कला कोकिल कहे, जनने वारंवार ॥ १॥

अर्थ ॥ एक वखते वसंत क्रतु प्रगट यई हती, आंबाना वृक्तो सफल थवा लाग्या, कोयल पक्ती लो-कोने वारं वार टहुकाथी काम कला कहेवां लाग्यां. ॥ १ ॥

केसु श्रति कुसुश्रमित थयां, रंग सुरंगा लाल ॥ खेले फाग वसंत नृप, तेहनो लाल गुलाल ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ केसुडानां पुष्पो विकास पामी खास रंग प्रगट करवा लाग्यां. राजा सास गुलासथी फाहगुन वसंत खेसतो हतो ॥ २ ॥

सुमन थइ वनघन प्रजा, मधुनृष श्राव्यो जाणि ॥ फल दल दल लेई जेटणो, स्तवे बिहंगी वाणि ॥ ३॥ अर्थ ॥ वसंत रूपी राजाने आवेखो जाणी घाटी वन खता रूपी प्रजा पुष्पश्री वधावी फल दल रूपी जेट आपवा लागी अने पिक्ष्ठं मधुर वाणीश्री स्तुति करवा लाग्यां ॥ ३ ॥

श्रण घटिता चंपक कुसुम, मुकुलित वृक्त समीप ॥

जाणुं क्रुत राजाजणी, कीधा मंगल दीप ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ वृद्योनी समीप कखीरूपे रहेखां चंपकनां पुष्पो जाए। वसंतरुतु रूपी राजाना। आगख मंगख-दीप कर्या होय तेवा खागता हता ॥ ४ ॥

सपरिवार श्राजानृपति, प्रजा सहित सोहंत ॥

श्चाव्यो वनमां कामवश, रमवा काज वसंत ॥ ८ ॥

शर्त्र्य ॥ स्त्राज्ञानगरीनो राजा वीरसेन कामदेव वश शर्द परिवार साथे प्रजाजन सहित वसंत रमवाने वनमां स्त्राव्यो ॥ ५ ॥

ठांटे केसर ठांटणां, लाल गुखाल सोहंत ॥

सोहे मध्याने गगन, जाणे थयो प्रजात ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वसंत क्रीडामां लाल गुलाल साथे केसरनां ग्रंटणां थवा मांक्यां ते जाणे मध्यान्ह काल ग्रतां प्रजात थयो होय तेम देखावा लाग्युं ॥ ६ ॥

चंद कुमर सेवक सहित, कुसुम थकी क्रीनंत ॥ वीरमतीने देखिने, मन निसनेह धरंत ॥ उ ॥

अर्थ ॥ चंद कुमार सेवकोनी साथे पुष्पक्रीडा करे हे, ते जोइ राखी वीरमती मनमां स्नेह घरे हे ॥ ७ ॥ ॥ ढाल पांचमी ॥

वीठल वालोरे जिमयाजीने लाग्रं पाय एवर आलोरे॥ एदेशी॥ राजा राणी रंगथीरे, खेले अनोपम खेलरे ॥ नवली दीठी नारीयो, तिहां शिश वदनी गजगेल ॥ सुणो जिन प्राणीरे, चंद निरंद संबंध ॥ अतिरस अति रस आणी रे॥ १॥ ए आंकणी ॥

अर्थ ॥ राजा वीरसेन अने राणी वीरमती अनोपम रंगश्री खेले हे, त्यां बीजी गर्जेंद्रना जेवी गतिवाली नवनवी चंद्र वदनी नारीचे पण जोवामां आवे हे. हे जवित्राणी मनमां अतिरस लावी आ चंदराजानो रास सांजलो. ॥ १ ॥

काचित सुत केडें करीरे, जन्नी चंपक ढायरें ॥

श्रांबा मार्जे फुलणां, बांधी बाल हिंडोसे माय ॥ सु०॥ २ ॥

श्चर्य ॥ कोइ माता बालकने केड उपर तेडी चंपक वृक्तनी ग्राया नीचे छन्नी रही हती, कोइ आंबांनी डाल साथे फुलाएं बांधी बालकने हींमोलामां हींचोलती हती ॥ २ ॥

कोइ करधरी निज बालनेरे, जीमे हीयडा साथरे॥ केइ शिलावे हींडाववुं, निज सुतना यही हाथ॥ सु०॥ ३॥ श्चर्य ।। कोइस्त्री पोताना बालकने हाथमां खड़ हृदय साथे प्रेमश्री दबावती हती तो कोइ पोताना बाख पुत्रने हाथ पकडी हींडवाने शीखवती हती ॥ ३॥

रमकडां बहु जातीनारे, सुखडली विल देईरे ॥

रोता राखे बालने, इम तरू तरू नारी केइ ॥ सु० ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ कोइनारी कांडे कांड फरी पोताना बालकने जात जातनां रमककां श्रने वसी सुखडी श्रापी ग्राना राखती इती ॥ ध ॥

स्तन पयपाने पोषतीरे, सुत सुर तरूनो छोम रे ॥

युवती इम वनमें बहु, मनमानां पोहचामे कोड॥ सु०॥ ५॥

श्रर्थ ॥ कोइ युवती पुत्रने कहप वृद्धना छोड जेवो मानी स्तन पानथी पोषती इती. श्रा प्रमाणे खीड वनमां पोत पोताना मनना कोड पूरा करती इती. ॥ ए ॥

देखी वीरमती तदारे, मुख मेखे नीशासरे ॥

वन क्रीडा जूसीगई, थयुं व्याकुल चित्त जदास ॥ सुण ॥ ५ ॥

श्चर्य ॥ आ देखाव जोइ राणी वीरमती मुखम थी निशास नांखवा खागी श्चने वनकीमा जुखी गई. तेनुं चित्त व्याकुल अने उदास थड़ गयुं ॥ ६ ॥

दैवने दे उलंजडोरे, कुंवर न दीधो केम रे॥

सुतिविण हुं शा कामनी, जिम मन विण कारिमो प्रेम ॥ सुष् ॥ ४ ॥ अश्री ॥ ते दैवने उंद्यंजो आपवा द्वागी के, हे दैव ! मने पुत्र केम न आप्यो श जेम मन वगरनो प्रेम होय तेम पुत्र विना हुं शा कामनी ! ॥ ४ ॥

जिम मंदिर दीपक विनारें, जिन निण जिम देहरे ॥ जिम कुसुमनिण वासना, जिम जलनिण जनहों मेह ॥ सुण ॥ ए ॥ ज्ञाननिना जेहनी दयारे, माननिना जिम दानरे ॥

श्चसन जिस्यो दशनो विना, वित कंठविण जिम गान ॥ सु० ॥ ए ॥

श्चर्य ॥ जेम दीपकविना मंदिर, जेम जीवविना देह, जेम सुगंधविना पुष्प, जेम जलवगरनो मेघ, का-निवना जेवि दया, मानविना जेवुं दान, जेम लवणिवना जोजन श्चने जेम कंठविना गायन-तेम पुत्रविना हुं शा कामनी हुं १॥ ए ॥ ए ॥

श्रंगज खेइ उद्वंगमांरे, न रमाड्यो जिए नाररे॥

ते कां सरजी संसारमां, धिक् धिक् तस श्रवतार ॥ सुण ॥ १० ॥ श्रव श्रवतार ॥ सुण ॥ १० ॥ श्रव श्रवतार ॥ के नारीए जत्संगे लई पुत्रने रमाड्यो नथी, ते नारी श्रा संसारमां शा माटे सरजी हे ? तेना श्रवतारने धिकारहे ॥ १० ॥

पुत्रविना शुं कीजीयेरे, जनपद नगर जंडार रे ॥ संयमी पंखी प्राहुणां, कोइ नावे तस स्थागार ॥ सु॰ ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ घणा देश शेहेर के जंडार होयतो पण पुत्र विना ते शा कामना ? जैनै पुत्र न होय तेने घेर संयमी, पद्दी, अने कोइ श्रातिथिपण आवता नथी. ॥ ११ ॥

में कुण कुण पूर्व जवेरे, प्रौढां पातक कीधरे ॥

केसर वरणो नानडो, एवो एके दैव न दीध ॥ सु॰ ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ में पूर्वज्ञवे शां मोटां पाप कर्यां हशे के जेथी केसर जेवा वर्ष वाखो नानकडो एक पुत्र पाष् दैवे दीधो नहीं ॥ १२ ॥

इम कहेती धरती खखेरे, सजड सञ्जुण नयणरे ॥

थया श्राणगमता काननें, निज वािल सखीनां वयण ॥ सु० ॥ १३ ॥ श्रर्थ ॥ श्रा प्रमणे कहेती वीरमती नीचुं जोई जूमि छपर लखवा लागी. तेना सुंदर नेत्रमां जल श्रावी गयां. ते वखते पोतानी वाली सखीनां पण वचन कानने श्राणगमतां श्रई पड्यां. ॥ १३ ॥

पूर्वे तिहां सघली सलीरे, बाई तुमे केम एम रे॥

दीसोठो स्थामण इमणा, केणे इहाव्यां कहो धरीप्रेम ॥ सु० ॥ १४ ॥ श्रर्थ ॥ ते वखते सघडी सखीए मदी तेने पुग्ना खागी के, बाई तमे स्थाम चिंताश्री हुर्वेखा केम दीसो हो ? तमने कोणे हुन्यां हे ते प्रेम धरीने कहो. ॥ १४ ॥

कंत ए काम सहोदरूरे, ए वन खेखे वसंत रे॥ चंद सपत्नी पुत्र ए, तुमे किम दीसो सचिंत॥ सु०॥ १५॥

अर्थ ॥ आ तमारा स्वामी कामदेव जेवा स्वरूपवान् हे, ते आ वनमां वसंत खेली रह्या हे, वली आ तमारी शोकयनो पुत्र चंदकुमार केवो सुंदर हे? ते हतां तमे चिंता वालां केम लागो हो ? ॥ १५॥

पण न जणावे कोइनेरे, वीरमती मन वात रे॥

पूरव पुष्ये स्नाविछ, शुक स्नांबाडाखे सुजात ॥ सु० ॥ १५ ॥ स्रर्थ ॥ राणी वीरमती कोइने स्ना मननी वात जणावतां नस्री. तेवामां पूर्वना पुष्यस्री कोइ शुक पद्मी स्रांबानी डाख जपर स्नावी बेठो ॥ १६ ॥

मोइनविजयें मनोहरूरे, पञ्चणी पांचमी ढालरे॥

श्रोतानिसुएजो सुवटो, कहेरो हवे वचन रसाख ॥ सु० ॥ १९ ॥ श्रश्रे ॥ श्री मोहन विजयजीए श्रा पांचमी मनोहर ढाल कही हे. हवे ते शुक पद्दी जे रसिक वचन कहेरो ते श्रोतार्ड ध्यानथी सांजलो. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

हित श्राणी जाणी घणुं, राणीने दिलगीर ॥ बोस्यो नरवाणी तिहां, श्रांवा डाखे कीर ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ ते शुक पद्दी राणीनुं हितजाणी श्रने तेने घणी दिखगिर देखी श्रांबानी डाखी जपरश्री म-नुष्य वाणी बोह्यो. ॥ १ ॥ रे! सुंदरी रूदती यकी, रंगजंग कर्यें केम ॥

शी चिंता हे कहें मुखे, जाणुं कांइक जेम ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुंदरी तुं रूदन करीने रंगनों जंग केम करे है? तारे शी चिंता है? ते मने कहे, ते कांइक मारा जाणावामां आवे ॥ २ ॥

वीरमती निसुणी वचन, निरखे उंचो जाम ॥

शुक दीवो सोहामणो, वचन रसिलो ताम ॥ ३ ॥

श्चर्य ॥ ते सांज्ञां वीरमतीए छंचुं जोयुं, त्यां रिसक वचन बोखनारो ते सुंदर शुक जोयो ॥ ३॥

नृप प्रेमदा अचरज लही, कहे वचन बहुजांत ॥

शु तुं पूढे पंखिया, मुज मनडानी वात ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ राजप्रमदा वीरमती आश्चर्य पामीने बहु ज्रांतिथी वचन बोलीके, हे !पंखिडा, तुं मारा मननी बात केम पुत्रे हे ? ॥ ४ ॥

फल जक्ती पक्ती लघु, अंबर चारी एक ॥

वनवासी तिर्यंच तुं, कहेवाये अविवेक ॥ ५ ॥

स्त्रर्थ ॥ वली तुं एक फल खानारो, स्त्रने स्त्रोकाशमां जमनारो, एक लघु पद्दी बुं; वली तुं वनमां रहे नार स्त्रविवेकी तिर्यच् पद्दी कहेवाय. ॥ ५ ॥

दुख जांगे जो तुज यकी, तोकोइ कहिये गुह्य ॥

जण जण त्यागल ते कहे, जे कोइ होय खबुध ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जो ताराधी दुःख जागे तेम होय तो हुं मारी गुद्ध वात कहुं. जे कोइ अबुध-अज्ञानी होय ते प्रत्येक जन आगल पोतानी वात कह्या करे हे. ॥ ६ ॥

तव शुक त्रटकीने कहे, राणी किम पोमाय ॥

जे जे पंखीश्री हुवे, ते नरश्री नवि श्राय ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पत्नी शुक पक्तीये ताटकीने कह्यं के, हे ! राणी केम शंका लावे ठे? जे जे काम पंखीथी होय ते माणुसथी थतुं नथी ॥ ७ ॥

> ॥ ढाल वर्ग ॥ ॥ चांदलियानी देशी ॥

कहे राणी रे रे सूडा, एम बोल म बोलो कूना ॥ नरथी पंखी केम रूमारे, रंगीला ॥ तब बिबुध वचन ग्रुक बोले, राणीना श्रु-ति पट खोले ॥ कहो पंखीने कोण तोले रे ॥ रंगीला ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ राणिये कह्यं के,हे शुक, एवं कुमुं बोल नहीं ! माणसथी ते पंखी केम जत्तम होय?ते सांजली शुक एवां विघत्ता जरेखां वचन बोहयों. जे सांजली राणीना श्रवण पट खुली गया तेणे कह्यं के जग-त्मां पहीनां जेवुं कोण है?

दामोदरनो जगमां जडवा, समरथ नहीं कोई तस नडवा ॥ जुड तेहने गरू म हे चडवारे ॥ रंगीला ॥ किव मुख मंमण वर दाई, श्रुति वेद पुराणे गाई ॥ यई सघले हंस वडाई रे ॥ रंगीला ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चा जगत्मां विष्णु जे कोइ वीर नथी, तेने पराजव करवाने कोइ समर्थ नथी, ते विष्णुने चडवाने गरूक पद्दी है, वद्धी कविर्चना मुखना श्चान्तृषण्कप श्चने वरदान श्चापनारी, वेद श्चने पुराणोमां सघले इंसनी वडाइ गणावी है. ॥ २ ॥

एक पंखीडाने काज, मेह्या केइ विहंगम राज, रतनागर आखो वाजरे ॥ रंगीला ॥ थइ हूंती कामातुर नारी, तस सूबटे राखी वारी ॥ शुक बहुतेरी तें शुं न धारीरे ॥ रंगीला ॥ ३ ॥

श्चर्य ॥ एक पद्मीनी खातर कोइ कोइ मोटा पद्मी राजाने क्वाति बाहेर मुकी रलाकरने हराज्यो हती। वसी कामातुर श्रयेक्षी नारीने एक शुक्र पद्मीए वारी हती, ते शुक्र बोहोतेरी शुं नश्री जाणी? ॥ ३ ॥

> वही नल संबंध श्रवधार, थयो दमयंती जरतार ॥ तेतो हंस-तणो उपगार रे ॥ रंगीला ॥ श्रमे एक श्रक्तर जो वाचुं, तिणे जीव दयायें राचुं ॥ कहो ए खोटुं के साचुं रे ॥ रंगीला ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ वली नलराजा दमयंतीनो जर्ता थयो हतो, ते पण एक हंसनो छपकार हतो. तेमज जो श्चमे एक श्रहर वांचीए तो जीव दयाथी राजी थड़ए. कहो ए खोटुं के साचुं ? ॥ ध ॥

पंखी वे श्रागम जाखी, रह्यो पांचमुं गुण वाणुं राखी ॥ तस शास्त्र श्रवे केइ साखी रे ॥ रंगीखा ॥ श्रमे वातो सघसी जाणुं, न्यायें श्रमे श्राप वखाणुं ॥ इव साचुं मानवश्री ताणुं रे ॥ रंगीखा ॥ ८ ॥

श्चर्य ॥ पद्मी श्चागम जाखीने पांचमे गुण ठाणे रह्यो है. तेनी शाख शास्त्रमां पुराय है. तेथी है ! राणी, श्चमे सघली वातो जाणीए, श्चने पोतानी प्रशंसा करीए हीए, ते न्यायेहे हु मनुष्यथी मोटाईने माटे इतथी ताणुं हुं, ते वात साची हे. ॥ ए ॥

ईम निशुणी हर्षिराणी, कहे शुक तुंतो हे प्रमाणी ॥ घणो डा-ह्योने मीठी वाणीरे ॥ रंगीला ॥ मुज प्राण समो तुं जाव्यो,

वखतें तुं इण्वन आठ्यो ॥ एहवो कोणे जणाठ्यो रे ॥ रंगीला ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ आ प्रमाणे सांजली राणी हर्ष पामी बोली के, हे शुक, तुं प्रमाणिक हुं, तेमज घणो काह्यो हुं. तारी वाणी मीठी लागे हे. तुं मने प्राण जेवो वाहालो लागे हे. आ वखते तुं वनमां आब्यो ते तने कोणे बताव्युं ? ॥ ६ ॥

तव शुके इम इम उत्तर जाख्यो, विद्याधरे मुजने जांख्यों ॥ तेणे प्राण-समो करी राख्यों रे ॥ रंगीखा ॥ सोवन पंजरमां रेहेतो, ते खेचर जे जे कहेतो ॥ ते सघखों हं सऊहेतों रे ॥ रंगीखा ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ ते सांज्ञाती शुकपङ्गीए जत्तर आप्यों के एक विद्याधरे मने पकमी आण समान करी राख्यों हतो. हुं सुवर्णना पांजरामां रहेतो हतो, ते विद्याधर जे जे कहेतो ते सघछुं हुं जाएतो हतो. ॥ ९ ॥

> एक दिन विद्याधर तेह, कर धरीने माहरो गेह ॥ गयो मुनिवं दन ससनेह रे ॥ रंगीखा ॥ ऋषि निरखी पातक नीठो, उपदेश कह्यो तेणे मीठो ॥ तव मुजने पंजरमां दीठो रे ॥ रंगीखा ॥ ७॥

श्चर्य ॥ एकदिवसे ते विद्याधर मने हाथमां खई कोइ मुनिने स्नेहथी वंदन करवा गयो मुनिनां दर्शनथी मारां पाप नाझी गयां. मुनिए मधुर उपदेश कर्यो त्यां मने पांजरामां रहेखो दीठो ॥ ए ॥

तिर्यंच् बंधन श्रधिकार, कह्यो विवरी श्रागल श्रनुसार ॥ मुज होमवी कर्यों जपकार रे ॥ रगीला ॥ इहां श्राव्यो हुं रमतो रमतो, केइ वन जप-वन श्रति क्रमतो ॥ वेठो तरू दीठो मन गमतो रे ॥ रंगीला ॥ ए॥

श्चर्य ॥ मुनिए त्रागमशास्त्रने श्चनुसारे तिर्यच्ने बांधवामां केटलुं पाप थाय हे ते श्चिधिकार विस्तारथी जणान्यो, श्चने लपकार करी मने पांजरामांश्री होडावी दीधोः त्यारपत्नी केटलां एक वन तथा लपवनने लक्षंघन करी रमतो रमतो हुं श्वर्ही श्चावी चड्यो. श्चने श्चा वस्ते मन गमतो हुं वृक्त लपर बेहेसो जोवामां श्चान्यो ॥ ए॥

कही तुज श्रागख पोतानी, जे वात हुती कहेवानी ॥ तिणे मुजथी कांई न ढानीरे ॥ रंगीला ॥ रे राणी वाणी सुण माहरी, जुठी नही दें छं छलारी॥कहे चिंता जांजीश हुं तारीरे॥रं०१०॥

श्चर्य ॥ श्चाप्रमाणे जे मारी पोतानी खरी वात कहेवानी हती, ते में तारी श्चागल कही दीधी है. हवे तुं तारी वात माराश्री हानी राखीश नहीं. हे ! राणी, मारी वाणी सांजल हुं जुटुं कहेतो नश्री. जे तारी चिंता हशे, ते हुं जांगी नांखीश ॥ १०॥

तव राणी हृदय विमासी, जाण्यो शुक शास्त्र विखासी ॥
सुत चिंता तास प्रकाशी रे ॥ रंगीखा ॥
मंत्र यंत्र जमीने तुं जाणे, कुण जाण पणुं ते प्रमाणे ॥
जो तुं काम नावे १ण टाणे रे ॥ रंगीखा ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ पत्नी राणी वीरमतीए हृदयमां विचारतां ते शुक्र पद्दीने शास्त्रनो विखासी जाण्यो. श्चने पोतानी जे पुत्रनी इच्छा हती ते तेनी श्चागल प्रगटपणे जणावी कह्यं के, हे! शुक्र, तुं मंत्र, यंत्र, श्चीषध जाणे हे. जो तुं मारा श्चा कार्यमां न श्चावे तो पत्नी तारुं जाणपणुं शा कामनुं!॥ ११॥

दशरावे जे निव दोडे, कहो छुं करीए तिए घोडे ॥ घणो जाए तुं छुक कहे थोडेरे ॥ रंगीला ॥ तुं प्यारो प्राणधी कीर, में मान्यो करीने वीर ॥ तुं मोटो साहस धीर रे ॥ रंगीला ॥११॥ ऋर्ष ॥ ज्यारे वार छावे ते वखते जे घोडो न दोडे तो पठी कहो ते घोडो शा कामनो ! तेम तुं घणो जाण बुं पण थोतुं कहे हे. हे ! कीर, तुं मने प्राणथी पण प्यारो बुं अने में तने वीर-नाई करीने मान्यो हे. वादी तुं मोटो साहसिक अने घीर बुं ॥ १२ ॥

तुज श्रापुं नवसको हार, वसी क्रर कपूर श्राहार ॥ हुं मानीश बहु जपकार रे ॥ रंगीसा ॥ श्राण तुं हवे माणस जसे, कहुं तुजने जावे जोसे ॥ हवे हुं हुं ताहरे खोसे रे ॥ रंगीसा ॥१३॥

श्चर्य ॥ हे ! जाई, तने नवललो हार श्चापीश, वली उत्तम कर्पूरनो श्चाहार करावीश, श्चने हुं तारो बहु उपकार मानीश. माटे हवे तुं मने माणसनी श्चोलमां लाव्य हुं तने जोले जावे कहुं हुं, श्चने हवे हुं तारे खोले छुं ॥ १३ ॥

> शुक जाखे देइ दिखासा, रे राणी मकर विमासा ॥ प्रञ्ज पूरशे ताहरी श्राशा रे ॥ रंगीला ॥ याईश तुज दिशि दाता, तुं हे माहरीधर्मनी माता ॥ चिंता तजधर तुं शातारे ॥ रंगीला ॥ रक्ष

श्रर्थ ॥ शुक दिलासो श्रापी बोह्यो. हे राणी, तुं खेद करीश नहीं, प्रञु तारी श्राश पूर्ण करशे. हुं तने दिशा बतावी सुख दाता श्रईश. तुं मारी धर्मनी माता हे, चिंता होडी दे श्रने हृदयमां शाता धर्य ॥१४॥

कहीं मोहन विजयें ढाल, ए उठी निपट रसाल ॥ तमे सुणजो बाल गोपालरे ॥ रंगीला ॥ जे परछःख जंजन सुरा, ते सघली वातें पूरा ॥ तस प्रगटिया पुण्य श्रंकूरा रे ॥ रंगीला ॥ १५ ॥

श्चर्य ॥ श्चाप्रमाएँ श्रीमोहन विजयजीए रसिक एवी ठठी ढाल कही. ते तमेबाल गोपाल सांभक्षजो जे पुरुषो परछःख जंजन श्चने शूरा हे, तेश्चो सघली वाते पूरा होय हे, श्चने तेमनां पुण्यना श्रंकुरा प्रगटे हे॥१५॥

दोहा ॥

हितवाणी राणी निसुण, शुक कहे तजी संवाद ॥ ए वनमां उत्तर दिशे, श्रवे क्षत्र प्रासाद ॥ १॥

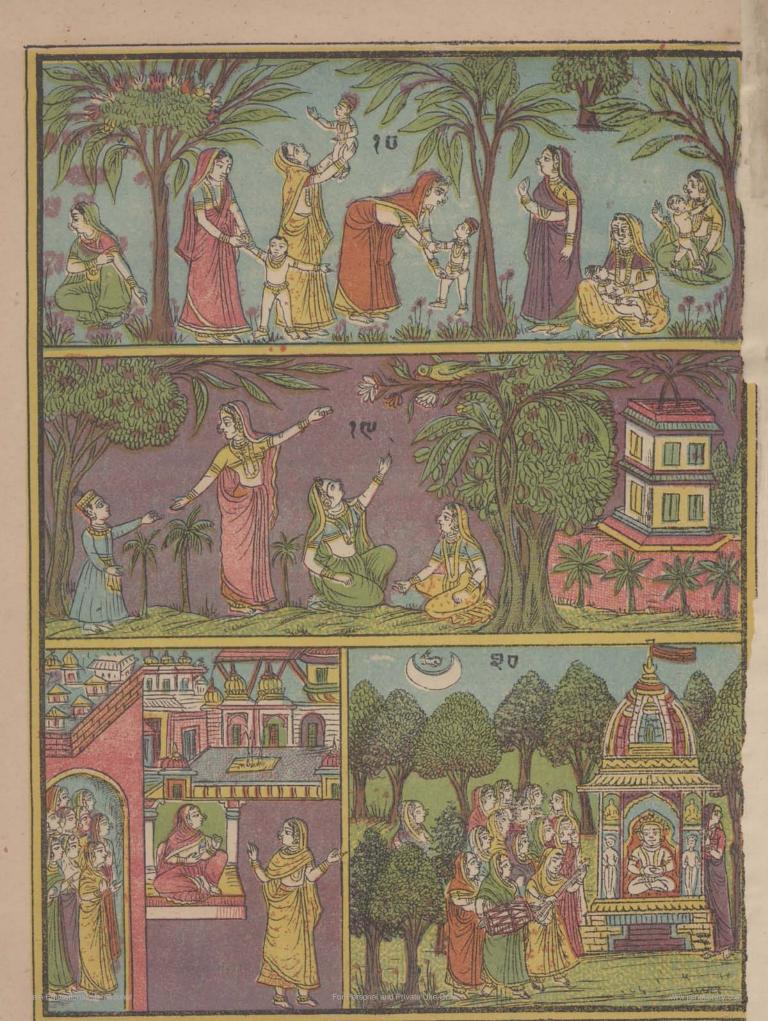
श्चर्य ॥ शुके कह्यं, हे राखी, तुं संवाद ठोडीने तारा हितनी वाणी सांजल. श्चा वनमां जत्तर दिशामां एक रुपज प्रजुनो सुंदर प्रासाद ठे ॥ १ ॥

> तिहां चैत्री पूनिमनिशा, जञ्जव करवा काज ॥ श्रावशे श्रनुपम श्रपठरा, बेई नाटिकनो साज ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ज्यारे चैत्री पूर्णिमानी रात्रि आवशे त्यारे ते प्रासादमां एक अनुपम अप्सरा एक नाटकनो साज लई जत्सव करवाने आवशे ॥ २ ॥

> मुख्या एक तेहमां श्रवे, नीखांबर साम्राज ॥ तास वस्त्रजो कर चढे, तो तुज सीजे काज ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेस्रोमां एक नीखां वस्त्रवाखी मुख्य अप्सरा है. तनुं वस्त्र जो तारे हाथ आवे तो तारुं कार्य सिद्ध आय ॥ ३ ॥



पहिलां चैत्री पुन्यमे, विद्याधरने संग ॥ स्राव्यो हुं ए देहरे, तिणे सविलहुं प्रसंग ॥ ४॥

क्रर्य ॥ पहेखी चैत्री पूर्णिमाए पेखा विद्याधरनी साथे हुं ते प्रासादमां ऋाव्यो हतो, तेथी ऋा प्रसंगजाणुं हुं ॥ ॥।।

रे ! जननी ते रजनीयें, विण सजनी धरि हेत ॥

तिहां जाजे एकाकिनी, जूखीशमां संकेत ॥ ५ ॥

श्रर्थ ॥ हे ! माता, ते रात्रिये सखीर्ज वगर तुं एकखी त्यां प्रेमश्री जाजे. ते संकेत जुलीश नही ॥॥॥

इम कही अंबर मारगें, शुक चाढ्यो गुण गेइ॥

वीरमती तस विरह्शी, नयणे दाख्यो नेह ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ श्चाप्रमाणे कही गुणना स्थानरुप शुक पद्दी श्चाकाश मार्गे चाह्यो. ते वखते राणी वीरमतीए तेना विरहर्थी नेत्रमां स्नेह बताव्यो ॥ ६ ॥

नृप श्रादि नर नागरिक, खेखी फाग प्रकाश ॥

्रपूरमां सबि संध्या समय, श्राव्या निज श्रावास ॥ ७ ॥

श्चर्ग्रा। हवे राजा वीरसेन विगेरे सर्व नगरजनो वसंत खेळीने संध्याकाळे नगरमां पोतपोताना श्चावासमां श्चाव्या.

॥ ढाख सातमी ॥ हमीरियानी देशी ॥

चैत्री पूनम श्रनुक्रमे, श्रावी परम पवित्र ॥ सनेही ॥

श्राव्युं वचन ग्रुक राजनुं, वीरमतीने चित्त ॥ सनेही ॥

स्वारय सहुने वालहो ॥ १ ॥ ए श्रांकणी ॥

श्चर्य ॥ श्चनुक्रमे चैत्रमासनी पवित्र पुनम श्चावी, ते समये वीरमतीने शुकराजनुं वचन मनमां याद श्चान्युं. स्वार्थ सौने व्हाखो होय हे ॥ १ ॥

स्वारथ जगमंगाण ॥ स० ॥

ज्ञ्चम जीव करे घणो, प्रापति करम प्रमाण ॥ स० ॥ स्वा० ॥ १ ॥

श्चर्य।। श्चा जगत्नुं मंडाण स्वार्थ जपर हे, तेने श्चाधारे जीव घणो जद्यम करे, पण कर्मप्रमाणे प्राप्तिशायहे।।२॥

यई संध्या शशि जगम्यो, सोल कलायें शुद्ध ॥ स० ॥

जाणीयें काम नरेशनो, चक्र गगन प्रति बुद्ध ॥ स० स्वा० ॥ ३ ॥

श्चर्य ॥ संध्याकाळ थयो. चंद्र सोख कलाए प्रकाश्यो. जाणे कामदेवरुपी राजानुं श्चाकाशमां जागतुं क्क होय तेवो ते देखावा लाग्यो ॥ ३ ॥

श्चंगतणी रखवालिका, तेह्ने जणावी गेह ॥ स० ॥

वेश परावर्त राणीयें, कीधो श्रधिके नेह ॥ स० ॥ स्वा० ॥॥॥

श्चर्य ॥ ते समये राणी वीरमतीए पोताना श्चरंगनी रक्षण करनारी विश्वासु दासीने घर जलावी श्चिधिक स्रोहची वेशनो फेरफार कर्यो ॥ ४ ॥ एकाकी पुर बाहिरे, श्रावी एकाकी तेह ॥ स० ॥ जोया न होयतो जोयजो, नारी चरित्र ते एह ॥ स० ॥ स्वा० ५ ॥ श्रर्थ ॥ पोते एकती नगरनी बाहेर नीकदी पडी. ते स्त्री चरित्र न जोयुं होय तो जोई खेजो ॥ ९ ॥ जज्वस चंड्रनी चंड्रिका, वनशोजा बहु जंत ॥ स० ॥

चासी वनमो चावमी, ते चतुरा निहचंत ॥ स० ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ श्रश्रं ॥ चंदनी छज्वत चांदनीश्री वननी शोजा घणी प्रकाशती हती, तेमां ए चतुर बाता निर्क्षित श्रभ्रं चातती हती ॥ ६ ॥

दीतुं जिनमंदिर तिहां, सोवन कखश सनूर ॥ स० ॥ श्रम परिहरवा कारणे, जाणीयें बेठो सुर ॥ स० ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ श्रम परिहरवा कारणे, जाणीयें बेठो सुर ॥ स० ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ श्रम श्रवर्णना प्रकाशयी सुशोजित जिन मंदिर जोवामां श्राब्युं ते सुवर्णनो कखश जाणे दिवसना श्रमने जतारवाने सूर्थ बेठो होय तेवो लागतो हतो ॥ ९ ॥

पवने पताका फरहरे, श्राकर्षण करे सान ॥ स० ॥ वीरमती हरषी घणी, सद्य चढी सोपान ॥ स० ॥ स्वा० ॥ छ ॥

श्रर्थ ।। तेनी पताका पवनथी फरकती हती, जाए क्षोकोने बोखाववा श्राकर्पएनी सान करती होय तेम देखाती हती. ते जोई राणी वीरमती घणो हर्प पामी तत्काख तेना पगश्रीश्रां उपरचडी ॥ ०॥

नरत पिता जेट्या जवें, खिल लिखे प्रणम्या पाय ॥ स० ॥

श्रविनयखामि प्रज्ञन्नपणे, रहि केडे हित खाय ॥ स० ॥ स्वा० ॥ ॥

श्चर्य ॥ तेणीए जरत चक्रवर्त्तिना पिता श्री क्रषजदेव प्रजुने जेटी वारंवार चरणमां नमी प्रणाम कर्या. श्राने एक तरफ गुप्त रीते रही श्रविनयने खमावी श्रात्मानुं हित कर्युं ॥ ए ॥

श्रप्तरगण श्राव्यो ईसे, प्रणम्या ऋषत्र जिएंद ॥ स० ॥

ड्रव्य पूजा पहेली करी, शुचितायें सानंद ॥ स० ॥ स्वा० ॥ १० ॥ श्रश्रे ॥ तेवा समयमां पेली श्रप्सराश्रोनो गण श्राब्यो, तेमणे प्रजुने प्रणाम कर्यो प्रथम श्रानंदशी शुचिपणे ड्रक्य पूजा करी ॥ १० ॥

नाव पूजा नवनयहरू, प्रारंत्रे रस हुब्ध ॥ स॰ ॥ श्ररप तरप संगीतथी, नाटक नाचे शुद्ध ॥ स॰ ॥ स्वा॰ ॥ ११ ॥ भी सम्मां वका श्रोवी ने संदर्शकोम संसारत जाने हरनारी जान पत्र श्रासंजी

श्चर्य ॥ पत्नी रसमां खुब्ध थयेखी ते सुंदरीश्चोए संसारना त्रयने इरनारी जाव पूजा श्चारंजी शुद्ध संगीतथी नृत्य करी नाटक करवा मांक्युं ॥ ११ ॥

सारीगम पधनी स्वरे, यंत्र करत जेद कोिक ॥ स० ॥

ताधीधौना गति मृदंगनी, वाजे विकट परमोम ॥ स० ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ खर्थ ॥ सारी गम पधनी ए सात स्वरो साथे वीणायंत्रमां कोटी जेद थवा खाग्यो. तां तां धिक् धिक् प्रमाणे मृदंगनी गति चाखवा खागी ॥ ११ ॥

एक तालो त्रगमो चोतालिज, सुर फागने जेत मान ॥ स० ॥ ब्रह्म, ताला दिक तालनां, विकट बहु श्रिजधान ॥स०॥ स्वा ॥१३॥ नाटकनाची श्रपष्ठरा, श्रमपामी तेणिवार ॥स०॥ वस्त्र जतारी श्रापश्रापणां, गइ पुष्करणी मजार ॥स०॥स्वा० ॥१४॥ श्रश्री ॥ एक ताल, त्रिताल, चोताल, वसंतना सूरनो ताल, अने ब्रह्मताल विगेरे विविध नामवाला ताल प्रवर्त्तवा लाग्या ॥ १३ ॥ ते श्रप्सराञ्चो नाटक नाची बहु श्रम पामी गई, पठी पोत पोतानां वस्तो कतारी त्यां रहेली एक वापिकामां गई॥ १४॥

हसे रमे की का करे, सहु को इ निरबीक ॥स०॥ राणी श्रवसरश्रटक ही, श्रावी वस्न नजीक ॥ स० ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ नी हावस्त्र शुकने कहो, श्राप हर्युं प्रश्नन हित्त ॥ स० ॥ द्वारज डी प्रश्चचरण नुं, शरण प्रस्तुं हढ चित्त ॥ स० ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ श्रावं ॥ ते सर्व श्रप्यसराज हास्य करती निर्जय यई की डा करवा खागी. तेवामां ते श्रवसरनो खाज खेवाने राणी वीरमित तेजना वस्त्र नजीक श्रावी. ॥ १५ ॥ पेखा शुकराजना कहेवा प्रमाणे तेणीए गुप्तरीते नी खबस्त्र हरी खी थुं. पठी प्रश्चना चरण नुं शरण खड़ हढ चित्तथी द्वार पासे जुनी रही. ॥ १६ ॥

कारिज सिद्ध ययुं इवे, चिंते यई उजमाल ॥ स० ॥

मोहनविजयं मनोहरू, पजणी सातमी ढाल ॥ स० ॥ खा० ॥ १७ ॥ श्रर्थ ॥ पोतानुं कार्य सिद्ध ययुं एटले तेनुं चित्त छज्वल यइ गयुं. श्रा प्रमाणे श्री मोहनविजये मनो हर एवी सातमी ढाल कही. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

जल मक्जन करी बाहिरे, श्रावी सघली जाम ॥ नीलांबर मुख्यातणो, तिहां निव दीतुं ताम ॥ १ ॥ निज निज वस्त्रने श्रपष्ठरा, उसली पहिर्यां सर्व ॥ मुख्या वस्त्राविना रही, पूढे शई श्रगर्व ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ सर्व श्रप्सराचे जलमां स्नान करी बाहेर श्रावी, त्यां पेली मुख्य श्रप्सरानुं नीलवस्त्र जोवामां श्राब्युं नहीं. ॥ १ ॥ बीजी श्रप्सराचेए पोत पोतानां वस्त्रो चेलखी पेहेरी लीधां. ते मुख्य श्रप्सरा एकज वस्त्र विनानी रही. ते गर्व ठोडी बीजीजेने पुठवा लागी. ॥ २ ॥

हासामिस नी बुं वसन, जो किणे अपहर्युं होय ॥ आपो बहेनी हुं कहुं, करजोडीने दोय ॥ ३ ॥ सहु समखाईने कहे, हेमुख्यामहाराय ॥ हासुं तुम अंबर तणुं, ते अमथी किम थाय? ॥ ४ ॥

श्रार्थ ॥ ते बोली के, हे! बेनो, कोइए जपहास्यने खातर मारूं नील वस्त्र हरी लीधुं होय तो ते मने श्रापो. हुं तमने बे कर जोडीने विनंति करूं हुं. ॥ ३ ॥ पठी बधी श्रप्सराज्य सोगन खाईने कह्युं के, हे! मुख्या, तारा वस्त्रनी हांसी श्रामाराधी केम थाय ? ॥ ४ ॥

श्चासंगो किणविध हूवे, जास धरीजे श्चास ॥ खोटो मधरो स्वामिनी, श्चम उपर विश्वास ॥ ५ ॥ देवल उघाडुं हतुं, दीधां दीसे द्वार ॥ ए मांहे निश्चे हशे, वस्त्र चोर निरधार ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ हे ! स्वामिनी, जेनी उपर अमे आशा राखीए ठीए एवी अम उपर तमे आ खोटो विश्वास राखो नहीं ॥ ए ॥ आ देवल उघानुं हतुं अने तेनां घार दीधेलां देखाय हे, तेथी तेनी अंदर जरूर कोइ वस्त्रनो चोर हरो. ॥ ६ ॥

> मुख्यादिक सघनी मली, श्रावी देहरा बार ॥ कहे उघानो कवण ठो, मानो श्रम मनुहार ॥ ९ ॥

श्चर्य ॥ पठी मुख्या विगेरे अप्सराचं एकठी मली देहराना घार आगल आवी. तेचंए कहां के, घार खघाको. तमे कोए ठो ? अमारू वचन मान्य करो. ॥ ७ ॥

॥ ढाल श्राठमी ॥ ॥ तुंगियागिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

देव विनता एम पत्रणे, वस्त्र सोंप सनूररे॥ रात थोडी प्रांत थही, जावुं श्रितिह दूररें, देव विनता एम पत्रणे ॥१॥ ए श्रांकणी ॥ विबुध वस्त्र ए काम न श्रावे, नर तणे सही मान रे॥ जाणद्युं श्रम नृत्य निरखी, कर्युं तें ए दान रे ॥दे०॥१॥ श्रिये॥ श्रप्सराचेए कह्युं के, तमे श्रमारूं वस्त्र सोंपो, हवे रात्री थोडी रही, प्रातः श्रई जहे श्रमारे श्रित दूर जावुं हे ॥ १॥ तमे जो माण्स हहाो तो तमने श्रा देवतानुं वस्त्र काम श्रावहो नहीं, ते मानजो. जो तमे वस्त्र श्रापो तो तमे श्रमारूं नृत्य जोइ दान कर्युं एम जाण्ह्युं.॥ १॥

वाथवा कोई काज माटे, हर्युं होये जो एहरे ॥ श्राप पाने श्रमे ता हरो, काज करशुं तेहरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ नरहुन वा नारि हुन, उघाडो ए कपाट रे ॥ वचन ने श्रम तणुं खोटी, करोने स्थामाट रे ? ॥दे०॥४॥ श्रश्री ॥ श्रथवा जो कोइ कार्य माटे ए वस्त्र हर्युं होय तो तमे पानं श्रापे. श्रमे तमारूं कार्य सिद्ध क-रीशुं. ॥ ३ ॥ तमे नर हो के नारी हो, पण श्रा कमाड नघाडो, श्रमे तमने वचन श्रापीए नीए शा माटे वृथा खोटी करो नो ? ॥ ४ ॥

द्वार तत्क्रण वीरमतीयें, उधाड्यां श्रवि दंज रे ॥ श्रपत्नरा तव नारी निरखी, रही पामी श्रचंजरे ॥ दे० ॥ ५ ॥ कहे राणी मधुर वाणी, तो श्रापुं पटकूल रे ॥ काज मारुं करो जो कोइ, श्रइने श्रमुकूल रे ॥दे० ॥६॥ श्रिश्री । ते सांजली वीरमतीए दंज ठोडी तत्काल द्वार उधाड्यां. त्यां श्रप्तराश्रो स्त्रीने जोईने श्राश्रयं पामी गई. ॥ ५ ॥ राणी मधुर वाणी बोली. हे ! देवी , ! जो तमे श्रमुकूल श्रईने मारूं कार्य सिद्ध करो तो हुं तमने ते वस्त्र श्रापुं ॥ ६ ॥

कहे मुख्या श्ररे सजनी, वेकिस्यो तुज काजरे?॥वस्त्र ए हुं पवे क्षेईश, कहो वोमी खाज रे ॥ दे०॥ ७॥ कहे राणी शोक माहरे, तेहने सुत चंद रे ॥माहरे सुत नही तेणें, कर्या एइवा फंदरे॥ दे०॥ ७॥ श्रर्थ॥ मुख्या बोली, श्ररे सजनी, कहे, तारे शुं कार्य वे? जे कार्य होय ते खजा वोडीने कहे, इं



श्वासं जरूर

घार

मारे

क-

य

26-02

वस्त पठी खईशः ॥ ९ ॥ राणी बोखी, मारे एक शोक्य हे, तेने चंद नामे पुत्र हे श्रने मारे पुत्र नथी, तेथी में फंद करेख हे. ॥ ए ॥

वचन शुकने इहां श्रावी, वस्त्र सीधुं एह रे॥ कही मननी वात खोली, टालो चिंता तेहरे ॥ दे० ॥ ए ॥ ताम मुख्या श्रवधि प्रयुंजी, कहे सुण तुं नार रे ॥ नाग्यमां सुत नथी ताहरे, निसुण एह विचार रे ॥ दे०॥ १०॥ श्रर्थ ॥ एक शुकराजना कहेवाथी हुं श्राहीं श्रावी अने श्रा वस्त्र में हरी लीधुं. श्रा प्रमाणे खुद्दी वात कहुं हुं. हवे मारी चिंता दूर करो. ॥ ए ॥ पठी मुख्या श्रप्सराए श्रवधि ज्ञानथी जोईने कहुं के हे ! स्त्री, तारा जाग्यमां पुत्र नथी, श्रा विचार सांजल जे ॥ १०॥

गगन चरणी शत्रु हरणी, विविध करणी रूप रे ॥ नीर तरणी आदि विद्या, दें तुझ अनूप रे ॥ दे० ॥ ११ ॥ राज्य ताहारूं प्रजातारी, चंद पण सुत तुझरे ॥ खेद म धरिश अवर सुतनो, वचन मान तुं मुफ रे ॥ दे० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ हुं तने आकाशमां चालवानी, शत्रुने हरनारी, विविध कार्य करनारी अने जखने तारनारी अनुपम आदि विद्या आपुं ॥ ११ ॥ ए विद्याने प्रजावे राज्य, प्रजा अने चंद कुमार पुत्र तारा थइने रहें। तुं बीजा पुत्रनो खेद करीश नहीं. आ मारूं वचन मानजे ॥ ११ ॥

पण रखे तुं चंदसुतने, कदी देती डुःखरे ॥ राखजे तुं पुत्रनी पेरे, होशे ए-हथी सुखरे ॥ दे० ॥ १३ ॥ त्रूपकांता सुणी एहवुं, श्रतिहि हुई निराश रे ॥ तोहि पण ते यही विद्या, श्रपष्ठराने पास रे ॥ दे० ॥ १४ ॥

् श्रर्थ। पण रखे तुं ते चंद पुत्रने दुःख श्रापती, तुं एने पुत्रनी जेम राखजे, एथी तने सुख यहो.

वस्त्र पातुं तास श्राप्युं, खमीने श्रापराध रे ॥ श्रपष्ठरा गई वस्त्र लेई, श्रानकेनिराबाधरे ॥ दे०॥ १५ ॥ वीरमती हवे लेइ विद्या, रूपन प्रणमी पाय रे ॥ फिर पाठी घरे श्रावी, लह्युं नहीं कांइ रायरे ॥ दे० ॥ १६ ॥

श्रर्थ ॥ पठी श्रपराध खमावी तेणी ए वस्त्र पाइं आप्युं, ते वस्त्र खड़ अप्सरा निराबाधपणे पोताने स्थानके गइ. ॥ १५ ॥ वीरमती विद्या खड़ श्री कपन्न प्रजुना चरणमां नमी पाठी घेर आवी. आवातनी राजाने कांइ पण खबर न पकी. ॥ १६ ॥

थयुं प्रजात दिणंद जग्यो, नृपवधु मन रंग रे ॥ साधवा विद्या तेहमांगी, करी विविध प्रसंग रे ॥ दे० ॥ १७ ॥ थई विधासिक सघली, टली सकल जंजाल रे ॥ मोहन विजयें जली जाली, श्रावमी ए ढाल रे ॥ दे०॥ १०॥

श्चर्य ॥ प्रजात काले ज्यारे सूर्यनो जदय श्रयो, एटले ते राणी मनमां श्चानंद पामी विविध प्रसंग करी ते विद्या साधवा मांडी ॥ १९ ॥ सर्व विद्या सिद्ध श्रद्ध श्चने सर्व जंजाल मटी गई. श्री मोद्दन विजये श्चा आत्रमी रसिक दाल कदी हो. ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

वीरमती विद्यायकी, मदमाती निरबीइ ॥ जिम श्रहि पंखाखो थयो, जिम पाखरीयो सिंइ ॥ १॥ मंत्रादिक योगे करी, कंतादिक वस कीध ॥ श्रतिही वीरमती थई, देश विदेश प्रसिद्ध ॥ १॥

श्रर्थ ॥ श्रा विद्यार्थी राणी वीरमती मदमाती श्रने निर्जय थई. ते पांखवाला सर्पनी जेम तथा पाखरीश्रा सिंहनी जेम देखावा लागी. ॥ १ ॥ तेणे मंत्रादिकना योगथी पति वगेरेने वहा करी लीधा. श्रने एथी ते देश विदेशमां प्रख्यात थइ. ॥ २ ॥

चंद कुंवर मोटो थयो, ताते पंडीत पास ॥ विद्या शीखावी सकस, शस्त्र शास्त्र सुविसास ॥ ३ ॥ जोग योग सक्तण गणित, शब्द काव्य रस ढंद ॥ इत्यादिक मांहे थयो, घणो निपुण सुत चंद ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चर्हीं चंद कुमार मोटो थयो. पिताए तेने पंडितोनी पासेथी शास्त्र श्चने शास्त्रना विद्यास स-हित विद्यार्च शिखावी. ॥ ३ ॥ कुमारचंद जोग, योग, लक्ष्ण, गणित, शब्द, काव्य, रस श्चने उंदमां घणो निपुण थयो. ॥ ४ ॥

गुणशेखर पुत्रीजणी, परणावी बहु प्रेम ॥ नारी नाम गुणावली, श्र-जिनव रंजा जेम ॥ ५ ॥ नित नित नवलां श्राजरण, निति नित नवला वेष ॥ नित नित नवली रित कला, करे चंद सुविशेष ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ गुणशेखर राजानी गुणावखी नामे पुत्री के जे रंजाना जेवी स्वरुपवान हती, तेने घणा प्रेमथी चंद फुमारने परणावी. ॥ ५ ॥ चंद कुमार नित्य नवां नवां श्चाजूषणोथी, नव नवा वेषथी श्वने नव नवी रित कखाथी तेनी साथे विखास करवा खाग्योः ॥ ६ ॥

चंडावतिथी चंदने, चाहे घणो विमात ॥ श्रोता सांजलजो हवे, निपट रसीली वात ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ श्रपर माता वीरमती चंदने तेनी सगीमा चंदावतीथी पण श्रत्यंत चाहती हती. हे ! श्रोतार्ड, हवे श्रागल रसिली वार्त्ता सांजलजो ॥ ७ ॥

॥ ढाख नवमी ॥

नयन हमारे खागनां, जिन तित लागे घाय बहुरियां ॥ ए देशी ॥ वीर नृपति अन्यदासमे, जोवरावे शिर केश ॥ सनेह ॥ चंडावित पासे तिहां, रही एकांत प्रदेश ॥ सनेह ॥ वी० ॥ १ ॥ जले चिकुर करी कांकसी, सींचे तेल फुखेल ॥ स० ॥ शोहे राणीनी आंगुलि, कसवटी कंचन रेह ॥ स० ॥ १ ॥ अर्थ ॥ एक समे वीरराजा ऐकांतमां स्नेहशी पोताना मसकना केश चंडावतीती पासे जोवरावतो हतो ॥ १ ॥ कांसकीश्री तेना बाल चोली तेमां फुलेल सिंचन करती हती. ते वलते सुवर्ण रंगनी प्रजावाली राणीनी आंगली घणी सुंदर लागती हती. ॥ १ ॥

दीतुं पति नृप मस्तकें, उज्वस जेम शशि रेख ॥ स० ॥ राषी वदन केरव परें, संकोचाणुं विशेष ॥ स० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चंडावित कहे कंतने, प्रीतम प्रगट्यो इत ॥ स० ॥ तुम जयपण न गण्यो किशो, मोटो खोटो धूत ॥ स० ॥ वी० ॥ ४ ॥ श्रर्थ ॥ वात जेततां राजाना मस्तकमां चंड जेवं उज्वस एक पति जोवामां श्राव्युं. ते जोई राषीनुं मुख कमसनी जेम विशेष संकोच पामी गयुं. ॥ ३ ॥ चंडावतीए पोताना स्वामीने कह्यं के, हे प्रियतम एक दूत प्रगट थयो, ते मोटा धूतारा दूते तमारा जयने पण गण्यो नहीं ॥ ४ ॥

तुमथी श्रिर वार्या रह्या, पण एक न रह्यो एह ॥ स० ॥ ईम निसुणि राजा कहे, इहा कुणा इत वे तेह ॥ स० ॥ वी० ॥ ए ॥ ते किम श्रावे श्रंते वरे, उद्यंघिश्राणा वाम ॥स०॥ एहने श्रित देवं सजा, ते एकवार देखाम॥स०॥वी०॥६॥

श्रर्थ ॥ हे ! राजा, तमाराथी शत्रुचं वार्या रह्या हता, पण श्रा एक दूत वार्यो रह्यो नहीं. ते सांजली राजाए कहां, श्रहीं कोण दूत श्राच्यो हे ? ॥ ५ ॥ ते दूत मारी श्राका उल्लंघीने श्रंतःपुरमां शीरीते श्रावे ? तेने बताच्य, हुं सज्जा करूं. ॥ ६ ॥

जोय नृपति श्रारहुं परूं, दूत न दीनो ताम॥स०॥तव राणी कहे रायने, श्रा-कुल केम हुश्रा श्राम॥स०॥वी०॥॥॥ श्रंदर किम श्रावी शके, दूत धरावे देह ॥॥ स०॥ श्राव्यो दूत जरा तणो, धवल पत्नी शिर एह ॥स०॥वी०॥७॥

श्चर्य ॥ राजा श्चाम तेम जोवा लाग्या, पण दूतने दीठो नहीं, त्यारे राणीए कहां, श्चाम श्चाकुल व्या-कुल केम थार्च हो ? ॥ ७ ॥ जे दूत देह धारी होय ते श्चंदर केम श्चावी शके ? पण श्चा तो जरावस्थानो दूत मस्तकमां पिलश्चा रूपे श्चाब्यो हो ॥ ए ॥

निसुणी रायने ऊतयों, क्रोध चड्यो हतो जेम ॥ स० ॥ श्वी खरी जाणी जरा, एहवे श्रनोपम देह ॥ स० वी० ॥ ए ॥ बाख्यो काम सदाशिवें, लोक कहे हे एम ॥ स० ॥ तेम बाली नहीं किम जरा, शोच न होतो जेम ॥ स०॥ वी०॥१०॥

श्चर्य ॥ ते सांजली राजाने जे कोध चड्यो हतो, ते जतरी गयो. श्चने श्चावा श्चनुपम देहमां जरावस्था श्चावी, ते खरी रीते जाणी लीधी. ॥ ए ॥ लोको कहे हे के, शंकरे कामदेवने बाली नांख्यो, पण श्चा ज-, रावस्थाने केम न बाली, के जेशी कोश्ने शोक न श्चातः ॥ १० ॥

रजकवधूसम ए जरा, झ्यामता तजि करे श्वेत ॥ स०॥ राजन कहे निज चित्तने, रे रे चेतन चेत ॥ स०॥ वी०॥ ११ ॥ बाह्य प्रकाश जरा करे, जीतर न कर तुं केम ॥ स०॥ राज्य नरक दायक सदा, त्यां किम मुंज्यो एम ॥ स०॥वी०॥ ११॥

श्रर्थ ॥ श्रा जरावस्था धोबीनी स्त्रीना जेवी हे के जे स्थामता त्यजीने श्वेत करे हे राजा पोताना चित्तने कहे हे के, हे चेतन ! तुं चेती क्षे. ॥ ११ ॥ हे ! चेतन ! श्रा जरावस्थाबाहरनो प्रकाश करे हे, तुं श्रंतरनो प्रकाश केम करतुं नश्री ! राज्य हमेशां नरक श्रापनारू हे, तेमां तुं केम मोह पामी रहे हे शारश। रे ! श्रातम ! करहो तुने, परमात्म गुण श्रंश ॥स०॥ गुण ए जोय जरा तणा, का-गजणी करे हंस ॥ स०॥ वी० ॥ १३ ॥ कारिका नित्य तणी जरा, श्राणा एहनी श्रखंम ॥ स० ॥ दंत सखा रसना तणा, तसद्ये पातन दंड ॥ स० ॥ वी० ॥ १४ ॥ श्रश्चे ॥ श्ररे ! श्रात्मा, तने परमात्मानो श्रंश गुण करहो. श्रने जरावस्थानो गुण तो कागडाने जेम हंस गुण करे तेवो हे. ॥१३॥ श्रा जरावस्थानी श्राङ्का श्रखंडणे प्रवर्त्ते हे, तेनी श्राङ्का जिन्हाना सखारूप एवा दांतने पाडी देवानो दंड श्रापे हे. ॥ १४ ॥

पिलत ए खड़ जरा तणुं, काम सुजट हणनार ॥ स० ॥ तो चतुरा तजिने हवे, खेठं संजम जार ॥ स० ॥ वी० ॥ १५ ॥ नृप चंडावितने कहे, थाशुं अमे अणागार ॥ स० ॥ जोग जोगवतां आवित्र नृपति तणो ठद्गार ॥ स० ॥ वी० ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ आ माथानुं पिल हे ते कामदेव रूपी सुजटने हणवानुं खड़ हे, तो हे ! चतुरा स्त्री, हवे आ वधुं होडी दई संयमनो जार ग्रहण करशुं ॥ १५ ॥ राजाए राणी चंडावतीने कहां के, अमेतो हवे अणागार अर्जुः अने राजाने आ उद्गार जोग जोगवतां आव्यो. ॥ १६ ॥

विषयने वचने राणीए, जोबव्यो घणोहि जूपाल ॥ स० ॥

नि जोखवाणों मोहन कहे, नवसी नवमी ढाल ॥ स० ॥ वी० ॥ १७ ॥ ऋर्थ ॥ राषीए विषयनां वचनथी राजाने घणों खोजाव्यो, पण ते खोजायो नहीं. श्री मोहनविजये आ नवसी नवमी ढाल कही हो. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

वीरमती चंडावती, घणो समजावे कंत ॥ वचन न माने नारिनां, ययो संयमी एकंत ॥ १ ॥ पीयुने कहे चंडावती, हुं पण क्षेड्श दीख ॥ वीरमतीने चंद सुत, सोंप्यो देई शीख ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ राणी वीरमती श्चने चंदावती राजाने घणुं समजाववा खागी तो पण राजाए तेमनुं वचन न मान्युं श्चने एकांत संयमी श्रवा तत्पर श्रयो. ॥ १ ॥ चंदावती राणीए पोताना स्वामीने कहुं के हुं पण तमारी साथे दीहा खईश, एम कही पोताना पुत्र चंदने शिखामण श्चापी वीरमतीने सोंप्यो. ॥ १ ॥

राज्य समर्प्युं चंदने, खोखे दीध विमात ॥ वीरसेन चंडावती, यहाो संयम विख्यात ॥ ३ ॥ मुनि सुव्रत जिन राजाने, वारे के वल नाण ॥ राजक्षी चंडावती, पाम्यां पद निरवाण ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चपर माता वीरमतीए चंदने खोखे खई राज्य श्चर्पण कर्युं. श्चने वीरसेन श्चने चंडावतीए प्रख्यात पणे संयम प्रहण कर्यो. ॥ ३ ॥ ते वखते मुनि सुव्रत स्वामीनो वारो चाखतो हतो; राजर्षि वीरसेन श्चने साध्वी चंद्रावती केवल ज्ञान पामी निर्वाण पदने प्राप्त श्चरां. ॥ ४ ॥

> वीरनृपति चंडावित, तास तणा श्रवदात ॥ कह्या करी संक्रेपश्री, सुगुण सुणी इरषात ॥५॥ वीरमतीने चंदनुं, सुणो चरित्र चित्त खाय ॥ पण निसुणी करता रखे, श्रंध श्रारसी न्याय ॥ ६ ॥



श्रर्थ ॥ श्रा प्रमाणे वीरसेन श्रने चंद्रावतीनुं ऊज्ज्वल वृत्तांत संदेपश्री कह्यं, जे सांजली सद्गुणी पुरुष हर्ष पामे हे. ॥ ५ ॥ इवे वीरमती श्रने चंदनुं चित्र ध्यान दइ सांजलो. पण ते सांजलीने रखे श्रांधला पासे श्रारसी जेवुं करता नहीं. ॥ ६ ॥

> चंदनरिंद ग्रणावित, वीरमित जे विमाय ॥ पहनी जिम दुई कथा, ते तिमहिज कहेवाय ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ राजा चंद, राणी गुणावली अने अपर माता वीरमती, तेलंनी जे कथा बनी ते यथार्थ कहेवामां आवशे. ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

हवे राणी पदमावती ॥ तथा मेरो मन मान्यो पठाण हां ॥ ए देशी ॥ वीरमती कहे चंदने, बेसीने एकत्र ॥ चिंता रखे धरतो कशि, हुं हुं ताहरे छत्र ॥ वी० ॥१॥ कहेतो इंडासन इंडानुं,श्राणं मति मंत ॥ कहेतो बांधु पायगे, रविरथ रेवंत ॥ वी० ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ एक वखते वीरमतीए पोतानी सपत्नीना पुत्र चंदने एकांते बेसीने कहुं के, पुत्र! तुं कोइ जातनी चिंता करीश नहीं, हुं तारा शिरनुं उत्र हुं. ॥ १ ॥ हे! हुद्धीमान्, जो तुं कहे तो इंद्रनुं इंद्रासन खावी आयुं, जो कहेतो पायगामां सूर्यना रथनो रेवंत श्रश्व खावीने बांधुं. ॥ २ ॥

कहेतो, इिक्स कुबेरनी, जरूं खेई जंडार ॥ कहेतो कंचन गिरि खेइने, धरूं ताहरे आगार ॥ बी० ॥ ३ ॥ कहे तो सुरनी कन्यका, परणावुं तुक्त ॥ जूठ रखे सुत मानतो, एहवी शक्ति हे मुक्त ॥ बी० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ जो कहे तो कुवेरनी समृद्धि तारा जंडारमां जरूं; कहेतो सुवर्णनो पर्वत (मेरू) खावीने तार घरमां राखुं. ॥३॥ जो कहेतो देवतानी कन्या तने परणावुं. श्चा विषे रखे तुं जुतुं मानतो, मारी एवी शक्ति हे.

वचन न खोपीश महारूं, यौवनने हो जोर ॥ तुं राची रस वेलमी, विरची विषनी कोर ॥ वी० ॥ ए ॥ महारा वचन विना कोइ, रखे करतो काम ॥ विद्यन जोइश माहरां, जो वांबे खाराम ॥ वी० ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ हे ! पुत्र, यौवननुं जोर राखी मारूं वचन द्वोपीश नहीं, जो हुं राजी रहीश तो रसनी वेद्ध हुं, श्रने जो नाराजी श्रईश तो विषनी वेद्ध हुं. ॥ ५ ॥ जो तुं सुख श्राराम इन्नतो होय तो मारां वचन विना कांइ काम करीश नहीं श्रने मारां निष्ठ जोइश नहीं. ॥ ६ ॥

चंद कहे करजोमीने,निसुणो तुमे मात॥ कथन न लोपिश तमतणुं, हे जो माथे जात ॥ वी० ॥ ७ ॥ तात तमे माता तमे, तमे इश्वर रूप ॥ श्रन्न दाता त्राता तमे, तमे माहरे त्रूप ॥ वी० ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ चंद कुमारे हाथ जोडीने कह्यं के, हे ! माता ! तमे सांजलो, जो मारे माथे जात होय तो हुं तमारूं वचन लोपीश नहीं. ॥ ७ ॥ तमे मारा पिता ठो, तमे माता ठो, तमे इश्वर ठो, तमे श्वन्न दाता ठो, तमे रक्तक ठो, श्वने तमे मारा राजा ठो. ॥ ० ॥ हुं श्रन्न होर तणो धणी, ए हे तुम तणुं सर्व ॥ तुम करूणा ते महारे, धन संख्यायें खर्व ॥ वी० ॥ ए ॥ वीरमती हरखी घणुं, सुणी चंदनी वाण ॥ बुचकारी कहे बाह्युका, तुं हे जीवन प्राण ॥ वी० ॥ १० ॥ श्रर्य ॥ श्रा सर्व तमारुंज हे, हुं तो मात्र होर श्रन्ननो धणी हुं. तमारी कृपाशी मारे खर्व संख्या जेटलुं इन्य हे. ॥ ए ॥ चंदनी श्रावी वाणी सांजली वीरमती घणो हर्ष पामी. पही तेणीए चुंबन लड़ने कहां के, हे! वत्स, तुं मारा जीवननो प्राण हुं. ॥ १० ॥

राज रमणी विखसो सुखें, युजथी मत बीहीश॥ कोम कह्याण हुउ तुजने, इम दिउं हु आशीश॥ वी०॥ ११॥ इम कही वीरमति गई, निज मं-दिर ताम, राज्य करे चंद नरवरू, श्रजिनव सुत्राम॥ वी०॥ ११॥

श्चर्य ॥ हे! पुत्र! तमे राजा श्चने राणी सुखे विद्यास करो, मारायी जरापण जय राखशो नहीं. तमारूं कोटि गमे कह्याण थार्ड एम हुं श्चाशीष श्चापुं हुं ॥ ११ ॥ श्चा प्रमाणे कही वीरमती पोताना मंदिरमां चादी गई. राजा चंद नविन इंड जेम राज्य करवा द्याग्यो. ॥ १२ ॥

गुण सुरसरिता गुणावली, चंद चतुर इंस ॥ काम कला कुवलय लता, विलसे सुप्रशंस ॥ वी० ॥ १३ ॥ दोगंडुक सुरनीपरे, विलसे सुल तेइ ॥ पुष्य कर्यां जेणे पूरवे, तेइनां फल एइ ॥ वी० ॥ १४ ॥

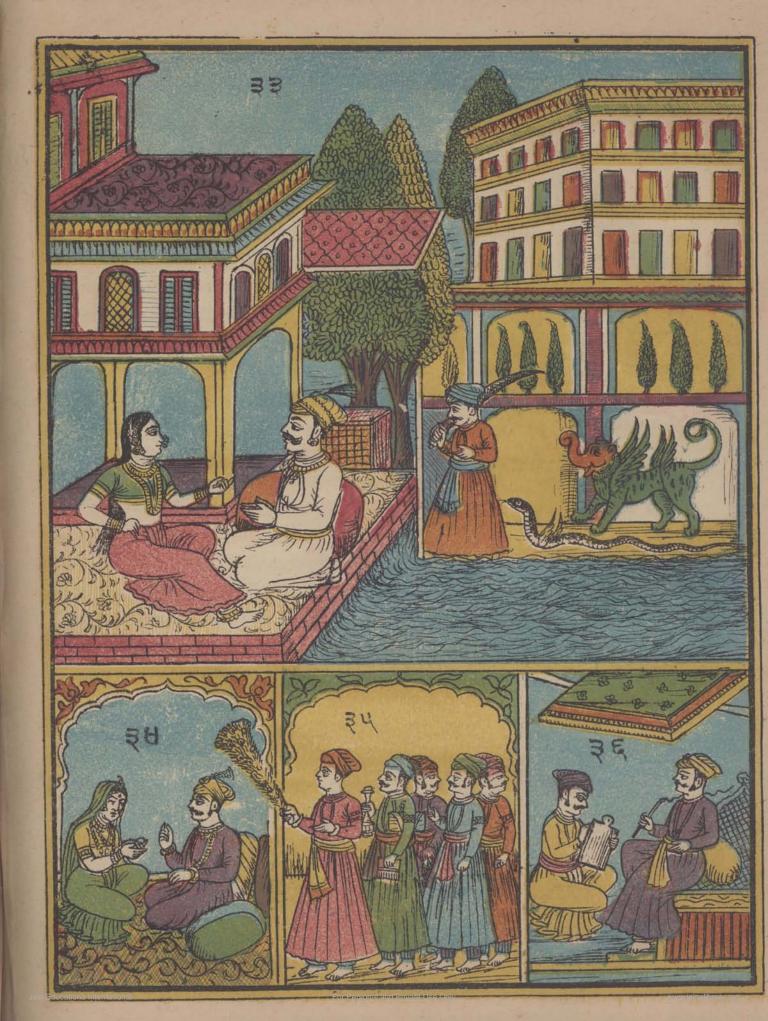
श्रश्री। राणी गुणावली गुणनी गंगारूप हे. श्रने चंदराजा इंस समान हे, ते बंने वचे कामकला रूप कमललता प्रशंसनीय पणे विलास करती हती. ॥ १३॥ ते राजदंपती दोगंडक देवतानी जेम सुख विलास करतां हतां. जेडिए पूर्वे पुष्य कर्यों होय तेनां फल स्थावां हे. ॥ १४॥

पाणी द्वध तेणीपरे, दंपतीने प्रेम ॥ जुगति जोमी बिहु तणी, जिम मणिने हेम ॥ वी० ॥ १५ ॥ श्रहर्निश वीरमती तणुं, चित्त जाखवे राय ॥ तिमहिज राणी गुणावली, नित प्रणमे पाय ॥ वी०॥१६॥

श्रर्थ ॥ जल श्रने दुधनी जेम ते दंपतीने प्रेम हतो. श्रने मिए श्रने सुवर्णनी जेम तेनी जोडी मिली हती. ॥ १५ ॥ राजा चंद हमेशां वीरमतीनुं मन राखतो हतो. श्रने राणी गुणावली हमेशां वीरमतीन धरणमां पडती हती. ॥ १६ ॥

चंदन निरंद तणो थयो, जग सुजरा विशाख ॥ मोहनविजयें सुधा समी, कही दशमी ढाल ॥ वी० ॥ १७ ॥ अर्थ॥चंदराजानो यश विशाखपणे जगत्मां प्रवस्यों मोहनविजये श्रमृत जेवी श्रा दशमी ढाल कही.॥१९॥ ॥ दोहा ॥

लघुवयथी रतिपति समो, राजे चंद नरींद ॥ तखते शोजे श्रति वखत, जदयाचलें दिणंद ॥ १ ॥ मदजलतनु काली घटा, देत दामनी रंग ॥ पाजसपरें दरबारमां, जद्भत श्रति मातंग ॥ १ ॥



श्चर्य ॥ राजा चंद खघुवयथी कामदेव जेवो शोजतो हतो. श्चने छदय गिरि छपर सूर्यनी जेम ते तस्त छपर दीपतो हतो. ॥ १ ॥ तेना दरबारमां गर्जेद्रो मदजल रूपी काली घटाथी, श्चने दांत रूपी वि-जलीथी मेघनी जेम छद्धत हता. ॥ २ ॥

नासा केसर पिचरकी, फीण श्रवीर खसंत ॥ हीष धमाल गुलाल गति, खेले तुरग वसंत ॥ ३ ॥ नृपमयंक वाणी सुधा, प्रजाकर्ण जिमसीप ॥ श्रवितथ मोती निपजे, सदा शरद जहीप ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ तेना घोडार्छ नासिका रूप केसरनी पीचकारीश्री श्रने फीएारूपी श्रवीदायी, हेपारव रूपी धमादायी श्रने वर्णरूपी गुलादायी वसंत खेलता होय तेम देखाता हता. ॥ ३ ॥ राजा रूपी चंडमांश्री वाणी रूपी श्रमृत नीकली प्रजाना कर्ण रूपी ठीपमां श्रावी सत्यरूपी मोतीने नीपजावतुं हतुं, तेश्री शर- द्कतुनुं छद्दीपन थयुं हतुं. ॥ ५ ॥

नितनित नवलां जेटणां, मुख आगल दीयंत ॥ कीथां धान खला मनुं, क्रतु आवे हेमंत ॥ ५ ॥ जयहिमथी आनन कमल, दाधावेपथु शीत ॥ अनमी जे आवी नम्या, तिहां शिशिर सुपवित्त ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ राजा चंदना मुख आगल नित्य नित्य आवतां नव नवां जेटणां रूपी धान्यनां खलां श्ववाश्री हेमंत क्रतु देखाती हती ॥ ५ ॥ जयरूपी वरफथी मुखरूप कमलने संकोच करता श्चने शरीरमां शीतनी जेम कंपारो बोडता एवां नहीं नमनारा शत्रुचं आवीने नमवाथी शिशिर क्रतुनो पवित्र देखाव श्वतो हतो॥ ६ ॥

नयपुर नचघर नचवनें, नही जक कोई न आध ॥ अन्य देश राजा जणी, सदा छुरंत निदाध ॥ ७ ॥ विक्षसे सुख नृपपद तणा, नित नित चंद जूपाल ॥ आतपत्र धारी थका, थयां अंग रखवाल ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ बीजा देशना राजार्जने नगर, घर श्रने वनमां रही शकातुं नथी, तेथी तेर्जनी प्रत्ये हमेशां हरंत प्रीष्म रुतु हतो ॥ ७ ॥ राजा चंद प्रति दिन राज्यपदनां सुखमां विखास करतो हतो. तेनी उपर बन्न धारी श्रने श्रंग रहको बन्या हता ॥ ० ॥

॥ ढाल स्रग्यारमी ॥

॥ कर्म परीका करण कुमर चख्यो रे ॥ ए देशी ॥

पंक्ति पांचसे पूजित परषदारे, सबि सुरग्रुरु प्रतिरूप ॥ श्रञ्जतवेताते षद्-शास्त्रनारे, गुणधी रंजित जूप ॥ पंजारे॥ सौगत सांख्य जैन नैयायिकारे, वैशे-षिक चार्वाक ॥ निजनिज युक्ति करे षद् दर्शनीरे, एकएकथी श्रार्वाक ॥पंजाश॥

श्रर्थ ॥ चंदराजानी परिषदामां पांचसो पंडित पूजाता हता, तेलं बुहस्पति जेवा श्राने श्रद्जुत पट्ट् शास्त्रना वेत्ता हता. तेलंना गुणोश्री राजा रंजित श्रतो हतो ॥ १ ॥ तेनी सत्तामां बुद्ध, सांख्य, जैन, नैयायिक, वैशेषिक, चार्वाक विगेरे पंकितो पोत पोतानी युक्ति करता हता, श्राने ते सर्वे पट्ट्दर्शनीलं एक एकश्री चडीयाता श्रता हता. ॥ २ ॥

www.jainelibrary.org

श्रून्यपणुं चार्वाकमित कहेरे, माने प्रत्यक्त प्रमाण ॥ वस्तु सकल हे किणिक श्रूनुमानथी रे,ए सोगत मित जाण ॥पंणा३॥ शब्द प्रमाण प्रमाणे वैशेषिकारे, सांख्य शब्द सानुमान ॥प्रगटानुमान शब्द उपमानने रे,एनैयायिक सान ॥पंणा४॥ अर्थ ॥ चार्वाक मतवाला जगत्ने श्रून्य गणी प्रत्यक्त प्रमाणने मानता हता; बौद्ध मतवाला " सर्व वस्तु क्षिक हे " एम अनुमान प्रमाण्थी मानता हता ॥ ३ ॥ वैशेषिक मतवाला शब्द प्रमाण मानता हता, सांख्य मतवाला शब्द अने अनुमान प्रमाणने मानता हता, अने न्याय मतवाला प्रगट अनुमान, शब्द अने जपमानने मानता हता ॥ ४ ॥

प्रत्यक्त श्रमे श्रमुमान प्रमाणने रे, जाखे जैंन श्रमूप ॥ कोइ कहे ए कर्ताये कर्यों रे, सुंदर जगत् सरूप ॥पंणाप॥ जगत् ए ज्ञानमयी कोइक कहेरे, स्वजाव जनित कहे कोय ॥ कोइ कहे जग शशकशृंगोपमारे, वंध्या सूत सम होय ॥ पंण ॥६॥

श्रर्थ ॥ जैनमतवाला प्रत्यक् श्रने श्रनुमान प्रमाणने मानता हता. कोइ श्रा जगत्ना सुंदर स्वरूपनो कर्त्ता एम मानता हता ॥ए॥ कोइ श्रा जगत्ने ज्ञानमय कहेता हता. कोइ जगत्ने स्वजाव जनित कहेता हता, कोइ ससलाना शींगडा जेवुं एने वंध्याना पुत्र जेवुं श्रसंजवित कहेता हता. ॥ ६॥

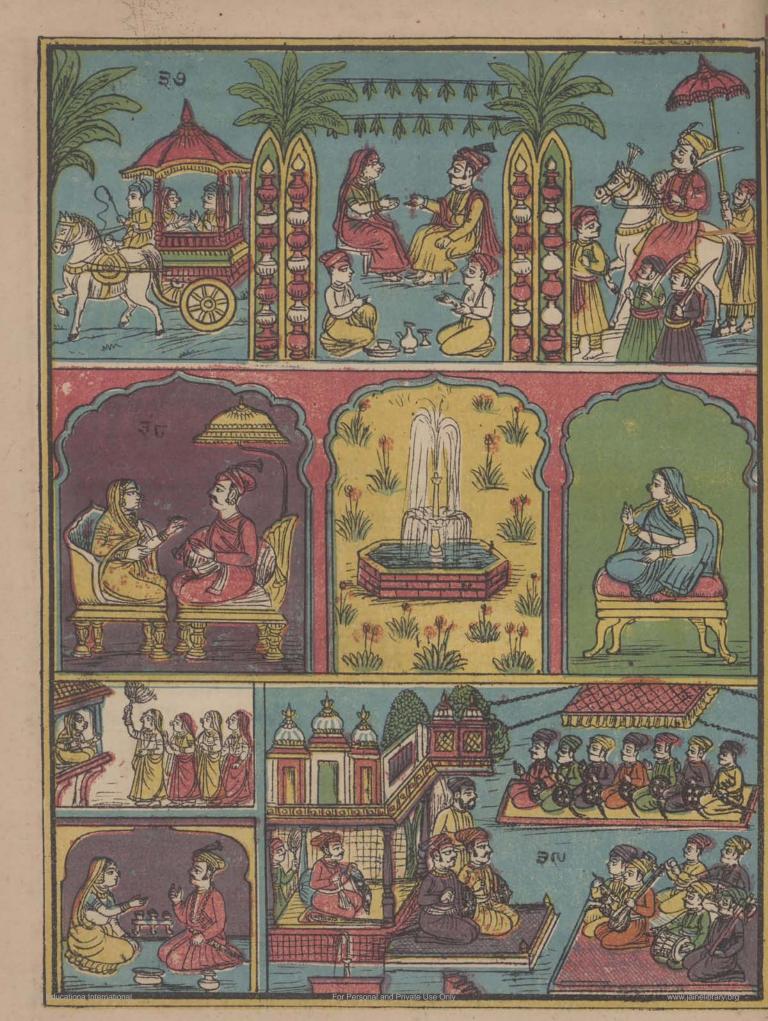
घटपटघटना ईम सहुको घटे रे, श्रंधगयंदने न्याय ॥ व्युत्पत्ति शब्दतणी करे शाब्दिकारे, उदर जरण उपाय ॥पं०॥७॥ वेदोज्ञार करे बहु वेदीयारे, करता कर श्रास्फाल ॥ साहित्य पाठी साहित्य उज्ञरे रे, प्रश्न करे जूपाल ॥ पं० ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ न्याय जाणनारा घटपटनी घटनाथी सर्व घटावता हता; शब्द जाणनारा उदरनुं जरण करवाना उपायरूप शब्दनी व्युत्पत्ति करता हता ॥ ७ ॥ वेदीश्चा खोको हाथ उठावी वेदनो उद्यार करता हता. साहित्य जाणनाराउं साहित्य कहेता हता, श्चने राजा चंद प्रश्न करता हता ॥ ७ ॥

काव्य करे वेत्ता श्रतंकारना रे,पूरे समस्या संघ॥ वांचे पुराण पौराणिक परवडारे,
रामायण संबंध ॥पं०॥ए॥ जल श्रन पय तरू फल दल फूलनारे,गुण कहे जोई
शास्त्र ॥ निपुण श्रादान निदान चिकित्सा विषेरे, वैद्दशा बुद्धिपात्र ॥ पं० ॥१०॥
श्रर्थ ॥ श्रतंकार जाणनारा काव्य करता श्रने समस्या पूर्ति करता हता, श्रने पुराणी पुराण श्रने
रामायण वांचता हता॥ ए॥ निदान श्रने चिकीत्सा करवामां कुशल एवा बुद्धिमान वैद्यो शास्त्र जोइने
जल, श्रन्न, वृद्ध, फल, पत्र श्रने पुष्पना गुण कहेता हता॥ १०॥

घन मूल वर्ग मूलादिक गणितनो रे, छति परिचय हे जास ॥जाणे सम हेदादिक मान-ने रे,करे पंचांग प्रकाश ॥पं०॥११॥ साधे रव्यादिक ग्रह गगने थकारे, वर्ते ग्रहण शशिसूर ॥ जाणे खगोल श्रने जूगोलने रे, हृदय सिद्धांते पूर ॥ पं० ॥११॥

श्रिश्च ॥ केटलाएक घन मूल श्राने वर्गमूल विगेरे गणितनो परिचय करनारा हता, श्राने तेर्छ समच्छेद विगेरे जाणी पंचांगनो प्रकाश करता हता ॥ ११ ॥ केटलाएक सूर्यादिक ब्रहोने श्राकाशमांश्री साधता हता, सूर्य चंघनुं ग्रहण वर्त्तता हता श्राने हृदय सिद्धांतश्री खगोल श्राने जुगोल जाणता हता ॥ १२ ॥



नृप दरबार पहवा ज्योतिषीरे, जाणे नक्षत्र महचार ॥ रंज्यो तेहने चंदनरेसरूरे, धापे गरथ जंडार ॥पंणारशा रूपक गीत ठंद तुक छूहडारे, कहे इम विविध धनाथ ॥ पिंगल पाठी पामे चंदनो रे, पगपग लाख पसाय ॥ पं० ॥ र४ ॥

श्चर्य ॥ नक्षत्र श्चने ब्रह्चार जाणनारा एवा ज्योपिछ राजाना दरबारमां हता तेमना गुणोथी रंजन यतो चंदराजा तेमने जन्यना जंडार श्चापी देतो हतो ॥१३॥ पिंगल पाठी कविछ विविध जातनां रूपक, गीत, इंद, तुक श्चने दोहा बनाधी चंदराजा पासेश्री पदेपदे खाखोनां इनाम खेता हता ॥ १४ ॥

एहवी चंद निरंदतणी सजारे,चिकत होये शशिसूर ॥ जिमनी जाणे इंद्र सजातणीरे,दिन दिन प्रवल पढूर ॥पं०॥१८॥ जीमजरुगणमां दीपे निशाकरूरे, सुरगणमां जिम इंद ॥ तिम सचिवादि सजाये शोजतो रे,चावो चंदनिरंद ॥पं०॥१६॥
अर्थ ॥ आवी चंद राजानी सजा जोइ चंद्र अने सूर्य चिकत यह जता हता अने ते सजा जाण इंद्र
सजानी वेन होय तेम दिन दिन प्रवल रूप घरती हती ॥ १५ ॥ जेम नद्द्रत्र गणमां चंद्र शोजे, देवताना
गणमां जेम इंद्र शोजे, तेम मंत्री विगेरेनी सजामां सुंदर चंदराजा शोजतो हवो ॥ १६ ॥

पंडित मोइन विजये जसी कहीरे, एह इग्यारमी ढाख ॥

श्रोता सुणुजो सहु मन थिरकरी रे, श्रागल वात रसाल ॥ पं० ॥ १७ ॥ १७ ॥ श्रर्थ ॥ पंडित मोहनविजये श्रा उत्तम श्राग्यारमी ढाल कही हे. हे ! श्रोता जनो ! हवे ध्यान दइने सांजलो. श्रागल रसिक वारता श्रावशे ॥ १७ ॥

॥दोहा॥ एकदिन तेह गुणावही, जोजनिए संतोष ॥ पोते पण तृपति थइ, श्रावी बेठी गोख ॥ १ ॥ करे सखी केई पवन, श्रापे केइ मुख-वास ॥ केई जब श्रमृत जरी, दासी उजी पास ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ एक वखते राणी गुणावली जोजन करी संतोषश्री तृप्त श्रर गोखे श्रावीने बेठी ॥१॥ कोइ सखी तेने पवन नांखती हती,कोइ मुखवास श्रापती हती श्रने कोइ दासी श्रमृत जेवुं जल पासेलइ जजी हती ॥ २ ॥

केइ विक्षेपन ग्रही रही, कुम्कुम् ढांटे केई॥ केइक उनी आगक्षे, दरपण करमां क्षेई॥३॥ केइ हसाडे साहसे, दीपे दंत उदार ॥ वायु थकी दानिम फक्षे, जाणे यह दरार ॥४॥

अर्थ ॥ कोइ विलेपन साइ खनी हती, कोइ कुम्कुम्ने ठांटती हती, अने कोइ हाथमां दर्पण साइ आ गख जनी हती ॥ ३ ॥ कोइ साहसथी हसावती हती, ते वखते तेना सुंदर दांत वायुथी फसीने फाटी गयेखा दाडिम जेवा सागता हता ॥ ४ ॥

केई राषी कंठे ठवे, पंच वर्ष ग्रुज दाम ॥ जाणुं अतिफु चित थयो, मदन तणो आराम ॥ ५ ॥ जाणी चंदनी पदमिनी, करे

रवि मुदित आयास ॥ पण युदले राणी वदन, लह्यो अधिक विकास ॥६॥ अर्थ ॥ कोइ राणीना कंठमां पंचवणीं हार नांखती हती,ते हार जाणे काम देवनो बाग प्रफुक्षित अयो

होय तेम शोजतो हतो ॥ ५ ॥ पद्मिनी होय ते चांदनीने जाणी रिवना कीर्ण मेखववानो प्रयास करे हे. पण श्रा चंदनी राणीनुं मुखकमख चांदनीमां पण श्रिधिक विकास पामतुं हतुं ॥ ६ ॥

> रिव रथ खेंचीने रह्यो, मध्यान्हे आकाश ॥ जोवा नृप कांता तणो, रूप रंग सुविखास ॥ ॥ ॥

अर्थ ॥ सूर्य मध्यान्ह काले पोतानो रथ खेंची आ राणीनां रूप रंगनो विलास जोवाने रह्यो होय तेम देखावा लाग्यो ॥ ९ ॥

॥ ढाख बारमी ॥

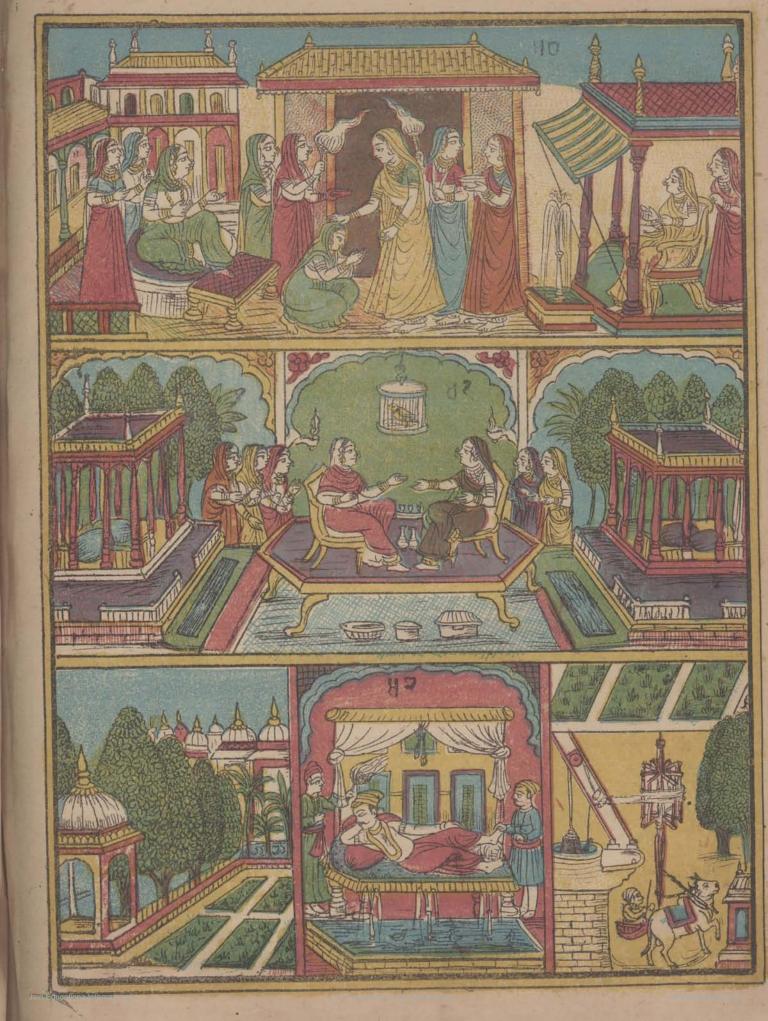
॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

एहवे वीरमती तिहां आवी,वेश रची बहु जांत रे ॥ करवा गोष्टि गुणावली साथे मध्यान्हे एकांतरे ॥ एहवे वीरमती तिहां आवी ॥१॥ दीठी गुणावलीये आवंती, निजमंदिरमांहे सासूरे ॥ बाई विनय करो कहे सजनी,बहु आवुं गुं फासूरे ॥ए०॥२॥ अर्थ ॥ ए समये मध्यान्ह काले वीरमती घणो संदर वेष धरी गुणावली साथे एकांते गोष्टी करवाने त्यां आवी ॥ १ ॥ पोताना मंदिरमां सासुने आवती जोइ गुणावलीने तेनी सखीए कहां के, बाइ विनय करो, तेनी आगल मोटाइ राखवी ॥ १ ॥

हास हुकम तुमचो श्रम उपर, पण तुम उपर एहनो रे ॥ तुम प्रीतम एहने कहे चासे, जे जेहनो ते तेहनो रे ॥ए०॥३॥ एहवे सजनी वचने हसती, उनी जर्थे श्राज-रणे रे ॥ दोनी गुणाविस विनयधी खागी, सासूजीने चरणे रे ॥ ए०॥ ४॥ श्रथं ॥ हास तमारो हुकम श्रमारी उपर हे श्रने तेनो हुकम तमारी उपर हे, वसी तमारा स्वामी पण तेना कहात्रमाणे चासे हे, जे जेनो ते तेनो समजवो. ॥ ३॥ एवां सखीनां वचन सांजसी श्राज्यणोशी जरपूर थयेसी गुणावसी उनीने हसती दोडी श्रने विनयशी सासुनां चरणमां पडी ॥ ४॥

जाखे कृतारथ मुजने कीधी,जे तुमे इहां पांज धार्या रे ॥ धन्य घमी धन्य आज-नीवेखा,सघलां काज सुधार्या रे ॥ए०॥५॥ बाइजी आज करी तुमे मुजने, मेरूथकी पण मोटी रे ॥ कहपलता मुज आंगणे प्रगटी,कहेती नश्री कांइ खोटी रे ॥ए०॥६॥ अर्थ ॥ हे! सासुजी, तमे अहीं पगलां कर्या तेथी मने कृतार्थ करी आजनी घडी धन्य हे, तमे मारां सघलां कार्य सुधार्या ॥५॥ हे! बाइजी,आजे तमे मने मेरू पर्वतथी पण मोटी करी, आजे मारा आंगणामां कहपलता प्रगट थइ. आमां जरापण हुं खोटुं बोलती नथी ॥ ६ ॥

हरषी वीरमती वहू वचने, आशिष दे बुचकारी रे॥ ताहरो सुहाग सदा होजो अविचल, जिहां लगे जग ध्रुवतारी रे ॥ए०॥ऽ॥ सासूडीने अधिक सनेहे, आसने लेइ बेसाफी रे॥ बेठी गुणावली बेहु करजोडी, मुख आगल मनुहारी रे॥ ए०॥ ७॥ अर्थ ॥ पोतानी पुत्रवधूनां आवां वचनथी वीरमती घणो हर्ष पामी अने चुंबन करी तेने आशीष आपी के, ज्यां लगी आ जगत् अने ध्रुवनो तारो रहे त्यां लगी तारुं सौजाग्य सदा अविचल रहेजो ॥९॥ पठी पोतानी सासुने अधिक स्नेडणी आसने बेसाडी गुणावली वे हाथ जोही तेनी सामे बेठी ॥ ०॥



वीरमती श्रति विनये रंजी, वहुश्चरने सनमानी रे ॥ तुं कुखवंति बहु गुणवंति, विनः यवति नही ठानी रे ॥ ए०॥ ए॥ तुज मुख विनय वचन जे प्रगटे, तेहमांशी श्रधिः काई रे ॥ वरशे तेहमांहे शुं केहेवुं, शशीहुंति जे सुधाई रे ॥ ए० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेना अति विनयथी राजी थयेखी अने वहुथी घणुं सन्मान पामेखी वीरमती बोखी के, है! वधु! तुं कुखवंती, बहु गुणवंती, अने विनयवती हुं, ते वात ज्ञानी नथी ॥ ए॥ तारा मुखमांथी विनय वचन नीकले हे, तेमां शी नवाइ हे ? चंड मांथी अमृत करे तेमां शुं कहे हुं ? ॥ १०॥

कमलयकी सौरत्य जे पसरे,तिहां अचरज शुंधरतुं रे ?॥ इक्त रसमां जे मधुरता होवे,तिहां संदेह शो करवो रे॥ ए०॥११॥ तिम तुं रूप विनय हे बहुअर,जीवजो क्रोम दीवाली रे॥ यह तुं मुजने आण्यी वाहाली,मनमानी तुं बाली रे॥ए०॥११॥ अर्थ ॥ कमलमांथी सुगंध प्रसरे तेमां शुं आश्चर्य इक्तुरसमांथी मधुरता नीकले तेमां शो संदेह?॥११॥ हे! वधु, तेवी रीते तारामांथी विनय थाय तेमां शुं आश्चर्य ? तुं कोड दीवाली जीवजो हे बाला, तुं मुजने प्राण्यी पण वाहाली लागे हे ॥ १२॥

जे जोइये ते कहेजे मुक्तने, न गिएश इहमां श्रवंत्रों रे॥ वंदजों कहीये छहवरों तुक्रने,तो हूं देईश उलंत्रों रे॥ए०॥१३॥ चंदविचे तुक्जविचे नहीं श्रंतर, बेहु नयणां समबेहु रे॥ सासू वहु उपर हेत राखे, तेहमां कहेवुं केहुं रे॥ ए०॥ १४॥ श्रर्थ॥ जे जोइए ते मने कहेजे, एमां कांइ श्रवंत्रों राखीश नहीं जो चंद तने जरापण जुनवे तो हुं तेने उलंत्रों दहश॥ १३॥ चंद श्रने तारी वच्चे मारे जरापण श्रंतर नथी। मारे वे श्रांख सरखी हो सासु पोतानी वहु उपर हेत राखे, तेमां शुं कहेवानुं होय ?॥ १४॥

में परखी तुजने वहु बेटी, तुजमां नहीं हुंसा तुंसो रे ॥ कहियें कथन न लोपीश नाहरूं, एहवो श्राव्यो जरोंसो रे ॥ ए०॥ १५॥ जो मन माहरा पूठल चालीश, कहेण करीश जो माहरूं रे ॥ तो ए विद्या श्रादे महारूं ते सघलुं ठे तहारुं रे ॥ए०॥१६॥ श्रर्थ ॥ में तने पुत्री कर्षे गणी ठे, वली तारामां कांइ खटपट नथी. मने जरूंसो ठे के, तुं मारूं वचन लोपीश नहीं. ॥ १५ ॥ जो तुं मारा मन प्रमाणे श्रातुसारीने चालीश श्राने मारूं कहेण करीश तो श्रा जे मारी विद्या ठे ते सघलुं तारूंज ठे. ॥ १६ ॥

इम सासु वहुअर परचावी, हीयडा आगल राखी रे ॥ बारमी ढाल रसाल वचनथी, मोहन विजये जाखी रे ॥ ए० ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ आप्रमाणे कही सासुए वहुने हृदयथी चांपी आिलंगन कर्यु, आ बारमी ढाल श्री मोहन-विजये रिक वचनथी कहेली हे. ॥ १९ ॥

दोहा ॥

वीरमती लटपट करे, गुणावसीथी ताम ॥ पण जोली समजे-नही, सासू तणा विराम ॥ १ ॥ दास सबि आपापणुं, जइने काम करंत ॥ सासु वहुअरने कहे, अवसर लहि एकंत ॥ १ ॥ श्चर्य ॥ एवी रीते वीरमती गुणावली साथ लटपट करवा लागी. पण ऐ जोला दिलनी वहु सासुना इरादाने समजी नहीं. ॥ १ ॥ पठी सर्व दासील जइ पोतानुं काम करवा लागी. ए अवसरे एकांत जोइ सासुए वहुने नीचे प्रमाणे कहुं. ॥ २ ॥

रे वत्से तुं नृप सुता, मुज सुत तुज जरतार ॥ ते मदथी गणती हुईश, सफल करी संसार ॥ ३॥ तुं मनमां लेती हुईश, हूं रूडी निरधार ॥ पण हुं लेखे निव गणुं, रे! वधु तुज अवतार ॥ ४॥

अर्थ ॥ हे ! वत्से, तुं राजपुत्री हे, अने मारो पुत्र तारो स्वामी हे, एवा मदथी तुं तारा संसारने सफल मानती हुईश. ॥३॥ वली मनमां मानती हुइश के, हुं रुडी हुं. पण हुं तारा अवतारने लेखामां गणती नथी.॥४॥

निसुणी कहे गुणावली, सासूजी कहो केम ॥ विण गुनहे मुजने तमे, कुवखाणो ठो एम ॥ ५ ॥ हय गय रथ कंचन रयण, घणा तेम पट-कूल ॥ सकल वस्तु ठे माहरे, परिकर पण अनुकूल ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ते सांज्ञाती गुणावली बोली, हे ! सामुजी, तमे श्चाम केम बोलो ठो ? गुना वगर मारी निंदा केम करो ठो ? ॥ ए ॥ श्वश्व, गज, रथ, सुवर्ण, रल श्वने घणां पटकुल वस्त्र तथा सर्व वस्तु मने मले ठे, वली मारो परिवार पण मने श्वनुकूल हे. ॥ ६ ॥

बाई मुज सरखी सुखी, कुण नारी संसार ॥ तुम सरिखी सासू ठते, बेखे मुज श्रवतार ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ हे! बाइजी, मारा जेवी बीजी कइ स्त्री संसारमां सुखी ठे ? वसी तमारा जेवी मारे सासु है। तेथी मारो श्चवतार क्षेखे हे. ॥ ७ ॥

॥ ढाख तेरमी ॥

॥ तमे पीतांवर पेहेर्यांजी मुखने मरकबहे ॥ ए देशी ॥ सासु कहे कर साहीजी, वचन कोई जांतनो ॥ वहूतें न खह्यो कांइजी, मरोक ए वातनो ॥ १ ॥ श्रधरतणें फुरकारेंजी, समजे जे कोइ ॥ ते संसारे सारेंजी, विरखा कोइ होइ ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ सामुए कहुं के, हे! वहु, श्चा वचननो श्चने श्चा वातनो मरोड तारा जाणवामां श्चाच्यो नहीं. ॥ १ ॥ जे एक होठना फरकवा उपरथी समजी जाय, तेवा कोइ श्चा संसारमा विरता है. ॥ १ ॥

जाणपणो जगमांहेलो, वहू अर दोहेलो ॥ मूरख ते पण चा-हेजी, धन करी सोहेलो ॥ ३ ॥ रूपे कोई न हरषेजी, गुण हरखे सहू ॥ आछल कुसुमने सरखेजी, दीसे ठे तुं वहू ॥ ४॥

श्रर्थ ॥ है! वधू, त्र्या जगत्मां जाणपणुं दोहेतुं हे! मूर्ल होय ते पण धननो छपत्रोग चाहे हे. ॥३॥ कोइ रूपश्री हर्ष पामे नही; सर्वे गुण्थी हर्ष पामे हे. हे! वधु, तुं तो पुष्पना जेवी मृख लागे हे. ॥ ४॥

पहेरी उंढी तुं जाणजी, वस्त्र क्तीरोदकी ॥ पण तुजमां एक दाणोजी, समजण कयां थकी ॥ ५ ॥ एकदिश चार वेदजी, एक दिश चातुरी ॥ जेदालक लहे जेदजी, सुण कामातुरी ॥६॥

श्चर्य ॥ तु छ्धनां जेवां जजतां वस्त्रने उंदी जाणे हे पण तारामां समजणानो एक दाणो पण नथी. ॥ ए॥ एक तरफ चारे वेद श्चने एक चातुरी हे, तेनो जेदतो खरो जेछ होय ते जाणे. हे ! कामातुर स्त्री, ते सांजल ॥ ६ ॥

जाणती हूइश हुं माहीजी, पण पशु सारखी ॥ श्रमे चतुराई ताहारीजी, बोखतां पारखी ॥ ७ ॥ निसुणी सासू वाणी जी, बोखी गुणावली ॥ निपट एम श्रजाणीजी, किम मुज श्रटकली ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तुं एम जाएं हे के, हुं डाही बुं पए तुं तो पशु सरखी बुं. श्रमे तारी चतुराइने बोखवामांज पारखी खीधी. ॥ ।।। सासुनी स्त्राची वाएं। सांजली गुए।वली बोली के, हे! बाइजी! मारी स्रक्रयनी तमे जाएं। विना केम स्राटकंद करी. ॥ ०॥

माहारा मनथी हूं जाणुंजी, सहुथी वुं माही ॥ श्राप किस्युं हूं व-खाणुंजी, पण तुमे नवि चाही ॥ ए ॥ श्रीतम तम सुत जेहवोजी,

माहारे मन मीठो ॥ त्रिज्ञवनमां नर एहवोजी, बीजो न कोई दीठो ॥ १० ॥ श्रिश्री ॥ हुं मारा मनश्री जाणुं हुं के हुं सलश्री डाही हुं, पण हुं मारा पोतानां वलाण करूं ते शाका-मनां ? तमे तो पण चाही नहीं. ॥ ए ॥ तमारा पुत्र जेवो स्वामी मारे मनतो बहु मीठो ठे, त्रण जुवनमां बीजो कोइ तेवो नर दीठो नथी. ॥ १० ॥

हूंतो वखतावारजी, बाईजी तमे सुणो ॥ माहरो ए श्रवतारजी, किम करी श्रवगुणो ॥ ११ ॥ वीरमती तव जाखेजी, सांजल वहुश्रारू ॥ तुं जे एवमी राखेजी, हुंस ते शासारू ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ है! बाइजी सांजलो हुं तो धन्य हुं, मारो अवतार तमने अवगुण जरेखो केम खाग्यो ? ॥११॥ वीरमती बोली, हे! वहु, सांजल, तुं आवडी होंश शामाटे राखे हे?॥ १२॥

ए चंद नृपती कुण क्षेत्रेजी, एहने कुण जाणे ॥ श्रवर जो तुं नर देखेजी, तो हठ निव ताणे ॥ १३ ॥ सायर बहैर शुं जाणेजी, मीं-डक कूपनो ॥ कुबजा ते शुं प्रमाणेजी, गुणरित रूपनो ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ ए चंदराजा शा लेखामां हे, अने कोण जंतखं हे? जो तें बीजा नर जोया होत तो आवी हह करते नहीं. ॥१३॥ कुवानो देडको समुद्रनी लेहेरने शुं जाणे? कुव्जा स्त्री रितना रूपनो गुण शुं समजे?॥१४॥

जिणे नालिस्रर निव दीठाजी, श्रक्षिया बापडा ॥ माढे लागे मी-गंजी, तास कोठिवडा ॥ १५ ॥ नागरजन छुर साहीजी शुं लहे जंगली ॥ जाणे शुं बनात वसाइजी, उढी जिणे कंवली ॥ १६ ॥ ऋर्य ॥ जे जे बीचाराए नारीएखनां फल दीठां न होय तेर्छने कोठीवडां मीठां लागे हे ॥ १५॥ जंगली लोकोने नगरजनना वैजवनी शी खबर पडे? जेणं कांबल छंडी होय ते बनातनी लेहेजत शुं जाणं?॥१६॥

सरसुधी जाई श्रावेजी, हय जिनदासनो ॥ रविहय जेद न पावेजी, गमन विखासनो ॥ १९ ॥ जेणे प्रवहण नवि दीठांजी, प्रीयतस तुंबडां ॥ शास्त्र सुर्खां नहीं मीठांजी, तस रूचे हुंबडा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जिनदासनो घोडो के जे सरोवर सुधी जाई ने आवे ते सूर्यना घोडानी गति विलासनो भेद शी रीते जाले ? ॥ १७ ॥ जेले वहाल दीठां नहोथ तेने तुंबमां प्रिय होय हे, जेले मधुर शास्त्रो सुल्यां न होय तेमने हुंबडां (हलुल) उपर रूचि आय हे. ॥ १० ॥

> जाणशुं हलद पेटीजी, बलदजे घांचीनो ॥ तुं तो हे सुण बे-टीजी, मांकड मांचीनो ॥ १७ ॥ एकेक नर हे एहवाजी, रूपे सुंदरा श्रजिनव रतिपति जेहवाजी, प्रगट पुरंदरा ॥ २० ॥

श्चर्य ।। घांचीनो बलद इल खेडवानुं शुं जाएँ ? तेम हे ! बेटी ! तुं तो मांचीनो मांकड इं. ॥ १ए॥ बीजा एक एक पुरूष रूप वडे एवा सुंदर हे के जाएँ नवीन कामदेव होय श्रथवा प्रगट इंद्र होय तेवा लागे हे ॥ १०॥

मोहनविजये जाखीजी, ढाख ए तेरमी ॥ चरित्र करीने साखीजी, सुग्रण जणी गमी ॥ २०॥

श्चर्य ॥ श्री मोहन विजये श्चा तेरमी ढाल कही, ते चरित्रवडे करीने वाचतां सद्गुणी पुरुषोने गमी है। ।। दोहा ॥

माताजी इम मत कहो, चंदथी श्रधिक श्रनेक ॥ पण तुम कुल उद्योत कर, चंद चंदसम एक ॥ १ ॥ सिंह जणे एक सिंहणी, बहू वनमां शीयाल ॥ कोइक मृगकस्तुरिज, श्रवर मृगोनी माल ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गुणावलीए कहां. हे! माता! एम कहो नहीं! बीजा अनेक पुरुषो चंद्रश्री अधिक हशे पण त-मारां फुलने जद्योत करनार चंद्रना जेवा तो एकज चंद्र हे. ॥ १ ॥ सिंहण एकज सिंहने जिए हे! वनमां शीयाल घणां आय हे. कस्तुरी सग कोइज होय अने बीजां सगलानी तो श्रेणि होय हे. ॥ १ ॥

> किहां चंद किहां श्रवर, श्रंतर प्रात वियाल ॥ चंद चरण नख सा-रिखा, बीजा सवि जूपाल ॥ ३ ॥ तोलाए गयवर जिहां, खर ते विल पासंग ॥ चोलरंगसम चंद नृप, बीजा रंग पतंग ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तमारा पुत्र चंद क्यां? अने बीजा नर क्यां? तेमनी वचे घणो अंतर हे. बीजा सर्व राजार्छ चंदना चरण नखना जेवा हे. ॥ ३ ॥ ज्यां मोटा गजेन्य तोखाय त्यां गधेमा पासंगमां जाय हे! तेम चंदर राजा चोखना रंग जेवा हे अने बीजा पतंगना रंग जेवा हे. ॥ ४ ॥

जिहां तरु सुरतरु सारिखा, सफल सुशोजित होय ॥ मूलाफल विक्ष फाडमां, खेखे नाणे कोय ॥ ५ ॥ बाई तुम सुत सारिखो, नहीं कोइ श्रवर संसार ॥ मुज शिरते प्रीतम ठते, लाखेणो श्रवतार ॥ ६ ॥ श्चर्य ॥ ज्यां कहप वृक्त जेवां वृक्तो सफल श्चने सुशोजित होय त्यां मूलानां फलने कोइ काडमां क्षेत्रे नहीं. ॥ ५ ॥ हे! बाइजी, तमारा पुत्र जेवो कोइ बीजो संसारमां नश्ची. तेवो पुरुष मारा शिरपर स्वामी हे तथी मारो श्चवतार खाखेणो हे. ॥ ६ ॥

न्नाग्ये श्राव्यो नागमें, ते महारे नगवान ॥ नाणे श्राव्युं जेहने, ते तेहेनें पकवान ॥ ७ ॥ श्रर्थ ॥ जे नाग्यथी मारे न्नाग श्राव्यो तेमारे नगवान हे. नाणे जेने जे श्राव्युं ते तेने पकवान्न हे. ॥ ९॥ ॥ ढाल चौदमी ॥

॥ डोरी माहरी आवे हो रसिया कडतले ॥ ए देशी ॥ वीरमती कहे निसुण गुणावली, ठे मुज चंद सुजात ॥ सलूणी ॥ कहुं ढुं हुं तो ए तुज आगले, ठठे आवी जे वात ॥स०॥वी०॥१॥ पण बहुरला एह वसुंधरा चंदथी अधिक अनेक ॥स०॥ देश विदेश जो तें निरक्यो हुवे तो तुं जाणे सुविवेक ॥स०॥वी०॥१॥ अर्थ ॥ वीरमती बोली. हे! गुणावली! सांजलो, ए मारो पुत्र चंद छत्तम ठे. हुं तो तारी आगल जे वात होठे आवी ते कहुं हुं. ॥ १ ॥ पण आ पृथ्वी बहुरला ठे. चंदथी अधिक अनेक पुरुषो ठे. देश विदेशमां जो तें जोया होय तो तेनो विवेक तारा जाणवामां आवे. ॥ २ ॥

तें एक दीठी एह आजापुरी, तुजने एटली गम्य ॥स०॥ वात शुं जाणे अवर पुरीतणी, शुं लहे रम्य अरम्य ॥स०॥वी०॥३॥ तिणे अवतार अक्षेत्वे तुज गणुं, सांजल न
धरीश रीश ॥स०॥ दीठा नही जो विनोद हणे क्ते, तो पठीक्यारे जोईश ॥स०॥वी०॥४॥
अर्थ ॥ तें एक आजापुरी दीठी ठे एटले तने एटलीज गम ठे. बीजी नगरीनी वात तुं शुं जाणे? अने
आ रमणीय ठे आ अरमणीय ठे एनी तने शी खबर पडे!॥३॥ तेथी करीने हुं तारो अवतार अलेले गणुं हुं. आ
सांजल जे, रीस करीश नही. जो आवा समयमां तें विनोद जोया नहीं तो पठी कयारे जोइश ॥ ४॥

हुं तुज वखते सासू सांपनी, तुं हजी आणे संकोच ॥स०॥ कौतुक कोईन दी हो तें वहु,
ए मुज सबल आलोच ॥स०॥वी०॥४॥ वनना कुसुमतणी परे ताहरो, ए जाए अवतार ॥ स०॥ तुं हुं सराहिस मानव जव जणी, निव जोईश देशाचार ॥स०॥वी०॥६॥
अर्थ ॥ तारा योग्य वखतमां मारा जवी तने सासु मली अने तुं हजी संकोच लावे हे, हे, वहु! तें
कांइ हजु कौतुक जोयुं नहीं, ए मने प्रवल विचार थया करे हे. ॥ ५ ॥ वननां पुष्पनी जेम तारो अवतार
व्यर्थ जाय हे. जो तुं देशाचारने जोईश नहीं तो पही आ मानव जवनो शो लावो लक्श! ॥ ६ ॥

नव नव तीरथ नव नव गिरिवरा, नव नव नगर निवेश ॥ स० ॥ नव नव कुंड नवी नवी निम्नगा, वन उपवन सुविशेष ॥ स० ॥ वी० ॥ ७ ॥ नव नव नरवर नव नव नृप वधू, नव नव जात विनोद ॥ स० ॥ नव नव रंग सुरंगा मानवी, नव नव गीत स्वरोद ॥ स० ॥ वी० ॥ ७ ॥ विविध पवित्र चरित्र विदेशनां, जे निरस्वे तस धन्य ॥ स० ॥ तेतो विक्ष माताये पुत्री छ, जोई होशे श्चन्य ॥ सनावीनाए॥ श्रश्वमुखा इयकर्णा मानवी, कर्णोवगरणा ए तेम ॥सन॥ इगचरणावली गूढ दशनधरा, शुद्धरदा विक्ष तेम ॥ सन्॥ वीन ॥ १०॥

श्चर्य ॥ नव नवां तीर्थों, नव नवा पर्वतो, नव नवां शेहेरो, नव नवा कुंडो, नव नवी नदीर्छ, नव नवां छपवनो, नव नवा नरवरो, नव नवी राणीर्छ, नव नवा विनोदो, नव नवा रंग बेरंगी मानवीर्छ, नव नवां गीत स्वर, श्चने विविध जातना पवित्र विदेशनां चिरत्रों जे निरखे है तेने धन्य है श्चने तेवी पुत्रीर्छने कोइ माताज जन्म श्चापे है. ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ कोइ देशमां श्चश्वमुखा मानवी है; कोइ देशमां घोडाना जेवा कानवाखा मानवी है; कोइ हेकाणे कर्णना जपकरणा मानवी है; कोइ हेकाणे घणा चरणवाखा श्वाय है; कोइ गुप्त होहवाखा श्वाय है श्चने कोइ हेकाणे छज्वख दांतवाखा श्वाय है. ॥ १० ॥

दीठां विण शुं जाणे बापकी, तुं शुं नारीने उत ॥ स० ॥ हवे तुं श्रशन सुखेकरी, वेठी फांद पंपोल ॥ स०॥वी०॥११॥ न्यारो पेडो ठे चतुराईनो, चतुरनी घूर ब-लाय ॥स०॥ चातुरी मूल ए पंच प्रकार्यी, शास्त्रे एम कहाय ॥ स०॥ वी० ॥ १२ ॥

श्रर्थ ॥ तेवा माणसो जोया विना तुं बापडी शुं जाणे? श्रने शुं तुं स्त्रीर्जनी हारमां गणाय हे? हवे तुं खान पान करी जंढी पेहेरीने फांद काढी सुखे बेठी तेमां शुं श्रयुं? ॥ ११ ॥ चतुराईनो पेडो तो न्यारोज हे. चतुरनी बात जुदीज हे. श्रने चतुराई पांच प्रकारथी मखे हे, एम शास्त्रमां कह्युं हे. ॥ १२ ॥

तुजथी ए रूमापंखेरूआ, कौतुक निरखे अनंत ॥स०॥ ताहरे रंकतणां गुझनी परे, सकल पदारथ कंत ॥ स०॥वी०॥ १३ ॥ नेह अने निसहनेहनी वातमी, ते किम जाणी रे जाय ॥स०॥जे कोई नर परदेश फिर्यो हुए, जुंडी निव ते जोलाय ॥स०॥वी॥१४॥

श्चर्य ॥ तारायी तो पद्दी पए उत्तम हे के जेर्ड जमीने श्चनंत कीतुक जुए हे श्चने तारे रांकना गो-लनी जेम सर्व पदारथ एक स्वामीज हे. ॥ १३ ॥ स्नेहज श्चने स्नेह वगरनी वात जाएी केम थाय १ जे माएस परदेशमां फर्यों होय ते कोइ छर्जनथी जोलवाई जाय नहीं. ॥ १४ ॥

घरसूरा ने विल में विंमिया, ते श्रण समजूरे दोय ॥स०॥पण परजूमि फरी श्रादर खहे, विरला तेह्वारे कोय ॥स०॥वी०॥१५॥ पाम्यानुं फल एह जे दीजीयें, कोईने खव खेश ॥स०॥ जीवितनुं फल एह जे जोईयें, कौतुक तीर्थ विदेश ॥ स०॥वी०॥१६॥

श्चर्य ॥ जे पुरुष घरशूरा श्चने मठपंडित होय ते बंने जातना पुरुषो श्चणसमजु हे. पण जे परजूमिमां फरीने खादर पामे तेवो पुरुष कोइ विरलो होय है. ॥ १५ ॥ कोइने लवलेश श्चापीए ते पाम्यानुं फल है; श्चने जे देश फरी तीर्थ के कौतुक जोइए ते जीवितनुं फल है. ॥ १६ ॥

सासुयें इस परचावी वहू जाएी, ए कही चौदमी ढाल ॥ स० ॥ मोहनविजय कहे जित्र सांजलो, श्रागल वात रसाल ॥ स० ॥ वी० ॥ १९ ॥ श्राय श्री ॥ श्रा प्रमाणे सासुए पोतानी वहुने कहां. श्रा चौदमी ढाल कही, श्री मोहनविजय कहे हे के, हे जविप्राणी! सांजलो स्थागल रसिक वात स्थावहो. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सासु वचन गुणावली, निसुणी जंपे एम ॥ बाई देश विदेश तें, जोया जाए केम ॥१॥ इन्नाचारी कौतुकी, वली निरंकुश जेह ॥ मननी मोजे संचरे, देश विदेशे तेह ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ गुणावली श्रावां सासुनां वचन सांजली बोली, हे! बाइजी! देश विदेश श्रापणाथी केम जोवाय? ॥ १ ॥ जे स्वेद्याचारी, कौतुकी, निरंकुश श्रने मनमोजी होय ते देश विदेशमां विचरे हे. ॥ १ ॥

हूं नृपनी पटरागिणी, बाहिर प्यान देवाय ॥ बाईजी कहो मुज थकी, एवातो किम थाय ? ॥ ३ ॥ तुम वचनामृतथी थयुं, जोवाने मन जोर ॥ पण किम करीये चरणने, नाची जोवे मोर ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ हुं तो राजानी स्त्री हुं तो कहो बाइजी माराधी बाहार पगर्शी रीते देवाय? श्चने ए वात केम बने? ॥ ३ ॥ तमारां वचनामृतथी मने देशांतर जोवानी जोरधी छत्कंठा थड़ हे, पए केम करहुं ? मोर नाचीने चरएनी सामुं जोवे हे तेम मारे पए हे. ॥ ४ ॥

> जे अणशिष्युं की जियें, ते आवे किम वग्ग॥ आमतरे तेतो जसे, पण किम तरशे कग्ग ॥ ५ ॥ हूं अवसा प्रीतम थकी, अधक्रण न रही पूर ॥ किम तेहथी करीये कपट, साखी हे शशि सूर ॥६॥

श्रर्थ ॥ जे शिख्यावगरनुं करवा जाईए ते वगमां केम आवे? पाणी उपर तरशे पण कागलथी शी रीते तराशे ? ॥ ए ॥ हुं अवला छुं; वली मारा प्रियतमथी अधीं ऋण पण दूर रही नथी, तो हवे तेनाथी कपट केवी रीते कराय ? चंद्र अने सूर्य तो तेना साक्षी छे. ॥ ६ ॥

कबही कपट होवे प्रगट, जो जाणे प्राणेश ॥ तिहां श्रामा श्रावे नहीं, जोया देश विदेश ॥ ७ ॥ प्रीतम विण परदेशहे, नारीयें न जवाय ॥ पंखी पुरुष श्रने पवन, जिहां जावे तिहां जाय ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ जो कदाचित् करेख़ं कपट प्रगट श्राय श्रने ते प्राणेशना जाणवामां श्रावे तो ते वखते जोयेखा देश परदेश श्राडा श्रावे नहीं ॥ ९ ॥ कोश्पण स्त्रीए प्रियतम विना परदेश जवाय नहीं. पद्दी पुरुष श्रने पवन ज्यां मरजी पडे त्यां जइ शके हे. ॥ ए ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ ॥ कपूर होवे श्रति जजलो रे ॥ ए देशी ॥

वहुने वीरमती कहेरे, वांतो विविध बनाय ॥ कारज जे नारी करेरे, ते नरश्री न-विश्राय ॥ जविकजन, निरखो नारि चरित्र॥ एश्रांकणी॥१॥ इरिहरब्रह्म पुरंदरा रे, विनतायें वश कीथ ॥ मुनिवर सरिषा जोलव्यारे, ग्रंथें नाम प्रसिद्ध ॥ जण्॥ १॥ श्रर्थ ॥ वीरमतीए वहुने विविध वातो बनावी कहेवा मांडी. श्ररे! बाइ, तमे शुं जाणो ! जे कार्य नारी करे ते नरश्री पणा बनतुं नथी. हे जविक जन! हवे नारी चरित्रने निरखो. ॥ १॥ हरि, हर, ब्रह्मा श्रने इंड जेवाने पण वनिताए वहा कर्या है; स्त्रने मोटा मुनिवर सरखाने पण जोखवी नांख्या है. जेमनां नाम ग्रंथोमां प्रसिद्ध है. ॥ २ ॥

जोिंस नारि चरित्रनो रे, पाम्या नहीं कोई पार ॥ जे निव जोसव्या नारियें रे, ते विरखा संसार ॥ ज० ॥ ३ ॥ नारि विषम गिरिवर चढेरे, वश आणे अहिराज ॥ अति गंजीर नदी तरे रे, युवती कपट जिहाज ॥ ज० ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ अरे! जोिंसी वहु! कोइ पुरुष नारी चरित्रना पारने पाम्यो नथी. जे नारीथी जोसवायानथी, तेवा पुरुषो संसारमां विरखा है. ॥ ३ ॥ नारी मोटा विषम गिरि उपर चडी जाय है अने मोटा शेष नागने पण वश करे है. कपटना वाहाण्य युवति मोटी गंजीर नदीने पण तरी जाय है. ॥ ४ ॥

सिंहथकी निव उसरे रे, खेंबे श्रिखिखा खेख ॥ राची जेहवी सुरक्षतारे, विरची विषनी वेख ॥ ज० ॥ ५ ॥ पीउथी जे बीहति रहे रें, तास ज-नमश्रकष्ठ ॥ नारीने कुण शीखवेरे, चरित्र ग्रहीने हक ॥ ज० ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ स्त्री सिंहथीपण बीती नथी. ते बधा खेल खेली जाणे हे. जो ते राजी यह होय तो कहपलता श्राने नाराज यह होय तो विषलता हे. ॥ ए ॥ जे स्त्री पतिथी जय पामती रहे तेनो जन्म कष्टरूप थायहे. नारीने नारी चरित्र हृदयमां हापी कोण शीखवे हे ? ॥ ६ ॥

मोर इंना कुण चितरे रे, हंस जणी गति सार ॥ कुण शीखवे मृगराजने रे, करिवर कुंज प्रहार ॥ ज० ॥ ७ ॥ जाति स्वजाव शिख्याविनारे, स्थावे गुण निरधार ॥ जीति चंद नरिंद्रनीरे, न धरीश चित्त मजार ॥ ज० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ मोरनां इंडांने कोण चीतरे हे ? इंसने गित कोण शीखवे हे अने गजेन्द्र उपर प्रहार करवाने केसरी सिंहने कोण बतावे हे ? ॥ ७ ॥ जाति स्वजावना गुणो शीख्या विनाज आवे हे. तेथी हे ! वहु, तुं सारा मनमां चंद राजानी बीक राखीश नहीं ॥ ए ॥

गगन गामनी विद्याथकी रे, जोशुं विनोद विख्यात॥ रात रमी घरे श्रावशुं रे, होशे जाम प्रजात ॥ ज०॥ ए॥ जे रामत रमशुं निशारे, ते शुं जाणशे राय॥ चंचा पुरुष ते शुं विद्यो रे, पुरुषमांहि कहेवाय ॥ ज०॥ १०॥

श्चर्य ॥ मारी पासे त्याकाशगामी विद्या है, तेनाश्ची बधा प्रख्यात विनोद जोइ बधी रात्रि रमी ज्यारे प्रजात श्वरो त्यारे तो पाहा घरे श्चावीशुं ॥ ए ॥ जे त्यापे रात्रे रमत रमीशुं ते राजा शीरीते जाएँ। शके? जे पुरुषश्चाकृति चामीयो कर्यो होय ते शुं पुरुषमां गए।य हे ? ॥ १०॥

शुं थयुं चंद जो जाएशे रे, पण केम खेल मूकाय ॥ जेम मशक उतपातथी रे, सदन शुं मूकी जवाय ॥ ज० ॥ ११ ॥ वचन सुणी सासुतणां रे, हरिष गुणा-वली चित्त ॥ जोईश सासु सहायथी रे, नवली कीमा नित्य ॥ ज० ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ कदी चंद जाणे तोपण शुं थयुं? आपणे खेल केम होमी देवाय? मशलाना उत्पातथी शुं घर मुकी नाशी जवाय हे? ॥ ११ ॥ आवां सासुनां युक्तिवालां वचन सांजली गुणावली मनमां हर्ष पामी अने सासुनी सहायथी नित्य नित्य नवली कीडा जोइश एम खुशी थवा लागी ॥ १२ ॥

ए सासुमांहे श्रवे रे, बहु विद्या श्रजिराम ॥ तेणे खेई नवि शके रे, नरपति महारूं नाम ॥ ज०॥ १३॥ राणी सासुने कहे रें, हुं बुं तम तणी गोद ॥ देखाडो सुखेरे, नवला देश विनोद ॥ ज०॥ १४॥

श्रर्थ ॥ वद्धी श्रा सासुमां घणी विचित्र विद्यार्ड हे, तेथी राजा मारूं नाम खड़ शकशे नहीं. ॥ १३ ॥ राणीए सासुने कहुं, बाइजी! हुं तमारे श्राधीन हुं. मने सुखेथी नवनवा देश श्रने विनोद बतावो. ॥१४॥

पण बाईजी माहरी रे, तुम हाथे हे खाज ॥ नही श्रवंगी तुम वचनथी रे, तुमे माहरे शिरताज ॥ जिण ॥ १५ ॥ श्रद्युत जे कौतुक हूवे रे, ते देखाडो श्राज ॥ जे कोइ बेही नाचवा रे, घुंघटनुं शुं काज ॥ जण ॥ १६ ॥

श्रर्थ ॥ पण हे ! बाईजी ! मारी खाज तमारा ६। यमां छे. हुं तमारां वचनथी जुदी रहीश नहीं, ! तमे मारा शिरताज छो. ॥ १५ ॥ हवे जे श्राद्जुत कौतुक होय ते मने बताबो. जे नाचवा बेठी तेने पठी घुं- भट करवानुं शुं काम छे ? ॥ १६ ॥

पण कोइ मंत्र प्रयोगथी रे, वास करजो जूपाल ॥ मोहन विजये हेजथी रे, कही पनरमी सुंदर ढाल ॥ ज० ॥ १९ ॥ श्रर्थ ॥ पण कोइ मंत्र प्रयोगथी तमे राजाने वहा करजो. आ प्रमाणे मोहनविजये सुंदर पंनरमी ढाल कही.

॥ दोहा ॥

वश श्रावी जाणी वहु, सासु कहे ते वार ॥ वे विद्या श्रवस्वापनी, मुज पासे निरधार ॥ १ ॥ कहे तो नगरी जन जणी, करूं दृषदने तुल्य ॥ नृप करवो श्रापण वसु, तेहमां शुं वहु मुख्य ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ पोतानी वहु वश श्वर्घ एवं जाणी सासु वीरमती बोखी के, मारी पासे श्चवस्वापनी विद्या है. ॥ १ ॥ जो कहेतो बधी नगरीना खोकोने पश्चर जेवा करी नांखुं, तो पठी एक राजानो वश करवो तेमां शी बीसात है. ॥ २ ॥

कौतुक जोवा जो थयुं, मन तुज विश्वावीश ॥ तो सांजल तुजने कहुं, श्रवरज एक जगीस ॥ ३ ॥ नगरी कोश श्रदारसे, विमल पूरी हे एक ॥ महिपति मकरध्वज तिहां नृप वश कीथ श्रवनेक ॥ ४ ॥

अर्थ ।। जो विश्वनां कीतुक जोवानुं बराबर मनथंयु होयतो सांजल, तने एक मोटुं आश्चर्य कहुं ।। ३ ।। श्रहींथी श्रदारसो कोस उपर विमलपुरी नामे एक नगरी हे तेमां मकरध्वज नामे राजा है. तेणे अनेक राजार्हने वश कर्या है. ॥ ४ ।।

तनुजा नामे प्रेमला, लही सुंदर देह ॥ विधिना हाथे निरममी, निपट करीने नेह ॥ ५ ॥ सिंहलपुर सिंहरथ नृपति, सुत क-नक ध्वज राज ॥ तेहने परणशे प्रेमला, मुहुरत रजनी स्राज ॥ ६ ॥ श्रर्थ ॥ तेने खङ्गीना जेवा सुंदर देहवाखी प्रेमला नामे एक पुत्री है. तेने विधिए घणो स्नेह धरीने पोताने हाथे निर्माण करी है. ॥ ए ॥ सिंहख पुरमां सिंहरथ नामे राजा है, तेनो पुत्र कनकध्वज श्राज रात्रिना मुहूर्त्तमां ते प्रेमखानी साथे परणशे. ॥ ६ ॥

कौतुक जोवा सारिखुं, श्रवे श्राजतो तेह ॥ जो श्रावेतो तुज जणी, हुं देखाडुं तेह ॥ ७ ॥ श्रर्थ ॥ श्राजे जोवा जेदुं ते कौतुक वे. जो तुं श्रावे तो तने ते बतावुं. ॥ ७ ॥ ॥ ढाख सोखमी ॥

॥ नणदल विदलिदे ॥ तथा ॥ सीता रूपे रूमी, जाणो श्रांबा डाखे सुमी हो, सीता कोणे हरी ॥ ए देशी ॥

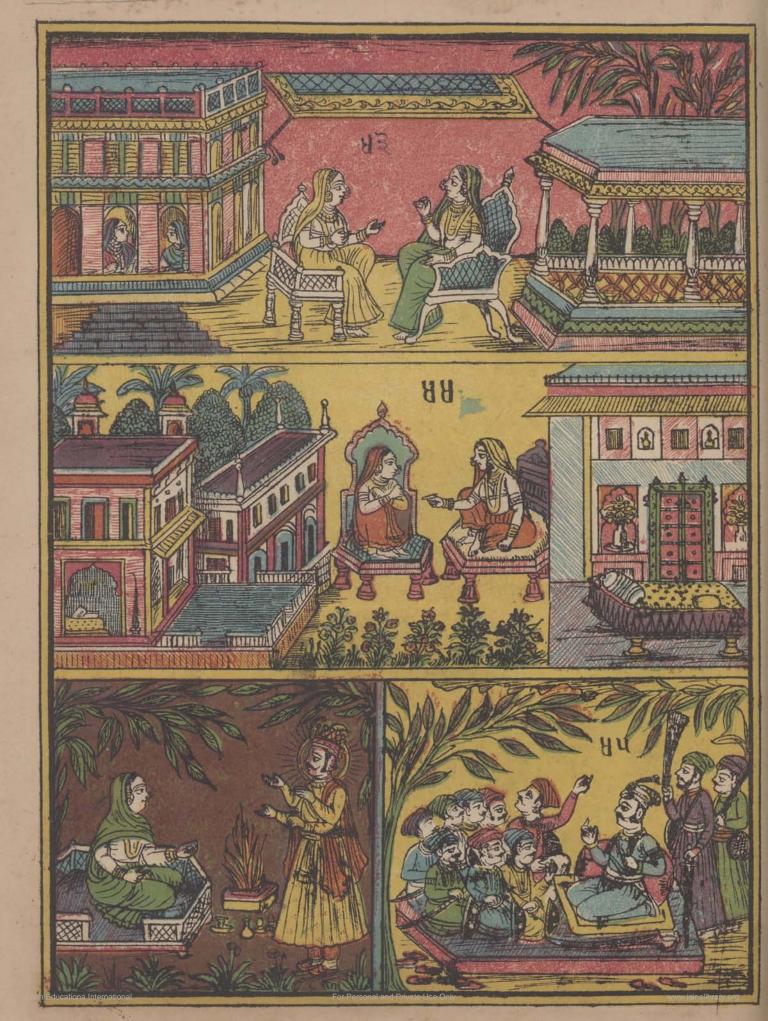
सासु वहुने राणी, घणो हीयडे हेज जरांणी हो ॥ संगत फल एहवां, तुमे सासुजी ग्रण धामी, हुंतो पूरण वखते पामी हो ॥ सं० ॥ १ ॥ कोश श्राहारसे इहांथी, एक रजनीये पहोंचीये किहांथी हो ॥ सं० ॥ कोई देवी होए ते जाय, पण मनुष्य थकी केम श्राय हो ॥ सं० ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ सासुनां श्रावां वचनथी राणीना हृदयमां हर्ष थयो. संगतनां फले तेवां होय हे राणी कहे हो ! सासुजी, हुं पूर्ण वखते तमारा जेवी गुणीयल सासुने पामी हुं. ॥१॥ ते नगरी श्रहींथी श्रहारसो को शहे, त्यां एक रात्रिमां शी रीते पोची शकाय? जो को इ देवी होय तो ते त्यां जरुशके. मनुष्यथी केम जरुशकाय? ॥१॥ सुण वहु सासु जंपे, बहु कोश सुणी किम कंपे हो ॥सं०॥ एक गगन गामिनी मुज पासे, हे विद्या परम विलासे हो ॥सं०॥३॥ लाख जोजन जरु श्रावुं, पण एटलामां शुं जावुं हो ॥सं०॥ ए एक डगलुं माहारुं, चित्त कायर स करीश ताहारुं हो॥सं०॥४॥ श्रश्रं ॥ सासुए कहुं, हे ! वहु सांजलो, घणा कोशनुं नाम सुणी केम कंपी चाले हे? मारी पासे श्राकाश गामी विद्या जत्कृष्टपणे विलास पामे हे. ॥ ३ ॥ हुं तो एक लाख जोजन जरु श्रावुं तेवी हुं, तो एटलामां शुं जावुं हे ! श्रा तो मारु एक डगलुं हे! तुं तारा चित्तने कायर करीश नहीं. ॥ ४ ॥

निसुणी गुणावली रंजी, जाणी वीरमतीने अगंजी हो ॥संग। एहतो विद्या सारी, तुम बाइजी बिल्हारी हो ॥संग।। सुणी सासुजी, किम ताकको मेलशो ताणी हो ॥संग। हमणाथी सजा जे पूराशे, ते जिहां लगे संध्या थाशे हो ॥ संग ॥६॥ अर्थ ॥ ते सांजली गुणावली राजी थइ अने पोतानी सासुने चमत्कारी जाणी बोली के, बाइजी, ए विद्या तो बहु सारी, तमने बिल्हारी हे.॥ ए॥ हे सासुजी! मारी वाणी सांजलो, आवो ताकडो शी रीते

मेखवशो ? हमणांथी अहिं एवी सजा एकठी अशे के जे संध्या काल सुधी चालशे. ॥ ६॥

एक पहोर निशा जब जावे,तव पीछडो महोले श्रावे हो ॥सं०॥ विल हास विलासे सजनी,इम करतां होवे मध्य रजनी हो ॥सं०॥७॥ एक पहोर पोढे नृप रागे, विल पाछले पहोरे जागे हो ॥सं०॥ इत्य श्रवकाश न पावुं,तो हुं किम तुमसंगे श्रावुं हो ॥सं०॥॥॥



श्चर्य ।। ज्यारे एक पोहोर रात्रि जहो त्यारे प्रियतम मेहेले आवहो, पठी हास विलास करतां मध्य रात्रि श्रइ जहो. ।। ७ ।। राजा रागश्री एक पोहोर पोढे छे, अने पठी पाठले पोहोरे जागे छे, एवी रीते हुं एक इत्यु पणु अवकाहा पामती नश्री तो पठी हुं तमारी साथे ही रीते आवुं ? ।। ७ ॥

तव सासु देइ दिलासा,वहु जोय तुं मुज विलासा हो ॥संग।एतो हे कार्य सोहिलो,त्र्याज तुज पति श्रावरो वहिलो हो ॥संगाणा पीछ परचावीने विलासे,पही श्रावजे तुं मुज पासे हो ॥संग। इम वहने घणो परचावी, निज मंदिरे सासु श्रावी हो ॥संगारग।

श्चर्य ॥ सासुए दिखासो आपी कहां, अरे! वहु! तमे मारो विद्यास जुर्ज, आ कार्य तो सेहेखं हे, आजे तारो पित वहेखो श्रावशे ॥ ए ॥ तुं तारा पितने विद्यासश्ची संतुष्ट करी अने सुवाडी मारी पासे आवजे. आ प्रमाणे पोतानी वहुने घणो संतोष आपी सासु पोताने मंदिरे आवी. ॥ १०॥

सासुनां वचन संजारे,मन राणी एम विचारे हो ॥संगा मुज सासुतो गुण पात्र, ए तो घर सरखी नही पात्र हो ॥संगारशा ए तो कहि गई वातो मोहोटी,पण दीसे वे सासु खोटी हो॥संगाश्राज श्रावशे जो वहिलो प्यारो,तव एहनो श्रावे पतिश्रारो हो ॥संग्रश॥

श्रर्थ ॥ पठी गुणावली सासुनां वचन संजारी मनमां विचार करवा लागी के, मारी सासु गुण पात्र हे. पण श्रा घरनी योग्यता प्रमाणे ते ठीक न कहेवाय. ॥११॥ ए सासु तो मोटी मोटी वातो कही गइ, पण ते खोटी लागे हे. श्राजे जो प्रियतम वेहेला श्रावे तो तेनो पतियार मालम पडी जहो ॥ १२॥

हवे वीरमती कपटाई, तुमे सांजलो सहु चित्तलाई हो।।सं०।। संध्या पहि ली सद्या, तिणे साधवा मांडी विद्या हो।।सं०॥ १३॥ सुर प्रगट्यो वचने बांध्यो, किम नारी मुजने आराध्यो हो ॥सं०॥ साजाले आकर्ष्या अर्थे,कोइ कोइने तेडे नहीं व्यर्थे हो ॥सं०॥ ॥ १४॥

अर्थ ॥ इवे अहिं वीरमतीए जे कर्यु ते सौ चित्त दड्ने सांजलों तेणीए संध्या पेहेली पोतानी विद्या साधवा मांडी. ॥ १३ ॥ तेवामां विद्यानो अधिष्टायक देव जे वचनथी बंधायो हतो ते प्रगट थयो, तेणे कहुं. अरे! स्त्री! तें मने केम आराध्यो? ते बोली. में कोइ कार्यने अर्थे तमारूं आकर्षण कर्यु हे. कोइ कोइने वृथा तेडे नहीं. ॥ १४ ॥

कोइ एहवो रचो तमे फंद, मुजपुत्र श्रावे नृप चंद हो ॥सं०॥ कांइ तुमर्थ। एहवुं थावे, सुत दिवस बते घर श्रावे हो ॥सं०॥१५॥ सुर कहे एहमां शुं करवुं, श्रंजली जलमां शुं तरवुं हो ॥सं०॥ राणी मन वात ते जाणी, देव रचे ते सुणो प्राणी हो ॥ सं० ॥१६॥ श्रथं॥ हे देव! तमे कोइ एवो फंद रचो के मारो पुत्र चंद हे ते हुं धारुं तेम करे. तमाराथी कांइ ऐवं बने के, ते मारो पुत्र दिवस हतां घेर श्रावे? ॥१५॥ देवताए कहुं, श्रोर बाइ, एमां ते शुं करवुं हे? श्रंजित जेटला जलमां शुं तरवुं ? राणीना मननी वात जाणी हवे देवता जे रचे ते सर्व सांजलो. ॥ १६॥

वीरमती शोक्षमी ढाखे, करे कपट ते पुत्र विचाखे हो ॥ संण् ॥ कहे मोहन शीयल छाटंको, तस वाल न होवे वंको हो ॥ संण्॥ १९॥ अर्थ ॥ छा सोखमी ढाखे वीरमती कपट करी पुत्रने चिलत करे हे मोहन विजय कहे हे के, शीय- खमां छाटंक एवा ते चंदनो एक वाल पण वांको नहीं थाय. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

डुर्जन जन मन जेह्वी, स्थाम घटा घन घोर ॥ उत्तर वाली उन्ह्ही, मोर करे कींगोर ॥ १ ॥ दहदिश दमके दामिनी, जिम मनमथ कर-वाल ॥ गुहिरो श्रिति गाजे गयण, कोरण वहे विचाल ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ ते समये छर्जन लोकोना मन जेवी जत्तरमांश्री मेघनी घन घोर स्याम घटा चडी श्चावी श्चने मोर टौका करवा लाग्या ॥१॥ जाणे कामदेवनी तरवार होय तेवी विजली दसे दिशामां चमकवा खागी. श्चाकाशमां गर्जना थवा लागी श्चने चारे तरफ घमघोर थड़ रह्यं.॥ २॥

जलधारा निव्नम पडे, शीतल पवन प्रसार ॥ सकर ककर सम उडे, उनमंडे जलधार ॥ ३ ॥ एहवी घनमाला रची,श्रति सुविशाला जाम ॥ कहीने वीरमती जणी, सुर पोतो निज ठाम ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ जलनी घाटी घारा पडवा लागी; शीतल पवन प्रसरवा लाग्योः साकरनी जेम करा उडवा लाग्या श्रने झर्नी साथे जल घारा पर्नवा लागी. ॥ ३ ॥ श्रावी विशाल मेघमाला रचीने श्रने ते वीरम-तीने जणावीने ते देवता पोताने स्थाने चाली गयोः ॥ ४ ॥

प्रसर्यों घन तिम चिहुं दिशे, सन्ना विसर्जीराय ॥ मंदिर श्राव्यो दिन बते,राणी विस्मय श्राय॥५॥ सासु वचन तणो श्रयो,राणीने विश्वास ॥ दोकर जोकी ग्रणावसी, बन्नी प्रीतम पास ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ आवी रीते चारे दिशामां मेघने प्रसरी गयो जोइ राजाए सजाने विसर्जन करी श्चने दिवस इतां ते राणीना मंदिरमां आब्यो. ते जोइ राणी गुणादखी विस्मय पामी गइ. ॥ ५ ॥ आथी राणीने सा-सुना वचन जपर विश्वास आब्यो. गुणावखी बे हाथ जोडी पोताना प्रियतमनी पासे जजी रही. ॥ ६ ॥ १

श्राज घणा वहिला तमे, श्राव्या मंदिर एम ॥

दीसो श्रामण जुमणा, कहो प्राणेश्वर केम? ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ ते बोली हे ! प्राणेश्वर ! श्चाज तमे मंदिरमां घणा वेला पधार्या श्चने श्चाम श्चाकुल व्याकुल क्षागो हे. तेनुं शुं कारण ते कहो. ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

श्रावी उरही जा परी है ॥ के वेरण मत तरसावे जीवके ॥ रतन सोनारमी है ॥ एदेशी॥ चंद कहे राणी जणी है ॥ के साजन, विणसतु वरसे मेहके ॥ नवली चंदनी है, के लखना केरां जुड चिरत्र के ॥ शीतल पवन ककोलथी है ॥ केसाण ॥ कंपे कोमल देह के ॥ नणार॥ गंगातट वेलु जिसी है ॥ केसाण॥ सखरबिडाई सेज के ॥ परनां उसीसां धर्यां हे ॥ केसाण॥ राणी मनमें हेजके ॥ नण॥ १॥ श्रर्थ ॥ चंद राजाए राणीने कहां, प्रिया, श्रा कतु विना मेघ वर्षे हे, (हे जिन्हें चंदनी नवल नारीतं चिरत्र जुर्ड.) है! बाला, श्रा शीतल वायु वाय हे, जेशी मारी कोमल काया कंपी चाले हे. ॥ १॥ ते

वखते गंगानी रेती जेवी कोमस राय्या विठावी श्रने सुंदर र्जसीकां मुकवामां श्राव्यां, श्राश्री राणीना मनमा श्राश्चर्य श्रयुं. ॥ २ ॥

बेठो पर्यंके पीजहे ॥ केसाण ॥ घरमां बांधी कान के ॥ नारी आपे नेहशु के॥ केसाणा मृगमद खंबर पानके ॥नणा३॥ आसव नवनव जांतिनां हे ॥ केसाणा राणी करावे पानके॥ नारायणादिक तेलना है॥केसाणाकरे अज्यंग विधानके॥नणा४॥

श्चर्य ॥ प्रियतम कान बांधी घरमां पत्नंग उपर बेठोः राणी गुणावली स्नेहथी कस्तुरी श्चने श्चंबर श्चा-पवा लागी. ॥ ३ ॥ वली राणी नव नवी जातना श्चासव (सरबत) ना पान करावी ने नारायण प्रमुख सुगंधी तेल चोलवा लागी. ॥ ४ ॥

श्चगर चंदनश्चंगी ठिका है ॥ केसाणा पसर्यों परिमल पूरके ॥ तेणे नृप तनुश्री थयो है ॥केसाणा शीत प्राजन पूरके ॥नणाया सुखजर सेजें पोढी उद्दे ॥ केसाणा चंद चतुर तेणि वारके॥चतुरा चरण चंपी करे है॥केसाणाश्चादर विविध प्रकारके॥नण्ध

श्चर्य ॥ श्चगर चंद्ननो सुगंध प्रसराव्योः श्चाश्ची राजाना शरीरमां शीतनो पराजव श्वर् गयोः श्वने ते दूर श्वर् गइः ॥ ५ ॥ पत्नी सुखश्ची जरपूर श्वर् चतुर चंदराजा शय्यामां सुर गयोः श्वने चतुरा गुणावली विविध प्रकाराना श्चादरश्ची तेनां चरणने चांपवा लागीः ॥ ६ ॥

राणी जगाडे रायने हे ॥केसा०॥ क्रणक्रण सो सो वारके ॥ क्रणवारें करी रीसडीहे ॥ केसा०॥ विताने वसु धारके ॥न०॥५॥इम करतां संध्या थई हे ॥ केसा०॥ पाम्यां चंद विश्राम के ॥ राखे सुरत जाग्या तणी हे ॥ केसा०॥ विता पगपग जामके ॥न०॥५॥ श्रर्थ ॥ वसी राणी गुणावसी राजाने जगामवा सागी, क्षणे क्षणे सो सो वार जगाडे हे श्रने वसी क्षणवारे ते विता रीस करवा सागी. ॥ ४ ॥ एम करतां संध्याकास श्रयो एटसे चंद राजा विश्रांत श्रव सुद्द गयो. राणी पोहोरे श्रने पगले पगले जागवानी सुरत राखवा सागी. ॥ ० ॥

उठे क्षण बेसे वली है ॥केसा०॥ चंचल राणी चित्तके ॥ संजारे ते गुणावली है ॥ केसा०॥सासूनो संकेत के ॥ न०॥ए॥ निरखे श्रंबर श्रंतर है ॥केसा०॥ कपट निष्ठाये जूपके ॥ राणी निव जाणी शकी है ॥ के० ॥ वालिम केरं सह पके ॥ न० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ ते चंचल गुणावली क्रण वार छठती श्रने क्रणवार बेसती हती श्रने चपल चित्तथी सासुनो संकेत संजारती हती. ॥ ए॥ राजा कपट निष्ठा करी वस्त्रनी श्रंदरथी जोवा लाग्यो. पतिनुं श्रा श्राचरण राणी जाणी शकी नहीं. ॥ १०॥

वनिता चल चिंता घणी है ॥केसा०॥ जाणीने राजानके॥ मांडी मनथी विचारणा हे ॥केसा०॥एतो कोइक विज्ञानके ॥न०॥११॥ कां करे एह छःशीलता है ॥केसा०॥प्रगट सुशीला एहके॥ बिगनी कोइक छःसंगधी है ॥के०॥ एहमां नही संदेह के ॥न०॥१२॥ अर्थ॥राजा चंद विचारमां पडयो के, आ वनितानुं चित्तचपल देखाय हे. तेना मनमां कोइ विचार जत्पन्न श्रयों हे. अथवा कांइक जाएवानुं हे. ॥ ११ ॥ आ स्त्री सुशीखा हे एतो प्रगट पऐ जएाय हे. ते हता आवी छःशीखता केम करे हे ? अथवा कोइ छसंगथी ते बगडी हे एमां संदेह नथी. ॥ १२ ॥

मुज सरिखो प्रीतम छते हे ॥केसाणा केहची बांधी प्रीतके॥नीच संगति नारी हुएहे॥ केसाणा एहवी दीसे रीतके ॥नणा१३॥ सोहेखा सोवन नवी गमे हे ॥ केणा कुस्सित टंकण खारके ॥ जिम मूर्छित ऋंगारची हे ॥केणा चिर रहे ए घनसारके ॥ नण्॥१४॥ ऋषी ॥ मारा जेवो पति छतां तेणीए कोनी साथे प्रीति बांधी हुशे? ऋषवा नीचना संगधी नारी बगके

अथ ॥ मारा जवा पात उता ताएए काना साथ प्राति बाधा हुशः अथवा नाचना संगया नारा बगर हे, एवी रीति हे. ॥ १३ ॥ नहारो टंकएखार उत्तम एवा सुवर्णने गमतो नथी अने अंगाराथी मूर्हा पामेखुं कपूर स्थिर रहे हे. ॥ १४ ॥

प्रिय छंगार चकोरने हे ॥ केसा० ॥ बकुलने मदिरा दायके ॥ जो कोई वस्तु जली हुवे हे ॥ केसा० ॥ मध्यम तास सुहायके ॥ न० ॥ १५ ॥ तिम माहारी पटरागणि हे ॥ केसा० ॥ इम मुजने जरमाय के ॥ किहां इक जावा मन करे हे ॥ केसा० ॥ पण मुजथी संकोचायके ॥ न० ॥ १६ ॥

श्रर्थ ।। चकोर पक्षीने श्रंगारा प्रिय लागे हे. बोरसलीना वृद्धने मदिरा पष्टवित करे हे. जो कोइ जाणी वस्तु होय तेनी सहाय मध्यम होय हे. ॥ १५ ॥ तेम श्रा मारी पटराणी मने जरमावीने कांइ जवानुं मन करे हे पण ते माराश्री संकोचाय हे. ॥ १६ ॥

पण किम नाह्या आगते॥ केसा०॥ चाते कपट डूमाल के॥

सत्तरमी जाखी जली है।। केसा ।। मोहन विजये ढाल के।। न ।। १५॥ अर्थ ।। पणा डाह्या माण्स आगल कपटनो डोल शी रीते चाली शके १ आ प्रमाणे मोहन विजये सत्तरमी ढाल कही है।।। १५॥

॥ दोहा ॥

विक्ष ताकी संध्यासमय, ग्रणावली गजगित ॥ ग्रहणी वाहिर परवरी, नरपित लही निरित्त ॥ १ ॥ खुणसधरी क्षेष्ठ खङ्ग, कंते की धी केम ॥ मली गइ काली निज्ञा, न लह्यो नारि निवेड ॥ १ ॥

अर्थ ॥ संध्यानो समय अयो एटले गुणावली जलताथी गजेन्छना जेवी चाल चालती राजाने निषामां मूकी घरनी बाहेर नीकली. ॥ १ ॥ पजवामे राजा तीइण खड़ा लई तेनी केमे पड़्यो. काली घोर रात्रि अई गई. स्त्री तेने जोइ शकी नहीं. ॥ १ ॥

थइ संध्या सासु जूए, वधू तणी ते वाट ॥ एहवे उघमाव्यां जाई गुणावलीयें कपाट ॥ ३ ॥ वीरमती हरखी घणुं, वहुने स्रादर दीध ॥ कीरति निज विद्यातणी, खन्नुताथी तिणे कीध ॥ ४॥

श्चर्य ।। श्चर्ही सासु वीरमती संध्याकाल श्रयो एटले वहुनी वाट जोती हती. तेवामां गुणावलीए श्चाबी कमाड छघडाव्यां. ॥ ३ ॥ वीरमतीए घणो हर्ष धरी वहुने श्चादर श्चाप्यो श्चने तेणीए लघुताशी योतानी विद्यानी कीर्त्ति करी. ॥ ४ ॥



वचन थकी आवी इहां प्रीतमधी प्रक्षन्न ॥ निव मुकाणो तुम तणो, बाइजी दाक्षित्र ॥ ५ ॥ जेह हवे मुजने कहो, ते हुं करूं प्रमाण ॥ वहिली जिम जाउं वली, जागशे जीवन प्राण ॥ ६॥

श्रर्थ ॥ वहु बोली-बाइजी, हुं तो तमारा वचन जपर प्रियतमथी बुपी रीते श्रहिं श्रावी बुं. तमारो प्रेम माराष्ट्री मुकाणो नहीं. ॥ ५ ॥ इवे मने जे कहो ते प्रमाणे करूं श्रने जेम बने तेम वेहेली जाजं. नहीं तो मारा जीवन प्राण जागी जाहो. ॥ ६ ॥

चंद नृपति द्वारांतरें, श्रवसोके श्रवदात ॥ थइ संपे सासू वहु, करवा मांकी वात ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ चंदराजा घार उपर उन्नो रही आ चरित्र जुए हे. सासुवहुएएकसंप अइवात करवा मांडी ॥॥॥॥॥ हाल श्चहारमी ॥

॥ नाह अबोला खेइ रह्या ॥ ए देशी ॥

वीरमती कहे रे वहु, उपवन लगे जावो ॥ कंबा एक कणे-रनी, दोडी क्षेत्र स्थावो॥१॥ नारी कांई जाणे नही, मित तुष्ठ क-हावे ॥ ते पण राति पडे, पानहीधी जावे ॥ नाण ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वीरमती वहुने कहे हे, तुं जपवन सुधी जा अने क्षेप्रना वृक्ती एक कंबा (सोटी) लइ दोडती आव. ॥ १ ॥ राणी गुणावली कांइ जाणती नथी. स्त्रीनी मति तुझ होय हे, ते पण रात पडे त्यारे गमे ते करे हे. ॥ २ ॥

मंत्री छापीश तुजने, तेइ कणेयर कंबा ॥ जिहां प्रीतम पोठ्यो हुवे, जाजे तिहां छविलंबा ॥ ना० ॥ ३ ॥ देजे तुं निरजय थकी, तस ठबका तीन ॥ तेहथी चंद नरेशरू, होसे निद्धाधीन ॥ ना० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ते करेणना वृद्यनी कंबा हुं तने मंत्री आपीश. पढी ज्यां तारो पति पोड्यो होय त्यां सत्वेर जइ पहोंचजे ॥ ३ ॥ ते कंबावडे तुं निर्जय यह त्रणवार ठबकारजे एटखे ते चंदराजा निष्प्राधीन यह जरे ॥ध॥

श्रावशुं प्रात समय यये, श्रापण बीहुं ज्यारे ॥ चंद महीपति जागशे, सेजमीशी त्यारे ॥ ना० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सासूतणां, वहु तुरत उजाणी ॥ रात तणी राजातणी, कांइ जीति नाणी ॥ ना० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ज्यारे श्चापण बंन्ने प्रातःकाले श्चावशुं त्यारे चंदराजा शब्या जपरथी जागरो ॥ ५ ॥ श्चावां सा-सुनां वचन सांजलीतत्काल वहु जजमवाली थइ. ते वखते तेणीने रात्रिनो के राजानो कांइ जय लाग्यो नहीं ।।६।

राजा पण केडे थयो, जाणीने खबखा ॥ पण जड़क समजे नही, सां-कह्या एणे सबखा ॥ ना॰ ॥ ७ ॥ वाडीमांहे राणी गइ, निशि निपट खंधारी ॥ ते सघखुं खोटूं दिवा, बीहे ठे जे नारी ॥ ना॰ ॥ ७ ॥ श्रर्थ ।। राजा चंद तेने श्रवला जाणी केडे पड्यो. पण प्रिक्षकपणे जाण्युं नहीं के ते श्रवलाए कोइक सबलाने सांकली लीधा है. ॥ ७ ॥ श्रंधारी रात्रे राणी एकली वाडीमां गइ. कहेवाय है के जे स्त्री दिवसे पण जय पामे है. पण ते सघलुं खोटुं है. ॥ ० ॥

कुश्रही कंबा कणेरनी, राणीये लीधी ॥ तत्क्षण ते श्रावी फरी, सासूने दीधी ॥ ना०॥ ए ॥ चंद तो श्राव्यां पाधरो, जिहां हे निज सज्जा ॥ जाणे हमणां श्रावदो, कंबा खेद जज्जा ॥ ना० ॥ १० ॥ श्रर्थ ॥ राणीए कणेरनी कुमली कंबा लीधी श्रने तत्काल पाठी फरी ते सासुने श्रापी ॥ ए॥ राजा चंद प-रजायों ज्यां श्रय्या हती त्यां श्राव्यो तेणे जाएयं के ते स्त्री कंबा लड़ने पोतानी शय्या पासे हमणा श्रावदो.

सेज उपर एक वस्तुनो, करी पुरुष पोढाड्यो ॥ चंदनृषे तेह उपरे, एक वस्त्र उढाढ्यो ॥ ना० ॥ १० ॥ दीपक पुंठे क्षिपी रह्यो, जिम स्त्री निव देखे ॥ पुरुषतणा उस स्त्रागर्से, नारी कुण खेखे ॥ ना० ॥ १२ ॥ स्त्रियं ॥ राजा चंदे वस्त्रनो पुरुष करी शय्या उपर सुवार्यो स्त्रने तेनी उपर एक वस्त्र उढाइयुं ॥ ११॥ पोते दीपकनी पज्याडे स्त्री देखे नहीं तेम बुपाइ रह्यो पुरुषना उस स्त्रागत स्त्री शा बेखामां है। ॥ १५॥

> वीरमतीये वहुजाणी, वांसे करथापी ॥ ते कण्यरनी कांबली, मं-त्रीने श्रापी ॥ ना० ॥ १३॥ जयनाणीश मन जूपनो, धीरज चित्त धरजे ॥ जे विधि में जाख्यु श्राठे, ते विधि तुं करजे ॥ना०॥ १४॥

अर्थ ॥ पठी वीरमतीए बहुना वांसामां करनो आपो मार्यो अने ते कऐरनी कंबाने मंत्रीने आपी. ॥१३॥ हे वधू, तुं मनमां राजानो जय राखीश नही अने चित्तमां धीरज राखजे अने जे विधि में कहाो हे ते विधि तुं करजे. ॥ १४ ॥

राणी ताम जतावली, कंबा खेइ श्रावी ॥ जुली चतुर यइ श्रातुरी, निव जोयो जगावी ॥ ना० ॥ १५ ॥ कपट पुरुषने जपरे कंबा ठब-कावी ॥ चंद चिंते धन्य मातने, वहु रूडी शीखावी ॥ ना० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ राष्ट्री गुषावली कंबा लईने जतावली जतावली आवी अने ते चतुर यह ने जुली गई अने पोताना स्वामीने जगाडी पण जोयो नहीं. ॥ १५॥ तेष्ट्रीए आवी पेला कपट पुरुष (बनावटी पुरुष) नी जपर कंबाने त्रणवार पठाडी. दीवा पाठल जजेलो चंद मनमां चिंतवे हे के, माताने धन्य हे के तेषे वहुने सारी शिक्षा आपी. ॥ १६॥

राणी क्रतकृत्या यइ, गइ सासू पासे ॥ नृपपण चरित्र निहालवा, थयो नारीने वांसे ॥ ना० ॥ १९ ॥ तिम जइ उनो द्वारांतरे, निव बीहे राजा ॥ कठण दृदय बीहे की ह्या, लख वाजे जो वाजा ॥ ना० ॥ १० ॥ अर्थ ॥ राणी कृतार्थ यई सासु पासे आवी, राजा पण तेमनुं चरित्र जोवाने तेमनी पाउल पड़्यो. ॥ १९ ॥ राजा प्रथमनी जेम दार पासे उनो रह्यों, जरा पण जय पाम्यों नहीं, खाखो वाजां वागे तो पण जे कठण हृदयनो होय ते बीए नहीं, ॥ १० ॥ मोहन विजयें श्रहारमी, कही ढाख पिवत्र ॥ श्रोता श्रागस सांजसो, सासु वहुनां चरित्र ॥ ना० ॥ १ए ॥ श्रर्थ ॥ मोहन विजये श्रा श्रहारमी पवित्र ढास कही. हे !श्रोता जनो, हवे ते सासु वहुनां चरित्र सांजसो. ॥ दोहा ॥

वहुर्ये सिव मांनी कह्यों, कंबतणो श्रिधिकार ॥ दीधी शाबासी घणी, सामुचे तेणिवार ॥ १ ॥ जाखे एम गुणावली, तुमे श्रवधारो मात ॥ नगरलोक जागे सहू, रखे लहे कोइ वात ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ वहुए श्चावी कंबानुं बहु वृत्तांत मांभीने कहां, ते सांजली सासुए तेने घणी शाबासी श्चापी. ॥ १ ॥ गुणावलीए कहां, हे माता, एक वात विचारो. श्चत्यारे नगरना सर्वे लोक जागे हे रखे कोश वात जाणी जाय. ॥ २ ॥

जो कोइ नृपने जइ कहे, तो मुज गित शी थाय ॥ तेणे ए नगरी लोकनो, कोइक करो उपाय ॥ ३ ॥ कहे सासू सुण रे वहू, मुजने तुं द्युं कहीश ॥ माहरे तो इमहिज गया, पापड वणतां दिश ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जो कोइ आवात जाणी राजाने कहेशे, तो पठी मारी गित शी थाय ? तेथी तमे आ नगर बोकोनो कांइक जपाय करो. ॥ ३ ॥ सासू बोढी-हे वहू, तुं मने शुं कहीश! माहरे तो तेवा केटला एक पापड वणता दीसता हता. ॥ ४ ॥

मुज ग्रह्माराविध खगे, न होए नींद प्रवेश ॥ पण नगरी जन सिव यशे, निद्धावश सुविशेष ॥ ए ॥ चंद विचारे हुं इहां, उतो एहने द्वार ॥ ए विद्या मुज उपरे, नही चाले निरधार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ भारा घरना दार सुधी निदानो प्रवेश अवानो नथी. बाकी सर्वे नगरीना खोको विशेष निदाने वश अइ जशे. ॥ ५॥ अहिं चंदराजाए विचार्थुं के हुं तेना घरने दार उन्नो हुं तेथी ए विद्या मारी उपर चालशे नहीं. ॥ ६॥

वहुने बेसारी तिहां, वीरमती स्वयमेव ॥ गर्ज ग्रहमांहे गइ, श्रानंदे तत्खेव ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ पत्नी वीरमती वहुने त्यां बेसारी पोते तत्काल आनंदथी अंदरनां गृहमां चाली गइ. ॥ ७ ॥ ॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ गंणां वीणण हुं गइ रे ॥ ए देशी ॥

वीरमतीयें रच्युं रे, श्रमुपम गर्दजी रूप ॥ सनेहा सांजलो ॥ घारतणे विद्र रहीरे, निरखे कौतुक जूप ॥ स० ॥ १ ॥ गर्दजरूपे ते करे रे, कूरस्वरे खर नाद ॥ स० ॥ तिणे नगरी मांहे थयो रे, निद्रानो छन्माद ॥ स० ॥ १ ॥ श्रर्थ ॥ पठी वीरमतीए गधेडीनुं रुप खीधुं, सर्वे स्नेही सांजलजो. राजाचंद घारनां विद्रश्री ते कौतुक जोतो हतो. ॥ १ ॥ तेणीए गधेडीना रूपे कूर स्वरथी खरनो नाद कर्यों, तेथी आखी नगरीमां निजानो जन्माद वधी पड्यो. ॥ १ ॥

नगरी लोक मूर्जित थयारे, वीरमतीयें विरुद्ध ॥ स० ॥ चक्रीदलजो नीसरे रे, तो पण न लहे शुद्ध ॥ स० ॥ ३ ॥ इम विद्या श्रवस्वापिनीरे, मूकी मन ज-ह्यास ॥ स० ॥ सासू रूपे मूलगेरे, श्रावी वहुश्वर पास ॥ स० ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ वीरमतीनी विरुद्ध एवा नगरीना लोको मूर्जित ग्रई गयां. ते वखते कदी चक्रवर्त्तीनुं दल नी-कले तोपए कोइने शुद्ध रहे नहीं. ॥ ३ ॥ श्रा प्रमाए वीरमतीए मनमां जल्लास लावीने श्रवस्वापिनी विद्या मूकी, पत्नी पोताना मूल रूपे ते वहुनी पासे श्रावी. ॥ ४ ॥

रे बहू में केहवुं कर्यू रे, नगरी खोक विकाय ॥ स० ॥ बार मणो नाजो घुरे रे, तोहे पण शुं थाय ॥ स० ॥ ५ ॥ चालो चंदनी वाकीयें रे, तिहां हे प्रथम सहकार ॥ स० ॥ तिहां बेसीने जाय शुं रे, विमल पुरीयें लगार ॥ स० ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ ते बोली-अरे बहु, में केंद्र कर्यु ? नगरीना लोक श्राचेत थह गया कि आ वखते बार म- एनो नाजो धुरे तोपण शुं थाय ? ॥ ५ ॥ हवे चालो चंदनी वाडीए जहए, त्यां एक आंबानुं वृक्त हे, ते जपर बेसीने विमलपुरीमां जह पहोंचीशुं ॥ ६ ॥

नगरी कोश श्रहारसें रे, वे श्रलगी श्रित तेह ॥ स०॥ पण तुजने श्रिनमेषमें रे, देखामीश धरी नेह ॥ स०॥ ४॥ निसुणीवचन विमातनां, रे सहसा चंद जूपाल ॥ स०॥ वाडी मांहे गयो वही रे, दीवो वृक्त रसाख ॥ स०॥ ७॥ श्रश्री ॥ ते नगरी श्रहीश्री श्रहारसो कोश श्रलगी के तो पण एक निमेष मात्रमां तने स्नेहश्री देखा-डीश. ॥ ४॥। श्रावां श्रपरमातानां वचन सांजली राजा चंद वाडीमां गयो त्यां एक श्रांबानं वृक्त जोवामां श्राव्युं.॥ ०॥

तस कोटर मांही रह्यो रे, ठानो खेइ करवाल ॥ सणा कौतुक जोवा चंदनुं रे, चित्त थयुं उजमाल ॥ सण्॥ ए॥ नृपचिंते मुजनारिमां रे, श्रवगुण नही एक टांक ॥ सण्॥ कुंगर फेरविया फिरे रे, ए सिव मातनो वांक ॥ सण्॥ १०॥ अर्थ ॥ ते वृक्षनी कोटरमां हाथमां खज्ज लइ गुप्तरीते रह्यो, अने चंदनुं चित्त कौतुक जोवाने जतकं-ठित थयुं. ॥ ए॥ राजाना मनमां एम आञ्युंके, मारी स्त्री गुणावलीमां जरापण अवगुण नथीं कुंगरने फेरववो होय तो फरी शके आ बधो मारी श्रपर मातानो वांक है।॥ १०॥

ए कोटर मांहे रही रे,जोडं सकल चित्र ॥ स० ॥ नारी विमलपुरी जाइ रे, ग्रुं ग्रुं करशे विचित्र ॥ स० ॥ ११ ॥ एहवे बिंहु सासू वहु रे, आवी तिणे आराम ॥ स० ॥ नृप चिंते सेतीखरे रे, बीजे तरु विश्राम ॥ स० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ हवे आ कोटरमां रहीने तेनुं बधुं चरित्र जोवुं, ते नारी विमलपुरीमां जईने ग्रुं शुं विचित्र करशे! ॥ ११ ॥ एहवामां सासु अने वहु बने तेजधानमां आव्यां पेसा कोटरमां बेठेसा राजा चंदने चिं-ता थह के रखे ते बीजा वृक्षमां विश्राम करे! ॥ १६ ॥



तो इहां रहीश हुं फूलतो रे, कौतुक जोइश केम ॥ स०॥ तिणे सहकारे एह-वेरे, आवी बिहु धरी प्रेम ॥ स०॥ १३ ॥ नृपने तिणे निरख्यो नही रे, कोटर मांहे तेण ॥ स०॥ बेठी सहकारे चढीरे, सासुबहु हरषेण ॥स०॥ १४॥ अर्थ ॥ जो तेम थशेतो पठी हुं अहिंशा फुलतो रहीश अने पठी तेमनुं कौतुक शी रीते जोइश!

राजा एम चिंतवे छे त्यां बंने स्त्री प्रेम धरीने ते वृक्तपासे आवी. ॥ १३ ॥ तेमणे कोटरमां रहेला चंदरा जाने निरख्यो नही अने ते बंने सासु वह हर्ष धरती आंवाजपर चडीवेठी ॥ १४ ॥

वीरमतीए सहकारने रे, दीधों कंब प्रहार ॥स०॥ विमलपुरी देखाडतुं रे, श्रमने श्रहो सहकार ॥ स० ॥ १५ ॥ वीरमती वचने तदा रे, चाढ्यो तरु श्राकारा ॥ स० ॥ देव विमान तणी परे रे, श्रप्रतिहत गति तास ॥ स० ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ पठी वीरमतीए श्रांबाना वृक्षनी जपर पेली कंबानो प्रहार कर्यों श्रने कहां के, हे श्रांबानावृक्ष तुं श्रमने विमलपुरी देखाड ॥ १५ ॥ वीरमतीनां श्रावां वचनश्री ते वृक्ष देवताना विमाननी जेम न श्राटकाय तेवी रीते श्राकाश मार्गे चाढ्युं ॥ १६ ॥

इजगणीशमी ढालमांरे, पाम्यो नृपति प्रमोद ॥ स० ॥
मोहन विजय कहे सुणो रे, ख्रागल विविध विनोद ॥ स० ॥ १९ ॥
श्रर्थ ॥ श्रा जंगणीशमी ढालमां राजा चंद घणो हर्ष पाम्योः श्री मोहनविजय कहे हे के, श्रागल विविध प्रकारनो विनोद थशे. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

नृप कोटर आवरणथी, रह्यो अप्रगट सुजाण ॥ केवल आवरणे जिस्यो, जीवने केवलनाण ॥ १ ॥ मनश्री पहिलो संचरे, गगने ते सहकार ॥ निरखे देश विदेश नृप, वन जपवन विस्तार ॥ २ ॥

श्रर्थ ॥ वृद्धना कोटरना आवरणथी श्राप्रगट रहेलो राजा चंद केवल श्रावरणथी श्रावृत एवा जीवने केवल ज्ञाननी जेम देखातो हतो. ॥ १ ॥ ते श्रांबानुं वृद्ध मनथी पण वधारे वेगमां चालवालाग्युं. तेमां रहेलो राजा चंद देश, विदेश, वन तथा उपवनना विस्तारने जोतो हतो. ॥ १ ॥

चाखे चंद्रातप विचे, ते तरु मंत्र प्रजाव ॥ जेहवी क्वीर समुद्रमां, तरती दीसे नाव ॥ ३ ॥ रे रे निरख गुणावखी, वीरमती कहे एम ॥ नगरी जं जो केहवी श्रांत, सुंदर श्रांतका जेम ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ मंत्रना प्रजावयी चंद्रनी कांतिमां चायतुं ते वृद्ध, द्वीर समुद्रमां जेम तरतुं नाव चाखे तेम देखातुं इतुं. ॥३॥ वीरमती बोसी-हे गुणावसी, जो, कुबेरनी श्चयका नगरी जेवी श्चा नगरी छ केवी सुंदर खागे हे?४

नवरंगा गंगा निरख, पुष्य प्रसंगा जेइ ॥ कखिमख कंद निकंदवा, श्रास पुत्रीसमएइ ॥ ५ ॥ इंदीवर नयणे निरख, कालंदी पंकिल्ल ॥ ए धरणी तरुणी तणो, जाण सही धम्मिल्ल ॥ ६ ॥

श्चर्ष ॥ जो, श्चा नवीन रंगवाली गंगानदी हे, जेनो प्रवित्र प्रसंग हे एवी ए गंगा कलिकालना मल रूपी कंदने नाश करवाने तरवार जेवी हे. ॥ ए ॥ श्चा कादववाली श्याम यमुना नदी हे तेने तारा नेत्र रूपी कमलग्री निरख. ते नदी पृथ्वी रूपी स्त्रीनो जाणे चोटलो होय तेजी लागे हे. ॥ ६ ॥

कर संज्ञायें गगनथी, निरखाडे हित छाए ॥

देश नगर वन शैल इह, वापी नदीश्र निवाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वीरमती हेतकरी हाथनी संज्ञाथी आकाशमांरही नव नवा देश, नगर, वन, पर्वत, जह, वा-पिका, नदी अपने नवाणो गुणावलीने बतावती हती. ॥ ७ ॥

॥ ढाख वीशमी ॥

॥ अरज अरज सुणोनें रूडा राजीया होजी ॥ ए देशी ॥

एहतुं एहतुं जोय गुणावली होजी, श्रष्टापद गिरि एह ॥ जरतें जरतें कराव्यो चिहुं मुखो होजी, कंचनमणि जिन गेह ॥ निरख निरख विनोद ए नव नवा होजी ॥ ए श्रांकणी ॥१॥ संजवादि संजवादि चार दक्षिण दिशा होजी, एहवो प्रगट हे पाठ॥ पश्चिम पश्चिम द्वार जिनेश्वरा होजी, सुपार्श्वादिक श्राठ ॥ नि०॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ हे गुणावली जो, श्रा श्रष्टापद पर्वत हे. तेमां जरतचक्रीए चोमुख कांचनमणिनो जिन प्रा-साद कराव्यो हे. श्रा नवनवा विनोदने निरखीले. ॥ १ ॥ ते विषे एवोपाह है के, तेनी दक्षिण दिशामां संभवनाथ विगेरे चार तीर्थकरो हे, तेना पश्चिम दिशाना द्वारमां सुपार्श्व विगेरे श्राह तीर्थकरो रह्याहे. १

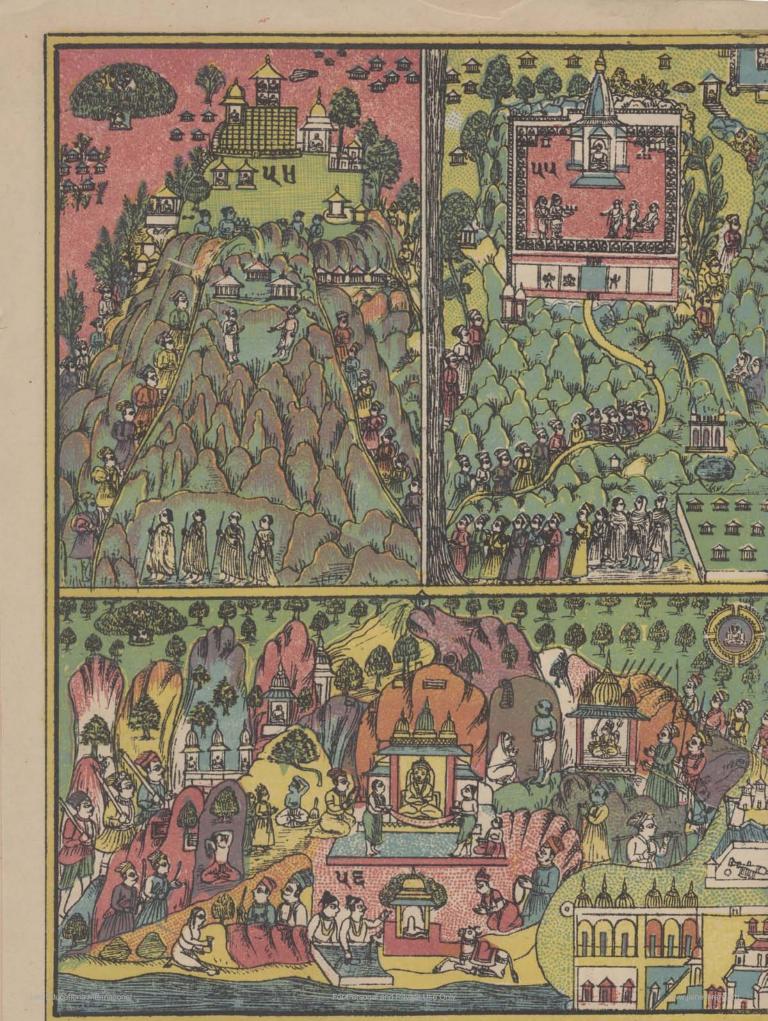
धर्मादि धर्मादि दश तीर्थंकरा होजी, हे उत्तर दिशि एह ॥ क्षज क्षज श्राजित दोय जिनवरा होजी, प्राची दिशि ससनेह ॥ नि० ॥ ३ ॥ इहां जिन इहां जिन नाम उपाजेशे होजी, दश मुख खंका जूपाल ॥ तीरथ तीरथ एह जगमां वडो होजी, सुर नदी वलय विशाल ॥ नि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेनी उत्तर दिशामां धर्मनाथ विगेरे दश तीर्थकरो हे अने पूर्व दिशामां अफिषभ अने अजितनाथ ए वे तीर्थकरो है ॥३॥ खंकानो राजा रावण अहिं आवीने जिननाम कर्म उपार्जन करशे, जेनी आसपास वखयाकारे गंगानदी है, एवो आ गिरि जगत्मां मोदुं तीर्थ है ॥ ॥॥

तिमज तिमज देखाड्यो घूरथी होजी, पर्वत शिखर समेत ॥ रे! वहू रे! वहू तमे करो वंदना होजी, हियडे आणीजी हेत॥निणाध॥पहिलो पहिलो बारमो बावीशमो होजी, चोवीशमो जिन जाण॥चारे चारे विना विंशति जिना होजी,तास निर्वृत्ति निरवाण॥६॥ अर्थ ॥ तेवी रीते दूरथी समेत शिखरनो गिरि बताब्यो अने कहां के, अरे वहु,तमे हृदयमां हेत लावी आ तीर्थने वंदना करो. ॥ ५ ॥ पहेला, बारमा, बावीशमा अने चोवीशमा तीर्थंकर ए चार जिनशिवाय विश्व तीर्थंकरोना निर्वाण आ समेतशिखर जपर अवाना हे. ॥ ६ ॥

संप्रति संप्रति सत्तर तिर्थंकरा होजी,पाम्या इए गिरि मुक्ति ॥ इहां विक इहां विक त्रि-ए त्रिज्ञवन धनी होजी,लहेरो खविचल मुक्ति ॥ निणाणा तिमवै तिमवै जार जुड वहू होजी,विक्षी खर्बुदाचल इहा ॥ एहवे एहवे खाव्यो पंथमें होजी, श्रीसिद्धाचल तिहा ॥०॥





श्रर्थ ॥ हाल सुधीमां सत्तर तीर्थकरो श्रा पर्वत उपर मुक्ति पाम्या हे श्रने हवे त्रण जगत्पति तीर्थ-करो श्रिहें श्रविचल मुक्तिने प्राप्त करहो. ॥ ७ ॥ तेम करता वैजार गिरि श्राव्यो एटले वीरमती कहे, हे वधू,जुवो श्रा वैजारगिरि, जुवो श्रा श्रर्बुदाचल (श्राबु) गिरि,एम करतां मार्गमां सिष्ठाचल तीर्थराज श्राव्यो । ०

सुण वहू सुण वहू तीर्थए मोटको होजी, नामे इरित पलाय।। तो जिए तो जिए नयणे निहाली उहोजी,तस तिहुं श्रण जस गाय ॥ए॥ पूरव पूरव नवाणुं समोसर्या होजी, जग गुरु श्रादि जिणंद ॥सिक्ष सिक्ष श्रनंता इहां हुश्रा होजी,केइ थया ज्ञानदिणंद॥निजारण।

श्चर्य ॥ वहु, सांजलो श्चा सर्व तीर्थमां मोटो है, तेनुं नाम खेवाथी पाप दूर भागी जाय है, तो जेखें नेत्रथी जोयो होय तो तेना यशने त्रण जुवनना लोको गाय है ॥ ए ॥ श्विहं पूर्वे नवाणुं पूर्व समोसर्था है श्वने जगद् गुरु श्रीश्चादिनाथ प्रजुपण श्विहं समोसर्था है, ते शिवाय श्विहं श्वनंत सिष्ट थया है श्वने कड़क ज्ञानना सूर्य थया है (केवल ज्ञान पाम्या है) ॥ १०॥

प्रथम प्रथम ज्ञार श्रीनरतनो होजी,बीजो तेम दंडवीर्य ॥ त्रीजो त्रीजो ज्ञार इशानें इनो होजी,चोथो महें इपित धीर्य ॥११ ॥ ब्रह्में इं ब्रह्में इं कर्यो पांचमो होजी,छठो जुवन-पित कीध ॥ सगर सगरनो सातमो श्राठमो होजी,व्यंतरपित सुप्रसिद्ध ॥ नि० ॥१२ ॥

श्रर्य ॥ त्रा तीर्थनो प्रथम उद्धार श्रीजरतचकीए कर्यो हतो, बीजो उद्धार दंडवीर्थे कर्यो हे, त्रीजो उद्धार इशानइंड कर्यो हे अने चोथो उद्धार धीर एवा महेंड्पतिए कर्यो हे. ॥ ११ ॥ पांचमो उद्धार ब्रह्मेंड्रे कर्यो हतो, हो उद्धार उवनपतिए कर्यो हतो. सातमो उद्धार सगर राजाए कर्यो हतो, अने आ- हमो उद्धार व्यंतरपतिए करेंद्रो प्रसिद्ध हे. ॥ १२ ॥

नवमो नवमो जकार चंद्रयशातणो होजी, चक्रधर दशमो जकार॥ आगे आगे जकार वली हुशे होजी,रामादिकना जकार॥१३॥इणि गिरि इणि गिरि आव्याथी हुवे होजी, सफल मानव अवतार॥ त्रिविधे त्रिविधे करो तुमे वंदना होजी,ए जवतारणहार ॥ १४॥

श्रर्थ ॥ नवमो लद्धार चंद्रयशाए कर्यो हतो,श्रने दशमो लद्धार चक्रवर्तीनो हतो. एम रामप्रमुखना बीजा लद्धारो श्रागल थरो. ॥ १३ ॥ श्रा गिरिए श्राववाथी मनुष्यनो श्रवतार सफल थाय हे. तेथी हे बहु, तमे मन वचन कायाए करी तेने वंदना करो, ए तीर्थ जवमांथी तारनार हे. ॥ १४ ॥

ख्यांगे खागे वली निरखो वहू होजी,तीरथ श्रीगिरनार॥ मुगति मुगति वधू इहां परणशे होजी, राजुलनो जरतार ॥नि०॥१५॥ पुंकरिक पुंकरिक गिरिवर सारिखो होजी, महिमा जद्धिथी उंड ॥ खूतो खूतो पद गजमझनो होजी, तिणे इहां गजपद कुंक ॥ नि० ॥१६॥

श्चर्य ॥ श्चागल जुर्च, स्ना श्रीगिरनारनुं तीर्थ के श्चिहिं राजेमतीना स्वामी श्रीनेमनास्र प्रजु मुक्तिरूपी वधूने परणशे. ॥ १५ ॥ स्ना पुंकरिकगिरि पुंकरिकना सरखो के, तेनो महिमा समुद्रश्ची छंको (गंजीर) के; श्चिहें ऐरावत गर्जेंद्रनो चरण खुचवास्री एक हास्री पगलानोकुंड स्रयेखोके. ॥ १६ ॥

तीरथ तीरथ एम नवनवा होजी, श्रवलोकांत्रे रसाल ॥ पत्रणी पत्रणी वींशतिमी जणी होजी, मोहनविजये ढाल ॥ निण् ॥ १७॥ अर्थ ॥ आ प्रमाणे वीरमती पोतानी वहु गुणावलीने नवनवा तीर्थो बतावती हती; आ रसिक एवी विश्वमी ढाल श्रीमोहनविजये कही है. ॥ १९ ॥

दोहा ॥

नदी समुद्ध श्रवगां थकी, रे वहू तुं श्रवलोक ॥ मध्य धीप वींटी रह्यो,विविध रतनना थोक॥पहोलो जोयण लाख दो,लांबो वलयाकार ॥ वारि वृद्धितिम उंम पण,तटथी तास विचार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ वीरमती कहे छे:-हे ! वहु, श्चा नदी श्चने समुद्रने श्चलगां करी जुवो, ते मध्यदीपने वींटाइने रहेलो समुद्र हे तेमां जातजातना रलोना श्रोकहे. ॥ १ ॥ ते पेहेलो समुद्र वे लाख योजन लांबोहे, ते वलयाकारे रहेलो हे, तेज प्रमाणे तेना जलनी वृद्धि श्चने जंकाइ तेना तटश्री जणाय हे. ॥ १ ॥

पट जोयण दश सहस तिहां, जंको जोयण हजार ॥ सोख सहस जोयण तिहां, जंबी शिखा विचार ॥ ३ ॥ ते जपर दोय कोशनी,

वेल वृद्धि सदीव ॥ चिहुं दिशें कलसाकार चन्न, जापे जुननपईन ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ दश हजार योजन तेनी एटेंग्ने, हजार योजन ते जंडो हे अने सोल हजार योजन तेनी जंबी शिखा (शग) है. ॥ ३ ॥ ते जपर वे कोश हमेसा वेल आवे हे, तेनी चारे दिशाए कलशना जेवी आकृतिए चार जुननपति शोजेहे. ॥ ४ ॥

तल मुख जोयण सहस दस, दल इग जोयण सहस्स ॥ पोहला छंडा एग लख, मान सदा इम तस्स ॥५॥ तिहां जल रक्तक सुर घणा, सदा शास्वता जाव ॥ एहवो लवण समुद्ध ए, एहनो प्रबल प्रजाव ॥ ६ ॥

श्रर्थ ।। दश हजार योजन तलीयुं हे अने एक हजार योजन तेनुं दलीयुं हे, अने एक खाख पोहोखा अने छंडा हे आ प्रमाणे तेनुं मान हे. ॥ ५ ॥ त्यां जलना रक्तको घणा देवता हे अने ते शाश्वता हे, आवो ते लवण समुद्रहे. तेनो प्रजाव पण प्रबल हे. ॥ ६ ॥

> इम वातो करते थके, ते सहकार सुरंग ॥ श्राव्यो विमलपुरी जणी, सीमाये श्रनुषंग ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ श्राम सासु वहु वार्त्तो करतां हतां, त्यां ते आम्बवृद्ध श्रानंद साथे विमल पुरीना सीमाडा जपर श्राव्योः ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकविशमी ॥

॥ तुने कान बोखावे हो नवरंग चूडावासी ॥ ए देशी ॥ राणी नव पल्लव नव कुसुमा, निरखे तिहां वनराजी ॥ ते शोजाये सुर-पतिनुं वन, ठर्फ खोक गयो खाजी ॥ रूडे चंद निहाखे ॥ हो नवरंग नारी चेष्टा ॥ ए त्यांकणी ॥ १ ॥ त्यंव कदंव निंबतरू जंबु, मुनिद्धम तास त-माखा ॥ नाग पुन्नाग प्रियंगुं सुरंगा, मधुप न्ययोध विशाखा ॥ रू० ॥ १ ॥ श्चर्य ॥ राणी गुणावलीए त्यां नवपक्षव वाली श्चने नवीन पुष्पश्ची सुशोजित वननी श्रेणि दीठी. तेनी एवी शोजा इती के जेने देखी इंज्रुं नंदनवन खज्जपामीने उध्व खोकमां चाह्युं गयुं हे. चंदराजा रूडी रीते नारीनी नवीन चेष्टा जोवेहे. ॥ १ ॥ तेमां श्चांबा, कदंब, खींबडा, जांबू, सप्तपर्ण, ताड, तमाख, नागरवेख, नागकेशर, प्रियंगुखता, महुडा, श्चने विशाखवड इता.॥ १ ॥

उपवन तेम मनोहर निरखे,जाई जुई नवमङ्घी ॥ चंपक केतकी छुंद से-वंत्री, जज्वल फुली वली ॥ रूणा३॥ जज्वल कुसुम ते दहदिशि फुल्यां,

परिमल पवन सुहायो॥ ज्योतिष् चक्र गगनयी मानुं,श्रवनी उपर श्रायो ॥ ४॥ श्रश्ये ॥ ते वृक्तोथी मनोहर एवं उपवन जोता हता. वली तेमां जाइ, जुइ, नवमिक्षका, चंपो, केतकी, डोलर श्रने सेवंत्रीना वृक्ष उज्वलपणे फुट्या हता. ॥ ३॥ दशे दिशामां उज्वल पुष्पो फुली रह्यां हतां, तेना सुगंधने पवन प्रसारतो हतो. जाणे पृथ्वी उपर ज्योतिष्चक श्राव्युं होय तेम देखातुं हतुं ॥ ४॥

जल उज्वल जलाशय केरु, चंदनीयें करी दीपे ॥ नौतन धरणी चंद ए प्रगटयो,गगन चंदने जीपे ॥ रूणाया प्रायत पृथु चक्र श्रवसाने, जल

तृत वापी जगीसा ॥ मानुं विमलपुरीनी निज युति,जोवाना आरीसा ॥रूणा६॥ श्रर्थ ॥ चंद्रनी कांतिश्री जलाशयनुं जल जज्वलपणे दीपतुं इतुं, जाणे आकाश चंद्रनी स्पर्धानी पृथ्वी जपर बीजो नवीन चंद्र प्रगट थयो होय तेम लागतुं हतुं. ॥ ५ ॥ तेना बेडा जपर विशाल अने गोलाकार वापिकाचे जलथी त्ररेली हती,ते जाणे विमलपुरीने पोतानी कांति जोवाना अरीसा होय तेवी देखाती हती.६

श्चागल नगरी निरस्ती राणी, विस्मय करी मन हिंसे॥ जे कैलास कहावे ते एवा, रोहणाचल दीसे ॥क्ष्णाणा प्रति मंदिर दीपकथी नगरी, नेत्रो-पमाये हरखे ॥ मानुं वनमां श्चाव्यो जाणी, चंदनरिंदने निरखे ॥ रू० ॥ ७ ॥ श्चर्थ ॥ ते नगरीने श्चागल जोइ राणी विस्मय पामी मनमां विचार करवा लागी के, जे कैलासपर्वत कहे हे, ते श्चा हरो ? श्चथवा रोहणाचल कहे हे, ते हरो?॥ ७॥ ए नगरी नेत्रनी जपमाने पामेला प्रत्येक मंदिरना दीपकथी जाणे वनमां श्चावेला चंदराजाने हर्षथी नीरखती होय तेम देखाय हे.॥ ७॥

पूछे राणी कहो तुमे बाई, ए नगरी ते केही ॥ वीरमती कहे निसुणो बहुजी,विमलपुरी ते एही ॥रूणाए॥ इम कही ते सहकार गगनथी,तत्- क्षण ख्राव्यो हेठो ॥ मूकयो उपवन मांहे तेणे, नृपति जूएठे बेठो ॥रूणारण॥

श्चर्य ॥ राणिए पुन्धुं, बाइजी, कहो, श्चा कइ नगरी? वीरमती बोखी-हे वहु, जे विमलपुरी कहेवाय छे तेज श्चा. ॥ ए ॥ एम कह्यं, तेवामां तो ते श्चाम्नवृद्ध तत्काल श्चाकाशयी नीचे जतयों. वीरमतीए तेने जयः वनमां मूक्यो, राजा चंद बेठो बेठो ते जुवेडे ॥ १० ॥

सासु वहू बेहू जतर्यां तरुषी,नगरी साइमी चाखी ॥ मांहो मांहे ताखी देती, करती श्रितिही खुशाखी ॥ रूणारशा नरपति पण ते बेहु न जाणे, तिम पूंठख परवरिज ॥ विद्या एम विमातनी निरखी,तोही पण नव डरीज ॥ रूण ॥ रूश ॥ श्रर्थ ।। सासु श्रमे वहु बंने वृक्त उपरथी नीचे जतर्या, मांहे मांहे ताली देतां श्रमे श्रित खुशालीबता-वतां ते नगरीनी सामे चाह्यां. ॥ ११ ॥ राजा चंद ते बंने जाणे नहीं तेवी रीते तेमनी पाउल पाउल चाह्यो. पोतानी श्रपर मातानी श्रावी विद्या जोइ तोपण ते जरापण डर्यो नहीं. ॥ ११ ॥

ते जेम बेहु चडवडती चाही, तिमहिज नृपति विराजे ॥ श्रनुक्रमे एम करतां श्राव्या,नगरीने दरवाजे ॥ रू० ॥१३॥ बहुनो हाथ ग्रहीने सासू, नगरी कीध प्रवेश ॥ पावन पोल मांहे मन हरषे, श्राव्यो चंद नरेश ॥ रू० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ ते बंने जेम चालती तेम राजा पण पाछल चालतो. एम चालता श्चनुक्रमे नगरीने दरवाजे श्चाच्यां. ॥ १३ ॥ सासूए वहुनो हाश्च पकडी नगरीमां प्रवेश कर्यो राजा चंद पण मनमां हर्षपामी नगरीनी पवित्र पोलमां श्चाच्यो. ॥ १४ ॥

सासूए वहुने तेमीने,नगरी श्रवलोकावी ॥ पाणिग्रहण तणो जिहां मंमप, ते बेहु तिहां श्रावी ॥ रू० ॥१५॥ गीत नृत्य वाजित्र विविध गति, धवल मंगल बहु होवे ॥ गुणावली तिम वीरमती बेहु, श्रति मनरंगे जोवे ॥ रू० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ सासुए वहुने तेडीने बधी नगरी बतावी. पठी बंने ज्यां पाणिग्रहणनो मंगप हतो त्यां श्चावी. ॥ १५ ॥ त्यां गीत, नृत्य, विविध जातनां वाजित्रो श्चने घणां धवल मंगल श्चातां हतां. गुणावली श्चने वीरमती बंने मनमां श्चानंद पामी ते जोती हती. ॥ १६ ॥

नगरी मांहे श्राव्यो राजा, मन वंडित सिव सीधी ॥ सेवक निजस्वामी श्रादेशे, नृपने प्रणिपत्य कीधी ॥ रू०॥१५॥ श्रोता निसुणो श्राजास्वामी,विविध विनोद ते करशे ॥ विमल पुरीये प्रेमला लडी,चंद नरिंद ते वरशे ॥ रू० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ राजा नगरीमां श्चाब्यो, तेणे पोताना मननी वांग्रना सिष्ट करी. सेवके पोताना स्वामीनी श्चा-इाग्री राजाने प्रणाम कर्यो. ॥ १७ ॥ हे श्रोताचं सांजलो, श्चाजानगरीनो राजा चंद श्चिहें विविध जातना विनोदं करशे श्चने विमलपुरीनी प्रेमला लक्ष्मी चंदराजाने वरशे. ॥ १० ॥

> एकविश ढाक्षे चंद चरित्रनो, एह प्रथम उल्लास ॥ पंडित रूपविजय सुपसाये, मोहन वचन विलास ॥ रू० ॥ १ए ॥

श्चर्य ॥ एकविश ढाले चंद राजानां चरित्रनो प्रथम छद्वास पूरो थयो. पंडित रूपविजयजीना पसायथी श्रीमोहनविजयनां वचननो श्चाविलास हे. ॥ १ए ॥ सर्व गाथा ॥ ५१४ ॥

॥ इति श्रीप्राकृत प्रबंधे चंदचरित्रे वीरसेनदिक्ता चंदनजन्मवीरमतीविद्या प्राप्ति वधू विप्रतारण वचनरचना विमलपुर्यागमनरूपानिरानिश्चतस्त्रनिः कलाजिः प्रतिपादितः प्रथमोल्लासः॥

॥ प्रथम उल्लास समाप्तः ॥

चंदराजानो रास.

॥ स्रय द्वितीयोह्नासः प्रारच्यते ॥ ॥ दोहा ॥

शांति सुधारस सकल विज्ञ, परम सौख्य दातार ॥ सोलसमो जिनवर नमुं, जगग्रह जगदाधार ॥१॥ चंद नरिंद चरित्रनो,बीजो रचिश जल्लास ॥ शील कला कलना थकी, प्रगट जास सुप्रकाश ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ ज्ञांति रूप श्रमृत रसे जरेखा, सर्वना स्वामी, परम सुख जे मोक् तेने श्रापनारा, जगत्ना गुरू श्रने जगत्ना श्राधार रूप एवा सोखमां तीर्थकर श्रीक्षांतिनाथ प्रजुने नमुं हुं ॥ १ ॥ हवे चंदराजाना चरित्रनो बीजो ज्ञास रचीजा, जेमां शीखत्रतना कखाना वर्णननो जत्तम प्रकाश प्रगट थाय हे.॥ २ ॥

रचना प्रथम चरित्रनी, करी घणे कविरत्न ॥ तो पण सुगुणे आण्वो, सेखे मुज परयत्न ॥ ३ ॥ जगमां वचनादिक श्रिधिक,

यद्यपि कला अशेष ॥ धेनु सकल पयदायिनी, पण सुरधेनु विशेष ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चा चरित्रनी प्रथम घणां कविरलोए रचना करी हे तोपण, छत्तम गुण कहेवामां मारो प्रयल खेखे है ॥ ३ ॥ जगत्मां जो के सर्व कलाउंहे पण तेमां वचनादिकनी कला श्वधिक हे. बीजी सर्व गायो छुध स्त्रापनारी हे पण कामधेनु विशेष कहेवाय है. ॥ ४ ॥

ताम्र तणुं कंचन करे, पारद जेम श्रान्य ॥ तेम विरसनो
रस करे,वचन रसायन रूप ॥ ५॥ मीठ वचने रस दीये,
मीठो चंद संबंध ॥ तिम निसुणो मीठी सन्ना,ए सोनुं ने सुगंध ॥ ६॥
श्रार्थ ॥ जेम पारो तांबानुं श्रानुपम सुवर्ण बनावे हे, तेम रसायण रूप वचनो विरसने सरस करी दे हे.
॥ ५ ॥ श्रा चंदराजानुं चरित्र मीठुं हे, श्राने तेनां मीठां वचन दोय तो रस श्रापे हे तेम हवे जो मीठी सभा तेने सांज्ञ तो ए सोनुं श्राने सुगंध हे. ॥ ६ ॥

श्राच्यो हे नगरी ताणी, पहिसी पोसे राय ॥ निसुणो श्रागस तेहनो, जे संबंध कहेवाय ॥ ७ ॥ प्रथम पोस रक्तक जना, करे वालाण श्रासंक ॥ जय जय चंद नरिंद तुं, गुण गण रयण करंक ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ राजा चंद विमलपुरीनी पेहेली पोले आन्यों हे, हवे तेनों जे संबंध आवे ते सांजलों. ॥ ७ ॥ ते राजाने जोइ पेली पोलना रक्तजनो आखंडपणे वखाण करवा लाग्या के, हे चंद राजा, तमे जय पामों. जे तमे गुणोनागणरूपी रत्नोना करंडीया रूप हे.॥ ए ॥

जिसे तुमे करुणा करी, श्राज मिट्यो उचाट ॥ बीज निशाकर जिस श्रमे,जोता हूंता वाट ॥ पाठ धारो श्रागल तमे,चंद चरित्र विचित्र ॥ सिंहलपुर स्वामी तणी, कीजे सजा पवित्र ॥ १० ॥ श्रम्थं ॥ हे राजा, तमे करुणा करी जले पधार्या, श्राज श्रमने जचाट मटी गया बीजना चंद्रनी जेम श्रमे तमारी राइ जोता इता ॥ ए ॥ विचित्र चरित्रवाला हे ! चंद राजा तमे आगल पगलां करो, अने सिंइलदीपना स्वामीनी सजाने पवित्र करो ॥ १० ॥

वचन सुणी सेवक तणां, चिंते चित्तनरिंद ॥ श्रपरिचित्ते परिचितपरें, किम करी जाप्यो चंद ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आवा सेवकोनां वचन सांजली राजाचंद चित्तमां विचार करवा लाग्यो के, आ अपरिचित लोकोए परिचितनी जमे हुं चंदराजा एम शी रीते जाणी लीधुं. ॥ ११ ॥

॥ ढाख पहेसी ॥

॥ ईडर आंबा आंबली रे; ईडर दाडिम डाख ॥ ए देशी ॥

कहे नगरी श्राजा धणी रे, निसुणो श्रहो प्रतिहार ॥ कुणवे चंद नरेशरूरे श्रई व तुज श्राकार ॥ चतुरनर ॥ बोल विचारी बोल ॥ ए श्रांकणी ॥१॥ चंदतो गगने जिंग-योरे, बीजो ते कुण चंद ॥ जावादे इव किम करेरे, फोगट एशा फंद ॥ च० ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चाजानगरीनो राजा चंद बोल्यो श्चरे प्रतिहार, सांजल, चंदराजा कोए हे? तुं श्चाकृति जोइ शुक्यो. हे चतुरनर, विचारीने बोल. ॥ १ ॥ चंद तो श्चाकाशमां खग्यो हे, बीजो चंद कोए हे ? मने जवादे हह केम करे हे श्चावा फोगट फंद शा करे हे? ॥ २ ॥

पय प्रणमी कहे पोली जरे, कांई जिपो मामूर ॥ ढांक्यो किमरहे जाब में रे, जल हल जम्यो जे सूर ॥ च० ॥ ३ ॥ ठानी किम करीने रहे रे, मृग मद केरी वास ॥ साचा तुमने जंलरूया रे, थाज चंद प्रकाश ॥ च० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ प्रतीहार चरणमां नमी बोटयो-हे राजा, तमे बुपावोमां. जाजलमान प्रगट थइ कगेलो सूर्य ग्राबडे ढांक्यो केम रहेशे?॥ ३॥ कस्तुरीनी सुगंध शी रीते ग्रानी रहे? में तमने साचे साचा जलाखी खीधा हे, राजा चंद प्रकाश थार्ड.॥ ४॥

हठ करीने कर प्रही रहा। रे, मांडी खेंचा ताण ॥ नृप कहे वलगे हे किशुं रे, श्रक्षगो रहे तुं श्रजाण ॥ च० ॥ ५ ॥ तुं जूलो कुण रातनो रे, शठ हठ मांडे केम ॥ दीसे सूतो श्रगासडे रे, श्रणजाएयुं कहे केम ॥ च०॥ ६ ॥ जाले चंदने मुखयकी रे, जूलीशमा श्रविवेक ॥ चंद सरीखा तो हशे रे, पोइवी छपर श्रनेक ॥ च० ॥ ७ ॥ कुण छलवे निज नामने रे, एइवो कुण हे छठ ॥ किम लेश देवा विना रे, इम कांई जंपे जूठ ॥ च० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ पत्नी प्रतीहार हठ करी तेनो हाथ पकडी जजो रह्यो, मांहे मांहें खेचताए थवा लागी. राजा चंदे कहुं, अरे जाइ केम लडे हे? तुं अजाए हुं. माराथी अलगोर हे. ॥५॥ अरे शह, तुं रात्री ए जुली गयो लागे हे. आवी खोटी हठ शा माटेमांमे हे? तुं अगासे सुतो होइश, आवुं अएजाएयुं केम कहे हे? ॥ ६॥ तुं चंदने मुखब्री जाले हे, अविवेकथी जलीशमा, चंदना जेवा पृथ्वीजपर अनेक हशे। ॥ ५॥ पोताना नामने जलवीदे एवो कोए इष्ट होय? तुं लेवा देवा विना शामाटे जुटुं बोलेहे १॥ ०॥

पोर्से सागत ताहरी रे, जोये सागत होय ॥ तो श्रापुं नागीश नही रे, दीधे छुर्वस कुण होय ॥ च० ॥ ए ॥ एके किम श्राडो फरे रे, टांके ठे शा माट ॥ वेसा वनमां बहु थई रे, मात जोती हशे वाट ॥ च० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जो आ पोलनो तारो कांइ लागो होय तो हुं आपुं, हुं जागी जाइश नहीं. देवामां कोण छुर्वल होय? ॥ ए ॥ तुं मने आको फरीने केम रोकेंग्रे, अने शामादेः टोंके ने ? मने वनमां घणी वेला थई ने, मारी माता वाट जोती हशे. ॥ १०॥

कहें सेवक प्रञ्ज तम तणुं रे, ग्रहतो श्रदारसें कोश ॥ जावाद्यो जोलामणी रे, मुजशुं मकरो रोष ॥ च० ॥ ११ ॥ तुम सरिखा मोहोटा मृषा रे, जाखे इम जो श्रिवेह ॥ तो किम जार धरे धरा रे, किम जग वरषे मेह ॥ च० ॥ ११ ॥ श्रिव ॥ प्रतिहार बोह्यो हे प्रञ्ज, तमारुं गृहतो श्रिहिंशी श्रदारसो कोश दूरवे, मारी साथे जोलामणी करवी जावाद्यो, रोष करशो नहीं. ॥ ११ ॥ तमारा जेवा महान पुरुषो ज्यारे श्राम मृषा बोलशे तो प्रवी श्रा पृथ्वी केम जार जपाडशे श्राने जगत् जपर मेघ केम वर्षशे? ॥ १२ ॥

तुम जेवा सेवुं श्रमे रे, तिणे सिव लिहिए निरित ॥ जिहां जेहवा नर सेवि-येरे, तिहां तेहवी फल पित ॥ च०॥ १३॥ मुज स्वामीने तुम थकी रे, कारिज हे महाराज ॥ मानो माहरी वीनती रे, चंद गरीब निवाज ॥ च०॥ १४॥ श्रर्थ ॥ तमारा जेवा पुरुषोनी श्रमे सेवा करी ए हीए तेथी श्रमने वधी समजण पमेहे, ज्यां जेवा नरने सेविए त्यां तेवां फलनी प्राप्ति थायहे. ॥ १३॥ हे महाराज, मारा स्वामीने तमारी साथे एक काम हे, तेथी हे गरीब निवाज चंदराजा, मारी विनंति मान्य करो. ॥ १४॥

जूप विचारे मातजी रे, जो सांजलहो नाम ॥ लहिणानुं देवुं थहो रे, फग-डानुं नही काम ॥ च० ॥ १५ ॥ सेवक वचने नरवरू रे, छाट्यो छागल सार ॥ पगपग प्रणमे चंदने रे, बहुलो जन परिवार ॥ च० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ राजा चंदे मनमां विचार्यु के, जो मारूं नाम माता वीरमती सांजलहो तो क्षेणानुं देवुं श्रइ जहो, माटे हवे वधारे जगडो करवानुं काम नथी. ॥ १५ ॥ पत्नी सेवकनां वचनथी राजा आगल चाल्यो. धणो परिवार ते चंदराजाना चरणमां प्रणाम करतो हतो. ॥ १६ ॥

> मोहनविजये पहिली कही रे, बीजा उल्लासनी ढाल ॥ आगल अति मीठी कथारे, सुएजो यह उजमाल ॥ च० ॥ १७॥

अर्थ ॥ श्री मोहन विजये आ बीजा लक्षासे पहेली ढाल कही. आगल घणी मधुर कथा आवशे, सर्वे जत्साह धरी सांजलजो. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कीधी संप्रतिहार चद, बीजी पोख प्रवेश ॥ तिहां पण रक्षक कहे नमी, श्रावो चंद नरेश ॥ १ ॥ श्रम स्वामी तुम वाटडी, जोये घणुं सदीव॥ चाहे क्षायिक जावने, जिम संसारी जीव ॥ १ ॥ अर्थ ॥ राजा चंदे आगल बीजी पोलमां प्रवेश कर्यो. त्यांपण ते पोलना रक्तके नमीने कहां के, चंद राजा पधारो. ॥ १ ॥ अमारा स्वामी हमेसा तमारी राह जोवेडे. संसारी जीव जेम क्वायिक जावने चाहे तेम तेष्ठं तमने चाहे डे. ॥ २ ॥

तुम आवे श्रमजूपनी, होशे कारिज सिक्ति ॥ जेम चक प्रगटये थके, चक्रीघर नव निधि ॥ ३ ॥ जूप कहे रे चंदने, ज्रम जूलो बो केम ॥ जाषे कनक तरू जिम कोइ, दोडे होवा हेम ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ जेम चक्रवर्त्तींने चक्र प्रगट थवाश्री नविनिधि सिद्ध्यायः तेम तमारा श्राववाश्री श्रमाराना का-येनी सिद्धि थशे. ॥ ३ ॥ राजा ए कह्यं—जेम सुवर्णनुं वृद्ध जासवाश्री ज्रमित माणस सोनुं खेवाने दोडेने तेम श्रोरे प्रतिहार, तमे चंदना ज्रमश्री केम जुलोनो ? ॥ ४ ॥

> जिष्णा जणान नाईयो, सहुए एक निशाल ॥ जे आगल सेवक तमे, जिष्णे तेह जूपाल ॥ ५ ॥ तुम नृपहूंती माहरे, कुण दिननो पहि-चान ॥ शुं कारिज ने मुज थकी, एतो त्रीजो तान ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अरे जाईच, तमे सर्वे एक निशाले जाएा जाएा चेंगे। जेनी आगल तमे सेवकडो ते राजा-पण जालो लागे हे. ॥ ९ ॥ तमारा राजानी साथे मारे कया दिवसनी पिछाए हे, वली तेने मारी साथे शुं काम हे? ए तो वली त्रीजो तान हे. ॥ ६ ॥

दीसो हो धूरत तमे, किहां शिख्या श्रविवेक ॥ चंद चंद एइदुं कही, धूत्या होशे श्रनेक ॥ ९॥

अर्थ । तमे बधा धूर्त लागो हो, आयो अविवेक क्यां शिख्याहो? तमो ए चंद चंद एवुं कहीने अनेकने धूती लीधा हरो. ॥ 9 ॥

॥ ढाल बीजी ॥ ॥ वाला खलगा रहो ॥ ए देशी ॥

रक्षक कहे श्रमे सिंहल नृपना, सेवक बुं मन जाव्याजी ॥ श्रमने एक संकेत कहीने, पोले पोले पठाव्या ॥१॥ साचुं बोलोजी, चंद नरिंद म-हाराज, साचुं बोलोजी ॥ ते संकेते तो तुमे खामी, नगरी मांहे श्राव्या जी ॥ चंद नरिंद कहीने तेथी, श्रमे तुमने बोलाव्या ॥ साव ॥ १ ॥

छर्थ ॥ रक्तक बोह्यो-महाराज, अमे सिंहल राजाना मनगमतासेवक ठीए. ∖ा राजाये एक संकेत क-हीने अमने पोले पोले पढावी बेसार्यांडे. ॥ १ ॥ हे चंदराजा, तमे सत्य बोलो. ते संकेतथी तमे आ नगरीमां आवोडो अने तेथीज अमोए तमने चंदराजा कहीने बोलाव्या डे. ॥ २ ॥

नृप कहे ते संकेत कहो मुज, कहे अनुचर करजोमीजी ॥ सिंहल जूपे अमने तेडी, जारूयुं अंतर होनी ॥ सा० ॥ ३ ॥ पूरव पोले जहने बेसो, पहोर राति जब जावेजी ॥ पोलमांहे दोय नारीकेडे, एक पुरुष जे आवे ॥ सा०॥ ४ ॥

श्चर्य ।। चंदराजा बोह्यो. ते संकेत मने जणावो. सेवके हाथ जोडीने कहां, हे महाराज, श्चमारा स्वामी सिंहलराजाए श्चमने बोलावी श्चंतर् होमीने श्चा प्रमाणे कहां. ॥ ३ ॥ हे सेवको, तमे पूर्वने दरवाजे ज- इने बेसो, एक पोहोर रात्रि गया पठी पोलमां बे स्त्रीनी केमे एक पुरुष जे आवे. ॥ ४ ॥

तेह ने चंद निरंद कही ने,नमजो आदर देई जी॥ मुज पासे तुमे आवजो विह ला,तेह ने संगे खेई॥ सा०॥ ४॥ स्वामी वचने अमे प्रति पोले, बेठा अइने धीठाजी॥ पह वे दो नारिने पूंठल, पोले तमने दीठा॥ सा०॥ ६॥ अर्थ॥ तेने चंदराजा कही ने नमस्कार करी आदर आपजो अने तेर्डने साथे तेडी मारीपासे वेहेला आवजो.॥ ४॥ एवा अमारा स्वामीनां वचनथी अमे प्रत्येक पोल उपर धीठ पणे बेठा इता, तेवामां आप पोलमां वे स्त्रीनी पाइल आवता तमने जोया।॥ ६॥

तेह्थी आजा नगरी स्वामी,चंद नरिंद प्रमाणुंजी॥सिंहल जूपवचनथी जाण्या,बीजुं किम करी जाणुं ॥सा०॥३॥ स्वामी वचन ते किम लोपाये, मनमां तुमे अवधारोजी॥ते माटे तमे सिंहल नृपना,मंदिर सुधी पधारो ॥सा०॥७॥ अर्थ ॥ ते संकेतथी हुं तमने आजा नगरीना स्वामी चंदराजा जाणुं हुं. आ बधुं अमारा स्वामीनां वचनथी जाण्युं हे, नहीं तो शीरीते जाणुं?॥ ९॥ तमे मनमां विचारोके खामीनुं वचन अमाराथी केम करीखोपाय? माटे हे राजा, तमे सिंहल राजाना मंदिर सुधी पधारो.॥ ०॥

खाख वचन जो किह्ये तोपण, मोटा केम वश यावेजी ॥ काने जाख्यो केम करीने,कोश्यी गज घर आवे ॥साणाणा सुखिखित वचन सुणी सेवकनां, मनमां चंद विचारेजी ॥ जो माहरा इहां किंकर होवे,तो ते एहने वारे ॥ साण ॥ १० ॥ अर्थ ॥ अमे खाखो वचन कहीए तोपण मोटा खोको केम वश याय? मोटो गर्जेंड काने जाख्यो केम करी घरमां आवे? ॥ ए ॥ सेवकनां आवां संदर वचन सांजखी चंदराजाए मनमां विचार्यु के, जो मारा सेवको अहिं हाजर होय तो तेर्छ आ प्रतिहारने वारे. ॥ १० ॥

मात तणो जय सिंहस नृपनो, वली एहवो पलचे मोजी ॥ हूं एका की नगर परायो, करवो केम निवेडो ॥सा०॥११॥ समजाव्या पण ए नही समजे, करवी श्री कचपच एह थीजी॥जेह वुं जेह थी कारिज थाये, बांध डोम ते तेह थी॥सा०॥११॥ अर्थ ॥ मारे अहिं मातानो जय, वली आ सिंहस राजानो आवो आग्रह, हुं एक खो अने आ नगर परकुं तो हवे आनो निवेडो केम खाववो.१॥ ११ ॥ आ खोको समजाव्या समजता नथी. हवे एमनी साथे शी माथाकूट करवी १ जेनाथी जेवुं कार्य थाय, तेनी साथे तेवी बांध डोड करवी ते युक्त डे ॥११॥ चंद कहे तुमे चालो जाई, जिहां कहो तिहां हुं आवुंजी ॥ मुंढामुंढ तुमारा नृपने, आवीने समजावुं ॥ सा० ॥१३॥ आगल चंदने सेवक पुंटे, आवे जूआ जूआजी ॥ साथे पोल तणा जे रक्तक,आवी जेला हूआ ॥ सा० ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ आवुं विचारी चंदराजा ए कहुं, चालो जाइ, ज्यां तमे कहो त्यां हुं आवुं, तमारा राजाने मोढे

थइ हुं तेमने समजावुं. ॥ १३ ॥ एम कही चंदराजा छागल चाड्यो छने सेवको पाग्रल जुदा जुदा छाव-वा लाग्या छने जे बीजी पोलोना रक्षको हता, तेर्ड पण छावीने जेला घया. ॥ १४ ॥

खमा खमा चंद रायने करता,पग पग तिम मनुहारजी॥ ते ईम करता श्राट्या तेडी, सिंहल नृप दरबार॥सा०॥१५॥ राजाने श्रागलधी जणाव्युं, चंद महीपति श्राट्याजी॥ सिंहलराये निशाण सुरंगा, जीत तणा वजडाव्या ॥ सा०॥१६॥ श्रर्थ ॥ चंदराजाने पगले पगले खमा खमा कहेता तेर्च तेने सिंहल राजाना दरबारमां तेडी लाव्या.॥ १५॥ सेवकोए जह राजाने श्रागलधी जणाव्युं के चंदराजा श्रावे हे. एटले सिंहल राजाए विजय निशाननां वाजां वगडाव्यां.॥ १६॥

श्रादर देइ तेड्या मंदिर, चतुर चंद महीपाखजी ॥ बीजा उल्लास तणी कही बीजी, मोइनविजये ढाल ॥ सा० ॥ १९ ॥ श्रर्थ ॥ तेणे श्रादर श्रापीने चतुर एवा चंदराजाने पोताना मंदिरमां तेडया. श्रीमोहनविजये श्रा बीजा उल्लासनी बीजी ढाल कही. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सिंहल जूपे चंदने, गृह आवंतो दीत ॥ धाईने जाई मह्यो, लोचन श्रमीय पइत ॥ १ ॥ जले पधार्या चंद तृप, वीरसेन कुल चंद ॥ आज कृतारय हुं थयो, आज घणो आणंद ॥ १ ॥

अर्थ ॥ सिंहल राजाए ज्यारे चंदराजाने पोताने घेर आवतो जोयो ते वखते ते नेत्रमां हर्षना अशु लावी दोडीने तेने जेटी पडयो. ॥ १ ॥ ते बोहयोके, वीरसेन राजाना कुलमां चंद्र समान एवा चंदराजा जले पधार्या, आज हुं कृतार्थ थयो अने मने घणो आनंद थयो. ॥ १ ॥

> उत्कंठा मिलवातणी, हुंती घणी माहाराज ॥ पूर्व केख लख्या थकी,सफल थई ते खाज ॥३॥ इर थका पण तुमे हता, मनहुती खासन्न॥इर सूर जिम धरणीथी,विकसे पंकज वन्न ॥४॥

अर्थ ॥ मने तमने मखवानी घणी छत्कंठा हती, पण ते पूर्वना जे खखेख खेख ते प्रमाणे आजे सफख यह ॥ ३ ॥ जेम सूर्य पृथ्वीथी घणो दूर छे तथापि कमखना वन विकाश पामे छे. तेम क्षेमे दूर हता तो पण मारा मननी नजिक हता. ॥ ४ ॥

> किहां चकोर हिमकर किहां, किहां मोर किहां मेह ॥ श्रखगा तो पण दूकमा, साचो जिहां सनेह ॥ ५॥ संबंधे जे सांजरे, शी श्रधि-काई तह ॥ विण संबंधे सांजरे, सयण वमपण एह ॥ ६॥

अर्थ ॥ क्यां चकोर पद्दी अने चंद्रमां ! क्यां मोर अने मेघ! तेलं घणा अलगा हे तथापि ज्यां साची स्नेह हे तो तेलं निजक है. ॥ ए ॥ जे संबंधधी सांजरे, तेमां शी नवाइ ? पण जे संबंध वगर सांजरे ते सज्जाननी वडाइ हे. ॥ ६ ॥

सिंधु ज्यसन उदये शशि, संबंधे तिम होय ॥ विण संबंधे शीत गुणे, प्रीति कुमुदिनि जोय ॥७॥कपट वचन रचना इसी,सिंहल राये कीध ॥ निज सिंहासन बेसवा, चंद नृपतिने दीध ॥ ७॥

अर्थ ॥ चंद्रना उदयथी समुद्रने होन्न थाय, ते संबंधने लीधे हे अने संबंध वगर चंद्रनी शीतलताथी पोयाणीने प्रीति जोवामां आवे हे. ॥ उ ॥ आ प्रमाणे सिंहल राजाए कपटनी रचना करी अने चंद राजा- ने बेसवाने पोतानुं सिंहासन आप्युं. ॥ ए ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नायतारे तमे चालया गढईमरे रे, धणने खेजो साथ रे लाल जोवन वसिछ नाय तो रे ॥ ए देशी ॥

साहिबारे सिंहल नृप श्रादेशथी रे, बेठो गुणावली कंतरे लाल ॥ देश विदेश जिहां तिहां रे, पोषाये जाग्यवंत रे लाल ॥ जाग्य प्रवल नृप चंदनुं रे ॥ ए श्रांकणी ॥ १ ॥ सा० ॥ योजन योजन रस कुंपिकारे, पग पग प्रगटे निधान रे सास ॥ श्रणवाहाला वाहला होये रे, मोहोटुं जाग्य प्रधान रे लाल ॥जा०॥१॥ श्रर्थ ॥ सिंहल राजानी श्राङ्गात्री गुणावलीनो स्वामी बंदराजा सिंहासन लपर बेठो. जाग्यवंत देश के विदेशमां जाय तो पण पोषायठे तेम चंद राजानुं जाग्य प्रबल हे ॥ १ ॥ जेनुं सार्र जाग्य होय तेने पोजने योजने रसकूंपी मले हे. तेने पगले पगले इन्यना निधान प्राप्त श्राय हे श्रने जे हरमन होय ते वाहाला मित्र श्राय हे. सर्व ठेकाणे जाग्य प्रधान हे. ॥ १ ॥

सा० सिंह्स तृप कहे चंदने रे, हो कुशस्या माहाराज रे लाल ॥ श्रंतरयामी हो तमे रे,रायजादा शिर ताज रे लाल ॥जा०॥३॥ सा० चाहे चातक जिम मेहने रे, वहजाणी जिमगायरे लाल॥तिम श्रमे तमने चाहतारे,दिन एता माहारायरे लाल॥जा०॥४ श्रम् ॥ सिंह्स राजा चंद राजा प्रत्ये बोस्या, केम महाराजा कुशल हो? तमे श्रमारा श्रंतर्यामी श्रमे मस्तकना ताज हो. ॥ ३॥ हे महाराजा, श्राटला दिवस श्रया, चातक जेम मेघने चाहे, श्रमे गाय जेम वाहमाने चाहे तेम श्रमे तमने चाहीए हीए. ॥ ४॥

साठ ते तमे आज पधारियारे, लेखे ययो अवतार रे लाल॥शा पुरुषानो मेलो मलेरे, जो तुषे किरतार लाल ॥त्राठ॥ध्॥साठ शी कीजे परदेशमांरे, तमतणी जिक्त निरंदरे लाल ॥ तुम मुख शशि दीठे थयुंरे, विल्लित मन अरविंदरे लाल ॥ जाठ ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ ते तमे आजे खेडाए पधार्या, तमारा मलवाथी मारो अवतार लेखे थयो. जो किरतार पशु मंतुष्ट थाय तो शा(सज्जन) पुरुषनो मेलाप थाय हे. ॥ ५ ॥ हे राजा, परदेशमां तमारी शी जिक्त करीए? तमारो मुख चंद्र जोवाथी मारुं मन रूप अरविंद विकाश पाम्युं हे. ॥ ६ ॥

सा० इहां तो श्रमतणी मानजोरे,श्रादर ते मनुहाररे लाल॥जिम छुर्वल माता तणेरे,जामण्डे व्यवहाररे लाल॥जाव॥आसा० गजबगस बोथें सहीरे, तुमतणी मोकुं वींकरे लाल॥तो श्रमे तुमने शुं श्रापीचेरे,जेणे तमे पामो रीकरे लाल॥जाव॥व॥ अर्थ ॥ अहीं अमाराथी जे बने ते आदर मानी लेजो हर्बल माता पोताना बालकने मात्र दुलामणाथी प्रेमनो व्यवहार करे हे. ॥ ९ ॥ हाथी अश्व विगेरे वाहनोथी तमे मोज करोहो तो अमे तमने हुं आपी-ए के जेथी तमे रीजाइ जार्छ? ॥ ए॥

सा॰ तमे पाछ धार्या होत जो रे,श्यम तणे देश कदेयरे लाल॥तो नजरे करता श्रमे रे,गाम नगर पुर केयरे लाल ॥जा०॥ए॥सा० श्रमे श्रवसर चुकूं नहीरे,रखे श्रम जाणता मूढरे लाल ॥ इहां तमे श्रमे बेहु सारिखारे,कहीये वे तमने श्रगूढरे लाल ॥१०॥

श्चर्य ॥ जो तमे श्चमारा देशमां किद चरण पधराव्या होत तो श्चमे तमने गाम, नगर के पुर क्यारना नजर कर्यो होत. ॥ ए ॥ श्चमे हवे श्चवसर चुकीशुं नहीं, रखे तमे श्चमने मूढ जाएता, श्चहीं तमे श्चमे सरखा ठीए. श्चा वात तमने खुद्दो खुद्धी कहीए ठीए. ॥ १० ॥

सा० एहवा सिंहल रायनारे, निसुणी वचन विलासरे लाल॥चंद वदन यकी कर्यों रे,दंत मथुष प्रकाशरे लाल॥जा०॥११॥सा० चंद जरोसे मुक्रनेरे, एवडुं शुं सन्मा-नरे लाल ॥ हूं परदेशी प्राहुणोरे, तमे मोटा राजान रे लाल ॥ जा० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ सिंहल रायना श्चावा वचन विलास सांजली, चंदराजा पोताना मुखमांथी दांतना कीरणोने प्रकाश करता बोह्या ॥ ११ ॥ मारी छपर चंदराजानो जरुंसो राखी श्चाटलुं वधुं सन्मान शुं श्चापोलो हुं एक परदेशी मेमान लुं श्चने तमे मोटा राजा हो. ॥ १२ ॥

सा० चतुर यई चृको कशुंरे,खोटे जरमे सुजाणरे खाख ॥ शीमनुहार ए कारमीरे, कुण दिननी जखखाणरे लाख ॥जा०॥१३॥सा० चंद पूरव दिशानो धणीरे,हुंतो क्तत्री पुत्ररे खाख ॥ देखी पेखी विण स्वारथेरे, किम किहेचे जत्सूत्ररे खाख ॥जा०॥१४॥

श्रर्थ ॥ हे राजा, तमे चतुर श्रने सुक्त श्रद्ध केम चुको हो ? श्रा खोटो ज्रम हे. तमारे श्रने मारे कया दिवसनी जंतखाए? ते विचारो. ॥ १३ ॥ चंदराजा पूर्व दिशानो स्वामी हे, हुं तो एक ऋत्रिय पुत्र हुं, स्वार्थ वगर देखी पेखीने शामाटे खोटुं बोलीए? ॥ १४ ॥

सा॰ दीठो तमे चंद सारिखोरे,मुक मांहे अनुसाररे खाख॥ ते जूखे जूखो खरे रे, सरिखा केई संसाररे खाख॥जा०॥१५॥सा०राचे ग्रण जाख्या विनारे,सरिखासरिखे कुण रे खाख॥बेहु छज्ज्वल पण सांजलोरे,कर्धुर किहां किहां खुणरे खाल ॥ जा०॥१६॥

श्रर्थ ॥ तमे मने चंद जेवो देखो छो, मारामां तेना जेवो श्रनुसार (श्रणहार) हशे. रखे तमे जुलोछो. श्रा संसारमां कड़क सरखे सरखा मली श्रावे छे. ॥ १५ ॥ गुण जाण्याविना सरखे सरखा जोड़ने कोण राजी श्राय? जुवोने कर्पूर श्रने लुण बने जजलां छे पण गुणमां केटलो फेर छे? ॥ १६ ॥

साण मुकी द्यो जोलामणीरे, कहे सिंहल महीपालरे लाल ॥ मोहनविजये त्रीजी कहीरे, वीजा जल्लासनी ढालरे लाल ॥ जाण ॥ १७ ॥ अर्थ॥दे सिंहल राजाए कहां,आवं जोलपण मूकीद्यो मोहनविजये आ बीजा जल्लासनी त्रीजी ढाल कही. १९

चंदराजानो रासः

॥ दोहा ॥

सुपुरुष ठानो किम रहे, श्राचारे श्रवसूंब ॥ तस्व जो जलमे ठिपाडीये, जिम तरी श्रावे तुंब ॥ १ ॥ मृगमद परे ठाना रहो, ग्रण पण श्रंबर चूर ॥ प्रगट करे ते तुम जणी, रहो जो यद्यपि दूर ॥ १ ॥

अर्थ ।। आचारथी जन्वल एवो सत्पुरुष जेलखाया विना ठानो रहे नहीं. तुंबडाने लाखवार जलमां जुबाडी बुपावीए तो पण ते तरी आवे हे. ॥ १ ॥ कस्तुरी लगावी हाना रहो पण तेना वस्त्र साथे लागेला गुण तमे दूर रहेशो तो पण तमने प्रगट करशे. ॥ २ ॥

श्चविष गणंते साहिबा, हवे मह्या ठो श्चाज ॥ नाम कहो थाछ प्रगट, हठ न करो माहाराज ॥ ३ ॥ एम कहेते थके श्चावीन, सिंहल मंत्री ताम ॥ कपटी कृटिल कदायही, छुमैति हिंसक नाम ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ हे साहेब, केटला दिवसनी श्रवधि गएतां श्राज तमें मली श्राच्या हो. हे महाराजा,हवे तमारुं नाम कहो श्रने प्रगट थार्ज, हह करो नहीं ॥ ३ ॥ एम कहेतामां ते वखते सिंहल राजानो मंत्री तत्काल श्रावी चडयो. ते कपटी, कुटिल श्रने कदाग्रही हतो; वली तेनुं हुमीत एवं हिंसक नाम हतुं. ॥ ४ ॥

जिस कहे तिहां यस पण नही, चसवे माकडमास ॥ रिव उदयास्त संगे सदा, खोटिहासने चास ॥ ५ ॥ प्रणमी चंद निरंदने, बेठो तेह स्थासन्न ॥ तिणे प्रारंजी कुटिसता, करी वदन सुप्रसन्न ॥ ६ ॥

श्चर्य ।। ते ज्यां जख कहे त्यां स्थलपण न होय. ते वधुं डाकडमालधी चलवे सूर्य जगे त्यारधी श्चस्त थाय त्यां सुधी ते खोटी हाल चाल करे. ॥ ५ ॥ ते मंत्री चंदराजाने प्रणाम करी तेनी नजिक बेठोः पठी तेणे मुख प्रसन्न करीने क्रटिलता श्चादरवा मांडी. ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोश्री ॥

नंद सलूणा नंदना रे लो ॥ तें मुने नांखी फदमां रे लो ॥ ए देशी ॥ सांजलो चंद नरेसरूरे लो ॥ रायजादा श्रलवेसरूरे लो ॥ श्राज विहंगम मीठ-मारे लो,नयणे तुमने दीठमारे लो ॥ १ ॥ सिंहल नृपनी विनितरे लो,तमे नथी मानता इयावती रे लो॥न करो इम वहु कानीयेंरे लो,रहीयाला रहमानीयेंरेलो ॥१॥ श्रर्थ ॥ हे पृथ्वीपित रायजादा तमे हुं कहुं ते सांजलो. आज मारे पहीर्च मधुर श्रया (सारां शुक्न श्रयां) के जेशी तमे मारा नयनवडे जोवामां श्राव्याः ॥ १ ॥ हे राजा, तमे श्रमारा सिंहल राजानी विनित शामाटे नथी मानता? एवी घणी हठ करो नहीं, हे रहीश्राला रह मानीए ॥ १ ॥ जूठे किम कुल उलवोरे लो,शुं तमे वालक जोलवोरे लो॥ श्रवतुं श्रमे नथी जाप-तारे लो,वाद तजो थाछ ठतारे लो ॥ ३ ॥ मानता नथीशे वांकडेरे लो ॥ श्रहो श्राचा नगरी धणीरे लो, श्राशा तमथी श्रवे घणी रे लो ॥ ४ ॥ श्रव्याचा नगरी धणीरे लो, श्राशा तमथी श्रवे घणी रे लो ॥ ४ ॥ श्रवो श्रवे श्रे श्रे श्रमे श्रसत्य

बोखता नथी माटे वाद करवो बोडी दइने बता थार्छ. ॥ ३ ॥ तमे श्रमारा शा वांके मानतानथी ? हवे संकडामणमां श्राव्या हो, क्यां जाशो ? श्ररे श्राजा नगरीना घणी, श्रमारे तमारी पासेथी घणीश्राशा हे. ४ देवि वचने श्रमे जलख्या रे खो,नाम ठाम कुख पारख्या रे खो।मांगे श्रंधारुं कूटीये रे खो,ते वाते किम दूटीये रे खो।।ए॥ रात थोडी वेशतो घणा रे खो, थें हो साच कोमामणा रे खो॥तमने शुं कहीये वलीरे खो, पाणी न खमे पातलीरे खो ॥६॥ श्रथं ॥ श्रमे देवीनां वचनथी तमने जेखबी खीधा हे. वली तमारां नाम,ग्रम श्रमे कुल पारखी खीधां हे. जो डांगथी श्रंधाराने कूटवा मांभीए तो ते वातथी केम हटाय? ॥ ए॥ रात थोडी हे श्रमे वेष घणाहे. माटे हे! कोमामणा राजा, हवे सत्य कहो. तमने वली शुं कहीए? पातली होय ते पाणीने खमे नहीं. ॥६॥ हरणी पण जंची वही रे खो, थोडी घणी रयणी रहीरे खो ॥ श्रति ताएयुं खमतुं नथीरे खो,बीजा नथाछ एकथीरे खो ॥ऽ॥ खागो सचिव हठ सुंदरू रे खो,बोछो चंद नरेशरू रे खो ॥ शुं कारिज हे चंदथीरे खो, श्रवर जला शुं कोइ नथीरे खो?॥ठ॥ श्रथं ॥ हरणी पण जंची श्रावी हे. एटखे मृगशर नक्षत्रना तारा जंचे श्राव्या हे, तेथी रात घणी श्रेडी रही हे. हवे श्रति ताएयुं खमे तेम नथी, श्रमे तमे एकथी बीजा श्रता नथी. ॥ ९ ॥ मंत्री हठ करी संदर पणे बोलवा खाग्यो त्यारे चंदराजा बोड्यो, तमारे चंदराजानुं तेयुं शुं काम हे ? शुं कोइ बीजा तेना जेवा जला नथी ? ॥ ए ॥

श्राजा नगरीये हुं रहुं रे सो, हवे तमने साचुं कहुं रे लो ॥ चंद करे तेहुं करुं रे लो, मानजो ते सघलुं खरुं रे लो ॥ए॥ सिंहल नृप हरख्यो घणुं रे लो, लागुं वचन सोहामणुं रे लो ॥ थयुं तनु फण्स तणी परेरे लो,हिंसक वली इम उच्चरेरे लो॥१०॥ श्रार्थ।। ब्यो, हुं तमने साचे साचुं कहुं बं के हुं श्राजानगरीमां रहुं बं, जे चंदराजा करे ते हुं करुं, श्रातमे सघलुं खरुं मानजो. ॥ ए ॥ सिंहल राजा घणो हर्ष पाम्यो, तेने श्रा वचन घणुं सारुं लाग्युं. तेनुं शरीर फण्सना फलनी जेम प्रफुद्धित थयुं. ते वखते हिंसक मंत्री बोह्यो. ॥ १०॥

श्रहो प्रज ए श्रानाधणी रे लो, चिंताटाल शे श्रापणी रे लो ॥ ठानुं शुं ठे चंद रा-जथी रेलो, कारिज विणशे लाजथी रे लो॥११॥चंद चतुर चित्त चिंतवे रे लो, ए हिंसक इम शुं लवे रे लो ॥ कारिजशुं एह वुं हशे रे लो, ते किम करी मुजथी थशे रे लो ॥१२॥ श्रियं ॥ हे प्रज, श्रा श्रानागरीना धणी ठे, ते श्रापणी चिंता टालशे. चंदराजाथी श्रापणे शुं ठानुं राखवानुं ठे, लाज राखशुं तो श्रापणुं काम बगडशे. ॥ ११ ॥ चतुर चंदराजा चित्तमां चिंतववा लाग्यो के, श्रा हिंसक मंत्री शुं लवे ठे? एवं शुं कारज हशे, श्रने ते माराथी केम करीने थशे?॥ १२ ॥

श्राव्यो वश हुं शुं करुं रे लो, ए धूरत टोलुं खरूं रे लो।। एहनी गितमें पारली रे लो, यात्रा नही घर सारखी रे लो।। १३॥ सिंहल कहे शिवोचमें रे लो, चंद पड्या शुं श्रालोचमें रे लो।। ठग करी रखे तमे जाणतारे लो, रखे कंटकमे ताणता रे लो।।१४॥ श्रर्थ।। हुं श्रिहें श्रावी वश थइ पमयो; हवे शुं करुं! श्रा तो बधुं धूतारानुं टोलुं हे. तेमनी गित में पा- रखी खीधी घर जेवी यात्रा होय नहीं।। १३ ॥ सिंहले शीधताथी कही वाहयुं के, हे चंदराजा,विचारमां केम पड्या? रखे तमो अमने ठम जाएता अने रखे अमीने कांटामां ताएता ? ॥ १४ ॥

संशय धरो हो शा यकी रे लो, कहींचे हिये इम छातुर यकी रे लो।।
पर उपकारने कारणे रे लो, सुत कोइक माता जणे रे लो।। १८॥
दिनकर छजवाल्लं करे रे लो, कुण तस पेसकसी धरे रे लो॥ वृक्ष फल्ले फल फूलची रे लो, मिण वेचाये बहु मूलची रे लो॥ १६॥
छर्ष।। तमे शामाटे संशय करो हो? छमे छा। छातुरताची कहीए हीए. पर जपकारन माटे कोइक माता पुत्रने जणे हे.॥ १८॥ सूर्य प्रकाश छाण्या करे हे, तेने कोण पेशकसी (कर) जरे हे? वृक्षो फल फुल छापेहे छने मिण बहु मूल्यची वेचाय हे.॥ १६॥

निश दिन जे सरिता वहें रे लो, तस कुणशीकापण कहें रे लो।। सरस निरस तृण आदरीरे लो, आपे प्रध पयोधरी रे लो।। १५॥ उपकारी तुम जेवमा रे लो, ते जग थोमा दीवमा रे लो।। तुम ज-पर आशा लरी रे लो।। १६॥

श्रर्थ ॥ नदी रातदिवस वह्या करें हे तेने कोण शिखामण श्रापें है गाय श्रने जेंस नीरस घास खाइने श्रादरश्री सरस दूध श्रापे है. ॥ १९॥ तमारा जेवा छपकारी जगत्मां थोडा जोवामां श्रावे हे,श्रमे तमारी छपर खरी श्राशा राखी है, माटे करुणा करीने श्रमारुं कार्य सिद्ध करों ॥ १०॥

ढास ब्रह्मा मुख जासनी रे खो, सुंदर बीजा उद्घासनी रे खो ॥ पुष्य घणुं ए जूपनुं रे खो, मोइन कहें कविरूपनुं रे खो ॥ १ए ॥ श्रर्थ ॥ श्रा बीजा उद्घासनी सुंदर चोथी ढाल कही हे. मोइनविजय कहे हे के,ए राजानुं श्रने कविना रूपनुं घणुं पुष्य हे. ॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

सिंहल नृप सिंहलिप्रया, तिम हिंसक मंत्रीश ॥ छुष्टि कनकध्वज त-नुज, कपिला धावजगीस ॥ १ ॥ ठठो चंदनरेसरू, मध्यपरिठद एह ॥ जिम पंचे द्विये सिहत, मन सोहे ससनेह ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ सिंह्यराजा, सिंह्यराजानी प्रिया, हिंसक मंत्री, कुष्टि (कोडीयो) कनकध्वज पुत्र श्चने क-पिखा धाव्य ॥ १ ॥ तेमां उठो चंदराजा—जे मध्य परिवेदमां छे—ते पांचई दियोमां जेम मन शोजे तेम पांचेमां शोजे हे. ॥ १ ॥

तव श्राजापित उचरे, श्रहो सिंहल जूपाल ॥ कहो काज पडदो तजी, जिमहूं लहूं दयाल ॥ १ ॥ पांचे चिंतातुर तमे, दीसो ठो कहो केम ॥ बाहिरतो विवाहनो, मांड्यो मोहोठाव एम ॥ ४ ॥ श्रर्थ ॥ श्राजापित चंद बोह्यो, श्ररे सिंदलराजा, तमे पडदो ठोडी जे कार्य होयते कहो. जेबी हुं ते विषे दया जावे विचारूं. ॥ ३ ॥ तमे पांचे जाएा चिंतातुर केम खागो हो? स्त्रने स्त्रहिं बाहेर तो विवा-हनो महोत्सव मांड्यो हे. ॥ ४ ॥

> नाम ग्राम कुल गोत्र मुज, किम जाणो सहु कोय ॥ ते सघ ुं मांडी कहो, जे कांइ व्यतिकर होक ॥ ५॥ जावुं वे खाजापुरी, थई जारो प्रजात ॥ कह्या विना किम जाणीये, तुम मनकानी वात ॥६॥

श्चर्य ॥ तमे सौ मारुं नाम, ठाम, कुल अने गोत्र शिरीते जाणो? ए बधुं जे कांइ वृत्तांत होय ते मने मांडीने कहो. ॥५॥ मारे आजापुरीमां जावुं हे, रखे प्रजात श्वर्श जाशे. तमारा कह्याविना तमारामन-नीवात शीरीते जाणीशकाय? ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मन मोहनां खाख ॥ ए देशी ॥

सिंहल नृप खादेशथीर, मन मोहना लाल ॥ हिंसक थयो वाचाल हो, जग सोहना लाल ॥ वीर नृपति सुत साहिबारे ॥ म० ॥ विनति कहुं महीपाल हो ॥ज०॥ त्राता धाता कार्यना रे ॥म०॥ दायक शाता लाम हो ॥ज०॥ क्यो पनदो तुमथी हवे रे ॥म०॥ छहो खाशा विश्राम हो ॥ज०॥१॥

श्चर्य ॥ सिंहस राजानी आज्ञायी हिंसक मंत्री वाचासययो श्चर्यात् ते बोह्यो हे, जगशोजित वीररा-जाना कुमार, हुं तमने विनित करं हुं ॥ १ ॥ हे राजा, तमे त्राताहो, श्वमारा कार्यना कत्तीहो, शाता-नादाताहो श्वने स्वामीहो हवे तमारी वचे शो पडदो राखवो. कारण के तमे श्वमारी श्वाशाना विश्राम हो? १

किम दोहणु संताडीयें रे ॥मणा खेवा जावुं तक हो ॥जणा नाचे बांधी घूघरा रे॥मणा शो तिहां घूंघट वक हो ॥जणा३॥ सेवक रहे सेवा विषे रे ॥मणा तिणे केही करवी खाज हो ॥जणा श्रवधारों थई एकमना रे ॥मणा श्रम उलंग महाराज हो ॥ जण्या ॥॥

श्चर्य ॥ जास लेवा जावीनै दोणी संतामवी ? ज्यारे घुघरा बांधीने नाचवुं होय तो पठी बांको घुंघट शामाटे ताणवो. ? ॥ २ ॥ सेवक सेवामां रहे तेमां तेणे शामाटे लक्षा राखवी ? हे महाराज, श्चाप एक चित्तयह श्चमारा श्वनिदायने बराबर ध्यानमां राखो. ॥ ४ ॥

ए सुत सिंहस रायनो रे ॥ म०॥ कनकथ्वज सुकुमास हो ॥ ज०॥ प्रेमलालठी एहने रे ॥ म०॥ परणी श्रापो कृपाल हो ॥ ज०॥ ५॥ पर उपकारी सेहरा रे ॥ म०॥ ए ठे तुमथी काम हो ॥ ज०॥ हो जो श्रमथी तेहवा रे ॥ म०॥ ठे जेहवुं तुम नाम हो ॥ ज०॥६॥

श्चर्य ॥ हे कृपालु, श्चा कनकथ्वज नामे कोमल कुमार सिंहलरायनो पुत्र हे तेनी साथे प्रेमला ल क्नीने परणावी श्चापो. ॥ ए ॥ तमे पर उपकारि हो, तेथी श्चा काम तमारायी थवानुंहे. जेवुं वमारूं नामहे तेवा तमे श्चमारी साथे वर्त्तजो. ॥ ६ ॥ प्राचीपति कहे सचिवने रे ॥म०॥ इम किम कहो उच्छत्रहो ॥ज०॥ में तो सांजब्युं प्रेमला रे ॥म०॥ परणरो सिंहल पुत्र हो ॥ ज०॥ ७॥ हूं तो ते जोवा जणी रे ॥ म०॥ स्त्राब्यो हुं निश्च एणह रे ॥ ज०॥ कनकध्वज परणे नही रे ॥ म०॥ कहो ते कारण केण हो ॥ ज०॥ ७॥

अर्थ ॥ पूर्विदिशाना पित महाराजाए मंत्रीने कहां के, तमे आवं अघटित केम कहो हो ? में तो सांजहयुं हे के, प्रेमला सिंहलराजाना कुमारने परएशे ॥ ७ ॥ हुं तो आ रात्रे ते महोत्सव जोवाने आव्यो हुं. क-नकथ्वज कुमार तेने परऐ नहीं तेनुं कारए शुं हे? ते कहो. ॥ ए ॥

कनकध्वज वधू प्रेमला रे॥ म०॥ इम सिव जाणे संसार हो॥ ज०॥ तो किम कूडे बोलडे रे॥ म०॥ मुजने चढावो ठो जार हो॥ज०॥ए॥ चंद जणी हिंसक कहे रे॥ म०॥ सिंहल नृपनो जे जातहो॥ ज०॥ कुष्टि पूरव कर्मथी रे॥ म०॥ ठे श्रकथानी वात हो॥ ज०॥ १०॥

श्चर्य ॥ कुमार कनकध्वजनी वधू प्रेमला है एम सर्व जगत् जाऐहे ते हतां तमे श्चावा कुडा बोलथी मारा छपर जार केम चडावोहो? ॥ ए ॥ हिंसक मंत्रीए चंदराजाने कह्यं के, सिंहल राजानो कुमार पूर्व-कर्मना योगथी कोकी है . ए वात कथी जाय तेवी नथी. ॥ १०॥

बेख बिखितथी प्रेमला रे ॥ म० ॥ केरो हुछ विवाह हो ॥ ज० ॥ पण स्वामी ए वातनो रे ॥ म०॥ तुम हाथे निरवाह हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ पनन प्रयोगे जइ चढ्यो रे ॥ म० ॥ जिम जर दरीये नाव हो ॥ज०॥ तुम सरीखा खेवट थकी रे ॥ म० ॥ कोइक फावे दाव हो ॥ज०॥११॥

श्चर्य ॥ लेख खखवाथी प्रेमलानो विवाह थयो हे, पण हे ! स्वामी, ए वातनो निएर्य हवे तमारे हाथे थवानो हे. ॥ ११ ॥ पवनना तोफानथी जेम वाहाण जरदरीए जइ चडे तेम श्चा बन्युं हे. हवे तमारा जेवा चतुर खलासीथी वखते कोइ दाव फावतो श्चावे तेम हे. ॥ १२ ॥

ए सिंहल श्रवनीशनी रे॥ म०॥ हवे तुम हाथे लाज हो॥ ज०॥ श्राशा श्रंबर जेवडी रे॥ म०॥ वे तुमथी माहाराज हो॥ ज०॥१३॥ हिंसकने शशिनृप कहेरे॥ म०॥ किम श्रज्ञान ए कीध हो॥ ज०॥ शुं वे वेर प्रेमला थकी रे॥ मं०॥ कनकध्वजने जे दीध हो॥ ज०॥१४॥

श्रर्थ ॥ हे महाराज, ए सिंहलराजानी लाज हवे तमारे हाथे हे. अने तमाराधी अमे आकाश जेवमी आशा राखीने बेटा हीएे. ॥ १३ ॥ राजा चंदे हिंसक मंत्रीने कह्युं के, तमे आवुं आज्ञान केम कर्युं? तमारे प्रेमला साथे शुं वैर हतुं के तेने कनकध्वज जेवा कोडीआने आपी ? ॥ १४ ॥

केम बिगाडो सहु मिली रे ॥ म० ॥ इम श्रवला श्रवतार हो ॥ ज० ॥ किम सांसहे ए वातथी रे॥ म० ॥ कलिमल हरकीरतार ॥ ज० ॥१५॥ मकरध्वज नृपनी सुता रे ॥ म० ॥ में किम परणी जाय हो ॥ ज०॥ ते पण तमने श्रापवी रे ॥ म०॥ ते मुजयी किम याय हो ॥ज०॥१६॥

श्चर्य ॥ तमे सर्व मलीने श्चा श्रवलानो श्चवतार केम बगाडो हो? श्चावी वात कलिकालना मलने हरनारा परमेश्वर केम सहन करे? ॥१५॥ मकरध्वज राजानी पुत्री माराश्री केम परणी जाय? तेम ते तमने श्चापवी ते पण माराश्री केम थाय? ॥ १६॥

चंदता चतुराइये रे ॥ म० ॥ रंज्यो सिंहल जूप हो ॥ ज०॥ पांचमी हाल मोहन कही रे ॥ म० ॥ बीजे छल्लासे श्रमूप हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ श्रश्री ॥ राजा चंदनी श्रावी चतुराईथी सिंहल राजा राजी थयो श्रा प्रमाणे श्री मोहनविजयजीए बीजा छल्लासनी पांचमी मोहन हाल हे ! मोहन कही हे ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

चंद नृपति हिंसक जणी, कहे वचन एकंत ॥ इम किम मुजने जप-दिशो, श्रणघटता उदंत ॥ १ ॥ मुज तुम मेक्षो श्राजनो, जोरे की घो चंद ॥ मुज श्रागल मांड्या तमे, फोगट कूडा फंद ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ चंदराजा हिंसक मंत्रीने एकांते कहे हे, के हे! मंत्री तमे आए घटतावृत्तांतनो जपदेश मने केम आपो हो १ ॥ १ ॥ तमारो ने मारो आ मेखाप करवामां आव्यो हे तेमां तमे मारी आगख फोग-टना फंद मांडी बेहा ते ठीक नहीं ॥ १॥

निपट कपट रचना विकट, शी मुज आगल मित्त ॥ जावाचो काढण नथी, हे हिंसक सुविदित्त ॥ ३ ॥ पोढी कन्या प्रेमला, कोढी ए व-राज ॥ ए जोडी ठोडी दियो, न करो एइ अकाज ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ श्ररे मित्र, श्रावी कपटनी विकट रचना मारी श्रागल शा माटे करो हो ? हे विदान मंत्री, ए वात जावाद्योः तेमां कांइ सार नथी. ॥ ३ ॥ ए मकरध्यजनी कन्या उत्तम हे, श्रने जे तेनो पित करवा धारो हो ते कोडी है है. माटे ए जोडीने करवी होमीद्योः श्रावुं श्रकार्य न करवानुं करो नहीं. ॥ ४ ॥

देश कवण तुम त्रूपनो, कवण नाम किहां वास ॥ किम श्रमुचित सं-बंध ए, मेह्यो करो प्रकाश ॥ ए ॥ साचुं सिव संदेशियी, कहो मुजने प्रवन्न ॥ तुम केरुं निसुख्या पठी, राजी करद्युं मन्न ॥ ६ ॥

श्रश्री।। तमारा राजानो कयो देश है? तेमनुं नाम शुं? तेमनो निवास क्यां? तमे श्रावो श्रनुचित सं-बंध केम मेखव्यो? ते प्रकाश करो. ॥ ए ॥ ते साचे साचुं गुप्त होय ते पण कहो. तमारुं वृत्तांत सांज्रह्या पृत्ती श्रमे मनने राजी करीशुं. ॥ ६ ॥

> श्रय हिंसक संकेपथी, जाखे कथा स्वकीय ॥ याहक बुद्धे सांजले, चंद राय कमनीय ॥ ५ ॥

श्चर्य ॥ पत्नी हिंसक मंत्री पोतानी कथा संदेपश्ची कहेवा लाग्यो. श्चने ते मनोहर राजा चंद ग्राहक बुद्धिए सांजलवा लाग्या. ॥ ७ ॥

॥ ढास उठी ॥

॥ रामचंदके बाग ॥ चपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥ मनोहर सिंधु देश, परिसर सिंधू नदीरी ॥ गंगा समदृह हूंति, श्रावी सरित् वदीरी ॥ १ ॥ गिरिवर शिखर पहूर, फुरशी जूरि गमेरी ॥ गगने शंकाणो सूर, निरखे रथांग श्रमेरी ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ सिंधुनदीना प्रदेश उपर मनोहर एवो सिंधु देश हे. ज्यां सिंधुनदी गंगा नदी जेवा मोटा इ-हवाढी श्रावी रहेखी हे. ॥ १ ॥ जेमां दूरथी देखाता मोटा पर्वतना शिखरो घणां ऊचां हे, के जेने सूर्य श्राकाशमां शंका पामी रथना चक्रना ज्रमथी जुवे हे. एटखे जाणे रथचक होय तेवा धारे हे. ॥ १ ॥

जिहां करे सरिता संकेत, जगमी जल निधि जावा ॥ इत पणुं करे तेम, विचमा फिरती नावा ॥ ३ ॥ नहीं जन मांहे खार, सहुको स-रक्ष स्वजावी ॥ देश गुणे माधुर्य, महोदधिमां पण आवी ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ ज्यां समुद्रप्रत्ये जती एवी सरितार्छ संकेत करे हे श्चने तेनी वचमां फरती नाविकार्छ तेमां दूतपणानुं काम करे है. ॥ ३ ॥ ते देशना लोकोमां कोइ देषी नश्री. सर्व सरख स्वजावी हे. ते देश खारा समुद्रमां श्चावेखों हे तथापि माधुर्यना गुण वाखों हे. ॥ ४ ॥

जिहां गज सरज शरीर, मदफर गुहिरा गाजे ॥ वन घन नित्य स-पंक, निरखी घनाघन लाजे ॥ ५ ॥ श्रहो श्राजा नगरीश, हे इम देश नवीनो ॥ तिहां श्रति मुख्य प्रसिद्ध, सिंहल नगर नगीनो ॥६॥

श्चर्य ॥ जे देशमां हाथीर्छनां शरीर रज जरेखां हे श्चने ते मदफरता गाजे हे. घाटावनमां कादववाखा ते हाथीर्छने जोइ मेघ पण खज्जा पामे हे. ॥ ५ ॥ हे ! श्चाजानगरीना राजा, एवो ते नवीन सिंधु देश हे, तेमां श्चिति सुख्य रीते प्रसिद्ध एवं सिंहख नगर हे. ॥ ६ ॥

मुगता चतुःपथ मांहे, विगक्षित पार परारी ॥ जाणे करी जन जार, दंतुर हूई धरारी ॥ ७ ॥ सुरपुर सहोदर जाण, जिणे निरख्यो ते जाणे ॥ ए आगल नर कोण, लंका देखी वखाणे ॥ ० ॥

श्चर्य ॥ जेना चोकमां परंपराए गढ़ी पड़ेखां मोतीचे जाणे खोकना जारची दबाइने पृथ्वीए दांत बाहेर काढ्या होय तेवां देखाय है. ॥ ७ ॥ जेणे ते नगर जोयुं होय ते तेने स्वर्गना नगरनुं सहोदर जाणे है. तेनी आगढ़ खंकाने जुवे तोपण तेना वखाण कोण करे? ॥ ० ॥

गढ मढ मंदिर पोख, तिम चौजटा चोराशी ॥ जे जन तिहां ज-त्पन्न, ते सही पुण्य विलासी ॥ ए॥ तिहां कनकरय जूप, रूपे काम जिञ्योरी ॥ श्रारि तरु नमनने काज, पवन प्रचंड निज्योरी ॥ १०॥ श्रर्थ ॥ तेनगरनां किल्लो, मढ, मंदिर, दरवाजा अने चोराशी चलटां अति सुंदर हे. तेमां जे माणस जत्पन्न थाय ते खरेखरा पुष्यना विलासी है. ॥ ए ॥ ते नगरमां रूपमां कामदेव जेवो कनकरथनामे राजा है. जे शत्रुरुपी वृक्षोने नमाववाने प्रचंड पवन जेवो है. ॥ १० ॥

पटराणी महाजाग, एइ वे कनकवतीरी ॥ पतिजगती रतिरूप, सुकृतकारि सतीरी ॥ ११ ॥ प्राकृत पुरुष हुं तास, स्वामी हिंसक नामे ॥ मुजने नृप बहुमान, पहोचुं सघसे कामे ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ तेने कनकवती नामे महा जाग्यवती पटराणी हे. जे पतिनी जिक्तवाली, रतिजेवा रूपवाली, सुकृत करनारी श्चने सती हे. ॥११॥ हुं हिंसक नामे तेनो प्रकृतिपुरुष एटले प्रधान हुं. राजा मने बहुमान श्चापेहे श्चने हुं राज्यना सर्वकाममां पोंहोचीशकुंहं ॥ १२ ॥

वाहलुं सहुने काम, वाहलुं चाम नहीं री ॥ साची ए जगरीत, चंदजी जाणो सहीरी ॥ १३ ॥ चोथी ए कपीला धाव, ब्रह्मा पुत्री जिसीरी ॥ पियूष पयोधर एह, नहीं जगनारि ईसीरी ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हे राजा चंद, सर्व ने काम वाहालुं होय हे; कोइने चाम एटले त्वचावालुं शरीर वाहालुं होतुं नथी अने ए जगत्नी साचीरीत हे. ॥ १३ ॥ चोथी किपला नामे तेने धात्री (धाव्य) हे, जे ब्रह्मानी पुत्री सरस्वती जेवीहे. तेना स्तन अमृतथी जरेलाहे. जगत्मां तेना जेवी कोइ स्त्री नथी. ॥ १४ ॥

हय गय रथ सुपदाति, गणतां सुरग्रह जूखे ॥ एइनी इक्कि नि-हाक्षि, धनदो पण निव फूखे ॥ १५ ॥ ए नृपने दरबार, शत्रुकार सुरंगा ॥ खज्जाती हूई तेण, पूर्वाजिमुखी गंगा ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ तेना घोडा, हाथी, रथ अने पेदल ने गणता देवतानागुरू वृहस्पति पण जूली जाय हे. तेनी समृद्धिने जोइ कुवेर जंडारी पण फुल मारी शकतो नथी. ॥ १५ ॥ ए राजाना दरवारमां शत्रुना पराज-वने माटे एवी सुरंगा (खाइ) हे, जेनाथी लज्जापामीने गंगानदी पूर्वाजिमुखी एटले पूर्व दिशा प्रत्ये जनारी थइ गइ हे. ॥ १६ ॥

सकल प्रजा धनपात्र, सधजा सौध उत्तंगा ॥ त्रूप रजाधी सर्व, विगर सजाते सुरंगा ॥ १७॥ पंडित मंक्ति वाद, नाद सुकंबु वि-राजे ॥ तिम जनवजनो साद, दिघतिणे गाजतो लाजे ॥ १०॥

श्चर्य ।। तेनी सर्व प्रजा धनपात्र हो. तेनी नगरीमां ध्वजावाखा लंचा मेहेखो हो श्चने राजानी श्चा-इाष्टी सर्व खोको जारे शिक्षा वगरना होवाश्ची सदा श्चानंदमां रहे हे. ॥ १९ ॥ त्यां पंडितोना पोताना मतने मंगन करवाना ध्वनिल शंखना जेवा शोजेहे श्चने शेहेरमां खोकोना समूहनो नाद एवो चाखे हे के जेथी गर्जना करतो समुद्र शरमाइ जाय हे. ॥ १० ॥

चपला श्रचपल जाव, यह पुरमांहे रही री ॥ जाणे नको द-रिद्ध, एहमां कूड नही री ॥ १ए॥ एहवे श्रागल वात, तुमने यथास्थित जाली॥ तुमधी कांई तिलमात्र, श्रंतरको नहीं राखी॥ १०॥ अर्थ ॥ ते नगरमां चपला एवी लक्षी स्थिर यहने रही हे. त्यां कोइ दरिन्नी जोवामांज श्रावतुं नथी. ॥ १ए॥ हे राजा चंद, आ प्रमाणे जे वात हती ते में तमारी आगल यथार्थ पणे कही हे. तेविषे तमारी आगल जरापण अंतर राखेल नथी.॥ २०॥

ए बीजे जल्लास, बठी ढाल सुरंगी ॥ एइथी आगल वात, मोइन कहे अति चंगी ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आ बीजा ज्ञासमां मनोहर एवी बठी ढाल श्री मोहन विजयजीए कहेली बे. हजु आगल तेनाथी पण रसिक वात आवशे. ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

ए राणी कनकावती, बेठी निज श्रावास ॥ हिश्रहे सुत चिंता घरे, मुख मेव्हे निःश्वास ॥ १ ॥ सजब नयण ठाती सकुच, सखी वचन न सुहाय ॥ जिम तट बाहिर माठली, जण विहूणी श्रकुलाय ॥ २ ॥

श्रर्थ ॥ एकवेखते राणी कनकावती पोताना मंदिरमां बेसी मन मुखमांथी निसासा मुकती हृदयमां पुत्रनी चिंता करवालागी. ॥ १॥ तेना नेत्रमां आंसु आव्यां हतां, स्तनवाली ग्राती शडकती हती, सखीनां वचन तेने गमतां नहतां. जेम कांग्रा जपर माग्रली तमफडे तेम ते आकुल व्याकुल श्रती हती. ॥ १॥

राजा श्रागल धसमसी, दासी कहे विरतंत ॥ श्रावीने जूपति तुरत, बोलावे एकंत ॥ ३ ॥ हे विनते चंडानने, इम केम तुं दि-लगीर ॥ श्रांसुबी जीनो कर्यों, किम इम दखणी चीर ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ राजानी आगल दासीए आवी ते वृत्तांत जणाव्यो, तत्काल राजाए एकांते आवी तेने बो-खावी. ॥ ३ ॥ हे चंद्रमुखि वनिता, तुं दिलगीर केम आय हे? तें तारा आंसुथी तारा वस्त्रना पालवने केम जीनो कर्यों? ॥ ४ ॥

केणे खोप्युं होये वचन, तो तस जाषो नाम ॥ जिम तेहने देउं सज्जा, एहवां न करे काम ॥ ५ ॥ धण कण कंचण मणि रयण, देश नगर जंनार ॥ खामी नहीं कोइ वस्तुनी, तुं मुज प्राणाधार ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ हे बाला, जेले तारुं वचन लोप्युं होय तेनुं नाम आप. अरे ! हुं तेने शिक्ता आपुं जेथी ते फरीवार एवां काम करे नहीं. ॥ ५ ॥ हे ! प्रिया ! धन, धान्य, सुवर्ण, मिल, रत्न, देश, नगर आने जंडार तैयार हे. मारे कोइ वस्तुनी लामी नथी. तुं मारी प्राणाधार हुं. ॥ ६ ॥

॥ ढाख सातमी ॥

॥ यापरवारी हुं साहिबा, काबिल मत चालो ॥ ए देशी ॥ प्रेमदा प्रीत मने, कहे जरी दीरध श्वासा ॥ खामी तुम सुप्रसा-दथी, संपूरण घ्याशा ॥ १ ॥ वचन उलंघी कुण शके, तम सुन-जरे स्वामी ॥ प्राणेश्वर तुम सारिखो, हूं जाग्ये पामी ॥ १ ॥ श्रर्थ ॥ लांबा नीसासा मूकती कनकवती राणीए पोताना प्रियतमने कह्यं के, हे स्वामी, तमारा प्रसादथी मारी सर्व श्राशार्य संपूर्ण हे. ॥ १ ॥ हे स्वामी, ज्यां सुखी तमारी मारी जपर सारी नजर हे, त्यां सुधी मारूं वचन कोण जक्षंघन करी शके ? हुं सारा जाग्यश्री तमारा जेवा स्वामीने पामी हुं. ॥ १ ॥

पहेरं वेष ते नव नवा, जे शचिये न दीठा॥ नोजन मुखने ना-वतां, करं बहु विध मीठां॥ ३॥ इत्य इत्य नृष्ण नव नवां, मणि रयणे जमीया॥ निरखी सुर शंसय धरे, जे ए केणे घमीयां॥ ४॥

श्चर्य ॥ हे! नाथ! इंडाणीए पण जे जोया नहोय तेवा नव नवा वेष हुं पेहेरूं हुं; वसी मुखे जावे तेवां बहु प्रकारनां मधुर जोजन करुंहुं. ॥ ३ ॥ हे स्वामी, मिण रत्नोथी जडेखां एवां नव नवां श्चाजूषणो हुं कृणे कृणे पेहेरूं हुं, जेने जोइने देवतार्छ 'श्चा कोणे घड्यां हरों' एवो संशय करे हे. ॥ ४ ॥

मृग मद सोधा श्वरगजा, सखी हाथ न स्के ॥ मधुकर तेणे परि-मक्षे, मुज संग न मूके ॥ ५ ॥ जाण्ं तो ठे सुख घणां, पण तृण समजाणुं ॥ श्वनोपम एक श्रंगजविना, जीवित श्वप्रमाणुं ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ कस्तुरी श्चने श्चगरुचंदनथी मारी सखीर्यना हाथ सुकाता नथी; तेनी सुगंधथी जमरार्य मारो संग जोडता नथी. ॥ ए ॥ हुं विचारं तो मारे घणां सुख छे, पण ते बधां हुं तृण जेवा गणुं हुं. पण एक श्चनुपम पुत्रविना मारं जीवित नकामुं छे. ॥ ६॥

कानन कुसुम तणी परे, मुज श्रवतार श्रक्षेखे ॥ सुत विण धनवंतने सहू, रिव उदय उवेखे ॥ ७ ॥ तनु धूसरी तखटूरिया, तोतलाता हसता ॥ पडता रडता लोटता, जिमता कसमसता ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ वननां पुष्पनी जेम मारो श्चवतार श्चलेखे जाय हे. पुत्र वगर कदि धनवंत होय तो पण तेनुं मुख सर्वे सूर्यना छदय वखते जोता नथी. ॥ ७ ॥ पुत्रना शरीर धृलयी धूसरा यह गया हे, जेना माथा कपर केशतालदुरीश्चा हे, जे तोतलुं बोली हसे हे, जे पड़े, रमे, श्चालोटे श्चने जमता करे हे, ॥ ० ॥

> रिव साहमा जन्ना रही, श्रातप प्रारथता ॥ वारी करता विव-दता, श्रसमंजस कथता ॥ ए॥ शेरमीयें फिरता थका, थई दंमा सवारा ॥ एइवा सुत सुखजेहने, धन्य तस श्रवतारा ॥ १०॥

अर्थ ॥वद्धी जे सूर्यनी सामे जनारही तडाकामां पण ग्राया साथे सामा थाय हे, जे विवाद करी जेम तेम बोखता फरे हे. ॥ ए ॥ जे खाकडी जपर स्वारी करी शेरीमां फरेहे, एवा पुत्रनां जेने सुख हे तेना अवतारने धन्य हे. ॥ १०॥

> कीर्त्ति विस्तारक संपदा, सुतवंश विस्तारू ॥ जससुत तेहने व-नविषे, वसवुं पण वारू ॥ ११ ॥ सुतथी संपत् संपजे, गतप्रास लहीजे ॥ वृद्धपणे सुतथी पीयु, श्रानंद रस पीजे ॥ १२ ॥

श्चर्थ ॥ संपत्ति कीर्त्तिने वधारे वे श्चने पुत्र वंशने वधारनार वे,तेथी जेने पुत्र वे तेने वनमां वसतुं पण् सारुं वे. ॥ ११ ॥ पुत्रश्री संपत्ति सार्थक थाय श्चने ग्रास खड्ए ते पण् खेखे थाय श्चने हे । पति, वृद्धप-णामां पुत्रथी श्चानंद रस पीवाय वे. ॥ १२ ॥

चंदराजानो रास

सुतनी चिंता साहिबा, मुज मनडे खटके ॥ मन मोहन ते दिन केहो, सुत मुखने मटके ॥ १३ ॥ बेठी ढुं ते आखोचमें, नही चिंता बीजी ॥ निसुणी पत्रण्युं नरवरे, मुखयी कहे जी जी॥ १४॥

श्चर्य ॥ हे स्वामी, ते पुत्रनी चिंता मारा मनमां खटके हे, पुत्रना मुखने मटकेश्री मारूं मन मोहन पामे ते दिवस क्यारे श्चावरों? ॥ १३ ॥ हुं तेना विचारमां बेटी हुं. मारे बीजी कांइ चिंता नथी. ते सांजद्धी राज मुखयी जी जी एम कही बोहयों. ॥ १४ ॥

प्राण प्रिये चिंता तजो, जुज हरिषत होइने ॥ एतो मोटी वा-तडी, निव हाथे कोइने ॥१५॥ प्रयत्न मंत्रादिक योगना, कर्छं सुविखासे ॥ ताहरे जाग्ये खिल्यो हरो, तो श्रंगज थारो ॥ १६॥

श्चर्य ॥ हे! प्राणिप्रया! चिंता ठोडीदो. हिंपित यई जार्ज ए वात मोटी हे, ते कोइना हाथमां नथी.॥१५॥ श्चापणे सारा आनंदथी मंत्रादिकना प्रयोग करवामां प्रयत्न करी हो. तेम करतां जो तारा जाग्यमां खख्यो हो तो पुत्र थाहो ॥ १६॥

राणीने राजा इसी, देईने दिखासी ॥ तेडाव्यो मुजने तिहां, मूकीने दासी ॥ १७ ॥ मुज आगख वनिता तणी, कही वात विस्तारी ॥ में पण नृपने विनव्युं, एक बुद्धि विचारी ॥ १७ ॥

श्चर्य ॥ श्चा प्रमाणे राजाए पोतानी राणी कनकावतीने दीलासो श्चापी एक दासी मोकलीने मने तेडाब्यो. ॥ १९ ॥ राजाए पोतानी राणी विषेनी बधी वात मारी श्चागल विस्तारथी कही बतावी. पठी में एक बुद्धिए विचारी राजाने विनंति करी. ॥ १० ॥

श्रातम तपथी नरवरू, कुल देवी श्राराधो ॥ तास वचन श्रानुजा-यिथी, सुतनुं सुख साधो ॥ १ए॥ जूपित मन रंज्यो घणुं, एह वाते स्वामी ॥ श्रागल चंदजी सांजलो, सुकथा रस पामी ॥ १०॥

श्रर्थ ॥ हे नरवर, श्राठम तप करी तमे कुलदेवीनी श्राराधना करो. ते देवीनां वचनने श्रानुसरी पुत्रनुं सुल साधो.॥१ए॥ एवात सांजली राजानुं मन खुशीश्रयुं. हे! चंदराजा, हवे श्रागल ते कथा रसथी सांजलो

बीजा जल्लासनी सात्मी, कही ढाख रसाल ॥

ए आगल मोहन कहे, घणी वात विशाल ॥ ११ ॥

अर्थ ।। आ बीजा जहासनी सातमी रिसक ढाल कही, श्री मोहन विजयजी कहे हे के, आगल धाषी विशास वात आवशे. ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

ए राजाये प्रहसमे,करी योति सुप्रकाश ॥ कुल देवी श्राराधवा, कर्या त्राष्य जपवास ॥ १ ॥ त्रीजे दिन तप जप थकी, सुचिता थकी श्रानूप ॥ प्रगट थई कुल देवता, मनोहर सुंदर रूप ॥ २ ॥ श्चर्य ॥ राजाए हर्ष पामीने पोतानुं तेज प्रकाशित कर्युं श्चने कुखदेवी श्चाराधवाने प्रथम त्रण छपवास कर्याः ॥ १ ॥ त्रीजे दिवसे तप श्चने जप करवाधी प्रसन्न थर्, श्चनुपम सुंदर मनोहर रूपवा<mark>द्धां कुख</mark>-देवी प्रगट थयांः ॥ २ ॥

> चतुरंगुल क्तितिथी श्रधर,कुसुम दाम श्रमलान॥श्रमिष नयन शक्ति श्रति,दिन दिन वधते वान॥३॥कर सायुध सुप्रसन्न मुखे, लोचन करुणा पात्र॥ पद कटि जूषण वर मुखर,पावन निर्मल गात्र॥४॥

अर्थ ॥ ते देवी पृथ्वीथी चार आंगल जंचे रह्यां हतां. नहीं करमायेखां पुष्पनी माला पेहेरी हती, तेनां नेत्र निमेष वगरनां हतां, तेनामां शक्ति घणी हती अने प्रतिदिन तेनो वान (वर्ण स्वरूप) वधतो हतो. ॥ देना करमां आयुध हतां, मुख प्रसन्न हतुं, नेत्रमां करूणा हती, कटिनां आजूषणथी अने पगना फांजरथी ते मधुर शब्द करती हती. तेनुं शरीर पवित्र अने निर्मल हतुं. ॥ ४ ॥

एहवी कुल देवी तिहां, थई प्रसन्न मनरंग ॥ कहे किम आराधी नृपति, मुजने श्रधिक उमंग ॥ ५ ॥ हूं तूठी तुज उपरे, जूठी नहीं लिगार ॥ माग माग आपिश तुने, मन चिंतित निरधार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आवां कुखदेवी मनमां प्रसन्न थड़ने बोह्यां, हे राजा, मने केम आराधी? मारा मनमां अधिक जमंग हे. ॥ ५ ॥ हुं जरापण जुटुं कहेती नथी, खरेखर तारी जपर संतुष्ट थड़ हुं. जे मन वांहित मागहुं होय ते मागीखे. ॥ ६ ॥

> प्रगट वचन देवी तणां, निसुणी तव राजान ॥ कर जोमी सुत विनति, पत्रणे तास प्रधान ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ कुलदेवीनां श्चावा वरदाननां वचन प्रगट रीते सांजली राजा पोतानी पुत्र विषेनी मुख्य विनंति वे कर जोडी करवा लाग्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल खारमी ॥

॥ वारी हुं उदया पुर तणी ॥ ए देशी ॥

तुं कुलदेवी सेवी सदा, कुल वृद्धि समृद्धि करणार ॥ सखीरे ॥ श्रहो जननी सुत कारणे,मेंतो कीधो एह प्रकार ॥ सखीरे॥ तुंकु०॥ए श्रांकणी ॥ १ ॥ श्रासन सुतथी सांकडुं, तिम हैयकुं ज्ञान संकीरण ॥ स०॥ एह संकीर्ण साधुथी, ए तो होये जो सुकृत जीर्ण ॥ स०॥ तुं०॥ १ ॥

श्चर्य ॥ हे कुखदेवी, जो सर्वदा तमने सेन्यां होय तो तमे कुखनी वृद्धि श्चने समृद्धि करनारां हो. हे माता, पुत्रने मादे में श्चा प्रकारे प्रयास कर्यों हे. ॥ १ ॥ हे माता, जो पूर्वनां जुनां सुकृत होय तो माण-सने पोतानुं श्चासन पुत्रथी संकीर्ण होय,हृदय ज्ञानथी संकीर्ण होय श्चने घर साधु पुरुषोथी संकीर्ण होय.

तुमे पण पूजा किण विधे,श्रंगजविण पामशो एम ॥स०॥ प्रारथना पूर्या विना, कुल देवी कहाशो केम॥स०तुं०॥३॥सायर तटवासी जना, तसहोय जो दारिड साज॥स०॥तेहनी लाज सायर जणी, तटवासी जणी नही लाज ॥स०॥तुं॥४॥

श्चर्य ॥ हे देवी ! मारे पुत्र न होय तो तमे पण श्चावी रीते पूजा क्यांथी पामशो ? श्चने मारी प्रार्थना पूरी कर्याविना तमे शी रीते कुखदेवी कहेवाशो ? ॥ ३ ॥ समुद्रने किनारे रहेनारा खोकोने जो दारिष्ठ रहे तो समुद्रनी खाज जाय हे, तेमां कांइ ते समुद्रतटना वासीजेनी खाज जती नथी. ॥ ४ ॥

तेम कुलमां जो सुत नही, ते खाज तुने हे मात ॥स०॥ श्रापो श्रंगजवर मुने, शतवात तणी एक वात॥स०॥तुं०॥५॥विनता वचन श्राग्रह थकी,एम श्राराधीमें तुज ॥ स० ॥ ते माटे सुप्रसन्न थई,सुत श्राप तुं जननी मुज ॥ स०॥ तु०॥६॥

श्रर्थ ॥ तेम जो कुलमां पुत्र न होय ते लाज तमारी जाय हे तेथी सो वातनी एक वात के, हे माता! तमे मने पुत्रनुं वरदान श्रापोः ॥ ५ ॥ हे जननी ! मारी स्त्रीना श्राप्रहथी में तमारी श्राराधना करी हे, माटे प्रसन्न थड़ने तमे मने पुत्र श्रापोः ॥ ६ ॥

कुलदेवी नृपने कहे, तुज वचने हुई संतुष्ट ॥स०॥ सुत थाशे एक ताहरे, पण तेहनी देह सकुष्ट ॥स०॥ तुं०॥७॥ इम निसुणी नृप उचरे,मुज रोग रहित यो जात ॥स०॥पाये पहुं करूं विनति,श्रवधारो श्ररज मुज मात ॥ स०॥ तुं०॥०॥

श्रर्थ ॥ कुलदेवीए राजाने कहां, हे राजा, तारां वचनश्री हुं संतुष्ट श्रइ हुं. तारे एक पुत्र श्रशे, पण तेना शरीरमां कुष्ट (कोड) नीकलशे. ॥ ७ ॥ देवीनां आवां वचन सांजली राजाए कहां, हे माता ! तमे मने रोग विनानो पुत्र आयो. हुं तमारा चरणमां पडीने विनंति करुं हुं. आमारी श्ररज मनमां धारो.॥॥॥

तव देवी कहे जूपने, थई डाह्यों मूढ कां होय।।संगाबांध्यां करम जेणे खरां, तस टासी न शके कोय ।।संगातुंगाए।। जिन चक्री हरि हखधरां, ते जोगवे कीधां कर्म ।।संगा जीव डुःखी ते निव होवे, जिणे कीधो पूरण धर्म ।। संगा तुंगारण।

श्चर्य ॥ देवीए राजाने कद्यं, हे राजा ! तुं डाह्यो यइने मूढकेम याय है?जेए जे खरां कर्म बांध्यां होय तेने कोइ पण टाखी शके नहीं ॥ ए ॥ हे राजा ! श्रीजिनेश्वर, चक्रवर्त्ती श्चने बखदेव, तेर्च पण करेखां कर्मने जोगवे हे. जे प्राणी पूर्ण रीते धर्म करे हे ते जीव कदि छःखी यतो नथी ॥ १०॥

सुत कुष्टी दीघोतुंने,वर टाखी न शके तेह ॥स०॥ तुज वखते मुज मुख यकी, एम नीकख्युं वायक एइ ॥स०॥तुं०॥११॥ नृप कहे तुं तूठी थकी,िकम समप्यों कुष्टी जात ॥स०॥ तस कारण देवी कहे,सुण वहा तुं माहरी वात ॥ स०॥तुं०११॥ श्रर्थ ॥ हे राजा ! में तने कोषीत्रा पुत्रनुं वरदान श्राप्युं. ते कोइथी फेरवी शकाय तेम नथी. कारण के, मारा मुखयी जें वचन नीकखी गयुं ते फरशे नहीं. ॥ ११॥ राजाए कहां, हे देवी ! तमे संतुष्ट यइने श्रावो कोढीयो पुत्र केम श्राप्यो? देवी बोह्यां—हे वत्स! तेनुं कारण शुं हे ?ते मारी वात सांजल. ॥ १२॥ मुज वह्नन सुरसेहरो,दोय देवी हुं श्रमे तास ॥स०॥ नित नित नवला जोगवुं,
प्रिय हुंती जोग विलास ॥ स०॥ तुं०॥१३॥ मुजश्री हानो नाहले, मुज शोकने
दीधो हार ॥स०॥ तेहनी निरत मुजने श्रई,तिणे प्रगट्यो हियहे खार ॥स०तुं॥१४॥
श्रश्रं ॥ सुरशेखर नामे मारो एक पित हे, तेनी श्रमे वे देवील स्त्रीलंहीए श्रमे वंने प्रियनी साथे नित्य
नव नवा जोग जोगवता हता ॥ १३॥ एक वखते ते पितए माराश्री हानो मारी शोक्यने हार श्राप्यो तेनी मने जाण श्रवाशी मारा हृदयमां खार लत्पन्न श्रयो ॥ १४॥

वसगी श्रमे बिहु बेनडी,करी कंते तेहनी जीर ॥स०॥ मुजने कटुक खाग्र घणुं, तिणे हुई हुं दिसगीर ॥स०॥तुं०॥१५॥ चिंतातुर बेठी हती, एहवे श्राकर्षी मुज ॥ स०॥ हुं इहां श्रावी धसमसी,ए तुजने कह्युं में ग्रज ॥ स०॥ तुं०॥१६॥

श्चर्य ॥ श्चमें बंने बेनोए तेनी वढवाड करी. ते वखते पतिए ते शोक्यनो पद्य कर्यो. तेथी मने घणुं माठु लाग्युं श्चने हुं हृदयमां दिलगीर श्चर्. ॥ १५॥ हुं चिंतातुर श्वर्र बेठी हती, तेवामां तें मने श्चाराधीने बोलावी एटले हुं रीसमां धमधमती श्चावी. श्चा गुह्य वात में तने जणावी हे.॥ १६॥

श्चाराधी जुमनी थकी,तेषो धारो कुष्टी पुत्र ॥ स० ॥ श्चमे देवी थई निव जपुं, मुख्यी एहवुं उत्सूत्र॥स०॥तुं०॥१९॥ श्चावतायी तो वतो जलो,इम हृदय विमासे जूप ॥स०॥ देवी वर शिरपर धर्यों,गृह पोहोती देवी श्चनूप ॥ स०॥ तुं० ॥१०॥

श्चर्य ॥ मारुं मन कचवातुं हतुं ते वखते तें आराधी, तेथी तारे कोढी उप्त आहो। हवे देवी अइने असे मुखयी जत्सूत्र (विपरीत-करे तेवुं) वचन बोलीशुं नहीं। ॥ १९ ॥ मुदल न होवाथी कोढी उपण पुत्र होय ते सारो आवो हृदयमां विचार करी राजाए देवीना वरदानने माथे धर्युं. पठी ते अनुपम कुल-देवी पोताने स्थाने चाली गइ. ॥ १० ॥

बीजा बद्धासनी श्रावमी, कही मोहन विजये ढाल ॥ स०॥ कहे हिंसक श्राजा धणी,विक्ष निसुणो वात रसाल ॥स०॥ तुंगारणा

श्चर्य ॥ श्चा बीजा उद्धासमी श्चाउमी ढाल श्रीमोहन विजयजीए कही है हिंसक मंत्री कहे है -हे

॥ दोहा ॥

निज थानक पहोती सुरी,पूरे तप राजान ॥ देवी वर राषी जाषी, जाख्यो वधते वान ॥ १ ॥ मुजने पण तेकी कह्यो, सफल सुरी विरतंत ॥ में तस दीधी धारणा, करशे जासुं जगवंत ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ कुलदेवी पोताना स्थानमां पोहोची गइः राजाए ते तपस्या पुरी करीः पोतानी राणीने राजाए वधता छमंगे ते वरदाननी वात कही. ॥ र॥ पठी राजाए मने बोलावीने पण ते देवीनो सर्व वृत्तांत कह्योः पठी में तेने धारणा श्चापी के, जगवंत तमारुं जल्लुं करहो. ॥ २ ॥

राजन देवी वचनथी,जो एहवोए थाय॥ तो तस कुष्ट निवारहां, करहां विविध उपाय॥ ३॥ राणी मुज वाणी थकी, रंजी चित्त मकार॥ कोइक जीव तिणहिज निशा, उदर धर्यों अवतार ॥॥॥

श्रर्थ ॥ वली में कहुं के, हे राजा,कुलदेवीना वचनश्री किद ते कोढी पुत्र श्राय, पृत्ती विविध छपाय करी तेना कोढने श्रापणे निवारशुं. ॥ ३ ॥ मारां वचन सांजलीने राणी चित्तमां राजी श्रइ. रात्रे तेना छ-दरमां कोइ जीवे श्रवतार धर्यो. (गर्जधारण कर्यो.) ॥ ४ ॥

जूमि निखयमें जामिनी,राखी जतने जूप॥जिम खोजीनी संपदा, रहे सुरंगे कूप॥ ॥ गर्ज स्थिति पूरे थये, प्रसव्यो सुत सुकुमाल ॥ निसुणी सुजग वधामणी, आपे तव जूपाल ॥ ६॥

श्चर्य ॥ जेम द्वोजी माएस पोतानी संपत्ति सुरंगामां के कूवो करी तेमां गुप्तराखे तेम राजाए पोतानी गर्जिणी राणीने जूमिगृह (जोयरा) मां जतनाथी राखी. ॥ ए ॥ गर्जनी स्थिति पूरी खतां कोमख पुत्रनो प्रसव थयो. ते उत्तम वधामणी सांजदी राजाए तेने इनाम ख्याप्युं. ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

थां हारो सहेर जलो योधाणो राजाजी॥ श्ववर जलेरो थांहारो मेकतोजी ॥एदेशी॥ सुत उन्नव मांड्यो जूप राजिंदा,जेर जूंगल वजडावीयांजी॥बांध्यां तोरण सरिसा द्वार राजिंदा, धवल मंगल वजडावीयांजी ॥१॥जायो पुत्र रतन ससनूर ॥रा०॥ नगरमां वात ते विस्तरीजी॥ घणुं हरख्या नागर वृंद॥रा०॥जिम घनथी कादंबरीजी॥१॥

श्चर्य ॥ राजाए पुत्र जन्मनो महोत्सव श्चारच्यो. चेरी, छुंगख वगेरे वाजीत्रो वगडाव्यां. राजधार छपर खीखां तोरण बांध्यां श्चने धवल मंगल गवराव्यां. ॥ १ ॥ तेजस्वी पुत्र रत्नना जन्मनी वात श्चाखानगरनां प्रसरी गइ. नगरना लोकोना समूह मेघने जोइ मयूरनी पंक्तिनी जेम घणो हर्ष पाम्या. ॥ २ ॥

कर्यों चंद्रादिक विधि सर्व ॥रा०॥पुरजनथी प्रष्ठन्न पणेजी ॥ सुत केरं कनकध्वज नाम ॥रा०॥ उल्लाप्युं आदर घणोजी ॥३॥ सुत जन्म वासरथी तेह ॥रा०॥ पीिनत कुष्टी रोगथीजी ॥ निव औषध टेकी होय ॥रा०॥ पुरव कर्म प्रयोगथीजी ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ नगर लोकोथी गुप्तपणे चंद्रादिक (जातकर्मादिक) सर्व विधि कर्यो अने घणा आदरथी पुत्र नुं नाम कनकध्वज एवं पाड्युं. ॥ ३ ॥ पुत्र जन्म्यो तेज दिवसथी कुष्टरोग वडे पीमावा लाग्यो. पूर्वक मना योगथी ते उपर कोइ औषधनी टेकी लागती नथी. ॥ ४ ॥

सुत वाधे जूमि ग्रहमांहे ॥रा०॥ खाणमे रयण तणी परेजी॥ पुरवासी सघला लोक॥ रा०॥ मनमांहे श्रचरिज धरेजी ॥५॥ जन श्रावे नृप दरबार ॥रा०॥ कुंवर तणुं मुख निरखवाजी॥ केई देश विदेशी खलाम ॥रा०॥ जूषण तिम हिंज नवनवाजी ॥ ६ ॥ श्रावं ॥ जेम खाणमा रल वधे तेम पुत्र जमिगृह मां वधवा लाग्यो सघला नगरवासी लोक मनमां

श्राश्चर्य धरवां साग्यां. ॥ ५ ॥ स्रोको नवनवा देश विदेशी रक्षनां श्राज्यपणो सङ् कुमारनुं मुख जोवाने राज दरवार श्राववा साग्यां. ॥ ६ ॥

हूंतो उत्तर देउं तास ॥रा०॥ रूप श्रधिक तृप जातनोजी ॥ सुरकुंश्वर इसो नहीं स्वर्ग ॥रा०॥ संशय नहीं ए वातनोजी ॥॥।।।कोई छुष्ट नयन संताप ॥रा०॥ होवे हेत कुहेतश्रीजी ॥ स्रघु बासक ग्रूंईरां मांहिं ॥रा०॥ राखीये तिणे संकेतश्रीजी ॥ ए ॥ अर्थ ॥ श्रावता खोकोने हुं उत्तर देतो के, राजकुमारनुं रूप श्रधिक हे. एवो स्वर्गमां देवकुमार पण नहीं होय. ए संशय वगरनी वात हे. ॥ ९ ॥ कोइ छुष्टदिवाखो आवे तेनी दृष्टि पढे तो संताप श्राय श्रमे हेतमां कुहेत यह जाय. तेथी श्रमे ए खघुबाद्यकने जोयरामां राखीए हीए. ॥ ए ॥

सहू माने साची वात ॥रा०॥ कोइ जेद लहे नहीजी ॥ पुरवासीने दीए शीख
॥रा०॥ उत्तर एम कही कहीजी ॥ए॥ सुप्रसंशा थई पुरमांहिं ॥रा०॥कुंछर कुलो
ऊर उपन्योजी ॥ कहे सहुको मुख्यी एम ॥रा०॥ प्रगटी पुन्याई जूपनीजी ॥१०॥
ध्रर्थ ॥ श्रा वात सर्वे साची मानता, कोइ तेनो जेद खेतु नहीं. श्रा प्रमाणो उत्तर श्रापी श्रापी नगर
ना लोकोने समजावी शीख श्रापता हता. ॥ ए ॥ श्राधी नगरमां 'राजाने घेर कुलनो उद्धार करे तेवा
कुमार श्रवतर्या श्रने राजाना पुष्ट प्रगट थया' एम सहु कोइ मुख्यी कहेवा लाग्या. ॥ १० ॥

मुख निरखवुं रिवने छुर्लन ॥राण। धन्य कुंश्रर श्रवतारनेजी ॥ कह्या यतन करवा श्रनंत ॥राण। शास्त्रे पदारथ सारनेजी ॥११॥ इम लोक वचनथी वात ॥राण। देश विदेशे विस्तरीजी ॥ ब्रह्मा पण नखद्धे जेद ॥राण।परचित्त वृत्ति कपटचरीजी ॥११॥

श्चर्य ॥ 'श्रा कुमारना श्रवतारने धन्य हे के जेनुं मुख सूर्यने निरखवुं छुर्त्वज हे. कारण के, छत्तम पदार्थीनी श्चनंत जतना करवाने शास्त्रोमां कह्यं हे.'॥ ११ ॥ श्चा प्रमाणे खोकोनां वचनथी ते वात देश विदेशमां विस्तार पामी. बीजानी कपट जरेखी चित्तवृत्तिनो जेद ब्रह्माना जाणवामां पण श्चात्रतो नथी.११

एहवे क्षेत्र किरियाणा कोडि॥राणाश्रमारापुरना व्यवहारीयाजी॥ एणे विमखपुरीयें तेह॥राणाव्यापारे पाछ धारीयाजी॥१३॥ईहां मकरध्वज जूपाल॥राणा महके सुजस पक्हो घणोजी ॥ व्यापारीये जेट्यो राय ॥राणा पाम्युं मान घणुं घणुंजी ॥ १४ ॥

द्यर्थ ॥ एवा समयमां स्त्रमारा नगरना व्यापारी कोटी करियाणा छइ विमलपुरीमां स्त्राच्याः त्यां व्या-पार करवाने चरण घारण कर्याः एटले मुकाम कर्योः ॥ १३ ॥ विमलपुरीमां मकरध्वज नामे राजा इतो. तेनी सत्की।त्तेंनो पडघो घणो वागी रह्यो इतो. ते व्यापारी राजाने मलवा स्त्राच्याः तेर्जने घणुं मान प्राप्त थयुं ॥ १४ ॥

नृप व्यापारी करेवात ॥राणाश्चावी सुता तव प्रेमसाजी ॥ जई बेठी तात उर्छग ॥राणापिंडी जूत चोसठ कलाजी ॥१५॥ नव यौवना शशि मुख शुरू ॥राणातस स्तुति करतां नवि बणेजी॥परदेशी पाम्या श्चचंज ॥राणादीठी सुता श्चादर घणेजी १६ श्चर्ष ॥ राजा श्चने व्यापारीच वचे वात यती इती, तेवामां राजानी प्रेमसा नामे पुत्री स्वावी, ते पिता ना जत्संगे जरु बेटी. जाणे पिंसाकारे चोसठकखा एकटी श्रइ होय तेवी ते खागती हती. ॥ १५ ॥ ते नव यौवनवाखी हती. तेनुं मुख शुक्क पद्मना चेंक जेवुं हतुं, तेनी स्तुति करीए तो पार आवे तेम न हतुं ते कुमारीने घणा आदरश्री जोइने विदेशी ज्यापारी अश्वर्थ पाम्या. ॥ १६ ॥

ढाल नवमी बीजे जल्लास ॥ राणा मोहनविजये ए कहीजी ॥ मन हरषे चंद नरिंद ॥ राण्॥ हिंसक मुख हारद खहीजी ॥ १७ ॥

श्रर्थ ॥ श्रा बीजा जहासनी नवमी ढाद श्रीमोहनविजये कही है. हिंसकमंत्रीना मुखनो श्रावो हार्दे खइ राजा चंद मनमां हर्ष पाम्या. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

अमपुर द्यापारी जाणी, पूढ़े विमल पुरीश ॥ तमे कुंण पुरथी आवीया, कुण तिहां जूप जगीश ॥ १ ॥ अम आगल जाषो तमे, तास सकल अधिकार ॥ तेणे पण अम जूपनो, मांडयो यश विस्तार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ विमलपुरीना राजाए ते श्चमारा नगरना व्यापारी छने पुञ्छं तमे क्या नगरश्री श्चाव्या? ते नगरमां राजा कोण हे.? ॥ १ ॥ ते सर्व दृत्तांत मारी पांसे कहो. पत्नी ते व्यापारी छए श्वमारा राजाना यशनो विस्तार कहेवा मांड्यो. ॥ १ ॥

सिंधु देश सिंहस पुरी, श्रासकाने श्रावतार ॥ राज्य करे तिहां कनक-रथ, गुण पूरण वसुधार ॥ ३ ॥ कनकध्वज स्तृत तेहने, कामरूप सुवि-चार ॥ विधाताये तस सारिखो, निव निम्यों संसार ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ सिंधुदेशमां सिंहत्वपुरी नगरी हे. ते जाए श्चत्वकापुरीनो श्चवतार होय तेवी खागे हे. तेमां गुणोशी पूर्ण एवो कनकरश्चराजा राज्य करे हे. ॥३॥तेने कामदेव जेवो स्वरूपवान् श्वने सारा विचारवालो कनकथ्वज नामे पुत्र हे. विधिए श्चा संसारमां तेना जेवो कोइ निर्माण कर्यो नश्ची ॥ ॥ ॥

कोई कुनयन जीतिथी, राखे जुइरा मांह ॥ तस दरिस ए जोवा तणो,सहुने अधिक उठाह ॥ ५ ॥ श्रम हूंती केती कहुं, कुंश्रर रूप प्रशंस ॥ एहमां जूठ रखे गणो, श्रहो श्रवनी श्रवतंस ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ कोइनी कुदृष्टि न परे तेवा भयश्री तेने जोंयरामां राखे हे. तेना दर्शन करवानो सर्वने श्चिधक जत्साह हे. ॥ ५ ॥ हे पृथ्वीना श्चाजूषण रूप राजा! श्चमे ते कुंवरना रूपनी प्रशंसा केटली करीए.? तेमां तमे रखे जुदुं मानता. ॥ ६ ॥

> एम निसुणी इरष्यो घणुं, मकरध्वज जूपास ॥ कीधा एम देशी जणी, ग्रुचिवेशी सुविशास ॥ ७॥

अर्थ ॥ आ सांजिक्षी राजा मकरध्वज घणो हर्ष पाम्योः ते आमारा देशना व्यापारी तरफ तेणे पो-तानी विशाख दृष्टि आरोपण करी. ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ ॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥

मकरध्वज तृप सांजली,कनकध्वजनी ख्यात रे ॥ आजापति निसुणो, व्यापारी कीधा विदा,कद्युं वली आवजो प्रजातरे ॥ आजाव ॥१॥ विमलपुरी मांहे करे, व्यापारी व्यापार रे ॥आव॥मकरध्वजे तेमावीने,मंत्री बुद्धि जंमाररे ॥आव॥१॥

श्रर्थ ॥ हे श्रानापित! राजा मकरध्वजे श्रा प्रमाणे कनकध्वजनी विख्याति सांजली ते ज्यापारी उने विदाय कया, श्रने कह्यं के प्रजातकाले पाठा श्रावजोः ॥ १ ॥ ते ज्यापारी उ विमलपुरीमां ज्यापार करवा खाग्या. पठी राजा मकरध्वजे बुद्धिना जंडार रूप पोतानो मंत्री बोलाज्योः ॥ २ ॥

कनकध्वजना रूपनी, संजलावी सवि वात रे ॥ आणामंत्री कहे अम आगले, किम तस कहो अवदातरे ॥ आण्॥३॥ नृप कहे प्रेमला मुजसुता, वर प्रापति थई एहरे ॥आणा ए सरिखो वर जो मिले, तो मुज उपजे सनेहरे ॥ आणा॥॥

श्चर्य ॥ तेनी आगल कनकथ्वज कुमारना रूपनी वार्त्ता कही संजलावी. मंत्री ए कहां, तमे मारी आ-गल तेनी वार्त्ता केम करो हो ? ॥ ३ ॥ राजाए कहां, मारी प्रेमला कुमारी वरने योग्य थइ हे. जो तेने खायक वर मले तो मने घणो स्नेह उपजे. ॥ ४ ॥

ए कनकथ्वज सारिखो,नही कोई वर संसार रे ॥श्राणा जो मन माने तुमतणुं, तो करीये निरधार रे ॥ श्राण ॥८॥ मंत्री निसुणी विनवे, तमे निसुणो महा-राय रे ॥ श्राण ॥ परदेशीनी वातकी, ते किम मानी जाय रे ॥ श्राण ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ एकनकथ्वज जेवो वर कोइ आ संसारमां नथी. जो तमारुं मन मानतुं होय तो आपणे आ कार्य करीए. ॥ ए ॥ मंत्रीए ते सांभली राजाने विनंति करी के, हे राजा ! एक वात सांजलो. एवा परदे- इिनी वात आपणाश्री केम मनाय?॥ ६॥

त्रूंडो जलो पण श्रापणो, परदेशे शंसाय रे ॥श्राणा पोतानी माता जणी, किणे शाकिनी कहिवायरे ॥ श्राण ॥९॥ कंटक प्रिय निज देशना, क्रुसुम विदेशी न कांय रे ॥ श्राण ॥तेम ए वचन व्यापारीनां,श्रम मन किमपति श्रायरे ॥श्राणाणा

श्चर्य ।। पोतानो जुंडो होय के जातो होय पण ते परदेशमां वलाएय पोतानी माताने कोए डाकए कहे? ।। ७ ॥ पोताना देशना कांटा प्रिय लागे हे श्चने विदेशनां पुष्प पए प्रियं लागतां नथी, तेम श्चा वि देशी क्यापारीनां वचन उपर श्चमने केम विश्वास श्चावे? ॥ ० ॥

कोइ अवर जो कुंअरनो,रूप वखाणे आय रे ॥आ०॥तो ते वाते साहिबा,श्रम मन निश्चय थायरे ॥ आ० ॥ ए ॥ एम निसुणी नृप हरवीयो, कुंअरी विसर्जि गेहरे ॥ आ० ॥ तत्क्षण रयवाडी चढ्यो, सेन सहित ससनेहरे ॥ आ० ॥ १० ॥ अर्थ ॥ हे स्वामी! जो कोइ अवर माण्स ते कुंवरनुं रूप वखाणे तो आपणा मनमां तेना रूपनो नि- श्चय थायः ॥ ए ॥ ते सांजली राजा हर्ष पाम्योः पत्नी प्रेमला कुमारीने घरमां विदाय करी तत्काल स्तेह सहित मोटी सेना लड़ शीकारे नीकल्योः ॥ १० ॥

मृग मृगयाने कारणे,पुहतो जूप कांतार रे ॥ श्राणाकेडेथी श्रावी मिल्या,मंत्री यह श्रसवार रे ॥ श्राणा११॥ केई श्वापद सापद कर्या, सश्रम थयो जूपाल रे ॥ श्राण ॥ सीधो विसामो जह, उंची सरोवर पाल रे ॥ श्राण ॥ १२ ॥

श्रर्थ ॥ राजा मृगया करवाने जंगलमां श्रावी पोहोच्यो श्रने तेनी पठवाडे मंत्री छोमे स्वार श्रइ तेने जड़ महया. ॥११॥ ते वनमां राजाए कड़क प्राणी छोने श्रापत्तिमां नाख्या. पठी राजाने श्रम पडयो, एटखे ते विसामो लेवाने एक सरोवरनी छंची पाल छपर बेठो. ॥ १२॥

एहवे कोइक देशना, सोदागर धनवंत रे ॥ आ० ॥ जस पीवा आव्या वही, ते सरपासे महंत रे ॥ आ०॥१३॥ निर्मेस जस पीधुं तिणे, पाता निवर्त्या जाम रे ॥ आ० ॥ बोलाव्या मकरध्वजे, अति आदरश्री ताम रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ तेवामां कोइ देशना धनवान् सोदागरो ते सरोवरनी मोटी पास छपर जस पीवाने आव्या. ॥ १३ ॥ सरोवरना निर्मेस जसनुं पान करी ते जेवामां पात्रावस्या, तेवामां राजा मकरध्वजे तेमने आद-रथी बोलाव्या. ॥ १४ ॥

तमे परदेशी पंथीया,विचरो देश विदेश रे ॥त्याणा जो दीठो होयतो कहो, श्रवरिज कोइ विशष रे ॥ श्राण ॥१५॥ दीसो विचक्षण ग्रण धरा, पूरो श्रम मन कोमरे ॥ श्राणा तव नृप श्रागल विनवे, सोदागर कर जोमरे ॥ श्राण ॥१६॥ श्रिश्री ॥ राजाए पुज्युं, तमे परदेशी मुसाफरहो; देशविदेशमां विचरो हो; जो कांइ पण विशेष श्राश्रय दीतुं होय तो ते कहो. ॥ १५ ॥ तमे विचक्षण श्रने गुणवान देलाल हो, माटे कांइ चमत्कारी वात कही मारा मनना कोड पूरा करो. पही ते सोदागरो राजानी श्रागल कर जोमी विनववा लाग्या. ॥ १६ ॥

बीजा उद्घासनी मोहने, नाखी दशमी ढाख रे ॥ आ० ॥ चंद आगल ए वातडी, करे हिंसक सुविशाल रे ॥ आ० ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ श्रीमोहनविजयजीये बीजा उद्घासनी दशमी ढाल कही है. आ विशालवार्ता हिंसक मंत्री चं-दराजा पासे कहे है. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी सोदागर श्रमे, पोहोता सिंधु देश ॥ सिंहल नगरी कन-करथ, दीठो एक नरेश ॥ १ ॥ कनकध्वज इक तास सुत, रूप रंग जंडार ॥ देश विदेशे तेहनो,थयो कीर्त्ती विस्तार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ हे स्वामी! श्चमे सोदागरो सिंधुदेशमां गया हता, त्यां सिंहलनगरीमां कनकरथ नामे एक राजा जोवामां श्चाब्यो ॥ १ ॥ तेने कनकध्वज नामे एक पुत्र हे, ते रूप रंगनो जंडार हे. तेना रूप गु- शनी कीर्त्तिनो देश विदेशमां घणो विस्तार श्रयो हे. ॥ २ ॥

पण जुइरामां हे रहे, बाहिर नाणे राय ॥ तस तनु जो खागे पवन, तो कुसुम जिम कुमलाय ॥ ३ ॥ रूप श्रद्धौिकक तेहनुं, पण निव निरुच्यो केण ॥ ए श्रचरिज निसुख्यो श्रमे, खोक तणे वयणेण ॥ ४ ॥

श्रश्रे ॥ पण राजा ते कुमारने जोयरामां राखे हे. कोइ दिवस बाहेर काढता नथी. कारणके, जो तेना शरीरे पवन लागे तो ते पुष्पनी जेम कुमली जाय हे. ॥ ३ ॥ तेनुं श्रलोकिक रूप हे पण कोइए तेने नी-रख्यो नथी. श्रमे श्रा श्राश्चर्य लोकोना मुखब्यी सांजहयु. ॥ ४ ॥

निसुणी सोदागर विदा, कर्या ताम जूपाल ॥ वर निरधार्यो मनथकी, घणो थई उजमाल ॥ ५ ॥ व्यापारी वचने थयो, जूप जणी विश-वास ॥ वनहूंती संध्या समय, श्राव्यो निज श्रावास ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ते सांजली राजाए ते सोदागरने विदाय कर्या श्चने पोते जत्साइ घरी पोतानी पुत्रीमाटे ते-नेज वर धार्यो. ॥ ए ॥ ते ब्यापारीजेनां वचन जपरथी राजाने पूर्ण विश्वास श्चावीगयो. वनमां संध्या काख श्रयो एटले पोताने घेर श्चाव्यो. ॥ ६ ॥

> त्रुपे सोद्दागर वचन, संजलाव्यां मंत्रीश ॥ तेणे पण सुप्रशंस्यो घणुं, सुंदर वर सुजगीश ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ राजाए ते सोदागरनां वचन मंत्रीने संज्ञाबाच्यां. श्चने कह्यं के, तेमणे पण ते वरनी सुंदरता विषे घणी प्रशंसा करी. ॥ ७ ॥

॥ ढाक्ष श्रगीयारमी ॥

॥ हारे खाख नवारेनगरना सोनीका, मारे वीडीएको घकी खावरे खाव ॥गोरीने पाये वीडीछ जमकाव्यो माजिम रातरे खाख ॥ प्यारो खागे वीडीछ ॥ए आंकणी ॥ हारे खाख मकरध्वजने विनवे, तस मंत्री मीठी वाचरे खाख ॥ स्वामी श्रवण न पतीजीये, जे निरखीये नयणे ते साचरे खाख ॥ मकरध्वजने विनवे ॥ ए देशी ॥१॥ कोइक सेवक आपणो, तिहां जइ जुए तस रूपरे खाख ॥ ते पाडो आवी इहां, करे वर्णन तेम अनूपरे खाख ॥मणाश॥

श्रर्थ ॥ मंत्रीए मधुरवाणीथी मकरध्यजने विनंति करी के, स्वामी सांजलवा जपर प्रतीति न करायः जे नेत्रश्री जोइए ते साची वात समजवी ॥ १ ॥ कोइ श्रापणो सेवक त्यां जइ तेना रूपने जुवे श्रने ते पाठो श्राही श्रावी ते श्रनुपम रूपनुं वर्णन करी बतावे ॥ १ ॥

तो साचे परणाववी, ए प्रेमसा लही तास रे लाल ॥ ए न्हानी नही वातडी, क-रवो बोड्यो हे तपास रे सास ॥ म०॥ ३॥ मंत्री वचने व्यापारीया, तेमाव्या जूपे ताम रे साल ॥ देई श्रादर नरवर कहे, कीजे एक महारूं कामरे लाल ॥ म०॥ ४॥ श्रिष्ठी ॥ तो पही श्रा सङ्गी जेवी प्रेमसाने तेनी साथे परणाववी श्रा वात नानी सुनी नथी. तेनो पूरो तपास करवो जोइए. ॥ ३ ॥ पत्नी मंत्रीनां वचनश्री राजाए ते व्यापारी छने बोखाव्यां. तेमने श्रादर श्रापी राजाए कहुं, के, तमो एक मारुं काम करो ॥ ४ ॥

तमे वहिला सिंइलपूरे, जान मुज तेमी प्रधान रे लाल ॥ कुंट्यरनुं रूप देखाडजो, द्याणा लेई तुम राजान रे लाल ॥ म० ॥ ५ ॥ मुज कुंट्यरी सरिखुं हुवे, ते कुंवर रूप सोन्नाहरे लाल ॥ तो तमे सही निरधारजो, श्रीफल देई विवाहरे लाल॥म०॥६॥ अर्थ ॥ तमे मारा एक प्रधानने साथे तेमी सिंहलपुरमां सत्वर जार्ज. त्यां राजानी आज्ञालइ ते प्रधा नने कुंवरनुं रूप बतावजो. ॥ ५ ॥ ते कुमारनुं रूप जो मारी कुंवरी जेवुं होय तो तमे जत्साहथी श्रीफल श्रापी विवाह-लग्न निर्धार जो. ॥ ६ ॥

पाम तमारो मानशुं नही जुलीये ए उपगाररे लाल ॥ तव व्यापारी विनवे ए कामे किसो इसो जार रे लाल ॥ म० ॥॥॥ इहां तम पुत्री प्रेमला, तिहां कनकरथनो पुत्र रे लाल ॥ ए बिहुमां कहेवुं किशुं, ए बेहु सिरखुं घर सूत्र रे लाल ॥म०॥०॥ अर्थ ॥ आ काम करवायी अमे तमारो पाड मानीशुं ए उपकार जुलीशुं नहीं ते सांजली व्यापारी बोध्या—महाराज,! एकाममां आटलाबोधो जार केम मूको हो ? ॥ ७ ॥ आहिंआ तमारी कुमारी प्रेमला अने त्यां कनकरथना कुमार कनकथ्वज तेवंनेमां शुं कहेवानुं होय ? तेवंनेनुं सरखुं घरसूत्र थशे ॥ ० ॥ खोड नही ए जोडीये, होडीजे स्वामी वकील रे लाल ॥ ए वाते महाराजनी, कोडीनी नवी कीजे ढील रे लाल ॥म०॥ए॥ अमधी जे याशे चाकरी, तेहमां नहीं राखीये उहरे लाल ॥ लाज होये जे वातमां, ते वाते कुण करे होहरे लाल ॥ म०॥ १०॥ अर्थ ॥ हे महाराज! ए जोडीमां कोइ जातनी खोम नथी. तमे खुशीथी विकलने (मंत्रीने) मोकलो आवातमां जरापण ढील करवी नहीं ॥ए॥ अमाराथी जे कांइ सेवा थशे, तेमां जराए उहारा नहीं राखी ए. जे वातमां लाज होय ते वातमां कोण न्यूनता राखे!॥ १०॥

तन मकरध्वज हरषील, व्यापार कीध पसाय रे लाल ॥ चार मंत्री बुद्धि आगला, तस संगे सोप्या राय रे लाले ॥म०॥११॥ ते व्यापारी चिल्ला, संगे करी चार प्रविधान रे लाल ॥ हरष जार्या वाटे वहे, निरखंतावन सानुमान रे लाल ॥ म०॥ १२॥ अर्थ ॥ ते सांजली राजा मकरध्वज हर्षपाम्यो अने ते व्यापारी चेने प्रसन्न कर्याः पत्री राजाए पोताना चार बुद्धिमान् मंत्री लेने तेलना संगमां सुप्रीत कर्याः ॥११॥ ते व्यापारी चार प्रधानोने संगे लड़ने चाह्या. मार्गमां वन अने पर्वतो हर्षथी नीरखता हताः ॥ १२॥

सिंहल नयरी आवीया, ज्यापारी मंत्री तेह रे लाल ॥ पोहोता सहू आपापणे, यह मंत्री सिंहत ससनेह रे लाल ॥म०॥१३॥ जोजन जुगते संतोषीआ, यह संध्या प्रगट्यो दीप रे लाल ॥ तेज्यवहारी आवीआा, कनकरथराय समीप रे लाल ॥ म०॥ १४॥ अर्थ ॥ तेम करतां ते ज्यापारी मंत्रीजेनी साथे सिंहल नगरीमां आज्या, त्यां मंत्रीसहित ते स्नेह धरता पोत पोताने घेर गया. ॥ १३॥ मंत्रीजेने युक्तिश्री जोजन करावी संतोष पमाड्यो त्यां संध्या काल थयो, परले दीपक प्रगट कर्या. पठी ज्यापारी कनकराजानीपासे आज्या. ॥ १४॥

जेटयो नृपधरी जेटणुं, कही देशनी वात रे लाल ॥ विधिशुं विमल पुरीतणा, संजला-व्या सकल अवदात रे लाल॥म०॥१५॥तिहां कनकध्वजनां रूपना, सविलोके कीधां व-लाण रे लाल ॥ मकरध्वज तिहां राजिछ, निसुणी घणुं हरख्यो सुजाण रे लाल॥म०॥१६॥ अर्थ ॥ राजाने जेटी जेट आगल धरी पढ़ी देश विदेशनी वात करी. ते प्रसंगे विमलपुरीनो सर्ववृत्तांत विधिश्री संजलाख्यो. ॥ १५ ॥ तेष्ठंप जणाब्युं के, अमे समलाए कुमार कनकध्वजना वलाण कर्या. ते सांजली त्यांना सुक्त राजा मकरध्वज घणो हर्ष पाम्या. ॥ १६ ॥

तिणे तृपे श्रमने तेडी, पूज्या वसी सकल स्वरूप रे लाल ॥ यथारथ श्रमे पण कर्सुं, तिणवाते खुशी थयो जूपरे लाल ॥म०॥१९॥ प्रेमला लगी तेहने, ने पुत्री रूप निवा सरे लाल ॥ तुम सुतथी विवाहनो, मांड्यो ने राये प्रयास रे लाल ॥ म० ॥१०॥ श्रथी ॥ राजाए श्रमने तेडावी कुमारनं सर्व स्वरूप पुंज्यं. श्रमो ए जे यथार्थ हतुं ते कह्यं, तेवा तथी राजा खुशी थया. ॥ १९ ॥ ते राजाने प्रेमला नामे लक्षीसम स्वरूपवान् पुत्रीने. तेनो विवाह तमारा पुत्र साथे करवाने राजाए प्रयास करवा मांड्यो ने. ॥ १० ॥

पत्रणी ढाल इग्यारमी, एतो मोहन विजये उल्लास रे खाल ॥ आगल चंदजी सांजलो, कहुं तमने वात प्रकाश रे खाल ॥ म०॥ १ए॥ अर्थ ॥ श्रीमोहन विजयजीए आ अगीयारमी ढाल उल्लासची कही है हिंसकमंत्री कहे हे चंदराजा, तमने जे आगल प्रकाशकरूं ते सांजलो ॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

ते माटे मकरध्वजे, श्रम साथे राजान ॥ मुकया हे मंत्रीश्वरा, चारे बुद्धिनिधान ॥ १ ॥ श्रावी श्रमे तुम जेटीया, श्रासंरे सु-जगीश ॥ पण जना द्वारांतरे, ते चारे मंत्रीश ॥ १ ॥

श्रश्री। राजा मकरध्वजे श्रमारी साथे बुद्धिना जंडाररूप ऐताना चार मंत्री उने ते माटेज मोकह्या है। । । श्रमे तो तरत श्रावीने श्रापने महया हीये श्रमे ते चारे मंत्री उत्तर द्वावीने उजा है। । १ ।। तव द्यवहारी वचनश्री, श्रित हरष्यो राजान ।। दास पासे तेमावीया, श्राहुणमा परधान ।। ३ ।। प्रणिपति करी नेटयो नृपति, श्राणी श्रधिक- उमेद ।। चिहुं मुख स्तुति तिम नवनवी, जिम ब्रह्मा मुख वेद ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ ते व्यापारीनां वचनथी राजा श्रतिहर्ष पाम्यो श्रने ते मीजमान श्रयेखा मंत्रीजेने सेवकने मी-कखी पासे तेमाव्या. ॥ ३ ॥ चारे मंत्रीजंप श्रधिक जमेद धरी राजानी जेट करी। जेम ब्रह्मा चारे मुखशी वेद इच्चारे तेम तेजंप चारे मुखे नव नवी स्तुति करी. ॥ ४ ॥

चिरं नंव सानंद नृप, इम कही जजा तेह ॥ हरिषत श्रया सिंह्स धणी, सन्मान्या ससनेह ॥ ५ ॥ वेसामया मंत्रीसरा, पुढी कुशस प्रवृत्त ॥ किहांथी स्टाब्या किहां खंगे, केणे पठव्या मित्त ॥ ६ ॥

चंदराजानी रास-

अर्थ ॥ 'हे राजा ! विरकाख आनंद सहित रहो,' एम कही तेर्छ छना रहाा. तेथी सिंहखपित खुशी थया अने तेमने सोह सहित सन्मान आप्युं ॥ ए ॥ ते मंत्रीर्छने आसन छपर बेसारी कुशख धृत्तांत पुत्रमुं. पठी कहुं के, तमे क्यांकी आच्या अने क्यां सुधी जाशों? रापने कीये मोकाम हें? ॥६॥

चार मांहि हे एक चतुर, अवसर वचन प्रवीण ॥ मांनी वात नरेशथी, जिम करी कहे कुखीण ॥ ७ ॥

अर्थ ।। ते चार मंत्रीलंमां एक घणो चतुर अने अवसरे बोखवामां प्रवीण इतो, तेणे कुदीन पुरुषनी जेम राजानी साथे वात करवा मांडी. ॥ ९ ॥

॥ ढाख बारमी ॥

॥राग रामगिरी॥आज हुं गईती समवसरणमां॥अङ्कृत कीतुक दी दुं रे॥ए देशी॥
मंत्री कहे एक राज सजामां,सोरवधी अमे आव्या रे॥ मकरध्वज राजा अम
केरो,तिणे तुम पासे पठाव्यारे॥मंण।१॥अहो सिंहल प्रजु तुम नगरीना,आव्या
एह व्यापारी रे॥ इहोणे आवी राजा आगल, वात सथल उचारी रे॥ मंण।१॥
अर्थ॥ ते मंत्री कहे के हे राजा! अमे आ राजसजामां सोरव देशमांथी आव्या वीए अमारा राजा
मकरध्वज के, तेमणे अमने तमारी पासे मोकह्या के ॥ १॥ हे सिंहल प्रजु!आ तमारा नगरना व्यापारी
त्यां आव्या हता, तेमणे आवीने आ वधी वात राजानी आगल कहेली के ॥ १॥

रूनी तुम ताणी कीर्त्ति विस्तारी, ज्यापारीये इक मांने रे॥परदेशे जे होए आपणनो, ते रूपुं देखाडे रे ॥ मंण ॥३॥ तुम सुत रूप प्रशंसा कीधी, ते न बने कांइ कहेतां रे ॥ अहो खामी प्रस्तावे कहिवाये, दश खहेता दश वहेता रे ॥ मंण ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ आ व्यापारी चेप तमारी चज्वख कीर्त्ति घणी विस्तारी. जे पोतानो देशी विदेशमां होय ते आपणुं सारी करी बतावे छे. ॥ ३ ॥ तेमणे तमारा पुत्रनी प्रवी प्रशंसा करी के, ते अमारायी कही शकाय तेवी नथी. दश खहे अने दश वहे—ए कहेवत प्रमाणे हे खामी ते वात प्रस्तावे कहेवाय छे. ॥४॥

तिमज वसी वणजारे जाखी, तम सुत रूप प्रशंसा रे ॥ नृप सुत रूडो तिहां शो श्रवरज,हंस कुसे होए हंसारे॥मं०॥५॥पुत्री एक श्रमारा नृपने,नामे प्रेमखा सही रे ॥ तुम सुतथी विवाहतणी गति, श्रंतर गतिथी इही रे ॥ मं० ॥ ६ ॥ श्रथं ॥ तेम वसी कोइ वणजोर पण तमारा पुत्रना रूपनी प्रशंसा कहेसी हती. ते घटे हे राजानो पुत्र स्वरूपवान् होय तेमां शुं श्राक्षर्य हे ! इंसना कुसमां तो इंसज श्राय हे ॥५॥ श्रमारा राजाने एक प्रेमखा सही नामे पुत्री हे. तेमणे ते पुत्रीनो विवाह तमारा पुत्र साथे करवाने श्रंतर्थी इहा करी है ॥६॥

जो पहनो वर वरवा छावे, श्रंगण रूकुं दीसे रे ॥ एकन्या ए वर निरधायों, जोकी मेखी जगदीशे रे ॥ मं० ॥॥ ए व्यापारी श्रमे चिहुं मंत्री, दीधा संग खगाईरे ॥ मूक्या खामी तमारे चरणे, सुतथी करण सगाई रे ॥ मं० ॥॥॥ श्रम्थं ॥ तमारा पुत्र जेवो वर वरवाने छावे तो श्रांगणुं सारुं खागे. ए कम्यानो ए वर निर्धारी मुक्यों है. श्चा योग्य जोडी जगप्ततिए मेलवी हे. ॥ ७ ॥ श्चा तमारा व्यापारीचंए श्वमो चार मंत्रीचंने साथे खीधा हे श्चने तमारा कुमारनी साथे सगाइ करवाने श्वमोने मोकस्या हे. ॥ ए ॥

ए कारण स्वामी आव्या हुं,करीश्र घणी सुघनाई रे ॥ श्रम जूपे कह्युं ते श्रमे जाल्युं, इवे तम हाथे वनाई रे॥मं०॥ए॥तमे जिम सिंहल देश तणा पति,तिम ते पति सोरठनो रे॥ हे सरिखुं नाकार म कहिशो,काम नहीं इहां इठनोरे॥१०॥ अर्थ ॥ हे स्वामी ! ते संबंधने माटे अमे सुधडाइ करीने आव्या ठीए. अमारा राजाए जे कहुं ते अमे कही बताव्युं! हवे तमारा हाथमां वडाइ हे. ॥ ए॥ हे राजा! तमे जेम सिंहल देशना राजा हो. तेम ते सो-रठना राजा है. तमे बंने सरखा हो. माटे ना पाडशो नहीं. आ विषे इह करवानुं काम नथी। ॥ १०॥ किहां सोरठ किहां सिंहल जनपद, आव्या सूमि उल्लंघी रे॥मेख्या विवाहविना नवि जाउं, श्रमे चारे एक संगी रे॥मं०॥११॥ उपिदशो उत्तर एइनो विचारी, कहे सिंहस शिरदारो रे॥रे जाईछ तमे पाणी पहिस्नां,मोजा कांई छतारो रे ॥१२॥ अर्थ ॥ क्यां सोरत देश ? अने क्यां सिंहलदेश ? अमे घणी जूमि उद्धंघन करीने अर्ही आव्या बीए. श्रमे एक संगे रहेनारा चारे मंत्रीछं विवाइनो निर्णय कर्या विना जझ्युं नहीं. ॥११॥ तमे एनो उत्तर विचा-रीने आपो सिंद्यना सरदारोए कहुं, अरे जाइन! तमे पाणी पेहेदा मोजा केम जतारो हो ? ॥ १२ ॥ उतावल कीधे रस नवि होवे,धीरपणामां सवादोरे ॥ पालीश्रमा उतावल केरा, धीरा केरा प्रासादो रे॥मं०॥१३॥ तुम नृपने मुके तुमे आव्या,घणुंज घणुं जली कीधी रे ॥ जे तमे वात कही ते श्रमे पण,माथे चढावी क्षीधी रे ॥ मं०॥१४॥ श्चर्य।। जतावल करवामां रस होतो नथी. धीरजमांज स्वाद होय हे. जतावलथी पालो थाय हे अने

श्रर्थ।। जतावल करवामां रस होतो नश्री. धीरजमांज स्वाद होय हे. जतावलथी पालो थाय हे श्रने धीरजथी मेहेल थाय हे.॥ १३॥ तमे तमारा राजाना मोकस्या श्राव्या ते घणुं सारुं कर्युं, तमे जे वार्ता कही ते श्रमे माथे चडावी लीधी हे.॥ १४॥

थाज खस्था विचारी तमने,एइनो जत्तर देशुं रे॥ दूरदेशांतरथी तमे आव्या, किम दिलगीर करेशुं रे ॥मं०॥१५॥ रे सचिवो माहारो बालूडो,हजीश लगे वे छोटो रे॥ विवाहनी वातुं तव करशुं, जब थाशे सुत मोटो रे॥ मं० ॥१६॥ अर्थ ॥ तमे जरा स्वस्थ थार्ज. अमे विचारीने तेनो जत्तर आपीशुं. तमे आटले दूर देशांतरथी आच्या. तेमने अमे दीलगीर केम करीशुं १॥ १५॥ हे मंत्रीलं! मारो कुमार हजी बालक के ज्यारे ते मोटो थाशे त्यारे तेना विवाहनी वात करीशुं. ॥ १६॥

हजीय लगण श्रंगण निव दी तुं, जुइंरां मांहे रहे हे रे ॥ श्राज लगण खोंसे न रमाख्यो, विवाह नुं शुं कहे हे रे ॥ मंगारण दीहा विण तुम नृपनी पुत्री, केम सगाई की जे रे॥जो जतावल तमने होवे, जोवो वर कोई बीजे रे ॥ मंग्री रे ॥ संग्री श्रि ॥ संग्री श्रि ॥ संग्री श्रि ॥ संग्री श्रि ॥ संग्री श्री जोवरामां रहे हे श्राज सुधी तेने खोले बेसारी रमाख्यो नथी, त्यां तो तमे विवाह नी वात शुं कहो हो?॥ १९॥ तमारा राजानी पुत्री जोया वगर, सगाइ केम कराय ? जो तमारे छतावल होय तो कोइ बीजे हेकाणे जह वर जुवो. ॥ १०॥

मूक्या इस कही सचिव जतारे, प्रतिदिन जत्तर वाखे रे॥ कही मोहने बीजे जल्लासे, रस घणो बारमी ढाखेरे॥ मं०॥ १ए॥ अर्थ ॥ आ प्रमाणे कही ते चार मंत्रीजने जतारे मोकल्या तेवी रीते हमेसा जत्तर वाह्या करे श्रीमो-हन विजये आ बीजा जल्लासनी बारमी ढाल कही.॥ १ए॥

॥ दोझा ॥

सिंहल नृपे मुजने कहां, करवो कि शो जपाय ॥ इम दिन दिन देशा जरी, जोलवीया किम जाय ॥१॥ धन्या कन्या सुत सगद, किम रहिशे प्रवन्न ॥ वात वकी वेधे पकी, परदेशीने वयन्न ॥ १॥

श्चर्य ॥ एक वखते सिंह्ख राजाए मने कहुं, हे मंत्रि हिंसक, हवे शो छपाय करवो? श्चावी रीते प्रति दिन देशावरी खोको केम जोखन्या जाय ? ॥ १ ॥ श्चा कन्या धन्य छे पण श्चापणो पुत्र रोगी छे, ए वात गुप्त केम रहेशे? श्चा वात खरेखर परदेशीनां वचनश्ची मोटा वेधमां पनी. ॥ १ ॥

हिंसक कूम न कीजीये, कूड कुकमें कुठार ॥ ग्रेषधी घूषों कूम हे, कूम किख खनतार ॥ ३ ॥ खाशा जर मंत्रीश्वरा,जे खाव्या हे एह ॥ साच कही संप्रेडीये, जिंदो जलप्पण तेह ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ हे हिंसक मंत्री! कदिएए कूड करबुं नहीं. कूड एवं कुकमें क्वाडा जेवं हे. कूड ए गुएने नाश करनार श्रने किंद्युगनो श्रवतार हे. ॥ ३ ॥ जे श्रा मंत्रीश्वरो श्राशा जर्या श्राच्या हे, तेमने सत्यवात जएावीने श्रापऐ विदाय करीए. तेज जखानी जखाइ हे. ॥ ४ ॥

सुर कन्या सम प्रेमसा, एतो कोढी जात ॥ देखत पेखत कुण करे, अणघटती ए वात ॥ थ॥ कूड घणां की थां इशे,

पूर्व जावे निइशंक ॥ तो सुत कनकथ्वज जाणी, थयो सकुष्ट कखंक ॥६॥ अर्थ ॥ तेनी पुत्री प्रेमखा देवकन्या जेवी वे अने आपणो पुत्र कोढी छं देखी पेखीने आवी आण घटती वात कोण करे. ॥ ५ ॥ पूर्व जावे निःशंक अइने घणां कूडा काम कर्यो हशे, तो आपणो कुमार कनकथ्वज कुष्टना रोगथी कखंकित थयो वे. ॥ ६ ॥

मुज मन तो चाखे नहीं, करतां ए श्रन्याय ॥ हिंसक जे तुजने रुचे, ते तुं कर हित खाय ॥ ९ ॥

श्रर्थ ॥ श्रावो श्रन्याय करतां मारुं मन चाखतुं नश्री हे मंत्री हिंसक! तने जे रूचे ते तुं हित खावीने कर्य. ॥ ९ ॥

॥ ढाख तेरमी ॥

॥ जूठा बोखारे यादवा ॥ तेने कसी न शके कोय ॥ ए देशी ॥ हांजी हांजी के सिंहस रायने में कश्चं,तुम सुत कमें वसेण ॥ कुष्टी हे पण ते हजी, निव जाप्सो हे केण ॥ मीठो जूठो संसारमां ॥ १ ॥ जूठ हे संपत्ति मूस ॥ जूठे कोट पासटीये ॥ जूठे वश प्रतिकूस ॥ मी० ॥ २ ॥ श्चर्य ॥ में सिंहस राजाने कहां, हे खामी! तमारो कुमार कर्मना वश्यी कुष्टी हे. पण ते हजी कोइना जाणवामां नथी. श्चा संसारमां जूटी वात मीठी सागे हे. ॥ १ ॥ संपत्तिनुं मूख जूटमां हे. जूटथी कोट पसटाइ जाय हे. श्वने जे प्रतिकृत होय ते पण जूटथी वश श्वइ जाय हे. ॥ २ ॥

हां ।। एता दीइ जे जुंइरे ।। राख्यो सुत शे काज ।। जुगतो मूसघी पहवो ।। करवो न हतो महाराज ।। मी ।। ।। ॥ हां ।। बीहो ग्रे जुग यकी हवे, ए शो बासक खेस ।। दीहां जिहां समे पाधरा, तिहां समे रूपारेस ।। मी ।। ।। ।। ।। अर्थ ।। हे महाराज ! आटसा दिवस सुधी कुंवरने जोंयरामां केम राख्या? मूसघी ए जुगइ करवीज नहती. ।। ३ ।। हवे तमे जुग्धी बीहो ग्रे ए केवी वात कहेवाय? आवो बासकनो खेस केम करो ग्रेडियां समी पाधरा दिवस होय त्यां समी रुपारेस होय ग्रेड ।। ।।

हां ॥ द्याव्या जे परदेशची, मोटी राखीजी चाह ॥ राजिंद केम न कीजीये, मन गमतो विवाह ॥ मी ॥ ॥ ॥ हां ॥ कुल देवी श्राराधशुं, करशुं पुत्र निरोग ॥ हीयडाची रखे हारता, मेलशुं सर्व संजोग ॥ मी ॥ ६ ॥

ऋर्य ॥ हे राजेंद्र ! जे मोटी चाहना राखी परदेशथी ऋहिं आन्या हे, तेमना मनने गमतो विवाह केम न करीए. ॥ ए ॥ स्वामी, आपणे कुखदेवीनी आराधना करीशुं अने पुत्रने निरोगी करीशुं. रखे हृदयमां हारी जता. सर्व संयोगने मेखवशुं. ॥ ६ ॥

हांगा चोरीये नर जे पेसशे,राखशे तेहनी सार॥कोडी एकनी शोचना, राखशोमां वसुधार ॥ मी० ॥ छ ॥ हां० ॥ सिंहखराय सुणी इस्युं, मुजने ढाखी शेष ॥ जोगव तुं ताहरुं कर्युं, हुं न सहुं सबसेश ॥ मी० ॥ ७ ॥ ऋर्ष ॥ दे पृथ्वीपति! जे माण्स चोरी करवा पेशे ते तेनी (पोतानी) सारवार राखे छे. तमेएक कोमी मात्रनी शोचना राखशो नहीं. ॥॥ सिंहखराजाए ते सांज्ञखीने मने कहुं के, हे मंत्री! तुं तारुं कर्युं जोग्यय. हुं तेमां खब क्षेश जाग खहीश नहीं. ॥ ० ॥

हां ।।।इम कहितां तिहां आवीया,ते चारे मंत्रीश।।सिंहस त्रूपने विनव्युं, सुण अवनीना ईश ।। मी० ।। ए।। हां ।। वातडीये विरमाविया, अमने एता दीह ॥ जोरे प्रीत बने नहीं, रे क्तत्रीवर सिंह ॥ मी० ॥ १० ॥ अर्थ ॥ एम कहेता त्यां चारे मंत्री आव्या तेडंप सिंहसराजाने विनंति करी के, हे पृथ्वीपति,! अमारी एक अरज सांजसो. ॥ ए ॥ अमोने आटसा दिवस वार्त्ता करतांज वीतावी दीधा. हे क्त्रिय सिंह, बसा-त्कारे प्रीति थाय नहीं. ॥ १० ॥

हांगा बीजी कोइ कन्यका,परणशे तुमचो पुत्र ॥ तो स्रमे चोरी शी करी, श्यों जसव्यो घर सूत्र ॥ मीगा११॥ हांगा नृप सुतने नृपनी सुता, परणे पह प्रतीत ॥ ते तो तुमे करता नथी, नवसी जगमां रीत ॥ मीण ॥११॥ स्रम्थं ॥ ज्यारे तमारो पुत्र कोइ बीजी कन्या परणशे, तो श्रमे शी चोरी करी श्रमे कोतुं घरसूत्र बगा- डयुं ! ॥ ११ ॥ राजाना पुत्रने राजानी पुत्री परणे ए वात प्रतीत हे. ते वात तमे करता न<mark>यी ए जगत्</mark>मां नवी रीत हे. ॥ १२ ॥

हांग। तुम सुतनी अम कन्यका,स्त्री कहेवाणी आज ॥ ते बीजाने आए-ग्रुं, शी रहेशे तुम खाज ॥ मी० ॥१३॥ हांग।खडी चाखी आवी घरे,कुण जवेषे तेह ॥ किम डाह्या थइ साहिबा, अवसर चूको एह ॥ मी० ॥१४॥ अर्थ ॥ अमारा खामीनी कन्या तमारा पुत्रनी स्त्री कहेवाणी, हवे ते अमे बीजाने आपशुं तो पठी समारी शीखाज रहेशे? ॥ १३ ॥ धेर खक्की आवे तेनी कोण जपेका करे?हे साहेव! आप सुक्त यहने आ अवसर केम चुको हो ? ॥ १४ ॥

हांगामें तव रायने विनव्युं,श्ववधारो श्वरदास ॥ श्वादा विक्काद्धा श्वाविश्वा, ते किम कीजे निरास ॥मीगा१५॥ हांगा पाय उपामीजे श्वावीया, फोगट फरशे केम ॥ ए कनकध्वज प्रेमला, परणे वधरो प्रेम ॥ मीग ॥ १६ ॥ श्वर्थ ॥ ते समये में राजाने विनंति करी के, स्वामी, श्वा मंत्रीजेनी विनंति ध्यानमां स्थो. ते श्वाका जनरेखा श्वाच्या हे तेमने निरास केम कराय १॥ १५ ॥ जे परदेशश्री पग जपामी श्वाच्या हे, ते पाडा फोगट केम फरशे. १ श्वा कनकध्वज श्वने प्रेमला परणे, तेथी तेमनो प्रेम वधरो. ॥ १६ ॥

हांगानृपथी जपर वट थई, में मेख्यो विवाह ॥ जूप जाणी गमिजं नही, देखी निपट कुराह ॥ मी० ॥१७॥ हांगा श्रीफल ताम श्रंगीकर्यं, वहेच्यां फोफल पान ॥ हीयडे रंग रही थया, ते चारे सुप्रधान ॥ मी० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ पत्नी राजानी जपर वट श्रर्ड में विवादनी हा पाडी. श्रंदर राजाने तेमां कपट खागवाश्री ते वात गमी नहीं. ॥ १७ ॥ तेमनुं श्रीफख श्रंगीकार कर्युं. सर्वने फोफखपान वेहेंचवामां श्राष्यां तेश्री चारे प्रधानो इदयमां श्रानंद मग्न श्रर्ड गया. ॥ १० ॥

हां ।। तेरमी बीजा जहासनी, मोहने जाखी ढाछ ।। आगख चंदजी सांजलो, कूड कथा सुविशाख ॥ मी० ॥ १ए ॥ अर्थ ॥ श्रीमोहन विजये बीजा जहासनी तेरमी ढाख कही हे. हे चंदराजा ! तेनी आगख जे विशाख कुड थयां हे ते सांजलो. ॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

सयण सयस जेलां मस्यां, यई वधाई जोर ॥ गुणिश्रण घणा गह कीया, जिम पावस कृतु मोर ॥ १ ॥ ते चिहुं जण हरली कहे, कीधो श्रम खपकार ॥ पण श्रमने ते कुंश्ररनो, देखाडो देदार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ सक्जनो एकवां मस्यां. जोरची वधामणीचं प्रवर्त्तवा खागी. वर्षा क्रतुमां मयूरनी जेम घणागुणी पुरुषो हर्ष पामवा खाग्या. ॥ १ ॥ ते चारे प्रधानोए हर्षची कश्चं, मंत्रीराज, तमे अमारो मोटो चपकार कर्यो, पण अमोने ते कुमारनी मूर्ति देखादो. ॥ २ ॥

जीम अम स्वामी आगसे,कहीश्रेजइ विरतंत॥कनकथ्वज जोवा जाणी, घणी श्रमने मन खंत ॥३॥ याशे कृतारय प्रेमला, परणीने महाराज ॥ नयणे देखानी श्रमजणी, करो कृतारय श्राज ॥ ४॥

श्चर्य ॥ ते कुंवरने जोड़ श्चमे ते वृत्तांत श्चमारा राजानी पासे जणावीए. कुमार कनकथ्वजने जोवानी श्चमने घणी खंत हे. ॥ ३ ॥ हे महाराज! राजकुमारी प्रेमला तेने परणीने कृतार्थ थाशे श्चने श्चमोने नजरे बताजी श्चाज कृतार्थ करो. ॥ ४ ॥

में तव बुद्धि रची कहां, कुंध्यर रहे मोसाख ॥ इहांधी जोयण दोढसे, श्रांखनो जाणे विशास ॥ ५ ॥ ५० जूमी ग्रहमां रहे, एक भाव तस संग ॥ श्रध्यापक बाहिर रही, कक्षा शिखावे चंग ॥ ६ ॥

श्रर्थ ।। हे चंदराजा ! ते वखते में बुद्धिनी युक्ति रची कहां के, कुमार तेमना मोशाखमां रहे हे. ते अ-हींथी दोढसो योजन हे. त्यां श्रखगा रहीने निशाखे जाए हे. ॥ ५ ॥ त्यां पण जूमिगृहमां रहे हे. तेनी साथे मात्र एक धान्य हे. तेनो श्रध्यापक (शिक्षा गुरू) पण बाहेर रहीने छत्तम कखाछ शीखवेहे.॥६॥

ते दिरसण अति दोहिखो, तुम चीढुं ए शी आश ॥ रवि पण फरसी नवि शक्यो, तो तुमशी गुंजाश ॥ ७ ॥ प्राहूणडे इठ मांभीज, कुंअर निरखण जाम ॥ ते चिह्नं तेमी आवीज, माहरे मंदिर ताम ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ तेमना दर्शन श्चित इर्द्धज है. तमारा चारेने तो ए श्चारा शी राखवी. ? सूर्य पण तेने फरसी शकतो नथी, तो तमारी शी गुंजास है ? ॥ ७ ॥ ते मीजमानोए कुंवर जोवानी हठ करवामांडी पही हुं ते चारे मंत्रीने तेडी घेर श्चाव्यो. ॥ ए ॥

॥ ढाख चौदमी ॥

॥ कानूडे एम शुं की धुं रे, माइरुं मनडुं हरीने ली धुं रे ॥ ए देशी ॥ मंदिर तेड्या मंत्री रे, जे हूंता सोरठ गंत्री रे ॥ तेलादिक योगे नवाड्या रे, केशर घनसार अमाड्यारे ॥ १ ॥ आसण वासण मंडाव्यारे, जोजन जुगते शुं जमाव्यारे ॥ तिम दीधां पान सोपारी रे, कर्या सीत समीर बेसारी रे ॥ १ ॥ अर्थ ॥ सोरठ देशमां जनारा ते मंत्री जेने मंदिरमां बेसार्या. पठी तैल विगरेनो योग करी तेमने न्हवराज्या अने केशर कपूरना विलेपन कर्या,॥१॥ पठी आसनपर बेसारी पात्र मंनाव्यां. तेमां जत्तम जोजन पीरसी प्रेमची तेमने जमाड्या. पठी पानसोपारी आपी बेसारीने शीतल पवन ढोलाव्या. ॥ १ ॥

चाह चूरण पाठ्या खांकी रे,इम तेहथी खटपट मांकीरे॥आजूषण मिणमां जरी-यांरे, आगख खेई तेहने धरीयरि ॥३॥ सन्मान्या जूषण आपी रे, जग खोज-समो नही पापीरे ॥ परदेशी करे वसी आडोरे,अमने नृप पुत्र देखाडोरे ॥४॥ अर्थ ॥ पठी चाहनाथी खांडेखा चूर्ण खबराज्यां. एवी रीते तेमनी खटपट करवा मांडी. पठी मणिज-दित आजूषणो तेमनी आगख धर्यां. ॥ ३ ॥ आजूषणो साथे पोशाक आपी सन्मान कर्युं. आ जगत्मां



खोजना जेवो कोइ पापी नथी. तेटल्लं कर्या उता पण ते परदेशी मंत्री ए आहं पुन्छं के, स्त्रमने ते राजपुत्र बतावो. ॥ ४ ॥

में जाख्यो कुंश्रर रूपालो रे फरि फरि शुं उत्तर वालोरे ॥ जे वाते तुम नृप खीजे रे,ते वातो श्रमे किम कीजे रे ॥५॥ सात गल्लाणो गली जल पीजेरे कीजे कपट कोई थल बीजेरे॥ए कुंश्रर नथी कांई ठानोरेतुमे जाई उसही करी मानोरे॥६॥ श्रश्री॥ में लात्रीयी कहां ठे के, कुंवर रूपाला ठे. वारेवारे शुं पुठो ठो, जे वाते तमारा राजा गुस्से याय, ते वात श्रमे केम करीए १॥ ५॥ सात गल्लाणे गलीने पाणी पीए ठीए. जो कपट करतुं होय तोबीजे ठेकाणे करीए. ए कुंवर कांइ ठानो नथी, ए वात सही करीने मानजो.॥ ६॥

श्रमे की घुं हे काम विमासी रे,नहीं होए तुमारी हांसी रे॥श्रम योग्य नही ए हेकाणुं रे,तुम वचन श्रमे न खोपाणुं रे ॥७॥ कोई शुक्रन जखे तुमे श्राव्यारे, कर्या कारज सवि मन जाव्यारे ॥ प्रेमखा सरखी नही बीजीरे, मन साचे गौरी पूजीरे ॥ ए ॥

श्रर्थ ।। श्रमे श्रा काम विचारीने कर्युं हे. श्रा कार्यमां तमारी हांसी श्रशे नहीं श्रमारे योग्य तमारं हेकाणुं नथी, पण तमारं वचन श्रमाराश्री लोपी शकाणुं नहीं. ॥ ७ ॥ तमे कोइ सारा शुकने श्रावेला के जेश्री तमे मन गमतुं कार्य कर्युं. प्रेमला जेवी कोइ बीजी जाग्य शाली नहीं. तेणीए साचा मनश्री गौरी-नी पूजा करी हशे. ॥ ० ॥

हुठ एम करो शा माटेरे, अमे वेचो अरहट रोटो साटेरे॥ तुमे न करो निपट ठगाई रे, अई खेख लिखित सगाईरे ॥ ए॥ फोसलाव्या वश निव आव्यारे, को ि को ि टके लिखचाव्यारे॥ तव पाठो उत्तर निव की धोरे, जाणो मांज निलांडे की धोरे ॥ रणा अर्थ ॥ हे मंत्री है, तमे कुंवर जोवानो हुठ शा माटे करो ठो? अमे एक रोटला माटे सोनैयो वेच्यो है. हवे तमे ठगाइ करो नहीं. एतो लेखे लखेली सगाइ यह चुकी ॥ ए॥ एवी रीते फोसलाव्या पण तेले वश अया नहीं, पठी तेमने कोटी कोटी रूपी आ आपवानं कही लिखचाव्या. तरतज तेले ए पाठो जत्तर आप्यो नहीं. जाणे डाम दीधो होय तेम अइ गया. ॥ १०॥

हुंता जे नीला पीलारे, पण देखी टका थया शीलारे ॥ फेरव्या वचने तेणे चारे रे, स्रमे कहूं हुं लगन दिन क्यारेरे ॥११॥ नृप पासे सहु फिरि स्राव्यारे, पंडित जोशी तेमाव्यारे ॥ षट्टमासे लगन निरधार्थुरे, फिरि पाहुं किणे न पचार्थुरे ॥११॥ स्त्रश्री ॥ जे लीलापीला थता हता, ते रूपीत्रा देखीने शीला थर गया. ते चारे ने वचनथी फेरवीदीधा अने पुज्युं के, हवे लग्ननो दिवस क्यारे हे? ॥ ११ ॥ सर्वे फरीने राजा पासे स्नाव्या. त्यां पंडित जोषी हो ने ने वाल्या. तेमणे त्यारथी इसारे लग्न निर्धार्यों. ते पांडुं कोइए फेरच्युं नहीं. ॥ १२ ॥

सनमान्या सिंहल भूपेरे,शीख मागी चिहुं जणे चोपेरे॥चाह्या परदेशी हरषी रे,वाटमली सोरठनी निरखीरे॥१३॥श्रागलथी दाम चलाव्यारे,इम करतां विमल पुरी श्राब्यारे॥ भूपतिने प्रणमी सुणाईरे, चोकस कीथी जे सगाइरे॥ १४॥ श्रर्थ ॥ सिंह्य राजाए तेमनुं सन्मान कर्यु. चारे जऐ सत्वर जवाने शिखमागी पठी शीख श्रापवाथी ते चारे विदेशी हर्षथी सोरठनी वाट जोता चाह्या ॥ १३ ॥ तेमऐ मखेखा रूपीश्रा श्रागखर्थी मोकखा व्या तेर्च विमलपुरीए श्रावी पोहोच्या. राजाने प्रएाम करी संजलाव्युं के,प्रेमखा लक्षीनी सगाइ करी ॥१४॥

मकरध्वज चिहुनें प्रसिद्धारे,चार लाख पसाय ते दीधारे॥कांइ क्र्मुं हीये निव आएयुं रे,धोलुं सिव दूध ते जाएयुं रे॥१५॥ पुंठलथी श्रमे सुप्रसिद्धिरे, सामप्री जाननी कीधीरे ॥ सिणागार्या गज रथ घोडारे, जानइया सबल सजोगांरे ॥१६॥ श्रर्थ ॥ राजा मकरध्वज खुशी थयो. ते चारे प्रख्यात मंत्री जेने प्रसादथी चार लाख सोनैया आप्या; तेना हृदयमां कांइ पण कपट लाग्युं नहीं. जेटलुं धोलुं तेटलुं छघ जाएयुं. ॥ १५ ॥ पाछलथी श्रमे प्रसिद्ध पणे जाननी सामग्री तैयार करी. हाथी, घोडा श्रने रथ शणगार्या. समान वयना सरखा सबल जानैया तैयार कर्या. ॥ १६॥

पुरलोक मिली सह पुढ़ेरे,एइ हलफल कारण हुं हे रे॥जाले सह एइ इं जणाई रे,नृप नंदन परणवा जाई रे ॥१७॥ रूपे जे जे छाफरी छारे, पुरवासी जोवा टर-परीछा रे॥ छमे कीधी सयल सजाई रे, मोटां निसाण वजाई रे॥ १७॥

अर्थ ॥ नगरना लोकी मलीने पुजवा लाग्या के, आ धामधूम अवानुं शुं कारण जे ? त्यारे सर्वे कहेवा लाग्या के, राजकुमार परणवा जाय जे. ॥ १९ ॥ कुमारना रूपने माटे जे लोको आफरी गया हता, तेर्छ तेने जोवाने तरफमीआ मारवा लाग्या. पज्जी अमे सर्व प्रकारनी तैयारी करी मोटा निशाण वगडाव्यां ॥१०॥

ढाल चौदमी बीजे जल्लासे रे कही मोहन वचन विलासे रे॥ इम जे जे हिंसक कहे हे रे, हारद नृप चंद लहे हे रे ॥१ए॥

श्रर्थ ॥ बीजा ज्ञ्चासनी आ चौदमी ढाल श्रीमोहनविजये वचनना विलासधी कही है। एम हिंसक मंत्री जे जे कहेहे तेनो हार्द चंदराजा लेता जाय है। ॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

जोलो सिंहल जूपति, जाषे मुज शिरताज ॥ रे जुंना कन्या तणो, कांइ विगाडे काज ॥ १ ॥ चोरीमां चावुं यहो, कनकध्व-जनुं रूप ॥ किम परणहो प्रेमला, इम मुज जाषे जूप ॥ १ ॥

अर्थ ॥ मारा मस्तकनो ताज जोलो सिंहलराजा बोस्योः अरे! जुंडा हिंसक मंत्री, ते कन्यानुं कार्य शा माटे बीगाफेंग्ने? ॥ १ ॥ वली कनकष्वजनुं रूप चोरीमां प्रगट अरो. मने एवुं जासे ने के, पनी प्रेमला तेने शी रीते परणशे? ॥ १ ॥

श्राराधी कुल देवता, यई प्रगट सुप्रवीण ॥ क्रण क्रण किम तुं मुक्तने, श्राकर्षे यई दीण ॥ ३ ॥ जूप जाणे माता सुणो, करे श्रयुक्त प्रधान ॥ पण तुम हाये जीतवुं मूज एह वे तान ॥ ४ ॥ श्रयं ॥ पत्री श्रमे कुलदेवीने श्राराधी, एटले ते प्रवीण देवी क्रणमां प्रगट श्रयां श्रने कहुं के,श्ररे! राजा



तुं दीन थड़ क्रणे क्रणे मने केम आकर्षी बोलावे हे ?।। २।। राजा बोह्यो. माता सांजलो, आ प्रधान अयुक्त कार्य करे हे. पण मारे तो तमारे हाथे जितवानुं हे. अने मूलथी मने एज तान हे.।। ४।।

रोग रहित ए सुत करो, तुं कुछ त्राता संत ॥ आवे ठीक यदा तदा, सहु दिनकर निरखंत ॥५॥ तव देवीये उपदिइयुं,कर्म रोग नवि जाय ॥ पण वारिश चिंता सकछ,कोइक करी उपाय ॥६॥

श्रर्थ ॥ दे माता ! तमे कुखनी माता हो, श्रा कुमारने रोग रहित करो. ज्यारे हींक श्रावे त्यारे सर्व सूर्यनी सामुं जुवे हे. ॥ ए ॥ त्यारे देवीए जपदेश कर्यों के, राजा ! कर्मनो रोग जतो नश्री, पण कोइक जपाय करीने तारी सर्व चिंता टाखी नाखीश ॥ ६ ॥

लगन समय श्राजानृपति, नारि विमात सहेत ॥ श्रावी पर-णशे प्रेमला, ए तुम श्रम संकेत ॥५॥ एम कही देवी गई, थई धीरज मनमांह ॥ सिंहल नृप हूज खुशी, जान सजी उठांह ॥ ७ ॥ श्रर्थ॥ ज्यारे लग्ननो समय आवशे, त्यारे प्रेमलाने श्राजा नगरीनो राजा नारी तथा विमाता साथे श्रावी

परिता क्यार क्षेत्रना समय आवरा, त्यार प्रमक्षान आजा नगराना राजा नारा तथा विमाता साथ आवा परिता , ए स्प्रमारो संकेत हे. ॥ ७ ॥ स्त्रा प्रमाणे कही ते देवी चाली गइ. राजाना मनमां धीरज स्त्रावी, पृत्री सिंहलराजा खुद्दी स्रयो स्त्रने जत्साहस्री जान तैयार करी. ॥ ७ ॥

॥ ढाख पंदरमी ॥

॥ कसीयाने तंबु ठाकोर मारा खकाकीया हो माहरा साहिबा ॥ ए देशी ॥ कसीयाने तंबु सिंहल राये खका कीया हो ॥माहाराण॥ निज कुल देवी तणे रे वचन,रसियाने केसरीया कमधज कीधा जानीयाहो ॥माण॥ जाणो के विकसित पंकजवन ॥कणारा। कालोने मतवालो वरसालानो सहोदरूरे ॥माण॥ मद उर शिण गार्या मातंग,मांकी छंबाकी पकदावासी जरकेसी हो॥विण कृतु जाड्वडानो हो रंग १ अर्थ ॥ सिंहल राजाए कसी तंबु खका कर्या. छने पोतानी कुलदेवीनां वचनथी रसिष्ठा अने केशरीष्ठा जानैया तैयार कर्या. ते जाणे विकाश पामेलुं कमलवन होय तेवा लागे हे. ॥ १ ॥ मेघनो जाणे सहो-दर होय तेवा मदफरतो कालो हाथी शणगार्थों. तेनी छपर जरकसी पडदावाली एक छंबाडी मांडी. ते कृतवगर जाइवडाना रंग जेवी लागती हती. ॥ १ ॥

कनकथ्वज ते मांहे चाहेशुं वेसामी इहो ॥ माण ॥ निपट कपट यतन करी बहू जंत, केणेही निव जाएयो जे अमे आएयो जानमें हो ॥ माण ॥ पोढी आमी मांमी मोढी अनंत ॥ कण ॥ परहुंती पधराव्या आव्या ए आमंबरे हो ॥ माण अमता अनुक्रमें सुंदर पंथ, आवीने अमे मिलिया विमलपुरीना रायने हो॥ माण ॥ एहमां जूठ नश्री कांइ अंत ॥ ॥॥ अर्थ ॥ ते अंबाडी उपर कनकथ्वजने कपट जरेली घणी जातनी यतनाश्री वेसायों तेने जानमां लाव्या हे एम कोइना जाणवामां आव्युं नहीं तेनी आडी मोटी चोकी वाली दोढी इं वेसारी दीधी ॥ ३ ॥ मोटा आडंबरे आवेला अमने नगरमां पधराव्या अनुक्रमें सुंदर मार्गे चालता अमे आवी विमलपुरीना राजाने महया आमां कोइ जुद्रं नशी ॥ ॥ ॥

दीधो हे उतारो श्रवधारोजी श्रम जणी हो ॥मा०॥ जोजन योजन युगति श्रतुष्ठ, पाणी यहणनी रजनी राजन ए हे श्राजनी हो॥मा०॥वरशे श्रमसुत प्रेमसासह॥क० ५ कुसदेवी संकेते तुमचे हेते सेवका हो ॥मा०॥ कही तसनाम श्रने रे निसाण, ए पुरनी उक्जोंसे साते पोसे मूकीया हो ॥मा०॥ श्रवसर दिवस तणो श्रवसान ॥ क०॥६॥

श्चर्य ॥ राजाए श्रमोने जतारो दीधो जोजन पाननी युक्ति घणी जत्तम करी है हे राजा चंद! आजे ते पाणिग्रहण करवानी रात्रि है. श्रमारा कुंवर प्रेमखा खक्कीने श्राज वरशे. ॥ ए ॥ कुलदेवीना संकेत प्रमाणे तमारुं नाम अने निशाण कही श्रा नगरना साते दरवाजे सेवकोने मोकलाव्या है खग्ननो श्रवसर दिवसना श्रस्त थये है.॥ ६॥

नारी विहुंनी जोहे केहे तुमने निरित्वया हो ॥मा०॥ प्रणम्या तेहुणे कही नृप चंद, पध-राव्या मनजाव्या हेजे तमने स्थम खगे हो॥मा०॥ स्थमे पण देखी पाम्या स्थानंद॥क०॥॥। जाखी ए जे वातो हुंती सातो धातनी हो ॥मा०॥ तुमस्री साच वयनो स्रंश, एहमां जो कोइ कूनुंतो, स्थम नृपना पय छबूं हो ॥मा०॥ स्थहो स्थानापुर स्थवतंस ॥क०॥०॥ स्थि ॥ तेवामां वे स्थीनी जोमे तमने नीरिक्या राजा चंद हो एम जाणी प्रणाम कर्यो. पही मन जा-वता एवा तमने स्थि स्थारा खगी पधराव्या स्थने स्थमे देखीने स्थानंद पाम्या॥ ७ ॥ हे स्थाना नगरीना स्थलंकार, जे खरेखरी वात हती, ते तमारी स्थागल निवेदन करी हे तमारी साथे साचवटनोज स्थंश है. जो स्थामां कांइ कूनुं होय तो मारा राजानो पगे हास्य है. ॥ ० ॥

श्रवधारो विनतडी सारो कारज माहरू हो ॥ मा० ॥ परणी श्रापे ए प्रेमला नार, जाडे जो नही परणोतो श्रमे धरणो घालशुं हो ॥ मा० ॥ हवे तम शरणे इण सं सार ॥ क० ॥ ए ॥ ए पांचे जीवाडो छोडो श्रामो चंदजी हो ॥ मा० ॥ हवे रखे हं साडो हुर्जन जन्न, जाशो जो करी ताडो श्रामो पाडो जागशे हो ॥ मा० ॥ नरपति केरं हे सदन श्रासन्न ॥ क० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ दे राजा, श्रमारी विनंति ध्यानमां खड़ श्रा कार्य सिद्ध करो. ए प्रेमखा खद्मीने जाडे परणी श्रापो. जो नापाडशो तो श्रमे पाठा जइशुं नहीं; हवे श्रा संसारमां तमारूं शरण है. ॥ ए ॥ हे राजाचंद, ए पांचे ने जीवाडो; श्रा श्रामुं श्राव्युं ते काढो. रखे हवे छुजैनोने हसावता, जो तमे ताड करी चाह्या जाशो तो पठी श्रहीं श्राडोश पामोश जागशे. श्रहीं राजानुं घर नजिक है. ॥ १०॥

पहिलां पण नर जाडे लाडे परण्या ठेघणा हो ॥ मा०॥ तो इहां तुमने नहीं कोइ दोष, रयणी तो विहाणी रहेशे कहाणी जुगो जुगे हो० ॥ मा०॥ किम तुमे थई रह्या महीनो पोस॥ क० ॥ ११॥ तुममांहे अम सुतमां अंतर को डीनो नहीं हो ॥ मा०॥ अम कुलदेवी वचनधी चंड, आनंदे इम चंदे छंदे सांजब्युं हो ॥ मा०॥ अंशक हिंसक वालाजी फंद ॥ क० ॥ ११॥ अर्थ ॥ हे राजा,पूर्वे आवी रीते घणा पुरुषो जाडे परण्या हे. तेथी तमने आ कार्य करवामां कांइ दोष

नथी. आ रात चाली जरो अने जुगेजुग आकहाणी रही जरो. तमे पोष मासनी जेम थंडा केम थर रह्या हो? ॥ ११ ॥ तमारा अने मारा पुत्रमां कोमीनो पण अंतर नथी. हे चंदराजा, कुलदेवीनां वचनथी अमे कहीए हीए. आप्रमाणे चंद्र राजाए हिंसक मंत्रीना फंदने गणी बधु सांत्रली लीधुं. ॥ १२ ॥

सिंदल नृपने चंदे परमानंदे विनव्युं हो ॥ मा० ॥ ए तुम करवी न घटे श्र नीत, हिंसकने छलंजो दीजे केही वातनो हो ॥ मा० ॥ दीसे छे तुमची खोटीजी रीत ॥ क० ॥ १३ ॥ परणीने किम श्रापुं पाठी श्राठी गेहिनी हो ॥ ॥ मा० ॥ किणविध लाजवीयें क्षत्रीवट, राजाये मत्रीये चंदनुं चितमुं रीज व्युं हो ॥ मा० ॥ जिमतिम करीकूम कपट ॥ क० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ पठी चंदराजाए परम श्चानंदथी सिंहल राजाने विनंति करी के, श्चावुं श्चनीतिनुं काम करबुं तमने घटित नथी. श्चा बाबत श्चा हिंसक मंत्रीने कड्वातनो उंतंत्रो देवो ? श्चा तेनी रीत घणी खोटी ठे. ॥ १३ ॥ कदि जो हुं परणुं तो पठी ए स्त्रीने पाठी केम श्चापुं. ! तेम करी इत्रिवटने केम लजाबुं. ! पठी राजा श्चने मंत्रि हिंसके चंदना चित्तने घणा घणा कुड करीने रीजव्युं. ॥ १४ ॥

उंनी मत श्रालोची चंदे हाकारो जखो हो ॥ मा० ॥ हरिषत मन हूज सिंहल महीपाल ॥ जाषी मोहन विजये ए बीजा जल्लास नीहो ॥ मा० ॥ पावन पनरमी ढाल रसाल ॥ क० ॥ १५॥

श्चर्य ।। छेवटे चंदराजाए छंडो विचार करी हापाडी; एटले सिंहलराजा हर्ष पाम्यो. श्रीमाहेन विजयजी ए श्चा बीजा जल्लासनी पवित्र श्चने रसिक पंदरमी ढाल कही छे. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

चंचल चंद चकोर जिम, निव चूको श्रविसाण ॥ कर पीडण जावीवरो, कीधो ताम प्रमाण ॥ १ ॥ सिंहलराये चंदनुं, कीधुं परमपवित्र ॥ पहेराव्यो बहु मूलनो, वरनो वेश विचित्र ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ चकोरपद्दीनी जेम चंचल एवो चंदराज श्चवसान चुक्यो नहीं. जावि योगे पाणिग्रहण कर वातुं कबुल कर्युं. ॥ १ ॥ सिंहल राजाए चंदना शरीरने परम पवित्र कर्युं. श्चने वरनो बहूमूह्यवालो वि चित्र वेश तेने पेहेराव्यो. ॥ २ ॥

रथसेजवाला सज कीया, जोड्या वृषत्र तुरंग ॥ रणण त्रणण बहु रणफणे, रंगाचंगसुरंग ॥ ३ ॥ द्धंब फुंब फावा द्धितित, श णगारी सुखपाल ॥ जाणीये हरख समुद्रमां,नावा तरय विशाल ॥ ४ ॥

श्चर्य।।रथनी साथे बलद अने घोडा तैयार करी जोड्या. ते सुंदरपणे आनंदथी टणटण शब्द करवा लाग्या.

गणणे ग्रमीनं गयण लगें, पंचरंग बहुत्रंत ॥ जाणीयें सुरकन्या मणी, वरराजा निरखंत ॥ ५ ॥ फरहरीया नेजा पवन, खिंख णीज जणणंत ॥ खबर करे मनु सुरजणी, चंद जेह परणंत ॥ ६ ॥ श्चर्य ॥ पंचरंगी बहुजातनी गौरीछ श्चाकाश सुधी छंचे रही जोती हती, ते जाणे देव कन्याछ मखी व रराजाने निरखती होय तेवी खागती हती. ॥ ५ ॥ नेजा पताका पवनमां फरकवा खाग्या. तेमां रहेखी घुघ रीछनो घमकार थवा खाग्यो. ते जाणे चंदराजा परणे हे-एखबर देवताने श्चापती होय तेम जलाय हे. ॥६॥

> ठंद टकोरा गमगडे, वाजे ग्रहिर निसाण ॥ नादे पूराणो गयण, संकाणो सुरराण ॥ ७ ॥ सांबेखा शिणगारीया, मह मह गंध म हिल्ल ॥ वरघोडे जोडे चडे चढीश्रा खगन पहिल्ल ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ इंदना टकोरा गाजता हता. गंजीर निशान वागी रह्यां हतां श्चाकाश नादयी जराइ गयुं. तेथी देवराज इंद शंका पामवा लाग्यो. ॥ ७ ॥ सांबेला शाणगारवामां श्चाव्या. जेर्च सुंगंधयी बेहेकी रह्यां हतां; समय उपर वर घोडानी साथे चड्या हता. ॥ ७ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

श्राव्या चोमासाना दाहामारे, चडजो चाखमीयें ॥ सासु पूर्वे बहुवात, श्रावे वर खटकंतो ॥ ए देशी ॥ राग मब्हार ॥ जोवे विमलपुरीनावासी, गोखे गोखे मृगाक्ती रे ॥ ज श्रावे सिंहलनो ठावो, परणवा प्रेमलालठी रे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ विमलपुरीना लोको जोवा आन्या. मेहेलना गोखे गोखे मृगना जेवा लोचनवाली स्त्रीच आवी कहेवा लागी के, जुर्च आ प्रेमला लक्कीने परणवाने सिंहलनो राजकुमार परणवा आवे हे ॥ १ ॥

श्रावे वर लटकंतो, कनकध्वज नरराज ॥ गिलयें श्रटकंतो ॥ ए श्रां कणी ॥ १ ॥ सहसगमे दीवा जगमगते, रिव निशि मानी रे ॥ पण परणवा चंदने मानुं कीधा किरणने जानी रे ॥ श्रा॰ ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आ कनकथ्वज राजा लटकंतो अने गलीए गलीए अटकंतो आवे हे. आ हजारो दीवार्ड फ गमगे हे. तेथी रात्री मानीने सूर्य तो न आव्यो पण आ कीरणोने जोइ चंड (चंद) परखवा आवे हे. एम हुं मानुं हुं. ॥ २ ॥

चंद चढ्यो दिन करने वाहाने, ए पण श्रचरिज जाणो रे ॥ चंद तणे ठामे कनकथ्वज, सोहला मांहे गवाणो रे ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ पंखा पवन करंता जनने, फिर फिर कहे मम बीजो रे ॥ नही नही नही ए क नकथ्वज, एतो वर कोण बीजो रे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ सूर्यने बाने चंद चड्यो-ए श्राश्चर्यनी वात है. तेम चंदने हेकाणे कनकध्वज गवाणो ए पण श्राश्चर्यनी वात है. ॥ ३ ॥ दोकोने पवन करता पंखार्च जाणे कहेता होय के, तमे खीजशो नहीं, श्रा क नकध्वज वर नथी पण कोइ बीजो है. ॥ ४ ॥

कानेरे जेहवो वर सांजलता, तेहवोज नयणे दीठो रे ॥ आपण डा नृपतनुजा केरो, पूरव पातक नीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ आहो

धाता धन एहनी माता, जायो सुत देदारूरे॥ एहने छाग ख सुर कुण सेखे, रूप बन्यो ने वारू रे॥ छा० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ते समये खोको वातो करवा ख़ाग्या के, जेवो वर श्चापणे काने सांजलता तेवोज श्चापणे जोयो है. श्चापणा राजानी पुत्रीनां पूर्वनां पाप तो नाज्ञी गयां. ॥ ॥ श्रहो, विधाता तने धन्य हे. श्चहो श्चानी माताने धन्य हे,जे श्चावा पुत्रने जन्म श्चापे!श्चानुं रुप एवं बन्युं हे के, तेनी श्चागल देवपण शा लेखामां हे?६

इम पुरमांहे सुंदर वर वर, घर घर निपट सुहाव्यो रे॥ ढोल मृदंग निशान वाजंते, वरवा तोरण श्राव्यो रे॥ श्राव्याति। सोरठ मारू राग खंजाती, रंगेरंग बनाया रे॥ फीलती रातत णा स्वर कीणे, सोहवे सोहला गाया॥ श्राव्या ।। प्रा

श्चर्य ॥ एम नगरमां घेरघेर ए सुंदर वरनी प्रशंसा चाली. एम करतां ढोल, मृदंग अने निशान वगाड तो ए वर वरवाने तोरण आब्यो. ॥ ७ ॥ ते वखते सोरठ, मारु अने खंजाती रागनो रंग गाजी रह्यो जी स्नती रात्रे ए मधुर जीणा स्वर सुशोजितपणे गवाता हता. ॥ ० ॥

सिंद्द राजा जूगे मंत्री, पगपग वर पड़ावे रे ॥ वरनी लागत खेता खेता, तोरण सूधी आवे रे आ०॥ ए॥ जे विध तोरण करवो हूतो, सासुयें ते विध लीधा रे ॥ सुरग्रह ते पण जाखी न शके, जहाव जे जे कीधा रे ॥ आ०॥१०॥ अर्थ ॥ सिंद्द्वराजा अने जुगे मंत्री वरने पगले पगले पड़खावे हे, वरनी लागत लेता ते तोरण सुधी आवे हे.॥ ए॥ जे विधिए वरने तोरण कराय ते विधि सासुए लेवा मांड्यों ते वखते जे जे जत्सवकर्यों तेनुं वर्णन देवता गुरु बृहस्पति पण कहीश के तेम नथी। ॥ १०॥

माहिरामां हे आखो वरराजा, श्रयुगत वयणे गाई रे ॥ धन्या कन्या प्रेमला लड़ी, तेपण तेहवी बनाई रे ॥ श्रा० ॥ ११ ॥ श्रहो श्रहो लोक कहे कनकघ्वज, प्रेमला लड़ी तेहवी रे ॥ मनमथ रायने ए रितराणी, जुगती जोमी जेहवी रे॥१२॥ श्रर्थ ॥ श्रयुक्त-न ठाजे तेवां वचनोनां गीत गाइ वरराजाने मायरामां लाव्या कन्या प्रेमला लझीने पण धन्य हे, तेने पण तेवी बनावी ॥ ११ ॥ लोको कहेवा लाग्या-श्रहो श्रा कनकध्वज श्रने प्रेमला ल झीनी जोडी मन्मश्रराय श्रने रितराणीनी जोड जेवी जुगते मली हो ॥ १२ ॥

रहेजो आवंड ए वर वहु जोमी, रखे प्रज्ञ लागती खामी रे ॥ एहने जंनोवायु न होजी, वारी हुं आंतर जामी रे ॥ आगा। १३॥ वीरमती वली तेम गुणावली, नयरी निरखी आवी रे ॥ कौतुक जोवा मंडप जनी, रसन्निर रंग लगावी रे ॥ आगा। १४॥ अर्थ ॥ वली आशीष आपे हे के, आ वर अने वधूनी जोडीने प्रज्ञ अखंम राखजों तेमां रखेखामी आवशो नहीं, हे अंतरजामी, एने जनोवा पण वाशों नहीं. हुं तेनी छपर वारी जां हुं ॥ १३ ॥ वीरम ती अने गुणावली वधीनगरीने निरखी त्यां आवी. पही रसन्तरी रंग लगावी कौतुक जोवाने मंडपमां जनी. १४ एहवे लगन तणी अई वेला, वरकन्या पधराहयां रे ॥ चोरी ये चारे मंगल वरती,

वेद विदे परणाव्या रे॥ श्रा०॥ १५॥ तेहवे गुणावस्नी कहे सासुने, ए वरतो उस खीतो रे॥ बाई तुमतणो ए नानमीयो, वीशे विश्वा वदी तो रे॥ श्रा०॥१६॥

श्चर्य ॥ एवामां लग्ननी वेला थई एटले वर कन्याने पधराव्यां. चोरीमां चारे मंगल वर्ती वेद जाणनारा गृही गुरुए तेमने परणाव्याः ॥ १५ ॥ तेवे समे गुणावलीए सासुने कह्यं, बाइजी, श्चा वरतो उंलखीतो हे. वली तमारोए विशवसा नानडीउं हे होय एम लागे हे. ॥ १६ ॥

सासुये वहुनुं कह्युं निवमान्युं, जोवे मन थिर राखी ॥ बीजा जल्ला सनी मोहन विजये, सोलमी ढाल ए जाखीरे ॥ आ० ॥ १९ ॥

ष्ठ्रर्थ ।। सासुए वहुनुं कहुं मान्युं नहीं श्रमे मनने स्थिर राखी जोवा खागी श्रीमाहेन विजये श्रा बीजा छद्वा सनी सोखमी ढाल कही हे. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

बाई वर बीजो नही, ए मुज प्रीतम कोक ॥ यई खरी ए प्रेमला, साची सुंदर शोक ॥ १ ॥ श्राव्या जिम श्रापण बेहु, तीम किम श्राव्या एह ॥ बाईजी मुज उपन्यो, ए साचो संदेह ॥ १ ॥

अर्थ ।। गुणावली कहे छे-हे बाइजी, आ वर बीजो कोइ नहीं, मारो प्रितम चंद हे. आ प्रेमला खद्भी मारी खरेखरी सुंदर शोक्य थइ. ।। १ ।। हे बाइजी, मने एक संदेह थाय हे के, जेम आपणे बंने आव्या तेम ए केम आव्या हशे ? ॥ २ ॥

कहे सासू कचपच मकर, मुधा मधर संदेह ॥ चंद रह्यो श्रा जापुरी, वर कनकध्वज एह ॥ ३ ॥ हूं जे कहेती चंदथी, हे रूडा नृपचंद ॥ प्रगट निरख तुं पारखुं, शुं फंखे हे चंद ॥ ४ ॥

श्रर्थ ।। सासु कहे ठे-हे गुणावली, तुं कचपच कर नहीं श्रने एवो खोटो संदेह न कर्य-चंदराजा तो श्राजापुरीमां रह्यो श्रने श्रा तो कनकध्वज वर ठे. ॥ ३ ॥ हुं कहेती हती के, जे राजकुमार कनकध्वज चं दथी रुडा ठे, ते पारखुं तुं प्रगटपणे जो. श्रहीं चंदने हुं फंखे ठे. ॥ ४ ॥

> तुज पीयु मंत्रयो मंत्रथी, गारुमीयें जिम नाग ॥ तिहां जाद्यं तव बुटरो, मान वचन महा जाग ॥ ५ ॥ चंद तणे जोसे वहू, जुलीशमां धरी हुंस ॥ सरिखा जगत्मां, वे मुगधे खखपुंस ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ हे महाजाग वधू, तारोपित गारुडी जेम मंत्रथी नागने मंत्री राखे तेम त्यां राखेखो छेते ज्यारे त्यां जङ्शुं त्यारे बुटशे. ए मारुं वचन मानजे. ॥ ए ॥ हे वधू! चंदनी श्चाकृति उपरथी तुं जोखवी जङ्श नहीं. हे मुग्धे ! स्त्रा जगत्मां खाखो पुरुषो सरखे सरखा मदाता स्त्रावे छे. ॥ ६ ॥

> माने नही ग्रणावली, सास् वचन लगार ॥ सजा सहू इवे सांजलो, वरकन्या अधिकार ॥ ७॥

श्रर्थ ॥ श्राप्रमाणे सासुए कह्यं, तोपण गुणावलीए सासुनां वचन जरापण मान्यां नहीं. हवे सर्व सन्ना जन वर कन्यानो श्रिधिकार सांजलो ॥ ७ ॥

॥ ढाख सत्तरमी ॥ दिख खगावो वाडुर वरणी ॥ ए देशी ॥

श्री मकरध्वज राजा हरख्यो, निरित्व रूप जामाता॥ मन हरणी प्रेमला परणी, हुई कनकध्वज घरणी ॥ मन०॥ ए द्यांकणी ॥ नरनुंरूप श्रनोपम एहवुं, किम घमी शक्यो विधाता॥ म०॥ १॥ बेटी जेहवी गुणनी पेटी, वर पण तेहवो पामी ॥ म०॥ जोग संयोगे श्रविचल जोमी, रहेजो न होजो खामी ॥ म०॥ शा श्रा श्रविचल जोमी, रहेजो न होजो खामी ॥ म०॥ शा श्रविचल जोमी, रहेजो न होजो खामी ॥ म०॥ शा श्रविचल जोमी, रहेजो न होजो खामी ॥ म०॥ शा श्रविचल जोमी, रहेजो न होजो खामी ॥ परणी कनक-ध्वजनी गृहिणी श्रव्ह आवुं नरनुं श्रवुपम रूप विधाता केम घडी शक्यो १॥ १॥ जेवी पुत्री गुणनी पेटी हे, तेवा ते वरने प्राप्त श्रव, हवे जोग संयोगे श्रा जोडी श्रविचल रहे जो। तेमां कांइ खामी श्रावशो नहीं १

हाथ मेखावा मोचन वेला, दीधा गज रथ घोमा ॥ म०॥ मणि मुक्ताफल सोनूं रुपुं, श्रसन वसन संजोडा ॥म०॥३॥ द्रूषण रहित प्रूषण बहु जाजन, सुंदर सेज तलाई ॥ म० ॥ जे मुख माग्युं तेते श्राप्युं, पण निव जाणि खलाई॥ म० ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ कर मोचन (हाथेवालो होडवा) वखते राजाए हाथी, घोडा, रथ, मणि, मुक्ताफल, सोनुं, रुपुं, जोजन, वस्त्र श्राप्यां ॥ ३ ॥ निर्दोष श्राज्यूषण, घणापात्रो, सुंदर सेज श्रने तलाइ जे मुखे माग्युं ते श्राप्युं तेमनी खलता कांइपण जाणवामां श्रावी नहीं ॥ ४ ॥

वरकन्या कंसार आरोग्या, परिमित कवल सरखे ॥ म० ॥ घुंघटना पटमां हे प्रेम ला, वालिमनु मुख निरखे ॥ म०॥५ ॥ हुं बिल्लिहारी धाता ताहारी, मुजवरसुर अवतारी ॥ म० ॥ हुं परवारी जग निरधारी, नारी अवर विचारी ॥ म० ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ वर कन्या परिमित अने सरखा कोलीया लइ कंसार आरोग्या प्रेमला घुंघटना पटमांथी पोताना वालमनुं मुख नीरखवा लागी. ॥ ५ ॥ प्रेमला कहे छे- हे विधाता, तने बिल्लिहारी छे. मारोपित देवनो अ-वतार छे. जगत्नी बीजी नारी ने विचारतां हुं तो परवारी हुं. ॥ ६ ॥

पहवे दाहिए नयन फुरकी, हरखी तेहवी विखली ॥ म०॥ डाह्यापणे न जणाव्युं कोइने, रही समजी मन सरखी ॥ म०॥ ७॥ खामे कोमे खाडो खाडी, परएया हुई वधाई ॥म०॥ दाने माने श्रर्थी संतोष्या, जीत निसाए वजाई ॥ म०॥ ७॥ श्रर्थ ॥ तेवा समयमां प्रेमदानी जमणी श्रांख फरकी. एटखे जेवी हरखी हती तेवीज विखली श्रर्श गरु. माहापएने खीधे ते वात कोइने जएावी नहीं; मनमां समजीनेज रही. ॥ ७॥ एवी रीते खाडो श्रने खाडी कोडशी परएयां. बधे वधामणी प्रसरी गरु. दान श्रने मानशी याचकोने संतोष्या श्रने विजय निशाए वगडाव्यां. ०

एइवे कंचन चोकी मांडी, दाव मांड्यो श्रितिहासे॥ म०॥ दंपती सामा सामां बेठां, रमवा सारी पासे ॥ म०॥ ए॥ कोमलकर कमले खड़ पासा, चंद करे चालवणी॥ म०॥ जिम सिंह्खादिक कोइन जाणे, कही समस्या श्रालवणी॥ म०॥ १० श्रर्थ ॥ ते पत्नी सुवर्णीनी चोपाटमांडी; श्रित हास्यथी दाव मांडी ते स्त्री पुरुष सामे साम सोगठा पासे रमवा बेठां. ॥ ए ॥ राजाचंद पोताना कर कमलमां पासा लड़ चालाकी करवा लाग्या श्रमे जेम सिंह्ख राजा विगेरे कोड़ जाएं नहीं तेवी रीते नीचे प्रमाएं समझ्या कही. ॥ १० ॥

॥ गाथा ॥

श्राजा पुरंमि निवसइ, विमलपुरे सिसहरो समुग्गमिछं॥ श्रपिष्ठ श्रसिपम्मस्स, विहि हत्थे हवइ निव्वाहो॥१॥

श्चर्य ॥ श्चाजा नगरीमां रहेनारो चंड विमलपुरमां छग्यो है. हवे तेनो निर्वाह विधिने हाथे थाय है. वंदनुपति एम गाथा कड़ने, रण्ऊण पासा नाखे ॥ म०॥ चिंते चतुरा प्रेमलाल हि, प्रीतम ए शुं जाखे ॥ म० ॥ ११ ॥ बीजो जेद किशो निवलाधो, नारीए लीधा पासा ॥ म०॥ दालवा पियुनेनिज चतुराइ, गाथा कीध प्रकासा ॥ म०॥ ११ ॥ श्चर्य ॥ चंदराजा ए गाथा बोलीने रण्ऊण करता पासा नाखतो हतो. ते सांजली चतुर प्रेमला लक्षी वियतम श्चा शुं बोले हे तेनुं चिंतवन करती हती. ॥ ११ ॥ बीजो जेद कांइ महयो नहीं; पण ते नारीए पासा लीधा श्चने पोतानी चतुराइ बतावा नीचेनी गाथा प्रकाश करी. ॥ १२ ॥

॥ गाथा ॥

वितर्ग सित स्थागासे, विमन्नपुरे जग्गमर्ग जहा जहा सुरूकं॥ जेणाजिलुर्ग जोगो, सकरिस्तृह तस्स निब्वाहो॥१॥

श्चर्य ॥ चंद आकाशे वस्यो हे अने विमलपुरीमां जग्यो होय तो "जहा सुखं" (जले जग्यो). जेणे ते तेनो निर्वाह करशे. ॥ १ ॥

प्रेमला एम कहीने पासा, नाखे हेज जराणी ॥ म० ॥ हरस्यो चंद विचारे चि त्तमें, निपुणाये वात न जाणी ॥ म० ॥ ७ ॥ नाखे पासा इम रस वाह्या, पुनर पि कथता गाथा ॥ म० ॥ प्रगटपणे समजावे पीछमो, निजवनिताने सनाथा ॥१४॥ ध्रर्थ ॥ ए गाथा बोली प्रेमलाए पासा नाख्या. तेनो चित्तमां विचार करी चंदराजा हर्ख्यों के घ्या नि पुण स्त्रीए वात जाणी नथी. ॥ १३ ॥ एवी रीते बंने स्त्रीपुरुष वारंवार ए गाथा कहेतां कहेतां पासा ना-खतां हतां. पढी प्रियतमे प्रगटपणे पोतानी सनाथ स्त्रीने समजाववा मांझुं. ॥ १४ ॥

पुरविद्शि एक श्राजा नगरी, चंद नृपति तिहां राजा ॥ म० ॥ वे तस मंदिर रमवा जेवा, सारी पासा ताजा ॥ म० ॥ १५ ॥ निव वे एहवी क्यां हिं सजाइ, तेही यतो इहां रिमये ॥ म० ॥ फोगट इण रमवे गुणवंती, रातडली किम गमीये ॥ १६ ॥ श्रर्थ ॥ चंद कहे वे:-पूर्व दिशामां एक श्राजा नगरी वे. त्यां चंदराजा वे तेना मंदिरमां सोगठी श्रने पासा ताजा वे; ते रमवा जेवा वे. ॥ १५ ॥ एबी नवी सजाइ श्रदीं क्यांही वे ? जो तेवी होय तो श्रापणे रमीए. हे गुणवंती श्राम फोगट रमवाश्री रात्रि केम निर्ममन श्राय ?॥ १६ ॥

एम कही जव पासा परव्या, कंते रमतां दावे ॥ सतरमी ढाल ए बीजे जल्लासे,कही मोहन जन जावे ॥ म० ॥ १९ ॥



अर्थ ॥ एम कही स्वामीए रमवाने दावे पासा नाख्या. श्री मोहनविजये मनमां जाव धरी बीजा छ-क्वासनी आ सत्तरमी ढाल कही बे.ं॥ १७॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी वालिम तणां, चमकी नारि तिवार ॥ श्रसमंजस एशुं कद्यं, कांइक खरो विचार ॥ १ ॥ सिंहलदेश सिंहलपुरी, तिहांथी श्राव्या तेह ॥ मुजने परणी श्रति हठे, मुखे किम नाएयुं तेह ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ पोताना पितनां श्रावां वचन सांजादी प्रेमता चमकी गइः श्रा पित श्रावुं श्रघटित केम कहे हे.? श्रामां कांइक खरो विचार लागे हे. ॥ १ ॥ सिंहल देशनी सिंहलपुरीमांशी ए श्राव्या हे, श्रने श्रित हर-श्री मने पराष्ट्रा, ए वात मुखमां केम लावता नथी. ॥ २ ॥

> किहां पूरव श्राजापुरी, किहां चंद किहां सार ॥ एतो उंनी वात मी, श्रवसर करीश पचार ॥ ३॥ सिंहल सुत मिषथी रखे, ए मुज परणे चंद ॥ लह्यों जेद में वचनथी, दीसे फंद श्रमंद ॥ ४॥

श्रर्थ ॥ पूर्वमां रहेदी श्रानापुरी क्यां? चंदराजा क्यां ? श्रा वात तो जंडी लागे हे. तेनो प्रचार श्रव-सरे करीशः ॥ ३॥ रखे सिंहल राजाना पुत्रना मिषश्री श्रा चंदराजा मने परणता हशे. श्रावो जेद तेमनां वचन जपरथी जणाय हे. श्रा वातमां घणो फंद हे. ॥ ४॥

इम करते पुरो थयो, सारी पासा खेल ॥ खलना लीन थई गई, मृरति मोहन वेल ॥ ५ ॥ लगी लगन चित्त चटपटी, जागी पूरव प्रीति ॥ रागी त्रिकरण्यी थइ, नवल सनेही रिति ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ एम करतां सोगठी पासानो खेल पूरो श्रयोः मोहन वेल जेवी मूर्त्ति जोइ लखना लीन श्रइ गइ. ॥ ए ॥ ॥ तेना चित्तमां चटपटी लागी श्रने पूर्वनी प्रीत जाग्रत श्रइ श्रने ते बाला नवल स्नेह रीते मन वचन कायामां पूर्ण रागी श्रइ. ॥ ६ ॥

वाक्षिम वचन न विसरे, वनिताने क्षण एक ॥ उ ।। उ निताने चिवेक ॥ उ ॥

अर्थ ॥ ते प्रेमी वनिताने पोताना व्हालानां वचन क्षणवार पण विस्मरण श्रतां न हतां. अने तेणीए तेनुं जत्सुक चित्त उंलखी लीघुं. जुवो नारीनो विवेक केवो हे? ॥ ७ ॥

॥ ढाल खढारमी ॥

॥ नथरो नगीनो माहारो साहिबो, ढोला मारु घडी एक करहो जुकारहो ॥एदेशी॥ सिंहल नृप कहे चंदने, राजिंद मोरा सुत लामकमा उठहो ॥ रात थोमी रामत घणी ॥ राष् ॥ जुर्ज विचारी पुंठहो ॥ सकलगुणे एतो सा चनो शुरो नृपचंदजी ॥ राष् ॥ जाग्यतणी बलिहारीहो, ए आंकणी ॥ १॥ दुर्बन मेलो ए मुकतां ॥ रा०॥ वहेतुं नथी तुममन्न हो, को डी मेला एहवा मेलशुं ॥ रा०॥ श्रम तुम जोइए जतन्नहो ॥ स०॥१॥

अर्थ ॥ सिंहलराजा चंदने कहे है:-हे! लाडकवाया पुत्र! उठ रात थोमी हे अने रमत घणी है. पाठ-ल विचारी जुवो. सर्व गुणे पूरो अने सत्यनो शूरो ए चंदराजा है. जाग्यनी बिलेहारी है. ॥ १ ॥ आवो छर्लज मेलो होडता तारुं मन थतुं नथी, पण एवातो कोटी गमे मेला मेलवशुं. अमारे अने तमारे तेवा यहा करवा जोइए. ॥ १ ॥

वातड़ विधा हीये ॥ राष्ट्र ॥ उठ्यो चंद तस जोयहो ॥ तेजी न सहे ताजणो ॥ राष्ट्र ॥ कह्यं श्रकह्यं केम होय हो ॥ सष्ट ॥ राष्ट्र श्रूरा श्रुरा जले ॥ राष्य वचन श्रुराते श्रुरहो, एक वचनने कारणे॥ राष्ट्र ॥ परिहरि परणी प्रूरहो॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चावा मर्मनांवचन सांजली तत्काल चंदराजा छठी नीकल्यो. तेजी घोडी चाबुकने सहन करती नथी. जे वचन कहां हे ते न कहां न श्वाय. ॥ ३ ॥ जे रण्झूरा हे ते जले झूर हो, पण जे वचनना झूरा तेज झूरा हे. एक वचने कारण चंदे परणेली नारीने दूर होडी दीधी ॥ ४ ॥

रथ श्चसवारी सनारीथी ॥ रा० ॥ कीधी दीधां दानहो ॥ सिंहल नृपगृह उत र्या ॥ रा० ॥ हरख्या सहु राजान हो ॥ स० ॥ चंद नृपति वसी प्रेमला ॥रा०॥ बेठा पुण एकंतहो ॥ पण चतुरानिज नाथनुं ॥ रा० चंचल चित्त निरखंतहो ॥६॥ श्चर्य ॥ पठी नारी साथे रथनी स्वारी करी. याचकोने दान श्चाप्यां, सिंहल राजा घेर उत्वर्य श्चने सर्व लोको श्चने राजाउं हर्ष पाम्या. ॥ ५ ॥ चंदराजा श्चने प्रेमला फरीवार एकांते बेठां. ते वखते प्रेमलाए पो-ताना पतिनुं चित्त चंचल जोयुं. ॥ ६ ॥

रंग हतो जे परणतां ॥ रा० ॥ ते रंग नही खेखंतहो ॥ ए रंगमें ते रंगमें ॥ रा०॥ श्रांतर श्रानंतानंत हो ॥ स०॥ ७ ॥ करपञ्चवीये हिंसके ॥ रा० ॥ एहवे समस्या कीधहो ॥ चंदे स्वारशीया तणी ॥ रा० ॥ जाणी विदा जे दीधहो ॥ ० ॥ श्रार्थ ॥ जे रंग परणती वखते हतो, तेरंगनो खेख देखातो नथी. श्रा रंग श्राने ते रंगमां श्रानंतगणो तफावत हे. ॥ ७ ॥ पही हिंसके करपञ्चवी (करचे) श्री समस्या करी. ते जोइ चंदे जाएयुं, जे तेणे स्वार्थी श्रा मने विदाय गीरी श्रापी. ॥ ० ॥

पण आ मेलो ए रातडी ॥ रा० ॥ सांजरशे श्रवतारहो ॥ ए घमी विसरशे नही॥ रा० ॥ साखी सरजण हारहो ॥ स० ॥ए॥ वीठमता वहाला थकी ॥रा०॥खरी दो हिली वातहो ॥ ए हवे चंद चकोरने ॥ रा० ॥ चितचमी ते विमातहो ॥ स० ॥२०॥ श्रर्थ ॥ पण आ मेलो श्रने आरात आ अवतारमां सांजरशे. तेमज आ घमी कोइ दिवस जुलाशे

अये ॥ पण आ मेलो अने आरात आ अवतारमा साजरशः तमज आ धना काई ।देवस शुलाश नहीं. तेना साही परमेश्वर हे. ॥ए॥ पोताना वाहहा थकी जुड़ं पड़ें ए खरी दोहली वात हे, एवे समये-चंदरुप चकोरने पेली अपरमात चित्तमां याद आवीर ॥ १०॥

जाती रखे तरु खेइने ॥ रा॰ ॥ साची विमासण एहहो ॥ जे जाडे परणो प्रिया ॥ रा॰ ॥ जुठो तेथी दयो नेहहो ॥ स॰॥११॥ जेम खहि ठंडे कंचुकी ॥ रा॰ ॥ उठ्यो नारी उवेखहो ॥ रे पिछ पूठे प्रेमला ॥रा॰ ॥ उठोठो केण विशेषहो ॥स॰॥ ११॥ श्रर्थ ॥ रखे ते वृद्ध डिइने जाय ए खरेखरुं विचारवानुं हे. श्राने जे श्रा जाडे स्त्री परण्यां, तेनी साथे खोटो स्नेह ह्यं राखवो? ॥ ११ ॥ जेम सर्प कंचुकीने त्यजीदे, तेम ते प्रेमखानी उपेद्धा करी बेटो श्रयो. त्यारे प्रेमखाए पुन्युं, प्रियतम, तमे केम उटो हो ? ॥ १२ ॥

कहे पिछदेह चिंताजणी ॥ रा० ॥ जाइश ग्रह श्रनुषंगहो ॥ नारीपण कारी जरी ॥रा०॥ जाणी कपट श्रइ संगहो ॥स०॥१३॥ पिछवारी पण निवरही ॥रा०॥ नवसी गित कोइनेहहो ॥ चंदनो दाव फाठ्यो नहीं ॥रा०॥ श्राठ्यो करी ग्रुचिदेहहो ॥१४॥ श्रिश चंदे कहां, देह चिंता माटे जबुं छे. तेथी हुं श्रा घरनी पासे जइ श्राबुं. प्रेमखा ते कपट जाणी कारी जरी साथे चाली. ॥ १३ ॥ पतिए साथे श्राववाने वारी पण ते वारी रही नहीं. नेहनी गित कोइ नवसी छे. चंदनो दाव फाव्यो नहीं. ते देहनी चिंता मटामी शौच करी पाछो श्राव्यो. ॥ १४ ॥

श्रन्योक्ते हिंसक कहे ॥रा०॥ वहेक्षो था निशि जूपहो ॥ दिनकर जो तुज देख शे ॥रा०॥ पडशे प्रगट सविरूप हो ॥स०॥१८॥ निसुषी चंद नरेसरु ॥रा०॥ क्रण क्रण श्रावे जुवारहो ॥ क्रसुम पुंठल जेम वासना ॥ रा०॥तेम हुइसंगे नारहो ॥स०१६ श्रर्थ ॥ ते समये पेटा हिंसक मंत्रीए श्रन्योक्तिश्री कह्यं के, हे राजा ! रात्रि वे त्यांसुधी जतावल कर्य. जो सूर्य तने देखशे, तो पठी श्रा बधुं स्वरूप प्रगट श्रशे. ॥ १५ ॥ ते सांजली चंदराजा हार श्रागल श्राच्या करे श्रने पुष्पनी साथे वासनानी जेम प्रेमला तेना संगमां रह्या करे. ॥ १६ ॥

वेख शक्यों नहीं वेतरी ॥ राणा नेहें घेखी नारहो ॥ जोरे करमही कंतनो॥राणा आखों गेह मोजारहो ॥ सण ॥ १७ ॥ सेजे बेसायों हेजथी ॥राणा मांनीघणी म नुहारहो ॥ क्लाक्षमें एम केम करो ॥राणा कहो मुज प्राणाधारहो ॥ सण ॥ १० ॥ अर्थ ॥ चद वेख पोतानी प्रेम जरेखी प्रियाने वेतरी शक्यों नहीं ते पोताना कांतनो जोरथी कर पकडीने घरमां खावी ॥ १७ ॥ हेत करीने तेने शय्या छपर बेसायों अने घणी विनंति करवा मांडी, प्रवीक हुं के, हे मारा प्राणाधार! कुले कुले आम केम करो वो? ते कहो. ॥ १० ॥

मोहने बीजा उद्घासनी ॥ रा० ॥ जाखी श्रदारमी दाख हो ॥सत्यवा दी जननी जणे ॥ रा० ॥ चंद जिस्या महीपाख हो ॥ स० ॥ १ए ॥ श्रर्थ ॥ श्रीमोहन विजयजीए श्रा बीजा उद्घासनी श्रदारमी दाख कही. चंद जेवा सत्यवादी राजाने कोइकज माता जनम श्रापशे. श्रथवा चंद जेवा राजाने सत्यवादी माताज जनम श्रापे ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

क्षण बाहिर क्षण जीतरे, एम केम करो श्रधीर ॥एतो कारण मु जजणी, कहो नणदीना वीर ॥ १ ॥ मांड्यो प्रथम समागमे, कपट निहेजा कंत ॥ किम रहेशे इण खक्षणे, प्रीतरीत मतिमंत ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ हे नणदीनावीर. इणमां बाहेर श्रने इणमां श्रंदर एम श्राधीराइ केम करो हो? तेनुं कारण मने कहो. ॥ १ ॥ हे कांत, प्रथमनाज समागममां तमे श्रावुं कपट करवा केम मांड्युं. १ हे बुद्धिवंत, तेवा खक्षण राखशो तो पही प्रीतिनी रीत केम रहेशे? ॥ २ ॥

प्रथमज कवले मिक्तका, शो तेमांहे सवाद ॥ खामी श्रवला उप रे, एवको शो उन्माद ॥ ३ ॥ पेहेली रामतमां प्रजु, काढी वेठा वेश ॥ श्रागल केम निरवाहशो, मुजधी नेह विशेष ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ पेहेलाज कोली श्चामां महिका श्चावे तो पठी तेमां शो स्वाद ? हे स्वामी, श्चबलानी जपर श्चावो जन्माद शुं करो ठो ? ॥ ३ ॥ हे प्रजु, पेहेलीज रमतमां वेष काढीने बेठा तो पठी मारी साथे श्चा-गल स्नेहनो निर्वाह केम करशो ? ॥ ४ ॥

> मूकीयो चलचित्तता, करो सुरंगो नेह ॥ जिणे तुमयी ललता तस मुख पमरो खेह ॥ ५ ॥ वाला तुम मलवा तणो, अलजो हूतो अनंत ॥ पण मननी मनमां रही, इण आचरणे कंत ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ चित्तनी चपलता छोडी द्यो. सुरंगी नेह करो. जेणे तमारी साथे खखता करी छे तेना मुख जपर धूल पडरो. ॥ ५ ॥ हे व्हाला, तमने मलवानो कोड श्रानंत हतो, पण हे कांत तमारां श्रावां श्राच-रण्यी ते मननी वात मनमां रही. ॥ ६ ॥

> जे गाथा कही है तुमे, पामी हुं तस जेद ॥ जावा नहीं दें हवे, ते तुमे जाणो वेद ॥ ॥ ॥

श्चर्य ॥ जे गाथा तमे कही हती, तेनो जेद हुं समजी हुं. तेथी हुं तमने जावा दश्श नहीं. तेनो वेद तमे जाएो. ॥ ७॥

॥ ढाल जंगणीशमी ॥

हुं तुज आगल शी कहुं केशरीआलाल ॥ ए देशी ॥ अलवेसर अवधारीये ॥ केशरीया लाल ॥ अवलानी अरदासहो ॥ के० ॥ पा भीआशना पासमां ॥ के० ॥ केम हवे कीजे निराशहो ॥ के० ॥ रहोरहो राजे सरा ॥ रहो०॥के०॥ १ ॥ कहो ते करुं हुं कबुलहो ॥ के० ॥ पण फोगट शाने दहो ॥ के० ॥ करी करी कूमा छुशूल हो ॥ के० ॥ रहो० ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ हे केसरीश्रा खाब, श्रा श्रवबानी अरज श्रवधार जो. मने आशाना पाशमां पाडीने हवे केम निराश करो हो? माटे हे राजेश्वर, श्रिहं रहो. ॥ १ ॥ जे तमे कहो, तेहुं कबुख करुं, पण मने श्रावा कुका कुशूखधी फोगट शामाटे वालो हो ? ॥ २ ॥

महिख कहिख कारी इस्या ॥ के० ॥ टहिखनी हुं करणारहो ॥ के० ॥ तोपण मनमाने नही ॥ के० ॥ श्रहो जोवन शिणगारहो ॥ के०॥रहो० ॥ ३ ॥ हुं तुम पगनी उपानही ॥ के० ॥ तुमे मुज शिरनामोमहो ॥ के०॥ गोद विठाउं पाये पमुं ॥ के० ॥ केम रह्या मुंह मचकोमहो ॥ के०॥ रहो० ॥ ॥ ॥ अर्थ ॥ दे योवनना श्रंगार, श्रावी सर्व सामग्री है. हुं वचन प्रमाणे वर्तनार स्रने टेखनी करनार हुं, ते छतां तमारुं मन मानतुं नथी. ॥ ३ ॥ ढुं तमारा पगनी मोजडी ढुं, श्रने तमे मारा माथाना मोड छो. ढुं गो^द बीजाबुं ढुं श्रने पगमां पकु ढुं; ते छतां तमे मुख मरडीने केम रह्या छो ? ॥ ४ ॥

जे मन राखी शकी नहीं ॥ के० ॥ ते खमजो श्रपराध हो ॥ के० ॥ बाख क बुद्धे बहेती नथी ॥के०॥ रखे कांइ राखता खाध हो ॥के०॥रहो०५॥ विमखपुरी नगरी किहां ॥ के० ॥ किहां श्राजा श्रवदात हो ॥ के० ॥ किहां श्रमतुम मेलावडो ॥के०॥ थइ कोइ लिखित ए वातहो ॥के०॥रहो०॥६॥

श्रर्थ ॥ जे तमारूं मन राखी शकी नहीं ते मारा श्रपराध कमा करजो. हुं बाखक बुद्धि हुं. कांइ समज-ती नथी; रखे कांइ मनमां खेद राखता. ॥ ए ॥ विमलपुरी नगरी क्यां ? श्रने छज्वल एवी श्राजा नगरी क्यां ! श्रमारो श्रने तमारो मेलाप क्यां ? श्रा वात कोइ पूर्व लखेथी थइ हे. ॥ ६ ॥

श्रणजाएयं जातुं नथी ॥ के० ॥ रखे कही गणता गमारहो ॥ के० ॥ वे ख शकोनही वेतरी ॥के०॥ ते तुमे राखो करार हो ॥ रहो ॥के०॥रहो०॥९॥ जाण्यो यह पीने नही ॥ के० ॥ तेहमां मीन न मेष हो ॥ के०॥ एम क रतां जो उवेखशो ॥ के०॥ तो तुम शोजा विशेष हो ॥ के०॥ रहो०॥७॥

श्चर्य ॥ कांइ वात ऋजाणी रहेली नथी, रखे तमे मने गमार करी गणता ? हे छेख,तमे एवो करार करी राखजो के मने छेतरी शकशो नहीं. ॥ ७ ॥ जाणे तो यह पीडे नहीं, ए वातमां मीन मेष नथी एम करतां जो तमे मारी छपेका करशो तो तमारी शोजा विशेष थशे. ॥ ० ॥

रढी आला रहमानीए ॥ के०॥ निपट न थार्ड कठोरहो ॥ के०॥ मोटा इ किए वातनी ॥ के०॥ थाशोजो चाकरी चोरहो ॥ के०॥ रहो०॥ ए॥ तम सुसरे निव छह्द्या ॥ के०॥ बहेणे देणे बगार हो ॥ के०॥ बा खच होय कोइ वातनी ॥के०॥ कहो सुखे न करो विचारहो ॥के०॥ रहो० ॥१०॥ अर्थ ॥ हे रही आला, रहमानो अत्यंत कठोर थार्ड नहीं. जो तमे चाकरी चोर थशो तो पठी कइ-वातनी मोटाइ गणाय? ॥ ए॥ तमारा सासराए तमने क्षेवादेवामां खगारपण दूजव्या नथी. जो कोइ वात-नी हजु लालच होय तो सुखे कहो, जरापण विचार करो नहीं. ॥ १०॥

होवे जमाइ लाडका ॥ के० ॥ जेम रुसे तेम रंगहो ॥ के० ॥ पण विण खारथ रुसणुं ॥के०॥ तेतो बालक ढंगहो ॥ के० ॥ रहो० ॥ ११ ॥ एतो दशामुनिराजनी ॥ के० ॥ तमने नघटे एहहो ॥ के० ॥ ए वेला रसनी खरी ॥ के० ॥ केम करी दीजे वेहहो ॥ के० ॥ रहो० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ जे लाडका जमाइ होय ते तो जेम रीसाय तेम रंग श्चावे. पण जे स्वार्थ वगर रीसाइ बेसे ते तो बालकना ढंग हो. ॥ ११ ॥ श्चाम स्त्रीने होसी चाह्या जबुं, ए दशा तो मुनिराजनी हो. तमने ए घट तुं नथी, श्चा वेला तो बराबर रसनी हो. ते उपर शी रीते हेद श्चपाय? ॥ १२ ॥

सारी पासानी वातडी ॥ के० ॥ खखी हे है डे जेह हो ॥ के० ॥ वाखिम ते निव विसरे ॥ के० ॥ नही तिखमात्र संदेह हो ॥ के० ॥ रहो०॥१३॥ जोरे छवेखी जो जायशो ॥के०॥ पण हुं मखीश विहाण हो ॥के०॥ पूरविद शि खात्रापुरी ॥ के० ॥ जूखीश नहीं खिहा होण ॥ के० ॥ रहो० ॥ १४॥

श्चर्य ॥ हे वाहाद्धा, सोगठी पासा वखते तमे जे वात कही हती, ते मारा हृदयमां दाखाइ गइ हे. ते किद विसरी जवानी नथी. तेमां तिद्धमात्र पण संदेह नथी. ॥ १३ ॥ जो तमे मने जोरथी जवेखीने चाड्या जहाो, तोपण हुं तमने मदीहा. तमारी श्चान्तापुरी पूर्वदिशामां हे. ए रहेहाण हुं लुखीहा नहीं. ॥ १४ ॥

चंद कहे हठ शुंकरो ॥ के० ॥ छुर्जन करशे स्रदेखहो ॥ के०॥ स्रणु न घटे वाघे नही ॥ के० ॥ जे विधि खिखया खेखहो ॥ के० ॥ रहो०॥ रथ॥ स्रक्ष कथाठे संगने ॥ के० ॥ बांधी मुठी खाखहो ॥ के० ॥ चतुर थइ चूके किस्युं ॥ के० ॥ मन हटकीने राखहो ॥ के०॥ रहो० ॥ र६ ॥

श्चर्य ॥ चंदे कह्यं, तमे श्चावो इत्तरों करों हो? इर्जनो श्चापणी श्चदेखाइ करहो. जे विधिए खेख खख्या होय, ते श्चणुमात्र पण घटता के वधता नथी. ॥ १५ ॥ हे श्चंगना, ए कथा कहेवाय तेवी नथी. बांधी मुठी खाखनी हे. तुं चतुर थइने केम चुके हे? तारुं मन इत्रावीने धीरज राख. ॥ १६ ॥

रहेतां वचन रहेनही ॥ के० ॥ नेहपण निव मूकायहो ॥ के० ॥ यही श्रणजाणे ठढुंदरी ॥ के० ॥ पन्नग जेम पस्ताय हो ॥ के०॥ रहो०॥१९॥ तोए पण ते प्रेमला॥ के०॥ माने नही लवलेशहो ॥ के० ॥ श्रहो धन्य जन जेणे जीतीया ॥ के० ॥ फुर्जय नेह कलेश हो॥के० ॥ रहो०॥१०॥

श्रर्थ ॥ जो श्रहीं रहुं तो वचन रहे तुं नथी श्रने जातां स्नेह मुकातो नथी. जेम सर्पे श्रजाणे. इंडर-गढ़ी होये पठी ते पत्तावो करे हे तेम श्रयुं हे. ॥ १७ ॥ तथापि प्रेमला लवलेश पण मानती नथी. श्रहो ! तेवा माणसने धन्य हे के जेणे छर्जय एवा स्नेहना छःखने जिती लीधा हे. ॥ १० ॥

बीजा जल्लासनी मोहने ॥ के० ॥ कही उंगणीशमी हासहो ॥ के० ॥ प्रेमसास हीने चंदनी ॥ के० ॥ ख्यागस वात रसास हो ॥ के० ॥ रहो० ॥ रए॥ अर्थ ॥ श्रीमोहन विजये छा बीजा जल्लासनी उंगणीशमी हास कही है प्रेमसा सक्की खने चंदनी ख्रागस रसिक वात खावशे ॥ रए॥

॥ दोहा ॥

प्रेमसा पासव निव तजे, चंदघणुं श्रकसाय ॥ एहवे हिंसक धसमसी, श्राप्यो भृकुटी चमाय ॥ १ ॥ किन वचन कहीने तिणे, पासव पक ड्यो जेह ॥ मूकाव्यो माटीपणे, विषम करमगति एह ॥ १ ॥ श्रर्थ ॥ प्रेमसा चंदनो पासव बोडती नथी. राजाचंद घणो श्रकसाय वे तेवामां हिंसक मंत्री न्रगुटी



चडावीने ख्राच्योः ॥ १ ॥ तेणे कठण वचनो कहीः जे पासव पकड्यो हतो, ते बसात्कारे मूकाव्योः कर्म नी गति एवी हे. ॥ १ ॥

> गोरी र्रामीमें गइ,करी सचीवनी खाज ॥ परणी घरणी परिहरी, चाल्यो चंद महाराज ॥ ३ ॥ सिंहल नृपने जइ कह्युं, सिद्धां स घलां काज ॥ पण रुदती सुंदरीतणी, तुम हाथे हे लाज ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ प्रेमला गौरी मंत्रीची लङ्का पामी, लाजकाढी उरडीमां गर् पठी चंदराजा परखेली गृहिणीने परिहरी चाट्यो गयो. ॥ ३ ॥ सिंहल राजानी पासे आवी कहुं के, सघलां कार्य सिद्ध अयां, पण ए रहन करती सुंदरीनी लाज तमारा हाश्रमां हे. ॥ ४ ॥

शीखखइ सिंहखतणी, श्राजा धणी तेवार ॥ यही करवाख उता वस्रो, श्राव्यो जिहां सहकार ॥ ५ ॥ धरी धीर पेठो धसी, कोट रमांहे श्रवीह ॥ गिरि कंदरमांहे जिस्यो, जइ विराजे सिंह॥६॥

श्रर्थ ॥ श्रान्ता नगरीनो पति चंदराजा सिंहल राजनी शीख लड़ हाश्रमां खड़ा लड़ ज्यां पेलुं श्रांबातं वृक्त हतुं त्यां श्राज्यो. ॥ ॥ धीरज धरीने ते वृक्तना कोटरमां पेठो. ते पर्वतनी गुहामां सिंहनी-जेम शोजतो हतो. ॥ ६ ॥

श्रंबा कर कंबा यही, श्रावी वधू समक्त ॥ चढी तिहां वाही उमी, चाल्यो गगने वृक्त ॥ ७ ॥ श्रधंजाम रही जामिनी, ते श्रवसर सहकार ॥ पूरवदिशि श्राजापुरी, तिहां मंडी श्रलगार ॥ ० ॥

श्चर्य ॥ पेली तेनी माता हाथमां कंबा लड़ वहूनी समक्ष श्चावी श्चने ते उपर चडी गइ. पत्नी वृक्त श्चाकाशमां चाल्यो. ॥ ७ ॥ ज्यारे रात्री श्चर्ध पहोर बाकी रही, ते वखते ते श्चास वृक्ष पूर्विदिशामां श्चावे-खी श्चान्तापुरीमां श्चाव्युं. ॥ ७ ॥

॥ ढाल विशमी॥

॥ हो कोइ श्रान मिखावे साजना ॥ ए देशी ॥ हो वीरमती कहे रे वहू, निरखी ॥ तें नगरी एहहो॥हो कनकष्वज कि हांदेखती, जो तुं रहेती गेहहो ॥ वी० ॥ १ ॥ हो दिनप्रते कोतुक एहवा, देखाडीश हुं तुज हो ॥ हो पुरीश होंश हुं ताहरी, जोमनराखीश मुजहो ॥वी०॥१॥ श्रर्थ ॥ वीरमती कहे ने के, हे वधू, तें ए नगरी केवी जोइ ? जो तुं घेर रही होत तो कनकष्वज राजाने क्यांश्री जोत ? ॥ १ ॥ हुं तने दिन दिन प्रत्ये श्रावा कोतुक देखाडीश जो तुं तारुं मन मारी तरफ राखीश, तो हुं तारी बधी होंसो पुरी करीश ॥ १ ॥

हो मुज विण कोण श्रातिकमें, ए श्राकाशनो पंथ हो ॥ के निसुण्या सिद्धां तमें, विल चारण निर्धंथहो॥वी०॥३॥ हो पंलीनी गति केटली, बार जो यण लगे सीमहो॥पण मुग्धे मुज मंत्रनी, गति तुं जाण श्रानीमहो ॥वी०॥४॥ अर्थ ॥ हे सुंदरी, मारा शिवाय श्रा आकाशनो मार्ग कोण उक्षंघन करी शक्ते ? सिद्धांतमां आकाशमां गमन करनारा चारणमुनिजंज संज्ञाखाय हे. ॥ ३ ॥ हे मुग्धा प्रहीनी गतिनी सीमा बार योजन सुधी हे. पण मारा मंत्रनी गति सीमा वगरनी हे. ॥ ४ ॥

जिहां किहां पवन न संचरे, तिहां मारो संचारहो ॥ तेते कारज हु करुं, जे न करे किरतार हो ॥ वी० ॥ ५ ॥ कहे सासुने ग्रणावली, सघली ए साची वात हो ॥ परतक्त दी दुं में पारखुं, रुडी आजनी रातहो ॥ वी० ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ ज्यां पवन पण संचरे नहीं, त्यां मारो संचार थाय के जे कार्य किरतार न करी शके, ते कार्य हुं करुं हुं. ॥ ५ ॥ गुणावलीए पोतानी सासुने कहुं के, तमे कहो को ते बधी वात साची के. में तो प्रत्यक्ष पारखु जोयुं. आजनी रात्रि रुकी के ॥ ६ ॥

पण तमे बाइजी पांतर्या, एक वाते निरधार हो ॥ आज जे पराखो प्रेमखा, ते महारो जरतार हो ॥ वी० ॥ ७ ॥जो एहमां कुरुं पडे,तो मुज देजो गाल हो॥ सासु कहे रहो रहो वहु, देती मुज सुत आलहो ॥ वी० ॥ ७ ॥

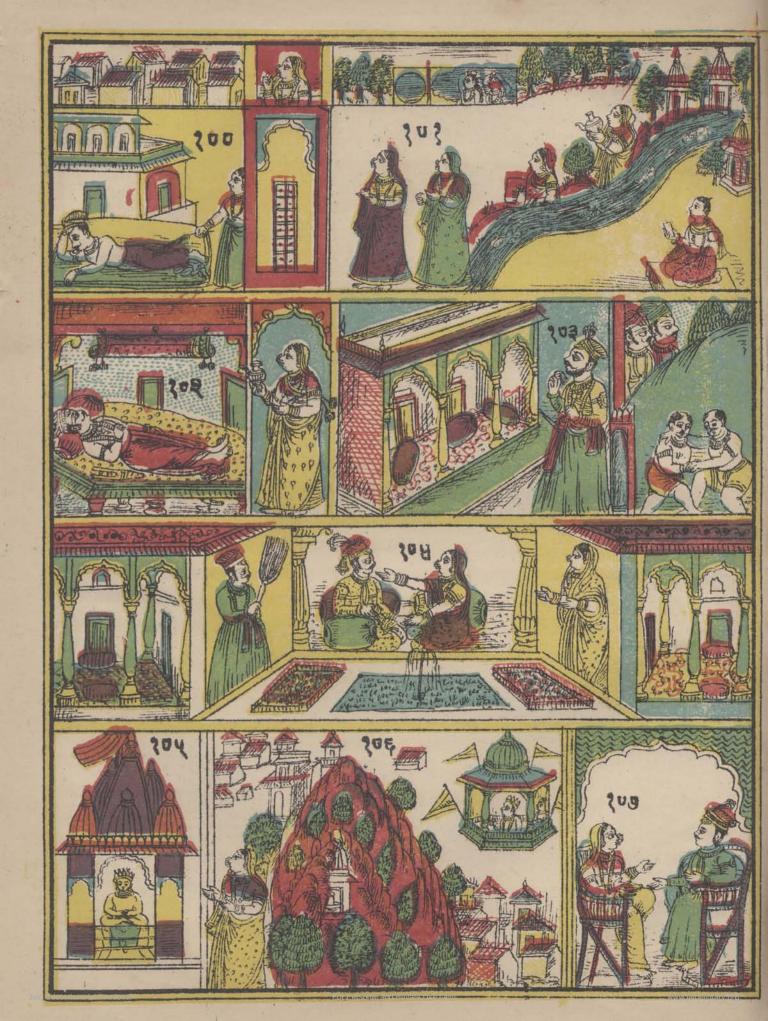
श्चर्य ॥ हे बाइजी पण तमे एक वाते श्वजाएग रह्या हो. जे श्वाज रात्रे प्रेमदाने परएया ते मारा जर्ता-र हे. ॥ ७ ॥ जो ते वात खोटी हरे तो मने गांद्य श्वापजो. ते सांजली सासु बोली, श्वरे वहु, राखो, मारा पुत्र जपर एवं श्वाख चडावो नहीं. ॥ ० ॥

जे नर निरखीश रुश्रमा, ते शुं कहीश तुं चंद हो ॥ जाएयुं में माहापण ता हरुं, मुज वशहे मुज नंदहो ॥ वी० ॥ ए ॥ चंद सुणी चित्त चिंतवे, रखे मुज सहेती विमात हो ॥हो परएयुं पाधरुं श्राणशे, जो ए जाणशे वातहो॥वी०॥१०॥ श्रर्थ ॥ जे पुरुषने तुं सुंदर देखीश, ते बधाने शुं तुं चंद कहीश ? में तारुं डाहापण जाएयुं. मारो चंद पुत्र तो मारे वश हे. ॥ ए ॥ ते वात सांजली चंद मनमां विचार करे हे के, मारी विमाता रखे श्रा वात ध्यानमां लेती ! जो ए जाणशे तो पही श्रा परणवुं पाधरुं लावशे ॥ १०॥

एम पंथे वहेतां थकां, निरखतां कौतुक कोडहो ॥ हो पुरगिरिवर जहांघता, नमता तीर्थ करजोम हो ॥ वी० ॥ ११॥ तेहवे दीठा घूरथी, आजापुरी अहि ठाण हो ॥ तेहवे करायुध बोलीया, दिनतणा आगेवानहो ॥ वी० ॥ ११॥

श्रर्थ ॥ एम मार्गे वृक्त जपर चालतां, कोटी कौतुको निरखतां, शेहेर तथा पर्वतोने जक्षंघता श्रने ती-र्थने बेकर जोडी नमता तेर्ज चाह्यां श्रावे हे. ॥ ११ ॥ तेम करतां तेमण दूरेथी श्राजापुरीने दीठी. ते समये दिवसना त्रागेवान एवा कुकडार्ज बोलवा लाग्याः ॥ १२ ॥

पामी श्रचरिज देखीने, प्राची दिशि श्रानंद हो ॥ हो जदय थया जहंगमें, दि नकर जेम नृपचंद हो ॥ वी० ॥ १३ ॥ प्रह विकसी सुवसी जिसे, नजचारी सहकार हो ॥ श्रावी जतयों श्राराममें, निज थानक निरधार हो ॥ वी० ॥ १४ ॥ श्रर्थ ॥ सूर्यने जदय थवानुं श्राश्चर्य जोइ पूर्व दिशा श्रानंद पामी श्रने चंदराजानी जेम तेना जत्संग-मां सूर्यनो जदय थयो ॥ १३ ॥ प्रजात विकाश पाम्युं, श्रने सुगंध प्रसरवा खाग्यो ते समये श्राकाश चारी श्रास्रवृक्त श्राराममां पोताना स्थानमां श्रावीने जतयों ॥ १४ ॥



श्चापणी ए त्राजापुरी, ए श्चापणडो बाग हो ॥ रे वहू तस्थी उतरो, कहेसासु महाजाग हो ॥ वी० ॥ १५ ॥ महा रुइयी बिहुं उतरी, कोटर केंद्रे तेहहो ॥ हो चंदजणी जोवे नहीं, पुष्यतणुं फल एइ हो ॥ वी० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ सासुए कहुं, हे महाज्ञाग्यशाली वहु ! श्चा श्चापणी श्चाजापुरी श्चावी, श्चापणो बाग हे, माटे हवे श्चामवृक्त जपरथी जतरो. ॥ १५ ॥ ते बंने श्चावृक्त जपरथी जतरी. तेनी पडखेना कोटरमां चंद-राजा हे, तेने कोइ जोइ शक्युं नहीं, ए पुष्यनुं फल हे. ॥ १६ ॥

ग्रुचि यावा सासु वहू, गइ पुष्करणी जामहो॥ कोटरमांहिथी निकल्यो, चंद नरेश्वर तामहो॥ बी०॥ १९॥ श्रानंदे मंदिर श्रावियो, हैंडे धरतो हेज हो॥ हो नौतन वेषरची करी, सुखजर सूतो सेजहो॥ वी०॥ १०॥

अर्थ ॥ ते पढ़ी सासु अने वहु बंने पवित्र अवाने वापिकामां न्हावा गइ, एटले चंदराजा तत्काल कोटर मांहीश्री बाहेर नीकली गयो. ॥ १९ ॥ ते आनंदश्री पोताने मंदिर आक्यो. हृदयमां हाम धारण करतो ते नवो वेष धारण करीने पाठो शय्या उपर सुखे सुतो. ॥ १० ॥

हो हसतां रमतां आवियां, सासु वहु पण गेह हो ॥ वीशमी ढाख मोहने कही, बीजा उल्लासनी एह हो ॥ वी० ॥ १ए ॥ अर्थ ॥ सासु अने वहू इसतां रमतां घेर आव्यां. श्रीमोहन विजये आ बीजा उल्लासनी विशमी ढाख कही है. ॥ दोहा ॥

वीरमती कंबा दइ, गुणावलीने ताम ॥ पहोती नवरंग नेहरां, कुटिला तव निजधाम॥ १॥ प्रचला पुरनी श्रपहरी, कोइक मंत्र प्रयोग ॥ तत्क्रण नरनारी सकल, जायत थयां श्रशोग ॥ १॥

क्षर्य ॥ पत्नी वीरमतीए पेली कंबा गुणावलीने क्षापी श्रमे ते कुटिखा स्त्री नवरंग स्नेह घरती पोता-ने घेर स्त्रावी पोहोची. ॥ १ ॥ कोइ मंत्र प्रयोगधी नगर उपर नाखेली प्रचला निष्ठाने हरी लीधी एटले नगरना सर्व नरनारी शोक रहित पणे जायत थयां ॥ २ ॥

थयो प्रात सिव साचवे, जेजे निज षद्र कर्म ॥ जप श्रध्ययनादि क सकल, प्रारंत्रे निज धर्म ॥ ३ ॥ वात थइ जे रातनी, नही केणे निरत्ति ॥ ग्रणावसी राणी तणी, निसुणो हवे प्रवृत्ति ॥ ४ ॥

श्रश्र ॥ प्रातःकाल श्रयो, सर्व लोको पोतपोतानां षद् कर्मी साचववा लाग्यां श्रने जप, श्रध्ययन विगेरे पोतानो सर्व धर्म श्रारंत्रवा लाग्यां. ॥ ३ ॥ रात्रे जे वात बनी, तेनी कोइने खबर पडी नहीं. इवे गुणाव-द्वी राणीनुं वृत्तांत सांजलो. ॥ ४ ॥

मंदिर पेठी धसमसी, निरख्यों सेजे नाइ ॥ कंतेपण निरखी प्रिया, करकंबासोछाइ ॥ ५ ॥ में पापिणीए कंतने, एम निद्धाव श की थ ॥ सुतों कंत जगाडवा, कंबा ठबका दीथ ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ ते गुणावली मंदिरमां जतावली पेठी, त्यां शय्या जपर पतिने सुतेलो जोयो अने पतिए पण हाश्रमां कंबावाली ते प्रियाने जत्माहसहित जोइ. ॥ ५॥ गुणावलीए विचार्यु के, में पापिणीए मारा स्वामीने श्राम निकावश कर्यों अने पाठी सुतेला कंश्रने जगाडवाने ते कंबा ठबकारी ॥ ६॥ कपटे श्रास्तम मो डिने, जाग्यो चंद नरेश ॥ राणी श्रणजाणी थकी, जाषे वचन विशेष॥॥॥ श्रर्थ ॥ चंदराजा कपटशी श्रालस मरडी बेठो थयो;ते वखते राणी गुणावली श्रजाणी थहने बोले छे. ॥ ढाल एक वीशमी ॥

जागो जागो हो मारा ज्रमर सुजाण के, निद्यमी वेरण परिहरो ॥ ए देशी ॥ रयणी विहाणी प्रह थयो, तमे उठोहो नणदीना वीरके ॥ रुमापंखी कुकमा, सहु पेहेलां हो जागे थइ धीरके ॥ निद्यमी नाह निवारीए ॥ ए आंकणी ॥१॥दिन उदयेहो सूवे नर कोयके, जेहसूतां रिव उगमे ॥ तस वीरजहो धीरज निव होय ॥१॥ अर्थ ॥ हे नणंदना वीर, रात्रि वीती गइ, प्रातःकाल थयो तमे जायत थार्ज ज्वो आ संदर पही कुक्षा सर्वनी पेहेला धीर थइने जागे के तेथी हे! नाथ! निद्याने निवारो ॥ १ ॥ दिवस उगतां कोण सुइ रहे ? जे नर दिवस उगतां सुवे तेने वीर्य अने धैर्य होतां नथी ॥ १ ॥

जेनर होयनिरुद्यमी, वसी मूरख हो शेखर होय जेह के ॥ वेसा करण नरेश नी, जंधनीये हो फोगटगमें तेहकेणानिणाशाराति असेखे आजनी, तमें कीधां हो निव आज विसास के ॥ में तुमकाजे जजागरो, जोगवीने हो कीधो आयासके ॥निणाशा अर्थ ॥ हे राजा, जे पुरुष निरुद्यमी होय अथवा मूर्खनो शेखर होय ते निष्प्रश्री करण्राजानी वेसा फोगट गुमावे हे. ॥ ३ ॥ हे नाथ, आजनी रात्रि तो तमे असेखे करी. तमे आज विसास पण कर्या नहीं. में तमारे माटे जजागरो जोगवीने प्रयास कर्यों. ॥ ४ ॥

जागवतां निव जागिया, सोहणाडे हो कांइ पाम्या हो राज के ॥ के पराखा कोइ गेहिनी, एम सुख जरहो सूताहो श्राजके ॥निवाध॥ जागो निष्ठाह्य नाहला, जदया चलहो छदयो दिनकार॥श्रंतर्यामी प्रातनो, निरखावो हो मुजने दीदारके निवाध॥ श्रर्थ॥ हे प्रिय, तमे जगाडतां जाग्या नहीं. शुं कांइ श्रस्वस्थ हो? के कोइ बीजी स्त्री पराखा हो.? श्राजे श्राम सुखजर केम सुता हो.?॥ ए॥ हे! निष्ठाह्यनाथ,! जाग्रत थार्ज दिवसने करनार सूर्यनो छदय छदयाचल छपर थयो हे. हे श्रंतर्यामी, श्रा प्रातःकालनो देदार मने बताबो ॥ ६॥

उन्नी नरी गंगाजली,दंत धावन हो करी करो मुखशुद्ध के ॥ ए वेला नरवर करे, श्राखा में हो उना मलयुद्ध के ॥ निगांशा श्रवसर राज सनातणों, थयो जागो हो सासुना जातके ॥ देशे उलं जो जो जाणशे, श्रावीने हो तमने विमातके ॥ निगांशा श्रर्थ ॥ हुं गंगाजली (फारी) नरीने उन्नी हुं. हे नाथ, दांतण करीने मुखने शुद्ध करों. श्रा वेलाएतो राजा उठी कसरत शालामां मल्लयुद्ध करे हे. ॥ ५ ॥ हे सासुना जाया, दवे जागो, राज सन्ना करवानो श्रवसर थयो हे. जो श्रा खबर तमारी माता जाणशे तो श्रावीने तमने ठवको श्रापशों. ॥ ० ॥

जाग्यो कपट निद्धातजी, स्त्रीवचने हो हलफलतो चंद के ॥ रेरे वेला बहु थइ, निव जाण्यो हो उदयो जे दिणंद के ॥ निगाणा रजनीए जे थयुं मावहुं, घेराणुं हो तेह थी मुज दिलके ॥ तेणे सेजडीथी उठतां, थइ मुजने हो राणीजी ढीलके निग्ना १०॥ श्रर्थ ॥ श्रा प्रमाणे स्त्रीनां वचनथी राजाचंद कपट निजा ठोडी वेबाकलो जागी उठ्यो अने कहेवा लाग्यो के, श्ररे बहु वेला थइ गइ सूर्यनो उदय थयो ए वाततो जाणवामांज श्रावी नहीं ॥ गा राजा चंदे कहां के, हे राणीजी, रात्रिए माववुं थयुं हतुं, तेथी मारुं दिल घेराइ गयुं. तेथी करीने राज्यामांथी उठतां मने वार थइ है ॥ १०॥

तमे पण दीसो उजागरां, श्राचरणे हो जाणु हुं एम के ॥ श्राज तो वात घणी जली, दिन उदयथी हो तमे मांड्यो जे प्रेमके ॥ नि०॥ ११॥ वात रसीली श्राजनी, लागे हे हो बानिकनो रंग के ॥ जाणीए किहां क कीडा करी, श्राज एवा हो दीसे हे ढंग के ॥ नि० ॥ १२ ॥

श्रर्थ ॥ तमारां श्राचरण जपरथी जणाय हे के, तमारे पण जजागरो थयो लागे हे. तेमां श्राजनी वात तो घणी सारी हे के तमे सूर्यना जदयथी प्रेम करवा मांड्यो. ॥ ११ ॥ श्राज वात रिस्टी श्रने रंगी ली लागे हे. जाणे तमे श्राज कोइ हेकाणे कीडा करी होय तेवो ढंग वर्त्ताय हे. ॥ १२ ॥

कहोजी कहो मुज आगते, रातडीए हो रामत किहां कीध के ॥ पठी अमने प्रतिबोधजो, कही कहीने हो वातो अप्रसिद्धके ॥ नि० ॥ १३॥ कहे राणी राजा जणी, रामतडी हो जाणुं निव कोय के ॥ हुं किहां जाउं साहिबा, ए मूकी हो चरणांबुज दोयके ॥ नि० ॥ १४॥

श्रर्थ ॥ हे राणी, मारी श्रागल वात कहो, तमे श्राज रात्रे क्यां रमत रम्यां १पठी श्रमने श्रप्रसिद्ध वातो कही प्रतिबोध श्रापजो. ॥ १३ ॥ राणीए राजाने कह्यं, हुं कोइ जातनी रमत जाणती नथी. हे सा-हेव, श्रा तमारां वे चरण कमल मुकीने हुं क्यां जालं १॥ १४॥

जोबी जेद बहे नहीं, मुखे मीठी हो करे पिछथी वात के ॥ तमें पिछ क्यां एक आजनी, रमी आव्या हो दीसोठो रातके ॥ नि० ॥ १५ ॥ हुं अबला आज्ञा विना, किम विण कहें हो बाहिर घरुं पायके ॥ रे रढी आला राजिया, मठराला हो मानो महाराय के ॥ नि० ॥ १६ ॥

श्रर्थ ॥ ते जोखी स्त्री कांड् जेद समजे नहीं श्रने पोताना प्रिय साथे मीठी मीठी वार्त्ता करवा लागी श्रने पुन्धुं के, हे प्रिय ! श्राजनी रात तमे क्यांड्क रमी श्राव्या हो, तेम लागो ठो. ॥ १५ ॥ हुं श्रवला स्त्री तमारी श्राक्षाविना घरनी बाहेर पग केम मुकुं ? हे रढीश्राला, श्रने मजराला राजा, ए मारी वात जरुर मानजो ॥ १६ ॥

मोहने बीजा जल्लासनी, एकवीशमी हो कही सुंदर ढाख के ॥ जावी कथा नृपचंदनी, एह आगल हो श्रतिही हे रसाल ॥ नि॰ ॥ १७ ॥ श्चर्य ॥ मोहन विजये बीजा जल्लासनी आ एकवीशमी सुंदर ढाल कही है. चंद राजानी जावी कथा चागल अति रसिली है. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी विनता तणां, चिंते चंद नरेश ॥ वांक नही विनता तणो, वांक विमात विशेष ॥ १ ॥ एकज रजनी संगते, नारी घष्ट निःशंक ॥ जे कांइ चरित्र न जाणती, वदती वचन अवंक ॥श।

श्चर्य ॥ वनितानां वचन सांजाबी चंदराजा चिंतववा खाग्यो के, श्चा स्त्रीनो वांक नथी, पण श्चामां वि-मातानो विशेष वांक हे. ॥ १ ॥ एक रात्रिनी संगतश्री श्चा स्त्री शंका वगरनी श्वर् गर्झ नहीं तो श्चा स्त्री कांइ स्त्री चरित्र जाणती न हती श्चने वांकां वचन बोखती पण न हती. ॥ २ ॥

खाग्यो संग विमातनो, तेणे पखटाणी नारि ॥ जेम विष होय बरासची, नाखिकेरने वारि ॥ ३॥ छःसंगतिची साधुजन, पामे विकृति विकार ॥ यंत्रघटी संगत थकी, जल्लरी सहे प्रहार ॥ ४॥

अर्थ ॥ आ स्त्रीने अपरमानो संग लाग्यो, तेथी पलटाइ गइ. जेम बरासनो नालीएरना जलमां संबंध थवाथी विष थाय है, तेम थयुं. ॥ ३ ॥ नहारी संगतथी सज्जन पण विकार पामे हे. घटीयंत्रनी संगतथी फालरने प्रहार सहन करवो पडे हे. ॥ ४ ॥

डुष्ट संग छंगार सम, रस विरसे एक रंग ॥ श्याम करे शीतख हुतो, उष्ण तपावे छंग ॥५॥ नारि, वारि, तरवार, सम नेत्र, तु षार, नरेश ॥ जे जेम वासे तेम वसे, वासणहार विशेष ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ इष्ट माणसनो संग श्रंगारा जेवो है. ते एक रंगी रसने विरस करी नांखे है. जो श्रंगारो शीतल होय तो श्रंगकालु करे श्रने छनो होय तो श्रंगने तपावे है. ॥ ५ ॥ स्त्री, जल, तरवार, नेत्र, घोडो, श्रने राजा एटला जेम वलावनार होय तेम वले है. बलावनारनी बलिहारी है. ॥ ६ ॥

> प्राणनाथ कहे हे प्रिये, मूको नारि चरित्र ॥ रातरम्या किहां श्राजनी, पेहेरी वेश त्रिचित्र ॥ ७ ॥ जोखववा पिछ जामिनी, कह्यित कहे श्रवदात ॥ श्रवधारोजी विनद्यं, राततणी जे वात ॥ ।॥ ।॥

अर्थ ॥ प्राणनाथे कहां, हे प्रिया, हवे स्त्री चरित्र करवा ठोफी द्यो. आवो विचित्र वेष पेहेरीने आजनी रात्रि क्यां रम्यां. ? ॥ प्र ॥ पोताना प्रियने जोखववाने जामनीए एक किश्ति वृत्तांत कहेवा मांड्यो. हे ! नाथ, हुं रातनी जे वार्त्ता कहुं, ते ध्यानमां हयो. ॥ ए ॥

॥ ढाल वाविशमी ॥

॥ सलूषी योगषी रुडीवे ॥ एदेशी ॥ गिरि वैताळा विशाला नगरी, मणिप्रज खेचराधीश ॥ चंदसेखा तस गेहिनी, श्रतिविलसे सुख निशदिश ॥ १ ॥ सलुषा सुषजो नारि चरि त्र ॥ अरेहां पण अवसाने पवित्र ॥ स० ॥ आंकणी ॥ कीघां एक म नावी आज्ञा, खेचर अवर अनेक ॥ रीत ए सत्पुरुषो तणी, जिन्न जिन्न जणी करे एक ॥ स० ॥ २ ॥

श्चर्य।।वैताड्यिगिरि उपर विशाला नामे एक नगरी हे. त्यां मण्डियन नामे एक विद्याधरनो राजा हे; तेने चंड्रलेखा नामे स्त्री हे. तेर्ड रात्रि दिवस सुख विलास करतां हतां. सक्तनो, श्चा नारी चरित्र सांजलजो जे श्ववसाने (हेवटे) पवित्र गणाशे. ॥ १ ॥ बीजां घणा खेचरोने तेणे श्वाङ्गा मनावीने एक कर्यो हतां, सत्पुरुषोनी ए रीति हे के, जे जिल्ल जिल्ल होय तेने एकत्र करे. ॥ १ ॥

यात्रादिक गुरु मुखर्थी निसुणी, प्रगट्यो जाव श्रनंत ॥ ताम विमान रचीनवुं, सकसत्र जेट्या जगवंत ॥ स० ॥ ३ ॥ ते विद्याधर श्राजनी, श्राव्यो श्राजारा ति ॥ जे घन इहां बुट्यो हतो, तेणे पसर्यो प्रजंजन जांति ॥ स० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ ते मिष्पप्रजने, गुरुना मुख्यी यात्रादिकनो प्रजाव सांजली अनंत जाव प्रगट ययो तत्कग्ल एक नदुं विमान रची ते स्त्री सहित जगवंतने जेटवा चाहयो ॥ ३॥ जगवंतने जेटी ते विद्याधर आज रात्रे आजानगरी जपर आज्यो जे मेघ अहीं आजे वर्ष्यों हतो तेनाथी घणो वायु प्रवर्त्तवा लाग्यो ॥॥॥

श्चटक्युं विमान न चाक्षे गगने, कीधां कोडि प्रकार ॥ पामी श्चचरज खेचरी, तेणे विनव्यो निज जरतार ॥ स० ॥ ए ॥ विणरुतु इहां केम बुट्यो वरषा, केम यंजाणु विमान ॥ करीए प्रसाद ए मुजने, खेचर तणा सुखतान ॥स०॥६॥

श्चर्य ॥ तेथी श्चाकाशमां विमान श्चटकी गयुं तेणे कोटी छपायो कर्या पण विमान चाले नहीं. ते जोइ खेचरी श्चाश्चर्य पामी श्चने तेणीए पोताना पतिने विनववा मांड्यो ॥ ५ ॥ हे ! खेचर पति ! वर्षा ऋतुविना श्चिहें वर्षाद केम वर्ष्यों ! श्चने श्चापणुं विमान केम शोजायुं ? ते वार्त्ता मेहेरबानी करी मने जणावो. ॥६॥

खेचर कहे ए वचन श्रगोचर, रे नारि न कहाय ॥ करीए कथा जे पारकी, श्रापणने नफो शो थाय ॥ स० ॥ ९ ॥ बमणो हठ मांड्यो खेचरीए, स्त्री हठ जगड़्विरि ॥ मिण प्रजे निज कांताजणी, कीधो पाठो सकल प्रकार ॥ स०॥ ७ ॥ श्रथ्र ॥ खेचरमिणप्रजे कहां, हे स्त्री ए वात श्रगोचर हे. ते कहेवाय तेवी नथी. श्रने पारकी वात क-रवामां श्रापणने शो नफो थाय ? ॥ ९ ॥ खेचरीए बमणो हठ कर्यो. स्त्रीनो हठ जगत्मां इःखे निवारवा योग्य हे. पठी मिणप्रजे पोतानी स्त्रीने सघलो प्रकार कहेवा मांड्यो. ॥ ७ ॥

द्याजापुरपति उपर सुरकोइ, कुपितवे वैरिवकार ॥ नृपने स्रति परितापवा, तेणे विरच्यो ए जलधार ॥ स० ॥ ए ॥ ते नृपनी पुण्याइयें, यंन्युं स्रापणुं एह विमान ॥ ए कारण वे हे त्रिये, कहे नारी वचन परधान ॥ स० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ श्चाजानगरीना राजा जपर कोइ देवता वैरना विकारथी कोप पाम्यो हे. राजाने श्वति परिताप करवा तेणे श्वा मेघने रच्यो हे. ॥ ए ॥ पण ए राजाना पुष्यथी श्वापणुं विमान श्रोजायुं हे. हे स्त्री, तेनुं ए कारण हे. त्यारे चंद्रखेखा मुख्य वचन बोखी. ॥ १० ॥ वे कांइ सामर्थ्य प्रीतम तुममें, जेम एह उगरे जूप ॥ तो उपगार करो प्रजु, उपगार वे धर्म सरुप ॥ स० ॥ ११ ॥ विद्याधर कहे मुजथी शुं होवे, पण एक जाणुं उपाय ॥ तेह जो नृपमाता करे, तो विघन विखय सिव जाय ॥ स० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ हे प्रियतम, श्रा आजानगरीना राजा उगरे एवं कांइ सामर्थ्य तमारामां वे ? तो हे ! प्रजु तेना उपर उपकार करो. ए धर्मनुं स्वरूप वे. ॥ ११ ॥ विद्याधरे कह्यं, माराथी शुं थइ शके, पण हुं एक उपाय जाणुं बं. पण जो ते राज माता करे तो आ सर्व विघ्न विनाश पामी जाय. ॥ १२ ॥

श्रावी विद्याधरी निजयित खेइ, वीरमतीनी पास ॥ तुज सुतने कल्याणनो, रे बाइ सुण श्रवकाश ॥ स०॥ १३॥ बिंब मनोहर सोखमा जिननो, थापो थान पवित्र ॥ पंचमंगल दीवो करी, जरो फूलनो पगर विचित्र ॥ स० ॥ १४॥

श्चर्य ॥ पढ़ी ते विद्याधरी पोताना पतिने खड़ वीरमती माता पासे श्चावी, श्चने कह्यं. हे !बाइ,तारा पुन्त्रना कह्याणनो जपाय तुं ध्यानश्ची सांजहय ॥ १३ ॥ सोखमां तीर्थकर श्रीशांतिनाश्चनुं मनोहर विंव प-वित्र स्थानमां स्थापन कर्य. तेनी श्चागख पंच मंगख दीवो करी विचित्र पुष्पोनो पगर (श्चंजित) जर्यः १४

मारी विद्याधरी वली नृपपित, तेम तुं नृपनी विमात ॥ जिनगुण गाइ राती जगो, करो ज्यां लगी थाय प्रजात ॥ सणार्थ ॥ पढी एक आपुं कणयर कंवा,

फरसो जूप शरीर ॥ तो सूत ए वीरसेननो, सक्त होवे फरी वमवीर ॥ स०॥ १६॥ श्रर्थ ॥ श्रामारी विद्याधरी, राजानी पत्नी, श्रने तुं राजमाता ए बधा जिनगुण गातां गातां ज्यांसुधी प्रजात थाय त्यांसुधी रात्रि जगो करो. ॥ १५ ॥ पत्नी एक कणेरनी कंबा श्रापुं, तेनाथी राजाना शरीरनो स्पर्श करो. जेथी ते वीरसेननो शुरवीर पुत्र चंदराजा फरीथी सक्त थरो. ॥ १६ ॥

बाइए तरत तेडावी मुजने, सयल सुणावी वात ॥ विद्याधर वचने अमे, प्रजु जित्तश्री निगमी रात ॥ स० ॥ १७ ॥ श्री जिनराजनो रास रम्या अमे, तुम माटे प्राणेश ॥ कंबाथी तुमने जगावीने, गयो विद्याधर निज देश ॥ स० ॥ १० ॥ अर्थ ॥ पठी तमारी माताए मने तेडावीने सर्व वार्ती संजलावी ए विद्याधरनां वचनथी अमे प्रजु जित्मांज बधी रात्रि निर्गमन करी. ॥ १७ ॥ हे प्राणेश, अमे पठी तमारे माटे श्रीजिनराजनो रास रम्यां अने ते विद्याधर तमने कंबाथी जगानी पोताना देशमां चाह्यो गयो. ॥ १० ॥

ए छाजुनी रजनी रामत, पिछजी में कीधी प्रकाश ॥ मोहने ढाल बावीशमी, कही मनोहर बीजे छल्लास ॥ स० ॥ रए ॥

अर्थ ॥ हे ! प्रिय ! आप्रमाणे आजनी रात्रिनी रमतनो वृत्तांत में प्रकाश कर्यों. श्रीमोहन विजये आ बीजा उद्यासनी बावीशमी मनोहर ढाल कही हे. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

चंद कहे चतुरा निसुण, ए कह्यों साचोमर्म ॥ जे होय नारि प तिव्रता,तेहनो एहिज धर्म ॥ १ ॥ अकृत करे पिछ कारणे, सुकृ त करे विशेष ॥ प्रकृति ए सतीयो तणी, होय पुराकृतदेष ॥ १ ॥



श्चर्य॥ चंद राजाए कहां, हे चतुरा, तमे जे साचो वृत्तांत कहाो, ते सांजहयोः जे स्त्री पतिव्रता होय तेनो एयोज धर्म हे.॥ १॥ पतिने माटे न करवानुं करे श्चने विशेषश्री सुकृत करे, ए सतीर्जनी संस्कार पामेखी प्रकृति होय हे.॥ १॥

> सुतथी माता हित करे, पतिजक्ति होय नार ॥ शी श्रधिकाइ ते हमें, हे जगस्थिति व्यवहार ॥ ३ ॥ मुज कारण छजागरो, कर्यो तमे बहुरीत ॥ जली थइ करुणा करी, श्रम तुम साची प्रीत ॥ ४ ॥

अर्थ ।। माता पुत्र उपर हेत करे अने स्त्री पित जिक्त करे, तेमां शुं श्रिधिक हे ? ए तो जगत् स्थिति-नो न्यवहार हे. ।। २ ।। तमे मारे माटे बहु प्रकारे छजागरो कर्यो, ए मोटी दया करी. तमारीमारा उपर साची प्रीति हे. ।। ४ ।।

> जुतुं केम कहो तमे, मान्यां वचन विराम ॥ जो जुतुं जाषो तमे, तो वायस होय स्थाम ॥ ५ ॥ जो प्रज रास रम्यो नही, मुज माटे तमेनार ॥ तो सायर खारो हुवे, दिनकर वमे तुखार ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ तमे जुवुं शामाटे बोलो । तमारां वचन में शांतिथी मान्यां है जो तमे जुवुं वोलो तो कागको स्थाम थड़ जाय ॥ ५ ॥ हे स्त्री,! जो तमे मारे माटे जिन प्रजुनो रास न रम्यां हो तो सागर खारो थाय श्चने सूर्यमांथी काकलनुं वमन थाय ॥ ६ ॥

तुम विण कुण पतिना जतन, करे श्रवर संसार ॥ श्राव्यो माखव देशनो, चांपल देनें नार ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ आ संसारमां तमारा शिवाय बीजी कोण स्त्री पतिनी जतना करे. मारे घेर तो माखवदेशनुं रन आन्युं हे. ॥ ९ ॥

॥ ढाख त्रेवीशमी ॥

॥सखीरी श्रायो वसंत श्रटारमो, सुरिजन खेखे फाग चतुरजन सोहना ॥ ए देशी ॥ सखीरी चंद कहे चंद्रानने ॥ चंद्रा० ॥ तुम वचने वे प्रतीत ॥ सुग्रण जन सांजलो ॥स०॥ पण मुज विनति चित्त धरो ॥ चि० ॥ कहे कहेवाये ए रीत ॥ स० ॥ र ॥ स० ॥ रास मंमल जिनराजनो ॥ जि० ॥ उदय किहांथी थाय ॥ स० ॥ स० ॥ एहवुं जाग्य किहां थकी ॥ कि० ॥ जे जिनग्रण गवराय ॥ स० ॥ र ॥

श्रर्थ ॥ चंद्र कहे हे- हे चंद्र मुखी, मारे तमारां वचन जपर प्रतीति हे. पण सद्गुणीजन, सांजलो श्रमे मारी विनंति मनमां धरो. ए कहेवानी रीत हे. ॥ १ ॥ श्रीजिन प्रजुनो रास क्यांथी जदय थाय. अने श्रीजिनराजनागुण गवाय एहवं जाग्य क्यांथी होय ? ॥ २ ॥

सा जिननी प्रक्ति जो कीजीये ॥ जो ।। तो लहीये प्रवपार ॥सु ।। सा केवल ल हीने ते होवे ॥ते ।। (पाठांतरे)॥ जिन गुणगातां बहु थया ॥व ।।। ज्योति वधु परतार ॥ सु०॥ ३ ॥स०॥ जेम तमे प्रजुगुण श्रालवी ॥श्रा०॥ मुजने कीध कछाण ॥सु०॥ स०॥ तेम श्रमे पण सुपनुं लह्युं ॥ सु०॥ मध्य निशाने प्रमाण ॥ सु०॥ ४॥ श्राणे श्रीजिनराजनी जिक्त करवामां आवे तो संसारनो पार लेवाय हे. श्रीजिन प्रजुना गुण गानवाथी घणां स्त्री पुरुष ज्योतिरूप (तेज स्वरूप-मुक्त) श्रया हे. ॥ ३॥ जेम तमे प्रजुना गुण गाइ मारुं कल्याण कर्युं. तेम मने पण आजे मध्य रात्रे स्वप्त आव्युं हतुं.॥ ४॥

॥स०॥ तुमे श्रा श्राज्ञानगरीथी॥ न०॥ जोयण श्रहारसे सीम ॥ सु०॥ स०॥ जाणुं विमलपुरीतमे गया ॥त०॥ सासुपण हे समीप ॥ सु०॥५॥ स०॥ तिहां कोइक नर परणतो ॥ प०॥ देखो हो बेहु तेह ॥ सु०॥ स०॥ जाग्यो एहवे हुं इहां ॥ हुं०॥ कोतुक सुपन स्योएह ॥सु०॥६॥ श्रर्थ ॥ जाणे तमे श्राज्ञानगरीथी श्रहारसो योजन छपर रहेली विमलपुरीमां गया, त्यां तमारी सासू पण समीप हतां. ॥ ५॥ तमे बंन्ने ए त्यां कोइ पुरुषने परणतो जोयो हतो, ए पही हुं जागी गयो. ए स्वानुं शुं कोतुक हशे. ॥ ६॥

सा ॥ तुम कथने मुज सुपनमे ॥ सु० ॥ श्रांतर रजनी दीस ॥ सु० ॥ स० ॥ ए वेहुंमांहि कियुं खरुं ॥की०॥ ए जाणे जगदीश ॥ सु० ॥ ७ ॥ स० ॥ में जाएयुं श्रानुमानश्री ॥ श्राठ ॥ सुपननीशी परतीत ॥ सु० ॥ स० ॥ सुपन दृष्टांते संसारनी ॥सं०॥ खोटी कही वे रीत ॥ सु० ॥ ७ ॥ श्राठ ॥ तमारा कहेवामां श्राने मारा स्वमामां रात्रि दिवसनो श्रांतर वे. ए वेमां कयुं सत्य वे. ए पूजा जाणे ॥ ७ ॥ में श्रानुमानश्री जाएयुं के, स्वमानीशी प्रतीति वे. कारण के, संसारनी रीत खोटी कहेवामां स्वमानुं दृष्टांत श्रापय वे. ॥ ० ॥

॥स०॥ तमे अनुजवीयुं ते खरं॥ ते०॥ खोटुं निद्धा जाख ॥ सु०॥ साची सदैव होवे सती ॥हु०॥ कहे एम चंद जुपाल ॥सु०॥ ए॥ स०॥ पिछ वचने विस्मित यइ॥ वि०॥ निसुणी निशा संबंध ॥ सु०॥ स०॥ पण पिछ खोटो पाडवा ॥पा०॥ कह्प्यो एक प्रबंध ॥ सु०॥ १०॥ अर्थ ॥ जे तमे अनुजव्युं ते खरं हे. अने हमेसा सती स्त्री साची होय. आप्रमाणे चंद राजा ए कहां. ॥ ए॥ पितनां वचनथी रात्रिनो संबंध सांजली राणी विस्मय पामी गइ. पण पोताना पितने खोटो पाडवा तत्काल एक नवो प्रबंध कहपनाथी छजो कर्यो.॥ १०॥

॥स०॥ कहे राणी खामीसुणो॥ स्वा०॥ शिव सेवक हुतो एक ॥सु०॥ स०॥ सुपनमे दीतुं देहरं ॥दे०॥ सुखडी जर्यो सुविवेक ॥ सु०॥ ११॥ स०॥ जठी जधांगले नोतर्या॥ नो०॥ निज न्यातिला सर्व॥ सु०॥ स०॥ पाठो छावीने जुए॥ ने०॥ खाली शिव जपवर्ग॥ सु०॥ १२॥ छर्य॥ राणी कहे हे-हे राजा, सांजलो. एक शिवनो सेवक हतो, ते विवेकीए स्वमामां सुखडीबी ज





रेखो एक शिवनो प्रासाद जोयो. ॥ ११ ॥ ते जपरथी तत्काख जठीने पोतानी सर्व ज्ञातिने नोतरुं श्राप्युं श्रने पठी ज्यां शिव मंदिर जोवा जाय त्यां ते तो खाखी जोवामां श्राव्युं. ॥ १२ ॥

॥ स० ॥ श्रवहरी इशे सुखाशिका ॥सु०॥ जाणे हो सेवक मूढ ॥सु०॥ स०॥ देइ प्रासाद पूज्या विना ॥पू०॥ पोढयो ज्ञातिथी गूढ ॥सु०॥१३॥ स०॥ पोहोर दिवस रह्यो पाठलो ॥पा०॥ ज्ञात जगाने हो जोय ॥स०॥ स०॥ कह्युं रे मूर्व जोजनतणी ॥जो०॥ ढील करे एम कांय ॥सु०॥१४॥

श्चर्य ॥ तेले जाएयं के, शंकरे वधी सुखडी खड़ खीधी, तेथी ते मूड पूजन कर्या वगर देरुं बंध करी ज्ञातिथी गूढ पले जड़ ते देहेरामां सुड़ गयोः ॥ १३ ॥ ज्यारे दिवसनो पाउखो पोहोर बाकी रह्यो एटखे जमवाने आवेखा ज्ञातिजनो तेने जगाडवा खाग्या. अरे मूर्ख, जाव्रत थाः जोजननी ढीख केम करे डे.?॥१४॥

॥स०॥ जोज्य सामग्री दिसे नही ॥दि०॥ सहीतो तें हांसु कीघ ॥स०॥ स०॥ ज्ञाति जणी उत्तर इस्यो ॥उ०॥ शंकर पूजके दीघ ॥ सु० ॥१५॥ स०॥ क्षण एक योजो जो तुमे ॥जो०॥ जहं सुखमीये प्रासाद ॥ स०॥ स०॥ सुपनमें देखुं पुरव परे ॥पू०॥ तो जमानुं सवाद ॥ स०॥ १६॥

श्चर्य ॥ वली श्चिहिं जोज्यपदार्थनी सामग्रीपण जोवामां श्चावती नथी. शुं तें उपहास्य कर्यु हे? ते सां-जली ते शिव जक्ते ज्ञातिने नीचे प्रमाणे उत्तर श्चाप्यो. ॥ १५ ॥ जो तमे एक क्रणवार खमो, तो पाहो पूर्वनी जेम स्वप्नामां श्चा प्रासाद सुखडीथी जरेलो देखुं तो हुं तमने जमाडुं. ॥ १६ ॥

॥साणा सहू कहे सुपननी सुखडी ॥सुणा तेणे केम जांजे जूख ॥ सुण ॥ सणा पस्तावो पूजारो करे ॥पूणा खोटो ए सुपन सखुख ॥ सुण ॥ १५ ॥ सणा तेम तमे सुपन मांहे प्रज्ञ ॥मांणा विमख पुरी मुज दीठ ॥ सुणा सण ॥ हुंतो जजी तुम स्थागले ॥तुणा जूठ ग्रुं बोलो स्थनीठ ॥सुणा १०॥

श्रर्थ ॥ सर्वे बोह्या-श्ररे श्रातो स्वप्नानी सुखडी, तेनाथी जुख केम जांगे? पूजारे पडी पस्तावो कर्यो श्रने कहुं के, स्वप्नानी वात उपर विश्वास करवो नहीं. ॥ १७ ॥ तेम हे नाथ, तमे स्वप्नामां मने विमख पुरीमां दीडी. ते स्वप्नानी वात डे. हुं तो श्रत्यारे तमारी श्रागल उजी डं. तमे श्रावुं खराब जुटुं शुं बोलोडो? १०

॥स०॥ जाते वलते ठत्रीशसें ॥ ठ०॥ कोश होवे महाराज ॥ स०॥ स०॥ वातते मानवानी नही ॥ न०॥ स्रावे ए वाते लाज ॥ स०॥१ए॥ स०॥ रे राणी राजा कहे ॥ रा०॥ हुंतो करुं हुं हास ॥ स०॥ स०॥ मुजने तारां वचननो ॥ व०॥ पुरो हे विशवास ॥ स०॥ १०॥

श्चर्य ॥ हे महाराज,! ते विमलपुरी जतां आवतां ब्रित्रीशसो कोश आय हे. ते वात न मानवी जोइए एवी वात तो कहेतां पण लाज आहे. ॥ १ए ॥ राजाचंदे कहां, हे राणी, हुं तो तारी मस्करी करुं हुं. मने. तारां वचननो पूरो विश्वास हे. ॥ २० ॥

स०॥ रंगरती राजा श्रवे ॥ रा०॥ सहु कोश्रवे निज गेह ॥ सु०॥ स०॥ श्रागल संबंध मीठको ॥मी०॥ तेम वली नवले नेह ॥सु०॥११॥ स०॥ त्रेवीरो ढाले कह्यो ॥ ढा०॥ मोहने बीजो उल्लास ॥ सु०॥ स०॥ श्री जिन धर्म थकी लहे ॥थ०॥ चंद नारेंद प्रकाश ॥सु०॥११॥

श्चर्य ॥ राजा पोताना रंगे खुशी रह्यो. बीजा पोतपोताने घेर रह्या हे; इवे श्चावातनो संबंध श्चागल मीठो श्चावे हे. तेमां वली नवीन स्नेह जरेलो हे. ॥ २१ ॥ श्चा बीजा छद्वासनी त्रेवीशमी ढाल श्रीमोहन विजये कही हे. राजाचंद श्रीजैन धर्मश्री पोतानुं तेज प्राप्त करे हे. ॥ २२ ॥

॥ इति श्रीचंद चरित्रे प्राकृत प्रबंधे चंदिसंहलमिलनस्वरूपा (१) कनकथ्वजकथाश्रवणरूपा (१) जाटकपाणिप्रहणात्मिका (३) पुनरा जापूरीनगरीगमनका (४) श्राजिश्चतस्र जिः कलाजिः प्रबोधोद्वितीयो ल्लासः समाप्तः ॥ सर्व गाथा १०एए

श्रीचंदराजाना चिरत्रना प्राकृत प्रबंधमां, १ चंद स्त्रने सींहल राजानो मेलाप, २ कनकध्वजनी कथानुं श्रवण, ३ चंदराजाए जाडे करेलुं पाणिप्रहण, श्रने ४ पुनः स्त्राजापुरीमां गमन ए चार कलार्जश्री युक्त एवो स्त्रा बीजो जङ्कास समाप्त स्रयो.

॥ सर्व गाया १०एए॥

॥ श्रथ तृतीयोञ्जास प्रारच्यते ॥

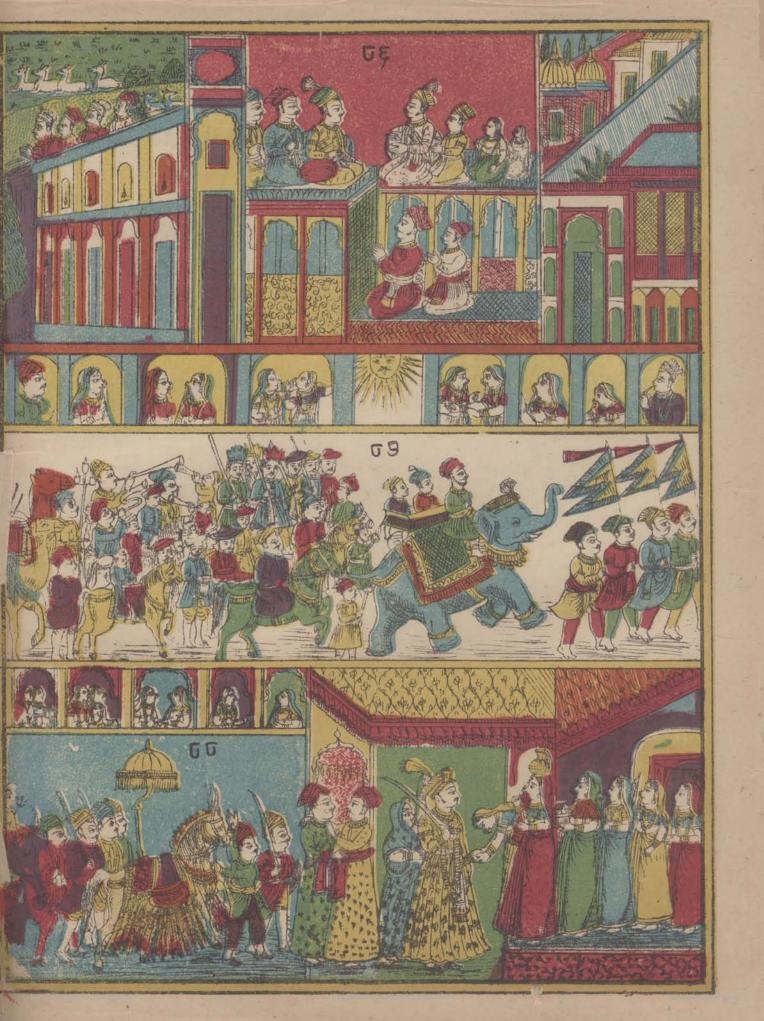
॥ दोहा ॥

श्रविनाशी काशीधणी, शिववासी हरितंग ॥ स्वर्ग निवासी दा स जस, नमो पास जिन रंग ॥१॥ चिदाकार चिद्कानघन, चि दानंद चिडूप॥ चिदाजास करुणाथकी, होवे त्रिलोकी जूप ॥१॥

श्चर्य ॥ जे विनाशने पामता नथी, जे काशी नगरीना स्वामी, मोद्यमां निवास करनारा श्चने जेना श-रीरनो रंग नीखो हो, वली जेनी देवताई सेवा करे हे एवा श्रीपार्श्वनाथ प्रजुने हर्षथी नमस्कार थाई हीए ॥ १ ॥ जे चैतन्य श्चाकृतिवाला हो, जे चैतन्य ज्ञान समूह रूप हो, जे श्चानंद स्वरूप हो जे चैतन्य रूप हो, एवा चैतन्य स्वरूपी परमात्मानी करुणाथी श्चात्मा त्रण लोकनो नाथ श्वाय हो. ॥ १ ॥

॥जे दर्शन दर्शन विना, दर्शन ते प्रतिपक्त ॥ दर्शन दर्शन होय जिहां, ते दर्शन प्रत्यक्त ॥३॥ जंग जाल नरबाल मित, रचे विविध श्रायास ॥ तिहां दर्शन दर्शन तणो, नही निदर्शना जास ॥४॥

श्चर्य ॥ जे दर्शन श्चात्म खरूपना श्चनुजव विनानुं हो, ते दर्शन (मत) विरोधी मतवाखुं हे श्चने जे दर्शनमां श्चात्मस्वरूपना श्चनुजवरूप सम्यग् दर्शन शाय हे तेज दर्शन प्रत्यक्ष दर्शन है। ॥ जे पुरुष श्चान बुद्धिश्ची श्चनेक प्रकारना प्रयास करी वचनोना जंग जाखनी रचना करे हे तेना मतमां शुद्ध श्चात्म दर्शननो श्चनुजव नश्ची परंतु ते मात्र दर्शनाजास है। ॥ ॥ ॥



चंदराजानो रासः

खित त्रिजंगी जंगजर, नैगमादि नय जूरि ॥ ग्रुका ग्रुक तरो क्तथी, जाषे जगग्रह सूरि ॥५॥ मान्यो कर्त्ता तो किशुं, श्रणमान्ये शो विशेष ॥ मन मान्यो मान्याविना, न गइ ममता रेष ॥६॥

श्चर्य ॥ जे जगद्गुरु सूरि जगवंत हे ते त्रिजंगीयी सुंदर, युक्तिना समूहवाला, नैगमादि घणां नयथी युक्त श्चने शुद्ध श्चशुद्धनो निर्णय करी श्चित शुद्ध एवां वचनो बोले हे ॥ ए ॥ किंद जगत्नो कर्ता माने तो शुं एमां शो विशेष हे? ज्यांसुधी मनमान्यो माने नहीं त्यांसुधी एक रेखामात्र पण ममता गइ नथी, एम जाणवुं. ॥ ६ ॥

मत मत जनक ममत्वता, सिद्ध जनक श्रममत्व ॥ धन्य गणे सम जा वथी, मत श्रमेक एकत्व ॥ ७ ॥ जे सम दशीं सरख गति, श्रात्म शक्ति संप्राप्त ॥ ते नर चंद नरिंद परे, त्रिजुवन होवे व्याप्त ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ जुदा जुदा मतने जत्पन्न करनारी ममता है श्रने निर्ममता सिद्धिने जत्पन्न करनारी है. जे श्रने क मतमां समजावश्री एकत्व गणे तेवा नरने धन्यहे. ॥ ७ ॥ जे पुरुष समदृष्टिवालो, सरलगित राखनारो श्रने श्रात्म शक्ति जेणे सम्यक् प्रकारेप्राप्त करी है ते पुरुष चंदराजानी जेम त्रण जुवनमां प्रसिद्ध श्राय है.

चंद तृतीय जल्लास श्रथ, निसुणो सुन्नग श्रखंम ॥ जास मधुरताथी थइ, खंड ते खंनो खंड ॥ ए ॥ कवि श्रोता कारण करे, ग्रंथरचन श्रा यास ॥ समजे कोण श्रोता विना, कविजन वचन विलास ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ हे सुत्रगजनो, हवे चंदराजाना रासनो त्रीजो छद्वास श्चर्खंडितपऐ सांत्रखो. जेना माधुर्यनी श्चा गल खांम शरमाइने खंडे खंड थड़ गइ. ॥ ए॥ कविछे श्रोताने माटेज ग्रंथ रचवानो प्रयास करे छे. कार-ए के, छत्तम श्रोताविनां कविलोकना वचनना विलास कोए समजे.?॥ १०॥

यथा शक्ति वक्तावदे, क्त्योपशम श्रानुसार ॥ पण श्रोता नेदालका, ते विरला संसार ॥ ११ ॥ एक चित्त हुंती सन्ना, निसुणो हवे श्रधि कार ॥ गुणावली हवे चंदशी, केवा करे प्रकार ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ वक्ता हंमेसा पोताना क्योपशमने श्चनुसारे यत्राशक्ति वदे हे पण तेना जेदने जाणनारा श्रो तार्ज श्चा संसारमां विरता है. ॥११ ॥ सन्ता वधी एक चित्त श्चर श्चा चात्रतो श्रधिकार सांजितो. दवे राणी गुणावती चंदनी साथे केवी युक्तियो करे हे? ॥ १२ ॥

॥ ढाख पेहेखी ॥

हो मतवाखे साजना, रजनी श्राजनी रहीने रे ॥ ए देशी ॥ ॥पूरव पतिने गुणावली, विनवे बेहुकर जोभी रे ॥ सुपनतणी श्रांटी तमे, वालिमजी द्यो ठोमी रे ॥ वात चित्त विमासी कीजीये ॥ १ ॥ जे वाते रस वाधे रे ॥ जे नर श्रणघटती कहे, ते रयो स्वारथ साधे रे ॥ वातण ॥ २ ॥ श्रर्थ ॥ गुणावली पतिने वे हाथ जोडी विनवे ठे. हे वालिम, तमे स्वमानी वातनी जे आंटीवाली वे ते बोडी दो. श्रापे वार्त्ता विचारीने करवी जोइए. ॥ १ ॥ जे वात करवाथी रस श्रावे तेज करवी जोइ ए श्रमे जे वात श्राणघटती होय ते कहेवाथी शो स्वार्थ सधाय.शा २ ॥

कीधो रजनी जजागरो, ते तमे नात्यो क्षेखे रे ॥ तो वाक्षेशर शुं थयुं,
परमेश्वर तो देखे रे ॥ वात० ॥ ३ ॥ घोमो दोडे वेगथी, पण श्रसवार
न जाणे रे ॥ ते जलाणो तमे कर्यों, एहवी रीजने टाणे रे ॥ वात० ॥ ४ ॥
श्रर्थ ॥ श्रमे जे रात्रिनो जजागरो कीधो ते तो तमारा क्षेलामां श्राव्यो नहीं, हे वाहाला, तेथी शुं थयुं?
ते परमेश्वर तो देखे हे. ॥ ३ ॥ घोडो वेगथी दोडे पण ते तेनो स्वार जाणे नहीं. श्रा कहेवत तमे श्रा हर्षने वखते करी बतावी. ॥ ४ ॥

हांसी मांहे काढो तमे, प्रीतम तमने परख्या रे ॥ जुंगुं न मानशो साहिबा, विषक कला किहां शिख्या रे ॥वातण्या जगत् सकल जुठो गणे, जे नर होवे जुठो रे ॥ निज अवगुण जाणे नहीं, वांक देखांडे अपूठो रे ॥ वातण्या ६ ॥ अर्थ ॥ हे प्रियतम, में तमारी परीका करी लीधी. तमे वधीवात हांसीमां काढो हो. मारा साहेव खोंडुं लगाडशो नहीं. आवी विणक् कला क्यां शीख्या शा ए ॥ जे पुरुष जुठो होय ते आखा जगतने जुठो गणे हे. ते जुठो माण्य पोतानो अवगुण जाणे नहीं अने बीजानो वांक आगल्यी देखांडे हे. ॥६॥ जिलटो चोर चोरी करी, जेम तलारने दंडे रे ॥ देखांडो हो दवामणी, तेम ते म करीने वितं में ॥ वातण्या शा हुं जोली समजी नहीं, तमने साची में जाखी रे ॥ समजण मांही तुमारकी, तमे पण ठंह न राखी रे ॥ वातण्या हा ॥ ॥ अर्थ ॥ जेम चोर चोरी करीने कोटवालनो दंक करावे तेम वितंडावाद करी दवामणी देखांडो हो ॥ वातण्या हुं जोली स्त्री समजी नहीं, जे वात साची हती, ते कही आपी. तमारी समजणनी शीवात करवी? तमे पण कांइडेहण राखी नहीं. ॥ ज्या

॥ वरजुं हुं हांसी मत करो, हांसीए होवे विमासी रे॥ किहां हुं किहां विमक्षा पुरी, तमने ए मित शी जासी रे ॥वातण।।ए॥ नर परघरजंजा घणा, नारी नही कोइ खोटी रे॥ नर परणावे अदेखता, वात करी करी मोटी रे॥ वातण॥ १०॥ अर्थ ॥ हुं ते वात छोडी दलं हुं. हवे तेवी हांसीथी खेद थाय छे। क्यां हुं! अने क्यां विमलपुरी! तमने आ शी हुक्षि सुकी शे॥ ए॥ घणा पुरुषो पारका घरने जांगनारा होय छे कोइ नारी खोटी होती नथी. पुरुषो तो देख्या वगुर मोटी मोटी वातो परणावी दे है। ॥ १०॥

॥ उर्लेघी घरनो उंबरो, न गइ किहां गइ धीठी रे ॥ तो तमे कोश श्राहरसें, उपर किहां मुज दीठी रे ॥ वात० ॥ ११ ॥ चंद कहे राणी तमे, रीस मुधा म चढावो रे ॥ जेम तुम मन राजी रहे, ते विध गावो बजावो रे ॥ वात ०॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ हुं श्चा घरनो जंबरो ठोडी जञ्जत यह क्यांइपण गइ नथी. तो तमे श्चढारसो गाज जपर मने क्यां दीठी.? ॥ ११ ॥ चंदराजाए कह्यं, राणीजी, तमे फोगट रीस शामाटे चडावो ठो? जेम तमारुं मन राजी रहे, तेवी रीते गायो श्चने बजावो. ॥ १२ ॥

सुपन तणी वाते तमें, नाके सलकां श्राणो रे ॥ इसवानी मुज टेव ठे, रहोठो जेलां शुं न जाणो रे ॥ वात० ॥ १३ ॥ पण मुज सुपन जुठुं नहीं, मुज निरधार ठे एहवुं रे ॥ सासु वहु मोजो करों, जो कुं मिं कुं जो इए तेवुं रे ॥ वात० ॥ १४ ॥ श्रिश्री हे राणी! श्रा स्वमानी वातमां तमे नाक शुं चडावो ठो. मारे इसवानी टेव ठे. तमे जेगा रहो ठो, शुं नशी जाणता. १ ॥ १३ ॥ पण मने निश्चय ठे के, मारुं स्वम जुठुं नशी. तमे सासु श्राने वह मोज करों. जेवुं जोइए तेवुं जो कुं मह्युं ठे. ॥ १४ ॥

पण मुजने करी कृपा, देखाडजो कोइ कीडा रे॥ मारी रखे कांइ श्राणता, म नडामांहे ब्रीडा रे॥ वात०॥ १५॥ तुम कारज मांहे माहरुं, नेक्षं काज सुखीजे रे॥ जेम खीचकीनी बाफश्री, वचमां ढोकक्षं सीजे रे॥ वात०॥ १६॥

श्चर्य ॥ पण कृपा करीने कोइ क्रीडा मने बतावजो रखे मारी मनमां शरम राखता? ॥ १५ ॥ जेम खी चडीना बाफथी तेनी वचमां नाखेलुं ढोकलुं जेगुं चडी जाय छे तेम तमारा कार्यमां मारुं जेगुं कार्य थइ जरो ॥ १६ ॥

॥ गोदमी मांहे गोरख तमे, प्राण प्रिये तुज दीठी रे ॥ त्रीजे उल्लासे पेहेबी कही, ढाख ए मोहने मीठी रे ॥ वात० ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ हे प्राणिपया, में तने गोदडीमां राखेखा गोरखनी जेम दीठी हती. आ त्रीजा उल्लासनी पेहेबी मीठी ढाख श्रीमोहन विजये कही हे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥वाहाला वगर गुने इस्या, मोसा बोलो केम ॥ एणे वचन पातलो,कीधो दीसे प्रेम ॥ १ ॥ थइ निहेज निःशंक शुं, इसतां जांजो हाड ॥ जा णुंदुं कोइ तुम तणे, काने लाग्यो चाड ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ है वाहाखा, वगर गुने श्रावा मृषा बोल केम बोलो हो ? तमारां श्रा वचनथी प्रेम पातलो कर्यो होय तेम लागे हे. ॥ १ ॥ श्राम स्नेह वगरना श्रने निःशंक श्रश् हसता हसता हाडने जागी नालो हो ? हुं जाणुं हुं के, तमारा काने कोइ चाडी श्राव्यों हे. ॥ २ ॥

॥नावुं वांकी वाड तक्षे, चाक्षुं खंमाधार ॥ प्राण नाथ दीजे नही, वेहेता वृषप्रने प्यार ॥ ३ ॥ सूतो वेचे कंतने, ते कोइ बीजी नार ॥ रंग विरंगा मद ठक्या, बोलो केम श्रविचार ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ हुं वांकी वाड नींचे पण श्चावुं नहीं, खद्भनी धार छपर चालुं हुं. हे प्राणनाथ, चालता बलद ने श्चार मारो नहीं ॥ ३ ॥ पोताना पितने सूतो वेचे—एवी स्त्री कोइ बीजी होय, हे. तमे रंग जरेला श्चने मदमां हकी गयेला श्रइ केम श्चावां श्चविचारी वचन बोलो हो? ॥ ४ ॥

॥श्रंगे विस्नोक्युं नारीयें, पेख्यो परिणत कंत ॥ यह विस्तवी जाखा खरा, विमसपुरी उद्दंत ॥ ५ ॥ तोपण प्रीतम श्रागसे, माने नहीं सगार ॥ जमाडे प्राणेशने, गुणावसी तेणी वार ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ पत्नी राणीए चंदनुं शरीर जोयुं त्यां पोतानो पति परणेखो जोवामां आव्यो. तत्काल ते विक्ष-स्त्री श्रह गइः आने मनमां विचार्यु केः आणे विमलपुरीनो वृत्तांत जाण्यो हशे खरोः ॥ ५ ॥ तोपण ते प्रिय तमनी आगल ते वात लगारपण मानती नथी. पत्नी गुणावली राणीए पोतांना प्राणनाथने जमाड्योः॥६॥

गइ वहू सास्कने, नाह न जाणे तेम ॥ वात कही सघली तिहां, चंदे जावी जेम ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ पठी ते बहू पति जाणे नहीं तेम सासु पासे गइ. त्यां जड़ने चंदे जे बात कही हती ते बधी जणाबी. ॥ उ ॥

॥ हाल बीजी ॥

॥ घोनी ख्राइ याहरा देशमां मारुजी,खिरणीदे पाठी वाखहो, मृग नय णीरा यांशुं बोद्धं नही ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥

श्राची हुं देवा उंखंजडो ॥ सासूजी ॥ मुजथी रीसाणो नाहहो, रहिश्राखो रसनवि मेखवे ॥सासूजी॥ जाणी रातनी वातमी ॥सा०॥ कही सवी करीने छुचाहहो ॥ इठ जीनो नवलमति केखवे ॥सा०॥१॥ तुम विद्या तृण सारखी ॥सा०॥ मकरो फूल श्रनं तहो ॥रहि०॥ दीठो में तुमथी घणुं ॥सा०॥ मुज पीछ विद्यावंत हो ॥ इठ० ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ सासूजी, हुं तो तमने छंखंजो देवा आवी हुं. मारा पित मारायी रीसाया है. ते रहीयाखा नाथ रीस होडता नथी. तेणे रातनी बधी वात जाणी छीधी है. तेणे मने बधी युक्तिश्री कही आपी. ते हही-खो नाथ नवीन बुद्धिने केखवे है. ॥ १ ॥ हे बाइजी, तमे घणी फुख मारशो नहीं, तमारी विद्यातो तेनी आगख तृण समान है. में मारो पित तमाराश्री वधारे विद्यावंत जोयो. ॥ २ ॥

तुम श्रम विमल पुरीतणो ॥सा०॥ फोगट पड्यो प्रयासहो ॥ र०॥ पियु तिहां परण्यो प्रेमला ॥ सा० ॥ एहनी विद्या साबास हो ॥ ह० ॥ ३ ॥ में तिहां तमने कह्युं हतुं ॥ सा० ॥ ए मुज परणे वे कंत हो ॥ र०॥ ते तमे कथन वेयुं नहीं ॥ सा० ॥ पण अंते थयुं तंत हो ॥ ह० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ तमारो श्चने मारो विमलपुरी संबंधी बधो प्रयास फोगट पड़्यो मारो पति तो त्यां जड़ने प्रेम-लाने पराखो, तेनी विद्याने साबासी घटे हे ॥ ३ ॥ में तमने त्यां कह्युं हतुं के, स्थामारा पति पराणे हे ते वात तमे मानी नहीं पण स्थंते ते खरुं हर्युं. ॥ ४ ॥

॥ यद्यपि कामनी माही छ ॥ सा०॥ वे जगती तसे कोड हो ॥ र०॥ तो पण पुरुष डाह्या घणुं ॥सा०॥ नरनी केम होवे होड हो ॥ इ०॥ ५॥ श्रापणा वेहुं जणीए मली ॥सा०॥ जाएयुं वेतरी यें वे एह हो ॥ र०॥ पण एणे वेहुने वेतर्या ॥सा०॥ एकलडे मित गेह हो ॥ इ०॥ ६॥ श्रर्थ ॥ जो के श्रा पृथ्वी जपर कोटी गमे कामिनी छाही हशे तोपण पुरुषो तेमनाथी वधारे डाह्य है. नरनी साथे होड केम कराय? ॥ ए ॥ छापण बंने एम जाणतां हतां तेने हेतरीए हीए. पण बुद्धिना घर रूप ए पुरुष एकले छापण बंनेने हेतरी दीघां है ॥ ६ ॥

॥ पेहेलां मे तुम विनव्यु ॥सा०॥ मुज पियु समनही कोयहो ॥ ह० ॥ पण ते तमे निव मानता ॥सा०॥ जुवो ते साचुं एह हो ॥ इ० ॥ ७ ॥ पण दुर्बलने कहे थके ॥ सा० ॥ कोइ न रांघे कीर हो ॥ इ० ॥ केम जोलवाये नारीथी ॥ सा० ॥ जे रणश्रंगण धीर ॥ इ० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ में पेहेखा तमने विनन्युं हतुं के, मारा पित जेवो कोय पुरुष नथी, पण तमे ते मानतां न हतां. जुवो आ ते साचुं पडयुं. ॥ ९ ॥ छुर्वेखना कहेवाथी कोइ सीर रांधे नहीं. तेम मारुं वचन तमे मान्युं नहीं. जे रण ऋमिमां धीर होय ते नारीथी केम जोखवाय ? ॥ ए ॥

॥ नकरं हुं संगति केहनी ॥ सा०॥ कीघो तुमतणो संगहो ॥ ह०॥ चाक्षीहुं वचन तुमतणां ॥ सा०॥ तो एहवो थयो रंगहो ॥ ह०॥ ए॥ जदय श्राव्युं जे जेहने ॥ सा०॥ ते तेहथीहिज थाय हो ॥ ह०॥ करवा जाये जो कोइ नवुं ॥ सा०॥ तो पाठुं पसताय हो ॥ ह०॥ १०॥

अर्थ ॥ हुं कोइनी संग करती न हती, में तमारो संग कर्यो अने हुं तमारा कहेवा प्रमाणे चाली, तो तेनुं परिणाम आवुं आव्युं ॥ ए॥ जेने जे जदय आव्युं होय तेज तेनाथी आय हे जो कोइ नवुं कर-वा जाय तो ते पारख पस्ताय हे.॥ १०॥

॥ बाइजी कह्युं तुमतणुं ॥ सा० ॥ इवे मुजधीनवी होय हो० ॥ इ० ॥ वालेसरने इहवे ॥ सा० ॥ सुख पामी वे कोय हो ॥ इ० ॥ ११ ॥ तुम कने रहो कला धारणी ॥ सा० ॥ रहो विद्या तुम पास हो ॥ ह० ॥ कोइनो खरथ न बगाडीये॥ सा० ॥ करी करी एहवी लफासहो० इ० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हे बाइजी, हवे तमारु कहां माराथी बनी राके नहीं. पोताना व्हालाने छुखावी कई स्त्री सुख पामी हे ?॥ ११ ॥ जे तमारे कला होय, जे विद्या होय, ते तमारी पासज रहो. आवी डंफास मारी कोइ बीजीनो अर्थ बगानशो नहीं ॥ २ ॥

॥ पीठ उपरांठो जे थयो ॥सा०॥ किम वश स्त्रावशे तेह हो ॥ ह०॥ हवे कौतुक ए तुमतणा ॥ सा० ॥ रहेवाद्यो तुम गेह हो ॥ह०॥ १३॥ देश विदेश जोतां थकां ॥ सा०॥ इह्टयो ठेल सुलतान हो ॥ ह०॥ स्त्रावी नाक विंधाववा ॥ सा०॥ गृह ते विंधावी कान हो ॥ ह०॥ १४॥

श्चर्य ॥ इवे जे प्रियतम मारी जपर रोष जयों श्रयो, ते पाठो शी रीते वश श्वरो ? तमारा जे कौतुक होय ते तमारे घेरज राखो. ॥ १३ ॥ देश विदेशना कौतुक जोवा जतां मारो सुखतान ठेख छखायो. हुं तो नाक विंधावा श्रावी पण कान वींधावीने गइ तेवुं बन्युं ठे. ॥ १४ ॥ ॥पीज श्रागल मान्युं नथी॥ सा०॥ में इज ए तिलमात्र हो॥ इ०॥ पण एम कीधे शुं होवे॥ सा०॥पीजघरसम नहीयात्र हो॥ इ०॥१५॥ नयणे चरित्र जे दीठमां॥ सा०॥ माने ते केम नाकार हो॥ इ०॥ जुतुं पम्बुं ते साहमुं॥ सा०॥ करवो शो तेहनो प्रकार हो॥ इ०॥ १६॥

अर्थ ॥ में हजी प्रियतम आगल ए वात लगार मात्र पण मानी नथी. पण एमकहेवाथी शुं वले ? मारे पतिना घर जेवी प्राणयात्रा क्यांइ नथी. ॥ १५ ॥ जे चिरत्र तेणेपोतानी नजरे जोयां होय, ते ना कहेवा-श्री केम माने ? सामुं जुनुं पडवा जेवुं थाय हे. हवे एनो छपाय शुं करवो ? ॥ १६ ॥

कहे सासु वहु मतधरो ॥ सा॰ ॥ चिंता शोक लगार हो ॥ ह०॥ बीजी ढाल मोहने कही ॥ सा॰॥त्रीजा उल्लासनी सार हो ॥ ह०॥१९॥

श्रर्थ ॥ सासु कहे, हे वहूँ, तमे मनमां जरापण चिंता के शोक करो नहीं. श्रा त्रीजा जल्लासनी बीजी दाख श्रीमोहन विजये कही हे. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

वीरमती वहुने वचन, यह कोधवश जोर ॥ उठीकर क रवाल अही,करीने हृदय कठोर ॥१॥ आवी चंदकने तुरत, जाखे वचन विमात ॥ अरे छुष्ट पापिष्टनर, शी कही वहुने वात ॥१॥

श्चर्य ।। वहुनां वचनश्री वीरमती जोरश्री कोधने वश श्वरं गर्न, तत्काल करमां खद्भे खर् श्वने हृदय क-ठोर करी जन्नी श्वरं ॥ १ ॥ ते श्वपर माता चंदराजानी पासे श्रावी श्वने कहेवा लागी. श्वरं छुष्ट ! पापि-ष्ट, ते वहुने शी वात कही ? ॥ १ ॥

न्हाने मुख मोटां वचन, कहेतो दीसे चंद ॥ मीयांनीवादेचणा (पाठांतरे) मीण तणे दांते चणा, चावे कांमतिमंद ॥ ३॥ जोवा मांड्यां आजथी बिड अमारां एम ॥ वृद्धपणे तुं अमतणी, जिक्त करिश रे केम ॥४॥

छार्थ ॥ तुं नाने मुखे मोटां वचन कहेवा शीख्यो खागे हे. छारे मतिमंद, मीएने दांते चए। केम चावे हे ? ॥ ३ ॥ तें छाजथी छामारां हिक्षे छाम जोवां मांड्यां तो पत्नी वृद्धावस्थाए छामारी जिक्त केम करी शकीश ? ॥ ४ ॥

> सुर शंकाए मुज यकी, तो शुं तुज बस मूढ ॥ श्रा जूर्व की भी बापनी, सोनैये श्रारुढ ॥ ए॥ देश नगर जंडार जम, में जो सोंप्या प्राज्य ॥ तेंतो जाएयुं श्रावीयुं, काकी माने राज्य ॥६॥

श्चर्य ॥ हे मूढ, माराश्ची तो देवता पण शंका पामे तो तारुं बल कोण मात्र हे ? जुर्जने बापडी कीडी सोनैया चपर चर्मी बेठी? ॥ ए ॥ देश, नगर जरपूर जंडार में तने सोंप्या, तेथी तुं जाणे हे के, कांकीडा- ने राज्य महयुं. ॥ ६ ॥



हुं तुज ने मुकीश नहीं, जाइश किहां तुं हेव ॥ इणवेखा संजारतुं, इष्ट होवे जे देव ॥९॥ ग्रातीपर बेगी चकी, थयो स जयनृपचंद ॥ कहे सासुने गुणावसी, करी करी खर मंद ॥ ७॥

श्चर्य ॥ हुं तने ठोडीश नहीं. तुं हवे क्यां जङ्श श्चा वखते जे तारा इष्ट देव होय तेने संजारी छे. ॥ ७ ॥ वीरमती एम कहीने चंदनी ठाती जपर चडी बेठी. चंद जयजीत थड़ गयो. गुणावसी मंद स्वर-श्री सासुने कहेवा सागी. ॥ ० ॥

॥ ढाख त्रीजी ॥

॥ कठडारावाजाहो नणदलवाजीया, कठमारा घुरिया निसाण ॥
मोरी जोली नणदी, छुर्जनहससेहो गुन्हो बगसीए॥ ए देशी ॥
तुमचा सुतने हो उपर एवमो, न करो बाइजी रोष ॥ हारे मोरी जोली
माजी, छुरिजन हससे हो गुनहो बगसीए ॥ एवमुं तुमने हो करवो न
विघटे, नहीमुज प्रीतम दोष ॥ मो० ॥ छ० ॥ १ ॥ श्रविचल राखो हो
माहारो जो तुमे, जीवितसुधी सोहाग ॥ मो० ॥ तो तुमे मुको हो
बाइजी एहने, कहुं हुं पाउले लाग ॥ मो० ॥ छ० ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ हे बाइजी तमारा पुत्र जपर आवडो रोप करो नहीं हे मारा जोखा माजी, छर्जन हांसी करहो श्रमे गुण ढंकाइ जहो तमारे आम करवुं घटे नहीं एमां मारा पतिनो बीखकुख दोष नथी ॥ १ ॥ जो तमे मारुं सौजाग्य जीवित सुधी अविचख राखवा मागता होतो तमे एने ठोडी मुको हुं पगे पडी विनवुं ढं.२

गोद बिठाउंहो बाइजी सांजलो, ए मुज कीजीए माफ ॥ मो० ॥ मात जी तुमचीहो हु न सही शकुं, कोधानल तणी बाफ ॥ मो० ॥ छ० ॥ ३॥ कां एणे जोयां हो ताहरां ठिडने, में पण कांइ कह्यां तुऊ ॥ मो० ॥ डाही हुं हृती हो तोपण पांतरी, सबसी विमासणमुऊ ॥ मो० ॥ छ० ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ हे बाइजी, सांजलो हुं पालव पाथरीने कहुं हुं. मने माफ करो. हे माताजी, हुं तमारा कोध रूप श्रिप्तिनी बाफ सहन करी शकती नथी. ॥ २ ॥ एमणे तमारां बिक्त शां जोयां ? अने में तमने कांइ कह्यां बे ? हुं डाही तोपण बेतराणी, मारी समजण सबलबतां पस्तावो करवा जेवी थइ. ॥ ४ ॥

होते कुहोते होता सांजल्या, पण नवी मात कुमात ॥ मोण ॥ एहनी वय सामु कांइतो जुर्ड, समजे शुं जात विजात ॥ मोण ॥ छण ॥ ५ ॥ मारे पीछ विण हो जग शा कामनो, शुं करु मंदिर सेज ॥ मोण ॥ सामु ना जायाने हो जीवित दीजीए, मुजथी जो राखो हो हेज ॥ मोण ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बोरु कुबोरु याय. एम सांजह्युं बे पण माता कु माता थाय ? तमे एनी वय सामुं तो जुवो. जात के विज्ञातमां शुं समजे ?॥ ए ॥ मारे पति विना आ जगत शा कामनुं बे ? पढ़ी हुं मंदिर के शय्यान शुं करुं ? जो ! तमे मारी जपर हेत राखतां होतो आमारा सासुना जायाने जीवित दान आपो.॥ ६ ॥

माणस जो ए होशे हो तो घणुं ए ययुं, हवे उतारोजी रोष ॥मो०॥ कट कीन कीजे हो कीडी उपरे, तृण उपर स्थोजी शोष ॥मो०॥५०॥॥ खाम कवायो हो कांइ खेतो नथी, तुम वमे ए निश्चंत ॥ मो०॥ कहे वुं होय ते हो कहो मुज ए वती, पण मूको मुज कंत ॥ मो०॥५०॥॥

अर्थ ॥ हे सासुजी, जो ए माण्स हशे तो हवे समजी जरे, रोप छतारी नाखों कीडी छपर कटक शुं काम जोइए ? तेमज तृण छपर रोप शो राखवो ? ॥ ७ ॥ ए मारो पित तमारे खीधे खाडकवायो अने नि चिंत रहे हैं. जो कांइ कहेवुं होय तो मने कहो अने मारा पितने होडी मुको ॥ ए ॥

श्रवगी रहे कहे सासु हो तुंसमजे नही, ए सुतविष हुं सारीस ॥ मो०॥
मूकीश नही हुं एहने हो समने ताहरा, जोतुं खाख वारीस ॥ मो०॥
छ०॥ ए॥ तेणे शुं रुढे हो सोने कीजीए, त्रूटे जेहथी कान ॥ मो०॥
कोइ बीजी न मखीहो एहने जायगा, मांड्यो मुजथी जेतान॥ मो०॥ छ०॥ र०॥

श्चर्य ॥ सासुए कहां, तुं श्चलगी रहे, कांइ समजती नथी. श्चा वगर हुं हलावी खड़श. तुं लाख वार वारीश तोपण हुं तेने जोडीश नहीं. जोतुं तो तारा सोगन जे. ॥ ए ॥ जेनाथी कान तुटी जाय ते सोतुं शा कामनुं. श्चापुत्रने कोइ बीजुं ठेकाणुं मह्युं नहीं के जे मारी साथे तान मांनी बेठो ? ॥ १० ॥

लाग्यो ए माथे हो जाणा यापना, एहनो ए प्रतीकार ॥ मो०॥ एम क हीने जन छाणी हो कंठे चंदने, ते करवालनी धार ॥ मो०॥ छ०॥११॥ जइने हाथे वलगी हो सासूने वहु, वमती श्रांसुनी धार ॥मो०॥ मारी छ पर छाणीहो बाइजी द्या, छापो ए प्राणाधार ॥ मो०॥ छ०॥ १२॥

अर्थ ॥ ए मारे माथे ठाणा थापवा लाग्यो ठे-तेनो जपाय तो आज ठे. एम कहीने ते चंदना कंठ ज-पर खड़ानी घार मुकवा लागी. ॥ ११ ॥ ते वखते आंसुनी घारा पाडती वहु आवीने सासुने हाथे वलगी पनी. हे बाइजी मारी जपर दया करी मने आ मारो प्राणाधार आपो. ॥ १२ ॥

की घुं एणे श्रविचार्यं हो हवे एम नही करे, जो होशे एहने खाज ॥ मोणा श्राखोचो तमे उंगु हो कोण करशे पढ़ी, श्रापणी नगरी नुं राज ॥मोणाञ्चण ॥१३॥ जोरो नवी चाखेहो को इए चंदनो, होवे जे होवणहार ॥मोणा वहु नुं कह्युं मान्युं हो सासुए तदा, परहीं करी तरवार ॥ मोण ॥ छण ॥१४॥

अर्थ ॥ तेणे ए काम अविचार्य कर्युं हो, जो तेने खाज हशे तो एम करशे नहीं माताजी, तमे छंडो विचार करीने जुवो के जो ते न होय तो पही आपणी नगरीनुं राज्य कोण करशे. ?॥ १३॥ चंदनुं जोर कांइपण चाखवानुं नहीं. जे अवानुं होय ते करे हे पही सामुए वहुनुं कह्यं मान्युं अने तरवार कंट उपरथी खड़ खीधी. ॥ १४॥

डंसीली निव मुके हो डंस नरेशथी, कीधो एक प्रकार ॥ मो० ॥ दवरक एक कीधो हो मंत्रयो मंत्रयी, वीरमितये तेणीवार ॥ मो० ॥ छ० ॥ १५ ॥



दोरोलइ बांध्यो हो कंठे चंदने, माये श्रति श्रविचार ॥ मो०॥ तेहथी नृप हुउं हो सुंदर कूकमो, श्रद्द श्रद्ध सरजणहार ॥ मो०॥ छ०॥ १६॥ अर्थ ॥ तो पण ए डंसीली वीरमतीए डंस मुक्यो नहीं. तरत एक दोरोलीधो श्रने ते वखतेज मंत्रथी

श्रथं ॥ तो पण ए इसीली वीरमतीए इस मुक्या नहीं. तरत एक दाराखाधा श्रन ते वखतज मत्रथं। मंत्री लीधोः ॥ १५ ॥ ते श्रविचारी माताए ते दोरो चंदना कंठ छपर बांध्योः ते वखते चंदराजा एक सुं-दर कुकडो थड़ गयोः श्रहा ! स्रष्टानी लीला केवी हें? ॥ १६ ॥

त्रीजी ए जाखी हो त्रीजा उद्घासनी, मोहन विजयेजी ढाल ॥ मो०॥ श्यागल थइ सुणजो हो श्रोता एकमना, चंद संबंध रसाल ॥मो०५०॥१७॥ श्रर्थ ॥ श्रीमोहन विजये स्ना त्रीजा उद्घासनी त्रीजी ढाल कही हे. हे श्रोतार्ड स्नागल तेनो रसिक सं-

अया श्रामाहन विजय आ त्राजा छहासमा श्राजा ढाल कहा है: हे श्राताछ । बंध श्रावशे, ते एक मने सांजलजो.॥ १९॥

॥ दोहा ॥

दीने पति थयो क्कडो, गुणावलीये जाम ॥ वीरमतिने विनवे, रुदती करी प्रणाम ॥ १ ॥ बाइजी थइ उतावलां केम खकारज कीथ ॥ नरटाली तिर्यंच्पणुं,मुज प्रीतमने दीथ ॥१॥

श्चर्य ॥ गुणावलीए पोताना पितने कुकडो श्रयेक्षो जोयो एटले तरत ते रुदन करती करती वीरमती-ने प्रणाम करी विनववा लागी। ॥ १ ॥ हे बाइजी, तमे जतावला श्रव्य श्चातुं श्चकार्य केम कर्युं? मारा पित-ने नर मटाडी तिर्येच् पणुं केम श्चाप्युं.? ॥ २ ॥

मानोमारी विनती,जुर्जं जगत् खरुप ॥ कहीए क्यांचे न सां जिल्यो, पक्तीरुपे जूप ॥ ३ ॥ यह नर समजण निव धरे, ते तो पंखी प्राय ॥ पंखी कीधे ते घणी, शी श्रिधिकाइ याय ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ तमे मारी विनित मान्य करो श्चने श्चा जगत्नुं स्वरूप विचारी जुवो. कोइ ठेकाणे कोइए रा-जाने पद्दी रुपे सांज्ञहयो नथी. ॥ ३ ॥ जे नर थइने समजण राखे नहीं ते प्राये करीने पद्दी जेवोज छे. तो पढ़ी तेने पद्दी करवाथी श्चिषक शुं छे? ॥ ४ ॥

> त्रूंडो जलो तोही नृपति, शस्त्रनही तोही सुर ॥ दंत नहीं तोपण दिरद, कोह्यो तोए क्रर ॥५॥ नृपने नररुपे करो, रोष निवारो मात ॥ श्रापण बेहुं जण वचे, एटली एह वसात ॥६॥

अर्थ ॥ जुंडो के जालो पण ते राजा कहेवाय हैं. शस्त्री न होय तो पण जे शूरवीर ते शूरवीर कहेवाय. दांत न होय तो पण हाथी दिरद (वे दांतवालो) कहेवाय अने कोही गयेल होय तोपण कूरा ते कूरा कहेवाय. ॥ ए ॥ हे माता, रोष होडी दो अने आ राजाने नररुपे करो. आपण बंनेनी वचे तेने आटली शिक्षा थड़ चुकी. ॥ ६ ॥

बाइजी तुमे वृद्ध हो, हुं तो न्हाने वेश ॥ कहेवुं तो घट तुं नथी, पण न करो संक्षेश ॥९॥ कहे सासु कहेरेवहु, खेती वात निवेड ॥ तुंपण कांहोय कूकमी, मुजने घणुं मत हेम॥७॥ श्चर्य ॥ दे बाइजी, तमे वृद्ध हो अने दुं तो नानी ढुं, तेथी तमने कदेवुं घटे नहीं, हवे आबो क्वरो करो नहीं ॥ ७ ॥ सासु ए कह्यं, अरे वहु, तुं वढ़ी आ वातनो निवेडो क्षे नहीं, तुं पण रखे कुकड़ी ज-इहा. मने वधारे हेडीहा नहीं ॥ ए ॥

ताम्रचूड करी चंदने, वहुनो वचन खवेख ॥ पहोती वीरमती घरे, ऐ ऐ विधिना खेख ॥ए॥

अर्थ ॥ आ प्रमाणे चंदने कुकडो बनावी अने बहुनां वचनने छवेखी ते वीरमती पोताने घेर चादी गइ. आहा, विधिना खेख केवा हे? ॥ ए ॥

॥ ढाल चोश्री ॥

अर्थ ॥ पठी राणी गुलावलीए ते कुकडाने पोताना खोलामां लीधो अने गदगद कंठे मर्मनां वचन क-हेवा लागी. अरे राजा, जेना मस्तक जपर शिलावालो रातो मुगट विराजतो हतो, तेना मस्तक जपर देवे अत्यारे राता चर्मनुं ठोगुं कर्यु १॥१॥ हे राजा, जे शरीर जपर बारीक जरीआनी वाघा पेहेरवामां आव-ता ते शरीर नग्न ठे अने जपर पीठाना पांखडा वींट्या ठे. जे कटी जपर तगतगती तरवार बांधता, ते ठेकाणे हवे नखना आंकडामां शस्त्रोनी शोजा आवी ठे १॥ १॥

जे रिव जिंग हो लाल ॥ जागता सेजथी राग ॥ जागता कीधा रे दैवे पाठ ली रातकी ॥ करताजे मीठांहो लाल ॥ जोजन जावताराज ॥ श्रवकर जो तारे हो श्रा जुर्ज कोइ वातडी ॥३॥ जिणे मुख कहेता हो लाल ॥ श्रक्र परवका राज ॥ तिणे मुख कहेता रे कीधा कूकूकूकडू ॥ बेसता खामी हो लाल ॥ तखत जकावने राज ॥ ते केम कीधा रे दैवे बेसतां जकडु ॥ ४॥

श्चर्य ॥ जे सूर्योदय वखते राय्या जपरथी जागता ते श्चत्यारे दैवे पाछली रात्रे जागता कर्या. जे मीठां जावतां जोजन करता ते श्चत्यारे जकरडामांथी जोजन शोधे हे. जुवो श्चा केवी वात! ॥ ३॥ जे मुख-मांथी परवडा श्चश्चरो बोलता ते श्चत्यारे मुखयी कुकुकुकु एवा शब्दो बोले हे. जे रत्न जडित तस्त ज-पर बेसता, तेमने श्चत्यारे दैवे जकरडा जपर बेसतां कर्या हे. ॥ ४॥

हेम हिंडोबे हो लाल ॥ जे नर हिंचता राज ॥ ते नर हिंचतारे कीधा देवे पांज रे ॥ एम विखपंती हो खाल ॥ राणी मुरठाणी राज ॥ नयणे श्रांसु रे मोटागिरि जरणा जरे ॥ ५ ॥ जायत कीधी हो लाल ॥ सहीयें समीर



थी राज ॥ वचने मीठे रे लागी ते समजाववा ॥ दोष न कोइनो हो लाल ॥ दोष ए करमनो राज ॥ फोगट खाने कोइने खाल चढाववा ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जे नर सोनाना हींडोखा जपर हिंचता हता, ते नरने दैवे पांजरामां हींचता कर्यो हे. श्चा प्रमाणे विद्याप करती राणी नेत्रमांश्री पर्वतना करणानी जेम मोटां श्चांसु पाडती मूर्जी पामी गइ. ॥ ५॥ सखी ए पवन नाखी तेने जायत करी. पढ़ी ते मीठां वचनथी समजाववा खागी. हे राणी, श्चामां कोइनो दोष नथी; कर्मनो दोष हे. तो बीजाने फोगट श्चाख शामाटे चडाववुं. १॥ ६॥

शुं करे ताहरे हो खाल ॥ वखते न ठाज्युं राज ॥ देव घ्यटोरो रे कहीचे कोइनुं न सांसहे ॥ शुं करे माता हो खाल ॥ वहु पण शुं करे राज ॥ खितनुं वातु रेते तो कोण कोइने कहे? ॥॥ पूरव जवनो हो खाल ॥ संचि त जे कोइ राज ॥ इह जवे प्राणी रे राणी एम सुख छु:ख जोगवे ॥ जे जिन राया हो खाल ॥ कमें नचाया हो राज ॥ जेणे जेम की धां रेते तो तेम हीज योगवे॥ ।॥

श्रर्थ ॥ हे राज, तेमां तमे शुं करो ?ते वखते ठाज्युं नहीं. दैव श्रटारो ठे ते कोइनुं सहन करी शकतो नथी. माता शुं करे श्रने वहु पण शुं करे ? जे वात खखी होय ते कोण कोइने कहेवा जाय.? ॥ ७ ॥ हे बाइ ! पूर्व जवना जेवां संचित होय ते प्रमाणे श्रा जवे प्राणी सुख छःख जोगवे ठे. जुवोने श्रीतीर्थंकरोने पण केम नचाव्या ठे ! जेणे जे कर्या ते तो ते जोगवे ठे. ॥ ८ ॥

ज्यांलगी रहेशे हो लाल ॥ कुशल ए कूकमो राज ॥ त्यांलगे ताहरो रे हे वालेसरु ॥ एम मनवालो हो लाल ॥ समय निहालो राज ॥ सासु सरली रे माये हे वालेसरु ॥ ए ॥ एम जे कहो हो लाल ॥ सासुजी जाणशे राज ॥ तो वली करशे रे कांइ आवीने नवुं ॥ रहो आण बोल्या हो लाल ॥ पालो ए कूकडो राज ॥ हवे न जणावोरे कोइने यवुं जे हतुं ययुं ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ ज्यांत्रगी आ कुकडो कुशल रहेशे त्यांसुधी तमारा चंदराजा कुशल हे एम मन वालो अने समयने अनुसरी वर्त्तो. तमारे माथे सासु जेवा वालेसरी हे. ॥ ए॥ जो तमे आम क्षेश करोहो, ते जो सासुजी जाएशे तो ते आवी वली कांइ नवुं करशे माटे आए बोड्या रहो अने आ कुकडानुं पालन करो. कोइने आवात जएावशो नहीं. जे थवानुं हतुं ते थयुं हे.॥ १०॥

जिनजी ए जाषी हो खाख॥ कर्म विचित्रता राज ॥ ते केम होवे रे कोइ थी करीने श्रन्यथा॥ थयो जेहवाब्हा हो खाख॥ बाइजीनी श्रागखे राज ॥ फखतमे पाम्या रे तेवा तिम योग्ये यथा ॥११॥ए कोण टाखे हो खाख॥ कीधी जे कूकनो राज ॥ किमपि न चाखे रे जोरो दैवशी श्रापणो ॥ हैडे खगाडी हो खाख॥ एहने राखवो राज॥ ए केम खागे रे कोइने बाइ श्रखखामणो ११ श्रर्थ ॥ श्रीजिन जगवंते कर्मनी विचित्रता जांखी हो, ते कोइनाथी श्रन्यथा केम थाय? तमे बाइजी-नी श्रागल वधारे व्हाला श्रया तो तेनुं तमे योग्य फल पाम्या हो. ॥ ११ ॥ हवे श्रा राजाने कुकडो कर्यों तेने कोण मटाडी शके ? दैवनी साथे श्रापणुं कांइ जोर चाले नहीं. हवे तो श्रापणे ए कुकडाने हृदयनी साथे राखवो. हे बाइ, ए कोने श्रलखामणो लागे.? ॥ १२ ॥

हवणां जो करग्रुं हो खाख ॥ राजी जीजीने राज ॥ ते फरी करग्रे रे पहेखां हतो तेहवो ॥ एम समजावी हो खाख ॥ सखीए ग्रणावली राज ॥ सासूने नीसासारे नांखे डुंगर जेहवो ॥ १३ ॥ क्षणिक उठंगे हो खाख ॥ क्षण एक ठातीये राज ॥ क्षण एक राखे रे राणी हाथे क्रक्यो ॥ श्वान मंजारी हो खाख ॥ प्रकन्न तेहथी राज ॥ प्यारो राखे रे नारी निश्च दिन क्रकडो ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हे बाइ, जो आपणे हमणा तेने आजीजी करी राजी करीशुं, तो ते आ कुकडानो प्रथम हतो तेवो चंदराजा करी देशे. आ प्रमाणे सखीए गुणावलीने समजावी ते सासू उपर पर्वत जे वा नि सासा ना-खती हती. ॥ १३ ॥ राणी गुणावली ते कुकडाने क्रणमां उत्संगे अने क्रणमां अतीए राखती अने क्रणे पोताना हाअमां राखती हती. वली पोताना प्याराने श्वान अने मार्जारथी प्रज्ञन्नपणे राखी रात दिवस पोतानी पासेज राखती. ॥ १४ ॥

नवनव मेवा हो खाख ॥ जखदख वन फखराज ॥ श्रापे राणी रे चांचे दाडिमनी कक्षी ॥ त्रीजे उल्लासे हो खाख ॥ ढाख ए चोशी राज ॥ मोहन विजये रे जाखी आख शकी गखी ॥ १५॥

श्रर्थ ॥ राष्ट्री गुणावली नवा नवा मेवा, जल, दल, वनफल तेने श्रापती हती ते कुकडो पोतानी चां-चथी दारिमनी कलीचं लेतो हतो. श्रीमोहन विजये श्रा त्रीजा चल्लासनी चोथी ढाल कही, जे जाहाथी पण मधुरीहे. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

ताम्र चूरुने कर धरी, गइ वहू सासु पास ॥ वेठी पयप्रण मी करी, दीरघ जरी उसास ॥१॥ केम खावी ए डुप्टने, खेइ मुज खनुषंग ॥ राखपरो देखारुमां, मकर रंगमें जंग ॥ १॥

श्रर्थ ॥ वहु ते कुकडाने हाथमां खड़ पोतानी सासु वीरमती पासे श्रावी, सासुने पंगे पड़ी खांबो नी-सासो नाखी श्रागल बेठी.॥ १ ॥ वीरमती बोली-ए छुष्टने खड़ मारी पासे केम श्रावी? तेने दूर राख; मने बतावीश नहीं. रंगमां जंग न कर्य- ॥ २ ॥

> वाहालो हे तुजने हजी, राखे चंद समान ॥ वसी नहीं तु जने वहू, हजी लगण कांइसान ॥३॥ एहने तो पेहेला प्रथ म, कीधो हे तिर्थंच् ॥पण एहने जोतो खरी, घ्यागल करुं जे संच ॥४॥

> > www.jainelibrary.org

श्रर्थ ॥ हे वहू, शुं तने हजी ए वाह्हों खागे हे, तुं एने चंदनी जेम राखे हे. श्ररे, शुं तने हजी सुधी कांइ सान विद्यी नश्री! ॥ ३ ॥ हजु प्रथम में श्राने तिर्येचू कर्यों हे पण श्रागक्ष जे हजु करुं ते तुं जोतो खरी. ध

जोतुं मुखरु एहनुं, ए जोगवशे राज ॥ एम कीधाविण एहने, जोली न वसे लाज ॥५॥ उठतुं सेइ एहने, रखजे पींजरमांहि ॥ श्राणीशमां तु मुज कने, ज्यांलगी न कहुं त्यांहि ॥ ६॥

श्रर्थ ॥ तुं श्रानुं मुखतो जो, ए राज्य शुं जोगवशे! हे जोखी स्त्री, एम कर्या वगर तेने खाज वखशे नहीं. ॥ ए ॥ जा तुं एने खड़ जठीजा. तेने पांजरामां राख. ज्यांसुधी हुं कहुं नहीं त्यांसुधी एने मारी पासे खावीश नहीं. ॥ ६ ॥

> बेइ प्रीतम पंखीयो, गइ गुणावली गेइ ॥ सो वन पिंजरमां ठव्यो, सयल सजाइ बेइ ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ पत्नी गुणावली पोताना पंखी प्रियतमने लङ्ने घेर चाली गङ्. तेने सुवर्ण पांजरामां राख्यो. श्चने तेनी सघली रीते सार संजाल करे हे. ॥ ७ ॥

॥ ढाख पांचमी ॥ ॥ मोतीडानी देशी ॥

सोवन पिंजर जमीयो रतने, राख्यो वीहंगम तेमांहि जतने ॥ निश्चय होये जावी कहुं हुं सर्वने समजावी ॥ जल कंचनने कचोखडे पावे, खाये मीठाइ मेवा जेजावे ॥ नि० ॥१॥ क्रणक्रण कुंकुंमश्री पग धोवे, तिरहे कटाकें पीडमुख जोवे ॥ नि०॥ खोक्षे हुं राखीश करीने जीजी, विपदेतजे ते नारी बीजी ॥ नि० ॥१॥ अर्थ ॥ रत्तथी जमेला सुवर्णना पिंजरमां ते पक्षीने यतनाथी राख्यों, सर्वने समजावीने कहुं हुं के,

अश्रे ॥ रत्तथी जमेदा सुवर्णना पिंजरमां ते पद्दीने यतनाथी राख्योः सर्वने समजावीने कहुं बुं के, जावी होय ते अवस्य बने हो. ते पद्दीने सुवर्णना पात्रे जस पाय हो अने जे जावे ते मेवा मीहाइ खबरावे हो. ॥ १ ॥ गुणावसी इत्ले इत्ले पद्दीना पग कुंकुमथी धोती हती अने तीरहा कटाइत्थी प्रियतमनुं मुख जोती हती. ते बोसी—नाथ, हुं तमने खोदामांज राखीशः जे विपत्तिमां पतिने होडी दे ते बीजी स्त्री हुं तेवी नथी. ॥ १ ॥

तुं मुज प्राणजीवन पीयुप्यारो, मूकीश नही श्रधक्तण तुंज न्यारो ॥ नि० ॥ पंखी थयानी न धरशो शंका, सरजित जो हे तो देशुं ढंका ॥ नि० ॥ ३ ॥ मोटा माथे श्रावी पडे हे, विपद् संपद्मां श्रावी नमे हे ॥ नि० ॥ रवि शशी प्रहण जाणे जगसारा, पण नाण्या किणे गणती तारा ॥ नि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तुं मारो प्राण जीवन अने प्यारो हुं, तने अर्ध क्षण पण जुदो मुकीश नहीं. हे नाथ, तमे पक्षी थइ गया ते विषेनी शंका राखशो नहीं. जो दैव इहा हशे तो आपणे विजय डंको दश्युं. ॥ ३ ॥ मोटा होय तेने माथे विपत्ति आवी पडे हे अने ते संपत्तिमां आवी नडे हे. सर्व जगत् जाणे हे के, सूर्य चंड्नुं अह्ल याथ हे, तारानुं ग्रहण थतुं नथी. ते गणत्रीमां पण नथी.॥ ४॥

नणदीवीर हैये मत हारो, करशुं लीखा प्रजुने संजारो ॥ नि० ॥ एम एम ग्रणावली करत विखासा, कूकडराजने देइ दिखासा नि० ॥ ५ ॥ जुःखनी दाधी नही मन जुजे, पिंजर देहरासर परे पूजे ॥ नि० ॥ जेम जेमते पांखो फरकावे, तेम तेम राणी दोडी श्रावे ॥ नि० ॥ ६ ॥

श्रर्थ ।। हे नएंदना वीर, हृदयमां हारी जशो नहीं. प्रजुने संजारजो श्रापणे श्रागत दीक्षा करीशुं. श्रा प्रमाणे गुणावली कुकड राजने दीक्षासा श्रापती श्रने मनमां खेद करती हती. ॥ ५ ॥ राणी गुणावली श्रा छःख्यी बीजे मन राखती नहीं. ते पद्दीना पांजराने देरासरनी जेम पूजती हती. ज्यारे ते कुकडो पांखो फरकावतो त्यारे तरत ते राणी दोडी श्रावती हती. ॥ ६॥

सार संचाल करे क्षणक्षणमां, डंडन राखे डाहापणमां ॥ नि०॥ प्रीतम तनना ग्रणसंचारे, तेम वली पाहुं मनने वाले ॥ नि०॥ ७॥ एक दिन मुनिजन श्रंगण श्राव्या, राणीए मोदक खद्द वोहराव्या ॥ नि०॥ कुकक पिंजरमांहि दीठो, कहे उपदेश तपोधन मीठो॥ नि०॥ ७॥

अर्थ ॥ क्षे क्षे तेनी सार संजाब बेती हती. पोताना ते विषेना डाहापणमां छंछप राखती नहती. ते वारंवार प्रियतमना शरीरना गुणने संजारती स्त्रने वखी पोतानुं मन पण पाइं वाखती हती. ॥ ७ ॥ एक दिवसे कोश् मुनि तेना स्त्रांगणामां स्त्राव्या. राणीए तेने खानु वोराव्या. तपस्वी मुनिए कुकडाने पांज-रामां जोयो एटखे ते मधुर उपदेश स्त्रापवा खाग्या. ॥ ० ॥

शुं ए पंखी श्रन्याये चाह्यो, जे एम खद्द पिंजरमां घाह्यो ॥ नि० ॥ तुमे तो कंचन पिंजर परखो, एहने मनकारायह सरखो ॥ नि० ॥ ए॥ होमीचो बंधनश्री पद्दी, कोणए राखे कीटक जद्दी ॥ नि० ॥ प्रातः शमे हिंसक मुख जोवुं, ते तो सामुं सुकृत खोवुं ॥ नि० ॥ १० ॥

श्रर्थ ।। श्रा पद्दी सा श्रन्याये चाल्यो हतो के तेने खड़ पांजरामां नाख्यो है? तमे श्रा सुवर्णनुं पांजरू जुवो हो, पण ते पद्दीने ते कारागृह सरखुं है. ॥ ए॥ ए पद्दीने बंधनमांश्री होडी मुको. कीडाने जहाण करनारा ते पद्दीने कोण राखे? श्रावा हिंसक प्राणीनुं मुख सवारे जोवुं ते तो सामुं सुकृत खोवा जेवुं है. १०

कहे राणी मुनिवात घणी है, नही पक्षी ए घरनो घणी है ॥ नि०॥ ताम्रशेखर मुज सासुए कीधो, पामी हुं पूर्वे जेवो दीधो ॥ ११ ॥ राखु हुं पिंजरमांहे तेथी, श्रवर श्रर्थ शो सरवो एहथी॥ नि०॥कही हितनीवात तमे पंखी संपेख्यो, पण मुजश्री केम जाए छवेख्यो॥ नि०॥१श॥

श्चर्य ॥ गुणावली बोली-मुनिराज ! ए वात मोटी है। आ पक्षी नधी पण आ घरनो धणी है। मारी सासुए तेने कुकड़ो करी दीधो है। जेबुं में पूर्वे आप्युं तेबुं हुं पामी हुं। ॥ ११ ॥ तेथी हुं तेने पांजरामां राखुं हुं। एनाथी बीजो मारे शो श्चर्य सरे है। तमे तो पक्षीने जोइ हितनी वात कही, पण माराश्री एनी छपेका केम श्राय? ॥ १२ ॥

मुनि कहे बाइ श्रमे निव जाखो, फोगट पंखी संशय श्राएयो ॥ निवा करवुं ए वीरमतीने न घटे, एम निज श्रंगजने जे विघटे ॥ निवा १३॥ चंदने चंद समान कहीजे, एहने एवी श्रवस्था न दीजे ॥ निव ॥ ताह राशीख प्रजावे बाइ, रुदन म कर हवे थाशे जलाइ ॥ निव ॥ १४॥

श्चर्य ॥ मुनिए कहां, बाइ, श्चमारा जाएवामां नहीं तेथी श्चमने श्चा पद्दी हे एवो फोगट संशय श्चा-व्यो. वीरमतीने तेम करतुं घटे नहीं. तेने तो पोताना श्चंगजनी जेम राखवो जोइए ॥ १३ ॥ श्चाने तो चं-दना जेवाज गएवो. तेने एवी हलकी श्चवस्था श्चापवी नहीं. हे बाइ, तुं रुदन कर नहीं, तारा शीयलना प्रजावधी बधुं सारुं थशे. ॥ १४ ॥

पंखी थयो नृपपद पलटाणुं, श्रद्ध श्रद्ध कर्म न चूक्यो टाणुं ॥ नि०॥ रिविश्विश्व हरिहर इंड श्रसिद्धा, कर्में सहुने सीधा कीधा ॥ नि०॥१५॥ कर्म करें ते न करे कोइ, जावी न जाए कोइश्री धोइ॥ नि०॥ ए श्रम शिक्षा हैडे धरजो, एहनो श्रर्थ सरे तेम करजो ॥ नि०॥ १६॥

श्चर्य ॥ राजा पक्षी श्वरं गयो, राजपद पत्तटाइ गयुं. श्वहा, कर्म केंबुं हे, ते पोतानुं टाणुं चुकतुं नथी. सूर्य, चंज्ञ, विष्णु, शंकर श्वने इंज्ञ जेवा प्रख्यात देवतार्जने पण कर्मे सीधा कर्यो हे. ॥ १५ ॥ जे कर्म करे ते कोइश्री कराय नहीं: जावी कोइनाश्री धोवाय नहीं; श्वा श्वमारी शिक्षा हृदयमां धारण करजो श्वने श्वा पक्षीनो श्वर्थ सरे तेम करजो. ॥ १६ ॥

एम कही संयमधारी विलया, राणीनां डुःख दोहग टिलयां ॥ निण्॥ त्रीजा जल्लासनी पांचमी ढाल, मोइन विजयनां वचन रसाल ॥निणारणा

श्चर्य ॥ स्त्रा प्रमाणे कहीने ते संयम धारी मुनि पाठा वहवा. तेमना छपदेशश्री राणीनां छःख टली गयां. स्त्रा त्रीजा छहासनी पांचमी ढाल पूरी श्रइ. जेमां श्रीमोहनविजयनां वचन रसिक हे. ॥ १५॥

॥ दोहा ॥

ते जब बोबे कूकनो, उंचे स्वर सुप्रजात ॥ तव राणी जागी कहे, करती श्रांसु पात ॥ १ ॥ श्रंतर जामी मुरगडा, घनी घनी म पुकार ॥ ताहरे मन कांइ नही, पण मुजे वज्र प्रहार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ ते कुकडो ज्यारे प्रजातकाले जंचे स्वरे बोलतो, त्यारे राणी गुणावली जागीने श्चश्चपात करती श्चा प्रमाणे कदेती हती. ॥ १ ॥ हे मारा श्चंतर्यामी मुरघा, तुं घडीए घडीए पोकार कर नहीं. तारे मन तो कांइ नथी, पण मने ते वज्रना प्रहार जेवा लागे हे. ॥ १ ॥

कायर यह कूकू कदी, तें न कह्यो एक वार ॥ तो कां इवे मुख उचरे, जीवन प्राणाधार ॥ ३ ॥ रयणी रमता रस जरी, प्राणे-शर पर्यंक ॥ तव कूकन कोइ बोलतो, लागतो तुम विषडंक ॥४॥ श्चर्य ॥ हे नाथ, तें कोइवार कायर यहने श्चाम कुकु जेवा पोकार कर्या नथी, तो हे जीवन प्राणाधार, हवे श्चाम मुख्यी केम पोकार करो हो?॥ ३॥ हे प्राणेश, ज्यारे तमे रसयी पखंग छपर रजनीमां रमता हता, ते वखते जो कोइ कुकडो बोखतो, तो तमने ते विषना दंश जेवो खागतो हतो.॥ ॥॥

दैवेते तुमने कर्या, सरखा जरता साद ॥ रखे जगमां कोइ करो, खिखत खेखथी वाद ॥ ५ ॥ ए स्वर प्रिय होतो हशे, तुम मा-ताने कान ॥ पण मारे मन साहीबा, स्वर ते सरने मान ॥६॥

श्चर्य ॥ ते दैवे तमने तेवा सरख साद करता करी दीधा श्चहा, जगत्मां खखेखा खेखनी साथे कोइपण वाद करशो नहीं. ॥ ५ ॥ श्चा तमारो स्वर तमारी माताने कानमां प्रिय खागतो हशे, पण हे साहेबा मने तो जाखाना जेवो खागे हे. ॥ ६ ॥

एम निश दिस गुणावली, जूरे वाही प्रेम ॥ समजे घणुं ए कूकमो, श्रवस पड्यो करे केम ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ एम गुणावली रात दिवस प्रेममां जुरती हती. कुकडो बंधु ते समजतो हतो पण शुं करे?ते परवश पडयो हतो. ॥ ७ ॥

॥ ढाख ६ ठठी ॥

पेहेरण दखणी चीर ठंढण पीली पामरी मारा लाल ॥ ए देशी ॥
एक दिन पिंजर खेइ वेठीसा गोखडे ॥ मारा लाल ॥ प्रीतम नगर स्वरूप ते
जेम नजरे पडे ॥ मा० ॥ जे जेम बोले लोक ते कूर्कट सांजले ॥ मा०॥ निरखे
राणी सन्मुख तेम आंसुढले ॥ मा० ॥ १ ॥ कहे चौटा मांहे लोक वातो एम
परवडी ॥मा०॥ पेहेलां आपणी नगरी दीसती फुटडी ॥मा०॥ हवे तो आजानी
आजा दीसे ठे विसंस्थली ॥मा०॥ राहू थकी मुकाणी जेम शशीनी कला ॥मा०॥१॥
अर्थ ॥ एक दिवसे राणी पोताना पतिने नगरनुं स्वरूप नजरे पडे तेवा हेतुथी पहीनुं पांजहं लइ
गोले बेठी हती. ते जोइ लोको जे बोलता ते पही सांजलतो अने राणीना मुख सामु जोइ आंसु पाडतो
हतो. ॥ १ ॥ लोको चौटामां चालता आ प्रमाणे खुझी वात करता हता के, प्रथम आपणी नगरी घणी
सुंदर लागती हती. हालतो आजानगरीनी आजा (शोजा) राहुथी मुक्त अयेला चंजनी कलानी जेम
शिचिल देखाय ठे. ॥ १ ॥

नजरे न श्राव्यो कोइने नगरीनो धणी ॥ मा० ॥ ए तो दीसे वे वात कोइक जाण्या तणी ॥ मा०॥ कहे एक एकने वातते कानमां दूकमो ॥मा०॥ कीधो वे चंदने वीरमती ए कूकमो ॥मा०॥३॥ देखीए चंद देदार प्रजा जाग्य कयां थकी ॥ मा० ॥ निसुणे कुक्कड चंद इसी नगरी वकी ॥ मा० ॥ नृप स्तुति मातानी निंदा नर नारीए कही ॥मा०॥ खोक तणा मुख श्रागल गलणुं तो नहीं ॥मा० ॥श॥ श्रार्थ ॥ श्रापणी नगरीनो धणी कोइनी नजरे श्रावतो नथी. श्रा वात तो जाण्या जेवी वे वखी कोइ



चंदराजानो रास.

कोइना कानमां नजीक श्रावी कहे हे के, वीरमतीए चंद राजाने कुकड़ो बनाव्यो है. जुवो श्रा रह्यो ॥३॥ जुवो श्रा चंदना देदार, प्रजाना जाग्य सारां नथी. श्रा प्रमाणे चंद राजा नगरना लोकोनी वातो सांजले है. तेमां नर श्रने नारी राजानी स्तुति श्रने मातानी निंदा करे हे. लोकोने मोढे गलणुं बंधाय नहीं. ॥॥॥

गंचु जोवे लोक नृपतिना घर जणी ॥ माण ॥ दीगो कुक्कम रूप पंजर मांहि आफणी ॥ माण॥ कही कही चंद नरेश, सहू प्रणिपति करे ॥ माण॥ तेम तेम पंलीनां नयण यकी आंसु करे ॥ माण॥॥॥ वीरमतीये वातडी सांजली एहवी ॥ माण॥ आवी दोडी तुरत वेगी हती जेहवी ॥ माण॥ रे रे वहु तुं का बेगी शुं गोलमें ॥ माण॥ क्रकटने एम केम राखे वे जोलमें ॥ माण॥ ६॥

श्चर्य ॥ द्योको राजाना घर तरफ जंचु जुवे, त्यां पांजरामां राजाने कुकडा रूपे जोयो. सर्वे द्योको चंद राजा एम कही जेम जेम प्रणाम करे तेम तेम पद्यीनां नेत्रमांथी श्चांसु पक्तां जाय हे. ॥ ५ ॥ श्चा वात वीरमतीए सांजदी एटले ते तरत ज्यां गुणावली बेटी हती त्यां दोडी श्चावी. श्चरे, वहु, तुं गोखमां शुं बेटी हुं? श्चने श्चा कुकडाने श्चाम जोखममां केम राखे हे ? ॥ ६ ॥

पंखीने जोतुं राखे कोइ दिन जीवतो॥ माणा तो तुं नकरीश कहुं हुं पुरमांहे हतो॥ माण॥ हानी वात प्रकाशता शो फल पाइए॥ माण॥ जोली श्रापणो गोल चोरीने खाइए॥ माणाणा श्राज पढी वातायन पिंजर जो धर्युं॥ माणा तो तुं जाणीश बापनी तुं ताहरुं कर्युं॥ माण॥ गुदरुं हुं एकवार हवे गुदरीश नही॥ माण॥ जो एहनी कोइ श्रागल वातडी कही॥ माण॥ गणा ।।

श्चर्य ॥ जो तुं पद्दीने कोइ दिवस जीवतो राखवा धारती होय तो तेने नगरीमां उतो करीश नहीं. उनी वातने प्रकाश करवाथी शुं फल मले ? श्चरे जोली स्त्री श्चापणो गोल श्चापणेज चोरी खाइए. ॥ ७ ॥ जो श्चाज पठी तेनुं पांजरूं गोखमां राखीश तो श्चरे बापडी, तारु कर्युं तुं जाणीश. श्चाज तो हुं एकवार दर गुजर करुं हुं पण हवे दरगुजर करीश नहीं. जोजे कोइनी श्चागल श्चानी वात कहेती! ॥ ए ॥

मत बतलावे एहने चंद इशुं कही ॥ मा०॥ वात न पुठीए जिए वाटे जावुं नहीं ॥ मा०॥ एम कीघे तुज श्ररथ सरे नही मोकले ॥ मा०॥ जेम दव नही उल्लाय ठांटे मुख कोगले ॥ मा०॥ ए ॥ जो वालो होये एहतो जूषण पेहे-रावीए ॥ मा०॥ पण लोकोनी नयणे घणुं न देखाडीए ॥ मा०॥ एम कहीने वीरमती मंदिर गइ॥ मा०॥ चंद तणी राणीने चित्त धीरज थइ॥ मा०॥१०॥

श्चर्य ॥ श्चा चंद हे एम कही कोइने बताबीश नहीं. जे बाटे जाबुं न होय तेनी बात पुछवी नहीं. एम कहेवाथी तारो श्चर्य सरसे नहीं. मुखना कोगला हांटवाश्ची दावानल जेलवाय नहीं. ॥ ए॥ जो तने ए बाहाखो होय तो तेने श्चाज्रवणो पेहेराबीए पण लोकोनी नजरे घणुं देखाडीए नहीं. श्चा प्रमाणे कहीने वीरमती पोताने मंदिर गइ श्चने चंदनी राणीना मनमां धीरज श्चावी. ॥ १०॥

पेहेराव्यां आजरण पंखीने शोजतां ॥मा०॥ वारणे कीधी पीछने छपर खोजता ॥ मा० ॥ एम निशदिन करे कांता पीछ प्रतिपालना ॥ मा० ॥ जेम गुलाबनी मधुकर करे नित चालना ॥ मा० ॥ ११ ॥ चाले जगत् मंग्राण सकल आशा-वढे ॥मा०॥ आठे मासे चातक मुख जल लव पने ॥मा०॥ अनलाना इंडा जे हते आशाए वधे ॥ मा० ॥ आशा जाल विशाल बंधाणी हे बधे ॥ मा० ॥ १२ ॥

श्चर्य ॥ पढ़ी गुणावलीए ते पद्दीने शोजतां आजूषणो पेहेराव्यां, अने पित जपर लोजाइने वारी गइ. आ प्रमाणे जेम जमरो नित्य गुलाबनी पालना करे तेम ते कांता पोताना पितनी प्रतिपालना करती इती. ॥ ११ ॥ आ जगत्नुं मंमाण आशा जपर चाले हे. आशाश्री रहेला चातक पद्दीना मुखमां आह मासे जलनुं बिंडुं पमेहे अने अनला जातना प्राणीना इंमा आशाश्रीज वधे हे. एवी विशाल आशा जाल बधे बंधाणी है. ॥ १२ ॥

खोपे नही सासूनुं वचन गुणावखी ॥ मा० ॥ बीहे रखे मन मांही कांइ करती वखी ॥ मा० ॥ तेमज चने सहकार तेमज नज श्रित क्रमे ॥ मा० ॥ सासु वहु खगराज त्रिहुं स्वेद्या रमे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवे कौतुक क्रोडते देश विदेशना ॥ मा० ॥ निरखे सयस स्वरूप ते नवनव वेषना ॥ मा० ॥ राणी सासुनी बीके न धुके ताकडो ॥ मा० ॥ जोगी वश जेम पडीयो नाचे मांकको ॥ मा० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ गुणावली सासूनुं वचन लोपती नहीं श्चने रखे ते कांड् बीजुं करे तेम मनमां जय राखतीहती. ते सासू, वहु श्चने पद्यी-ए त्रणे पेला श्चाम वृद्ध जपर चडी श्चाकाश जेलंघी खेलाए रमतां हतां. ॥१३॥ तेज देशविदेशना कोटी कौतुको जोतां हतां श्चने नवीन नवीन वेषना स्वरूपने तेज निरखतां हतां. राणी गुणावली जेम मदारीने वश श्रयेलो मांकको नाचे तेम सासुनी बीकथी वर्तती श्चने ताकको चुक्ती नहीं.१४

शुंकरे चंदनी नार सासुने वश पनी ॥ मा०॥ पिंजर पण निव मूके श्रांतमो एक घनी ॥ मा०॥ एम गुणावली चंद नृपति दिन निगमे ॥ मा०॥ मांड्यो तप सुपवित्र जेणे छःख उपशमे ॥ मा०॥ १५ ॥ इवे जिव निसुणो प्रेमला खष्ठीनी कथा॥ मा०॥ कोइ वचे व्याघात न करशो सर्वथा ॥मा०॥ वठी त्रीजा उद्घासनी ढाख जली कही ॥मा०॥ मोहन विजये जेहवी शास्त्र थकी लही ॥मा०॥१६॥

श्चर्य ॥ चंदनी स्त्री शुं करे, ते तो सासुने वश पडी हती. ते पक्षीना पांजराने एक घमी पण श्वतगुं राखती नहीं. एवी रीते चंद राजा श्रमे गुणावली दिवस निर्गमन करतां हतां. श्रमे जेथी पोतानां शुःख जपशमे तेवां पवित्र तप करतां हतां. ॥ १५ ॥ हे जन्य प्राणीलं, हवे पेली प्रेमलालक्षीनी कथा सांजलो कोइ वचमां व्याघात करशो नहीं. श्रा त्रीजा लक्षासनी छठी लक्षम ढाल श्रीमोहनविजये जेवी शास्त्रश्री जाणी तेवी कही हे. ॥ १६ ॥



चंदराजानो रास-

॥ दोहा ॥

चंदे परणी प्रेमला, विमल पुरीए जाय॥ सिंहल शीले श्रावियो, श्राजा श्राजा राय ॥ १ ॥ हिंसके वारी प्रेमला, खाजी श्रावी गेह ॥ मनमें जाणे नाहले, सहितो दीधो बेह ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ चंदे परऐक्ती प्रेमला विमलपुरीमां रही अने सिंहल राजानी शीखलइ आजापति चंद पोतानी आजानगरीमां आव्यो. ॥ १ ॥ हिंसक मंत्रीए वारेली प्रेमला लजाश्री घरमां जरु बेठी अने तेणीए मनमां जाएयुं के जाऐ, पतिए मने बेह दीधो. ॥ १ ॥

> जब सागी वेसा घणी, जोइ घणीए वाट ॥ नाव्यो कंत गयो तजी,घणा जसंघी घाट ॥३॥ हजीयन श्राव्यो वस्नहो,गयो गसंती रात ॥ बाजी बाजीगरतणी, खेसी करी श्राखीयात ॥ ४॥

श्चर्य ॥ पित फरीवार श्चावतां वेदाा घणी यइ. तेणीए घणी वाट जोइ पण स्वामी श्चाव्यो नहीं. तेथी तेणीए धार्यु के तेतो घणो दूर गयो. ॥ ३ ॥ प्रेमदा चिंता करवा द्यागी के, हजु कांत श्चाव्यो नहीं,जरूर ते मारी साथे बाजीगरनी बाजी खेदीने श्चा गदाती रात्रे चाहयो गयो, श्चने तेणे अख्यात राखी. ॥ ४ ॥

जग्यो हतो विमल पुरी, सोलकलाये समेत ॥ चंद गयो घर श्रापणे, न कह्यो कोइ संकेत ॥५॥ एम श्रालोचे प्रेमला, हिंसक मंत्री ताम ॥ कनकध्वज कुंवर जणी, मुक्यो कुंवरी धाम ॥ ६॥

क्रर्थ ॥ जे चंद (चंड) क्या विमलपुरीमां सोल कलाए जग्यो हतो, ते पोताने घेर चाहयो गयो तेणे कोइनी क्यागल संकेत पण कह्यो नहीं.॥ ए ॥ प्रेमला क्या प्रमाणे विचारती हती, तेवामां हिंसक मंत्रीए पेखा कनकथ्वज कुंवरने ते कुमारीना घरमां मोकहयो ॥ ६॥

> त्रीतम निरख्यो प्रेमला, लहीए आवंत ॥ तव सन्मुख आवी वही, जुए तो ते नही कंत ॥॥ तव लही तेहने कहे,त्रूलो मुज आगार ॥ पाठली रात परोकीये, कीए ए आवणहार ॥ ७॥

श्चर्य ॥ प्रेमखाए ते श्चावता प्रियतमने जोयो एटखे ते सन्मुख श्चावी. ज्यां बराबर जुवे त्यां ते पोतानो कांत नश्री एम जाएयुं. ॥ ७ ॥ तत्काख प्रेमखाए कह्यं, तुं कोएडो ? श्चने पाडखी रातने परोढीए तुं घर जुड़यो खागे डे. ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

इरणी जव चरे लखना ॥ ए देशी॥

कुष्टी कहे इए मंदिरे खलना ॥ कोइ नो हो इहां नही पग फेर, जुर्डगिति कर्मनी ॥ खण्॥ इहां तो पवन न संचरे ॥ लणा कीडीनेहो पए लागे हे वार ॥ जु० ॥ १ ॥ एक घडीने श्रंतरे ॥ ल० ॥ यया दीसो हो तमे आएउल्लीत ॥ जु० ॥ तो श्रागल शीरालशो ॥ ल०॥ मुज हुंती हो शी वधती श्रीत ॥ जु०॥१॥ श्रर्थ ॥ कुष्टी बोट्यो-श्ररे लखना, श्रा मंदिरमां कोइनो पगफेर श्राय नहीं श्रर्हा तो पवन पए संचरे नहीं श्रने कीडीने श्रावतां पए वार लागे हे. श्रहा, कर्मनी गित केबी हो! ॥ १ ॥ श्ररे विया, एक घनीने श्रंतरे तमे श्रएउल्लीतां केम श्रइ गयां ? तो श्रागल तमे शी उल्लाए राखशो? मारी साथे प्रीति तमारी केवी रीते वधती श्रशे? ॥ २ ॥

दिसे हे फररी फुटरी ॥ ख०॥ पण दीसे हो समजण निवनार ॥ जु० ॥ आंगण आयो न उंखले ॥ ख० ॥ जे परण्यो हो रयणी जरतार ॥ जु० ॥३॥ एम कही बेठोढोलीए ॥ख०॥ ते कुष्टी हो घणो कपट जंडार॥जु०॥ सानाशी अखगीरही ॥ख०॥ जेम सुरजी हो वक देखी उदार ॥ जु० ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ हे स्त्री, तुं देखावमां घणी सुंदर खागे हे, पण तारामां समजण खागती नथी. जे जत्तीर रात्रे परण्यो ते आंगणे आव्यो तो पण तुं उंखखती नथी। ॥ ३ ॥ आ प्रमाणे कही ते कपटनो जंडार कोडी उंकतकथ्यज तेना ढोखीया उपर बेठो, एटखे ते प्रेमखा उठीने अखगी उजी रही अने जेम मोटा वरूषी गाय नासे तेम दूर रही। ॥ ४ ॥

बेहु गति जन्मत्त कुसुमनी ॥खणाचहे शिवने हो श्रयवा जूमिपात ॥जुण ते गति सतीना शरीरनी ॥खणापतिफरसे होके श्रिप्त संघात ॥जुणाए॥ कनकथ्वज कहे प्रेमला ॥खणा केम जजीहो एम मुह मचकोम ॥ जुणा श्रावी हमो कीडा करो ॥खणा जोमो मख्यो हो देवे संघोड ॥ जुणा६॥

श्रश्री ।। जेम धतुराना पुष्पनी वे गति हो, कांतो शिवने माश्रे चमे श्रथवा तो पृथ्वी उपर पडीजाय, तेम सती स्त्रीर्जनां शरीरनी वे गति हो कांतो तेने पित स्पर्शे श्रथवा तो मृत्यु वखते श्रिमनो समूह स्पर्श करे. ।। ए ।। कनकध्वजे कह्युं, हे प्रेमला, श्राम मुख मरडीने केम छन्नी रही? श्रावो हसो श्रने कीडा करो, दैवे श्रापणी जोड मेहेनते मेलवी हे. ॥ ६ ॥

ए यौवन दिन चारनो ॥ ख० ॥ प्राहुण्डो हो जाता नहीवार ॥ जु० ॥ प्रथम समागमे एवमो ॥ख०॥ निव की जे हो कलह प्रीतमधी नार ॥जु०॥॥ सोरठ नृपनी तुं पुत्रिका ॥ ख०॥ सिंहलनो हो हुं तो ढुं श्रधीश ॥जु०॥ ए तो मेलो तो मले ॥ ख० ॥ जो तूठे हो पूरण जगदीश ॥ जु० ॥ ७॥

श्चर्य ॥ श्चा चार दिवसनुं यौवन हे तेने मिजमाननी जेमजातां वार खागहो नहीं. प्रथम समागममांज स्त्रीए पोताना प्रियतम साथे श्चावको कखह करवो न जोहए. ॥ ७ ॥ तुं सोरहना राजानी पुत्री हुं श्चने हुं सिंहस देशनो श्चिपित हुं. श्चापणा बंनेनो मेखो जो इश्वर संतुष्ट श्वाय तोज मले ॥ ० ॥

एम कही जइ जब कर यहाो ॥ख०॥ तबत्रटकी हो कहे प्रेमखा बोख॥ ॥जु०॥ श्रखगो रहेने पापीया॥ख०॥ तुं तो दीसेहो कोइ फूटो ढोख ॥जु० ॥ए॥रूपे रूडे शुं एह वे ॥स्वण। तुज राख्यो हो केम जोंयरा मोजार ॥ जुण।
तुज जणते श्राणी नही ॥ स्वण ॥ जननीए हो कांश्र साज सगार ॥ जुण ॥१ण।
श्रर्थ ॥ एम कही ज्यां तेणे प्रेमसानो हाथ पकड्यो त्यां ते तरहोडीने बोसी-श्ररे पापी, तुं माराधी श्रस्तगो रहे, तुं तो कोश फुटेसा ढोस जेवो सागे हे. ॥ ण॥ तने शुं श्रावा रूडा रूपे केवी रीते जोंयरामां राख्यो हतो. तारी जननीने तने जणता सगारे सजा केम न श्रावी. ॥ १०॥

तुं कुष्टी कंत केहनो ॥ ख०॥ उठ इहांथी हो तुज तातना सुंस ॥ जु० ॥ रे मूरख तुजने थइ ॥ ख०॥ मोतीनी हो घुघरीनी हुंस ॥ जु० ॥ ११ ॥ बेठा माटे सेजमी ॥ ख० ॥ थावा वांठे हो पीछ एकखी ताक ॥ जु० ॥ सोवन कखश बेठा थकी ॥ख०॥ शुं होवे हो गरूडोपम काक॥जु०॥११॥

श्रर्थ ।। श्ररे ! तुं को की के को नो पित याय हे ? श्रहींश्री छहीजा. तने तारा बापना सोगन हे. श्ररे मूर्ख, शुं तने मोतीनी घुघरी छनी होंस श्रद्ध है ? ॥ ११ ॥ तुं शय्या छपर बेहो एटखे एकखी देखीने पित श्रवा इहे हे ? शुं कागडो सुवर्णना कखश छपर बेसे एटखे गरूड जेवो श्रद्ध जाय ? ॥ १२ ॥

राखे हे होंश मखातणी ॥ खणा जो तारो हो पेहेला श्राकार ॥ जुणा मुज प्रीतम जेणे जेल्ह्यो ॥ खणा ते जमजो हो श्रनंत संसार ॥ जुणा १३॥ एम रगजग करता थकां ॥ खणा तिहां श्रावी हो ते कपिलाधाव ॥ जुणा ते पण कहे रे रे वहु ॥ खणा केम उन्नी हो एम वदन हुपाव ॥ जुण ॥ १४॥

श्चर्य ॥ तुं मदावानी होंस राखे हे पण पेहेखा तो तारो श्चाकार जो. जेणे मारा पितने उंखन्यो होय, ते श्चनंत संसारमां जम्या करजो. ॥ १३॥ एम रगक्तग श्वती हती, तेवामां पेखी किपला नामे धान्य माता श्चावी. तेणे कहुं, श्चरे वहु, तुं मोढुं छपावीने केम जजी हुं.॥ १४॥

जेम त्रीतम कहे तेम करो।।खा।। रखे श्राणो होमाहरी कांइ खाज।।जु।। वर बीजो एम केम होवे ॥खा।। परणाव्यो होते एहवर राज ॥जु।। १५॥ प्रेमखा खाडी धावने ॥खा।। कहे बाइ हो एवात मकाढ ॥जु।। मकहो मिथ्या घरनी थइ॥ खा।। मुखनामां हो नविदिसती दाढ ॥ जु।। १६॥

श्रर्थ॥ जेम श्रा तारा प्रियतम कहे तेम कर्य. मारी शरम रखेराखती. बीजो वर शी रीते होय? में श्रा वर राजानेज तारी साथे परणाब्यो है. ॥ १५॥ प्रेमखा खक्कीए घाव्यने कह्यं, श्ररे बाइ, तुं श्रावी मिथ्या वात बोख नहीं. तुं श्रावी वृद्ध थइ मिथ्याशुं बोखे हे. तारा मोढामां दाढ पण देखाती नथी. ॥ १६॥

सुकुखनी जाइ जे सती ॥ख०॥ एम कीघे होते केम जोखवाय ॥ जु०॥ त्रीजा उल्लासनी सातमी ॥ ख०॥ ढाख जाखीहो मोहने रस खाय ॥ जु०॥१९॥ श्रर्थ ॥ सारा कुखमां जन्मेखी जे सती स्त्री होय ते एम मिथ्या कहेवाथी जोखवाय नहीं. श्रा त्रीजा उज्लासनी सातमी रसिक ढाख श्रीमोहन विजये कही हे. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

थयो प्रजात जग्यो तपन, ते किपला तेणीवार ॥ घरथी बाहिर निकल्ली, करती निपट पोकार ॥ १ ॥ धार्ज धार्ज कोइ जे, होवे विद्या पुष्ट ॥ थयो कनकध्वज कुमरनो, तनु सरोग सकुष्ट ॥ १॥

श्चर्य ॥ प्रातःकाल श्रयो श्चने ज्यारे सूर्य जग्यो ते वखते पेली किपला धाव्ये घरनी बाहेर नीकलीने मोटा पोकार करवा मांड्या. ॥ १ ॥ कोइ विद्याश्री पुष्ट होय ते वारे धाजो; श्चा मारा कुमार कनकध्वजनी काया कोडना रोगवाली श्वरु गइ. ॥ २ ॥

> श्राव्यो हिंसक धसमसी,तेम वही सिंहल जूप ॥ कुष्टीनी माता तेमज, सुतनो निरखे रूप ॥ ३ ॥ कोइ रडे, कोइ पडे, कोइ सरज करे शिश ॥ कोइ करणी ठाती हणे, श्रहो कपट जगदीश ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ ते सांजलतांज हिंसक मंत्री धसमसतो दोडी आव्यो. ते पत्नी सिंहल राजा श्चने कुमारनी माता श्चावी माता पण पुत्रनुं तेवुं कोकीयुं रूप निरखे हे. ॥३॥ कोइ रोवा लाग्युं, कोइ पडता मुकवा लाग्युं कोइ मस्तकने पहाडी धुलवालुं करवा लाग्युं श्चने हाश्चवके हाती कुटवा लाग्युं श्चहो प्रजु! कपट केवुं हे ॥॥॥

> माता रूदन करी कहे, उंचे स्वर उत्सूत्र ॥ ए विष कन्या पापि-णी, कांतुं परण्यो पूत्र ॥ ४ ॥ तात कहेरे जात तुज, किहां गयो ते रूप ॥ जे जोवाने श्रावता, घणा विदेशी जूप ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ कुमारनी माता जंचेस्वरे रुदन करती मिथ्या बोखी के, ऋरे पुत्र, श्चा विष कन्याने तुं क्यांथी पराष्यो ? ॥ ए ॥ पिता सिंहल राजाए कह्यं, हे वत्स, ते तारुं रूप क्यां गयुं ? के जे सुंदर रूपने जोवाने देश विदेशना घणा राजार्ज श्चावता हता. ॥ ६ ॥

ए कन्या श्रण जाणते, में परणावी केम ॥ वेरण पूरव जन्मनी, कनक विटंब्यो एम ॥ ७ ॥ उनी निसुणे प्रेमसा, पामे श्रच-रिज चित्त ॥ दीतुं नही तस जेवमुं, बोस्या मांहि वित्त ॥ ०॥

श्रर्थ ॥ श्ररे श्रावी कन्या में श्राजाणे केम परणावी? एतो पूर्व जन्मनी वेरण श्रइ. के जेणे श्रा कनक ध्वज कुमारने श्रावी विडंबना पमाडी. ॥ ९ ॥ प्रेमखा छत्री छत्री ते सांत्रखे हे श्रने मनमां श्राश्चर्य पानमेहे. तेमना बोखवामां तखना दाणा जेटखुंपण वित्त तेना जोवामां श्राब्युं नहीं. ॥ ए ॥

॥ ढाल ञ्राठमी ॥

थाहरां महोलां उपर मेह जबूके विजली हो लाल जबुके विजली ॥ ए देशी॥ पोहोती खबर तुरत कन्याना तातने हो लाल ॥ क०॥ श्रावी निरख्यो सकुष्ट तेणे जामातने हो लाल ॥ ते०॥ रोतां राख्या सर्व पुढे श्रवदातने हो लाल ॥ यु०॥ पण जोलो जूपाल पाम्यो न वातने हो लाल॥ न०॥१॥ कहे कन्यानो तात कुंवरने शुं थयुं हो लाख ॥ कुं० ॥ एहनुं सुंदर रूप कृषिकमां किहां गयु हो लाख ॥ क्र० ॥ कहे हिंसक कर जोडी कह्यानुं हे नहीं हो लाख ॥क०॥ देश पराये कोण सुणे अमतणी कही हो लाख ॥सु०॥श॥ अर्थ ॥ आ लवर तत्काल कन्याना पिताने पोहोची, तेपण त्यां आव्यो. ज्यां जुवे त्यां जमाइने कोडी के जोयो. तेणे वधांने रोता राखी ते वृत्तांत पुठ्यों। पण ए जोखो जूपित ए वात पामी शक्यों नहीं। ॥ १ ॥

जोयो. तेले वधांने रोता राखी ते वृत्तांत पुडियो. पण ए जोखो जूपित ए वात पामी शक्यो नहीं. ॥ १॥ प्रेमसाना पिताए कह्युं, स्त्रा कुमारने शुं थयुं ? तेनुं सुंदर स्वरूप एक क्राणमां क्यां चाह्युं गयुं ? हिंसक मं-त्रीए कर जोडीने कह्युं के, हे राजा,कांइ कहेवानी वात नश्री. श्रमारी वात परदेशमां कोण सांजसे तेम हेशाशा

रितपित सरखों कुंवर तुमें दी हो हो लाल ॥तुण। अमें इहां कर्मने जोग शाने की घो हतो हो लाल ॥ शाणा तुम पुत्री कर स्पर्श थकी ए निपज्युं हो लाल ॥ थणा कन्या ए माहाराज हे मोती ही पतुं हो लाल ॥हेण।३॥ तुम मंदिर ए निरंतर रे जो धारणी हो लाल ॥ रेणा ए विष कन्या सत्य नहीं हितकारणी हो लाल ॥नणा विणहों पुरुष रतन्न क-

न्यानी संगते हो खाख ॥कणा कहीए ठीए खट्ट जार्ज सहुनी संमते हो खाख ॥सण्धा। अर्थ ॥ कामदेवना जेवो सुंदर कुमार तमे जोयो हतो. अमारा कर्म योगे तेने अहीं उतो कर्यो. तमारा पुत्रीना करना स्पर्शश्री आ बनाव बन्यो हे. महाराज, आ कन्या ठीपनुं मोती हे. ॥ ३ ॥ आ धारणी हमेशा तमारा मंदिरमां रहेजो. आ तो विष कन्या हे. ते हित करनारी नथी. आ कन्यानी संगते आ पुरुष रख विनाश पामी गयुं. हवे अमे कहीए ठीए के, सर्वनी संमतिथी तेने अहींथी खड़ जातुं.॥ ४ ॥

मकरध्वजे सविवात मानी साची करी हो खाख ॥ मा०॥ छुड्वल कन्या होय नरेशर ते खरी हो खाख ॥न०॥ प्रेमला उपरे क्रोध जनकने उपनो हो खाख ॥ज०॥ कुष्टिए तेणीवार प्रद्यो कर जूपनो हो खाल ॥ प्र०॥थ॥ नही तुम पुत्री दोष नहीं तेम माहरो हो खाल ॥न०॥ नही मुज जन-कनो दोष, नही तेम ताहरो हो खाल ॥न०॥ सघलो कर्मनो दोष निवा-रीय हो खाल ॥ ए०॥ स्त्री हत्यानुं पातिक हैंडे विचारीए हो खाल ॥है।॥६॥

श्चर्य ॥ राजा मकरध्वजे श्चा सर्व वात साची मानी श्चने मनमां निश्चय कथों के, श्चा राजकन्या ख रेखर तेवी हशे. तत्काल पोतानी पुत्री प्रेमला जपर ते पिताने क्रोध जत्पन्न श्वयो, ते वखते पेता कोडी याए राजानो हाथ काली कहां. ॥ ए ॥ राजा, तमारी पुत्रीनो दोष नथी तेम मारो पण दोष नथी. मारा पितानो के तमारो दोष नथी. श्चा बधो कर्मनो दोष हे, माटे रोष होडी दो श्चने श्चाथी स्त्री हत्यानुं पाप श्वाय एम हृदयमां विचारो. ॥ ६ ॥

कनकथ्वजने वचन खसुर रंज्यो घणुं हो खाख ॥खण। कर्सुं तुम वार्या उपर एहने नही हणुं हो लाल ॥एण। एम कही प्रेमला तात स्वमंदिरे आवीयो हो लाल ॥स्वण। पोतानो सद्बुद्धि प्रधान तेमावीयो हो लाल ॥प्रण।॥ रे मंत्री विषकन्यां प्रेमखा सांजबी हो खाख ॥प्रेणा चीजडामांहे वरास अचिती निकली हो खाख ॥ अण् ॥ थयो कृष्टी जामात कमाइ आपणी हो खाख ॥ कण्॥ विषक्षी सोखा ॥ कण्॥

श्रर्थ ॥ श्रावां कनकध्वजनां वचनथी तेनो सासरो घणो खुशी थयो. श्रने तेणे कहुं के, तमारा वार वाथी हवे हुं पुत्रीने हणीश नहीं. श्राप्रमाणे कही ते प्रेमखानो िता पोताने घेर श्राब्योः श्रने त्यां पोता ना सद्बुध्वि प्रधानने तेडाच्यो. ॥ ७ ॥ राजा बोड्यो. श्ररे मंत्री, सांजखो, श्रापणी प्रेमखा विष कन्या हे. श्रा तो चीजडामांथी श्रकस्मात वराख नीकखी हे. एना स्पर्शथी श्रापणो जमाइ कोडीयो श्रइ गयो हे. ए श्रापणुं नशीब समजवुं. श्रा पापणी कन्या श्रापणे पेट श्रावी हे. ॥ ७ ॥

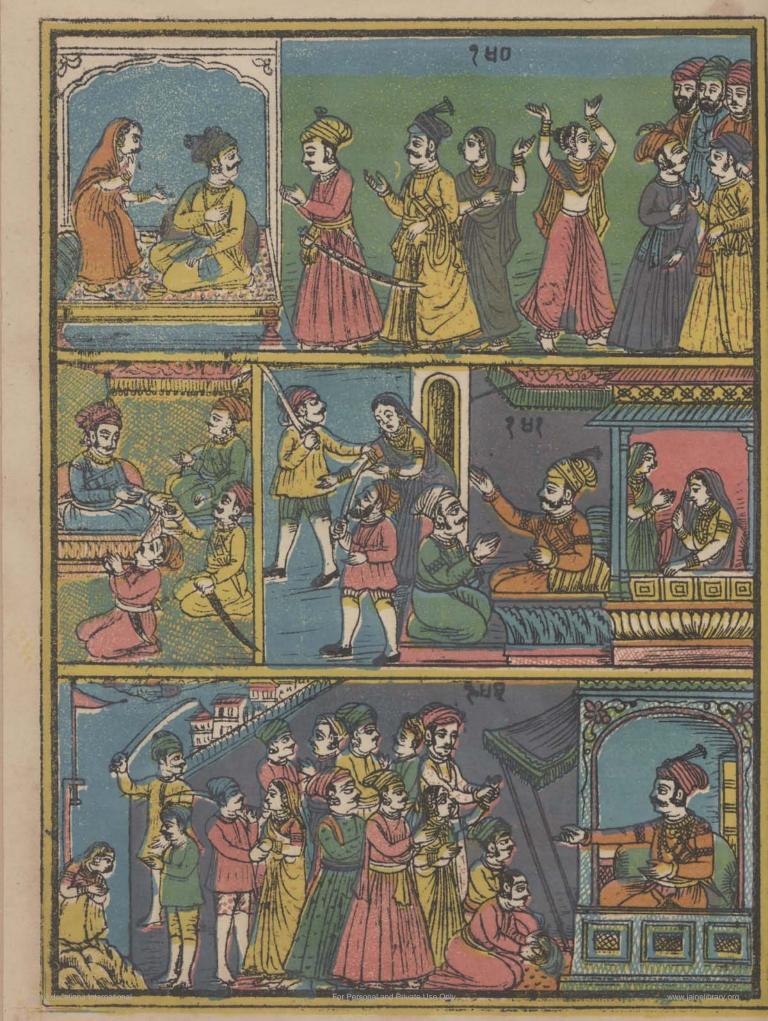
कहे मंत्री करजोड तृपति तुमशुं हवुं हो खाख ॥ तृ० ॥ कुष्ट पुरातन एह नही एतो नवुं हो खाख ॥तृ०॥ एक पोहोरमां एम छुर्गंध नज्ज खे हो खाख ॥ छ० ॥ सटित न होवे चर्म श्रश्रृगपण निवग हो खाख॥श्र०॥ए॥ श्रवगुण पुत्रीमां हे रखे तुमे जाणता हो खाख ॥ र० ॥ वे सघ छुं एक पट रखे हठ ताणता हो खाख ॥ र० ॥ तोपण तृपनो कोध नकां इ उपशमे हो खाख ॥ न०॥ कहे मंत्री महाराज करो जेम तुम गमे हो खाख ॥ क०॥ १०॥

श्रश्रं ॥ मंत्रीए वे हाथ जोडी कहुं, राजाजी, श्रा तमने शुं थयुं हे? ए कोडनो रोग पूर्वनो हे, नहुं कांइ थयुं नथी. एक पोहोरमांज एवी रीते छुर्गंध उन्नखे नहीं श्राने चांमडी सडीने तेमांश्री रुधिर गखवा-मांडे नहीं ॥ ए ॥ तमे पुत्रीमां श्रवगुण जाण्हों नहीं श्रा सघखुं कपट हे. रखे तमे हह पकडता? श्रा प्रमाणे कहुं तोपण राजानो क्रोध शमतो नथी एटखे मंत्री बोहयों के, महाराज, तमने गमें तेम करों रें

कन्या श्रावी मात समीपें धसमसी हो खाख ॥स०॥ माताना मनमांहे ते विष कन्यावसी हो खाख ॥ते०॥ दीधो नही सनमान न पुढी वातमी हो खाख ॥न०॥ न मटे खिखितजे खेख खख्या ढठी रातमी हो खाख ॥ख०॥११॥ ताते कोडंबीक पुरुष तेमाव्या तत्क्षणे हो खाख ॥ते०॥ कोधारुण करी नेत्र नरेशर एम जणे हो खाख ॥ नृ०॥ सोंपो कुमरी एहके हाथ चंडा खने हो ॥के०॥ पुजजो वधनी जूमि धारा करवालने हो खाख ॥ धा०॥ ११॥

श्रर्थ ।। कन्या दोडती दोडती माता पासे श्रावी माताना मनमां पण ए विष कन्या हे, एम हसी गयुं हतुं, तेथी तेणीए कांइ सन्मान श्राप्युं नहीं तेम कांइ वात पण पुत्ती नहीं, हतीनी रात्रे जे खेख खखेला होय ते केम मटे ? ॥ ११ ॥ राजाए तत्काल कुटुंबना खोकोने बोलाव्या श्रने कोधधी रातांनेत्र करी ते बोख्यो-के, श्रा पुत्री चंडालने हाथ सोंपी द्यो श्रने खड़नी धारावडे वध स्त्रिमनी पूजा करावो ११

खेइ चाखा तेह सुता साथे यही हो खाख ॥ सु० ॥ पण राजाए चित्त दया आणी नही हो खाख ॥द०॥ छुंवरीनी एक वात कोइए नवि सांज सीहो खाख ॥को०॥ मंत्री कहे नृप आगल घणुं ए वस वसी हो खाख ॥थ०॥१३॥



खड़ प्रेमला लही आठ्या चहुटा लगे हो लाल ॥आ०॥ माहाजन पण तत लेव मल्या मन उमगे हो लाल ॥म०॥ आठ्या ते दरबार तेकी पुत्रीका हो लाल ॥ते०॥ विनवे प्रूपति आगल जे हती पृत्तिका हो लाल ॥ जे० ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ तेर्ड प्रेमलाने साथे लड़ चाल्या. राजाना चित्तमां जरापण दया आवी नहीं. कुंबरीनी एक वात पण कोइए सांजली नहीं. मंत्रीए राजानी आगल घणुं करगरी कहेवा मांड्यो. ॥ १२ ॥ प्रेमला लक्षीने लड़ तेर्ड चौटामां आव्या. त्यां तत्काल तेमने महाजन मल्युं तेर्ड पाठा कुंबरीने लड़ दरबारमां आव्या अने राजाने जे कहेवानुं हतुं ते कही विनववा लाग्या. ॥ १४ ॥

श्रहो इश्वर श्रवतार सुताए जगरे हो खाख ॥ सु० ॥ कुष्टी ययो जामात तेमां ए शुं करे हो खाख ॥ते०॥ पंचनो वचन प्रमाण करो श्रखवेसरू हो खाख ॥क०॥ एम पुत्रीश्री कोप न कीजे हित करु हो खाख ॥न०॥ १५ ॥ बगसो गुन्हो महाराज श्रकाज न कीजीए हो खाख ॥श्र०॥ निज संततिनी जपर एम केम खीजीए हो खाख ॥ए०॥ पुत्रीनी एकवार तो वातडी सां जखो हो खाख ॥वा०॥ जुर्जन वाते स्वामीन राखो श्रामखो हो खाख ॥न०॥१६॥

श्रर्थ ।। महाजन कहे हे इश्वरावतारी राजा, श्रा पुत्रीने जगारवी जोइए. ते पुरुष कुष्टी श्रयेखो तेमां श्रा पुत्री शुं करे? राजाजी, श्रा पंचनुं वचन प्रमाण करो. श्रावो कोप पुत्री जपर न करवो जोइए. ॥१५॥ हे महाराजा, किंद श्रपराध श्रयो होय तोपण श्रावुं श्रकार्य न करवुं जोइए. पोतानी संतित जपर श्रा प्रमाणे खीजवावुं न जोइए. एकवार तो ए पुत्रीनी वात सांजढी हथो. हर्जन खोकोनी वात सांजढी मनमां श्रामखो राखो नहीं. ॥ १६ ॥

श्रावमी ढाल रसाल ए त्रीजा उल्लासनी हो लाल ॥ए०॥ मोहन कहे मन रंगश्री पुष्य प्रकाशनी हो लाल ॥पु०॥ शीलहुंती उपसर्ग सयल रहे वेग ला हो लाल ॥स०॥ शील श्रकी सुलजोग लहेशे प्रेमला हो लाल ॥ल०॥१७॥ श्रश्री ॥ श्रा प्रमाणे श्रा रस जरेली त्रीजा उल्लासनी श्रावमी ढाल श्रीमोहन विजये कहेली हे. श्रा ढाल मनमां श्रानंद श्रने पुष्यने प्रकाश करनारी हे. शीलवती स्त्रीनी पासेशी बधा उपसर्गों वेगला रहेहे. हेवटे प्रेमला लक्षी शीलवहे करीने सुलजोग प्राप्त करहो. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

माने नही माहाजन तणुं, एके वचन लगार ॥ क्रोध कषाय जुजंगविष, धायों स्रति वसुधार ॥ १ ॥ साजन जन तिहां ग्रुं करे, राजन जिहां कठोर ॥ माहाजन पोहोता सहु घरे, न बने कीधे जोर ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ राजाए महाजननुं वचन जरापण मान्युं नहीं श्चने छखटो तेणे कोध कषाय रूप सर्पना फेरने धारण कर्यु. श्चर्यात् क्रोध कर्यो. ॥ १ ॥ ज्यां राजा कठोर हृदयनो होय त्यां साजन के महाजन शुं करी शके १ प्रजी ते महाजन खोको घेर चाह्या गया. जोर करवाश्री ते वात बनती नश्री. ॥ २ ॥

स्वपंचीने कितिपति कहे, केम करो श्राण जंग ॥ विष कन्याथी जइ करो, प्रहरण तणो प्रसंग ॥ ३ ॥ जो जीवित चाहो तमे, तो निव करो विलंब ॥ नृप वचने कन्या जणी, ते कहे चालो श्रंब ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ राजाए ते पोताना माणसोने कहुं के, तमे मारी श्चाज्ञानो जंग केम करो हो ? जार्छ, तमे ते विष कन्या उपर प्रहार करो. ॥ ३ ॥ जो तमारे तमारा जीवितनी इहा होय तो तमे श्चा कार्यमां विदांब करशो नहीं. राजानां श्चावां वचनश्ची तेर्छए कन्याने कहुं के, माता चालो. ॥ ४ ॥

श्चागल कीधी प्रेमला, चाल्यों ते चंडाल ॥ हाहारव नगरी थयो, श्रकृत करे जूपाल ॥ ५ ॥ ते कन्यावध थानके, तेणे श्चाणीत रकाल ॥ बेसाडीने श्चंत्यजे, कर पकडी करवाल ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ प्रेमला लक्षीने श्चागल करी श्चने पाठल ते चंडाल चाह्यो. श्चाश्ची नगरीमां हाहाकार श्वइ गयो के राजा न करवानुं काम करे हे. ॥ ५ ॥ ते कन्याने चंडाल वध स्थान उपर लइ गयो. पठी तेने त्यां बेसारी चंडाले हाश्चमां तरवार लीधी. ॥ ६ ॥

> कहे मातंग रे नृपसुता, जजतुं ताहरो इष्ट ॥ हवे तो इहां करशुं श्रमे, जे जूपे श्रादिष्ट ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ चंडाल बोह्यो- अरे राज कुमारी, तुं तारा इष्ट देवने याद कर्यः हवे राजानी आज्ञा प्रमाणे अमे तारो नाश करी शुं. ॥ ७ ॥

> ॥ ढाल नवमी राग धोरणी॥ ॥ बे करजोडी तामरे जडाविनवे॥ ए देशी॥

कहे विनये चंडाल रे, श्रहो नृप पुत्रिका, श्रमे किंकर पेटारथीए॥ तुं उत्तम श्रमे हीन रे, मातुं वध बाला, ए करवुं घटतुं नथी ए॥१॥ इहां श्रमे थया श्रक्ठलीन रे, पूरव कमेथी, तोए बूटशुं किहां वलीए॥ तुंज सरीखुं श्री रत्न रे, एम विणासवुं, धिग् श्रंत्यज कुल मंग्लीए॥१॥

श्चर्य ॥ चंडाद्ध फरी विनववा लाग्यो हे राजकुमारी, श्चमे पेटने माटे सेवक थया ठीए. तमे छत्तम ठो श्चमे नीच जात ठीए. तमारा जेवी बालानो वध करवो घटित नथी. ॥ १ ॥ श्चमे श्चाजवे पूर्वना कर्म-श्री श्चकुलीन नीच थया ठीए. वली तारा जेवुं स्त्रीरल श्चाम हाणीने पाठा क्यां बुटी शुं ? एम विचारतां श्चमारा जेवी श्चंत्यजजातिनी मंडलीने धिकार ठे. ॥ २ ॥

आणा राजा केरी रे, फेरी कोण शके, वांक नहीं इहां अमतणाए।। अमे तो हुकमना बंदा रे, करीए नृप कहां, धर्म संजारो आपणोए॥३॥ काट्यो कोशथी खड़ रे, एम कहीने तेणे, तव कन्या खम खम हसीए॥ नाप्यो जय तखमात्र रे, सत्व न अवगण्यो, असि देखीने उल्लसीए॥४॥ श्चर्य ॥ राजानी श्चाज्ञाने कोण फेरवी शके श्चिमारो श्चामां जरापण वांक नथी. श्चमे तो हुकमना ता-बेदार ठीए. तेश्ची राजाए जे हुकम कर्यों ते प्रमाणे करीए ठीएं. हवे तमे तमारो धर्म संजारोः ॥ ३ ॥ श्चा प्रमाणे कही ते चंडाखोए म्यानमांथी तरवार काढी ते जोइ राज कन्या खडखड इसी पडी. तेने जरापण जय खाग्यो नहीं. पोताना सत्त्वनी श्चवगणना करी नहीं श्चने तरवार देखीने खुशी श्रवा खागी. ॥ ४ ॥

नाखो रोष लगार रे, तातनी उपरे, वधकनो वांक गखो नहीए ॥ क हे कन्या हे वीर रे, मकर विचारणा, जुप वचन करतुं सहीए ॥ ८ ॥ पाम्यो विस्मय चित्त रे, श्रंत्यज बापको, श्रलगो जइ उन्नो रह्योए ॥ केम इसो तमे मात रे, निरखी श्रसिधारा, मेंतो जेद नको लह्योए ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ कन्याए पोताना पिता उपर जरापण रोष कर्यो नहीं, तेम वध करनारा चांडालनो वांकपण गण्यो नहीं. ते बोली— श्चरे वीर, विचार कर्य नहीं. राजानी श्चाङ्गा प्रमाणे कर्य- ॥ ५ ॥ ते चंडाल चित्तमां विस्मय पाम्यो. बिचारो श्चलगो जङ् उसो रह्यो. ते बोहयो, माता श्चा तरवारनी धार जोङ् तमे केम हसो हो ? हुं तो तेमां कांड् पण समज्यो नथी. ॥ ६ ॥

तवकहे प्रेमला लही रे, तुजने शुं कहुं, वात कह्या सरखी नथी ए॥ जोनरवर मुज पुढ़े रे, तव तेहने कहुं, खेखे नावे इहां कथी ए॥ ७॥ ताते मारी वात रे, काने न सांजली, ते मुज खटके हे घणुं ए॥ अण जाएशुं करें जूपरे, कोइनो जोलब्यो, घरन विचारे आपणुं ए॥ ७॥

श्चर्य-त्यारे प्रेमला लक्की बोली. जाई! तने शी वात कहुं वात तने कहा जेवी नथी. जो राजा मने पुढे तो हुं तेमने कहुं श्चर्शी केहेवाथी कांइ लाज थाय तेम नथी. ॥ १ ॥ पिताश्रीए मारी वात सांजली नही, एज मने बहु खटके के कोइनाथी जोलवायेलो मारो पिता (राजा) श्वजाएपए श्वा करेके पो-ताना घरनो विचार करतो नथी. ॥ ए ॥

निसुणी वचन चंनाल रे, मुकी तिहां कन्या, आव्यो मंत्रीनी कन्हे रे ॥ अहो अहो मंत्रीराज रे, वांठे प्रेमला, आववुं जूपति आसने ए॥ ए॥ एतो नहीं विष कन्या रे, परखीमें रूडो, तो कां आणजाएयुं करो ए॥ जूपतिने समजावो रे, तेनो पुत्रिका, वात कहे ते चित्तधरो ए॥ १०॥

श्चर्य-कन्यानां वचन चंनाल सांजली तेणीने त्यां मुकी. मंत्रीनीपासे ते आव्यो, अने कहेवा लाग्योके हे मंत्रीराज! महाराजजी पासे आववाने प्रेमला इच्छे हे. ॥ ए॥ में सारी रीते परीका करी हे के ते विष कन्या नथी, तेथी आजाणपणे आवुं शुं काम करोहो ? आप राजाजीने समजावो, तेमनी दीकरीने तेनावो अने ते जे वात कहें ते ध्यानमां ह्यो. ॥ १०॥

परदेशीनी वात रे, एम नवी कीजी ए, पस्तावो करशो पठी ए॥ श्रं त्यज वचने मंत्री रे, रायने विनवे, स्वामि एक विनती श्राठे ए॥ ११॥ ठे कन्या निरविख रे, में निश्चेकर्युं, एकवार तेडावो फरी ए॥ केम ह णीए श्रविचारे रे, रोष निवारी ए, जूंकी तो ए दीकरी ए॥ ११॥ श्रर्थ-परदेशीने वात सांजली, श्रामकरबुं ते ठीकनथी, पठी पस्तानो करवो पमशे. चंमालनां वचनथी मंत्रीए राजाने कह्युं के साहेब एक विनंति करवानी है. ॥ ११ ॥ श्रापनी कन्या निर्विपत्ने श्रने ते वातनो में निश्चय कर्योत्ने, श्राप एकवार तेमाववानी श्राज्ञाकरो. श्रविचारश्री तेने मारवी योग्य नथी. श्राप को-धने शांत करो, श्रंभीत्ने तोए पोतानी दीकरी है. ॥ १२ ॥

एह नामननीवात रे, तेमी सांजलो, करजो पढी मनने गमे ए॥ जो जाणो विषकन्या रे, तो पमदे रही, विनवशे जे श्रातिक्रमे ए॥ १३॥ कहे नृप तेमोतेह रे, श्रलगी राखजो, मत श्राणो मुज श्रागले ए॥ कीधुं वचन प्रमाण रे, मंत्री ए कन्यका, तेमावी महा मंगले ए॥ १४॥

श्चर्य-पुत्रीने तेनावी तेना मननी वात तो सांजलो, पठी श्चापने गमे तेम करजो. जो विषकन्या श्चापने लागे तो पर्नदे राखजो श्चने पठी ते पोतानी वात श्चापने कहेशे. ॥ १३ ॥ राजाए कहां के कन्याने तेंग्रावी पण दूर राखजो, मारी पासे लावशो नहीं. ते वचन प्रमाणकरी मंत्रीए कन्याने बहु खुशी साभे तेनावी. ॥ १४ ॥

परिश्रच श्रंतर राखी रे, बाडीप्रेमसा, मंत्री नृपने विनवे ए॥ स्वामी कर्ण पसाय रे, पामे बासका, विनती सफल करो हवे ए॥ १५॥ नृप श्रादेशे पुत्री रे, कहे हरस्रित थई, तात सुणो मुज विनती ए॥ नहीं जाखुं श्रसत्य रे, चरणे तुमतणे, उत्तमजन जाखें बती ए॥ १६॥

श्चर्य-वचमां पमदो राखीने, प्रेमदा बहमीने बेसाडी। पठी मंत्री राजाने विनवे ठे. हे स्त्रामी श्चापना पसायथी पुत्री श्चाबीठे तेनी विनती हवे सांजली तेनी उपर कृपाकरो. ॥ १५ ॥ राजाना हुकमथी पुत्रि ए राजी श्वर्ड कह्युं के हे पिताजी मारी विनती सांजलो। श्चापनी हजुरमां हुं कदापि श्चसत्य नहीं बोर्बुः जत्तम मनुष्य साचीज वात बोले। ॥ १६ ॥

नवमी त्रीजा उद्घासे रे, ढाख जली कही, मोहन विजये रंगथी ए॥ मिलसे प्रेमला लग्नी रे, चंदनरेशथी, पूरण पुन्य प्रसंगथी ए॥ १७॥ ऋर्थ-मोहन विजयजी ए हर्षथी त्रीजा उद्यासनी नवमी रूमी ढाल कही. पूर्ण पुष्यना योगथी चंद-राजानीसाथे प्रेमला लक्ष्मी मलशे.॥ १९॥

॥ दोहा ॥

वात श्रसंत्रव तातजी, कहेतां श्रावे लाज ॥ पण विण कहे व नतुं नथी, लाजे विणसे काज॥१॥ जेहने परणावी तमे, ते नहीं प्रीतम एह ॥ जाणुं हुं श्रनुमानथी, एहमां नही संदेह॥१॥

अर्थ-हे िपताजी आ वात नहीं संजवे तेबी छे अने ते कहेतां मनमां खाज आवेछे. परंतु कहाविना चाढी शके तेम नथी, कारणके शरम राखवाथी कार्यनो नाश आयछे॥ १॥ जेनी साथे आपे मने पर-णाबी ते मारो प्राणनाम आ नथी. एवात हुं सरा अनुमानथी जाणुं हुं. तेमां क्षेशमात्र मने संदेह नथी.॥२॥



पुरव दिशी त्राजापुरी, वीरसेननो जात ॥ चंद नृपति पति मा हरो, तमे श्रवधारो तात ॥३॥ जो एहमां जुटुं पडे, तो मुजने महाराज ॥ करजो गति जे चोरनी, कहुं हुं होडी लाज ॥४॥

श्रर्थ-मारी साथे तम करनार मारो पित पूर्व दिशामां श्रावेती श्राप्तापुरी नगरीना वीरसेन राजानो पुत्र चंद राजाहे, ते वात हे पिता! खात्रीथी तमे मानजो ॥ ३ ॥ हुं जे कहुं हुं ते हे महाराज! जो जुहुं पहे, तो जेवी चोरनी गित थाय तेवी गित मारी करजो. श्रावात हुं शरमहोडीने कहुं हुं. ॥ ४ ॥

कहे मंत्री तें चंदने, केम करी जाखों कंत ॥ तात तणा मुख आ गक्षे, कहो साचो विरतंत ॥ ५ ॥ निसुणो पत्रणे प्रेमखा, परणी

मुज जरतार ॥ रमवा बेठो मनमठो, मुजथी रामत सार ॥ ६॥

श्रर्थ-मंत्रीए पुज्युं के हे राजकुमारी ! चंदराजा तमारो स्वामी श्रयोजे ए केवीरीते तमे जाणी शक्यां ? माटे जे वृत्तांत साचो बन्यो होय ते तमारा पिताश्रीपासे कहो. ॥ ए॥ प्रेमला लच्जीए कहांके, मारी साथे मारो जरतार पराध्या पजी हुं श्रने ते सोगजा बाजी रमवा बेजां, परंतु रमतमां तेनुं मन जचक हतुं. ॥ ६॥

तेणे रमतां मुखर्थी कह्युं, श्राजा पित नृपचंद ॥ सारी पासा तस घरे, हे सुंदर रस कंद ॥ ७ ॥ ते जो इहां श्राप्या होवे, तो रामत रस होय ॥ पण ते कोश श्रहारसे, श्राणी नापे कोय ॥ ७ ॥

श्चर्य-तेणे रमत रमतां कहां के श्चाजा नगरीना राजा चंदने घेर रमत रमवाना जेवी वाजी श्चने पासाछे ते जाणे रसनो कांदो होय नहीं तेवां सुंदर छे. ॥ ७ ॥ ते जो श्चाहींया खाववामां श्चाच्यां होय तो रम-वामां बहुज रस श्चावे. परंतु ते श्वाहींश्री श्वाहारसो गान छे, ते कोण खावी श्वापे? ॥ ० ॥

॥ ढाख दशमी ॥

॥ हांरे हुंतो जरवा गइती तट जमुनाने नीरजो ॥ ए देशी ॥ हांरे हुंतो अचरज पामी खामी वचने तामजो, पूरव दिशी किहां तिहां आजा केम जाणी ए रे लोल ॥ हांरे ए तो आव्या पश्चिम दि शिषी किहां नृप चंद जो, जाएयुं में एह आगल कही होशे किणे रे लोल ॥ १ ॥ हांरे तिहां अथवा होशे प्रीतमनो मोसाल जो, तेहथी ए सं जारे पासा सोगठांरे लोल ॥ हांरे हुंतो जोले जावे जाणी नशकी चोज जो, धार्युं में वली पुठीश रहेवुं हे एकठां रे ॥ खोल ॥ १ ॥

अर्थ-मारा स्वामीनां वचन सांजली हुं आश्चर्य पामी, में विचार्युके पूर्विदशा क्यां? ए वात हुं केवी रीते जाणुं? कारणके आ मारा नृपचंछतो पश्चिम दिशामांथी आव्याहे. पही विचार आव्यो के तेमनी आगल कोइए ए वात करी हशे. ॥ १॥ वली मारा मनमां एम आव्युं के त्यां मारा पतिनुं मोसाल हशे जेथी तेने ए सोगहा वाजी तथा पासा सांजर्या करे हे. हुं अंतःकरणमां निर्मल तथी लुपो जेद कांइ पण जाणी शकी नहीं. वलीमें धार्युके हवे एकहां रहेवुं हे तथी आगल छपर पुठीशः॥ १॥

हारे वली मोदक खातां वहाखे माग्युं नीरजो, पायुंमें ग्रुजवासित जल प्रेमातुरी रे लोख ॥ हांरे कह्युं पिछडे गंगाजल जो इहां कणे होय जो, मोदकनीतो लागें मुजनें माधूरी रे लोल ॥ ३ ॥ हांरे हुं तो पामी विस्मय निसुणी सरिता नामजो, ते तो छे पूरवनी दिशे सुर वाहिनी रे लोल ॥ हांरे वली कीधां श्राजा नगरीना व्याख्यान जो, वाणीतो कोण मीठी हूती नाहनी रे लोल ॥ ४ ॥

अर्थ-मारा स्वामीए बाडु खातां पाणी माग्युं तेथी प्रेमनी इन्नक एवी में तेने सारू सुगंघी जब आप्युं, मारा स्वामीए कहुं के जो अहीं आ गंगाजब होय तो आ खानुनी मिनाश मने बहुज खागे। ॥ ३॥ ते नदीनुं नाम सांजबी हुं अत्यंत आश्चर्य पामी कारणके ते गंगानदी तो पूर्व दिशामांज वहे हे. वबी तेमणे आजापुरीना बहुज वखाण कर्या. आहा! मारा स्वामीनी वाणीमां शुं मिनाश हती! ॥ ४॥

हारे एम करतां श्राच्यो हिंसक मंत्री तत्र जो, उठाड्यो पिछ महारो कोइ शमस्या करी रे लोल ॥ हांरे मुज वारी राखी पात कीए करी रीस जो, पाछो ते नवी श्राच्यो जे गयो परिहरी रे लोल ॥ ५ ॥ हांरे एहमांहे श्राच्यो ए छुष्टी मातंग जो, मुंजशीतो तेणे खोटी प्रीतलडी धरीरे लोल ॥ हारे में तो एके एहनुं वचन न मान्युं कोय जो, मुजने एणे सघले विषकन्या करी रे लोल ॥ ६॥

अर्थ-एटलामां हिंसक मंत्री त्यां आव्यो. तेणे शमस्या करीने मारा पितने मारी पासेथी उठाड्यो. ए पापीए मारा उपर गुस्सोकरी मने रोकी राखी अने मारो नाथ मने तजी चाड्यो गयो, ते पाठो आव्यो नहीं। ॥ ५॥ ते कोढी चंमाल पठी घरमां आव्यो अने तेणे मारी साथे खोटी प्रीत करवा मांभी. में तेनुं एकपण वचन मान्युं नही एटले तेणे सर्वनी पासे कहुं के आ तो विषकन्या है. ॥ ६॥

हारे ए तो कुष्टी एहनी स्त्रीनो होशे कंत जो, महारो तो प्राणेशर श्राजानो धणी रे लोल ॥ हांरे एणे सिंहले तातजी तुमने जो लब्या ठीक जो, विण वांके एणे मुजश्री कीधी हे धणी रे लोल ॥ ७ ॥ हांरे में जाली तुमने जे मुज मननी वातजो, साचुं जो करी मानो तो घणुं ए जां रे लोल ॥ हांरे जो तुमने एहना वचन तणी परतीत जो, कीजे जे मन मान्युं कहीए केटलुं रे लोल ॥ हा।

अर्थ-ए कोढी एनी स्त्रीनो धणी हशे. मारो प्राणनाथ तो आजा नगरीनो राजा हे. ते सिंहदा रा-जाए, हे पिताजी! आपने खुब हेतर्या हे अने वगरवांके मारा जपर पणकरवामां बाकी राखी नथी.॥॥॥ मारा मनमां जे वात हती ते में आपने कही. ते वात जो साची मानो तो पूणुं सारूं; परंतु जो सिंहदा राजानी जपरज आपने विश्वास होय तो आपना मनमां होय ते करो. हुं हवे वधारे शुं कहुं?॥ ७॥ हारे निज पुत्री जपर कोप करे जो तात जो, कोइनो निव चाले जोरो एहमारे लोल ॥ हारे पण काज विचारी करीए तो यश होय जो, तुमने छे श्रधिकाइ तातजी तेहमारे लोल ॥ ए ॥ हारे होय जाग्य सुतानुं तात तणो श्रायत्त जो, ताते जे जाएयुं ते पु त्रीने खरूं रे लोल ॥ हारे जो जीवाके न जीवाके तोपण तात जो, पुत्र श्रमे पुत्रीमां मोटुं श्रंतरूं रे लोल ॥ १०॥

अर्थ-पिता जो पोतानी पुत्री छपर कोप करे तो तेवे वखते बीजानुं शुं जोर चाखे? परंतु हे पिताजी ! आप विचारीने काम करशो तो यश संपादन करशो अने तेमांज आपनी वकाई हे. ॥ ए ॥ पुत्रीनुं जाग्य पिताने आधीन हे. पिताए जे पुत्रीने माटे धार्यु होय तेज पुत्रीने खरूं समजवुं. कारएके जीवाडे के मारे तोपए पिता एज पिता हे. पुत्र अने पुत्रीमां मोटो अंतर तेज हे. पुत्र नुं जाग्य तेना पोताना स्वाधीनमां हे अने पुत्रीनुं पिताने आधीन हे. ॥ १०॥

हारे एम पुत्री वचन सुणीने ते मंत्रीश जो, विनयशुं मकरध्वज नृपने विनवेरे लोल ॥ हारे प्रज्ञ नहीं ए जुटुं पुत्री वचन लगार जो, कुष्टीतो पति नैवच वचने ए हवेरे लोल ॥ ११ ॥ हारे हवे ध्यापने घ्याजा नगरी करशुं शुद्धि जो, होशे जो तिहां चंदतो सघलुं ए खरूं रे लोल ॥ हारे प्रज्ञ राखो त्यां लगी कन्या घ्या पणे गेह जो, करशे जो विश्वंत्रर पमशे पाधरूं रे लोल ॥ ११ ॥

अर्थ-ते राजपुत्रीनां वचन सांजली श्रेष्ठ मंत्री मकरध्वज राजाने विनय पूर्वक विनववा लाग्या के हे राजन्! राजकुमरीनुं वचन लेशमात्र असत्य नथी. एना बोलवाथी, कोढी है तेनो पित नथीज नथी, एम मने लावे हे. ॥ ११ ॥ हवे आपणे आजा नगरीमां तपास करावीए जो त्यां चंद राजा हशे तो आ स- घलुं खरूं समजवुं; माटे त्यां सुधी आप कन्याने घरमां राखो. जो परमेश्वर करशे तो सर्व पांशरू पकशे.१२

हारे हवे तुमने न घटे हणवी कन्या एह जो, साचाने जूगानुं लाघे पारखुं रे लोल ॥ हारे तव मंत्री वचने जूपति चिंते चित्त जो, पुत्रीनी वाते तो जोवा सारखुं रे लोल ॥ १३ ॥ हारे कहे राजा मंत्री पुत्री राख तुं गेह जो, साचुं ते तरशे ने जूनु नहीं तरे रे लोल ॥ हारे जुन जगमां जिवजन जीवित जो बलवंत जो, ते नपर नृप रूशीने ते शुं करे रे लोल ॥ १४ ॥

श्चर्य-हे नाथ! हवे श्चापने श्चापनी पुत्रीने मारी नांखवी ते योग्य नथी. साचा श्चने जुठानी परीका करवी जरूरनी के मंत्रीनां एवा वचन सांजली राजा मनमां विचारवा लाग्यो के राजकुमारीनी श्चा वात तपास करवा जेवी के ॥ १३ ॥ पढ़ी राजाए कहुं के हे मंत्री! राजकुमारीने तमारे घेर राखो. साची वात हशे ते तरी स्त्रावशे स्त्रने जुठीवात कदापि नहींज तरे. (हवे किव कहे) हे जब्य जीवो ! जगतमां जेनुं स्त्रायुष्य बस्तवंत ठे तेना जपर राजा पण जो कोप करे तोपण ते तेने शुं करीशके तेम ठें? ॥ १४॥

हारे नृप वचने सचिवे प्रेमला आणी गेह जो, बेसामी जमामी राखी नेहथीरे लोख ॥ हारे मंत्री पुत्री म करीश शोच ल गार जो, मेलीश हुं तुज तेहने परणी जे हथी रे लोल ॥ १५॥ हारे एम वचने कुंवरी चित्ते धीरज दीध जो, आणीशमां तुं हैंडे चिंता तातनी रे लोल ॥ हारे तुज उपर काले तात होशे सुप्रसन्न जो, राखीशमां विमासण कोइ वातनीरे लोल ॥ १६॥

अर्थ-पढ़ी राजाना हुकमथी मंत्रीय प्रेमखा खहीने पोताने घर आणी. पोताना घरमां आस्वासन आपी स्नेहपूर्वक जमामी. पढ़ी मंत्रीए राजपुत्रीने कह्युं के तमे जरापण शोक करशो नहीं. जेमनी साथे तमारूं परणेतर थयुं हे तेमनेज हुं मेखवी आपीश. ॥ १५ ॥ एवी रीते मंत्रीश्वरे कुंबरीना चित्तमां सारां वचनोथी धीरज आपी. बखी कह्युं के बेटा! मनमां जरापण पिताश्रीनां वचन संबंधी चिंता करशो नही. तमारा पिताश्री काखेज तमारा जपर प्रसन्न थशे तथी कोइपण बाबतमां तमे मुक्कवण राखशो नही.॥१६॥

हारे रही प्रेमला मंत्री मंदिर परमानंद जो, हुइ ते संबंधी प्रेम प्रकाशनी रे लोल ॥ हारे एम ढाल दशमी ते मोइन विजये रसाल जो, जाली हितकारी त्रीजा जल्लासनी रे लोल ॥ १९ ॥

श्चर्य-हवे कि मोहनविजयजी महाराज कहे हे. त्यारबाद प्रेमला लही मंत्रीना घरमां श्चानंद सहित रही. ए प्रमाणे त्रीजा जल्लासनी श्चरवंत हितकारी ए प्रेमनो प्रकाश करनारी रसाल दशमी ढाल कि मो-हन विजयजी कही. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

थयो खंबर राते वरण, फुली सांज ख्रशस्त्र ॥ नाह्यो रिवमांनुं उदिध, कर्युं कषायक वस्त्र ॥ १ ॥ मकरध्वज राजा जणी, मंत्री करी प्रणाम ॥ सजा समके विनवे, स्वामी सुधारक काम ॥१॥

श्रर्थ-संध्या खीदातां श्रश्रीत् सूर्यास्त समये श्राकाश द्वादा रंगमय श्रद्ध गयुं जाणे समुद्धमांश्री सूर्ये न्हाइने काश्रा रंगनुं वस्त्र धारण कर्युं होयनी ? ॥ १ ॥ ते समये मंत्री प्रणाम करी मकरध्वज राजाने, सन्ना समद्य स्वामीनुं कार्य सुधारवामाटे विनंति करे हे. ॥ १ ॥

चार सचिव सिंहल दिशा, मूक्या हूता जेइ ॥ कुंवर तेणे दीठो हशे, माटे तेडावो तेह ॥ ३ ॥ ते विनवशे श्राफणी, कनकध्वज तनु स्पर्श ॥ जेम हाथे कंकण ठते, शुं कारण श्रादर्श ॥ ४ ॥

श्रर्थ-तेणे कहां के जे चार मंत्रीनं सिंहखपुर नगरे मोकस्या हता, तेनए कुंवरने ते वखते दीने हरो; माटे तेने बोलावो. ॥ ३ ॥ तेनंए कनकध्वज कुंवरना शरीरनो स्पर्श कर्यो हरो, तेवुं सेहेजे कहें हो। हाश्रमां कंकण होय तेवे वखते श्रारसीमां तेने जोवानी श्री जरूर है? ॥ ४ ॥

नृप जाखे साचुं कह्युं, एम जणाशे ठीक ॥ तेमाव्या ते चा रने, नृपनी ताम नजीक ॥ ५ ॥ साच कहो रे मेखते, कुंवर थकी विवाह ॥ निरख्यो हुंतो ए तमे, के नविनिरख्यो चाह ॥ ६ ॥

श्चर्य-राजाए कहुं के तमे साचुं कहुं. तेमने पुढ़वाथी ठीक खुदासो यशे पढ़ी चारे मंत्रीछंने राजानी सन्मुख बोद्याच्या. ॥ १॥ मंत्रीछं श्चाच्या एटले राजाए कहुं के हे मंत्रीछं कुंवरनीसाथे विवाह करवा तमोने मोकह्या ते वखते ते कुंवरने तमे चाहीने जोयो हतो.? जे साचुं होय ते कहो. ॥ ६॥

जूठ न कहेशो सर्वथा, कहो यथास्थित रूप ॥ अंते ठानुं नहीं रहे कूम महाजव कूप ॥ ७ ॥ तव ते चार परस्परे, समजी संज्ञा कीध ॥ प्रथम तिहां एके जणे, नृपने उत्तर दीध ॥ ७ ॥

अर्थ-तमे जरापण असत्य कहेशोनही. जे साचुं होय ते कहेजो. कारणके छेवटे पाप छानुं नहारिंहे, कूड छे ते महा जब कूप छे. ॥ ९ ॥ ते सांजली चारे जणाए अंदर अंदर शमस्या करी. त्यार बाद प्रथम तेर्चमांथी एक जणाए राजाने आ प्रमाणे उत्तर आप्यो. ॥ ए ॥

॥ ढाल ११ मी ॥

थारे केशरीए कशबीरे ठोगे मोही रही मारुजी. ए देशी॥
पेहेलो किएत वात रची नृपने कहे ॥ साहिबजी॥ तुमथी
तो कोइ वात श्रवानी निव रहे॥ सा०॥ हुंतो खासो दास प्र
काशुं मारुं॥ सा०॥ न करुं खाधुं हराम जे निमक ताहरुं॥
सा०॥ १॥ करवा मांनी वात सगाइ श्रासरी ॥ सा०॥ मुडी
महारी ताम जतारे विसरी॥ सा०॥ गयो हु लेवा काज तृष्णा
ए हेल्लच्यो॥सा०॥ पुंठलश्री एणे त्रिहु जणे विवाह मेल्लच्यो॥ सा०॥श॥

श्रर्थ ॥ पेहें बो मंत्री खोटी वातनी रचना करी राजाने कहेवा खाग्यों के हे राजन् ! श्रापनाश्री कोइ वात जानी रहेवानी नथी हुं तो श्रापनो खास सेवक हुं मारा मनमां जे ठे ते कहुं हुं. में श्रापनुं खूण खाधुं ठे ते हराम करनार नथी ॥ १ ॥ श्रमोए वेशवाद संबंधी वात करवा मांडी एटखामां मने सांजरी श्राच्युं के में मारी वींटी जतारे विसारी दीधी ते जपरथी तृष्णाश्री जश्करावाश्री ते वींटी खेवाने माटे जतारे हुं गयो एटखे पाठखशी ए त्रणे जणाए वेशवाद करी दीधुं ठे. ॥ २ ॥

में नवी दीठो कुंवर खरूप हुं शुं बहु ॥ सा० ॥ प्रजु तुम आगख जेहवुं हे तेहवुं ते कहुं ॥ सा० ॥ थयो हुं चाकरी चोर गुन्हो एतो पख्यो ॥ सा० ॥ भूपे सीधो नेद जे वाते खडथड्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ तेम बीजो वसी अरज करे छनो थइ ॥ सा० ॥ हुं निव बोहुं अस त्य कहीश सत्यामइ ॥ सा० ॥ वांको चाले जुजंगम बिलतो पा धरो ॥ सा० ॥ तुम आगल केम चाले जुठो थह खरो ॥ सा० ॥ आ।

अर्थ ॥ में कुंवरने दीनो नथी तेथी तेनुं केनुं स्वरूप ने ते हुं गुंजाणुं. ? हे नाथ ! तमारी आगल जेनुं वन्युं ने तेनुंज कहुं नुं छापनी चाकरीनो चोर थयो नुं ते माटे गुन्हेगार नुं. राजाए खरो मर्म जाणी लीधो अने निश्चय कर्यों के आ पोतानी वातमां लथक्यों ने अर्थात् जूने लागे ने. ॥ ३ ॥ हवे बीजो मंत्री निश्चय कर्यों के अरज करवा लाग्यों के हुं आपनी पासे जुनुं बोलीश नहीं. सत्य कहीश सर्प बहार वांको चाले ने परंतु दरमां तो सिधोज चाले ने. आपनी पासे जूने होय ते साचो केम थइने चाली शके? ॥ ४ ॥

पेहेलां दिनतुं अपक्व जोजन मुजने ययो॥ सा०॥ विवाह अव सर देह चिंताए हुं गयो॥ सा०॥ पुंठल मेळो विवाह आवुं फरी जेटले॥ सा०॥ मारी न जोइवाट हुं गणती केटले॥ सा०॥ ५॥ कालो गोरो कुंवर में तो दीठो नही॥ सा०॥ मारा मननी होंश ते म नमांहे रही॥ सा०॥ निसुणी वचन नरिंद संशयमांहे पडयो ॥ सा०॥ जाएयुं ए पण डिंगमोले ठे अणघड्यो॥ सा०॥ ६॥

श्रर्थ ॥ प्रथमने दिवसे में खाधे हुं ते श्रजी ए श्रवाधी वेशवाद करवाने समये हुं जंगत जवाने गयो. हुं जेटलामां श्रावी पहों हुं तेटलामां मारी पाउल तेउए वेशवाद करी दी धुं. मारी राह पण न जोइ. हुं तेउंनी शुं गणतीमां ? ॥ ए ॥ ए कुंवर कालो है के गोरो ते कांइपण हुं जाणतो नथी. मारा मननी होंश मारा मनमांज रही है. बीजानी वात सांजली राजा संशयमां पड़ियो श्रने तेणे विचार करों के श्रापण श्रण्या है श्रने डिंगमारे हे श्रर्थात् साचुं बोलतो नथी. ॥ ६ ॥

त्रीजो बोख्यो प्रधान कपटथी जांजलो ॥सा०॥ मारी विनती एक प्रज्ञजी सांजलो ॥सा०॥ मेल्यो जाम विवाह पासे हुंपण नहतो ॥ कीधो नही स्थम स्थागल कुंवरने ढतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ सिंहल नृपनो जाणेज ते छहवाणो हतो॥सा०॥ कह्युं मुजने तुं राख जइ एहने जतो ॥ सा० ॥ में पण जेम तेम तेहने जूपति जोलव्यो सा० ॥ स्थावी जों कुंवर विवाह तो मेलव्यो ॥ सा० ॥ छ॥ ।

अर्थ ॥ कपटथी केलवायेलो त्रीजो प्रधान बोहयो के हे राजन्! मारी विनंति ध्यान दहने लक्षमां हयो. ज्यारे वेशवाल कर्युं त्यारे हुं पासे न हतो. मारी आगल कुंवरने उतोज कर्यों नथी, अर्थात् कुंवरने मने देखाड्योज नथी. ॥ ७ ॥ सिंहल राजानो जाणेज रींसायो हतो अने ते जागी जतो हतो तेथी मने कहुं के तमे त्यां जह तेने रोकी राखों में पण हे राजन्! तेना जाणेजने समजावी जेम तेम करी रोकी राख्यो अने पाउलथी आवी तपास करुं हुं तो वेशवाल थयेलुं मालम पड्युं ॥ ० ॥

में निव निरख्यो छुंबर कांणो के कूबडो ॥ सा० ॥ चूक्यो श्रवसर एह गुन्हेगार हुउ वको ॥सा०॥ विण दीठे तुम श्रागख केम दिठो कहुं ॥ सा० ॥ हुं तो स्वामी ताहरी छत्र छायामां रहुं ॥सा०॥९॥ शाकिनी तेपण एक तो मंदिर परिहरे॥सा०॥ तेम स्वामिथी सेवक माया केम करे ॥सा०॥ तेहने पण नरराये जुठो करी त्रेवड्यो ॥सा०॥परच्यो बोट्यामांहि बोखे ए हमबडयो ॥ सा०॥ १०॥

श्चर्य ॥ कुंबर काणो हतो के कुबड़ो हतो ते में तेने जोयों नश्ची तथी कही शकुं नहीं. ते अवसरे में चूक करी तथी हुं मोटो गुन्हेगार थयो हुं. कुंबरने में दीठो नही उतां हुं केम कहुं के में तेने दीठो छे. ? हे स्वामी! हुं तो तमारा आश्रय तलेज रेहेनार हुं. ॥ ए ॥ लोकीकमां कह्यं छे के—डाकण पण एक घर तो छोके छे. तेवी रीते सेवक जे छे ते बीजार्जनी साथे कदाच कपट करे परंतु पोताना धणीनी साथे कपट केम करे अर्थात् नज करे. राजाए बीजाने पण ज्हों छे एम मान्यो. तेने घडा वगरनो बोलतो जोइ तेनी बोल वामांश्चीज परीक्षा करी लीधी. ॥ १०॥

चोथाने कहे जूप वारो हवे ताहरो ॥ सा० ॥ जूठ कहीश तो वांक न काढीश माहरो ॥ सा० ॥ हुं रुठो नहीं कोश्नो पुछ तो कोश्ने ॥ सा० ॥ ते माटे मुज आगल बोलजे जोश्ने ॥सा०॥११॥ ते कहे साची वात समयने उल्ली ॥ सा०॥ कह्या सरली नही वात न चाले कह्या पत्नी ॥ सा० ॥ अमे गया सिंहल राय समी

पे चिंहुं जणा ॥साणा विवाह माटे वचन कह्यां एहने घणां ॥साणा १२॥

श्चर्य ॥ हवे राजाए चोथा मंत्रीने कहुं के तमारो कहेवानो वारो श्चाब्यों है. जे कहो ते साचुं कहे जो. जहुं कहा। पढ़ी मारो वांक काढशो नहीं. हुं रुट्या पढ़ी कोइनो नथी. शिक्षा शुं करवी ते बाबतमां कोइने पुछतो नथी. माटे मारी श्चागल जे बोलो ते विचारीने बोलजो. ॥ ११ ॥ चोथो मंत्री समयने जाए। साची वात कहे हे. जो के वात कहेवा सरखी नथी तोपए कह्याविना चाले तेम नथी. तेए कहुं के श्चमे सिंहल रायनी पासे चारे जए। गया श्चने वेशवाल माटे श्चमे तेने घए। विनंति करी. ॥ ११ ॥

मेहेनत करते जेम तेम हिंसके हाजणी ॥ सा० ॥ एम कहां कुंव र देखाडो नयणे शिरोमणी ॥ सा० ॥ कहां तेणे डेमोसाल निशा क्षे विद्या जणे ॥ सा० ॥ श्रमे हठ मांमयो कुंवर दिठा विणा नही बणे॥सा०॥१३॥ चिहुने एकेकी कोडी सोनइए जोलव्या ॥सा०॥ श्रमे तुम होता दास पण तेणे उंलव्या ॥सा०॥ मेलव्यो श्रमे विवाह यइने लालची ॥सा०॥ एम श्रमधी घणीवाते कपटाइ रची॥ सा०॥१४॥

श्चर्य ॥ श्चमे घण्य मेहनत ज्यारे करी त्यारे हिंसके ते वात पराणे कबुत करी. श्चमे कहां के श्चमारा मस्तकना मुगटनामिण सरखा कुंवरने श्चमने बतावो. तेणे कहां के कुंवरजी तो तेमने मोसाद रही विद्या-ज्यास करे हो. श्वमे जोवानी हह करी श्चने कहां के कुंवरने जोया विना श्चमारे चालशे नहीं. ॥ १३ ॥ श्चमने चारेने एक एक कोड सोनैया श्चापीने जोलवी दीधा श्चमे तमारा सेवक हता तोपण श्चमने तेना पोताना करी दीधा श्चमे लालचमां फसावाथी तेनी साथे वेशवाल कर्युं, वली तेर्चए श्चमारी साथे पण धणी कपटनी रचना करी. ॥ १४ ॥

श्रमं निव दी गे कुंबर कुरुप के फुटरो॥ सा०॥ हिंसक तो श्रमं दी गे चालतो कुटरो॥ सा०॥ एम श्रमं स्वामी वात हती ते वि नवी॥ सा०॥ गे ए साची सर्व न जाणशो केलवी॥ सा०॥ १५॥ एह पढी तकसीर करी मत वाजली॥ सा०॥ श्रमने करो महारा ज जे इन्ना राजली॥ सा०॥ मकरध्वजने चित्त ए वात खरी वसी ॥ सा०॥ ताहरी साची वात नृपति जापे हसी॥ सा०॥ १६॥

श्चर्य ॥ कुंवर कदरुपों ने के रुपालों ने ते श्चमें दीनों नथी. वली हिंसके श्चमारी साथे घणीज कपट रचना करी ते श्चमें जाणी। हे स्वामी! जे खरी वात हती ते श्चापनी पासे कही ने. ए साचीज वात ने. तेमां जरापण श्चसत्यता नथी. ॥ १५ ॥ श्चमारी वांकी बुद्धि श्ववाश्री ए गुन्हों श्चमाराश्री श्वयों ने हवे श्चापनी इन्ना होय तेम हे महाराज! श्चमल करों. मकरव्वज राजाने ए वात साची लागी श्वने राजाए जरा हसीने कहुं के हे प्रधान! तमारी वात साची ने. ॥ १६ ॥

साची जाणी प्रेमला श्रवगुण विसर्यो ॥ सा० ॥ जुर्ड कहेवो पुष्य गगनथी उतर्यो ॥ सा० ॥ त्रीजे उल्लासे श्रग्यारमी ढाल ए संथु णी ॥ सा० ॥ कहे मोइन ते रीऊरो जे होरो गुणी ॥ सा० ॥ १९ ॥

श्चर्य ॥ खरी वात जाणवामां श्चावी एटखे राजाने प्रेमखा ब्रह्मीनो दोष विस्मरण थयो. श्वर्ही किव कहे हो, जुर्छ पुष्यनो प्रजाव केवो हे ? जाणे साहात् श्चाकाशमांथी मूर्तिमान पुण्ये श्चावी राजानुं मन निर्मख कर्यु. त्रीजा छक्षासने विषे श्चगीश्चारमी ढाख कही. मोहनविजयजी महाराज कहे हे के जे गुणी हशे ते श्चा ढाखथी संतोष पामशे। ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

चोथे सत्य कह्या थकी, थयो जूप सुप्रसन्न ॥ ते चिंहु मुक्या जीवता, ए गुण गण संपन्न ॥ १॥ मकरध्वज सद् बुद्धिने, कहे वचन निःशं क ॥ जास्यो मज सिंहल कपट, पण नही कन्यावंक ॥ १॥

श्रर्थ ॥ चोथा प्रधाने साची हकीकत कह्याथी, राजा श्रत्यंत खुशी थयो. ते चारेने राजाए जीवत दान श्राप्युं. गुणनो समूह प्राप्त थयानी ए निशानी हे. ॥ १ ॥ मकरध्वज राजाए हवे सद्बुद्धि प्रधानने शंका रहित पणे कहुं के श्रा सर्व कपट मने सिंहल रायनुं जास्युं हे, श्रने श्रापणी कन्यानो लेश मात्र वांक नथी २

पराखो नर कोइ ख्रवर, एहमां नहीं संदेह ॥ कुष्टीए मुज पुत्रिका, मुधा विडंबी एह ॥ ३ ॥ सोरठपति कहे सचिवने, ज्यां खगी चंद विलंब ॥ त्यां खगी कबजे राखीए, सिंहलने सकुटुंब ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ मारी पुत्रीनी साथे कोइ बीजा पुरुषनुं परऐतर श्चरुं हे एमां जरापए संदेह नथी; श्चने श्चा को ही श्चाए मारी पुत्रीने फोकट विडंबना करी है. ॥ ३ ॥ सोरह देशनो स्वामी मकरध्वज राजा पोताना प्रधान ने कहे हे के हे प्रधानजी! ज्यांसुधी चंद राजानो पत्तो लागे नहीं त्यांसुधी सिंहल राजाने तेना छुटुं- व सहित श्चापए। कबजामां राखवो ॥ ४ ॥

ए उपाय नृपने गम्यो, कीधो बुद्धि प्रकाश ॥ तेमयो सिंहस नृप जणी जमवा निज श्रावास ॥ ५ ॥ नृप राणी कुष्टी सचिव, कपिला करी प्रपंच ॥ वश राख्या मकरध्वजे, जेम मुनि इंडी पंच ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ बुद्धिमां प्रकाश थवाथी राजाने ते जपाय सारो लाग्यो; श्चने तेथी सिंदल राजाने पोताने घेर जमवा नोतर्या. ॥ ५ ॥ त्यार पत्नी सिंदल राजा, तेनी राणी, कोढीयो पुत्र, हिंसक मंत्री श्चने कपिलाधाव ए पांचेने प्रपंच पूर्वक मकरध्वज राजाए, जेम मुनि पांचे इंडियोने कवजे राखे हे तेम कवजे करी दीधां.॥६॥

श्यवर खोक किथां विदा, तत्क्ण सिंहल देश ॥ चंद निरित लेवा जाणी, रचना रचे नरेश ॥ ७ ॥ तेकी पुत्री नृप सदन, मांड्यो शत्रुकार ॥ नृप कहे पथिकने पुरुजो, श्राजापति श्रधिकार ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ तेना बीजा सर्व समुदायने तत्काख सिंह्ख देश तरफ विदाय कर्यो त्यार पढ़ी चंद राजानी शोध खेवा सारु राजाए विचारनी रचना गोठववा मांडी. ॥ ७ ॥ प्रेमखा खड़ीने राजाए पोताने घेर तेडावी श्चने तेणीने कह्यं के हवे दान शाखा छघानो श्चने जे पंशीजन तमारी पासे दान खेवा श्चावे तेने श्चाजा नगरीना स्वामी संबंधी पुरुपरत करजो ॥ ० ॥

दान समर्पे प्रेमला, ऋति उष्ठक मन होय ॥ पुढे आजानी खबर, पण निव जाखे कोय ॥ ए॥

श्चर्य ॥ प्रेमला लही अति हर्ष सहित जेजे दान खेवा आवेछे तेमने सदात्रत आपे छे. वली तेर्जने आजानगरी संबंधी खबर पुछे छे. परंतु कोइ ते बाबतना समाचार आपतुं नथी. ॥ ए ॥

॥ ढाल १२ मी ॥

॥ मारूजी साथीडारे साथे धणरे हाथे मद पीडिरे लोख ॥ ए देशी ॥ जिया नृपनी बेटी गुणनी पेटी गेहथीरे लो, बेठी दाननी शाला लो ॥जिया मांगें जेम ध्यापे ते तेम नेहथी रे लो, बाला परम कृपालालोव ॥ जव ॥ १ ॥ उत्तम गेहे जनमीने हेजे सुतारे लो, प्राये होवे दाता लो ॥ जव ॥ पंथी देली करे विशेषे स्वागतारे लो, पूछे तेहने शाता लो ॥ जव ॥ १ ॥

श्रश्री। हे जन्यजीवो! हवे ते राजबाखा जे मात्र गुणनी एक पेटीज हे ते पोताने घेरथी दान शा-खामां श्राबी श्रत्यंत कृपायुक्त श्रंतःकरण्यी जे जे मांगण श्रावे हे तेमने जे जे तेर्च मांगेहे ते हर्ष-सहित श्रापे हे. ॥ १ ॥ किव कहे हे के जत्तम घरमां जन्मेखी कुंवरी स्वाजाविक रीते प्रायः दातार स्वजावनीज होय हे. हवे प्रेमखा खड़ी जे जे वटेमार्गुने देखेहे तेने प्रथम सुख शाता पुढ़ी तेनी विशेषे श्रागतास्वागता करे हे. ॥ २ ॥

नगरी आजा पूरण लाजा सुंदरा रे लो, पूरण पूरव देशे लो ॥ ज०॥ चंद नरेशर अति अलवेशर सिंधुरा रे लो, राजा सुरपति वेशे लो ॥ ज०॥ ३॥ परदेशी हो जो तमे प्रीहो गेहने रे लो, मुजनेतो तमो जालो लो ॥ जि ॥ प्रिंधी लहीटाणु कहे निव जाणुं एहने रे लो, नही श्रम तास श्रलाखो ॥जि ।। श्रश्री ॥ ते पुछे हे हे जाई! तमे पूर्व देशमां श्रितसुंदर श्रमे संपूर्ण समृद्धिवाली श्राजानगरी जेनो इं इना जेवो श्रत्यंत श्रुत्वीर एवो चंद नामनो राजाहे तेने तमो श्रोलखो हो? ॥३॥ वली पुछे हे के तमे पर देशी हो तेथी जो तमे तेने पी हानताहो तो तेना संबंधी सर्व वात मने कहो. ते सांजेली पंशी-जनो एम कहेता के श्रमे तेमने जाएता तो नश्री एटलुंज नहीं परंतु श्रमारो देश पण जुदो हे श्रमे ते देश पण जुदो है ॥ ॥ ॥

एहर्वी सुणी वाणी यह विखखाणी प्रेमला रे लो, प्रीतम गुणयी लीणी लो ॥ज्ञाकन्यानी कोइ स्थन्या निव चाले कला रे लो, विरहे यह स्थित कीणी लो ॥ज्ञायानिशदिन कूरे नदी पूरे रोइने रे लो, महारो पियु परदेशी लो॥ज्ञा वारी मन राखे निव संजाले कोइने रे लो, निपुणा नाह निवेशी लो॥ज्ञाह॥

श्रश्रं ॥ पोताना स्वामीना गुणमां खीन श्रयेखी प्रेमखा खड़ी ज्यारे पंथीजनोनां एवां वचनो सांजले हे स्यारे ते श्रास्यंत विद्याली पड़ी जाय हे. प्रेमखा खड़ी श्रानेकरीते पोताना स्वामीनी जाल मेखववा सारू कला केखवे हे परंतु ते कांइ काम लागती नथी. पतिना विरह्यी ते सुकावा लागी. ॥ ५॥ दिवस श्राने रात ते फुर्या करे हे. नदीना पूरनी जेम तेनी श्रांखमां श्रांसु वहे हे. श्रहो! मारो स्वामी परदेशी हे. एम विचार लावी पोताना मनने कबजे राखे हे श्राने पोते श्रात्यंत शाणी होवाथी पोताना मननी वात कोइनी पासे कहेती नथी. ॥ ६॥

जंघा चारण जनमन तारण आविया रे लो, विमला नयरी उद्याने लो ॥ज०॥ राजादिक रंगे प्रेमला संगे जाविया रे लो, वांदे वधते वाने लो० ॥ ज०॥७॥ संयमधारी दे हितकारी देशना रे लो, वाणी अमिय समाणी लो ॥ ज०॥ कीधां नरनारी व्रत आचारी जिनेशनां रे लो, समकित दृष्टि प्राणी लो ॥ज०॥७॥

श्चर्य ॥ एवा समयमां मनुष्योना श्चंतःकरणना पापने निर्मल करनारा एवा जंघाचारण मुनि विमला पुरीना जद्यानमां पधार्याः एवी वधाई वनपालके राजाने श्चापवाश्ची, राजाजी पोताना सर्व परिवारसाथे प्रेमला लहीने हर्ष सहित लई मुनिने वांदवा जल्लासजर श्चाच्या ॥ ७ ॥ ते संयमधारी मुनिराज जेमनी श्चमृत समान वाणी हे तेले जन्य जीवोने श्चत्यंत हितकारी देशना देवा लाग्या. श्चनेक स्त्री पुरुषोने पंच महावतधारी तथा बार व्रतधारी एवा साधु, साधवी, श्रावक श्चने श्राविका कर्या जिनेश्वर जगवाने प्ररूपेला सम्यग् दर्शननो बोध श्चापी कइक जीवोने सम्यग् दृष्टि कर्या ॥ ७ ॥

मुनिये की धी प्रेमला सूधी श्राविका लो, पूरण जिननी रागी लो ॥ ज०॥ चै।द पूरवना सारनी हुइ जाविका लो, विहर्या श्रन्यत्र विजागी लो ॥ज०॥ए॥ सहु यह श्राव्या थया मन जाव्या सर्वना रे लो, पाम्या परम श्रानंदा लो॥ज०॥ धर्म श्राराधे सविविध साधे पर्वनारे लो, पुत्री समकित कंदा लो ॥ ज०॥१०॥

श्रश्रं॥ ते मुनिराजे प्रेमला ल्रिने शुद्ध श्राविका, जिनेश्वर जगवानना गुणनी संपूर्ण रागवाली ब-नावी. ते चौद पूर्वनो सार जे नवकारमंत्र तेनो निरंतर जाप जपवा लागी; श्राने श्रात्यंत जाग्यना स्वामी एवा मुनिराज श्रान्यत्र विहार करीगया. ॥ ए ॥ सहु परिवार पोताने घेर श्राव्यो. सर्वना मननी श्राजिन लापा पूर्ण श्रार्व, सर्वे परम श्रानंद पाम्या. हवे समकितना कंदरूप प्रेमला ल्रिनी पर्वना दिवसोमां जेम, तेम सर्व दिवसोमां विधि पूर्वक धर्मनुं श्राराधन करे हे. ॥ १०॥

तेह मृगान्नी प्रेमला लन्नी धर्ममां रे लो, हुइ निपटज माही लो ॥ प्राण्या पूजे जिनदेवा करे नित सेवा कुशली कर्ममां रे लो, गुरुना गुणनी प्राही ॥ प्राण्या १॥ नवकार प्रजावे स्थावे शासन देवतारे लो, पत्राणे पुत्रीने हरखे लो ॥ प्राण्या ॥ मक्षशे तुज स्वामी स्थंतरजामी सेवतारे लो, पूरण सोक्षे वरषे लो ॥ प्राण्या १॥॥

श्रर्थ ॥ हवे मृगाङ्गी प्रेमला लही धर्ममां श्रत्यंत कुशल श्रवाश्री श्रने डाही होवाश्री, गुरूना गुणने श्रंतः करणमां धारण करी राखीने, जिनेश्वर जगवाननी निरंतर ज्ञ्य जावश्री सेवा करे हे श्रने ते कि-यामां श्रत्यंत कुशल श्रई हे. ॥ ११ ॥ नवकार मंत्रनो निरंतर जाप जपवाना प्रजावश्री शासन देवी प्रेमला लहीने हर्ष सहित श्रावीने कहेहे के हे पुत्री! श्ररिहंत परमात्मानी सेवनाना प्रजावश्री तारो स्वामीनाथ तने संपूर्ण सोल वर्ष प्राप्त श्रहो. ॥ १२ ॥

जज जगवंता मकरीश चिंता आजथी लो, एम कहीने गइ देवी लो ॥ ज०॥ देवीनुं जाल्युं जनकने आल्युं अलाजथी रे लो, हरस्यो तात सुटेवी लो ॥ज०॥१३॥ पंच चरणथी अवी पूरण आसता रे लो, मुखथी जजन न मूके लो ॥ज०॥ वंदेने चिरनंदे चैलजे शाश्वतारे लो, प्रत्याख्यान न चूके लो ॥ ज० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ हे पुत्री! तुं श्चरिहंत परमात्मानुं निरंतर ज्ञजन करजे. श्चाजथी चिंता तजी देजे. एम कहीने देवी विसर्जन श्वरः देवीनां वचनो खाज रहितपणे प्रेमखा खड़ीए पिताने कह्यां जे सांजलीने छत्तम देव-वाखो ते पिता हर्ष पाम्यो. ॥ १३ ॥ पंच परमेष्ठी मंत्र छपर पूर्ण श्रद्धा श्रवाथी तेनो जाप मुखशी जरा पण तजती नथी. जे जे शास्वतां जिन मंदिरो हे तेनुं श्चर्यंत श्चानंद सहित वंदन करवा खागी; श्चने प्रत्याख्यानमां अर्थात् विरतिपणामां पण चुक कर्याविना प्रवर्त्तवा खागी. ॥ १४ ॥

जावी तिहां तेहवे आवी एहवे जोगणी रे लो, वाय मधुरी वीणा लो ॥जणा कुंवरी ते तेडी नेकी विनतीए घणी रे लो, निसुष्यां स्वर तस जीणां लो॥जणा १५॥ कोण देशथी आवी कहे समजावी मुजने रे लो, एम नृप पुत्री पुढे लो,॥जणा पूरविदेशे रहुं हुं सत्य कहुं हुं तुजने लो, ताहरे कारण हुं हे लो ॥जणा १६॥

श्रिश्री। जिन्नित्यताना योगे एवा समयमां एक योगिनी ते स्थले श्रावी चडी. ते श्रात्यंत मीठीवीणा वगाडती हती. कुंवरीए तेणीने स्नेह्श्री तेडावी विनंति करी श्राने तेणीनी पासे वीणाना सुंदर फीणा स्वरनो श्रानंद लीधो. ।। १५।। राजकुंवरीए ते योगिनीने पुरुषुं के तमे क्या देशश्री श्राच्यां हो ते खुलासाश्री कहो. योगिनीए कह्युं के हुं पूर्व दिशीमां रहुं हुं ते वात सत्य हे. परंतु ते वात पुरुवानुं तमारे शुं कारण हे ? ॥ १६॥

कनक वरणी रूपे घरणी रूमी ए योगिणी रे लो, वैरागे चित्त जीनो लो, ॥ ज० ॥ चीवररंगी बुद्धिचंगी सुंदर मुखी जोगिणी रे लो, गावे चंद नगीनो लो ॥ ज० ॥ १७ ॥ कोण्डे तिहां राजा गरीव निवाजा कहो खरी रे लो, योगण ताम पयंपे लो ॥ ज० ॥ तिहां चंद नरेसर काया केसर जाकरी रे लो, जेइथी श्रिरयण कंपे लो ॥ ज० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ सुवर्ण जेवी कान्तिवाली, सुंदर वेषने धारण करेली, वैराग्यश्री श्रंतःकरणमां जिंजायेली, रंगित वस्त्रवाली, मनोहर बुद्धिवाली, सुंदर मुखवाली, ज्ञान रसनी जोक्ता एवीते योगिनी चंद नृपतिनां गीत गाती हती. ॥ १९ ॥ हे योगिनी ! ते देशमां गरीबोनुं आश्रयस्थान एवो कयो राजा हे ? खरी वात कहो. ते सांजली योगिनीए कह्युं के केशरना जेवी जेना शरीरनी मनोहर कान्ति हे अने जेनाश्री छुरमनो धुजे हे एवो ते देशमां चंद नामनो राजा हे. ॥ १० ॥

गाउं यश तेहनो खाउं एहनो टुकमो रे खो, मुजने प्राण्यी प्यारो खो ॥ ज० ॥ कीधो तस माते कोइ वाते क्रकमो रे खो, मुक्यो में तव न्यारो खो ॥ ज० ॥ १ए ॥ तिहां हुं सुख्यी तेहना छःख्यी निसरी रे खो, एम हुं तीरय माटे खो ॥ ज० ॥ चंद सरीखो पुरुषन निर्ख्यो को फिरी रे खो, ठाती विरहे फाटे खो ॥ ज० ॥ १० ॥

श्चर्ष ॥ हुं तेना यशनुंज गायन करूं बुं. तेनुंज श्चन्नखाउं बुं. ते मने प्राण करतांपण वधारे वहादों हे. तेनी उरमान मानाए तेने कोइक कारणथी कुकड़ो बनाव्यों हे. तेम श्ववाधी में तेने तजी दीधों हे ॥ १ए ॥ त्यां हुं सुख्यी रेहें जीहती; परंतु श्चा तेनुं दुःख खागवाथी हुं तीर्थयात्रा माटे निकली पनी बुं. चंद राजा समान बीजों कोइ पुरुष फरी श्चत्यार सुधी देखवामां श्चाव्यों नथी. तेना वियोगथी मारूं श्चंतःकरण चिराइ जाय हे. ॥ २०॥

स्वामि नामे पामी श्रानंद प्रेमला रे लो, चाली श्रवधु चेली लो ॥ ज०॥ ताते पण जाणी योगीणी वाणी श्राटकली रे लो, कन्या जाणी चित्रावेली लो ॥ ज०॥ ११ ॥ ताते कह्युं साची हुइ दीकरी रे लो, फलरो धर्मनो वेलो लो ॥ ज०॥ पराखो ए पटंतर निपट इरंतर देशांतरी रे लो, ए तो मेलो दोहिलो ॥ ज०॥ ११ ॥

अर्थ । प्रेमखा बाजी पोताना प्राणनायनुं नाम सांजखताज हर्ष पामी अने ते योगिनीने साथे खइ पो-ताना पितापासे आवी. मकरध्वज राजाए पण योगिनीनी वात सांजखी खरोममें जाणी खीधो अने प्रेमखा खड़ीने कहुं के हे पुत्री तुं चित्रावेखी समान हे. ॥ २१ ॥ पिताए कहुं के हे पुत्री तारी जे याचना हती ते साची हरी अने तारी आराधनाथी धर्म फखी जूत थरों. तारी साथे गुप्त जेदथी परणनार देशांतरनो रेहेनार ए महा कुशख पुरुषहे अने तेनो मेखाप थवो पण बहुज मुस्केख हे. ॥ २२ ॥

धीरजतुं धरजे परहा करजे श्रांमला रे लो, दीए एम जनक दिला सा लो ॥ ज० ॥ निगमे एम दिहा पियु पियु जहा प्रेमला रे लो, धरती प्रीतम ख्राशा लो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चंद नृपतिनो संबंध हवे तमे सांजलो रे खो,कीधी जे वात विमाते लो॥ज०॥सुख छःख देखी जूलो मत कोइ श्रा फलो रे लो, जोर लिखितनी वाते लो ॥ज०॥१४॥

अर्थ ॥ प्रेमदा बहीने तेनो पिता दिखासा आपी कहें हे चुत्री तुं धेर्य धारण करजे अने मनमां आवता आमलाने दूर करजे. पितानां वचनथी प्रेमला बही जीजना अग्रजाग उपर पितनुं स्मरण राखती दिवसो निर्ममन करे हे अने पितना मेखापनी आशा धारण करी रही है ॥ १३ ॥ कविराज कहें हे के हवे चंदराजानी शी दशा तेनी उरमान माताए करी तेनो विस्तारथी हेवाल कहुं हुं ते सांजलजो आ जगतमां सुख अने छु:ख प्राणी उने प्राप्त थतां जोइ कोइ जूलमां पडशो नहीं अने ज्यां त्यां फां फां मारशो नहीं. ए सर्व कमेने आधीन हे तेनी पासे कोइनुं जोर चालतुं नथी। ॥ १४ ॥

एह कथा श्रोताने ज्ञान प्रकाशनीरे खो, मूरखे निसुणी निगमी खो ॥ ज०॥ जाखी मोहन विजये त्रीजा उल्लासनी रे खो, सुंदर ढाल ए वारमी खो॥ज०॥१५॥ श्रश्रं॥ श्रा वार्ता श्रोतार्जने ज्ञान प्राप्त करावनारी हे अने तेमां जे मूर्ख हशे तेतो सांजलीने प्रहण नहीं करतां गुमावीदेशे. मोहन विजयजी महाराजे त्रीजा उल्लासनी सुंदर बारमी ढाल उपर प्रमाणे कही. ॥ दोहा ॥

कुर्कटचंद थया पढ़ी, थयो एक मास व्यतीत ॥ नकरे प्रगट गुणावली, सासु पीतल प्रीत ॥ १ ॥ श्राजा नगरीना जन सकल, विना नृपति श्रकलाय ॥ जइ प्रधानने विनव्युं, श्रम जेटावो राय ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ चंद राजाने कुकडो बनाव्याने एकमास वीती गयावतां गुणावली राणी ते वात कोइनी पासे जाहेर करती नही. ते जाणती हती के सासुनी प्रीति खोटी है. ॥ १ ॥ श्चाना नगरीनी सघली प्रजाने न देखवाथी श्वकलावा मांडी तेथी तेमणे प्रधानने जइ विनंति करीके चंदमहाराजानो श्वमने मेलाप करावो.

जो नृप निरखाको नही, तुमे आज सुविशेष ॥ तो तुमे अमने शीख द्यो, वसग्रुं जइ विदेश ॥ ३ ॥ दया विद्वणो धर्म जेम, कुलविण नर जवजेम ॥ दंती दंत विना यथा, नृपविण नगरी तेम ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ जो राजा साहेबनो मेखाप श्चाजेज श्चमने सारी रीते करावशो नहीं तो श्चमे विनंति करी एकी ए के श्चमने श्चहीं श्री जवानी रजा श्चापो. श्चमे बीजा देशमां जई रहेशुं. ॥ ३ ॥ जेम दयाविनानो धर्म शोजतो नश्ची, जेम खंतुशखविना हाश्ची शोजतो नश्ची, तेम राजाविना नगरी शोजती नश्ची. ॥ ४ ॥

राजा राज्य प्रजा सुखी, एह रीति सर्वत्र ॥ वनमांहे स्वामीविना, परवरवुं एकत्र ॥ ५ ॥ सचित्र कहेरे सहोदरो, में पण नृपति न दीठ ॥ मुज पण एहवी कल्पना, हैडामांही पइठ ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ राजा राज्यासन जपर होय त्यारेज प्रजा सुखी होय हे. ए रीति सर्वत्र हे. तेथी जो श्रमारो स्वामी देखवामां नहीं श्रावेतो श्रमे सर्वे वनमां एकहा जइ रेहेवानो विचार कर्यो हे. ॥ ५ ॥ प्रधाने कहां

के हे जाइन में पण राजाने घणा वखत यया दीठा नथी तेथी तमे जेम धारोठो तेवी धारणा मारा श्रंतःकरणमां पण घइ रही हे.॥ ६॥

कहीश विचारी एहनो, तमने सरवे जेद ॥ नगरी मांहि सुखे रहो, कोइन करशो खेद ॥ ७ ॥ सनमानी सचिवे प्रजा, पहोता सहु श्रागार ॥ वीरमतीने मंत्रीए, कह्यो प्रजा श्रधिकार ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ ते संबंधी विचार करी तथा तपास करी जे वात जाएवामां श्चावहो तेनो मर्म तमने हुं जाए-वीहा. तमे नगरमां सुखे रहोः कोइ खेद करहोा नही. ॥ ७ ॥ प्रधाने प्रजामंक्खने विवेक युक्त समजाबी सन्मान साथे विदाय कर्याबाद सहु पोत पोताने घेर गया. त्यार पठी वीरमतीने राएीने प्रधाने प्रजामंक-खनो सर्व हेवाल जाएाच्यो. ॥ ७ ॥

> ॥ ढाल १३ मी ॥ ॥ राग बिहावडो ॥ उरो उरो रे गिरधारी उरो रे, तारा पगनोरे समारू तोरो रे ॥ ए देशी ॥

तेह मंत्री माता जाणी कहे, एम जूपित ठानो केम रहे ॥ आवी मुजने कहें प्रजा, अमने वेखासर द्यो रजा ॥ १॥ शाने राख्यो तमे नृप संग्रही, ए तो वात कांइ वारू नही ॥ रीस चमतो तमे द्यो गाखी, पण नकरो मित तमे स्त्रीवाखी॥ १॥ अर्थ ॥ मंत्रीए आवीने वीरमतीने कहां के हे राजमाता हवे राजाजी ठाना केवीरीते रही शकशे १ प्रजातो मने वारंवार आवीने कहे ठे के अमने विदेश जवानी जखदी रजा आपो ॥ १॥ तमे राजाजीने कबजे राख्या छ वात कांइ सारी खागती नथी। तमने जो रीस चडे तो सुखेथी मने गाखो देवा मांडजो, परंतु आवी स्त्री बुद्धि करो नहीं। स्त्रीनी मित पानीए एवी कहेवत साची करो नहीं। ॥ १॥

नित्य प्रत्ये पुरजनने द्युं जांखु, जेम तेम करी तेमने हुं राखुं॥ मास थयो एम एक घणो, तोये पार न पाम्यो हुं तुम तणो ॥३॥ सहु लोकने मन संशय थयो, नृपचंद न दिसे कहां गयो॥ नृप विण राज विधुंसलां, ते तो ठाले जखल वे मुशला ॥ ४॥

श्रर्थ ॥ नागरिक खोको हमेशां श्रावी मने पुत्रया करेत्रे, तेलेने हुं शुं जवाब दलं ? तेलेने महा महेनते समजावीने राखुं ढुं. खोकोने धीरज श्रापता एक मास वीती गयो परंतु हुं तमारा श्रंतःकरएनो कांइ पार पामी शकतो नथी. ॥३॥ सर्व खोकना मनमां एवी शंका श्रद्धे के राजाजी देखाता नथी तेथी क्यां गया हशे. खोको कहेत्रे के राजा विनानी राज्यगादी तेतो खाखी खांडएीयामां बे सांबेखा राखवाजेवुं ते. ॥४॥

तमे मानो श्रथवा निव मानो, तमे चंदने राख्यो सही ठानो ॥ बेठा तमे ठो मोटी गादी, घणी जावा द्यो ठोकरवादी ॥ ५॥ जाप्यो कारण लोक श्रशातानो, पण मन निव जेद्यो विमातानो॥ मंत्रीए कह्युं देइ तानो, पण न चडे पावइए पानो॥ ६॥ श्चर्य ॥ तमे मानो के न मानो पण लोको कहे हे के चंदराजाने तमे गुप्त राख्यो है. तमे मोटा राज्यासने चड़ी बेहां हो पण तम करतुं ते हो करवादी जे बुंहे माटे ते बहु सारूं नथी। ॥ ५ ॥ वीरमतीए लोकने जे श्वशाता थती हती तेनुं सर्व कारण जाएयुं परंतु तेणीनुं मन लेशमात्र पलस्युं नही. मंत्रीए चानक लागे तेवां घणां वचनो कह्यां परंतु पावैयाने जेम पानो चड़े नहीं तेम तेने पण कांइ श्वसर थड़ नही. ॥ ६ ॥

कहे वीरमती सुणरे मंत्री, में तो चंद नथी राख्यो यंत्री ॥ वांक ए हे पण सिव तारो, केम अवगुण गाय तुं मारो ॥ ७ ॥ इखो चंदजे हतो मुज प्यारो, तुज सरखो नहीं कोइ हत्यारो ॥ कहेवो यइ आव्यो हे माह्यो, वली ह्युं करवा तुं जमाह्यो ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ वीरमतीए कह्यंके हे मंत्री में कांड् चंदराजाने कवजे राख्यो नथी. ते बाबतमां सघलो तारो वांक है. तुं केम मारा श्रवगुण ज्यां त्यां गायहे? ॥ ७ ॥ मारा वहाला चंदने तेंज हप्योहे. तारो जेवो कोड़ हत्यारो (पातकी) नथी. वली मारी श्रागल श्रावी केवो डाह्यो श्रइने वातो करेहे श्रने कहेके हवे तुं शुं करवा धारेहे. ॥ ७ ॥

बहु दीन यया वाततो श्रमे लाधी पण राखी में ताहरी बाधी ॥ हुं जुंमीतो तुं क्यो रूडो, एक छुरमुखंडे बीजो कूडो ॥ ए ॥ जो श्रव गुण गाइश तुं मारो, उखेलो उखेलीश हुं तारो ॥ चुए वादो वादे कहेवा, कोना नलीश्राने कोना नेवा ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ मारा जाणवामां त्रा वात बहु दिवस श्रया श्चावीठे, परंतु तारी लाज जालववा में ते ठानीवात राखीठे. हुं तो जुंमीछं परंतु तुं शुं सारो ठे ? एकतुं मोढुं जेवा जोगनश्ची श्चने बीजो महाकपटीठे, एवो घाट श्रयो ठे. ॥ ए ॥ जो तुं मारा श्ववगुण गाइश तो हुं तारे माटे बोलवामां कचाश राखीश नही. बहु वाद विवाद करी लवारामां सारनश्ची. कोइनां नेवां चुवेतो कोइनां नलीश्चां चुवे ज्यां त्यां ठिजोठे. ॥१०॥

कहे मंत्रीमाता एम कां जाखो, थया घरडां पण समज न राखो।। में नृप हत्यो तेहनो कोइ साखी, एम जीवती न गखा ए मांखी।। ११॥ बाइ बोख विचारी ए शुं बोख्या, केम वाहोडो एम अण

तोख्या ॥ काढशो खोटे काढण केहो, तमे कांइक प्रजुश्री तो बीहो ॥ १२ ॥ श्रश्री ॥ मंत्रीए कछुंके हे राजमाता आवुं शुं बोखोठो हिवे वृद्ध थयाठो, कांइ समजण राखो तो ठीक में राजाजीने मारीनांख्या एवातमां कोइ साही हशे के नही ! शुं जीवती मांखीतो गखाशे नही ? ॥११॥ हे माताजी ! श्राम वगर विचारे शुं बोखि नांखोठो. श्रातो तोख्याविना फेंकवा मांख्या जेवुं करोठो. खोटो वांक काढी शुं खाज काढशो. कांइ परमेश्वरनीतो बीक राखो. ॥ १२ ॥

एह शीखनी वात कहा माटे, तमे कीधुं खूण घणुं श्राटे ॥ जाएयुं में तमे थाशो राजी, पण तमे खेखा जलटी बाजी ॥ १३ ॥ माता एतो रूमी नही जासा, एम कीजे नही जाजी हासा ॥ हुं नृप हणुं केने बहाने, बाद बोलोए एवुं जे कोइ माने ॥ १४ ॥ श्रर्थ ॥ में तो तमने जरा शिखामण्नी वात करी तो तमे तो सामुं खोट करतां वधारे खूण जेखवा जेवुं कर्युं. हुं तो एम जाण्तो हतो के मारी वातश्री तमे राजी श्रशो परंतु तमे तो श्रविधीज बाजी खेखवा मांकी. ॥ १३ ॥ हे राजमाता ! श्रावुं बोखवुं ते सारू कहेवायनहीं विधी हे जाजीजी ! श्रावी मस्करी पण होय नहीं. मने राजाजीने मारवानुं शुं कारण्डे ? बाइ एवं बोखोके कोइ साचुं माने. ॥ १४ ॥

कहे वीरमती मंत्री तेनी, कांरे चंदनी वात ते आवी वेडी ॥ एक उघानो जो एक ढांको, होवे वांके खाकन वेज वांको ॥ १५ ॥ हुं तो कहुं हुं वात तने घरनी, नृप साधे विद्या विद्याधरनी ॥ नाम ए चंद तणुं नवी खीजे, कोइ आपण नवसी कखा कीजे ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ वीरमतीए मंत्रीने खानगीरीते बोद्यावी कहुं के तमने चंदनी वात श्चावीरीते बेडवामां शुं खा-त्रके. एकनुं छघाडतां बीजानुं ढंकाशे नहीं विद्या वाके खाकमे तो वांको वेज पडे. ॥ १५ ॥ हुं तमने एक बानी वात कहुं हुं. राजातो विद्याधरनी विद्या साधे हे. दुंकामां कहुं हुं के द्वे चंदनुं नाम क्षेवानी जरूर नथी. कांइक नवीन रचना हवे करवानी जरूर हे. ॥ १६ ॥

मुज मंत्री तुं तेम हुं राजा, वजहावो जइने जशवाजा ॥ जो मुज कह्युं चित्त निव धर्युं, जाणीश तो तुं तारूं कर्युं ॥ १९ ॥ जीहां त्रू पतिथह हुं सन्मुखी, तिहां राजा राज्य प्रजा सुखी ॥ कहें मंत्री धरीने मन शाता, ए में तो प्रमाण कर्युं माता ॥ १० ॥

श्चर्य ।। तमे मारा मंत्रीने हुं तमारी राजा एवो छदघोषणानो डंको वगनावो. श्चा मारी वातजो बराबर चित्तमां राखी श्चमत करशो नहीं तो तमे जे करशो तेनो पाको पस्तावो तमने थशे. ॥ १९॥ ज्यां हुं प्रगटरीते राजा श्वइश त्यां राजा श्चने प्रजा बंने सुखीश्चशे. प्रधाने उंडो विचारकरी मनमां शांति धरीने जवाब श्चाप्यो के हे माता में श्चापनी वात श्चंगीकार करीते. ॥ १०॥

थइ राजी वीरमती राणी, ए कही तेरमी ढाल गुण खाणी॥ त्रीजा उल्लास तणी वारू, एह मोहने श्रोताजन सारू॥१ए॥

श्रर्थ ॥ प्रधाननां वचनथी वीरमती राणी खुशीयइः गुंखनी खाणरूप त्रीजा जहासनी तेरमी ढाख मोहनविजयजी महाराजे श्रोतार्जने सारू श्रति मनोहर करीं ।। १ए॥

॥ दोहा ॥

एक वात कर तुं हवे, पमह जइ वजडाव ॥ यइ आजानगरी तणी, वीरमती नर राव ॥ १ ॥ जो एहनी आणा प्रजा, नही माने एणी वार ॥ ते जाणहो तेहनुं कर्युं, ते नहीं नगरी मोजार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ वीरमतीए प्रधानने कहुंके हे मंत्री तमे हवे एक काम करों नगरमां जड़ ढंढेरो पिटावोके श्चानागरीना राजा हवेथी वीरमती श्रयां ।। १ ॥ वली एउं पण ढंढेरो पिटावजो के लोको श्चा वल तथीज तेमनी श्चाझा शिर नहीं चढावे तो तेनुं फल तेर्ड पुरीरीते जोगवशे एटलुंज नही पण तेने नगर बहार करवामां श्चावशे. ॥ २ ॥

श्राजा जस श्रव्यवामणी, यमपुर वल्लज जात ॥ ते श्रनमी यार्ड सुखे, एम कहो वचन प्रकाश ॥ ३ ॥ मंत्रिए फेर्यो पडह, वीरमती श्रादेश ॥ नगरी जन निसुणी कहे, श्रद्ध श्रद्ध श्रयं विशेष ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ वसी एवी रीते छद्घोषणा करावोके जेने श्चाजानगरी श्चसखामणी सागती होय श्चने यमपुरी वहासी सागतीहोय ते वीरमतीने नहीं नमतां सुखी रहेवुं होय तो जले श्वाडाइ करो. ॥ ३ ॥ मंत्रीए ज्यारे वीरमतीना हुकमधी श्वावो पडह वजडाव्यो त्यारे नगरनां स्नोको श्वाश्चर्य पामी बोसवा सांग्याके श्वातो वसी जारे नवाइ सागेटे. ॥ ४ ॥

नारीपित नर सांजिह्या, नरपित नारिविहीन ॥ ए तो श्रचरिज सां जिह्युं, श्राजामांहे नवीन ॥ ५ ॥ स्त्रिया राज्य नगरी थयुं, किहां नर गथा विवेद ॥ पडह सुणीने सकलजन, चित्तमां पाम्या खेद ॥६॥

श्रर्थ ॥ पुरुषना स्वामी स्त्री होय एवं तो सांजलवामां श्राब्युं नथी; श्रने तेवीरीते पुरुषना स्वामी स्त्री श्रयानुं श्राश्चर्य तो मात्र श्राजा नगरीमांज सांजल्युं. ॥ ए ॥ शुं पुरुषोनो नाशश्रयो के श्रा नगरीमां स्त्री राजा श्रयों? श्रावो पडहो सांजलीने नगरना सर्व लोको मनमां बहुज खेद पाम्यां. ॥ ६ ॥

वीरमतीना जयथकी, सघले कर्युं प्रमाण ॥ राज रुद्धि एम जो गवे, राणी श्रमली माण ॥७॥ वचन नलोपी कोइ शके, शुरा कोण सामंत ॥ ते संजारे चंदने, रूठ्यो जास कृतंत ॥ ए ॥

श्चर्य ॥ वीरमतीना त्रासश्ची सर्व बोकोए मंत्रीनी उद्घोषणा मान्यकरी. हवे राणी पोताना श्चमखमां मस्त रहेखी राज्य वैज्ञवनो उपजोग करे हे. ॥ ९ ॥ वीरमतीनी श्चाका कोक्पण खोपी क्षकतुं नश्ची. पही जखे ते शुरवीर योघो होयके मोटो सामंत होय! श्चने जे चंदराजाने कदापि याद करीदे तो तेनो तो कृतांत जे काख ते कोप्योज समजवो. ॥ ८ ॥

॥ ढाख १४ मी ॥ ॥ इण पुर कंबल कोइ न क्षेत्रो ॥ ए देशी ॥

राणी मंत्री उपर हरखी, जाएयं जोडी मिली मुज सरखी॥ जेम हुं गाउं तेम ए वजावे, चंद एणे करी मुक्यो मावे॥१॥ एक दिन सुमित घरीमन ठागो, वीरमतीथी वाते लागो॥बाइजी तमे राज्य सुधार्यो, चंद तणो वारो विसार्यो॥१॥

श्रर्थ ॥ वीरमती राणी मंत्री उपर श्रत्यंत प्रसन्न थइ. तेणीए जाणी खीधुं के जेवी जोइए तेवी जोडी मखी गइ हे हुं जेम गाउं हुं तेमज ए वगामे हे. श्रश्चीत् मारा हुकमने श्रनुसरतुंज कार्य करे हे ए- टक्कुंज नहीं पण चंदराजा संबंधी वात पण उचारतो नथी. जाणे चंदने डाबो करी मुक्यो होय नहीं ॥१॥ एक दिवस सुमित प्रधान ठावको थइ वीरमती साथे वातो करवा बेहो. हे राणीजी ! तमेतो राज्यनी एवी सुधारणा करी के कोइ चंदने संजारतुंज नथी. ॥ १॥

कोइ पम्ड्युं कोइनुं न उपामे, काम तमारूं कोन बिगाडे ॥ एहवीतो कोणेइ नकरी, जेखा जख पीए वाघने बकरी ॥ ३ ॥ चाम तणा जो दाम चखवो, तो आवी नकरे कोइ दावो ॥ कोइन जरे पगहुं अणजाणी, रहेशे युगे युग एह कहाणी॥॥॥

श्चर्य ॥ कोइनी पमेली चीज श्चन्य कोइलेतुंज नथी. वली तमारूं काम पण कोइ बगाडतुं नथी. राजातो घणा थया परंतु तमारा जेवुं राज्य कोइनुं नथी. इनसाफ तो एवो हे के वाघने वकरी एक श्चारे पाणी पीए हे. ॥ ३ ॥ जो तमे चामडानी नोटोकरी तेने नाणा रूपे चलावशो तोपण तमारी सामे कोइ वांघो लावनारनथी. कोइ पण एवो श्चकान नथी के तमारी सामे पगलुं जरी शके. जो तेम करशो तो जुगे जुग तमारूं नाम रहेशे. ॥ ४ ॥

त्रूप घणां जोया वली जोइश, पण तुम श्रागल सघला पोइश ॥ न धरो खेद युवति थया माटे, सहुने धरणी है शिर साटे ॥ ५ ॥ श्रव रजो वृद्धावस्था पामे, थइ बेवड सहुने शिर नामे ॥ खरूं वृद्धपणुं त मतणुंबाइ, नृपति घणे जे कोट नमाइ ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ में श्चन्क राजा जोयाने, वाधी जोड़रा खरो, परंतु ते सघदा तमारी पासे देह जेवा खागेने. तमे स्त्री श्वयां तेश्री खेद करशो नहीं. जाणे ते सघदाार्जने पृथ्वीतो शिर साटे होय ने. ॥ ५॥ बीजा जेर्ज वृद्ध श्वड् जायने तेर्ज सर्वे तदन वांका वाधी जड़ बीजार्जने पोताना मस्तक नमावी नमे ने. तमारूंज वृद्ध-पणुं खरूं के जेणे घणा राजार्जनां मस्तक नमान्यां. ॥ ६॥

तिसुणी वीरमती थइ राजी, पण निग्रणी मन मांहे न खाजी ॥ हे मंत्री सेवक तुं महारो, कथन नहीं छह्नंघुं तहारो ॥७॥ मंत्री मनमां चिंते माया, वाघ तणे वोखावे धाया ॥ पिंजरमांहि कुर्कट एहवे, सुमित मंत्रीए दीठो तेहवे ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ प्रधाननां एवां खुशामतनां वचनो सांजली वीरमती राजी श्चर, परंतु ते निर्गुणीने मनमां जरा-पण शरम श्चावी नहीं. मंत्रीने तेणीए कह्युं के हे मंत्री तमे मारा खरा सेवकडों. तमारूं वचन हुं कदापि लोपीश नहीं. ॥ ७ ॥ मंत्री मनमां कपटथी एवुं चिंतवेडेके श्चापणे तो वाधनुं वोलावुं डे. तेवामां ते सु-मति मंत्रीए पांजरामांहे कुकडाने दीडों. ॥ ० ॥

बाइ तमे राख्यो ग्रुं विचारी, पिंजरीए पंखी परधारी ॥ के कोइ देव तमे वश कीघो, एहनो तो जोशे उत्तर दीघो ॥ए॥ बोझी वीरमती कोइ घाटे, ए मुज व हुने रमवा माटे ॥ खीघो श्रमे पंखीवेचातो, राख्यो बिचारो माहुयातो ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हे राणिजी आ ते तमे शुं विचारकरीने आ पक्षीने पांजरामां पुरी राख्योग्ने? शुं कोइ देवनेतो वश करी राख्यो नथी? आदखो तो खुखामो करवो जोइशे? ॥ ए ॥ वीरमती कांइक युक्तिपुर्वक विचार करी बोखीके मारी वहुने आनंद करवामाटे ए पक्षी राखेखग्ने. ए विचारो बहु हेरान अतो हतो तेश्री तेने वेचातो खड़ने राखेखग्ने. ॥ १० ॥

राख्यों जीवदयाने जाणी, ज्यां लगी एहनो दाणो पाणी ॥ खाधुं ए पण क्षेखे ख गाडे, प्रञ्ज जजवामुज वेहेखी जगाडे ॥११॥ कहे मंत्री बाइजी कहेशो, पण द फतर न चड्यों वे पैसो ॥ तुम जंडार नथी मुज वानुं,केम करी किटपत वात ए मानुं११

श्चर्य ॥ जीवदया सचवारो एम जाणीने तेने राखेल हे परंतु ज्यां सुधी तेनो दाणोपाणी श्चापणे त्यां हरो त्यां सुधी रहेशे. ए तो जे खायहे ते हक करेहे. परमेश्वरनुं जजन करवा सवारमां रोज वेहेलां मने जगामेहे. ॥ ११ ॥ मंत्रीए कह्युंके हे राजमाताजी ! श्चाप गमे तेम ते बाबतमां कहो परंतु वेचातो खीधा बाबत एक पैसोपण चोपमे जधरेल नश्ची. वली श्चापनो खजानो माराश्ची श्चजाष्ट्रोनश्ची. तमे जेटली कि हिपत वात कहेशो ते हुं केवीते मानीश ? ॥ ११ ॥

हुं घरनोहुं मुजने जाखो, मुजधी तो शुं श्रंतर राखो ॥ वीरमती कहे रे शुं द गजे, एहमांही तुं कांइ न समजे ॥१३॥ पैसानुं शुं मुजने पुढे, महेणुं तो मुज पासे घणुं वे ॥ जूषण एक दइ सुप्रसिद्धो, ए कुर्कटमें विकय खीधो ॥ १४॥

श्चर्य ॥ हुं तो तमारो पोतानोजहुं. मारायी शुं बानुं राखोबो १ वीरमतीए कहुंके श्चा तमे शुं माथाकुट करोबो १ तेमां तमे कांइ समजतानथी. ॥ १३ ॥ तमे पैसा संबंधी शुं वात करोबो १ पैसानी जरूर शिवे, मारी पासे घरेणुं घणुंबे. तेमांथी एक सारो दागीनो श्चापीने ए कुकडो में वेचातो लीधोबे. ॥ १४ ॥

एहनी वात न पूठीश मुजने, एकांते वारू बुं तुजने ॥ बीजी वार उचार करीशजो, तुं पण एहवो थाइश बीजो ॥ १५ ॥ मंत्री एम निसुणीने थरक्यो, उत्तर कहेवा अधर न फरक्यो ॥ एहवे शदन प्रदेशे बेठी, रूदती तेणे गुणावली दीठी ॥१६॥ अर्थ ॥ हवे ए कुकडासंबंधी वात फरीमने पुठशोनही. आ एकांत्रे तेथी तमने खास ना पांतुं बं के जो बीजी वार ते बाबत पुठशो तो तमो पण तेना जेवा बनीजशो ॥ १५ ॥ वीरमतीनां एवां वचनो मंत्रीए सांज्ञह्यां के तरत जते थरथरी गयो अने बीजुं वचन काढवाने तेनो होठ पण फरक्यो नही एवामां पासेनाज जागमां बेठेली गुणावलीने तेणे रूदन करती दीठी ॥ १६ ॥

चंद प्रिया लखी श्रक्तर उली, मंत्री समजाब्यो थइ जोली ॥ ए कुर्कट मुज पियु सु विवेकी, एम देखांडे उली ठेकी ॥ १९॥ मंत्री हृदये कौतुक जास्युं, वीरमतीने पण न प्रकास्युं ॥ समजी रह्यो मंत्री मनमांहे, कांइ नवी श्राराहे विराहे ॥ १०॥ श्रर्थ ॥ गुणावलीए जोलीथइने श्रक्तरोनी एक लीटी लखी मंत्रीने कहांके "एकुककोतो मारो श्रत्यंत विवेकी पतिठे" एम देखाकीने लीटी जुंसीनांखी ॥ १९॥ मंत्री पोताना श्रंतःकरणमां श्राश्चर्य पाम्यो; परंतुवीरमतीने तेणे कांइ कहां नहीं. पोताना मनमांज समजी रह्यो श्रने श्राराधना के विराधना कांइ करी नहीं

वीरमतीने प्रणमी नेहे, ते मंत्री आव्यो निज गेहे ॥ चौदमी त्रीजा बह्वासनी जाखी, ढाख ए मोइने रस अजिखाषी॥ १ए॥

श्रर्थ ॥ पत्नी वीरमतीने श्रत्यंत प्रेमपूर्वक प्रणाम करीने मंत्री पोताने घेर श्राव्यो. ए प्रमाणे त्रीजा चक्कासनी चौदमीढाल मोहनविजयजी महाराजे रसना श्रजिखाषीने माटे कही. ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

वीरमतीए चंदने, कीधो पक्ती वेश ॥ वात प्रसिद्ध थइ घणी, परि परि देश विदेश ॥ १ ॥ जण जण तेह विमातने, दीधो श्र ति धिकार ॥ कीधो राज्यनी लाखचे, सुतने विहंगाकार ॥ १ ॥

श्चर्य ।। वीरमतीए चंदराजाने पद्मीरूपे बनावी दीधो एवी वात श्चनुक्रमे देश परदेशमां बहुज फेलाइ गइ. ॥ १ ॥ दरेक मनुष्ये ते वीरमती जेरमान माताने श्चत्यं धिकार श्चाप्योः लोको बोलवा लाग्याके मात्र राज्यनी लालचथी पुत्रने पद्मीरूपे बनावी दीधोः ॥ २ ॥

पण सहु वीरमती जये, चसकी न शके कोय ॥ वातकरे मोटा तणी, घणी विमासण होय ॥ ३ ॥ वीरमती निर्जय थकी, पासे राज्य श्रखंम ॥ श्रावीने केइ नम्या, पुहवी पाल प्रचंड ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ परंतु वीरमतीना जयथी सर्व कोइ डरी गयेखा होवाथी कोइ वात म्हों मांथी जचारी शकता नथी. कहेवतहेके मोटानी वात करीने पाइल घणो पस्तायो करवो पडेहे. ॥ ३ ॥ वीरमती निर्जयने श्चर्षं डपण राज्य करहे श्चने तेना बखर्थी श्चनेक प्रचंक पृथ्वीपतिजे तेणीनी पासे श्चावी नमवा खाग्या. ॥॥

शक्ति श्रचिंती जगत्मां, वीरमतीनी जोर ॥ वक्र थको जे वक्र ते, कर्या पाधरा दोर ॥ ५ ॥ एइवे हेमरथ एक हे, हेमाखयनो जूप ॥ तेणे वीरमती तणुं, जाएयुं सयख सरूप ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जगत्मां वीरमतीनी शक्ति श्चित्वित्य हे एवं फेखातां जे वांकार्यथी पण वांकाहता ते सध-बार्चने तेणीए सिधा करी दीधा. ॥ ए ॥ एवा समयमां हिमालयनो हेमरश्च नामनो एक राजाहे तेणे वीरमतीनुं सघलुं वृत्तान्त जाणी लीधुं ॥ ६ ॥

> मान हीन ते थयो हतो, चंद थकी बहुवार ॥ ते श्राजा खेवा जणी, थयो जूप हुंशीयार ॥ ७ ॥ खेख खखीने पाठव्यो, वीरम तीने इत ॥ रंडे श्राव्यो जाणजे, वेमयो जे रजपुत ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ ते देमरथराजा, चंद राजाथी बहु वार पराजव पाम्यो हतो. तेथी आ समये आजानगरीनुं राज्य क्षेवा ते राजा तैयार थयो. ॥ ७ ॥ ते हेमरथ राजाए एक पत्र क्षां दूतनीसाथे ते पत्र वीरमती जपर मोकझ्यो तेमां तेणे जणाव्युंके आ इतियने जे वारंवार छेड्यो हतो तेथी हे रंडा तुं जाणजे के हुं आववाने तैयार थयोडुं ॥ ए ॥

॥ ढाल १५ मी॥ ॥ यत्तनी देशी॥

श्राव्यो दूत लंघी धरतीने, क्षेत्र दीधो वीरमतीने ॥ वांचीने जोयुं राणी, नख शिख लगे रोष जराणी ॥ १ ॥ रे रे घूत कहुं शुं तुजने, तुजने छहवे खामी मुजने ॥ जइ रंगा पुत्रने कहेजे, होय माणस तो निरवहीजे ॥ १ ॥ श्रर्थ ॥ ते दूते पृथ्वीने उंखंगतो श्राजानगरीए श्रावी वीरमतीने कागख श्राप्यो. राणीए वांची जो तांज तेना शरीरमां नख शिख कोध व्याप्यो ॥ १ ॥ हे दूत हुं तने वधारे शुं कहुं, तने छहवामां मने खोट खागे. परंतु ए रांकना जायाने जड़ने तुं कहेके जो माणस होतो बोखेखुं पाखजे ॥ २ ॥

धाव्यो होय समानी बीटमीए, तो तुं श्यावजे मुज मींटमीए॥जो तुं क्षत्र पुत्र कहावे, जोउं कहेवो वेहेलो तुं श्यावे॥३॥ लोइ शोर जो तुं केडे बांधे, जोउं केवी श्राणी श्याणी सांधे॥ श्याज काल गयो तुं हार्यो, जुंडा तेदिवस तेंविसार्यो॥४॥

श्चर्य ॥ जो तुं पोतानी मानी बीटडीए घान्यो होतो मारी सामो मींट मांडवा श्चावी पहोंचजे. वखी हुं जोछ हुं, के जो तुं क्त्रियनो बच्चो हो तो केटलो छतावलो मारी सामे खडवा श्चावेहे? ॥ ३ ॥ जो तुं शमशेर खरे खरी तारी केड छपर बांधतो हो इश तो हुं जो इशके श्चाणी वखते तुं केवोटकी शकेहे? हजु हमणांज हारखाइ गयो हतो. जूंडा ते दिवसने पण जूली गयो ? ॥ ४ ॥

ते हुं वीरमती नवी दीठी, त्यां खगी रणवातो मीठी ॥ तुंने श्राजानो शो श्र जरो, खेठ हेमाखय तो मुजरो ॥ ५॥ की मीने पांख जे श्रावी, नही वारू कहुं समजावी ॥ शो जोरो तुज कपटीनो, तुं तो मारे एक चपटीनो ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ इजु ज्यां सुधी वीरमतीने दीठीनश्ची त्यां सुधीज रण संग्रामनी वातो मीठी खागशे तने श्चाप्तानगरी खेवाना जे कोड हे तेतो पुरा पडता पडशे, परंतु हिमाखय जो खड़ खडं तो खुबी मानजे. ॥ ५ ॥ कीडीने जे पांखो श्चावेहे ते सारा माटे नहीं पण मरवा माटे एम जाएजे. तुं कपटीहो. तारूं मारी पास कांइ जोरनश्ची मात्र एक चपटीमां चोखाइ जइशः ॥ ६ ॥

एम कहीने छत विसर्ज्यों, तेणे जह निज जूपने वर्ज्यों ॥ जो मानो वचन मुज
स्वामी, मत हेमो नारी निकामी ॥७॥ जूपे द्वत वचन श्रवहेख्यो, निज प्रबल
महादल मेख्यो ॥ श्रागल कीधा मद ग्रुंढाला, जाणे दुंक हेमाचल वाला ॥७॥
श्रश्रं ॥ वीरमतीए एवां सख्त वचनो कहीने दूतने विदायकर्यों दूते जहने पोताना राजाने कहां के हे
महाराज! जो मारूं वचन मानो तो विनाकारणे ए वीरमतीने हेडवामां सारनश्री ॥ ३ ॥ हेमरश्र राजाए
दूतनां वचननो तिरस्कारकरी पोतानुं महाबल्वंत लस्कर एकतुं करवामांडयुं. महामदोन्मत्त हाथीन
श्रागल कर्या. तेन जाणे साहात् हिमालय पर्वतनी दुंक जेवा दिसवा लाग्या ॥ ० ॥

हलके हयवर पाखरीया, जाणे रंगे चढीया दरीया॥ हेमरथ सेना लइ चाछ्यो, रहे शूरो केम करी काख्यो ॥ए॥ निशाने देतो गेडी, कीधी आजा पुरीने नेडी ॥ फरहरीयां पंचरंगनेजां, जाणे असी सरमे अंगरेजा ॥ १०॥

श्चर्य ॥ वदी श्रेष्ठ श्रश्वो सुंदर पाखरेता हेषारव करवा लाग्या. ते एवा शोजता हताके जाणे जरतीनां मोजाशी दिखो जिल्लातो होयनी. ए प्रमाणे मोटुं सैन्य लड़ हेमरथ राजा लडाइ करवा चाह्यों. शुं शुर वीर ते फाह्यों रहे हे ? ॥ ए ॥ ते निशान टांपतो श्चने डंके घा देतो श्चानागरी समीपे श्चावी पहोंच्यों. तेना लस्करमां पंचरंगी वावटा फरकता हता ते जाणे तीर श्चने तरवारना श्चंगरेजा होय निह! तेवा शोजता हता। १०॥

कहे हेमरथ एहवे जोने, खेडं श्राजापुरी चने घोडे ॥ शुं जीतवुंढे श्रवसानुं, मुजथी बल नहीं सबलानुं ॥ ११ ॥ नारीमें दीठी शी तागा, जे एहने जूपित पाय लागा ॥ एहवे वीरमतीने जणावे, हेमरथजे चनीने श्रावे ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ पोतानी साथेना सैनिकोने हेमरथ राजा कहेवा लाग्यो के श्चा जोत जोतामां चडे घोडे श्चा जापुरी लड़ लजं हुं ते जो जो महा बलवाननुं बल पण मारी श्चागल तृणमात्रछे ते श्चा स्त्रीने जितवामां तो शुं मोटी वात है ? ॥ ११ ॥ ए वीरमतीने में दीठीहे. एमां ते शुं ताकातहेके तेने बीजा राजाई जड़ पगे लाग्या पठी वीरमतीने खबर श्चाप्याके हेमरथ राजा तमारी छपर लस्कर लड़ने चडी श्चाब्यो है ११

राणीए मनमां नाष्यो, श्राव्यो ते नाव्यो करी जाष्यो॥ इहां कटक न श्रावे केहनो, राणी श्रवण न हुठ उन्हो ॥ १३ ॥ तव सुमति सचिव तेडाव्यो, कहे राणी व चन तस जाव्यो ॥ एइ सामी हुं शुं जाठं, लमतां एइ हुं तो लजाठं ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ राणीए ते संदेशाने घ्यानमां पण लीधोनहीं. जाणे हेमरश्च राजा श्चाच्योज नश्ची एवो देखाव कयों के तेणीनुं म्होंतोशुं पण कान पण गरम न श्रयो ? ॥१३॥ पत्नी वीरमतीए सुमित प्रधानने बोखावी तेने मीठाशश्ची वचनो कहेवा खागी. हे मंत्री ! तेना सामुं खडवा जवुं ते मने ठीकखागतुं. एश्ची एवा तकखादी सामे. खडतां मने शरम खागे हे. ॥ १४॥

तुजवांसे हाथडे माहारो, बोखउपर थाशे ताहारो ॥ क्षेजे एहने जह घेरी,सर जेम नवी सांधे फेरो ॥ १५ ॥ साधीश सुत्रसन्न थाशे, श्वरीयण श्वटारणे जाशे ॥ चे डंको थइने निःशंको, तुज वाखन होजो वंको ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ हुं तमारो वांसो श्राबडीने कहुं हुं के तमो तेने जीती लेशो. तमे लक्ष्कर लड़ जड़ने तेने एवी रीते घेरी ह्यो के तेनो फरी सरवालोज संधाय नही श्चर्शात् तेना दलमां जंगाए पड़े. ॥ १५ ॥ हुं देवनुं श्चाराधन करीश जेथी तेर्च प्रसन्न थतांज हिस्मनोमां जंगाएपाडशे. तेथी हवे निःशंक श्चर हंके घा द्यो. तमारो वालपए वांको श्वानो नथी एवो मारो श्चाशीर्वादहे. ॥ १६ ॥

मंत्री राणीने आदेशे, अरी जांजीने जश केशे॥ जाखी पंदरमी त्रीजे जल्लासे, मोहन एढाल प्रकाशे॥ १९॥

श्रर्थ ॥ राणीना दुकमथी मंत्रीए शत्रुचं जपर तैयारी करवा मांडी. ते शत्रुचंने जगाडशे श्रने कीर्त्ति संपादन करशे. त्रीजा ज्ञ्लासनी पंदरमी ढाल मोहनविजयजीए कही. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

वीरमती वचने सचिव, तेडाव्या सामंत ॥ श्राजा श्राव्यो हेम रथ, सेना लइ श्रनंत ॥ १ ॥ खेरो नगरी श्रापणी, कहेरो सहु निरधार ॥ कोइ माये नवि जखो, श्राजा राखण हार ॥ २ ॥

श्रर्थ ॥ वीरमतीना हुकमथी मंत्रीए सर्व सामंतोने तेडावीने कह्यं के हेमरथ राजा घणुं सस्कर सइने श्राजानगरी उपर चर्मी श्राव्यो है ॥ १ ॥ चंद राजा श्रविद्यमान हते जो ते श्राजानगरी जीती खेशेतो सर्वे निश्चय पूर्वक कहेशेके कोइ एवो माइनो जायो शुरवीर न निकट्योके जेणे श्राजागरीनुं संरक्षण कर्युं तुम सरीखा ग्रुरावते, जो नगरी जेबाय ॥ तो दिनकर केम उ गमे, मेहेणुं ए रही जाय ॥३॥ वीरमती मुख साहमु, इहां मत निरखो कोय ॥ राखो कुब कम श्रापणुं, जेमजग इजत होय ॥ ४॥

श्चर्य ॥ हे शुरवीर योधाउ तमारा सरखा बलवान ठतां जो श्चानानगरी शत्रुठं लेशे तो सूर्य केवीरीते पूर्वमां छगशे ? एतो श्चाखा जन्मारानुं मेणुं रहीजशे ॥ ३ ॥ हमणां वीरमती तरफ जोवानो श्चवसर नथी सहु पोत पोताना कुलनी रीत तरफ नजर करो जेथी जगत्मां कीर्ति वधे ॥ ४ ॥

मानशे मुजरो तुम तणो, चंद एह महाराय वे॥ कुर्कट तो शुं ययुं, राज श्रंश नवि जाय ॥ ५ ॥ मंत्री वचने कहे सहु, करी उर्क मुज दंम ॥ करशे चंद प्रताप रवि, हिमने खंमो खंम ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ चंद्र महाराज तमारी स्वामी जिक्त मनमां श्चवस्य मानशे. ते कुकडा श्रयाग्ने तेश्री शुं श्चयुं ? शुं तेनामां राज्य श्चंशाग्ने ते गयुंग्ने ? श्चर्यात् गयुं नश्ची. ॥ ५ ॥ मंत्रीनां एवां वचनो सांजलीने सर्वे सामंतो गंचा बाहु दंड करी कहेवा लाग्याके हे प्रधानजी ! चंद राजारूपी सूर्यनो प्रताप हेमरश्ररूपि हिमना खंडे खंड करी नांखशे; श्चर्यात् चंदराजारूपी सूर्यना तेजश्री हेमरश्च राजा रूपी बरफ गलीजशे. ॥ ६ ॥

जेणे चंद नरेशनुं, खाधुं होशे खुण ॥ ते तो एहवे श्रवसरे, टाखो करशे फूण ॥ ७ ॥ मंत्री निज सेनाकरी, केशरशुं गर काव ॥ हेमरथनी सामो थयो, देश निसाने धाव ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ जेए चंद राजानुं निमक खाधुं हरो ते श्रावे श्रवसरे निमक हराम केम थरो ? ॥ ७ ॥ पत्री मंत्रए पोतानी सैन्यना सैनिकोने केशरीश्रा करावी डंके घा दह हेमरथनी सामा धसारो कर्यों. ॥ ए ॥

॥ ढाख १६ मी ॥ ॥ कडखानी देशी॥

प्रवल दल युगल किल सबल हुआ अचल, घरणी घरणी तणी ठंकी माया ॥ अनशना जाण पंचानना तनमना अरूण हुआ घणा राणी जाया ॥ प्र०॥ ॥ १॥ सिंधुडे राग शरणाइउं टहकीठं, बंदीए सरस गाया पवामा ॥ चारणे चर चीया बिरूद छहावडा, मंकीया निसुणी योधे अखाडा ॥ प्र०॥ १॥

श्चर्य ॥ बंने बाजुना अत्यंत बलवालां लस्करो सामसामा अचलपणे पृथ्वी अंगे स्त्रीनी ममताजोडीने लडवाने सज्ज थयां. वली केटलाएक राजपुत्रो अत्यंत कुधा युक्त थयेला केशरी सिंहनीजेम तनमनाट करतां लाल हिंगलोक जेवा थइ लडवा लाग्या. ॥ १ ॥ लडाइमां शूर जत्यन्न करे तेवा सिंधुडा रागधी शरणाइं वागवामांडी. जाटोए शूर चंडे तेवां किवत्तो गावा मांड्या. चारणोए विरूदावली वाला छहा अने सोरठा कहेवा मांड्या. ते सांजलीने श्राखाडामां महो युद्ध करे तेवो रणसंग्राम शरु थयो. ॥ १ ॥

जणण जंकार जंजारवे केइ थया, कीर्त्ति कमलाकर ग्रहण रागी ॥ सुकविनी वात श्रालीयात करवाजणी, सुजटनी नयन ब्रह्मांड लागी ॥ प्र०॥ ३॥ थापडे कंद एकेक इयवर तणा, मुंडवल घाली संग्राम रसीया ॥ जाइडं आज क्त्री तणा पारखां, केड कसीया तणा देडं तसीया ॥ प्र० ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ ज्यारे जंजावाजित्रश्री जेंकार शब्दोनो नाद प्रगट थयो त्यारे करक योद्याए की तिरूपी लक्ष्मीने प्रहण करवा जजमाल थया वली केटलाएक सुजटो उत्तम किवर्जनी किवताने श्रमर करवा सारू ब्रह्मां डमांज मात्र दृष्टि लगामी युद्धमां मच्या रह्याः ॥ ३ ॥ केटलाएक योद्धार्ज पोताना जत्तम श्रश्वोनी कांधने धाबडता हवाः केटलाएक मुंठ जपर ताव देता संग्रामनो रस क्षेता हताः वली केटलाएक एम बोलताहताके जाइल श्राजे केत्रियोनी परीक्षानो वखत श्राव्योठेः जेर्ज केड कसीने तैयार थया ठो ते पोतानुं स्वरूप तो बतावोः ॥ ४ ॥

निसुणी निशान श्रवसान चूको रखे, खेलशुरा तणो तो लडाइ॥ लोइजे लांकथी वांक धरी बांधीए, श्राज तस लाज रहेतो वकाइ॥ प्र०॥ ५॥ शूर पुरातणो तीर्थ रण जूमिका, शस्त्रधारा जीहां तीर श्राठा ॥ एक मुकी करी श्रवर तीरथ जणी, धरणी धरता रखे चरण पाठा॥ प्र०॥ ६॥

श्चर्य ॥ शूरनां वाजां सांज्ञाने निशान ताकवाना श्चवसरने चुकशो नही. शुर वीर खोकोनी रमत ते खडाइज हे वांकी केड छपरजे मरोडवाली तलवार बांधीए हीए तेनी जो श्चाजे लाज रहे तोज वडाइ समजवी. ॥ ५ ॥ जे संपूर्ण शुरवीरोहे तेमनुं तीर्थतो रणसंग्रामनी ज्विमकाजहे ज्यां शस्त्रोनी तीक्ष्णधारा रूपी निर्मल नीर वहेहे माटे तेज तीर्थने होडी बीजा तीर्थमां गमन करवाने हे! योद्धार्च रखे तमारा पगलां पृथ्वी छपर पाहां करो ॥ ६ ॥

खुणसधरी फणसथी देह पोरस चड्यो, तीर वमतीर हांको वजामी ॥ वेख वंग्राख मग्राख बेहु दलतणे, मुकीया तुरंग वागो उपामी ॥ प्रण ॥ ९ ॥ रज चड्यो गयण रणयंत्र जेम उपड्यो, पाखरे रोख धमसाण वाजी ॥ राज्ञ्ला वा जला जेल जेला हुआ, आफट्या ताजीए जाय ताजी ॥ प्रण ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आंखमां खुन जरावाथी फण्स करतां पण विशेष पोरस योद्धार्जनाः शरीरमां चडीगयो जेथी ते शुरवीरोए खडाइमां वीरहाक वगडावी. केटलाएक शुरवीर इंग्रेडायेला हेल अजिमान करता बंने बा- शुर्जना लस्करमां घोडार्जने लगाम ढीली करी लपाडता हवा. ॥ १ ॥ आकाशने विषे भूलनो गोटो एवोतो चड्यो के जाणे रणस्थंज खडो थयो होयनी. वली केटलाएक घेलहाए चडेला राजवीरो एवातो जेट जेटा थइ गया के तेर्जना अश्वो साम सामा लपरा लपरी अफलावा लाग्या जेथी महा धमसाण मची रही ॥ ८ ॥

सांतरी श्रांतरी बगतारो उपरे, बीजली जेम वहे खग्गधारा ॥ तिरठीउ बर ठीउ पार निरगत्नीयुं, एकशुं एक करता जुहारा ॥ प्र० ॥ ए ॥ सणण वहे बाण तेम चणण गोक्षी वहे, धुम धमरोल ढुटे श्रराबा ॥ बाटबड उपडी जूमिपन धन हडे, पुरी श्रा जाणी श्ररबे गराबा ॥ प्र० ॥ १० ॥ श्रश्रं ॥ शुरवीरोना बरूतरो उपर तलवारनी जेम श्रास परस जनोइ वट चालवा लागी. वली बरठीउं वांकीयइ एवीतो श्रार पार उत्तरवा मांडीके जाणे एक बीजाने जुहार वेहेवार शरू श्रयो ॥ ए॥ योजाउंना बाण सण सणाट चालवामांड्यां श्रने बंडकनी गोली एक बीजा उपर चणणण करती चोटवा लागी तोपोना बहार श्रवाथी धुमाडाना गोटे गोटा निकलवा लाग्या श्रने तोपमांश्री गोला उटतांज जूमिनापड उखडता होय तेवो पृथ्वीमां श्रास्फोटन श्रवा लाग्यो ॥ १०॥

एक नासे वली एक वांसे पड़े, बापमािकहां लगे जाइश जागो ॥ छोड हथी यार जगार जो संजवे, साद सादे इस्यो वाद लाग्यो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ केइ लड़े केइ पड़े केइ घड तड फड़े, केइ हय गय पड़या पय पसारी ॥ ग्वारमे जाणीए हारडे हारमे, वणजवा काज बालद जतारी ॥ प्र० ॥ ११ ॥

श्रर्थ ॥ युद्धनुं रमखाण मचतां श्रने श्ररस परस मारतां जे कोइ योद्धो नासवा मांड्यो तेनी पुंठे लागी बीजाए हाक मारी कहुंके हे रांकडा हवे जागीने क्यां सुधी जइश हवे जगरवानो विचार होय तो हथीयार ठोमीदे. एवीरीते राडो पाडता साम सामा विवाद करवा लाग्या. ॥ ११ ॥ केटलाएक लडता हता, केटला एक पडता हता. केटलाएकनां धड तमफतां हतां. केटलाएक घोमा तथा हाथी पग पहोल करी पड्या हता. जाणे कोइ मोटा वेपारीए हारो होर वेपार करवाने माटे पोठनी पोठ लादेली छतारी होय तेवुं लागतुं हतुं. ॥ १२ ॥

लोहवाहें केइ ताकने आपनी, एक कायर धरे हाथ आना ॥ केइरण आंगणे दुक दुके जड़या, शिरविना धड़ करे केइ पवाना ॥ प्र० ॥ १३ ॥ केइ गजराज दंतुशक्षे अश्वना, चरण खुर रोपि रण रंग मांहे ॥ नाक सिस कारने ताकी शिर दारने, दोमनी दोटशुं चोट वाहे ॥ प्र०॥१४॥

श्चर्य ॥ कोइ शुरीए तक सांधीने तखवार एवीतो वहेवा मांडीके तेनी सामेना कायर श्रइ गयेखा यो-द्याने श्चाडा हाश्चज मात्र करवानो वखत श्चाच्यो. कोइकना रणांगणमां दुकडे दुकमा थइ गया; वखी कोइकना मस्तकविनाना धम खढाइ करता रडवडवा खाग्यां. ॥ १३ ॥ केटलाएक रणसंग्राममां पोताना घोडाना पगनी खरीड बीजार्डना हाश्चीर्डना दंतुशलो उपर रोपीने खडारह्या श्चने नाकश्ची सिसकारो करता बीजा सरदारो उपर बेवडी दोट मुकीने ताकी ताकीने चोट चलवता हता. ॥ १४ ॥

तीरथी वीर चकचूर घइने पमया, जाणीए केकीए कखाज मंडी ॥ जनम दीधा फरी तरूण सुजटो जणी, धार तखवारनी अवल चंमी ॥प्रणारेप॥ वत्रधारी घणां पूर घाए पमया, वीररस सरस ते मस्त चाखे ॥ एहवे जा रथे सिंहनी वाहिनी, आपणा दासनी खाज राखे ॥ प्रण ॥ र६ ॥

श्चर्य ॥ केटलाएक योद्धार्च तीरना घाश्री स्मिपाट पड्या हता तेथी जाए मोरे कलापुरी होय तेवा दीसता हता केटलाएक युवान सुन्नटो एवं समजता हता के श्चापए नवे श्चवतार श्चाव्या कारएके तेर्च एवं धारता हताके तलवारनीधारतो श्चवल चंडी रांड जेवी है. ॥ १५ ॥ केइक हनधारी राजार्च श्चनेकघा लागवाथी शुमि जपर पड्या हता. तेर्च मस्त श्चने जाए वीररसनो स्वाद चाखता होय एवा लागता हता. श्चावा युद्धना प्रसंगमां सिंहना श्चासनवाली युद्धनी देवी मात्र पोताना दासनी लाज राखती हती.१६

शोणिनी निम्नगा पुर बेहु पुनवहे, योगिनी पत्र पुरे असंखी ॥ गयण डाइ रही पलचरी खेचरी, तृप्त हुआ घणां राध्रपंखी ॥ प्र० ॥ १९ ॥ सुमित मंत्रीश सुजगीशने आगसे, तुरत हिमशैललो कटक नाठो ॥ हेम रथ रायने सांकडे आंकडे कबज कीधो करी जबत काठो ॥ प्र० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ लोहीनी नदी बंने कांग्रामां पूरनी जेम वहेतीहती. तेमांथी श्चसंख्य योगिणी पोताना खप्पर (पात्रो) जरती हती. वली मांसनो श्चाहार करनारी एवी खेचरी छी श्चाकाश उवाइ रह्यं हतुं श्चने घणां गीध पद्दी मांस श्चने लोहीथी दृप्त थयां हतां. ॥ १७ ॥ मंत्री छेमां श्रेष्ठ एवा ते की चिंवंत सुमित मंत्रीना लस्करनी सामेथी हेमरथ राजानुं लस्कर नासवामांडयुं ए समयनो लाज लइने मंत्रीना योज्या छेए हेमरथनी संकडाशमां श्चावी पडतां तेने युक्तिथी कवज करी लइ मजबुत जापतामां राख्यों. ॥ १० ॥

जितकीधी महा जीतरंगा थया, वाजिया सुमितना जीत मंका ॥ ढाल ए सोलमी तृतिय उल्लासनी, मोहने कही जेसी स्वर्ण टंका ॥ प्र०॥ १ए ॥ अर्थ ॥ सुमित प्रधाने जीत मेलवी. तेना योद्याउ जयना रंगमां जितनां डंका वगाडवा लाग्या. त्रीजा उक्कासनी आ सोलमी ढाल मोहन विजयजी महाराजे सुवर्णना सिका जेवि कही. ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

मंत्री लाव्यो हेमरथ, वीरमतीनी पास ॥ सा कहे रे बल ए हवे, कृत खाजा खायास ॥ १ ॥ तुं मुजधीने झुं लके, तुं मुज दास कदीम ॥ तो हुं वीरमती नही, जोतुं लोपे सीम ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ सुमित मंत्री हेमरथ राजाने ज्यारे वीरमतीनी पासे खड़ श्चाच्यो त्यारे तेणीए तेने कहुंके हे हेमरथ! शुं श्चाटला बलथी श्चाजानगरीने जीती लेवा प्रयास करवो सूक्तयोः ॥ १ ॥ तुं मारी साथे लड़-वाने केम शक्तिवान थड़ शके? तुं तो मारी हजुरनी सेवा करनार दास जेवो हे. वधारे तो शुं कहुं परंतु जोतुं मारा सीमाडाने जेलंगी जाइ शकतो मारूं नाम वीरमतीहे ते फेरवी नांखुं. ॥ २ ॥

एकज मारे मंत्रीए, गाल्युं तारूं मान ॥ तें ग्रुं दीठा नही हता, श्राजाना मेदान ॥ ३ ॥ नारी तुं के नारी हुं, कहे साचुं मत खाज ॥ तुं गजतो मृगराजहुं, जो तुं चटकहुं बाज ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ एक मारा मंत्रीएज मात्र तारो मदतो जतारी नांख्यो. जूंडा तें अगाज आजागरीना मेदान जोया न इता ? ॥ ३ ॥ वीरमतीए कह्युं के हे हेमरथ ! बाइडी ते तुं के हुं ? साचे साचुं खाज जोडीने क-हीदे. जो तुं हाथी तो हुं सिंह श्चने जो तुं चकखो तो हुं बाज पद्मीबुं. ॥ ४ ॥

तुं ते शुं माण्सवली, तुज सम को निर्लक्ज ॥ ए तरवारे के हवी, राखतो होइश परक्ज ॥ ५ ॥ मंत्रीए जेम तेम करी, राणी करी प्रसन्न ॥ ठोडाव्यो हेमरथ जणी, श्राप्यां श्रशन वसन्न ॥ ६ ॥ श्रर्थ ॥ वसी तुं ते कांइ माण्सठो ? तारा जेवो निर्वक्जपण कोण्हशे ? वसी श्रा तारी तरवारे तुं प्रजाने

केवीरीते कबजे राखतो होइश?॥ ५॥ मंत्री सुमतिए वीरमती राणीने मीठां वचनोथी जेम तेम प्रसन्न करीने हेमरथ राजाने मुक्त कराव्यो खने तेने खान पान कराव्यां खने शोजे तेवां वस्त्रादि ख्राप्यां ॥६॥

> हेमरथने राणी कहे, शिर उपर करमंड ॥ आज थकी तुं मा नजे, मारी आण अखंक ॥॥ माताजी लोपीश नही, तुम आणा कोइ वार ॥ हेम एम कही प्रणपति करी, वेठो सन्ना मकार ॥ ए॥

श्चर्य ॥ राणिए हेमरथना माथा छपर हाथमुकी तेने फरमान कर्युके आजथी हवे तमे मारी आण आखंडपणे श्चंगीकार करजो. ॥ ७ ॥ हे! माताजी हुं तमारी आणा कोइ वखत लोणीशनही. एवां वचनो हेमरथ राजा विनंति पूर्वक बोली, सजामध्ये जइने बेठो. ॥ ० ॥

एहवे नटवर शिवकुंवर, ज्ञान कला जंडार ॥ राणीनो मुकरो कयों, पंचसयां परिवार ॥ ए ॥

श्चर्य ॥ एवा समयमां पांचसो नटोए परवरेखो शिव कुंवर नामनो नटराज जे ज्ञान श्चने कखानो जंडारते तेखे श्चावीने राणीनो मुजरो कर्यो. ॥ ए॥

॥ ढाल १७ मी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उने दोय पंखीया ॥ ए देशी ॥ राणी कहे नटराज श्राव्या तमे क्यां श्रकी, सरखा चमते वेश रहे खागी टकी ॥ कहे शिव कुंवर प्रणाम करीने मन्नश्री, श्राव्यो हुं म हाराज, ए उत्तर पंश्रशी ॥ १ ॥ नगर नगरना जूप रीजावी श्रा गला, लीधा लाख पसाय, देखाडीने कला ॥ श्राजा एक श्रपूरव हुंतो माहरे, ते में निरखी श्राज जामण्ये ताहरे ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ वीरमती राणीए कह्यं के हे नटराज तमे क्यांथी श्राब्या? तमे सर्वे सरखी जमरना सुंदर वेशवादा श्रने तमने जोतां दृष्टि तमारा जपर ठरें उपा दीसोठो. ते सांज्ञद्धी शिव कुंवर तेणीने प्रणाम करी बोह्योंके हे महाराज हुं जत्तर तरफना मार्गथी श्रावुं हुं. ॥ २ ॥ शेहरे शेहरना राजाजेंने मारी कद्धा देखाडी तेजेंने प्रसन्न करतो करतो श्रने दाखो रूपैयाना इनाम मेदावतो श्रहीं श्राव्योंहुं. मात्र श्राजानगरी श्रगाज जोइ न हती. तेथी श्रापना जपरथी वारीजतो जे जोवानो वखत श्राव्यों ॥ २ ॥

सांजली हुंतो कीरती श्रवणे जेहवी, नयणे ते श्रमे श्राज ए दीठी तेहवी ॥ जवतु सदा दीर्घायु सञ्जणी तुज सजा, जोगवे राज तुं वीर नृपतिनी वञ्चजा ॥ ३ ॥ जो श्राङ्गा तुम होयतो नाटक मंडीए, तुम तणुं पामी दान दारिज्ञ विहंकीए ॥ वीरमतीए श्रादेश कर्यो करीने दया, नट नायकना पायक रमवा सज थया ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ जेवी श्चाजानगरीनी कीर्त्ति साजलवामां श्चावी हती तेवीज श्चाजा नगरीने एवं नजरे जोतां साचुं मालम पड्युं. तमे दीर्घायुषी श्चार्च श्चने तमारी कीर्त्तिवंत सजा साथे हे वीरसेन महाराजानी वहाली पटराणी तमे दीर्घकाल राज्य जोगवो. ॥ ३ ॥ नटराजे कहांके जो श्रापनी श्राक्षा होयतो नाट-कनुं काम शरू करीए. जेथी श्रापनी पासेथी इनाम रूप दान मेलवी श्रमारी दिर्द्धतानो नाश करी नां-खीए. वीरमतीए तेर्चना उपर दया श्राणीने नाटक करवानो हुकम कर्यो, जेथी नटना खेलाडी रमत रमवाने तैयारी करवा लाग्या. ॥ ४ ॥

मुखर चंडायण काठ जला किटिथी कस्या, केशरी पागे केशरी ठापा धसमस्या ॥ ढिग ढिग ढिग्ग ढिग्ग सुजंगी गरजीया, सरणाइए ट हक सोरठ तेम परजीया ॥ ५ ॥ मीठी तार रवाज संगीत गति रण जणी, ताल विकट टंकार कणाण कण कण कणी॥ आलापे स्वर सप्तथी रागने रागिणी, कीधो रागनो मंडप रामततो वणी ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ नाटकीयाए पोताना मुख चंद्रमा जेवा श्वेतकर्या. केडकसीने कहावाद्या केसरीश्चा रंगना पायजामा पेहेर्या. वली घोर श्रवाज करनारा श्चने हिग हिग हिग जेवा शब्द निकलता मोटा होल वागवा मांड्या. श्चने शरणाइन टहुकारा करती सोरठ श्चने परजीया रागमां श्चालाप करवामंडी ॥ ॥ मीठा तारवाला वाजिंत्रथी संगीतनो रण फणाट थह रह्यो श्चने चित्र विचित्र टंकारा करता तालनो कण कणाट श्ववा लाग्यो सा-री-ग-म-प-ध-नी ए सात स्वरोधी ह राग श्चने त्रीश रागिणीनेना श्चालाप श्ववा लाग्या साहात् रागनो मंडप श्रयो होय एवी संगीतनी हाया हवाइ रही ॥ ६ ॥

हंस तुरग गज वाघ स्वरूप नवा करी, खेक्षे प्रथम नटेश विशेष रसे जरी ॥ विच विच वक संजाषण नयण इसारती, करी करी खोक ह साडतो एक हसारती ॥ ७ ॥ एहवे गुणावली कुर्कट पिंजर कर प्रही, बेठी गोखे रमत निरखे रही रही ॥ तव आरोप्यो वंश उत्तंग मनो हरूं, जाणीए उपशम श्रेणी तणो ए सहोदरू ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ शरूत्रातमां नटराज हंसना, घोडाना, हाश्चीना, वाघना एवा विशेष रस जरेखा नवा नवा रूप धारणो करी खेख करतो हवो वचमां वचमां वक्तोक्तिवादां मीठां जाषणो श्चने श्चांखना इसारा विगेरे करी खोकोने कोइ हस मुखो हसावतो हास्यरसने जमावतो हतो ॥ ७ ॥ एवा श्चवसरमां गुणावद्धी राणी कुकडानुं पांजरू हाश्चमां राखीने गोखमां बेठी रमतने जोइ रही है. ते समये नटराजे एक जंचो श्चने मनोहर वास नाटक शादामां जजो कर्यो. ते जाणे मुनिराजनी उपशम श्रेणीनो सहोदर (बंधु)ज होयनी तेवो दिसवा द्धाग्यो. ॥ ७ ॥

ठोकी मेख श्रशेष घणे कसणे कस्यो, खोकाकार स्वरूप जविकने उ ख्रस्यो ॥ कीलक वंशने श्रय पूर्गीफल तिहां धर्यों, शिणगारीने वंश इस्यो नदुए कर्यो ॥ ए ॥ शिवमाला शिव कुंवरनी पुत्री कुमारिका, उत्केपण श्रपकेपण कीका कारिका ॥ करीराणी प्रणिपत्य ने चंद की रति पढी, जनकादिकनी शीख करीने वंशे चढी ॥ १०॥

चंदराजानो रासः

श्चर्य ॥ तेवांसनी चारे बाजुए मजबुत मेखो ठोकी दोरडार्ज्यी तेने मजबुत कर्यों ते जाणे खोका-कारनुं स्वरूप जोवा सारू ज्ञ्चसित अयेखा जिवक जीवने जेम सुंदर खागतो होय तेम देखावा खाग्यों ते वांसना श्चयजाग छपर खीखी ठोकी ते छपर सोपारी गोठवी एवीरीते वांसने शाणगारीने छजो कर्यों ॥ ए॥ शिवकुवर नटराजनी कुंवारी पुत्री शिवमाखा जे छंचे श्चने नीचे फेंकवा श्चने चडवा छतरवानी कीडाकरनारी हती, तेणे प्रथम राणीने नमस्कार करी चंदराजानी कीर्जिनो छचार कर्यो श्चने पढ़ी पोताना पिता प्रमुखनी श्चाङ्गा खड़ने ते वांस छपर चड़ी ॥ १०॥

हेठे रह्या नट घाट बजावे ढोलमा, जाखे श्रहो श्रहो श्रहो हो जला जला बोलडा ॥ मननो नयणनो खेल मचुकीश शिव कहे, बहु नट वंश समंत उरध नयणे रहे ॥ ११ ॥ श्रावी नट श्रवतार कला शिली यठे, इहां जो न खेलीश खेल खेलीशतो किहां पठे॥ श्रापणी कुलस्थिति एह उपर उद्यम इस्यो, मनमांहि तुंतो खेद सुता मकरीश किस्यो ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ नीचे जजारहेला नटो घाटसर ढोल वगाडता हता. अने अहो अहो अने धन्यवादना मीठा बोल बोलताहता. शिवराज नट कहें हे के हे कुमारी तुं मनने स्थिर करजे अने नेत्रने सावधान राखजे. बहुनटो वांस जपर जंची नजरेज ध्यान पूर्वक जोया करें हे. ॥ ११ ॥ हे बाला! तुं नटना कुलमां जन्म पामी जे जे कला शिखी हो ते जो अहीं आ खेलमां नहीं बतावीश तो पत्नी क्यां बतावीश शआपणा कुलनी रीति एज हे अने आपणा कुलनो जसमपण एज हे. हे बेटा! तुं मनमां जरापण ते बाबतमां खेद करीश नहीं. ॥ १२ ॥

निसुणी जनकनां वचन वंशाये जइ श्रमी, पूगी उपर नाजिधरी तिहां परवमी ॥ गणण चड्यो गणणाट शरीरते बालनो, फरतो दिसे जे हवो चक्र कुलालनो ॥ १३ ॥ जूतल हाको हाक वजामे नटवरा, प्रवर परंदा जेम फिरे उरहा परा ॥ शिव मालाए उलट गुलांटी फरीजरी, मूक्यो दशमो द्वार पूगीए श्रीर करी ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ पितानां वचन सांजाती शिवबादा वांसनी टोच छपर चडी श्चने सोपारी छपर पोतानी नाजी स्थापी जेम कुंजारनुं चक्र फरतुं होय तेवी रीते तेखीए पोताना शरीरने श्चाकाशमां गण गणाट करतुं फेरववा मांड्युं. ॥ १३ ॥ जमीन छपर छजेला नटो हाको मारी ढोल वगामता हता, श्चने जेम मोटा पन्ही छं छहे तेम वेग करता हता. शिवमालाए छलटी गुलांटमारी पोताना मस्तक (ब्रह्म रंध्र)ने सोपारी छपर चमावी स्थिर करी छंधे मस्तके रही. ॥ १५ ॥

मुनि जेम उंधे मस्तक रही का उस्सग्ग करे, तेम बाला सुकुमाला त्रिकरण थिर धरे॥ त्रीजो उलट्यो खेल करी हढ श्वासनो, बेठी पूगी उपर सा गरुडासने ॥ १५॥ फरीवली फल उपर वाम एकी ठवी, एक चरणथी चक्र लीधो ए कला नवी ॥ लेइ पंचवरणनी पंचे पाघकी, कीधो सनाल सरोज सपंखे पांखडी ॥ १६॥ श्रर्थ ॥ मुनिराज जेम डंधे मसके रही का बोत्सर्ग करे तेवी रीते ते सुकुमाल बालाए डंधे मसके रही मन बचन अने कायाने स्थिर कर्या. त्यार पठी फरी गुलांट मारी दृढ पछे श्वासने स्थिर करी ते सोपारी जपर गरूडासन करी बेठी. ॥ १५ ॥ त्यार पठी वली ते सोपारी जपर डाबा पगनी एडी धारण करी अने एकज पगथी जजा रही शरीरने चक्रनी जेम फेरववा मांडयुं. आ कला अन्हत हती. वली पांच जुदा जुदा रंगनी पाघकी छं लग्न तेमनी कमलना डांडा जपर फुलनी पांखडी छं जेम रचना करी. ॥ १६ ॥

तात कहें सुता उपर वेला बहु ह्वी,में तो तुजमां एह्वी कला नवी संजवी।।
सा उरथी थइ दोरी उतरी जेम उरगणी, श्रयवा जाणीए गगनथी त्रिदश तरंगिणी १७
श्रावी धरणी उपर नट प्रमुदित थया, किर किर कंठाप्रहण मिल्या सवी जय गया।।
चंद तणो जसवाट नटे वली उचर्यों, खेली खेल श्रखेल ढोले ढमको कर्यो ॥१०॥
श्रथं ॥ शिव कुंवर नटे कहुं के हे बेटा ! हवे नीचे उत्तरो—बखत बहु थयोः तमारामां श्रावी कला हे
एम हुं जाणतो न हतो. पितानुं वचन सांजली शिव बाला दोरडानी साथे नागणी जेम श्रयवा श्राका-श्रयी उत्तरती गंगाजीनी जेम नीचे उत्तरी श्रावी. ॥ १९ ॥ ज्यारे शिव बाला जमीन उपर श्रावी त्यारे सर्वे नटो हर्षवंत थयाः तेणीने कंठे जेटी पडयाः कारण के खेल खेलतां उपर जे जय हतो ते सर्व नाश पाम्योः त्यार पढी नटोए चंद राजानो यशोगान गायो श्रने न खेली शकाय तेवा खेल खेल्यानो ढोलनो ढालनो क्यारे कर्योः ॥ १० ॥

कीधो मुजरो वीरमतीने नटेश्वरे, पांछमोज छवारणे चंदने छपरे।। तृतीय ज्ञासनी ढाल कहीए सतरमी, मोइन कहे श्रोतानी जणी हमी गमी।। १ए॥ श्रश्रं॥ हेवटे शिवकुमर नटे वीरमतीने विनंति पूर्वक मोज मांगी. वली चंद राजाने घणी खमां-तेना इसमा छपर वारी जाल-एवां जवारणां लीधा. किव मोइनविजये त्रीजा ज्ञासनी श्रा सतरमी ढाल कही, जे श्रोतार्जने घणीज रूमी लागी।।। १ए॥

॥ दोहा ॥

कहे यशवायक चंदना, नट नायक गुणवान ॥ ते लागे सायक समा, वीरमतीने कान ॥ १ ॥ विकटी नटघी रागिणी, करघी नदीए दान ॥ श्रंग श्रंग मधुपान परे, व्याप्यो श्रति श्रजिमान ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ गुणनोवेत्ता शिव कुंवर नट चंद राजानी बिरूदावली रूप यशो गान करतो हतो ते वीरम-तीने काने बाणनां जेवां लागतां हतां. ॥ १ ॥ नटनी छपर छदेगतावालुं चित्त श्रवाश्री वीरमती तेछने पोताने हाथे दान श्चापती न होती. कारणके राज्यनी प्राप्तिश्री तेणीना श्चंगो श्चंगने विषे मिदरारूप श्च-जिमान ब्याप्युं हतुं. ॥ १ ॥

वाजां वाये गाये नट, वाक्षे बहु विध गात्र॥ वीरमती चित वज्र जेम, जेदे नही तिखमात्र॥ ३॥ राणी दान विना सजा, श्राग खथी न दियंत॥ जख धर वरसे तो नदी, दोतट पूर वहंत॥ ४॥

श्रर्थ ।। नटो वाजा वगामता इता, गाता इता श्रने शरीरना श्रवयवोने श्रनेक प्रकारनी कसरत बता-ववारूपे वाखता इता, परंतु वीरमतीनुं श्रंतःकरण वज्रनी जेम रति मात्र तेर्जनाथी जेदातुं न होतुं. ॥३॥ राणीए छाप्या विना सजा, दान छापती न हती. जो वरसाद वरसे तोजनदीमां पूर छावे छने बंने किनारामां संपूर्ण वहे. ॥ ४॥

> नटतो कुंजर जेम करें,चंद सुजरा श्रयाज ॥ जड़क किमपि खहें नहीं, राणी तणां श्रकाज ॥ ५ ॥ कुर्कट पिंजर एह थको,पाम्यो माता जेद ॥ मुज यश निसुणी नट मुखे, पामी पूरण खेद ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ शिव कुमर तो हार्यीनी जेम चंदनां यशोगान जे ते वखते श्चर्याहय हतां ते ज्ञार्याज करतो हतो, परंतु ते जोलो राणीना श्चकार्यना स्वरूपने कोश पण रीते जाणी शक्यो न होतो. ॥ ५ ॥ कुकडो पांजरामां रह्यो श्वको वीरमतीना श्चंतःकरणना जावने जाणी गयो के मारूं यशोगान नाटकना मुखबी निकलतुं सांजलीने ते संपूर्ण खेद पामी हे. ॥ ६ ॥

ए माता पूरण इठी, नट तो जाशे निराश ॥ मोटे गढ कोटे जइ, केम कहेशे जश वास ॥ ७॥

श्चर्य ॥ वीरमती संपूर्ण हठ करी बेठी ठे श्चने तेथी जो नटो निराश थड़ जशे तो बीजा मोटा राज्य दरबारमां जड़ श्चापणी यशकीर्त्ति केवी रीते फेलावशे ? ॥ ७ ॥

॥ ढाख रह मी ॥

॥ चित्रोडा राजारे वगडावे वाजारे ॥ ए देशी ॥

युवती मुख निरखीरे, कुर्कट मन हरखीरे, हखवे आकर्षी पिंजरनी सक्षीरे ॥ अंतर जल्लसीजिरे, पंखी पोरसीजिरे, थयो निसुणी रिसयो,कीरती जजलीरे ॥१॥ जे दाता अखेला रे, ते देवानी वेला रे, जेला मेलामां अवसर साचवे रे ॥ जे होय अदाता रे, ते जाये जजाता रे, अवदाता तेहना कोइ न आलवेरे ॥१॥

श्चर्य ॥ कुकडा ए प्रथम गुणावलीना सन्मुख जोयुं अने पोते मनमां बहुज खुर्शी थयो, अनंतर धीमें थी पांजरानी सलीने जंची करी. पोते यशोगानथी जलसायमान थवाथी अने पोताने पोरस चमवाथी तेमज निर्मल कीर्तिना श्रवण्यी रिसयो थवाथी तेने दान देवानी श्रजिलाषा थइ. ॥ १ ॥ जेर्ज खरेखरा दातार हे ते दान श्रापवानी वेलाए मनुष्यना समुदायमां श्रवसर साचवीने दान श्रापे हे परंतु जेर्ज कृपण हो तेर्ज जठीने चाड्या जाय हे अने तेर्जनी बिरूदावलीनो श्रालाप जगत्मां कोइ पण करतुं नथी. ॥१॥

गोखेथी जांख्युं रे, श्वामी करी पांख्युं रे, चांचे धरी नांख्युं, कचो खुं कुकडेरे॥
सुप्रसाद जे की धोरे, सहु खोक प्रसिद्धोरे,शिव कुंवरे खी धो श्वावी हुकडोरे॥३॥
कुंदननो घमीयो रे, बहु हीरे जमीयो रे, पडीयो ते दी तो राणी कचो खमो रे॥
नटवे बहु मो खी रे, चंद की रती बो खी रे, ढो खी ए वाह्यो की रती ढो खमो रे॥ ॥
श्वर्थ ॥ गो खमां थी नी चा बढी, पांखों ने श्वाडी करी, कचो खाने चांचवडे जपाडी नी चे नांखी दी छुं।
शिव कुंवर नटे सर्व खोकना जा खवा मां श्वावी शके ते वो कुकडा ए जे छत्तम प्रसाद की थो ते तेनी नजी क

श्रावी पोताना हाथमां ग्रहण करी लीधो ।। ३ ॥ ते कचोलुं सुवर्णनुं घडेलुं श्रने बहु हीराउंथी जडेलुं हतुं एवं ते कचोलुं राणीए पडतुं दीवुं. शिव कुमर नटे ते कचोलुं हाथमां लइ चंदनी बहु मूल्यवान की चिंरूप विरूदावली करी श्रने ढोलीए ढोल छपर कीर्त्तिनो पडघो पाड्यो ॥ ४ ॥

सत्रा लोक संपेखीरे, वीरमतीने जवेखीरे, कीधां बहु तेखी नटने तुंगरारे ॥ पटकुल बाबतना, करे शिव सा जतनारे, मधु रुतुना सोहे जेहवा सुंगरारे ॥ ।॥ चलगति कुलवटनीरे, पल्लटाणी पटनीरे, नटनी धरणीए नटनवि जेलख्यारे ॥ बहु पाम्या शृंगारारे, मणि जित्त जदारारे, वीरमतीने व्यंगारा घइने धख्यारे॥ ॥ अर्थ ॥ सत्ताना लोकोए तत्काल वीरमती तरफ ध्यान नहीं आपता पोताना विचारने संकेखी नटने अनेक प्रकारनां वस्त्रो तथा आजूषणो आप्यां शिव कुमर विगेरे नटो जेम वसंत रुतुमां गुंगरो शोजे तेवा शोजता हता ॥ १ ॥ ते वस्ते समग्र सत्ताजनो मध्ये कुल परंपरानी जे रीति चालती हती ते बदलाइ जतां नटोनी स्त्रीचे नटोने जेलखी शकी नहीं नटोने जे मणिचेथी जडेलां जत्तम आजूषणो मल्यां हतां ते देखीने वीरमतीने जेम धगधगता अंगारा शरीरने लागे तेम मनमां ते लागता हता ॥ ६ ॥

नट हुआ श्रयाचीरे, नरही कांइ काचीरे, राचीने उतारे शिव नटवो गयोरे॥ वीरमती कहे सेहेबोरे,कीयो धननो गहेबोरे,मुज पेहेखा दाता कोण इहां ययोरेऽ बढीउं जोउं केहेवोरे,ते तो जोया जेवोरे,एवो उपर वट किए जएणी जखोरे॥ वध्यो दीसे मोसाबेरे, रम्यो ठे बहु खाडेरे, मारी निशाबे सहितो नथी जखोरे॥॥॥

श्चर्य ॥ नटोने घणोज लाज महयो तेथी तेर्ज श्रयाचक जेवा थइ गया. तेर्जने कोइ वातनी खामी रही नहीं तेथी संतोष पामीने शिवकुमर नट पोताने जतारे गयो. वीरमती बोलवा लागीके श्रावो ते जोलों कोण धननो घेलो थयोंके मारी पेहेलां दातार श्रवानी तेने इहा थइ? ॥ ७ ॥ वली ते केवो बलवान है ते पण हवे जोवा जेवुं हे. एवी कइ जननीनो जणेलों हे के मारी जपरवट थइ दान श्राप्युं. मने लागे हे के ते मोशालमां मोटो थयो हशे श्रनेत्यां बहु लाड घेलो थयो हशे. श्रने खात्रीथी कहुं वं के मारी निशाले तो जल्योज नथी. ॥ ए ॥

मुज मीट न श्राव्योरे, जलो कुशले सिधाव्योरे, जाव्यो मुज एहनो मोटो श्राउखोरे॥
एम श्रंजस श्राखोरे, पण विहंगन जाखोरे, ताखो हे यद्यपि पिंजर सन्मुखोरे॥ए॥
कहे मंत्री मातारे, मत होवो ताता रे, रहो श्राकुल थाता मानो विनतीरे॥
पेहेल्जुं जेणे दीधुंरे, तेणे यश तुम कीधुंरे, जाणो करी सीधुं खीजो स्यावतीरे॥१०॥

श्रश्री। मारी चोटमां श्राववा न पाम्यो श्रने कुशल खेमे ठीक सिधावी गयो. मने तो एनं श्रायुष्यज मोटुं लागे हे. श्रावी रीतनो बेहेम वीरमतीने श्राव्यो परंतु पह्नी संबंधी विचार तेना मनमां श्राव्यो नहीं. जो के पांजरू तेनी सन्मुखज ताणवामां श्राव्युं हतुं।। ए॥ मंत्रीए कद्युं के हे माताजी तमे गरम शार्च नहीं. शांतथार्ज श्रने मारी विनति श्रवधारोः जेणे प्रथम दान दीधुं तेणे तमारा यशनेज वधार्यों हे. वातने सिधी रीते क्षेवामांशुं खोटुं हे श्रने शामाटे खीजवानी जरूर हे?॥ १०॥

जे शुरा श्रधागेंरे, श्रावे जे खागेरे, जूपितने श्रागे सहुं पेहेखां खनेरे ॥ दातार फुफारारे, बेहु एक श्रणुसारारे, निरधारा स्वामी श्रागक्ष श्राधहेरे ॥ ११ ॥ यश चढतो वानो रे, केम रहे ते ठानो रे, मुजरो तमे मानो सामो तेहनो रे ॥ ए तुम बाखकमांरे, ठे सहुको खामकांरे, श्राकखडां न होवो, वांक न केहनोरे॥११॥ श्रश्य ॥ जेर्च श्रत्यंत श्रुरवीर श्रद रणसंग्राममां पडे ठे तेर्च जूपितनी सन्मुखज सर्वनी पेहेला खडाइमां छतरे ठे. दातार श्रमे खडनार बंने एक सरखा स्वजावना होय ठे तेर्च निश्चयपूर्वक स्वामीनी श्राणं श्राधडी पडनारा होय ठे.॥ ११ ॥ पोतानो यश गवातो सांजखी तेवो पुरुष केम ठानो रहे? माटे श्रापने तो तेनो छलटो मुजरो मानवानी जरूर ठे. ए सहु तमारां खाडकवाया बाखको ठे. श्राप श्राकखां न श्राचं. श्रा बाबतमां कोइनो वांक नश्री.॥ १२ ॥

एम घणुं समजावीरे,वश तोय न श्रावीरे,फावी नही मंत्री केरी कोइ कलारे॥ त्रीजे उल्लासेरे, श्रदारमी जाखेरे, सुप्रकाशे मोहन सुकथा निर्मेखी रे ॥ १३ ॥ श्रर्थ ॥ मंत्रीए वीरमतीने घणी घणी रीते समजावी तो पण तेणीए तेनुं कह्यं मान्युं नहीं. श्रर्थात् मंत्रीए श्रनेक कला करी तो पण एके कला फलीजूत यह नहीं त्रीजा उल्लासमां उत्तम कथावाली अने निर्मेल एवी श्रदारमी दाल कि मोहनविजयजीए कही श्रने श्रोतार्जने सारो प्रकाश कर्यों ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

ग्रह पोहोती सघली सना,प्रगटी रजनी जाम ॥ वीरमती पोढी जइ, सुख शय्याए ताम ॥ १ ॥ नयणे नावे निष्डडी, राणी मन बहु शोच ॥ पेहेस्रो दाता पामवा, खालोचे छास्रोच ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ सजाना सर्वे जनो पोताने घेर गया अने रात्रि पडी अने वीरमती पोतानी सुख शैयाए जरूने पोढी गरू. ॥ १ ॥ शैयामां पोढता उतां निष्ठा श्चावती नथी. राणीना मनमां बहुज खेद खवामां स्थो अने पेहेलो दान आपनार ते कोण हशे एवी विचारजालमां गुंत्रार गरू. ॥ २ ॥

प्रात थयो उदयो श्रकं, वीरमती मित हीन ॥ नागर जन तेमी करी, पूरी सजा नवीन ॥ ३ ॥ तेडाव्यो शिवकुंवरने, ते पण श्राव्यो सद्य ॥ वीरमती एम उपदिशे, करनाटक श्रनवद्य ॥॥॥

श्चर्य ॥ सवारमां सूर्योदय थयो एटले मित मुंकायेली वीरमतीए नगरना खोकोने एकठा करी नवी सन्ना जमावी ॥ ३ ॥ वीरमतीए शिवकुमर नटने बोलाव्यो ते तत्काल श्चाव्यो वीरमतीए तेने श्चाव-तांज कहुं के फरी तेवुंज दोष (खोट) विनानुं नाटक करो ॥ ४ ॥

श्चारंत्रयो नाटक तेणे, कीधो वंशारोप ॥ तेमहीज ढोख ढम-क्रिया, प्रगट्यो रस श्चविलोप ॥ ५ ॥ तेमहीज नारी गुणावली, क्षेत्र पिंजर तेह ॥ जोवा बेठी गोखमां, नट क्रीडा ससनेह ॥ ६ ॥ श्चर्य ॥ नाटकीये नाटक शरू कर्युं. वांसने छजो कर्यों. तेवीज रीते ढोख पण ढमकारा करवा लाग्या अने अपूर्व रस प्रगट्यो ।। ए ॥ तेवीज रीते गुणावली राणी पण पांजराने लड़ने गोलमां स्नेह सहित नटनी क्रीडा जोवा बेठी ॥ ६ ॥

ताम्रचूड रूपे नृपति, निरखे करी विशेष॥ जो जा जविजन नव मिटे, सिखित जेह विधि सेख॥ ॥॥

अर्थ ॥ कुकडारूपे अयेक्षो राजा चंद पण आजे विशेष रीते ध्यान आपी नाटक जोवे हे. दे जन्य जनो ! जो को विधिना क्रखेक्षा क्षेत्र कदापि पण फरता नथी। ॥ १ ॥

ढाल १ए मी

॥ कालीने पीलीने वादसी ॥ ए देशी ॥

॥ नाटक जरत्यादक तणां ॥ खाखन ॥ नदुए ते वचन कीध, बोख्या दा नने श्रवसरे, खाखन चंद तणी सुप्रसिद्ध ॥ साहिबारे मोरोचंद नरिंद वड जागी हो, नवस दीदार ॥ ए श्रांकणी ॥ १ ॥ विखखाणी राणी घणु, खाण निसुणी तनय यश जोर ॥ यहपति वाणी सांजली,खाण्जेम खातरी चे चोर॥साण्य॥ श्रश्रं ॥ नाटकीयाए जरत प्रमुखना श्रनेक प्रकारना नवा नवा नाटको कर्या श्रने दाननो श्रवसर श्राच्यो त्यारे चंद राजानी विरूदावली बोह्या. एवी रीते के चंद नृपति महा जाग्यशाली श्रत्यंत मनो-हर श्रमारो खाविंद हे. ॥ १ ॥ पोताना चेरमान पुत्रनो यश श्रत्यंत सांजली राणी बहुज कांखी पडी गइ. जेम घरना मालेकनो श्रवाज सांजलतांज चोरनी दशा थाय तेवी तेनी दशा थइ. ॥ १ ॥

देवा दान नटेशने, खा० नकरे उपर हाथ ॥ श्रागक्षथी श्रापे नही खा० खेख जोणारो साथ ॥ सा० ॥ ३ ॥ शिव कहे चंद विना सजा, खा० निपट श्रक्षणे धान ॥ सेना जेम कुंजर विना, खा० जेम वल्ली विण पान ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रर्थ ॥ ते कारण्यी नटना श्रधिपतिने दान श्रापवा ते हाश्रपण उंचो करती नथी. तेम वली साथे जोनारापण तेनी पेहेखां श्रापता नथी. ॥ ३ ॥ शिवकुमरे कह्यं के जेम खुण विनानुं धान्य, हाथी विना-

नी सेना अने पांदडा विनानी वेख लागे तेवीज चंद राजा विनानी सजा लागे हे. ॥ ध ॥

दश दिशि नयणां फेरवे, ला॰ दाता जोवा काज ॥ विस्मित यइ सघली सजा, ला॰ राणी एम केम आज ॥ सा॰ ॥ ५ ॥ पण कोइ समजे नही, ला॰ वीरम तीनी वात ॥ एहवे निसुण्या कुकडे, ला॰ निज यशना अवदात ॥ सा॰ ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ नटराज दशे दिशाए दातारने जोवा माटे पोतानी आंखो फेरव्या करे हे, आवी तेनी स्थिति जोइ सघली सजा आश्चर्य पामी. अने वीरमती आजे आम शावास्ते करती हशे तेना विचारमां पडी. ॥ ५ ॥ परंतु सजा मध्येथी कोइ पण वीरमतीना अंतःकरणने समजी शकतुं नथी. एवामां कुकडाए पोनताना यशोवादनां वचनो सांजहयां. ॥ ६ ॥

मातानो जय श्ववगणी, लाव कठण करीने चित्त ॥ नाख्युं रतन कचोलडुं, खाव लाख टकानुं वित्त ॥ साव ॥ ७ ॥ क्षीधुं नटवे धसमसी, लाव तेह श्वनो पम पात्र ॥ कीरति चंदनी उच्चरी, लाव लक्कण एह सुपात्र ॥ साव ॥ ७ ॥ श्चर्य ॥ माताना जयने बिलकुल नही गणतां, कठण मन करीने लाख रूपीयानी किंमतनुं रतननुं क-चोलुं तेणे नीचे नांरुयुं. ॥ ९ ॥ नटराजे उतावलथी जरु ते श्चनुपम पात्र लरु लीघुं श्चने तत्काल चंदनी कीर्तिनुं गायन कर्युं. ए सुपात्रनां लक्षण समजवां. ॥ ए ॥

वरषा जेम तेमहीज सजा, ला॰ बुठी सोवन धार ॥ कुर्कट चरित्र निहालीने,
ला॰ राणी उठी तेवार ॥ सा॰ ॥ ए ॥ दोकी ख्रावी गोखडे, ला॰ कर जाली
करवाल ॥ रोषवदो पिंजर प्रद्धुं, ला॰ बोली गिरा विकराल ॥ सा॰ ॥ १० ॥
ब्रर्थ ॥ जेम वरसाद वरसे तेवीरीते सजाए सुवर्णनो वरसाद वरसाव्योः कुकडानुं ख्रावुं चरित्र देखी
राणी तत्काल उजी बद् ॥ ए ॥ वीरमती हाधमां तलवार लइने गोखनी पासे दोडती ख्रावी ख्रने ख्रत्यंत
कोधसहित पांजरूं हाधमां लइने विकराल शब्दो बोलवा लागी, ॥ १० ॥

किमरे पापी पंखीया, ला० न वही हजी तुज लाज ॥ मुज पेहेलां ते केम कर्युं, ला० दान ए कालने श्राज ॥ सा० ॥ ११ ॥ ठोडीश नही तुजनेह ने, ला० का ढयुं खड़ कही जाम ॥ कर यहारे दोडी गुणावली, ला० सासूडीनो ताम॥सा०॥११॥ श्रिश्रं ॥ हे पापी पद्यी! तने हजी लाज वली नहीं. मारी श्रिगां गई काले श्रेने श्राजे तें श्रा नाटकी याने केम दान श्राप्युं. ॥ ११ ॥ हुं हवे तने ठोडवानी नथी एम कही जेटलामां म्यानमांथी तलवार काढे हे तटलामां गुणावलीए दोडीने वीरमतीनो हाथ पकडी लीधों. ॥ १२ ॥

माताजी एह उपरे, ला० निपट न किजे रोष ॥ श्रविवेकी होये पंखीया, ला० नहीं एहनों कोइ दोष ॥ सा० ॥१३॥ चांचे जल पीता थकां, ला० जूमि पड्युं ए पात्र ॥ एशुं समजे दानमां, ला० एहनों तो निरखों गात्र ॥ सा० ॥ १४ ॥ श्रर्थ ॥ हे माताजी! पहीं विवेकने जाणताज नथी श्रने वली श्रा काममां तेनों कांइ दोषनथी माटे तेना उपर श्रापने श्रत्यंत कोध करवो युक्त नथी. ॥ १३॥ ए पहीए चांचथी पाणी पीवा मांकता ते कचों ज़ुं जमीन उपर पड्युं हो. दान देवामां ए ते शुं समजे? एनो देदार तो तमे जुर्ज! ॥ १४॥

जेम तेम पाले हे पिंमने, ला० पिंजर रह्यो तिर्यंच् ॥ केडो मुको एहनो, ला० कांकरो एहवा संच ॥ सा० ॥ १५॥ श्राच्या कोलाहल सुणी, ला० लोक सयल तेणी वार ॥ मुकाच्यो मली कुकडो, ला० करीकरी घणी मनुहार ॥सा०॥ १६॥ श्रर्थ ॥ ए पक्षी पांजरामां पड्यो पड्यो जेम तेम करी तेना शरीरने नजावे हे. हवे एनो केड मुको तो सारूं. तमे तेने माटे श्रावा छपाय शामाटे करो हो ॥ १५॥ सासु श्रमे वहुने वचे चालती रक्ष करांजली सजाना लोको त्यां एक हा श्रद्ध गया श्रमे श्रमेक प्रकारे वीरमतीने विनंति करी कुकडाने तेना कपाटामांशी हो डाक्यों ॥ १६॥

श्रावी राणी जीहां सन्ना, लाव नट पाम्या श्रानंद ॥

त्रीजा उद्घासे रंगणीशमी, ला॰ मोहन ढाल श्रमंद ॥ सा॰ ॥ १७ ॥ श्रर्थ ॥ त्यार बाद वीरमती राणी सजामां सिंहासन उपर श्रावी बेठी. नटो श्रानंद पाम्या त्रीजा उद्धासनी रंगणीशमी ढाल मोहनविजयजीए उत्तम कही. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

शिव नटवर श्रवसर चतुर, वीनवी लिखित वचन्न ॥ रोष निवारीने करी, राणीने सुप्रसन्न ॥ १ ॥ प्रारंज्यो प्रेषण फरी, चढी शिव माला यंश ॥ पिंजर सन्मुख दृष्टिधरी, खेले करे प्रसन्न ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चवसरना जाए एवा ते शिवकुमर नटे श्चितिमिष्ट वचनोथी राएीने रीजवी तेनो रोष उतरावी नांखी श्चिति श्चानंदमय करी दीधी. ॥ १ ॥ नटे फरीथी नाटक देखामवुं शरू कर्युं. शिवमाखा वांस उपर चडी. तेएीए पांजरानी सन्मुख दृष्टि राखी श्चने तेने प्रसन्न करवामाटे खेख करवां मंडी. ॥ १ ॥

> पिंजरगत पंखि इसे, पामी समय एकंत।। शिवमाखा आगल कहे, सरक्ष स्वरे बहु जंत ॥ ३ ॥ जाणी में नट कन्यके, परम प्रवीणा तुज्ज ॥ पंखी जाषा तुं लहे, ते माटे कहुं गुज्ज ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ एटलामां पांजरामां रहेल पंलीने एकांत जेवो समय मली जवायी शिवमालाने, तेणे बहु प्रकारे धीमा सादधी कहां. ॥ ३ ॥ हे नट कन्या! तुं श्चत्यंत प्रवीणातो एवं मारा जाणवामां श्चान्यं ते श्चने तुं प्रहीनी जाषापण जाणेते तेथी मारा श्चंतःकरणनी तने एक वात कहुं हो. ॥ ४ ॥

वंश थकी तुं जतरे, राषी करे पसाय ॥ पण ते तुं खेती रखे, कहुं हुं शीश नमाय ॥ ५ ॥ धन देखी राचे रखे, करी मुज व चन प्रमाण ॥ मागी खेजे मुज जणी, चूकीशमां स्रवसाण ॥६॥

श्चर्य ।। ज्यारे तुं वांस जपरथी नीचे जतर श्चने राणी तारा जपर प्रसन्न थइ दान श्चापवामांडे त्यारे ते दान, हुं तने पगे जागीने कहुं हुं के कोइपण रीते ज़ड़श नहीं.।।ए॥ ते जे धन श्चापे ते जपर राचीशमा. मारूं श्चावचन कबुल राखजे. तेनी पासेथी दानना बदलामां मने मागी लेजे श्चा समयने चूकीशनहीं.॥६॥

तुज गुण श्रा जीवित खगे, राखीश करी तावित ॥ कर उपगार उगार मुज, श्राप श्रजय श्रवगीत ॥ ७ ॥ धन तो श्रापण बेहुं मली, मेलशुं सदा श्रशेष ॥ तुज श्रागल श्रागे कहीश, कर्म लेख सुविशेष ॥ ए ॥

श्रर्थ ॥ तारो मारा उपर यतो आ गुण हुं जीवतासुधी तावितनी जेम बांधी राखीश, अर्थात् विस-रीश नहीं. मारा उपर उपकार करी मने बचाव अने तेम करीश एवुं अजयवचन आप. ॥ ९ ॥ जो धननी इक्षा हशे तो आपणे बंने मली निरंतर घणुं मेलवशुं. वली मारा कर्मना लेखनो विशेष जाव हुं तने आगल उपर जणावीश. ॥ ए ॥

॥ ढाल २० मी ॥ ॥ धणरा ढोला ए देशी॥

वंश यकी ते उतरी रे, तेमी एकांते तात ॥ धन्य नट बाखा ॥ वचन वंधी उपगार, करे शिवमाला ॥ इलवे समजावी कह्यो रे, कुर्कटनो श्रवदात ॥ घ० ॥ १ ॥ हरख्यो घणुं हारद खही रे, ते नट नायक ताम ॥ घ० ॥ जश पत्रणी श्रावी कर्यो रे, वीरमतीने प्रणाम ॥ घ० ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ ज्यारे शिवमाखा वांस उपरथी नीचे उत्तरी त्यारे तेणी तेना पिताने एकांतमां खड़गई श्चने पद्मी उपर उपकार करवा सारू कुकडाए कहें बात चीमेथी पोताना पिताने तेणीए कह्यो. श्चा न- दनी कुंवरीने धन्यवाद घटेंग्ने. ॥ १ ॥ शिवमाखानो हारद सांज्ञ । नटनो नायक घणोज हर्षे पाम्यो. प्रजी वीरमतीनो यशोवाद उचरी तेणीनी पासे तेणीने प्रणाम कर्या. ॥ २ ॥

गुण रागी यह रागिणी रे, तेड्यो निकट नटराय॥ ४०॥ माग माग आपुं तुंने रे, जो मागे ते पसाय॥ ४०॥ ३॥ बही स्ववसर नट विनवे रे, जो तमे री जयां मात॥ ४०॥ कीजे पसाय ए कुकडो रे, सो वाते एकवात॥ ४०॥ ४॥ श्राची वीरमती नटना गुणोशी प्रसन्न श्रवाशी शिवकुमर नटने पोतानी नजीक बोलाब्योः पासे स्नावतांज कह्युंके हे नटराज! तुं जे माग ते स्नाप्याने खुशी छं. माटे सुखेशी इहा मुजब मागः॥ ३॥ स्नवसरो खागजोइ नटे विनंति करीके हे माता! जो तमे प्रसन्न श्रयां होतो स्ना कुकडो स्नाप्यानी कृपाकरोः

सो वखत श्राप पुजशो तो श्रमारी तो एज विनंति है। ।। ।। ।। इशिख है पुत्री महारी रे, कुर्कट गित जल्लास ।।घण। नहीं श्रम पासे कुकिनो रे, तेणे नवी पहोंचे श्राश ॥ घण ॥ ८ ॥ कोइ श्रवर तमे पासजो रे, मुजने करो, बक्तीस ।।घण। घण कणनी नहीं मुज मणा रे, याची शुं वसी श्रवनीश ॥घण।।६ं॥ श्रवी श्रा शिववाला कुंवरी कुकडानी तमाम रीतजात प्रेम सहित शिखे वे परंतु श्रमारी पासे कुकडो

ष्ठर्थ ॥ श्रा शिवबाला कुंवरी कुकडानी तमाम रीतजात प्रेम सहित शिखेबे परंतु श्रमारी पासे कुकडो नथी तेथी तेनी श्राशा परिपूर्ण थती नथी. ॥ ५ ॥ तमे कोइ बीजा कूकडाने पालजो. श्रमने तो ए ब-इीस करो. श्रमारे दवे धन धान्यनी कांइ र्जबाश नथी. जो कदापि हशे तो बीजा नृपतित पासेथी मांगीशुं. ६

वस्ती वीरमती कहे रे, एशुं माग्युं तें दान ॥ घ०॥ पंखी आपतां माहरो रे, केम पोसाये वान ॥घ०॥॥॥ मणी कंचन गयवर तुरी रे, ए अम दान प्रसिद्ध ॥ घ०॥ आज लगण निव सांजल्यां रे, केणे पंखी दीघ ॥ घ०॥ ७॥

श्चर्य ॥ तेना जवावमां वीरमतीए कहुंके आवुं दान ते तें शुं जोइने मांग्युं ? वली पद्दीने दानमां आ-पतां श्चमारी भी शोजा वधे ? ॥ ९ ॥ दानमां दीरा, सोनुं, हाथी, घोडा एवां प्रसिद्ध दान तो श्चमे श्चा-पीए ठीए परंतु कोइए दानमां पद्दी श्चाप्युं एवं श्चाजलगी श्चमे सांजहयुं नथी. ॥ ए ॥

राख्यों है में ए पंखीयों रे, वधू रमवाने काज ॥ घ० ॥ तेहने झ्हब्या केम ब नेरे, आपुंतो आवे हे लाज ॥ घ० ॥ ए ॥ नट कहे पंखी आपतां रे, कांइ वि मासण कोम ॥ घ० ॥ हुं मांग्रं राजी थइ रे, लागरो नहीं तुम लोम॥घ०॥१०॥

श्चर्य ॥ ए पद्दीने में मारा दीकरानी बहुने रमवामाटे राख्यों हे. तेथी पद्दीने श्चापतां तेनुं मन छु:खाय ते केम बने ? माटे तने श्चापतां शरम खागे हे. ॥ए॥ शिवकुमरे कहां के ए पद्दीने श्चापतां कोडो गमे श्चाडा विचार शुं करो हो. हुं राजी श्वइने श्चापनीपासे मांगी खहुं हुं तेथी तेमां तमने नुकशान खागशे नहीं।॥ १०॥

पण हैडाथी न उतरे रे, तुमने वहालों हे एह ॥ ४० ॥ तो देतां गुंदा गक्षों रे, हवे तुम लाधों हेह ॥ ४० ॥ ११ ॥ ए कुक्कम माग्या वती रें, जो कचुआउंहों एम ॥ ४० ॥ जो अमे अवर कांइ मागतां रे, तो देइ सकतां केम ॥४०॥१२॥ अर्थ ॥ परंतु पद्दी तमने बहुज वहालुं लागवाथी तेने आपतां तमारा हैयामांथी ते बटतो नथी. माटे तेने आपवामां शुं गलचवा गलोहों हवे अमे आपना मनने जाणी गया ॥ ११ ॥ मात्र कूकडानेज मागतां थकां ज्यारे आवीरीते कचवाउंहों तो बीजुं कांइ तेना करतां वधारे किंमती मांगत तो शीरीते आपीशकत १॥ १२ ॥

राणी नटने प्रीडवे रे, पण प्रीडयो निव जाय ॥घ०॥ वचन वेधाणी द्युं करे रे, कुक्कड कीध पसाय ॥ घ० ॥ १३ ॥ पंखी खेवा मोकख्यो रे, सचिव गुणावखी पास ॥ घ० ॥ तेणे जइ मांग्यो कूकडो रे, उंका खेइ निसास ॥ घ० ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ राणीए नटने अनेक रीते समजाववामां ज्यो परंतु ते कोइपण रीते समज्यो नहीं आखरे कुर कडाने आपवानी कबुखत आपी. वचनमां बंधाइ हती तेथी खाइखाज हती ॥ १३ ॥ वीरमतीए गुणाविदीनीपासे प्रधानने पक्षी खेवा मोकढ्यो प्रधाने मांगता पेहेखां तेणीनी पासे जइ प्रथम उंडो निसासो मुकी पठी कुकडो मांग्यो ॥ १४ ॥

वाइ समजाइ कहुं रे, छापो मुज ताम्रचूम ॥ ध० ॥ श्रका नटने श्रापशे रे, साच म जाणशो कूम ॥ ध०॥ १५ ॥ काम नथी हठतुं इहांरे, इहां रहे एहने विनाण ॥ ध० ॥ कुशलो रहेशे नट कने रे, लहेशे कोड कल्पाण ॥ध०॥१६॥

श्चर्य ॥ गुणावलीने प्रथम सघली वात कही पठी कहां के मने श्चा क्रुकमाने श्चापोः डोशी श्चा क्रुक-डाने नटनेज श्चापवानीठेः ते साचीज वातठेः जरापण खोटी मानशो नहीः ॥ १५ ॥ श्चा वखते इठ क-रवानो प्रसंग नथीः श्चर्शं श्चा रेहेवाथी तेने विद्वोठेः नाटकीया पासे द्वेम कुशल रहेशे श्चने कोडोपकारे तेने सुख मलशेः ॥ १६ ॥

प्राण तणीपरे राखशे रे, शिवमाखा सुकुमाल ॥ ४० ॥ त्रीजा जल्लासनी मोइने रे, कही ए विशमी ढाल ॥ ४० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ अत्यंत कोमल स्वजाववाली शिवमाला तेने पोताना प्राणनी जेम साचवशे. त्रीजा जल्लासनी वीशमीढाल कवि मोहन वीजयजीए कही. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

सुणी वचन विल्ला यइ, गुणावली श्रत्यंत ॥ सासू फांसू विहं गथी, वेर वहे जगवंत ॥ १ ॥ एहने तो लागे नही, इलद फटकमी रेष ॥ मुजथी केम देखी करी, दीधो जाये एष ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ प्रधाननां मुखयी वचनों सांजली गुणावली श्चत्यंत कांखी पडीगइ. ते बोलीके हे जगवंत श्चा सासु विनाकारणे पद्मीनीसाथे वेर राख्या करेडे. ॥ १ ॥ पद्मीने श्चापी देवामां तेना मनमां तो हलदर फटकमी श्चापवा जेवुं लागेडे. परंतु हुं देखी देखीने तेने श्चापुं एम माराश्ची केम दीधो जाय. ॥ २ ॥ मितनाठी साठी ता ।। ३॥ की घो मुजपित कूक मो, हजी न प होती हाम ॥ कांइ नचाडे घरे घरे, परदेशे बेकाम ॥ ४॥

श्चर्य ॥ हे मंत्रीजी ! एनी तो घडपएमां साठे बुद्धि नाठी हे तेशी श्चापी देवानुं कहे हे. परंतु तमे जइने तेने समजावोके नटने श्चापीने शुं करशो ।। ३ ॥ मारा स्वामिने कूकडो बनाव्यो तोपए हजु शक्ति फोर-ववानो श्चंत श्चाव्यो नहीं ते विनाकारएं परदेशमां घेर घेर नाचवाना काममाटे सोंपेहे. ॥ ४ ॥

श्राश विद्युधी एहनी, मुज निशदिश विद्याय।। राणीजीना बापनुं, एहमांदे शुं जाय ॥ ५ ॥ जुःखे पासुं तास जुःख, श्रवरने हांसु थाय ॥ मीयांनी दाढी बखे, श्रन्य तापवा जाय ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ तेनी जपरना श्चाशाना बंधारणे मारा रात दिवस जाय हे. तेने श्चापी देवामां राणीना बापनुं शुं जाय श्चर्यात् तेने शुं नुकशान श्वायः? ॥ ५ ॥ जेना पडलामां छःखे तेनेज पीडाहोयः बीजाने तो छ-खटी हांसी करवानुंपण बने. केहेवतहेके मीयांजीनी दाढी सखगती होय त्यारे बीजार्ज तापवाजायः ॥६॥

वांध ढोम सचिवे करी, घणी गुणावली साय ॥ श्रायत सुंदर लही प्रिया, सोंप्यो पिंजरनाथ ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ मंत्रीए श्चनेक युक्ति प्रयुक्ति गुणावलीसाथे करी. गुणावली ए पांजरामां रहेला पोताना नाथने सोंप्यो श्चने सोंपता पेहेलां तेणीए श्चा प्रमाणे कह्यं ॥ ७ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥

॥ हे पियु पातलीया येंग्रो शिरना मोनजो ए देशी॥ हो पियु पंत्वीयमा, नारी गुणावली तामजो, पिंजरी कर लीघो जरते लोयणेरे लोल ॥ हो०॥ पत्रणे परिहरी मुजजो वीव्रमवा मित कीघी श्रमणित जोयणे रे लोल ॥ १॥ हो०॥ विसया हृदय मोजारजो, तन मनना सोदागर परदेशी थयारे लोल ॥ हो०॥ मूकता रखे वि सारिजो, संजारी कोइ वेला पियु करजो मयारे लोल ॥ १॥

अर्थ ॥ राणी गुणावलीए आंखमा आंसुनीधारा चालतां पांजरूं हाथमां क्षीधुं अने बोली हे मारा नाथ! पद्मीजी आखरे तमे मने तजी दीधी. ठेवटे वियोग करवानीज बुद्धि केलवी, अने नगणीशकाय तेटला योजन सुधी दूरजवानो विचार कर्यों ॥ १ ॥ हे स्वामि तमे मारा हृदयमां वास करी रह्यां हो. तमे मारा तनमना सोदागर ठतां, परदेशी अवा मांगोठों हवे मने पडतीतो मुकी परंतु मारू विस्मरण करां नहीं अने कोइ वेला याद लावीने हे स्वामि आ दासी छपर कृपा करजों. ॥ १ ॥

हो। ॥ तुमे कहीए क्षण मात्रजो, योवनना आजूषण नहीं मुने विस रोरे लोल ॥ हो। ॥ न कर्यों गुन्हों कोइजो, अवग्रण विण विवनतुं इहाला कांकरों रे लोल ॥ ३ ॥ हो। ॥ हुती आश अनंतजो, थाडीपण कां नाणी मुज उपर दया रे॥ लोल ॥ हो०॥ चतुरे न आपी पं खजो, मेलो फुर्लज तेनो जे करश्री गया रे॥ लोल ॥ ४॥

श्चर्य ॥ हे स्वामि! तमें मारा यौवनना शृंगारहो तेश्री मने क्षणमात्रपण विसरता नथी. में श्चापनो कांइपण गुन्हों कयों नथी. तेथी मारा वांक शिवाय मने तजी देवानुं केम करोहों? ॥ ३ ॥ हे स्वामिन नाथ! मने श्चापनाथी घणी श्चाशार्ड पूर्ण करवानी हती. ते पूर्ण करवामां मारा उपर थोडीपण श्चापे दया केम न श्चाणी? वद्धी प्रजुए मने पांखों पण श्चापी नथी. तेथी श्चाप मारी पासेथी गया पही श्चापनो मेखाप श्वों पण हर्खंजहें. ॥ ४ ॥

हो। ॥ जोवो मीट मिलायजो, जावी वश ए लहेवो पियु मेलावडो रे ॥ लोल ॥ हो। ॥ जे पाडें वियोगजो, तेहना मुखमां हे महीपुत्री पड़ो रे ॥ लोल ॥ ए ॥ हो। ॥ सुंदर मंदिर ठोडजो, श्रकुलिणी शिव माला मोह्या तेहथी रे ॥ लोल ॥ हो। ॥ जासो विरह जगायजो, जवालाते श्रसराला नहीं शमें मेहथी रे ॥ लोल। ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ हे स्वामि ! श्चा वखत मारी सामे नजरो नजर मेखवोः कारणके हवे फरी श्चापनो मेखाप श्ववो ते ज्ञवितन्यताने श्चाधीनने वखी जेणे श्चापणो वियोग करान्योने तेना मोढा उपर धूल पडजो ॥ ३॥ हे स्वामिनाथ ! तमे कुल्लहीन शिवमाला उपर मोह्या तेथीज श्चा सुंदर मंदिरने नोडवानी इन्ना करी. परंतु हे पियुजी ! जो श्चत्यंत विरह जगावीजशो तो ते विरहनी महा विकराल ज्वाला वरसादथी पण शांत थवानी नथी।॥ ६॥

हो। श्रणखी हो किरतारजो, गोठम ही श्रापण ही न शक्यो सांसही रे ॥ हो लाहो। होती महारी कठोरजो, वीठमवानी वेखा हजी श्राखी रहीरे लोल ॥ ७॥ हो। कहुं हुं बिठाइने गोदजो, वेरणाने पण न होशो वीठमवा घडीरे ॥ हो। हो श्रा हो। हुं श्रवला निरधारजो, धणने उपर कुमया न करो एवकी रे ॥ हो।।।।

श्रश्री। हे स्वामिनाथ! इर्घ्यावालों जे कर्मरूप किरतार ते आपणी गोष्ठीने सहन करीशक्यों नहीं. वली हे नाथ! मारी जाती पण अत्यंत कठोरजे कारणके वियोगनों समय आव्यों ते जतां फाटी नहींजतां आलीने आली रहीजे. ॥ ७ ॥ हे स्वामिनाथ! हुं आपनीपासे खोलों पाथरीने माफी मागुं अने इहुं हं के मारा वेरीने पण मारीजेम वियोग अवानों अवसर प्राप्त अशों नहीं. हे कृपासिंधु! हुं बलहीन, निराधार हैं. एवी तमारी स्त्री जपर आवडी अकृपा करों नहीं. ॥ ० ॥

हो। ॥ तुम रढीयाला बोलजो, खटकरो क्रणक्रणमां खटक ताणी परे रे॥ लोल ॥ हो। ॥ विद्वह्या मिलण छुलंजजो, लागे नही जइ पातु पत्र तरुवरे रे ॥ लोल ॥ ए॥ हो। ॥ जाशो कोश हजारजो, दा सीने कोइ समये स्वामी संजारजो रे॥ लोल ॥ हो। ॥ करी करूणा एक वारजो, मंदिरिए आपणके वेगे पधारजो रे॥ लोल ॥ १०॥

अर्थ ॥ हे स्वामिनाथ ! तमारा रह जत्पन्न करें तेवा मीठा बोखो तमारा वियोगमां आंखमां खटको ययानी जेम क्रणे क्रणे मारा अंतःकरणमां खटक्या करहो. वखी हे दयाखु ! जुदा पड्या पठी फरी मेखाप यवो छर्बन ठे, कारणके वृक्त जपरथी खरेखुं पांदकुं त्यां जइ फरी चोटी शकतुं नथी. ॥ ए ॥ हे स्वामिनाथ ! आपतो हवे हजारो कोश दूर जवाना, परंतु आ दासीने कोइक समये हे नाथ ! अवस्य स्मरणमां खावजो वखी हे दयासागर ! आ दासी जपर एक वखत करुणा करीने पोताना मंदिरे जखदी पधारवा मेहरबानी करशो ॥ १०॥

हो। ॥ तुमे मुज जिवन मूखजो, रातमीयुं आंखडीयुं उपर वारणे रे ॥ खोल ॥ हो। ॥ ए मुज निपट आलोचजो, फेरवरो नाटकीया पर घरबारणे रे ॥ खोल ॥ ११ ॥ हो। ॥ जो राखुं करी जोरजो, सामु डी ने जुंडी निव पुरूं पड़े रे ॥ खोल ॥ हो। ॥ देतां न वहे चित्रजो, जीवतणी गित जाणो घट जेम चाकके रे ॥ खोल ॥ ११ ॥

श्रर्थ ॥ हे स्वामिनाथ! तमे मारा जीवतरना मूल्लां. मूल्लिना जेम वृक्ष सुकाइ जाय तेम श्रापना वियोगे श्रा शरीरनी तेवीज दशा समजशो. तेथी श्रापनां रक्त नेत्रो छपर हुं वारी जालंबं. वली हे प्रा- ए।धार! मने मोटी चिंता तो एज श्रायन्ने के श्रा नाटकीयार्छ श्रापने पारका घरोना घारे ज्यां त्यां फे- रन्या करशे. ॥ ११ ॥ हे स्वामिनाथ! तोपण मनमां एज विचार श्रावे के जो श्रापने हुं मारूं जोर श्राजमावी श्रत्रे राखुं तो श्रा वीरमती बहुज छुष्टने, तेने हुं पहोंची शकुं तेम नथी. तेथी हे जीवनहार! एवं नतांपण श्रापने श्रापीदेतां मारूं मन कबुल करतुं नथी. मारा मननीदशा चाकडा छपर चडेला घडानी जेवी श्रत्यारे श्रद्ये एम जाएजो. ॥ १२ ॥

हो। ॥ बोह्यो कुक्कम रायजो, समजावे पद नखद्यी श्रक्करने लखी रे ॥ लोल ॥ हो। धनमन हरणी मकरीश फिकर लगारजो, नमले तुज मुज मेलो जान गया पठी रे ॥ लोल ॥ १३ ॥ हो। ॥ मिलशुं धरजे धीरजो, श्रलगो तोपण तुं मुज जाणजे ठुकडो रे ॥ लोल ॥ हो। ॥ राखजो हृ दय मोजारजो, मुजने नर नटकरशे टाली कुकडो रे ॥ लोल ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ एटलामां कुक्कडराय बोलवा लाग्या श्चने पगना नखर्यी गुणावलीने श्चक्कर लखी समजाववा लाग्यो हे मनोहारिणी ! तमे जरापण वियोगनुं छःख धारण करशो नही वियोग नाश पामशे, परंतु मारो जीवजशे तो पढ़ी तमारो श्चने मारो मेलाप किंद रेहेवानो नश्ची. ॥ १३॥ हे मनोहारिणी ! श्चापणे फरी मलशुं तमे धीरज राखजो हुं दूर नश्ची एम मानजो वली हे प्यारी ! तमे एमपण हृदयमां श्चवधारजोके श्चा नट लोको मारू कुकमापणुं मटाडी पुरुष बनावशे ॥ १४॥

हो। ॥ देश तथा परदेशजो, परणी धुर घरणी ते केम विसरे रे॥ खोल ॥ हो। ॥ वालिम वचने तामजो, कांइक तो हैमामां धीरजता धरे रे॥ लोल ॥ १५॥ हो। ॥ सचिवने कहे नृप नारिजो, सासूने जइ सोंपो तमे श्रा पांजरो रे ॥ लोल ॥ हो० ॥ करी प्रणिपति मंत्री राजो, राणीने तेह श्राप्यो तत्कण पाधरो रे लोल ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हे मनो हारिए। ! गमे तेवा देश तथा परदेशमां जशुं तोपए जे प्रथम परऐखी स्त्रीते ते केम विसराशे ? तेथी हे वहादी ! पोताना स्वामिनां वचने कांड्क धीरज अंतःकरएमां धारए करवीतेज अयेथे. ॥ १५ ॥ त्यारपठी गुणावलीए मंत्रीने बोलाव्या अने कहां के सासूजीने आ पांजरू लड़ जड़ने सोंपो. पठी मंत्रीए गुणावलीने प्रएाम करी, पांजरूं तेनी पासेथी लड़ जड़ तत्क्रण सिधुंज ते पांजरूं वीरमती राएीने आप्युं. ॥ १६ ॥

हो। ॥ नटने बगस्यो सधजो, राषीए पण न करी कोइ पड खामणी रे ॥ खोख ॥ हो। ॥ त्रीजा जल्लासनी एहजो, एक वी शमी कही मोहने ढाल सोहामणी रे ॥ खोख ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ राणी वीरमतीए तरतंज ते पांजरू नटने बक्षीस कर्युं अने बक्षीस करतां पेहेखां पद्दी संबंधी बीजी कांइपण वातिचतकरी नहीं. ए प्रमाणे त्रीजा ज्ञासनी एकवीशमी ढाख मोहनविजयजी ए मनने सोहामणी खागे तेवी कही. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नटवर पिंजर शिरधरी, राणी कीध प्रणाम ॥ इरखे उत्तराते हीये, श्राव्यानिज विश्राम ॥ १ ॥ पिंजर शय्या उपरे, शाप्युं यतने जोर ॥ शिवमाखा करजोमीने, कहे वचन एक ठोर ॥१॥

अर्थ ॥ ते जत्तम नटे पोताना मस्तक जपर पांजराने धारणकर्युं अने वीरमतीने प्रणाम करी, हर्षथी जजराता हैये पोताना विश्राम ठामे ते आव्यो. ॥ १ ॥ घेर आवी पांजराने सुखासन जपर पुष्कख यतना पूर्वक सुक्युं. पठी शिवमाखा तेना सामी बेहाथ जोडीने एक चित्तश्री नीचे मुजब कहेवा खागी.॥ १ ॥

श्रमे श्रराजक सहु हता, श्राज खगण शिरताज ॥ हवे तो धणि याता थया, तुमथी कुर्कटराज ॥३॥ प्रजा श्रमे राजा तमे, करशुं नव नव रंग ॥ जाग्य होयतो संपजे, जत्तम चतुर प्रसंग ॥ ४॥

श्रर्थ ।। हे मस्तकना मुगट समान कुर्कटराज ! श्रमे आज सुधी सर्वे राजाविनाना हता, ते हवे धणी श्राता थया. ॥ ३ ॥ श्रमे आपनी प्रजा श्रने तमे श्रमारा राजा एवीरीते हवे नवा नवा रंग करशुं. ज्यारे जसम जाग्य थायने त्यारेज जत्तम चतुरनो संयोग मलेने. ॥ ४ ॥

> पेहेलां मुजरो तुमतणो, पढ़ी श्रवरनो होय ॥ राजी रहेजो श्र हनिशी, जुःख न वहेशो कोय॥५॥ मेवामुक्या श्रागक्षे, चुगे विहं गपति तेह ॥ पण कंठे नवि उतरे, गुणावलीने नेह ॥ ६॥

श्रर्थ ॥ प्रथम श्रापनो मुजरो करीने पढ़ीज बीजानो मुजरो थहो. तमे रात्र दिवस श्रानंदमांज रहेजो. कोइपण प्रकारनुं छःख मनमां धरहो। नही. ॥ ५ ॥ त्यारबाद शिवबालाए कुर्कटराजपासे नव नव जातना मेवा मुक्या ते तेणे खावामांड्या परंतु गुणावसीना स्नेहनुं स्मरण थतां ते गर्ते जतरता नथी ॥ ६॥ समजावे नट पुत्रिका, श्रहो पंखी मतजूर ॥ चूगो सुखे मन जमगे, पहोंचहो वाजते तूर ॥ ७॥

श्रर्थ ॥ ते देखी शिवबादा पश्चीराजने समजावे हे के हे कुर्कटराज! तमे फुरो नहीं मनमां छमंग धारणकरो सुखेश्री खार्च तमारा मनोरथ सर्व पूर्ण थशे ॥ ७ ॥

॥ ढाख १२ मी ॥

(आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी)॥
कहे मंत्रीने ग्रणावली, कहो राणीने सम जाय ॥ वालिम मोरारे, वीठडीर्ज घणुं सांजरे ॥१॥ क्यांइ जाशो नट लेइने, मुज प्रीतम प्राणाधार
॥ वा० ॥ हाथ विद्वटो मेलावडो, फरी होता लागे ठे वार ॥ वा० ॥ वी० ॥१॥
अर्थ ॥ गुणावली राणी मंत्रीने कहे ठे के हे मंत्रीजी! तमे वीरमतीने जइ समजावोके माराथी विखुटो
पडेलो ए मारो नाथ मने बहुज थाद आव्या करेठे. कोइ परमेश्वरनो वहालो ठे के जे जइने मारा पतिने
विदेश जतो ते रोकी राले?॥१॥ मारा प्राणना आधारह्य स्वामिने ए नटो कोण जाणे क्यां लइ जशे?

ए नर जमरने पंगे पंगे, नव नवला मलशे मित्त ॥ वा० ॥ विण पति कृष्ट्र गति माहरी, तुमे जुर्ज विचारी चित्त ॥ वा० ॥ वी० ॥ ३ ॥ रहे शे जो कुकडलो थको, तो ही मायडीना पूरशे कोड ॥ वा० ॥ श्रा लालुंबो ए माहरो, मत हाथे विख्यों जोड ॥ वा० ॥ वी० ॥ ४ ॥

वसी एक वखत जे मेलाप हाश्रमांश्री ब्रुट्यो ते फरी मलतां वार लागे हे. ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ ए नर जमरने पगले पगले नवा नवा मित्रो मलहो परंतु हे मंत्रीजी! तमे मनमां विचारोके पितिविना मारी ते शीगित श्वरो? ॥ ३ ॥ ए कुकडो छतां जो श्वर्ही रहेशे तो पण तेनी माना कोड पूरहो मारे तो ए श्वालाखुंबो छे, माटे माताजीने जइने कहोके जाणी जोइने पोताने हाथेज शुं काम जोडीने त्रोडी नांखो छो. ॥ ४ ॥

राणी तो पूरव जन्मनी, यह वेरण न तजे केम ॥ वा० ॥ टाली मनुष्य पंखी कर्यों, तोय नाव्यो हजीय निवेड ॥ वा० ॥ वी० ॥ ५ ॥ जे मुज प्रीतम मेखवे, तस उशिंगण न थवाय ॥ वा० ॥ प्राण करुं तस छुं ठणे, पांपणेषी पूंजुं पाय ॥ वा० ॥ वी० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ए वीरमती तो मारी पूर्व जन्मनी पाकी वेरण हे, ते मारो केड मुकती नथी। पुरुष मटाडी पद्दी कर्यों तो पण इजु निवेडो खावती नथी ॥ ५ ॥ हे मंत्रीजी जे मारा स्वामिनाथने मेखवी स्त्रापे तेनो उपगार माराथी केम सूझ्यो जाय १ हुं मारा प्राणश्ची तेना खंहणा करूं स्त्रने पापणोधी तेना चरणोने पूजुं. ६

सासु कांइ जाती नथी, गया जेम उंटोना शिंग ॥ वा० ॥ महारा पि-युनो यश सुणी, एइने केम लागे ठे हींग ॥ वा० ॥ वी० ॥ ७ ॥ कहे

मंत्री बाइ तुमे, इवे न करो डुःख प्रतिचार ॥ वा० ॥ चंडा रंग न बेकीये, ए तो जतरी साते जतार ॥ वा० ॥ वी० ॥ ० ॥

श्चर्य ॥ जेम जंटोना शिंगडा गया तेम ए वीरमती कयांइ जाती नथी. मारा स्वामिनाथनो यश सांज-द्वी तेने तो हींग मुक्या जेवुं खागे छे ॥ ७ ॥ मंत्री कहे छे के हे गुणावदी ! तमे हवे छःखना विचार मनमां खावो नहीं. ए रांम चंडीका जेवीछे, एने छेडो नही. ए तो साते जतारे जतरेखी नपावट छे. ॥ण॥

रही वे थइने ए मोसली, एहनो आधो जरोसो नाण ॥ पवी तो ए राज तुमारकुं, वली चंद नृपति महिराण ॥ वा० ॥ वी० ॥ ए॥ मन वारी राख्युं सुणी, हितकारी मंत्री बोल ॥ वा० ॥ मेवा कनक कचोलमा, पियु माटे आप्या अमोल ॥ वा० ॥ वी० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ इवे तो ए डोसली-बहुज घरडी थड़ वे तेथी एनो जीववानो श्चरघो जरोसो जाएजो. एना पढ़ी तो श्चा राज्य तमारूं श्चने महाराजा चंदराजानुंज वे ॥ ए ॥ मंत्रीनां एवां हितदायक वचनो सांजली गुणावलीए मनने वेकाणे राज्युं श्चने श्चमूह्य एवां सुवर्णनां पात्रो स्वामिनाथना जोजनने माटे श्चाप्यां. १०

देश जलामण मंत्रीने, मूक्यो फरी प्रीतम पास ॥ वा० ॥ सोंप्या शि-वमाला जणी, मीठा मोदक सुविखास ॥ वा० ॥ वी० ॥ ११ ॥ नट कन्याना कानमां, कह्यो मंत्रीए जेद ॥ वा० ॥ चंद नरेशर एह ठे, पंली माये कर्यों धरी खेद ॥ वा० ॥ वी० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ मंत्रीजीने जलामण करीने पोताना स्वामिनायनी पासे फरी मोकह्या स्त्रने तेमनी साथे अरखंत मिष्ट एवा मोदक श्वने विलास करवानी वस्तुर्ज शिवमालाने श्वापवा सारू सोंप्या ॥ ११ ॥ शिव मालाने मंत्रीजीए तेना कान पासे जइ कुकड़ा संबंधी सर्व वृत्तांत कह्यो. स्त्रा चंद महाराजाज हे स्त्रने तेनी विमाताए तेना जपर देव थवाथीज तेने पक्षी बनाव्यो है ॥ १२ ॥

रूडी रीते राखजो, मत दाखजो एहने छेह ॥ वा० ॥ वेहेला फरता आवजो, लेख लखजो धरजो नेह ॥ वा० ॥ वी० ॥ १३ ॥ कुर्कटने प्रणमी करी, आव्यो मंत्री निज आगार ॥ वा० ॥ कीधा ढोल ढको-लडा, चढी चाळो नट शिरदार ॥ वा० ॥ वी० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ एमने रूमी रीते संजालीने राखजो. कोइ प्रकारे तेने बेह देशो नही. फरता फरता वेहेला श्चावजो. कागल पत्रो लखजो श्चने हेत प्रीत राखजो ॥ १३ ॥ पत्नी मंत्री कुकडाने प्रणाम करी पोताने श्चावास श्चाव्या. एटले नटना नायकोए प्रयाणनो ढोल वगाड्यो श्चने तेर्च चाली निकड्या. ॥ १४ ॥

ढोल सुणीने गुणावली, चढी सातमी जूमि ताम ॥ वाण ॥ जाता दीठा नटवरा, लेइ शीशे पंखी धाम ॥ वाण ॥ वीण ॥ १५ ॥ पिंजर नजर जरी जुए, गयो श्रखगो लोपी सीम ॥ वा० ॥ श्रामा तरू श्राया घणा, पामी मुरठाये हित नीम ॥ वा० ॥ वी० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ ए प्रमाणनो ढोल सांजली गुणावली सातमा माल जपर चडी. तेणी ए नाटकी यार्जने जाता दीना श्चने एकना मस्तक जपर पांजरूं दीवुं ॥ १५ ॥ गुणावली नजर खेंचीने पांजरा तरफ जोया करे हे एटलामां तेर्ज सिमाडो होडी चाह्या. वली घणा मोटा वृक्षो पण आडा आव्या एटले पांजरू न देखांता ते मूर्ही खाइने पडी. ॥ १६ ॥

शीतल पवन प्रयोगथी, लही चेतना सखी उपचार ॥ वा० ॥ सम जावी त्रावी मंत्रीए, राणी समफ मनइ मफार ॥ वा० ॥ वी० ॥१९॥ श्रावी वीरमती कहे, बहु थयो निःकंटक गेह ॥ वा० ॥ गयो कुर्कट ते जल्ली थइ, इवे जो तुं तुज मुज नेह ॥ वा० ॥ वी० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ सखीए शीतल पवनोपचारथी श्चने बीजा प्रयोग करी सावधान करी. त्यार बाद मंत्रीए श्चावी ने समजाववाथी गुणावलीए मनमां समजण धारण करी ॥ १७॥ श्रोडा वखत पठी वीरमतीए श्चावी कहां, हे वहु! हवे तमारूं घर निष्कंटक श्रयुं. कुकडो गयो तेज सारूं श्रयुं. हवे तमारो श्चने मारो स्नेह केवो जामे हे ते जो जो ॥ १०॥

श्रवसर चतुर गुणावली, करे हाजी हाजी सुविशाल ॥ वाण ॥ त्रीजा जल्लासनी मोहने, कही बावीशमी ए ढाल ॥ वाण ॥ वीण ॥ १ए ॥ श्रर्थ ॥ समयनी जाण गुणावली, वीरमतीने संपूर्ण रीते हाजी हाजी करवा लागी. त्रीजा जल्लासनी मोहन विजयजी ए श्रा बावीशमी ढाल कही. ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

जेम जेम त्रितम सांत्ररे, तेम तेम हृदय मोजार ॥ थखे विरह पावक प्रवस, श्रांसु धार श्रपार ॥ १ ॥ जे देशे सज्जन वसे, ते दिशि तणो पवन्न ॥ त्रीतम तनु फरसी करी, फरसो माहरुं तन्न ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चर्री गुणावलीने जेम जेम पोताना स्वामिनाश्च याद श्चाव्या करे हे तेम तेम हृदयमां प्रबख विरहाग्नि धखवा मांड्यो श्चने नयणे श्चांसुनीधारा श्चपार वेहेवा मांडी ॥ १ ॥ ते इञ्चवालागीके जे देशमां मारा नाश्च होय ते दिशा तरफनो पवन मारा पतिना शरीरने फरसी पठी मारा शरीरने फरसजो ॥ २ ॥

श्चरे प्राण प्राणेश विण, रहेशो केवे ढंग ॥ गमन शील तुम धर्म ढे, केम न गया पियुं संग ॥३॥ किहां कंत किहां नवल रस, किहां सुरंगो नेह ॥ बाजी बाजीगर तणी, यह गइ कोइ एह ॥ ४॥

श्चर्य ॥ हे मारा प्राणो! तमे मारा प्राणनाथ गया उतां हवे केवी रीते रही शकशो. तमारो स्वजावज जवानो डे. तेथी तमे मारा प्राणनाथनी साथे केम न गया? ॥ ३ ॥ मारो स्वामी क्यां, नवनवा रस क्यां, जत्तम रंगवाखो स्नेह क्यां? श्चा तो जाणे सघली बाजीगरनी रमतज थड़ होयनी तेवुं श्रयुं. ॥ ४ ॥ पियु सुरगिरि सम जीवजो, वधजो वम विस्तार ॥ मेखावे संजार जो,श्रहो जीवन श्राधार ॥ ५ ॥ फूरे एम गुणावली, पियु विण सुने गेह ॥ तनु शृंगार श्रंगार सम, विरहे दुर्वेख देह ॥ ६ ॥

श्रश्री। मारा प्राणनाथ मेरू पर्वतनी जैम चिरंकाल जीवजो, श्रने वमना विस्तारनी जेम तेनी वृद्धि थजो. वली हे मारा प्राणाधार! तमे मेलाप करवानुं स्मरणमां राखजो ॥ ५॥ स्वामिविनाना सूना घरमां एवी रीते गुणावली जूर्या करे हे. शरीरना शृंगार तेने श्रंगारा समान लाग्या करे हे श्रने विरह्यी शरीर सूकातुं जाय हे. ॥ ६॥

तीत्र निरंतर तप तपे, कर्म निर्जरा हेतु॥ धरे ध्यान जिनराजनुं, जे जनसागर सेतु॥ ७॥

श्चर्य ॥ गुणावली कर्मनी निर्जरा करवाना हेतुश्री निरंतर तीत्र तपश्चर्या करे हे. श्चने जबसागर तर-वाने वहाण समान एवं जिनराजनुं ध्यान धरे हे. ॥ उ ॥

॥ ढाख १३ मी ॥

॥ नितुर न यइयेरे कान गोवाल ॥ ए देशी ॥
नवल सनेही रे चंद जूपाल, हे पंखी पण तोही ॥ आवे संगलीनारे
नृप महराल ॥ ए आंकणी ॥ सात नृपति निज जूमि पेरे, चाख्या दल
लइ पूर ॥ गुणावली आदेशथी रे, गु० डेलंगवा चंद सन्र ॥ न० ॥
हे० ॥ १ ॥ ते नटने आवी मख्यारे, कुकड प्रणम्या पाय ॥ स्वामि
तारी सेवनारे, स्वा० अम कुणी तो न मुकाय ॥ न० ॥ हे० ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ चंदराजाना खरा स्नेही एवा शुरवीर सात राजार्ज चंदराजा पद्दी थया बतां गुणावलीना श्रा देशश्री पोताना संपूर्ण सैन्य सहित, चंद राजानी मिठाशश्री उंद्धं न पडवा देवा तेनी पासे श्रावी रह्या। १ ॥ तेर्ज सर्वे नटना मंडलने श्रावीने मह्या; श्राने कुर्कट रायने तेर्ज प्रणाम कर्या। वली तेर्ज कह्यं के हे स्वामि तमारी सेवा श्रमे विद्यमान बतां श्रमाराश्री तजावानी नश्री. ॥ १ ॥

श्राट्या गुणावली कहेणथीरे, रहेशुं उलंगे निशदिश ॥ ठो पंली तो शुं थयुं रे,ठो०पण तम चरणे ए शीश ॥ न० ठे० ॥३॥ कुकडे नावि कंधरारे,

खहुं सेवके सन्मान।।नट दल पंखी दख वहे,न०एक पंथे प्रेम समान।। न०छे०॥॥। अर्थ ।। अमे गुणावलीना हुकमथी आव्या छीए रात दिवस तमारा आलंबने रहेशुं. आप पही थया तथीशुं थयुं? अमारां मस्तक तमारा चरणमांज छे. ॥ ३ ॥ एवां तेमनां वचनो सांजली कुर्कटराजे पोतानी कोड न मावी. जेथी सेवक राजार्ज पोताने सन्मान महयुं एम मानवा लाग्या. ए प्रमाणे नटनुं मंडल अने चंदनु दल एक साथे प्रेमपूर्वक पंथ कापता चाह्यां करे छे. ॥ ४ ॥

शिवमाला शिर उपरे रे, राखे पिंजर मारग मांहि ॥ चामर विंजे बेहु जणारे, चा० करे ठत्रनी कोइक ढांहि ॥ न० ठेणाया गामे गाम पुरे पुरे रे, नट निज पेट निमित्त ॥ कुकमा राजा आगखे, कुण्रमी मेले बहुलुं वित्त ॥ न० ठेण ॥६॥ श्रर्थ ॥ शिवमाला रस्ते चालतां पांजराने पोताना मस्तक छपरज राखे हे. वे जाणा बंने बाजुए चामर विजे हे श्रने एक हत्रधारण करे हे ॥ ए ॥ नगरे नगर श्रने गामे गाम नाटकीयार्ख पोताना छदर पोषण निमित्ते रमतो रमीने जे श्रनर्गल धन मेलवे हे, त कुकड राजनी पासे धरे हे.॥ ६॥

एम जनपद जनपद तणारे, नृप आपे बहु दाम ॥ पिंजरथी नटने थयुं रे, पि॰ एक पंथ आने दो काम ॥ न॰ छे॰ ॥७॥ शिव माखा मेवा घणारे, आगख खेइ धरंत ॥ जीवितना जीवित परे रे, जी॰ नित कुर्कट जतन करंत ॥ न॰छे॰॥७॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे देश देशना राजार्छ घणुं धन आपे हे कुकड राजना प्रतापथी नाटकीयार्छने तो एक पंथने वे काज थया ॥ ७ ॥ शिवमाला अनेक प्रकारना मेवा तेनी पासे मुकेहे अने कुकडरायने पोरताना जीवनना आधाररूप गणी तेनुं निरंतर बहुज जतन करे हे.॥ ० ॥

एम नित प्रते नवनवरसेरे, रमता देश विदेश ॥ न धरे शंका कोइनीरे, नव नट मन मांहि खवलेश ॥नव्हेणाणा एहवे श्राव्या श्रमुक्रमेरे, सुंदर देश बंगा ल ॥ पृथ्वी जूषणपुर तिहांरे, पृष्सुरपुर हुंती सुविशाल ॥ नव्हेव ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ एम निरंतर नवनवा रसथी रमता रमता देश परदेश करे हे. ते नटो मनमां खेश मात्र शंका कोइनी पण धारण करता नथी ॥ ए ॥ ए प्रमाणे श्चनुक्रमे चालतां चालतां तेष्ठं सुंदर बंगाला देशमां इंजपुरी समान श्चिति विशाल एवा पृथ्वीजूषण नामना नगरमां श्चाव्याः ॥ १०॥

जिहां श्रिमर्दन नरवहरे, जेहनो प्रबल प्रताप ॥ तेहने चंदना तातथी,रे ते० हतो मांहो मांहे मेलाप ॥ न०डे० ॥११॥ समीश्राणा ताण्या नटेरे, पुरसीमाए सुरंग ॥ सुक्यो कुर्कट पिंजरोरे, सु० करी सिंहासन उत्तंग ॥ न० डे० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ ते नगरमां श्चत्यंत प्रवल प्रतापवालो श्चरिमर्इन नामनो राजा राज्य करे हे. ते राजाने चंदना पितानी साथे मित्राचारी हती ॥ ११ ॥ नगरना सिमाडा छपर सुंदर तंबुछं नाटकीयाछए ताष्ट्या. तेमां छंचु सिंदासन गोठवी कुर्कटरायनुं पांजरूं ते छपर मुक्युं. ॥ ११ ॥

तेनाव्या श्रित्मर्दनेरे, नट रमवा दरबार ॥ पिंजर करी मुख श्रागक्षेरे, पि॰ कर्या नाटक गति श्रमुसार ॥न०वे०॥१३॥ रीजयो पुर राजा घणुंरे,कीधो लाख पसाय ॥ पुवयो प्रबंध पंखी तणोरे, पु॰ कहयो संकेपे नटराय ॥ न० वे०॥१४॥

श्रर्थ ॥ ते नाटकीर्जने श्रिरमर्दन राजाए पोताना दरबारमां रमवा तेडाव्याः पांजरा साथे छड़ श्रागल धरी, सर्व प्रकारना नाटक तेर्जए कर्या ॥ १३ ॥ राजा नाटकश्री घणोज खुशी थयो अने खाल रूपीया इनाम श्राप्याः पठी पत्ती संबंधी नटरायने हकीकत पुठतां संकेपश्री तेणे सर्व हकीकत कहीः ॥ १४ ॥

तव राजा वंगालनोरे, लाग्यो कुक्कम पाय॥ मणी कंचन हय हाथीयारे,म० कर्या पेसकसी हितलाय ॥ न० ठे० ॥१५॥ हुं हुं सेवक रावलोरे, रे पंत्री नृपचंद ॥ जले पथार्या प्राहुणारे, ज० अणिचंत्या वीरनानंद ॥ न० ठे० ॥ १६॥ श्चर्य ॥ ते सांजली वंगालानो राजा कुर्कटरायने पगे लाग्यो. श्चने पढ़ी मणि, सुवर्ण, हाथी श्चने घोडा प्रेमपूर्वक नजराणामां आगल धर्या ॥ १५ ॥ हे चंद नृपति! पद्यीराज हुं आपनो सेवक हुं. हे वीरसेनना पुत्र! आप उचिंता श्चमारा मिजवान अवा जले पधार्या ॥ १६ ॥

जिहां तिहां पुर्यप्रसादथीरे, प्रगटे मंगल माल ॥ त्रीजा उल्ला-सनी मोहनेरे, त्री० कही त्रेवीशमी ढाल ॥ न० ठे० ॥ १७॥

श्रश्चे ॥ चंदराजा ज्यां जाय हे त्यां तेना पुण्य प्रतापत्री मंगलनी श्रेणी प्रगट याय हे. ए प्रमाणे त्रीजा उद्वासनी त्रेवीशमी ढाल मोहन विजयजी ए कही. ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

नट चाल्या पिंजर ग्रही, श्रागल धरी उन्नांह ॥ निज सीमा बंगालपति, वोलावी वसी यांहि ॥ १ ॥ नट रमता ऋमता धरा, श्राव्या सिंहल द्वीप ॥ जिहां सिंहलपुर वर प्रवर, सायर तणे समीप॥१॥

श्चर्य ॥ त्यार पठी नटो पांजराने ग्रहण करी उत्साह पूर्वक कुच करता हवा. बंगालानो स्वामि पोता-नी सीमा सुधी तेर्जने वोलावी पाठो फर्यो ॥ १ ॥ नाटकीयार्ज रमतो रमता श्चने पृथ्वीने जेलंघता सिंह-खदीपे श्चान्या. त्यां समुद्रना कांठा जपर सिंहलपुर नामनुं श्चत्यंत सुंदर नगर ठे. ॥ १ ॥

तिहां नट कुक्कमनो कटक, जइ जतारो कीध ॥ हरख्यो श्राति सिंहल नृपति, नटनी सुणी प्रसिद्ध ॥ ३ ॥ नट पण पिंजर कर प्रही,जइ प्रणम्यो महीपाल ॥ रीजाब्यो नाटक करी, शिवकुंबरे तत्काल॥॥॥

श्चर्य ॥ ते नगरमां नटना श्चने कुर्कटराजना सैन्ये जतारो कर्यों नटनी घणी ख्याति हती तेथी तेजंने श्चाच्या सांज्ञद्वी सिंहदा राजा श्चत्यंत हर्ष पाम्यो ॥ ३॥ त्यार पठी शिवकुमर नट पोताना हाश्चमां पांजरू धारण करी ते राजानी पासे श्चाच्यों नाटक करवा सारू प्रथम प्रणाम करी विनंति करतां राजाए हुकम करवाश्ची तेणे नाटक तरतज करवा मांडयुं. जे देखीने राजा बहुज खुझी थयो. ॥ ४॥

पंच सया वाहण तणो, श्राव्यो दाण जगीश ॥ ते वेदाते नट जणी,कर्यों सयदा बक्तीस ॥ ॥ सिंहज नृपनो यश कही, करी

होल हमकार ॥ जिहां स्वकीय उपकारिका, नट श्राव्या तेणीवार ॥ ६ ॥ श्रिश्च ॥ राजाए पांचसो वहाणनी जगात जे तरतज श्रावी हती ते सघली नाटकीयाने नाटक जोइ बहीस करी ॥ ५ ॥ सिंहल राजानुं यशोगान बोली, होल उपर हमकारो करी, ज्यां पोतानो जतारो हे त्यां नाटकीयार्च पाठा श्राव्या ॥ ६ ॥

रह्या राति थयो प्रात जब, करी जोज्य थइ सज्ज ॥ उमाह्यो पोतनपुरे, नट जट निपट सकज्ज ॥ ७॥

श्चर्य ॥ पोताने जतारे रात्री वासोरही सवार श्रद्द पटले शिरामण करी, तैयार श्रद्द पोतनपुर नगरे, नटनुं दल जे पोतानुं काम करवामां महाकुशल हे ते, जवाने हर्षवंत श्रयुं. ॥ ७ ॥

॥ ढाल २४ मी ॥

॥ कानजी मेखोने कांबक्षीरे ॥ ए देशी ॥

राणी सिंहसने कहे रे, पंखीथी धरी राग ॥ श्राणी श्राणो ए कुकडोरे, मुजने पियु महाजाग ॥ १ ॥ कामणगारो ए कुकडो रे, कर्युं जेणे जगत श्राधीन ॥ एह जोया पठी सिंहलारे, थइ जेम जलवीण मीन ॥ का०१॥

द्यर्थ ॥ सिंहल राजानी राणी पोताना स्वामिने कहे हे के हे महाजाग ! नटनी पासेना कुकडाने मने श्रपाचो. ए कुकडा उपर मने राग थयो हे ॥ १ ॥ मने तो ए कामणगारो लागे हे. एखे श्राखा जगत्ने श्राधीन कर्युं हे. एने जोया पढ़ी जलविनानी माहलीना जेवी मारी दशा थड़ गड़ हे. ॥ २ ॥

जइ रह्या एइ पिंजर थकीरे,ते पिंजरमां प्राण ॥ खेइ गयो चित्तए देख तांरे, श्रहो तिर्यंच् विनाण ॥ का० ॥३॥ जूपतिज्ञाखे राणी जणीरे, स्यो पंखीथी प्रेम ॥ एइथी एहोनी श्राजीविकारे, मागे श्रापेते केम ॥ का० ॥ ४ ॥

श्रर्थ।। एने जोया पढ़ी आ पांजरा (शरीर)ना प्राण ते पांजरामां जहने रह्या है. जोत जोतामां एए मारा चित्तनुं हरण कर्युं. श्रहो पह्नीनुं पण केवुं उत्तम झान है ? ॥ ३ ॥ राजाए कह्युं के हे राणी ! पह्नी उपर ते प्रेम शुं राखवो ? ए नाटकीयाउने तेना उपर तो आजीविका है, तेथी तेमनी पासे मांगता ते आपेज केम? ॥ ४ ॥

मुजने मागे कोइ तुजकनेरे,ते मुज जेम न देवाय ॥ तेम नट एह छापे नहीरें, हठ खीधे ग्रुं थाय ॥ काण्याया पंखी विना कहे रागिणीरे, मुज जीवित छक्यन्न ॥ ए नट खोजीने जोखवोरे, देइ वस्तु सुपसन्न ॥ काण्याद्या

श्रर्थ ॥ कोइ तारी पासे श्रावी मारी मागणी करे तो तुं जेम मने श्रापी देवा कबुल कर नहीं तेवीज रीते नटो पण ए पद्यीने श्रापे नहीं तेथी इठ खेवाथी शुं लाज हे ॥ ए ॥ राणीए कह्युं के हे नाथ ! ए पद्यी विना मारूं जीवतर श्रकृतार्थ है. तेथी ए नटो खोजीया है, तेलेने श्रत्यंत लक्तम वस्तुलं श्रापी जोलवों ॥ ६॥

मुक्या राये राणी हठेरे, दास नटोनी पास ॥ माग्यो सपिंजर कुकडोरे, करे नट वचन प्रकाशाकाणाणाएं श्रम जूपति कुकडोरे,ते केम दीधो जाय ॥ श्रमने जो श्रापे ए कुककोरे,तो श्रमेना निव थाय ॥ काणाणा

श्रर्थ ॥ राष्टिना श्रत्यंत हराधी पोताना सेवकोने सिंहस राजे नटोनी पासे मोकह्या. तेर्डए श्रावीने पांजरा सिंहत कुकडानी मांगणी करी. तेना जवाबमां नटोए कह्युं के श्रा कुकडो श्रमारो राजा हे तेथी श्रमे तेने केवी रीते श्रापी शकीये? परंतु ए कुकडो जो श्रमने श्रापी देतो श्रमाराधी तेनी श्राज्ञानुं उद्धं- घन थड़ शके नही. ॥ ७ ॥ ७ ॥

ताकयो खेत्रा ए पंखीयोरे, राजा नाटक जोय ॥ खाख टके पण एहवो रे, दाता न मख्यो कोय ॥ का०॥ए॥ जूपवधु जो जीवे नहीरें, तो श्रम नावे स्नान ॥ राणी जूपने वाखहीरे, तेम ए श्रम जीवन समान ॥ का०॥१०॥

श्चर्य ॥ राजानी ही खुबी कहीए? ज्यारे नाटक बताव्युं त्यारे ते जोइने पक्षी खेवाने तत्पर थया. वखी खाख रूपीया श्चापनार एवो दातार पण जाणे जगत्मां नहीं होय ? ॥ ए ॥ राजानी राणी कुकडा विन जीवी शके तेम नथी एम जो कहेता होतो तेमां श्चमने कांइ स्नान नथी. जेवी राजाने राणी वहाखी वे तेवी रीते ए पक्षी श्चमने जीवन प्राण समान वे. ॥ १० ॥

सेवके रायने विनव्यारे, नटवे कह्यां जे वचन ॥ रोष चड्यो चढी चा-ढीयोरे, खेवा पंखी रतन ॥ काणा११॥ सांजली नंका जेरी तणारे, सज्ज थया नर फुंफार ॥ सामंत चंद नरिंदनारे, जजा थइ असवार ॥ काण ॥११॥ अर्थ ॥ सेवकोए आवीने राजाने नटना कहेलां सघलां वचनो कह्यां जे जपरथी राजाने कोप व्याप्यो अने ते पही रत्नने लेवा तैयार थयो ॥ ११ ॥ सिंहल राजाना लस्करना डंका तथा जेरीना अवाज सां-जली चंद राजाना सामंतो सज्ज थइ गया, असवारो थइ तेजनी सामो युद्ध करवा तैयार थया. ॥ ११ ॥

जाणीए उत्तरे उम्हीरे, श्याम घटा घनघोर ॥ पिंजर खद्द चढी निसर्यारे, देतां नगारे ठोर ॥का०॥१३॥ सिंइल श्रावीने श्रापडयोरे, श्रक्षगा
हुंती खेकि ॥ सुइडे नटे करी चालणीरे, तेणे जेइवी करी केडि ॥ का० ॥१४॥
श्रश्रं ॥ चंद राजानुं लस्कर जाणे उत्तर दिशामां श्याम रंगनी वादलांनी घटा चनी श्रावी होय तेषुं
दिसवा लाग्युं. तेर्ज पांजराने साथे लड्ड नगारा उपर घाव देतां चढी निकह्या ॥ १३॥ सिंइल राजा
श्रावीने तेना उपर श्रुटी पडे ठे एटलामां सुघड नटोए एवी युक्ति करीके तेना इसाराधी चंदना लस्करे
तेर्जनी पुंठे घसारो कर्यों.॥ १४॥

पूरे सूरे जाइ वणीरे,जोर मचो धमसाण ॥ सिंहखना जम उपरेरे,वही एक धारी कृपाण ॥ काण ॥१५॥ फिके मुखे नासी गयोरे, सिंहख नृप श्रविनीत ॥ जयवाजी चिहुं खुंटमांरे, कुक्कड नृपनी जीत ॥ काण ॥१६॥

श्चर्य ॥ वंने लस्करो संपूर्ण शूरथी लडतां, मोटुं धमसाण श्चयुं. एटलामां सिंहल रायना लस्कर जपर चंद राजाना लस्करनी एकधारी तलवार चालवा मांडी ॥ १५ ॥ श्चविनीत एवो सिंहलराजा हार श्रवा श्री फीके मोटे जागी गयो. कुकड रायनी जीत श्चर् श्चने चारे दिशामां जयघोष श्वयो. ॥ १६ ॥

> चाळा पोतनपुर त्रणीरे, नट त्रट यह उजमास ॥ त्रीजा उल्लासनी मोइनेरे, कही चोवीशमी ढास ॥ का०॥ १९॥

श्रर्थ ॥ नटनुं श्रने चंद राजानुं दल हर्षवंत श्रतुं पोतनपुर नगर तरफ चाह्युं. एवी रीते त्रीजा लक्षा-सनी मोहनविजयजीए चोवीशमी ढाल कही. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

पोतनपुर सुरपुर समुं, कमक्षा निखय विधान ॥ नृपति तिहां जयसिंहपति, वैरी व्रण ख्रादान ॥ १ ॥ तास सुबुद्धि मंत्रीसरु, जूपतणो प्रतिरूप ॥ मंजुषा तसमाननी, हिमकर थकी श्रनूप ॥ १ ॥

श्चर्ष ॥ पोतनपुर नगर श्चमरापुरी जेवुं हतुं. वद्धी साक्षात् खहमीना निवासस्थान जेवुं हतुं. त्यां वेरी रूपी गुमडाने नाशकारक जयसिंह नामनो राजा राज्य करतो हतो ॥ १ ॥ ते राजाने जाणे राजानुं बीजुंज रूप होय तेवो सुबुद्धि नामनो मंत्रीश्वर हतो. तेने मंजुषा नामनी, चंद्रधी पण श्चनुपम एवी स्त्री हती. ॥ १ ॥

तास सुता खीलावती, बालवेष सुविशेष ॥ सुरियुं तस देखी हजी, मेसे नही निमेष ॥ ३ ॥ खीलाधर तेणे पुरे, धनद शेवनो जात ॥ पराखो ते खीलावती, थइ युगती ए वात ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ तेने कुमारी श्चवस्थामां दिपती एवी लीलावती नामनी पुत्री हती. जेने देखवाथी हजी सुधी श्चप्सराचे पण पोतानी बंने श्चांखनी पांपणो एकठी करती नथी ॥ ३ ॥ तेज नगरमां धनद नामनो शेठ हतो तेने लीलाधर नामनो पुत्र हतो. ते लीलाधरना लीलावती साथे लग्न थयां. श्चा बनाव जेवो जोइए तेवो थयो. ॥ ४ ॥

कंपति जेम तंत्री तणी,सुकृति संपत्ति जेम ॥ तेम परस्पर दंपती, मधूर वधे तेम प्रेम ॥ ५ ॥ सांसारिक सुख तेइने, दोगंडक अनुमान ॥ रति रतिपति ए आगक्षे, निरसी रति समान ॥६॥

श्चर्य ॥ जेम वीणा जपरना तारनी गित श्वतां श्चानंद वधे, जेम जत्तम कार्योश्री संपत्ति वधे, तेम दंप-तीनो श्चरसपरस मेखाप श्वतां मीठो प्रेम वधवा मांड्यो ॥ ए ॥ स्वर्गनेविषे दोगंडिक देवतार्जनी जेम तेर्ज सांसारिक सुख जोगवे हे श्वने कामदेव श्वने रितनो विखास तेमना विखास श्चागद्ध चणोठी जेवो नीरस हे ॥ ६ ॥

> पुन्यहीन कोइ पुरुष, श्राव्यो तस श्रागार ॥ हांकी काढयो रंकने, खीलाधरे तेणीवार ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ एवामां कोइ पुन्यहीन, दरिष्ठी पुरुष तेमना घर आगख जीख मांगवा आव्यो. ते रांकने खी-खाधरे तेज वखते तिरस्कार करी हांकी काढ्यो. ॥ ७ ॥

॥ ढाख २५ मी ॥ ॥ गरव न कीजेरे ए सद्ग्रह शीखखडी, एहथी मीठीरे नहीं साकर सुखखकी ॥ ए श्रांकणी ॥ कोप्यो झुमक कहे छुंवरने,थोना करीए ठमका ॥ जावा द्यो एम धरणी धमका, चपला विजली चमका ॥ १ ॥ एहवोढुं पण तुजथी रूमो, हाथ कमावणवालो ॥ तुं तो तात कमायुं विलसे,पण हुं नहीं उशीयालो ॥ ग०॥श।

अर्थ ॥ कुंवरनां वचनो सहन न थवाथी ते जिखारीने तेना छपर घणोज कोध चढयो. जिखारीए कहां के कुंवरजी ! थनथनाट थोडो करो, वसी जमीन छपरना पगना धवकारा अर्ज विजसीना जेवा आंखोना चमकारा जावाद्यो. (किव कहे हे) के सद्गुरुनी एज शिखामण है, के कोइए गर्व करवो नही. ए शिखामणथी साकरनी सुखडी पण मीठी नथी. ॥ १ ॥ हुं जिखारी हुं परंतु ताराथी सारो हुं. हाथे क-माइने खानारो हुं. तुं तो वापनी कमाणी खाय है. हुं तारा जेवो कोइनो छशीयादो नथी. ॥ १ ॥

जे निज जुजबल धन न कमावे, धिग् धिग् जीवित तेहनुं ॥ कूदा कूद पराये पैसे, करता जाये केहनुं ॥ग०॥३॥ तात छतां छे तुं निहचिंतो, लेखे नाणे कोइने ॥ रे जुंडा धन यौवनने मद, पगलां जर तुं जोइने ॥ ग० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ जे पोताना जुजाबलथी धन छपार्जन करतो नथी तेना जीवतरने धिकार है. पारके पैसे कु दाकुद करवी तेमां बीजा कोइनुं शुं जाय? ॥ ३ ॥ तुं बाप बेठो हे त्यां सुधी निर्वेत हो श्चने कोइने हि-साबमां गणतो नथी. परंतु हे जुंडा ! धन श्चने जुवानीनामदमां हकी नजा जोइ विचारीने पगलां जर ध

जेहवी पाके पाने वीती, तेम वीतशे कुंपलीये ॥ वीटी कनक तणी तो पेहेरे,पामर पण आंगलीये ॥गणाय॥वचन सुणी लीलाधर लाज्यो,लाग्यो डुमकने चरणे ॥ विश्वावीशयी आज अमारे, तुं गुरु लाग्यो करणे ॥ गण ॥६॥

श्चर्य ॥ जेवी पाका पांदडानी दशा श्राय हे तेवीज दशा कुंपलनी पण काले करीने श्रशे.पामर जीवोने पण सोंनानी वीटी मले तो श्चांगलीमां पहेरे हे ॥ ए ॥ जिखारीनां वचनो सांजली लीलाधर कांखो पडी गयो. श्चने तेने पगे जड़ने पडयो. हे जाड़ श्चाजश्री तुं मारो विशेवसा गुरु श्रयो इं. ॥ ६ ॥

डुमक गयो इवे कुंवरचिंते, परदेशे जावानुं॥सुख डुःख देश तथा परदेशे, नहीं श्रन्यथा थावानुं॥ग०॥ऽ॥त्रुटी खटलकीये जइ सुतो, श्रावी जनके जगाव्यो ॥ रे सुत तुजने छुद्दव्यो केणे, केणे एम रोष चढाव्यो ॥ ग० ॥०॥

ऋर्य ॥ ते जिलारी गया पढ़ी, कुंवर परदेशे जवासंबंधी चिंतवन करवा लाग्यो. तेणे निश्चय कर्यों के सुल के छःल जे नशीवमां मांडेलुं होय हे ते देशमां रहीये के परदेश जरूप पण अन्यया यवानुं नथी ॥ ७ ॥ लीलाधर तुटेली खाटलीमां जरू सुतो तेने तेना पिताए जरूने छठाडयो. हे बेटा! तने कोणे छह- ज्यो श्चने आवो कोध कोणे चढाज्यो ॥ ० ॥

लीलाधर कहे श्रमित चोमुज,जाइश हुं परदेशे॥ तात कहे तुज केम मुकाये,एहवे बालक वेशे॥ग०॥ए॥ तरुणी मृगाक्ती परिगल लही, वली कोइनुं नथी देणुं॥जाइशमां तव जनकने जाख्युं,डुमके दीधुं जे मेणुं॥ग०॥१०॥

चंदराजानो रास.

श्चर्य ॥ लीलाधरे कहुं हे पिताजी मने आज्ञा आपो. हुं परदेश जवा मांगुं हुं. तेना पिताए कहुं के जाइ हजु तुं बालक हो तेथी तने केम जवा देवाय? ॥ए॥ तने युवान स्त्री परणावी हे. पुष्कल लक्ष्मी हे. वाली आपणे कोइनुं देवुं नथी, माटे हे जाइ! जङ्शमा. एटले जिलारीए जे मेणुं दीधुं हतुं ते लीलाधरे तेना पिताने कहुं. ॥ १०॥

रे सुत रांक तणी वातडीये,फोकट केम इठ ताणे॥ गांठतणी उंघमली वेची,जजागरो कोण आणे॥ग०॥११॥माता तात तणो समजाव्यो,समजे

नहीं रढीयाखो ॥ मंत्री प्रमुख गया हारीने, ठाक चढयो मतवाखो ॥ग०॥११॥ ऋर्ष्य ॥ हे बेटा ! एवा जिखारीनां वचनथी ते कोइ हठ करतुं हरे। एवो हठ कर नही. पोतानी जंध-वेची विना कारणे कोण जजागरो करे ? ॥ ११ ॥ मात पिताए घणी रीते समजाव्यो परंतु ए हठ खइने बेठेखो समजतोज नथी. मंत्री विगेरे सहु थाकीने गया. ते एक मतीखो चढी गयो. ॥ १२ ॥

जेम तेम करी जोजन जमामयो, यह रजनी रसने हो।। हा हित गते ही हा वती खाबी,पण पति मीट न मेहे।।गण।१३॥ कामणगारी नारी बोली, पियु

डा नयण ज्ञाडो ॥ की मी उपर केही कटकी,तृण उपरस्यो कुहाडो ॥ गणारशा अर्थ ॥ जेम तेम करीने लीलाधरने जमाडयो, एटलामां रात्री थरु. बाद राय्यामां पोढवाने समये मन् हर गितवाली लीलावती आवी परंतु तेना सामुं तेणे नजर पण करी नही ॥ १३ ॥ कामणगारी लीला वती बोली के हे नाथ ! जरा आंख जंची करी मारी सामुं तो जुर्ज. की डी उपर आवमुं कटकशुं अने घास उपर कुहाडो शामाटे ? ॥ १४ ॥

एम सहुने छहवीने जाशो, हुं केम देइश जावा॥ वीविमीया फीरी मिलण दोहिलो, पोस किहां किहां पावा॥गणा१५॥ मंदिर मुकीते केम जाये, जे

होय प्रजुना पुरा ॥ तुम जेवा में कोइ निवदी ठा, श्रापमित घर शूरा ॥ गणा १६॥ श्रश्रं ॥ ए प्रभाणे सहने तो छःख लगाडीने जाशो परंतु हुं केम जावा दश्श ? जुदा पनया पठी फरी मल बं मुस्केल श्राय छे. क्यां पोस श्रमे क्यां श्रिप्त तेना जेवी दशा थाय छे ॥ १५ ॥ जेना जपर परमे-श्वरनी पुरी कृपा होय ते पोताना घर बार छोमी शुं काम बहार जटकवा जाय? तमारा जेवा श्रापमती ला श्रमे घरवालां उपर जोर बतावनारा श्राज सुधी कोइ दी हा नथी ॥ १६ ॥

विलमावे एम मीठे वचने, रमण जणी ते रमणी ॥

त्रीजा उद्घासनी ढाल पचीसमी, मोहन विजये पत्रणी ॥ ग० ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ ए प्रमाणे अनेक मीठां वचनोथी लीलावती पोताना प्राणनाथने समजावे हे. त्रीजा उद्घासनी पचीशमी ढाल मोहन विजयजीए कही. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

बीखाधर खखना वचन, खुबद्धो नहीं खगार ॥ नारी हारीने रही, कंतन मेखे तार ॥ १ ॥ ययो प्रात तव तात पण, श्रति समजाव्यो जात ॥ वात न माने कोइनी, जेयो नहीं तिख मात ॥ १ ॥ श्चर्य ॥ सीक्षाधर पोतानी स्त्रीना श्चत्यंत मोहक वचनोमां क्षेश मात्र खुब्ध श्रयो नहीं. श्चने पोते सीधेसी वात ठोडतो नश्ची तेश्ची सीक्षावती श्वाकीने बेठी ॥ १ ॥ प्रजात श्रयो एटखे सीक्षाधरना पिताए पण घणी घणी रीते समजाववा मांनयो, परंतु कोइनी वात तेणे मानी नहीं श्चने तेनुं श्चंतःकरण जरापण विगट्युं नहीं ॥ २ ॥

समय दक्त श्राव्यो सचिव, जाखो हठजा मात ॥ मुहुरत दिन निर धारवा, तेडया गणक विजात ॥ ३॥ मंत्री वक्त कटाक्तथी, खह्यो जेद जूदेव ॥ निरखीने तिथि पत्रिका, कहे कपटथी हेव ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चवसरनो जाण मंत्री ते समये श्चाव्यो श्चने पोताना जमाइनो श्चर्यंत हठ जाणी जमाइने परदेश जवा सारू मुहर्त्तनो दिवस नकी करवा जुदा जुदा जोशी उने तेणे बोदाव्या ॥ ३ ॥ मंत्रीनां वक कटाक्त्रथी जोशी गुप्त जाव समजी गया. पठी टीपणामां सारी रीते जोइने कपटयुक्त कदेवा खाग्या ॥॥॥

कुक्रम बोले जे समय, तेहवे जो सिधि थाय ॥ तो कुंवर पर देशमां, कमला घणी कमाय ॥ ५ ॥ एहवो मुहूरत नहीं श्रवर,

मांहे मास उ मास ॥ हरख्या सहु मंत्री प्रमुख, वाध्यो कुंवर उल्लास ॥६॥ अर्थ ॥ जे वखते कुकडो बोखे ते समय साधीने जो कुंवर प्रयाण करी दे तो परदेशमां जह ते घणीज बक्की संपादन करे ॥ ॥ में आपने कह्यं तेवुं मुहूर्त्त आजथी उ मास सुधीमां बीजुं एक पण नथी। जोशीनां वचन सांत्रवी मंत्री विगेरे सहु हर्ष पाम्या अने बीखाधरने पण जल्लास थयो। ॥ ६ ॥

िं क्र संतोषी दानश्री, करी शीख ससनेह ॥ दंपती प्रस्थाने कुंवर, श्राव्यो मंत्री गेह ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ जोशीर्डने दानथी संतोष पमामी स्नेह पुर्वक रजा श्चापी. पठी कुंवर प्रस्थानने माटे पोताना सासरा (मंत्री)ने घेर लीखावती साथे श्चाच्यो. ॥ ९ ॥

॥ ढाख १६ मी ॥

॥ माहावतणीरी श्रजब सुरित कांइ॥ ए देशी॥
मंत्री जाले निज सेवकने, रखे कोइ श्रागल जालोरे॥ ग्रणना लोजी,
कोण टाले पदारथ जावी॥ ए श्रांकणी॥ कुक्कड पंली जेह होयते, न
गर मांहे मत राखो॥ ग्र०॥ को०॥ ॥ १॥ पंली वचन जो सुणशे
जमाइ, रहेशे नही ते राख्यो रे॥ ग्र०॥ ते माटे तमे ढीलन करशो,
करजो जेहमें जाख्यो रे॥ ग्र०॥ को०॥ १॥

श्चर्य ॥ मंत्रीए पोताना सेवकोने बोखावी सर्व हकीकत कही श्चने कहांके आ वात तमारे बीजा को-इनी पासे ज्ञारवी नही. हे गुणनाज लोजी! नगरमां ज्यां ज्यां कुकडाहोय त्यांथी लई जई बीजे गाम मुको. किव कहें छेके जावी पदार्थने कोण टालीशके छे? ॥ १ ॥ हे जाइले! जो जमाई कुकडानो श्च-वाज सांजलशे तो पढ़ी कोइ रीते रोक्यो रेहेवानो नथी. माटे में तमने जे काम करवानुं कहां ते काम करवामां खगार मात्र ढीख करशो नही. ॥ १ ॥ दोड्या दास पोतनपुर घर घर, कुर्कट कीधा जेला रे॥ गु०॥ गामो गामे खेइ पोहोचाव्या, लागी नहीं कोइ वेला रे॥ गु०॥ को०॥ ३॥ विनव्यो मंत्री दासे खावी, सफल करी तुम वाणी रे॥ गु०॥ जेह कला मंत्रीए कीधी, कुंवरे ते नवी जाणी रे॥ गु०॥ को०॥ ४॥

अर्थ ॥ मंत्रीना सेवकोए पोतनपुर नगरमां घेर घेर फरी सर्वे कुकडार्ड तेर्डए एकठा कर्या. तेर्डने जुदे जुदे गामे मोकली दीधा. ते काममां जरापण वार लागी नाही. ॥ ३ ॥ मंत्रीना सेवकोए आवी कह्यंके आपना हुकम प्रमाणे अमल थइ गयो ठे. मंत्रीजीनी आ कला कुंवरना जाणवामां आवी नही. ॥ ४ ॥

मांकी कान रहे खीलाधर, कुक्कमना स्वर माटे रे॥ गु०॥ पण पंखी स्वर काने न पड़े, कोटिक टंका साटे रे॥ गु०॥ को०॥ ५॥ पंखी वचन विना कुंवरने, मंत्री राखे वारी रे॥ गु०॥ खीलाधर पण व गर मुहूरत, न करे गमन विचारी रे॥ गु०॥ को०॥ ६॥

श्चर्य ॥ हवे खीखाधरतो कुकडानो स्वर सांजलवामाटे कान धरी रह्यो हे. परंतु कोड रूपीया खरचे पण ते पंखीनो स्वर काने पडवा पामतो नथी. ॥ ए॥ कुंवरनुं मन कदापि छंचुं शतुं तोपण कुकडो हजु बोह्यो सांजहयो नथी एम कही मंत्री तेने रोकी राखे हे. खीखाधर पण मुहूर्त्त आव्याशिवाय पर-देश गमननो विचार करतो नथी. ॥ ६ ॥

लीलावती पण निज वालिमने, क्रण एक घूर न मूके रे ॥ गु॰ ॥ स्वा रथ साधन काज चतुरनर, ते केम श्रवसर चूके रे ॥ गु॰ ॥ को॰ ॥ ७ ॥ एम षट्टमास लगी जोलवीने, लीलाधर पक्लाब्यो रे ॥ गु॰ ॥ एइवे ते नट रमतो रमतो, तेणे पोतनपुर श्राब्यो रे ॥ गु॰ ॥ को॰ ॥ ० ॥

श्चर्य ॥ तीलावतीपए पोताना स्वामिनी हजुरमांथी इएवारपए दूर जती नथी. जे चतुर मनुष्य होय ते स्वार्थ साधवाना अवसरने केवीरीते चूके? चूकेज नही. ॥ ७ ॥ ए प्रमाऐ उ महिना सुधी लीलाधरने जोलवीने रोकी राख्यो. एवा समयमां ते नटराज रमतो रमतो तेज पोतनपुर नगरमां आब्यो. ॥ ० ॥

सरणाइ खलकारीने नट, ढोले ढमका कीधा रे ॥ गु० ॥ नृप वचने मंत्री यह पासे, स्थावी ॥ स्थावी जतारा दीधा रे ॥ गु० ॥ को० ॥ ए ॥ चंदतणे कटके पुर बाहिर, दीधा सरोवर डेरा रे ॥ गु० ॥ कीधां जो जन खेद जतार्थों, पेहेर्या वेश नवेरा रे ॥ गु० ॥ को० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ नटे श्चावीने सरणाइने वगाडी, ढोखडपर ढमका दीधाः बाद राजा पासे जतां, राजार्छ मं-त्रीना घर पासे तेर्डने उतारो श्चापवानी श्चाङ्गा करी. ॥ ए ॥ चंद राजानी सेनाए नगरनी बहार सरोवर उपर पोताना तंबु ताण्या. श्चनुक्रमे जोजन खड़ श्वाक उतार्थोः वस्त्री नवां वस्त्रो धारण कर्योः ॥ १० ॥ संध्याये मुजरो करी कुर्कटनो, नट श्राव्या नृप पासे रे॥ गुण॥ दीप फगमग सुजग सजामां, गाया राग प्रकाशे रे॥ गुण॥ कोण॥ ११॥ पुरपति रीक्रयो पजणे प्राते, जोशुं खेल तमारो रे॥ गुण॥ श्राज तो पंथतणालो थाक्या, जाले हेरे पधारो रे॥ गुण॥ कोण॥ ११॥

श्चर्य ॥ संध्या समय थयो एटले कुर्कटराज पासे मुजरो करी नाटकीया राजापासे श्चाब्या. त्यां सुंदर राज्यसन्तामां दीपकनी मनोहर रोज्ञानाई लागी रही हो, ते समये सुंदर राग रागिणी गाया ॥ ११ ॥ राजा तेर्जना संगीतथी राजी थड़ बोल्योंके काले सवारे तमारा खेल जोड़्युं. आजे तो तमे पंथ करी आव्याहो, याकेलाहो तथी सुलेथी जतारे जार्ज. ॥ १२ ॥

श्राव्यों नटवर निज जतारे, कह्युं लोके तस श्रावी रे ॥ गु० ॥ कुर्कट स्वरना जतन करजो, कहीए ठीए समजावी रे ॥ गु० ॥ को० ॥ १३॥ जो एहनो स्वर श्रवणे सुणहो, ते मंत्रीनो जमाइ रे ॥ गु० ॥ तो जठी परदेश सधाशे, तमने दोष चढाइ रे ॥ गु० ॥ को० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ पठी नटराय पोताने जतारे आव्यो एटले लोकोए तेनी पासे आवीने कहुंके, आ कुकडो लगार मात्र बोले नही एम गोठवण करजो. अमे तमने खास कहीए ठीए ॥ १३॥ जो मंत्रीनो जमाइ ए कुकडानो अवाज काने सांभलहो तो तत्काल जठीने ते परदेश सिधावशे अने ते बाबतनो दोष तमारे शिर चडहो.॥ १४॥

सांजहयो कुकडराये काने, खोक वचन मन आणी रे ॥ गु० ॥ निज निज मंदिर पोहोत्यां सहुजन, एहवे रयणी विहाणी रे ॥गु०॥को०॥१५॥ पामी अवसर जरीने मधुर स्वर, बोह्यो कुकक राया रे ॥गु० ॥ पसर्यों ते स्वर नगर घरोघर, सूता सयख जगाया रे ॥ गु० ॥ को० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ कुर्कटराजे लोकोनां वचनो ध्यान दहने सांजल्यां. त्यार पत्नी सर्वे लोको पोत पोताने घेर गया. अने रात्री पण वीती गइ. ॥ १५ ॥ परोढीयुं थयुं एटले अवसर जोइने मीठा स्वरोना अवाज कुर्कट राये जपराजपरी करवा मांड्या. जे अवाज नगरमां घेरघेर प्रसरी रह्यो अने सर्वे सुतेला लोको जागी जठ्या.

वागी जालर प्रजु प्रजु प्रासादे, जदयो जगत्नो साखी रे ॥गु०॥ जली विवासनी द्वासमी ढालए मोहने, त्रीजी जल्लासनी जाली रे ॥ गु० ॥ को० ॥ १९॥ अर्थ ॥ देव मंदिरोमां जालरो वागवामांडी अने जगत्नो साही सूर्य जदय पाम्योः त्रीजा जल्लासनी रूडी एवी बवीशमीढाल मोहनविजयजीए कहीः ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

श्रवणें ते स्वर सांजली, लीखाधर तेणी वार ॥ परदेशे चाल्यो वही, थइ तुरंग श्रसवार ॥ १ ॥ राख्योपण न रह्यो किमे, मुहूर तने संकेत ॥ हियडे लीखावती तणे, खरो खटक्यो हेत ॥ १ ॥

www.jainelibrary.org

चंदराजानो रासः

श्रर्थ ॥ कुकडानोस्वर काने सांज्ञखतांज तत्काख घोडा जपर स्वार थड़ खीखाधरे परदेश जवा प्रयाण कर्युं ॥ १ ॥ तेने रोकी राखवाने घणोज प्रयास कर्यो परंतु मुहूर्त्तनो वायदो पुरो श्रवाश्री ते रह्यो नहीं खीखावतीना श्रंतःकरणमां तेनुं हेत बहुज खटक्या करतुं हतुं ॥ २ ॥

> कुर्कट स्वर पियुने थयो, जेम मीठो पियुख ॥ पण मंत्री पुत्री त्रणी, खरो हाखाहख चूख ॥३॥ मुरठाणी धरणी ढली, प्रीतम उणे विठोह ॥ क्रणमे पामी चेतना, पनी विरहनी खोह ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ कूकडानो स्वर खीखाधरना श्चंतःकरएमां श्चमृत समान खाग्यो परंतु खीखावतीने तो ते हाखा इस फेर समान खरेखरो श्वर्र पड्यो. ॥ ३ ॥ पतिना वियोगश्ची तत्काख मूर्डी श्चाववाश्ची जमीन छपर इसी पडी. पठी छपचार करवाश्ची श्रोडी वारमां सचेतन श्वरू परंतु विरह वेदनानी चरेडी श्चंतःकरएमां पडी. ध

> राख्यों केणे कुकडो, कर्यों श्रहितनों नेह ॥ विहि केम सरज्यों पंखीयों, मित्र विठोहक एह ॥५॥ कोणठे एहवो नगरमां, धीठों श्राठे गंठ॥ त्रूप तणों त्रय नवि गखों, इज्जण जण उद्घंठ॥ ६॥

्र अर्थ ॥ अहितनो करनारो एवो आ कूकडोते कोणे राख्यो हशे, हे विधि! मारा पतिनो वियोग क-राबनार ए पद्दी तें शामाटे उत्पन्न कर्यु, ॥ ए ॥ आ नगरमां एवो आठे गांठे उद्यत्त कोण पुरुष हे के जेणे राजाना जयने पण क्षेखामां गण्यो नहीं. ते कोइ महा छुर्जन अने उद्यंग है. ॥ ६ ॥

> स्रीसावतीए तातने, जारूयो पति उदंत ॥ श्राणी श्रापो कुकमो, तेमुजने धीमंत ॥ ७॥

अर्थ ॥ पत्नी लीलावतीए पोताना पिताने पतिना गमन संबंधी सर्व वृत्तांत कह्यो अने कहुंके हे बुद्धि शाली पिता! ते कूकडो मने लावी आपो. ॥ ७ ॥

ढाल २७ मी.

॥ कंकणो मोल लीर्ज ॥ ए देशी ॥

मंत्री पुत्री कह्या थकी रे, सुरिजन, करवा कुर्कट शोध, पंत्री गुण र सियो ॥ पुरमां सेवक पाठव्या रे ॥ सु० ॥ स्वामी धरमीयोध ॥ प० ॥ जे सुगुण नरनारी, तेहने मन विसयो ॥ ए व्यांकणी ॥ १ ॥ जोइ का ढयो पंत्रीयो रे, ॥ सु० ॥ नटना पटकुटमांहि ॥ पं० ॥ दासे सिववने विनव्युं रे, ॥ सु० ॥ विहंग संबंधी सोष्ठाह ॥ पं० ॥ जे० ॥ १ ॥

श्रश्रे॥ मंत्रीनी पुत्रीना श्रश्यात् खीखावतीनां वचनथी तेना पिताए ए क्रकडानी शोध करवामाटे पो-ताना सेवकोने नगरमां मोकट्या. (किव कहेडेके क्रकडो गुणनो रिसक होवाथी तेना गुणने जाणनारा स्त्री पुरुषना मनमां ते रमी रह्यो डे.)॥ १॥ मंत्रीना सेवकोए श्रावीने तेने कहुंके ए पद्दीनो पत्तो खाग्यो डे. जे नटो श्रहीं श्राच्या डे तेर्जना संगाथमांते डे. एवी रीते पद्दी संबंधी उत्साहथी वात कही, श ताते जाख्युं सुताजणी रे, ॥ सु० ॥ वे कुर्कट नट साथ ॥ पं० ॥ ए पर देशी प्राहुणा रे, ॥ सु० ॥ नापे प्रापण हाथ ॥ पं० ॥ जे० ॥ ३ ॥ चाक्षे पुरनर उपरे रे, ॥ सु० ॥ पुत्री श्रापणुं जोर ॥ पं० ॥ स्यो हठ परदेशी थकी रे, ॥ सु० ॥ वसी नट जाति कठोर ॥ पं० ॥ जे० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ मंत्रीए पोतानी पुत्रीने कहुंके श्चावेखा नटोनी साथे ते कूकडो हे. तेर्च परदेशी होवाथी श्चा-पणा परोणा हे. श्चापणे मांगीये तोपण श्चापे नहीं. ॥ ३ ॥ हे पुत्री । जेटखुं श्चापणे जोर चखावीए तेटखुं श्चापणा गामना खोक उपर चाखी शके. परदेशी साथे इह करवो नकामोहे. तेमांपण नटनी जाति तो श्चत्यंत कहोर होय हे. ॥ ४ ॥

पुत्री नेत्र तरी कहे रे, ॥ सु० ॥ जेमतेम श्रापो ए श्राणी ॥ पं० ॥ कु कड वैरीने हणुं रे, ॥ सु० ॥ तो मुज जीव्युं प्रमाण ॥ पं० ॥ जे० ॥ थ॥ ए कारज कीधा विना रे, ॥ सु० ॥ केम जल घुंट जराय ॥ पं० ॥ पुत्री प्रतिक्वा श्राकरी रे, ॥ सु० ॥ मंत्री रह्यो विललाय ॥ पं० ॥ जे० ॥ ६ ॥

श्रर्थ ।। सीलावती आंखमां आंसु लावी कहेवा लागीके हे पिता गमे तेम करी ते मने लावी आपो. ए मारा वेरी कूकडाने जो हणुं तोज मारूं जीव्युं प्रमाण है. ।। ए ।। ज्यां सुधी ए काम मारे हाथे थहो नहीं त्यां सुधी पाणीनो घुंटडो पण हुं पीवानी नथी. आवीरीते पुत्रीनी आकरी प्रतिक्रा जाणीने मंत्री मनमां खेद करवा लाग्यो. ।। ६ ।।

तेडाव्यो नटरायने रे, ॥ सु० ॥ मंत्रीए मुकीदास ॥ पं० ॥ वातडीए पर चावियो रे, ॥ सु० ॥ मांग्यो शकुनी तस पास ॥ पं० ॥ जे० ॥ ७ ॥ नट कहे मंत्रीसरु रे, ॥ सु० ॥ पंखी केम देवाय ॥ पं० ॥ एहथी अम आजीविका रे, ॥ सु० ॥ कुकक अम महाराय ॥ पं० ॥ जे० ॥ ० ॥

श्चर्य ॥ मंत्रीए पोताना सेवकने मोकली नटरायने पोतानी पासे बोलान्योः ते श्चान्यो एटले मीठी वातो करी तेने जोलन्यो श्चने पत्नी तेनीपासे कूकडानी मांगणी कही। ॥ ७ ॥ नटे कह्युंके दे मंत्री श्वरजी! ए पही श्चमाराथी केम श्चपाय. एना उपर तो श्चमारी श्चाजिविकानो श्वाधार हे. श्चने ए तो श्चमारा महाराजा हे. ॥ ए ॥

तुज पुत्री यह देषणी रे, ॥ सु० ॥ ए श्यमे पाम्यो उपाय ॥ पं० ॥ पण श्यम उने एहनो रे, ॥ सु० ॥ वास न वांको याय ॥ पं० ॥ जे० ॥ ए ॥ सहुनट सेवक एहना रे, ॥ सु० ॥ पंच सया परिवार ॥ पं० ॥ पुर बा हिर पंस्ती तणा रे, ॥ सु० ॥ सात सहस श्यसवार ॥ पं० ॥ जे० ॥१०॥

श्चर्य ।। तमारी पुत्रीने एनो स्वर सांजलतां तेना उपर देष श्रयो हे ए वात श्चमारा जाणवामां श्चा-वीहे. परंतु ए खात्रीथी मानजो के श्चमे जीवता हीए त्यां सुधी एनो वाल पण वांको श्रवानो नथी। ॥॥। श्रा पांचसो नटो परिवार सिहत तेना सेवक हे. श्रने वली नगर बहार ए पश्लीना रक्षण करनारा सात हजार योज्ञार्ड हे. ॥ १०॥

हुकम करे जो कुकनो रे, ॥ सु० ॥ पाडीए दाणवदंत ॥ पं० ॥ पूठी सिंद्रस रायने रे, ॥ सु० ॥ ठेडजो कोइ मतिमंत ॥ पं० ॥ जे० ॥ ११ ॥ गिरिशतखंन करूं अमे रे, ॥ सु० ॥ जेरे एकण मूठ ॥ पं० ॥ ठेडे को ण ठे केइनी रे, ॥ सु० ॥ खाधीमाये सूठ ॥ पं० ॥ जे० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ ए कुर्कटराय जो अमने हुकम करे तो मोटा दैत्यना पण दांत तोडी नांखीए. खात्री करवी होय तो सिंहखरायने पुठीने पठी बुद्धिशाखी होयते एनी ठेम करजो. ॥ ११ ॥ जो ए हुकम आपे तो एक मुठिए पर्वतना पण अमे सो दुकडा करी नांखीए. वखी कोनी माए शेर सूंठ खाधी ठे के एनी ठेड करे.

पंखी पेखी म जूखशो रे, ॥सु०॥ एइछे श्रखोखिक कोय ॥ पं० ॥ एम नट वचने मंत्रवीरे, ॥ सु० ॥ रह्यो श्रणबोट्यो होय ॥ पं० ॥जे०॥१३॥ खीखावती मन राखवा रे, ॥ सु० ॥ कहे नटने मंत्रीश ॥ पं० ॥ देखा भी एइ कुकनो रे, ॥ सु० ॥ पुरवी पुत्री जगीश ॥ पं० ॥ जे० ॥ १४ ॥

श्रर्थ ॥ नटराये कहुंके ए पहीड़े एम देखी जुलावो खाशो नही. ए तो श्रलोकिक कोइ जीवड़े. एवा नटनां वचनो सांजली मंत्री खूप धड़ गयो. ॥ १३ ॥ पड़ी मंत्रीए नटने कहुं के खीलावतीना मननुं समाधान करवा ते पहीने मने श्रापो. पुत्री खीलावतीना मनमां तेने जोवानी होंशड़े तेश्री तेणीने देखाड़ी तमने पाड़ो सोंपीश. ॥ १४ ॥

जो विश्वास खावे नहीं रे, ॥ सु० ॥ तमे राखो मुज पुत्र ॥पं०॥ राखी घनी एक कुकनो रे, ॥ सु० ॥ पाठो सोपद्युं खनुबुत्र ॥ पं० ॥ जे० ॥१५॥ समज्यो नट सुत मंत्रीनो रे, ॥ सु० ॥ खेइ खाट्यो निज धाम ॥ पं० ॥ मुक्यो खीखावति संनिधे रे, ॥ सु० ॥ पंखी पिंजर ताम ॥पं०॥ मुक्यो खीखावति संनिधे रे, ॥ सु० ॥ पंखी पिंजर ताम ॥पं०॥जे०॥१६॥

अर्थ ॥ जो विश्वास न आवतो होय तो तेना बदलामां मारा पुत्रने तमे राखोः एक घडीन्नर कुकडाने राखीने पठी तरत पाठो खावी आपीश ॥ १५ ॥ पठी नटराय मंत्रीने पोताने स्थानके खड़ने आव्यो अने खीखावतीनी पासे कुर्कटनुं पांजरूं सोप्युं ॥ १६ ॥

देखी पिंजर हरखी घणुं रे, ॥ सु० ॥ रोष टखो तस्काल ॥पं० ॥ त्रीजा उल्लासनी मोहने रे, ॥ सु० ॥ कही सत्तावीशमी ढाख ॥ पं० ॥ जे० ॥ १९ ॥ श्रर्थ ॥ पांजरा मध्येना पद्दीने देखतांज लीलावती घणो हर्षपामी श्रने तेनो रोष तस्काल शमी गयो. त्रीजा उल्लासनी सतावीशमी ढाल मोहनविजयजीए कही. ॥ १९ ॥

> ॥ दोहा ॥ कहे वचन खीखावती, रे रे पंखीराज ॥ विण स्ववगुण तें मुज यकी, वेर वसाव्युं स्थाज ॥ र ॥ दिसे बाहिर फूटरो, पण कमवो स्थाखाप ॥ तें मुज कीधो पियु विरह, ते किहां ब्रुटीश पाप ॥ र ॥

श्रिश्च । पड़ी खीखावतीए कहां के हे पहाराज ! तें मारा दोष विना मारी साथे श्राजे वेर बांध्युं हे. ।। १ ।। तुं बहारश्री तो सुंदर खागे हे परंतु तारो स्वर कमवो हे. तें मारा स्वामीनो वियोग कराब्यो, ते पापश्री क्यारे ब्रुटीश? ।। २ ।।

तुं कंचन पिंजर वसे, सदा सुखी बहु जोग ॥ तुं पर वेदन नवि सहे, इस्सह कंत वियोग ॥३॥ तुं पंखी विषापण पंखिणी,वनमां व्याकुख थाय ॥ तो स्थमे सरजी नारीयुं, पतिविण केम दिन जाय ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ तुं सुवर्षना पांजरामां निरंतर श्रमेक प्रकारनां सुख जोगवतो वसे हे. तेथी तुं बीजानी वेद-नाने जाणी शकतो नथी परंतु जाणजे के पितनो वियोग छःखे सहन करवा योग्य हे ॥ ३ ॥ तुं पही हो तथी तारा विना तारी पिहणी जेम वनमां श्राकुख व्याकुख श्राय तो श्रमे तो स्त्री जाति हीए. पित ना वियोगे श्रमारा दिवसो ते केम जाय ॥ ४ ॥

> होशे घणां विबोहिया, तें पूरवजन कोय ॥ तो थयो एणे जन कुकडो, हृदय निचारी जोय ॥ ॥ श्रानिवेकी तिर्यंच तुं, निपट निसूर निरमोह ॥ जो तुं बोख्यो न होत तो, होत न कंत विबोह ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ तें परजवमां घणांने वियोग कराव्या हशे तेथी श्चा जवमां क्कडो थयो, माटे हृदयमां जरा विचार कर ॥ ५ ॥ हे पद्दी तुं बहुज श्चविवेकी बुं. श्चत्यंत कठोर बुं श्चने प्रेम वगरनो हो. जो तुं बोहयों न होत तो मारा प्राणनाथनो वियोग थात नहीं ॥ ६ ॥

> तें मुजयी नाणी दया, छहो विहंगम जूप ॥ पण मुजने छावी दया, देखी ताहारुं रूप ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हे पद्यीराज ! तें मारा जपर दया न आणी परंतु तारुं स्वरूप जोतांज मने तारी जपर दया आवी हे. ॥ ७ ॥

॥ ढाल २० मी ॥ ॥ श्रासणरा योगी ॥ ए देशी ॥

कुकम वचन सुणी वेधालो, कर्यो विण पावस वरसालोरे ॥ वेधक जग विरला ॥ जाग्यो विरह पडयो पिंजरमें, थयो मुरहित वचनने मरमेरे ॥ वेण ॥१॥ जंमामुके सबल निसासा, जवरूपना निरली तमासारे ॥ वेणा सीलावतीए कुकम सीधो, जीडी हृदयथी जायत कीधोरे ॥ वेण ॥ १॥

श्चर्य ॥ वीवावतीनां वेधक वचनो क्कडाए सांजलतांज वर्षारत विनाज तेनी आंखमांथी अश्चपात रूपे वरसादनी धारा चाली (किव कहे हे के वेधक पुरुषो जगत्मां विरक्षा है) कुकडाना मनमां विरह व्यथा जत्पन्न श्वतांज, मर्मनां वचनो सांजलतांज ते मुर्हा खाई पांजरामां पमयो ॥ १ ॥ संसारना चम-त्कारिक स्वरूपना पोताने वितेला तमासा जोइने कुकडो घणांज जंडा निसासा मुके हे. एवामां खीलाव-तीए कुकडाने हाथमां खइ हृदयनी साथे अत्यंत हेतथी आश्वासन आपी तेने जायत कर्यो. ॥२॥

रे पंखी केम एम डि:ख पावे, में तो कहां तुज जोखे जावेरे ॥ वे० ॥
मुजने तो डि:ख जे पियु चाख्यो,पण तुजने स्थो डि:ख साख्योरे॥वे०॥३॥
ताहरुं तो डि:ख देखी नेणे, पडी साहामी खेहेणाथी देणेरे ॥ वे० ॥
में जाएयुं तुं मनावीश मुजने, पडयो जखटो मनाववो तुजनेरे॥वे०॥४॥

श्रर्थ ॥ हे पहि ! में तो तने जीता श्रंतःकरणथी श्राटली वात कही तेमां एटलुं बधुं छु:ख केम धार-ए करे छे? मने तो पितना वियोगनुं छु:ख श्रयुं छे, परंतु तने एवुं शुं छु:ख साह्या करे हे ॥ ३ ॥ मारी श्रांखमां तारूं छु:ख देखवाथी, जलदुं मने तो लेणाथी देवा जेवुं श्रद्ध पड्युं छे. हुं तो एम मानती हती के तुं मारा मननुं समाधान करीश, परंतु श्रातो जलदुं मारे तारा मननुं समाधान करवानो वखत श्राव्यो ॥ ४

मुजधी घणो तुं विरही दीसे, श्यो छःख हे कहो सुजगीशेरे ॥ वे०॥ कह्युं कुकमे श्रक्तर खखी ताजा, हुं हुं चंदोश्याजापुरी राजारे॥ वे०॥८॥ में तो कोइनो सीधो न दीधो, पण माये कुर्कट मुज कीधोरे ॥ वे०॥ विद्वही गुणावसी नवस सनेही, कहुं छःखनी वातमीयुं केहीरे ॥वे०॥६॥

श्चर्य ॥ मारा करतां तुं घणोज विरहनी व्यथावालो दिसे हे. तेथी ते वाबतमां तने शुं इःख हे ते हे वहाला कहे ? ते सांजली कुकडाए शुद्ध श्चर्याथी जणाव्युं के हुं श्चाजानगरीनो चंद नामनो राजा हुं ॥ ॥ में तो कोइनो कांइपण गुह्रो कर्यो नहोतो, परंतु मारी विमाताए मने कुकडो बनावी दीधो हे. श्चने तेथी निर्मल स्नेह धरनारी मारी गुणावली स्त्रीनो मारे वियोग थयो हे. हुं इःखनी केटली वात तने कहुं! ॥ ६ ॥

ते मुज खटके हुं तस खटकुं, विधानाटकीया संग मटकुं रे ॥ वे० ॥ किहां पुर किहां घर किहां नरकरणी, किहां राज्य किहां ते घरणीरे॥वे०॥॥ तुज पति जेह धयो परदेशी, तुजने मद्धशे सुविशेषीरे ॥ वे० ॥ पण मुज वीडिमीया मेखा, ते तो केवली जाणे वेलारे ॥ वे० ॥ ठ॥

श्रर्थ ॥ ते मारा मनमां याद श्राव्या करे हे श्रने हुं तेना मनमां रमी रह्यो हुं विद्यी श्राही नाटकी यानी साथे रखड्या करूं हुं. श्राहा ! मारुं शेहेर क्यां ! घर क्यां ! मनुष्यपणानो वैज्ञव क्यां ! राज्य क्यां ! श्राने मारी स्त्री क्यां ! ॥ ७ ॥ तारो पति जे परदेश गयो हे तेतो तने तारी साथे विशेष समृद्धि वालो श्राहने मलशे परंतु श्रमारा वियोगना मेलाप रूपी श्रावसरने तो मात्र केवल क्रानीज जाणे है. ॥ ॥

मुज जुःख सिरखो न जुःख तुज बाइ, किहां कंचन गिरि किहां राइरे॥वे०॥ घरणी मारी जगमांहे जुःखणी, तेहची असंख्य गुणी तुं सुखणीरे ॥ वे० ॥ए॥ तुं पित विण क्रणमां जुःख पामी, तो मुज घरणीमां शी खामीरे ॥ वे० ॥ जोगवे जे जुःख माहरी राणी, तेह मांहे तुं जाये तणाणीरे ॥ वे० ॥ २० ॥ अर्थ ॥ मारां जुःख सरखुं तारूं जुःख वेज नहीं. तेमां तो मेरुपर्वत अने राइना दाणा जेटलो तफावत वे. मारी स्त्रीज जगत्मां जुःखी के तेना करतां तुं तो असंख्य गणी सुखी को ॥ए॥ तारा पितना वियोगे

तुं एक क्रणवारमां छःख पामी, परंतु मारी स्त्रीने छःखमां कांइ खामी हे तो तुं जो. मारी स्त्री मारा वियो-गनुं जे छःख जोगवे हे ते छःखनी पासे तारूं छःख तो क्यांइ तणाइ जाय. ॥ १०॥

कुर्कट वचने खीखावती हरखी,ए तो जोडी मिसी बेहु सरखीरे ॥वे०॥ मनमां तमे छुःख चंद म वेहेशो,वेहेबी रीद्धि रमणीते बहेशोरे ॥वे०॥११॥ मन मान्या तमे माहारे जाइ, विधिनी जोकी एह सगाइरे॥ वे०॥ पामो जो तमे नरपद फेरी, तो मखजो मुक्तने एक वेरीरे॥ वे०॥ ११॥

श्रर्थ ॥ कुकडानां वचनो सांजली लीलावतीनुं मन शांत श्रयुं श्रने विचारवा लागीके श्रांतो बंने सर-खी जोडी मली. ते कुकडाने कहेवा लागीके हे चंदराज ! तमे इवे मनमां छुःख न धारण करो. तमे तमारी रीिक् श्रने स्त्री बंने वेहेला संपादन करशो ॥ ११ ॥ तमे मारा मनना मानेला जाइ श्रया हो. श्रा सगाइ विधात्राएज करी श्रापीहे. तमे ज्यारे फरीश्री मनुष्यपणुं पामो त्यारे एकवार मने श्रवस्य मलजो. ॥ १२ ॥

जे श्रविचार्युं कह्युं होय तमने, ते बक्तजो गुन्हो श्रमने रे ॥ वे०॥ रे वीरा तुज श्राक्षा फलजो, वली वेहेला श्रावीने मलजोरे ॥वे०१३॥ मुजने रखे क्रण एक विसारो, में तो सफल कर्यों हे जनमारो रे॥ वे०॥ नटने सोंप्यो कुर्कट पाहो, श्राव्यो गेहे मंत्री सुत श्राहो रे॥ वे०॥१४॥

श्चर्य ॥ श्चिचारीपणे जे माराथी तमने केहेवायुं होय ते मारो गुन्हो माफ करशो हे जाइ तमारी सर्व श्चाशा परिपूर्ण थजो श्चने वेहेला वेहेला श्चावी मने मलशोजी ॥ १३ ॥ मने एक इणमात्र पण मन-मांथी जुलीजता नही. तमारां दर्शनथी मारो जन्म सफल थयो हे. श्चा प्रमाणे वार्त्तीलाप थया पही लीलावतीए नटराजने कुकडो पाहो सोंप्यो एटले प्रधाननो पुत्र तेने पोताने घेर सहीसलामत श्चाब्यो. १४

हवे नट सुजट घणा मेड्रायी, चाल्या तेह पोतनपुरथीरे ॥ वे०॥ देश श्रमेक नगरीयुं श्रमेका, जोतां रमतां सुविवेकारे ॥ वे०॥ १५॥ वली बहु नृपथकी लमता वाटे, तेह कुर्कट यतनने माटे रे ॥ वे०॥ ते नट लोक तणे मन जाव्या, एम विमल पुरीए श्राव्यारे ॥ वे०॥१६॥

श्चर्य ॥ इवे नटनुं तथा सुजटनुं मंडल घणां हर्षसिंहत पोतनपुरथी प्रयाण करी श्चागल चाह्युं. तेर्च श्चनेक देशो तथा नगरीर्च जोतां त्यां विवेक सिंहत रमतो रमतां वली प्रसंग श्चावतां,कुर्कट रायना जतन माटे घणां राजार्जनी साथे रस्तामां लडतां लडतां श्चनुक्रमे लोकोना मनने श्चानंद पमाडतां थकां एकदा विमल पुरीए श्चावी पहोंच्याः ॥ १५-१६॥

श्रांबो राख्यो हतो जिहां माये, तिहां डेरा कर्या नट रायेरे ॥ वे० ॥ श्राविशमी त्रीजे ज्ञ्लासे, कही ढाल मोइने सुप्रकाशेरे ॥ वे० ॥१९॥

श्चर्य ॥ जे स्थले विमाता वीरमतीए श्चांबो लावीने राख्यो हतो तेज स्थले नटराये तंबु ताखा. उतारा कर्या. त्रीजा उद्यासनी मोहन विजयजीए सुप्रकाशित श्वशावीशमी ढाल कही. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

तेषे अवसर कुकने, दीठा श्राहीठाण ॥ हरखीने निरखी पुरी, पूरव प्रेम प्रमाण ॥ १ ॥ इहां तो खडी प्रेमखा, जाडे परणी जेह ॥ ते नगरी एतो खरी, नहीं खब मात्र संदेह ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ एवे समये कुकडाए ते नगरीना ऐंधाए (निज्ञानीर्छ) जोतांज हर्षवंत यह पूर्वना प्रेमने स्मर-एमां खावी नगरीने जोवा मांडी ॥ १ ॥ जे नगरीमां हुं प्रेमखा खन्नीने जाडे परस्थो तेज स्नानगरी. एवा-तमां मने जरापए संदेह खागतो नथी. ॥ २ ॥

हुं एम जे पंखी थयो, एइ पुरी परसाद ॥ वसी फरी छाज्यो इहां, सही तो टबे विषाद ॥३॥ किहां छाजा किहां विमलपुर, मेलो सुगम न होय ॥ जीवतडा मेलावमो, खरुं कहे सहु कोय ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ हुं श्राज नगरीना प्रतापश्ची पही थयो हुं. श्राने फरीथी ज्यारे श्राहीश्रा श्राववा प्रसंग श्रान्यों हे त्यारे मने खात्री थाय है के हवे मारुं छःख टक्षरोज ॥ ३॥ क्यां श्राजापुरी नगरी श्राने क्यां विमखापुरी, श्राहार सो कोशनुं श्रंतर ज्यां, त्यां मेखाप थवो ते केवी रीते सुगम होय?परंतु,"जीवतो नर जाड़ा पामे". ए कहेवत प्रमाणे जीवता हीए तो मेखाप थशे. ॥ ४॥

इहां मुजने छाव्या तणी, रहेती होंश छसंख ॥ सहीतो तेहीज कारणे, विधि मुज दीधी पंख ॥ ५ ॥ ते उपवनमां नट प्रमुख,

रह्या करी ख्राचार ॥ इवे सुणो सहु प्रेमसा, लठीनो ख्रिधिकार ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ ख्रहींख्रा मने ख्राववानी असंख्यगणी होंशहती ख्रने तेज कारणने लीधे मने खरूं लागे वे के विधात्राए मने पांखो ख्रापी ॥ ए ॥ नट विगेरे सर्व मंग्रद्धे ते उपवनमां पोतानो विश्राम वाम कर्यो. इवे ख्रहींया प्रेमसा स्त्रीनी स्थितिनो ख्रिधिकार सांजसको ॥ ६ ॥

सहीर्टमां बेठी इती, डाबी फरकी नेण ॥ यह प्रमुदित प्रेमसा, वदे सुरंगांवेण ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ प्रेमखा बही पोतानी सखीर्जनी साथे बेठी हती तेवामां तेनी डाबी श्चांख फरकवाथी ते हर्षवंत यह मीठां वचनो कहे हे. ॥ ७ ॥

॥ ढास रए मी ॥ ॥ स्वा हे सासनी ॥ ए देशी ॥

रे सिंह जी शिरताज, तनु चेष्टाथी आज, आ ने खाख होवे कंत मेखाव-डोजी ॥ सोक्षे वरशे जद्धार, देवी वचन अनुसार, आ ने खाख मलतो दिसे ताकमोजी ॥ १ ॥ पण मुज मनमां एह, सही रहे संदेह, ॥ आ० ॥ किहां पियु किहां आजापुरीजी ॥ नहीं संदेशों कोय, केम एम मेखों होय, ॥ आ० ॥ खोटी केम होशे सुरीजी ॥ १ ॥ श्चर्य ।। हे मारी वहाली सखीड ! आजे मारी डाबी आंख फरके हे अने बीजी शरीरनी एवी निशानीड थाय है के मने मारो स्वामिनाथ मलशे. देवीनां वचनने अनुसारे सोल वरसे हवे मारो उद्धार थशे. तेथी मलवानो संज्ञव पण लागे हे ।। १ ॥ परंतु हे बेहेनो ! मारा मनमां एज संदेह रह्या करे हे के मारो स्वामि क्यां अने आजानगरी क्यां ? आज सुधी कांइ पण संदेशों नथी तो एवी रीते मेलाप ते केम थाय? वली देवी पण खोटी होय एम केम बने ? ॥ २ ॥

देवी वचन श्रमोघ, कहे सह जनना उंघ, श्राव तास जणाशे पटंतरोजी ॥
महारो प्राणाधार, कोश कोश हजार, श्राव केम करी जांजशे श्रांतरोजी ॥३॥
विरह स्थिति परिपाक, श्रयो दिसे श्रवीक, श्राव श्राज जरोंसो एहवोजी ॥
एहमां मीन न मेष,श्राज कछाण विशेष,श्रावसही मुज पियु मछो संजवेजी॥॥

अर्थ ॥ सर्वे मनुष्यो कहे हे के देवीनुं वचन हमेशां सफखज आयहे. तेथी हवे खरी हकीकत शुं हे ते सेहेज जणाइ आवशे. मारो प्राणाधारतो हजार कोशथी पण वधारे दूर हे तो आवशुं मोटुं अंतर ते केवीरीते दूर अशे? ॥ ३ ॥ पेहेलां कांइ वियोगनी स्थितिनो परिपाक (अंत) अयो लागेहे तेथीज मने मारो स्वामि मलशे एवो जरोसो लागे हे. हवे तो मने लागे हे के तेमां कांइ पण मीनमेष नथी। आजे मारूं विशेष कह्याण अवा रूप मारो नाथ जरूर मने मलवानो एवो संजव आय है. ॥ ४ ॥

कहे तव सजनी एम, पामी पूरण प्रेम, आ० ताहरं कहां होज्यो खरंजी ॥ पीयरनो जे प्रेम, निंद्यो जाये केम, आ० स्त्रीने वल्लज सासरुजीं ॥ ५ ॥ चंद जिस्यो प्राणेश, अनोपम सुंदर वेश, आ० सहुने क्रण निव विसरेजी ॥ वहा क्षो मक्षशे आय, ए नहीं निष्फक्ष थाय, आ० एम जे नित तप तुं करेजी ॥६॥

श्चर्य ॥ प्रेमता त्रञ्जीनां वचनो सांज्ञती संपूर्ण प्रेम सहित सखील कहेवातागी के हे बेहेन! तमारं बोखवुं साचुं पमजो. माबापना घरनो प्रेम कोइपण रीते वखोमवाजेवो नथी। तोपण स्त्रीजातिने तो सा-सरानुं घरज बहु वहातुं तागेछे ॥ ए ॥ चंदराजाना जेवो श्रानुपम श्राने सुंदर स्वरूप वात्रो प्राणनाथ के-वीरीते याद न श्राव्याकरे श्रश्यीत् सहुकोइ तेने एक श्राण्वार पण यादताव्या विना रहेज नहीं. जेने माटे तुं निरंतर तपश्चर्या करे हे ते तारो प्राणनाथ तने श्रावीने मत्नकोज. ए वात निष्फत श्रवानीज नथी।॥६॥

हुइ अवधि अनंत, केम वजी मसे न कंत, ॥ आ० ॥ कासे उंबर पण फसेजी ॥ होवे करीर पटीर, तीर जिहां तिहांनीर, ॥आ०॥ तेम तुज वि रह नकां टसेजी ॥ ७ ॥ एहवे तेह विहंग, सेइ रंग सुरंग, ॥ आ० ॥ नट आव्या दरबारमांजी ॥ जेट्यो प्रवर नगरीश, शिव नट ये आ शीश, ॥ आ० ॥ रविजेम प्रतपो संसारमांजी ॥ ७ ॥

श्चर्य ।। हवे खांबी मुदत हती तेनो पण श्चंत श्चाव्योग्ने तेथ्री तारो स्वामिनाथ केम महया विनारहे ? काख परिपाक श्वता खंबरो पण फखे हे. केरमांने पण पत्र पुष्प श्चावेग्ने श्चने ज्यां सरीवर होयने त्यां पाणी श्चावे हे तो तारो विरह केम नही दूर श्राय श्चर्शात् दूर श्वरोजः ॥ ५ ॥ एवा श्चवसरमां जत्तम रंगवाला ते पद्धीने साथे लईने हर्ष सिंहत नाटकीयाचे दरबारमां आव्याः नगराधिराजनुं, दर्शन श्रतांज शिवकुमरे एवो श्राशीर्वाद आप्यो के हे राजन् आपनो प्रताप जगतमां सूर्यनी जेम तपजो. ॥ ८ ॥

नृप तुज सोरठ देश, विमल पुरी सुविशेष, ॥ आ० ॥ रहेती होंश जोवा तणी जी ॥ पूरव पुण्य अनुसार, दीठो तुज देदार, ॥ आ० ॥ आज फली आशा घणीजी ॥ ए ॥ आजा नगरी एक, दीठी अमे सुविवेक, ॥ आ० ॥ के दीठी विमला पुरीजी ॥ एम कहीवा ढोल, काठ कसी रंगरोल, ॥ आ० ॥ मांकी नटे चातुरी जी ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ हे राजन् ! आपनो सोरठ देश जोवानी श्रने तेमां पण विमलपुरीतो विशेषपणे जोवानी होंश मनमां घणीज हती, वली पूर्व पुण्यना पसायथी आप नामदारना आजे दर्शन थयां तेथी आजे अमारी श्रनेक आशा फलीजृत थई. ॥ ए ॥ अमे तो उत्तम विवेकवाली एक आजानगरी दीठी के बीजी आ विमलापुरी दीठी. एवां मनोहर वचनो बोली होल वगाड्यो अने रंगजर काउडोवाली आर्थात् सामग्री तैयार करी नटे नाटकनुं काम शरू कर्युं. ॥ १०॥

कीधी त्र्मि पिनत्र, पुंज कुसुम सुनिचित्र, ॥ श्राण ॥ ते उपर पिंजर धर्योजी ॥ सुघट घाट निख्यात, जाणीए सुरगिरि जात, ॥ श्राण ॥ ए हवो वंश उनो कर्यों जी ॥ ११ ॥ दोरातास समंत, बांध्या खेंची श्राणंत, ॥ श्राण ॥ जाणीए किरण दिणंदनां जी ॥ कीखक राते रंग, धरणी खीण श्राणंग, ॥ श्राण ॥ मानीए कोश श्रार्वेंदना जी ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ प्रथमतो जूमिने पवित्र करी तेना जपर चित्र विचित्र सुंदर पुष्पनो ढगलो करी ते जपर पांज-राने बिजान्युं. पठी सुंदर, सारा घाटवालो, जाणे मेरूपर्वतज लावीने खडो कर्यो होय एवो वांस, नाटक करवानी मध्य जूमिमां लावीने जजो कर्यो. ॥ ११ ॥ ते वांसनी साथे अनेक मोटा दोरडार्ज मजबुतरीते खेचीने बांध्या, ते जाणे सूर्यनां किरणोज होयनी एवां लागतां हतां. ते दोरडार्ज, राता रंगनी जूमिजपर न निकली शके एवी रीते खीलार्ज ठोकी ते खीलार्ज साथे बांध्यां हतां. ते जाणे कमलना मांडा होय एवा दिसता हता. ॥ १२ ॥

शिवमाला तेणीवार, पेहेरी सबी शणगार, ॥ श्रा० ॥ वंस तले उत्ती रही जी ॥ के शमता के खंति, के निरममता जंति, ॥ श्रा० ॥ एहथी श्रम्य उपम नहींजी ॥ १३ ॥ नट कन्या नरवेश, सुरीयुं एहनो लेश, ॥ श्रा० ॥ देखी चमिकत हुइ सजा जी ॥ राजा मन संदेह, कुण वे धन्या एह, ॥ श्रा० ॥ प्रगटी किहांथीए रिव प्रजा जी ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तत्काख शिवमाखा सर्व श्रंगार धारण करी वांस नीचे आवीने छन्नी रही. जाणे साहात् श मता, के ह्रमा के निर्ममता खडी होय तेवी दिसती हती. हवे एश्री वधारेते शी जपमा आपीए अर्थात् बीजी एकपण तेथी वधारे जपमा आपी शकाय तेम नथी. ॥ १३॥ शिवबाखाए नवो पुरुषनो वेश धारण करवाथी, वली देवांगनार्जं पण तेणीनीपासे रूपमां कांइ नहीं, एवी लागवाथी, सर्वे सजाजनो स्थाश्चर्य पामीगया. राजाना मनमां तो एवी शंका थई के स्थावी कन्याते कोनी हशे है साद्यात् सूर्यनी प्रजा क्यांथी प्रगट थइ ॥ १४॥

शिवमाला अविलोक, नृप मकरध्वज कोक, ॥ आ०॥ ताम तेडावी प्रेमला जी ॥ आवी पुलकित अंग, बेठी तात उठंग, ॥ आ०॥ सकल कला कुल पेसला जी ॥ १५॥ हे पुत्री कहे जूप, ए नट सुन्नट अ नुप, ॥ आ०॥ ए सहु आजापुरी हुता जी ॥ निरखतुं खेल प्रशंस, मां ड्योठे ए वंश, ॥ आ०॥ इहां चढी खेलशे नट सुता जी ॥ १६॥

श्रश्र ॥ शिवबाद्याने श्रवद्योकन करतांज, मकरध्वज राजाए प्रेमद्या द्यानी तरतज बोद्यावी ते श्राव-तांज हर्षश्री तेना रोमांच खडा थया. पिताए पोतानी पासे बेसामी ते सर्व कद्यार्जमां श्रत्यंत कुशद्य थ-येद्यी हती ॥ १५ ॥ हाजाए कद्युं के दीकरी ! श्रा नटनुं मंगद्य श्रनुपम के तर्ज सर्वे एक वखत श्राजा-नगरी गया हता. तेर्जनो खेद्य वखाएवा द्यायक के श्रा जे वांस खमो कर्यों के तेना जपर चढीने श्रा न-टनी बाद्या श्रानेक खेद्यों करी बतावशे. ॥ १६ ॥

> विमस पुरी नरनार, श्राव्या तृप दरबार, ॥ श्राव ॥ नट की ना जोवा जणी जी ॥ नव वीश त्रीजे उल्लास, ढास ए प्रेम प्र काश, ॥ श्राव ॥ मोइने जास्त्री सोहामणी जी ॥ १७ ॥

श्चर्य ॥ विमत्तपुरीना मनुष्यो राजाना दरबारमां नटना सर्व खेलो जोवाने श्चाच्याः त्रीजा उद्घासनी उंगणत्रीशमी ढाल मोहन विजयजीए श्चित मीठी कही. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

शिवमाला वंशे चढी, नागरिक हम् साथ ॥ वेठी कुव्जासन करी, करुणारुप सनाथ ॥१॥ वाढ्यां योगासन सकल, नटबाला सुप्रधान ॥ कीधा नगरी लोकने, केइ सुर चित्र समान ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ नगरना दोकोनी दृष्टी जेना उपरजि एवी शिवमादा वांस उपर चढी. सनाथ श्रने साहात् द्यारूप एवी ते वांस उपर कुन्जासन करी बेठी ॥ १ ॥ ते उत्तम नट वादाए योगना सर्वे श्रासनो वांस उपर वाड्यां, जेथी नगरना सर्वे दोकोने देवना चित्र समान तेलीए स्तन्ध करी दीधा. ॥ २ ॥

> ढोल ढमकीया जूतसे, तेम नट शब्द उचार ॥ खेल मोच्य श्र तिही सरस, कहेतां नावे पार ॥३॥ दोरे दोरे नवलगति, खेले सुता अतीव ॥ योनि चोराशी लक्षमां, जिण विध विचरे जीव ॥ ४॥

श्चर्य ॥ जमीन छपर जेम ढोखो जोसजर वागता इता तेम नटोपण जोसजर शब्दोचार करता इता. एवीरीते श्रतां खेखमां बहुज रस जाम्यो. जेनुं वर्णन करतां पार श्चावे तेम नथी ॥ २ ॥ स्थंजना दोरा श्चनेक होवाथी ते दरेकनी छपर शिवमाखा नवा नवा खेखो करती इती. जेम चोराशी खक्तयोनिमां जी-व गति करे तेवी रीते जुदा जुदा दोर छपर ते गति करती इती. ॥ ४ ॥

खिण एक वंशाग्रे रही, फिरे फेर श्रमुपात ॥ जाणे केवलीए रच्युं, ए केवसी समुद्धात ॥ ५ ॥ वंशतणी रामत रमी, श्रावी हेठी बास ॥ जपशमणी कोइ जाणीए, पड्यो प्रथम ग्रणमाल ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ क्षणवार स्थंजना टोच छपर रही, फरी तरतज चक खेवा रूप गमनागमन किया करती हती. जाणे केवलीए केवली समुद्धात करवा मांड्यो होय तेवी रचना करती हती. ॥ ५॥ वांस छपरश्री रमत रमीने शिवमाला नीचे छतरी ते जाणे छपशांत मोह नामना ११ मा गुणस्थानकथी पडतो कोइ पेहेले गुणस्थानके स्थावी जाय तेना जेवुं बन्युं हतुं. ॥ ६॥

शिवमाला निज तातथी, आवी नाम्यो अवनीश ॥ रजत हेममणी वस्त्रनो, वूट्यो घन जेम इश ॥ ९॥

श्चर्य ।। शिवकुंमर नटे शिवमाखाने साथे खड़ राजेंद्रने नमस्कार कर्योः ते वखते राजाए तेना जपर सुवर्ण, मणि, रुपुं श्चने वस्त्रादि श्चनेक वस्तुर्जनो मेधनी जेम वरसाद वरसाव्योः ॥ ७॥

॥ ढाल ३० मी ॥

॥ जुने कान कोमामणा ए देशी ॥

दीठीजी एहवे कुकडे, तेहवे प्रेमसा साबी रे ॥ परणी धरणी उससी, नाच्यो तुरंग जेम कड़ी रे ॥१॥ श्राज सुरंग वधामणा, श्राज ते उसट श्रंगरे ॥ सोसे वरसे चंदने, थयो वनिता प्रसंग रे ॥ श्रा०॥ १ ॥

श्चर्य ॥ एवा श्ववसरमां कुकडाए प्रेमला लहीने देखतांज श्वा मारी परऐली स्त्रीठे एम उल्लंखी काढी श्वने उल्लंखतांज कही घोडानी जेम नाचवा लाग्यो. श्वाजे उत्तम रंगजर वधामणां हे श्वाजे हैयामां हर्ष समातो नथी. सोले वरसे चंद राजाने पोतानी पत्नीनो मेखाप श्रयो. ॥ १ ॥ २ ॥

कुवे कुवा निव मसे, रह्या श्रवस खजावे रे॥ पण वीठडीया नरमसे, जेइ सपद कहावे रे॥ श्रा०॥ ३॥ सोसे वरसे एहनो, हुर्ड मीट मेसावो रे॥ ग्रुं करुं सरज्यो पंखीयो, नहींतो करत वधावो रे॥ श्रा०॥ ४॥

श्चर्य ॥ एक कुवो बीजा कुवानी साथे बंने स्थावर स्वजावना होवाथी कदापि मखी शके नही. परंतु एक बीजाथी वियोग पामेला पुरुषो हाथ पगवाला होवाथी तेमनो मेलाप थवानो संजव हे ॥ ३ ॥ चंद राजा श्चने प्रेमला लड़ीनो सोल वर्षे दृष्टि मेलाप थयो. चंद कहे हे के शुं करुं के हुं पही सरजायो हुं नहीं तो श्चा वखते तेणीने हर्षनी वधाइ करत. ॥ ४ ॥

कोम दिवासी जीवजो, मायडसी मुज केरी रे ॥ न होत जो कीधो कुकमो, क्यां ए मलतो फेरी रे ॥ श्राणाया नटनुं पण हो जो जलुं, जेणे साथे राख्यो रे॥सेइ इहां मुज श्रावीया,नित नित यश मुज जाख्योरे ॥श्राण्द॥ श्रर्थ ॥ चंद राजा विचारे हे के मारी माता वीरमती कोड दिवासी सुधी जीवजो, के जेना पसायशी हुं कुकडो न थयो होत तो श्रा प्रेमसा सहीने फरीशी केवी रीते मसी शकत ॥ ए ॥ वसी मने साथे राखनारा स्त्रा नटोनुं पण कड्याण स्त्रों के जेर्ड मने साम्रे लड़ने स्त्रही स्त्राच्या एटलुंज नहीं पण जेर्ड मारां निरंतर यशोगान करे हे ।। ६॥

दीतुं मुख पुण्यवंतनुं, श्राज में प्रातनी वेखारे ॥ मुजने हुश्रा जेह्थी, वीत्रमीयाना मेखारे ॥ श्राणाणा श्राज दिवस जखे जगम्यो,नयणे नारी दीती रे ॥ प्रगट्यो श्रंकुर संयोगनो, विरहारित हवे नीती रे ॥ श्राण ॥ ए ॥ श्रर्थ ॥ में पण श्राजे प्रातःकालमां कोइ पुण्यवंतनुं मुख दीतुं लागे हे, के जेना पसायथी मारा वखतना वियोग श्रयेलानो मेलाप श्राजे श्रयो ॥ ७ ॥ श्राजनो दिवस जलो रंग रखीयामणो लांबो जग्यो के श्राजे प्रेमला लज्ञीने दीती. हवे संयोग श्रवानो श्रंकुरो प्रगट श्रयो. वली विरहनी पीमा हवे नाश पामवानी. ॥ ए ॥

जो मुज संग्रहें प्रेमला, नट पासेथी लेइ रे ॥माहरा मनोरथ तो फले, याए कारज केइ रे ॥ खा० ॥ ए ॥ थाइश हवे पंखी टली, फेरीने नर रुपे रे ॥ शिवनट रायनी पुत्रिका, हरखे एहने जो सोंपे रे ॥ खा० ॥ १० ॥ अर्थ ॥ जो प्रेमला लही मने नटनी पासेथी मागी लइ पोतानी पासे राखे तो मारा सर्व मनोरथ फली जृत थाय खने केटलांए कार्यो सिद्ध थाय ॥ ए ॥ खा शिव नटनी पुत्री शिवमाला जो मने हर्षसहित खा प्रेमला लहीने सोंपे तो हुं खाशा राखुं बुं के मारूं पहीनुं खरूप फरी जइ हुं पुरुष थइ जानं ॥१०॥

प्रेमला लहीए एहवे,जोयुं पिंजर सामुं रे ॥ दीवो मनहर कुकको, नट करे तास सलामुं रे ॥ आ०॥११॥ पामी अचिरज मनमां, जोवे निपट निहाली रे ॥ कुकडनी पण तेहथी, लागी ध्याननी ताली रे ॥ आ०॥ १२॥ अर्थ ॥ एवे अवसरे प्रेमला लहीए पांजरानी सन्मुख जोयुं तो तेमां मनने हरण करनारो कुकडो तेणीए दीवो, जेने नटो वारंवार सलाम करता हता ॥ ११॥ हवे प्रेमला लही पण कुकडाने जोइ आश्चर्य पामतां बहुज बारिकीथी तेने निहालीने जुवे वे. कुकडो पण तेणीनी सामेज ध्याननी ताली लगावी रहो। वे ॥ १२॥

त्रीजा जल्लासमां बेहुने, थयो नयणनो मेलो रे ॥ पुष्य पसाये संपजे, पति प्रेमदा संग जेलो रे ॥ आ०॥१३॥ पुष्य पसाये चंदने, मलरो बहु इहां कमलारे॥बहुली कीरति वाधरो,राशिश्री पण अति विमला रे ॥आ०१॥॥

श्चर्य ॥ श्चा त्रीजा लक्षासमां पित पत्नी बंनेनो दृष्टि मेलाप श्चयोः हवे पुष्यना पसायश्रीज ते स्त्री ज-त्तारनो परस्पर मेलाप थरो ॥ १३ ॥ किव कहे हे के हवे चंद राजाने श्चर्हीयां तेना पुष्यना पसायथी श्चनेक प्रकारनी लक्ष्मी संपादन श्वरो. वली चंद्रमांश्ची विशेष लज्वल एवी तेनी यशः कीर्त्ति वधरो. ॥१४॥

सुविलासी पट् तर्कना, श्री विजयसेन सूरीश रे॥वाचक कीर्त्ति विजयवरु, तास शिष्य सुजगीश रे ॥ श्राणार्य॥ तास शिष्य कविशेखरू,श्री मान विजय बुधेश रे ॥ तस पद सेवक कविवरु,श्री रूपविजय श्राशेष रे ॥श्राण्रे६॥ श्चर्य ॥ हवे किवराज पोतानी गुरु परंपरा वर्णवे हे. ह ए दर्शनना पारगामी एवा श्री विजयसेन सूरी-श्वर थया श्चने तेमना उत्तम कीर्तिवंत एवा शिष्य उपाध्याय श्री कीर्तिविजयजी थया ॥ १५ ॥ श्री कीर्त्तिविजयजीना शिष्य, किवर्जने विषे शेखर समान, महा पंडित श्री मानविजयजी श्रया; अपने तेमना चरण कमलना सेवक किवर श्री रूपविजयजी थया. ॥ १६ ॥

तस पद पंकज मधुकरे,मोइन कहे सुविलास रे॥ ए त्रीशे ढाले करी, रच्यो तृतीय जल्लास रे॥ श्रा०॥ १९॥ श्रागल चंद नरिंदनो, वे मीवो श्रिकार रे॥ वर्णविद्युं वे जेहवो, चंद चरित्र मकार रे॥ श्रा०॥१०॥

श्चर्य ॥ ते श्री रूपविजयजीनां चरण कमलने विषे च्रमर समान श्री मोहनविजयजीए त्रीजा उद्घा सनी रचना करी, जेमां त्रीश ढाल उत्तमविलासवाली कही ॥ १९ ॥ स्थागल उपर चंद राजानो बहु मीठो श्वधिकार ठे. तेनुं वर्णन जेम चंद चरित्रने विषे करेलुं ठे तेवीज रीते हुं पण करीश ॥ १० ॥

॥ इति श्रीमोहनविजयविरचितेचंदचरित्रे प्राकृतप्रबंधे प्रेमला-ल्लाजीवनरूपा चंदकुर्कटजननास्मिकाशिवमालायाः कुर्कट प्रदानसंक्षिका प्रेमलामिलनरूपा श्राजिश्चतसृजिः कलाजिस्समर्थीयं तृतीयोल्लासः॥ ॥ इति श्री चंदराजाना रासनो त्रीजो उल्लास समाप्तः॥

॥ अथ चतुर्थोद्धास प्रारज्यते ॥ ॥ दोहा ॥

प्रणमुं वीरजीणंद पय, केवल तबक निधान ॥ जस श्रमुजवश्री संपजे, शुद्ध सुधानुष्ठान ॥ १ ॥ योग युगति साष्टांगनी, जेहश्री संगति होय ॥ योग मार्गनी श्रगम गति, समजे विरलो कोय ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ श्री केवल ज्ञानना निधान एवा श्री वीर परमात्माना चरणोने नमस्कार करुं बुं. जे नमस्कार-ना श्चनुत्रवथी ज्ञव्य जीवने शुद्ध श्चमृत कियानी प्राप्ति थाय हे ॥ १ ॥ श्चष्टांग योगनी समजपण जेना पसायथीज थाय हे. योग मार्गनी समजण बहुज किन हे. कोइ विरलाज ते मार्गने समजे हे. ॥ २ ॥

> बाह्य किया कष्टात्मिका, जब सुख जननी एम ॥ पण श्रंतर किया थकी,चिदानंदने प्रेम ॥३॥ बाह्य परिग्रह त्यागश्री, निर्मेख न थयो कोय ॥ जेम विषधर कंचुकी तजे,निज निर्विष निव होय ॥४॥

श्चर्य ॥ जे जे बाह्य किया छं हे ते सर्वे श्चात्माने कष्ट श्चापनारी हे अने मात्र जब संबंधी सुखनेज प्राप्त करावनारी हे. परंतु अंतर किया श्वकी तो चिदानंद स्वरूपनो प्रेम प्रगट श्वाय हे ॥ ३ ॥ मात्र बाह्य परिग्रहनो त्याग करवाश्री कोइ पण पोताना श्चात्माने निर्मेख करी शकतो नश्ची जेम सर्प मात्र कांचखीनो त्याग करवाश्री पोते विष वगरनो श्वइ शकतो नश्ची तेम. ॥ ४ ॥

रहे चेतन निज जावमां,तेह श्रखोकिक नेद ॥ उदर जरण हित कष्टते, केवल मिथ्या खेद ॥ ५ ॥ जे श्रुत श्रक्तर डेलवे, करे कुमति मति जोर ॥ ज्ञानी तो तेहने गणे, करीने जिनमत चोर ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ श्चात्मा जे पोताना स्वजावमांज रमणता करे ते श्चखोकिक (खोकोत्तर) स्वरूप समजवुं. श्चने पेट जरवाने माटेज जे कष्ट कियार्ज करवी ते तो मात्र मिथ्या क्षेश जत्पन्न करवा जेवुं हे ॥ ५ ॥ जे कुमित पोतानी बुद्धिना बखन्री श्चित सिद्धांतनी एक पण श्चरूर जेखवे तेने क्षानी पुरुष तो जिन मतनो चोर गणे हे. ॥ ६ ॥

> श्राण श्रखंडित जिन तणी, जेह धरे नरनार ॥ श्राये तेहने श्रंजिल, ए जव पारावार ॥ ७ ॥ बाह्य खेल खेली करी, खेले श्रंतर खेल ॥ तेहने चंद नरिंद जेम, पसरे सुकृत वेल ॥ ७ ॥

श्चर्य ।। जे स्त्री पुरुषो जिनेश्वर जगवाननी आज्ञाने श्चर्खंमपणे धारण करे हे, तेने आ जवरूपी समुद्र श्चंजित समान श्चर् जाय है।। ७॥ जेर्ज बाह्य कियाने करतां श्वकां अंतरिक्रयाने पण साथे कर्यो करे हे, तेर्जने चंद राजानी जेम सुकृत रूपी वेदा विस्तार पामी श्चनुपर्म फल मले हे.॥ ०॥

> चोथो चंद चरित्रनो, निसुणो जिन ज्ञास ॥ थयो सकषाय रसाखफल, एहनी लही मीठाश ॥ ए ॥ जेहनो चोथो धर्म हे, जेहनो चोथो ध्यान ॥ तेम चोथा ज्ञासमां,हे शिनदाइ ज्ञान ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ हे जन्य जनो ! चंद राजाना चरित्रनो चोश्रो जहास हवे सांजलो एम जासे हे के एनी मीठाशनी पासे रसवाला श्चाम्बदृक्तां फलोनी मीठाश पण कषायली श्वर गर ॥ ए ॥ जेवो चोश्रो मोक्ष-पुरुषार्श्व-वा जाव धर्म हे,जेवुं चोशुं शुक्क ध्यान हे.तेवुंज श्चा चोश्रा जहासमां मोक्षने श्चापनारं ज्ञान हे? ॰

> नट नृप दाने हरखीयो, हरख्यो तेम विहंग ॥ हवे आगल श्रोता सुणो, उत्तम कथा प्रसंग ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ जेम राजाना दानश्ची शिवकुमर नट हर्ष पाम्यो, तेमज पद्दी पण हर्ष पाम्यो, हे श्रोताजनो ! हवे जत्तम कथानुं वर्णन ध्यान दश्ने सांजलो, ॥ ११॥

॥ ढाल र सी ॥

॥ खोहारण जायो दीकरो ॥ खोहारी हो ॥ ए देशी ॥ शिवपुर पतिनी आगखे, सोजागी हे ॥ गाये महा आख्यानके, खाख सोजागी हे ॥ तृण आसी परे सांजक्षे, ॥ सो० ॥ पुरवासी देइ कानके ॥ खा० ॥ १ ॥ देखी पिंजर अचरिज धरे, सो०नृपति सुता वली जूपके ॥ खा० ॥ बेहुने हृदय आवी वस्यो, सो० नखदेति अनुपके खा० ॥१॥ श्चर्य ॥ त्यार पठी शिव कुमर नटे राजानी पासे सुंदर आख्यान गावाने शरुं कर्युं. जे आख्यानने नगरवासी जनो कान दश्ने मृगदाार्जनी जेम सांजादे हे ॥ १ ॥ पांजराने देखीने राजा आने राजपुत्री बंने आश्चर्य पाम्या. ते बंनेना हृदयमां ते अनुपम पद्दी रमी रह्युं. ॥ २ ॥

साहमी यह विमखापुरी, ॥ सो० ॥ पंखीथी खय सीनके ॥ खा०॥ कहें सहु नट स्थाव्या जखे, ॥सो०॥ निरख्यों जे विहंग प्रवीण के ॥खा०॥३॥ नट पासेथी नरवरे, ॥ सो० ॥ पिंजर सीधों समीपके ॥ खा० ॥ ताम हृदय प्रेमला तणे, ॥ सो० ॥ प्रगट्यों प्रेम प्रदीपके ॥ खा० ॥ ४॥

श्चर्य ॥ वली विमलापुरीना सर्व लोकोपण पद्दीने जोवामां लीन यह गया. तेर्ड बोलवा लाग्या के श्चा सर्व नटो जले श्चाब्या के जेथी त्रावुं प्रवीण पद्दी जोवामां श्चाब्युं ॥ ३ ॥ शिवकुमर नटनी पासेथी राजाए पांजरू पोतानी पासे जोवा लीधुं एटले प्रेमलाना श्चंतःकरणमां प्रेमनो प्रदीप प्रगट श्रयोः ॥ ४ ॥

कुकट पण सन्मुख जुवे, ॥ सो० ॥ दृष्टिश्री दृष्टि मिलायके ॥ ला० ॥ हेम पिंजर रह्यो जइ पडयो, ॥ सो० ॥ प्रेमने पिंजर जायके ॥ ला०॥ ॥ हृदय सो जाले चंचथी, ॥ सो०॥ विहंगम वारोवारके ॥ ला० ॥ रेहेवा प्रेमला कारणे, ॥ सो० ॥ जाणीए रचे आगारके ॥ ला० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ कुकटराय पण तेणीना सन्मुख जोवा खाग्या श्चने श्चरसपरस दृष्टि मेखाप श्चयो, एटखे सुव-र्णना पांजरामां रहेखो जीवडो प्रेमना पांजरामां जइने चोटयो ॥ ए ॥ प्रेमखा ख्रृहीना श्चंतःकरणनी साथे पद्दी वारंवार चांच खगाडतो हतो, एवा हेतुश्चीके जाणे प्रेमखानी साथे रेहेवाने श्चंदर निवास करतो होयनी. ॥ ६ ॥

क्षण मांहि प्रीति वशे यइ, ॥ सो० ॥ पंखी फुलावे पंखके ॥ ला० ॥ जाणीए हित महीरू हतणा, ॥सो०॥ उलसित पत्र असंखके॥ला०॥॥ देखी चेष्टा प्रेमनी, ॥ सो० ॥ प्रेमला थाए सनाथके ॥ ला० ॥ सोंप्युं सजा मांहि गोपवी, ॥ सो० ॥ निज मन पंखीने हाथके ॥ ला० ॥ ०॥

श्चर्य ॥ वखी क्ष्णमां प्रीतिने श्चाधीन श्ववाशी पक्षी पोतानी पांखो फूलावे हे. ते जाणे हेतरूपी पृथ्वी जपरना वृक्षना श्चसंख्य पांदडार्ज नवपक्षव श्रया होयनी ॥ १ ॥ प्रेमला लही पण पक्षीनी सर्वे प्रेमनी चेष्टा देखीने पोते सनाथ थइ एम मानवा लागी श्चने तेणीए सन्नामां गुप्त रीते पोतानुं मन पक्षीने कबजे सोंप्युं. ॥ ८ ॥

नटने पाछो पांजरो, ॥ सो० ॥ जूपे दीधो तामके ॥ खा० ॥ बेसाङ्यो नट रायने, ॥ सो० ॥ निज पासे गुण धामके ॥ खा० ॥ ए ॥ पुछे जूपति तेहने, ॥ सो० ॥ कुर्कटनो श्रिधकार के ॥ खा० ॥ कर जोडी नटवर कहे, ॥ सो० ॥ कहुं निसुणो वसु धारके ॥ खा० ॥ १० ॥ श्चर्य ॥ पत्नी राजाए नटने ते पांजरूं पाबुं श्चाप्युं; श्चने शिवकुमर नट जे गुएनुं स्थानकज है तेने पोतानी पासे बेसाड्यो ॥ ए ॥ राजाए शिवकुमरने कुकडा संबंधी सर्व वृत्तांत पुनतां, ते नटराये वे हाथ जोडी कह्युं के हे राजन्! तेनुं वृत्तांत श्चा प्रमाणे है. ॥ १० ॥

इहांथी कोश अगरसे, ॥ सो० ॥ नगरी आजापुरी एकके ॥ खा० ॥ चंद नृपति तिहां नरवरू, ॥ सो०॥ वे ग्रण तास अनेकके ॥ खा०॥११॥ तास विमाते तेहने, ॥ सो० ॥ राख्यों वे गोपवी गेहके ॥ खा० ॥ अमे प्रगट निरख्यों नहीं, ॥ सो० ॥ होंश रही मन एहके ॥ खा० ॥ ११ ॥

श्रर्थ ॥ विमलापुरीश्री श्रठारसो कोशने श्रंतरे श्रानापुरी नामनी एक नगरी है. त्यां श्रनेक गुण सं-युक्त चंद नामनो नर श्रेष्ठ राजा है ॥ ११ ॥ तेनी जैरमान माए तेने गुप्त रीते घरमां राख्यो है. श्रमे तेने प्रत्यक्त दीहो नथी. जोके श्रमने तेने प्रत्यक्त जोवानी होंशा घणीज मननां रही है. ॥ १२ ॥

करतां राज्य दिठी तिहां, ॥ सो० ॥ वीरमती महारायके ॥ खा० ॥ तिहां जइ स्थमे नाटक कर्युं, ॥ सो० ॥ तूर सनूर वजायके ॥ खा०॥१३॥ तास वधू ठे गुणावली, ॥ सो० ॥ तेहनो ए पंखी स्रूपके ॥ खा० ॥ राणी उपर वट यह एणे, ॥ सो० ॥ दीधुं दान स्थनूपके ॥ खा० ॥१४॥

अर्थ ॥ अमे त्यां वीरमती महाराणीने राज्य करती दीठी. तेनी पासे जइ हर्ष सहित वाजिंत्रो वागते अमे नाटक कर्यु ॥ १३ ॥ ते वीरमतीने गुणावसी नामनी दीकरानी वहु हे. हे राजन्! तेनुं आ पही हे. आ पहीए राणीनी जपरवट थइ अमने अनुपम दान दीधुं हे. ॥ १४॥

वीरमती हणती हुती, ॥ सो० ॥ लोके ठोडाव्यो एहके ॥ ला० ॥ मुज पुत्रीने पंखीए, ॥ सो० ॥ समजावी ससनेहके ॥ ला० ॥ १५ ॥ श्रमे पण वीरमती कने, ॥ सो० ॥ लीधो ए पंखी पसायके ॥ ला० ॥ सेना सविठे एहनी, ॥ सो० ॥ श्रमे मान्यो करी रायके ॥ ला० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ श्चा पद्मीने वीरमती मारी नांखती हती, परंतु लोकोए तेने ठोडान्यो ठे. त्यार बाद श्चा शिव-मालाने पद्मीए स्नेह पूर्वक पोतानी हकीकत समजावी ॥ १५ ॥ श्चमे पण वीरमतीनी पासेश्री श्चा पद्मीने नाटक देखाड्याना इनाम तरीके लीधुं ठे; श्चा सर्व सैन्य तेनुं ठे. वली श्चमे तेने श्चमारो राजा ठे एम मान्यो ठे. ॥ १६ ॥

सहु अमे सेवक एहना, ॥ सो० ॥ अहो सोरठ महीपालके ॥ ला० ॥ पेहेली चोथा उल्लासनी, ॥ सो० ॥ मोहने पत्रणी ढालके ॥ ला० ॥ १७ ॥

श्चर्य ॥ श्वहो सोरा महीपति ! श्वमे सर्वे तेना सेवक शिए श्वा प्रमाणे चोथा छद्वासनी पेहेखी ढाख मोहन विजयजी ए कही. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

एह विहंग राजा ग्रही, श्राजापुरथी स्वाम ॥ घणे हेजे चाखा श्रमे, देश विदेशे ताम ॥ १ ॥ एम करतां वरसे नवे, श्राव्या तुम दरबार ॥ संदेषे तमने कह्यो, पंखीपति श्रधिकार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चा पद्दीराजने ग्रहण करी हे राजन्! श्चमे श्चाजापुरीयी बहु हर्ष सहित प्रयाण कर्युः श्चने देश परदेश करवा लाग्या ॥ १ ॥ ए प्रमाणे फरता फरतां नव वरसे तमारा दरबारमां श्चाव्या श्चा संहे-पथी ते पद्दी राजनो वृत्तांत श्चापने विदीत कर्यो ॥ १ ॥

मकरध्वज सुप्रसन्न थयो, पाम्यो चंद उदंत ॥ तेम हरखी श्रित प्रेमला, नाम सुणीने कंत ॥ ३ ॥ कर्यो घणो विमक्षेसरे, कुर्कट उपर प्रेम ॥ पण नृपचंद न जेलस्यो, पंखी वेशे एम ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ मकरध्वज राजा चंद राजानो वृत्तांत सांजाती बहुज खुशी थयो. तेवीज रीते प्रेमलालही पण पतिनुं नाम सांजाती हर्षवंत थइ॥ ३॥ पत्नी विमलेश्वरमकरध्वज राजाए कुकना उपर श्चरवंत स्नेह धारण क्यों; परंतु पद्दी वेशे होवाथी श्चा चंदराजा ते एम जेलाबी शकयो नहीं. ॥ ४॥

नट नरपतिने विनवे, तुज चरणे महीपाल ॥ रहीये पावसरूतु इहां, जो श्रमति सुविशाल ॥ ५ ॥ रहो सुखे जूपति कहे,

करेशुं गोष्टि सदैव ॥ तुमयी वही कुर्कट थकी, प्रेम विद्युद्धो जीव ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ पठी शिवकुमर नटे राजाने विनंति करीके हे राजन्! आपनी पवित्र आज्ञा होय तो वरसा कतुमां आपनी ज्ञायामांज अमे रहीये ॥ ए ॥ मौकरध्यज राजाए कहुं के हे शिव कुमर! तमे सुखेथी रहो. तमारी साथे निरंतर गोष्टी करशुं. कारएके तमारी साथे अने कुकडानी साथे अमारो प्रेम संबंध अयो हो.॥ ६ ॥

नृप आदेशे नगरमां, रह्या नट खेइ आवास ॥ गीत गान नित प्रति करे, ते नट कुर्कट पास ॥ ७ ॥

श्रश्री ॥ राजानो हुकम खड़ नटो नगरमां श्रावास खड़ रह्याः तेर्ज निरंतर कुर्कट रायनी पासे मुजरो करे हे. ॥ ७ ॥

॥ ढाख १ जी ॥

॥ साहेबनीरे श्राज धरा हुश्रो ध्रंधबो हो बाब ॥ ए देशी ॥ एक दिन प्रेमबाने कहेहो बाब, तात तेडी श्रासन्न मन मोहना रे ॥ ताहरूं कह्युं हुं न मानतो हो बाब, पण हवे मान्युं मुज मन्न॥म०॥१॥ कर्म करे ते न करे कोइ हो बाब, सुख छु:ख कर्म प्रमाण ॥ म०॥ कर्त्ता कर्म कह्यो खरो हो बाब, धन धन श्री जिन जाण॥म०॥क०॥१॥ श्चर्य ॥ मकरध्वज राजा एक दिवस प्रेमखा ब्रह्मीने पोतानी पासे बोखावी कहेवा खाग्यों के हे पुत्री! तारूं बोखवुं हुं साचुं मानतो नहोतो, परंतु हवे मने तारी बोखेखी वात साची हे, एवी खात्री श्चर्र हे. कर्म जे करे ते बीजुं कोइपण करवाने शक्तिवान नश्ची. सुखके छु:ख सर्वे कर्माधीनहे. जिनेश्वर जगवाने कर्मने कर्ता जे कह्योहे ते वात सत्य हे. ते सूर्य समान जिनराजने धन्य हे, धन्य हे. ॥ १ ॥ २ ॥

वड तुज पित वेगको हो खाल, मेखोतो खेखने हाथ ॥ म०॥ कहें तो अपावुं कुकमो हो लाल, जे डे नटनी साथ ॥ म०॥ क०॥ ३॥ आला खुंवे एहने हो लाल, थारो दिवस व्यतीत ॥ म०॥ जोरन कोइ दैवथी हो खाल, डे जगगित विपरीत ॥ म०॥ क०॥ ४॥

श्चर्य ॥ हे पुत्री! तारो पित श्चर्हांथी घणा दूर हे. तेनो मेखाप थवो ते तो कर्माधीन हे. परंतु तुं कहे तो श्चा नटोनी साथे जे कुकको हे ते तने श्चपादुं. ॥ ३ ॥ ए पद्दीनी साथे श्चाखाखंबो थवाथी तारा दिवसो न्यतीतथदो. विधात्रानी साथे कोईनुं जोर चाखतुं नथी. वखी हजु दैव प्रतिकुख हे. ॥ ४ ॥

तातने वचने प्रेमला हो लाल, मांड्यो हठ दरबार ॥ म० ॥ श्रावे जो ए कुकडो हो लाल, लेखे मुज अवतार ॥ म० ॥ क० ॥ ५ ॥ पियुना घरनो ए पंखीठं हो लाल, ए मुज जीव समान ॥ म० ॥ राखवो ए आदर करी हो लाल, पंखी अतिथि प्रधान ॥ म० ॥ क० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ पितानां श्चावां वचनोथी प्रेमलाए पए श्चायहथी कहुं के हे पिताजी! जो ए कुकडो मने मले तोज मारो श्चवतार लेखेडे, नहींतो फोगट समजुं इं. ॥ ५ ॥ मारा स्वामीना घरनो ए पद्दी डे, तेथी मने ए मारा प्राण समान वहालो डे. ए पद्दी उत्तम श्चितिश्वन्होवाथी मारे तेने बहु सन्मान पूर्वक राखवो डे.६

ताते स्ता वचने जले हो लाल, मुक्यो शिव नट पास ॥ म० ॥ अरघे वचने नट आवियो हो लाल, प्रणम्यो नट सुविलास ॥ म० ॥ क०॥ ७॥ केम संजायों मुज जणीहो लाल, दीजे कारज कोय ॥ म० ॥ जूधव तव शिवने कहे हो लाल, सादरे सन्मुख जोय ॥ म० ॥ क० ॥ ०॥

श्चर्य ॥ मकरध्वज राजाए प्रेमलानां मीठा वचनोश्ची शिव नटरायने तेमवा मोकह्यो. तेपण श्चरधे वचने श्चावीने प्रेमपूर्वक राजाने प्रणाम करतो हवो. ॥ ७ ॥ शिवकुमर नटे श्चावीने कह्यं के हे महाराज ! श्चा सेवकने याद करवा केम तस्दी दीधी, सेवक सरखुं काम फरमावो. राजाए बहु मान पूर्वक तेनी सामुं जोइ कह्यं के ॥ ० ॥

जे तुम पासे हे पंखीयो हो लाल, प्रेमला लहीनो एह ॥ म०॥ सास रियो थाये खरो हो खाख, वात श्रमंत्रव एह ॥ म०॥ क०॥ ए॥ सोले वरसे चंदनो हो लाख, लह्यो तुमथी छल्लेख ॥ म०॥ जाणी प तिना गेहनो हो लाल, पुत्रीने व्हालो एष ॥ म०॥ क०॥ १०॥

चंदराजानो रासः

श्चर्य ॥ जे तमारी पासे पही हे ते प्रेमखा खड़ीनो खरे खरो सासरी श्रायहे. जो के ए वात कोइक रीते श्चसंज्ञवित खागे हे. ॥ ए ॥ परंतु सोखवरसे चंदराजानो हेवाख तमाराश्री श्चमारा जाणवामां श्चाव्यो श्चने श्चा पही चंदराजाना घरनो हे एवं प्रेमखा खड़ीना जाणवामां श्चाववाश्री ते तेणीने बहुज वहाखो खागे हे. ॥ १०॥

आपोजो अमने तुमे हो खाख, तो होये तनुजा प्रसन्न ॥ म० ॥ पाड तमारो मानशुं हो खाख, हो तुमे पुरुष रतन्न ॥ म० ॥ क० ॥ ११ ॥ एह हे वात घणी जली हो खाख, आपो जो यह रिलयात ॥ म० ॥ तु मधी कोइ जोरो नथी हो खाख, खाख वाते एक वात ॥ म० ॥क०॥१२॥

श्रर्थ ॥ जो ते पद्दी तमे श्रमने श्रापो तो श्रा मारी पुत्री बहुज खुद्दी श्रायः तेथी श्रमे तमारो मोटो जपकार मानशुं. तमे पए पुरुष रहाहो. ॥ ११ ॥ तमे जो खुद्दी श्रम्ने ए पद्दी श्रमने श्रापो तो श्रमारे तो बहुज सारूं श्रायः कांइ श्रमारूं तमारी जपर जोर नश्री. खाख वातनो सार कहीए हीए के श्रापो तो कृपा. ॥ १२ ॥

निसुणी नट नृपने कहे लाल, ए श्रम कुर्कटराय ॥ म०॥ ए तन मन धन श्रमतणो हो लाल, में ए केम देवाय ॥ म०॥ क०॥ १३॥ कहोतो पंखीने जई विनवुं हो लाल, पंखीजो राजी होय॥ म०॥ तो तमने श्रापुं प्रज्ञ हो लाल, श्रजर करूं नही कोय॥ म०॥ क०॥ १४॥

श्रर्थ ॥ राजानी वात सांजावी नटराये कहांके हे महाराज ए कुकडो श्रमारो राजा हे. सारांश के ते श्रमारू तन मन श्रने धन हे तेथी श्रमाराशी एने केम श्रापी शकाय ? ॥ १३॥ परंतु श्राप श्राङ्गा करो तो पश्चीने जड़ने विनंति करूं श्रने ते जो श्राववाने राजी होय तो हे महाराज ! सुखेथी श्रापने श्रापुं. हुं पोते कांड्पण श्रायह करीश नही. ॥ १४॥

नट श्राव्यो कुर्कटकने हो लाल, कह्यो सिव जूप विचार ॥ म०॥ ह रख्यो पंखी सांजलीहो खाल, बुट्यो श्रमी जलधार ॥ म०॥ क०॥ १५॥ ए पुर ए नृप ए त्रिया हो खाल, एह चतुर नर नार ॥ म०॥ पुष्य संयोगे पामीए हो लाल, मेलो एहवो संसार ॥ म०॥ क०॥ १६॥

श्रर्थ ॥ पत्नी नटराय कुर्कटरायनीपासे श्राच्यो, श्रने राजाए कहेखो सर्व वृत्तांत तेने कहाो. ते सां-जली कुकडो बहुज हर्षपाम्योः तेनी श्रांखमांश्री हर्षामृतनी धारा श्रइः ॥ १५ ॥ श्रा नगर, श्रा राजा श्रने श्रा स्त्री, तेमज नगरनां चतुर स्त्री पुरुषो, ए सर्वे जोतां जो पुष्यनो संयोग होय तोज संसारमां श्रावो मेलाप श्रवानो संजव हे. ॥ १६ ॥

श्रापे जो नट मुज जाणी हो खाख, तो होवे रंग रसाख ॥ म० ॥ मो हने चोथा उल्लासनी हो खाख, वर्णवी बीजी ढाख ॥ म० ॥ क० ॥ १९ ॥ श्रर्थ ॥ जो श्रा नटराय मने प्रेमखा खडीने सोंपे तो बहुज रंगरिखयामाणां थाय, चोथा उल्लासनेविषे बीजी ढाख मोहनविजयजीए कही. ॥ १९ ॥

चतुर्थ ज्ञासः

॥ दोहा ॥

तव शिवपुत्री विनवे, कुर्कट चल चित्त देख ॥ मुजयी निरमोही थया, स्वामी केण विशेष ॥ १ ॥ चाकरीए चूकी नही, राख्या करीने प्राण ॥ खामी न कर कोइ दिशा, जावे जाण मजाण ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ कुकडानुं चित्त चलायमान श्चनुं जोड्ने शिवमाला तेने विनंति करवा लागी के हे नाथ! एवुं शुं विशेष श्चयुं के श्चापे श्चमारा उपरधी राग तजी दीधो?॥ १॥ हे नाथ! हुं चाकरी करवामां चूकी नथी एटलुंज नहीं पण मारा प्राण करीने राख्या हे. वली जाले के श्चजाले कोइपण बाबतमां खामी-पडवा दीधी नथी।॥ २॥

होगाला तुम कारणे, जुह्व्या घणा नरेश ॥ हुं माथे खेइ फरी, पिंजर देश विदेश ॥ ३ ॥ एक घनीनी प्रीतनी, पासे उत्तम स्रोक ॥ वरस नवनो नेहलो, क्रणमां नकरो फोक ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ हे ठोगाला ! श्चापने माटे में घणा नरपतियोने पण छहन्या छे. वली श्चापने मारा मस्तक जपर घारण करी देश परदेश हुं फरेली हुं. ॥ ३ ॥ जे जत्तम प्राणी होयछे ते तो एक घडीजर प्रीति श्चर होय तेनो पण निर्वाह करे छे तो तमारी श्चने श्चमारी तो नव वर्षनी प्रीतिछे. तेने एक इण्मां केम तोडी नांखोछो ॥ ४ ॥

रे पंखी कहे तुम तणे, वीरमतीनी पास ॥ मांगी लीधा जाणी, केम हवे करो निरास ॥ ५ ॥ जुध देखाकीने प्रथम, कांइ दे खाडो डांग ॥ मारी जेखगनो तमे, कयारे वालशो खांग ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ हे पद्यीराज! श्रापनाज कहेवाथी वीरमतीनी पासेथी श्रापने मांगी खीधातो हवे मने श्राप केम निराश करोठो? ॥ ए ॥ प्रथम श्रापे श्रमने दुध देखाडयुं श्रने हवे श्रमने डांग वतावोठो, तो बीजुं तो कांईनही परंतु मारी श्रापना परत्वेनी सेवानो बदक्षो श्रा दासीने क्यारे श्रापशो ॥ ६ ॥

केणे तमने जोलव्या, थया जेइ निसनेइ॥ पेहेलां पोतानी करी, चो ठो कां इवे ठेइ॥ ७॥

अर्थ ॥ आपने कोणे जोखबी दीघा के जेथी आमारा उपर आवा स्नेह रहित थइ गया. प्रथमतो पो-तानीजो एम कहुं अने हवे जुदारो शामाटे करोजो. ॥ ७ ॥

> ॥ ढाल ३ जी ॥ ॥ करेलणां घमीदे रे ॥ देशी ॥

बोछो कुर्कट राजोयो रे, नटवधू निसुणो वात॥ए सौजन्य गुण ताहरा, सांजरशे दिनरात ॥ विबुध जननी प्रीतडी रे, खटके खिण खिण चित्त ॥ दिसे जगरी तडी रे, एइमां निश्चल चित्त ॥ १॥ मे तुज एक घमी तणो, ठीशंगण न थवाय॥ त्रावी खिलाणा जे हीये, ते केम विसर्या जाय॥वि०॥२॥ श्चर्य ॥ पठी कुर्कटराय बोह्योके हे शिवमाद्या मारीवात ध्यानमां ह्यो. तमारा सौजन्यता श्चादिजे गुणोठे ते तो मने रात दिवस सांजर्या करशे. जे डाह्या मनुष्यनी श्रीतिठे ते तो इणे इणे श्चंतरमां ख-टक्या करे ठे. मारूं मन तो निश्चदाज ठे. वदी जगत्नी रीतिपण एवीज ठे. ॥ १ ॥ तारी एक घडीनी चाकरीनो पण माराश्री जपगार शुद्धाय तेम नश्ची. जे मारा श्चंतःकरणमां कोतरायेदाठे ते ते केवी रीते शुद्धाइ जवाशे. ॥ २ ॥

कही देखाडे किस्युं, कीधाजे उपगार ॥ ते हुं शुं नथी जाणतो, करीये ठियेशेर श्राहार ॥ वि० ॥३॥ नेह नवल नव वरसनो, त्यजतां दोहिलो होय ॥ पण कोइना हैमा तणी, समजे नहीं गति कोय ॥ वि० ॥ ४ ॥

श्चर्य ।। तें जे उपगारो कर्यां वे ते शुं जोइने मने कही बतावे वे. तुं एम जाएं वे के हुं ए कांइ जाएतो नथी. होर श्चाहार करतो होय ते सहु कोइ जाएं ।। ३ ॥ तारो नववरसनो मीठो स्नेह ठोडतां घएंज छु:ख खागे वे, परंतु बीजाना श्चंतःकरएनी वातने श्चन्य बीजो कोइ केवी रीते जाएं। शके १ ॥ ४ ॥

संग सल्लो ताहरो, मूके ते मतिहीण ॥ काज विशेषे गंडता, निव खहवानं प्रवीण ॥ विण ॥ ५ ॥ एह नगरना रायनी, ने पुत्री गुणवंत ॥ नटकन्ये हुं ऐहनो, कहुं तुजने हुं कंत ॥ विण ॥ ६॥

श्चर्य ॥ तमारी सोबत बहुज उत्तम हे श्चने जे मूर्ख होय तेज तेने होडीदे. परंतु काई काम पमवाश्री ते होक्वो पडेहे. तेश्री हे चतुरा! तुं छुःख धरीश नहीं ॥ ए॥ परंतु हवे तने कहुं हुं के श्चा नगरना राजानी जे कन्या हे ते बहुज गुण्यंत हे. हे शिवमाखा! हुं तेनोज पतिहुं. ॥ ६॥

ग्रातीपण फाटी पमे, कहेतां धूरशीवात ॥ ए माटे पंखी कयों, मुजने जेह विमात ॥ वि० ॥ ७ ॥ प्रजु तहारूं करजो जल्लं, मुजने ग्रोमाव्यो जेह ॥ श्राण्यो इहां विमलापुरी, मेलो कीधो एह ॥ वि० ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ ते संबंधी प्रथमथी वात कहेतां तो मारी ठातीपण चिराइ जाय तेम छे. श्चाज कारणथी वीर-मतीए मने पट्टी बनाव्यो छे. ॥ ७ ॥ तारूं पण प्रजु कह्याण करजो के तें मने तेणीना कबजामांथी छो-डावी श्चर्ही विमलपुरी श्चाण्यो श्चने श्चा मेलाप कराव्यो ॥ ० ॥

ललचाणुं मन माहरूं, इहां रेहेवानुं तेण ॥ तुं राजी होयतो रहुं, तुज मुज वचन विसेण ॥ वि० ॥ ए ॥ जो नही सोंपे एहने, तो माहरो इयो जोर ॥ बकरी कान धणीवसु, तुजधी न थानं कनोर॥ वि०॥ १०॥

श्रर्थ ॥ तेज करण्थी श्रहीं रेहेवाने माटे मारूं मन लखचायुं हे. परंतु एटली सरत हे के तुं जो राजी होतो हुं रहुं. मारा श्रने तारा विचारमां जिन्नता श्रवी नजोइए श्रर्थात् तारूं वचन मारे प्रमाण हे.॥ ए॥ विद्या जो तुं मने तेणीने सोंपीश नहीं तो तेमां मारूं जोरनथी. दृष्टांतके बकरीनो कान धणीने श्राधीनहे. हुं ताराश्री कदापि कहोर श्रवानो नश्री ॥ १०॥

सुणी वचन पंखी तणां, यह नटवी दिखगीर ॥ बुट्यो बेहुं नयणां थकी, इःख निसुणीने नीर ॥ वि० ॥ ११ ॥ कहे बाला कर जोडीने, रे श्राजा धरणीश ॥ श्राज ए जाणी वातडी, हवे तुम चिंत्युं करीश ॥ वि० ॥ १२ ॥ श्रयं ॥ पद्मीनां वचनो सांजली शिवमाला दिखगीर यह गइ अने तेना इःखनी वात सांजलतां तेना बंने नेत्रोमांथी श्रांसुनी धार चाली ॥ ११ ॥ शिवमाला बेहाय जोडी कहेवा लागीके हे श्राजा नगरीना स्वामि ! श्राजे तमारी श्रा वात जाणी तेथी तमे जे मने कहेशो ते हुं करीश. ॥ १२ ॥

जली यह मुज चाकरी, सेखे आवी आज ॥ परणी धरणीथी मखा, राज्य करो महाराज ॥ वि० ॥ १३ ॥ पहवे पुत्री आग्रहे, पंखी ग्रहण निमित्त ॥ नटपासे आव्यो वही, जूपति प्रसन्न चित्त ॥ वि०॥ १४ ॥

श्रर्य ॥ हे महाराज ! श्राज सुधी श्रापनी जे श्रमे चाकरी करी ते श्राजे लेखे श्रावी कारण के श्राप श्रापनी परणेली स्त्रीने महया. हवे श्राप सुखेशी राजजोग जोगवो ॥ १३ ॥ एवा श्रवसरमां पुत्रीना श्राप्रहश्री मकरध्वज राजा ते पद्यीने लेवाने माटे शिवकुमर नटनी पासे श्राव्यो. राजा चित्तमां बहुज प्रसन्न हतो. ॥ १४ ॥

दीधो स्टादर शिव नटे, मकरध्वजने स्टानंत ॥ जाख्यो जूपे तेहने. निज पुत्री विरतंत ॥ वि० ॥ १५ ॥ स्टापो जो ए कुकडो, याउं मेरू समान ॥ जाणीश मुज पुत्री जणी, दीधुं जीवित दान ॥ वि० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ शिवकुमर नटे मकरध्वज राजाने बहुज श्चादर सत्कार कर्यों, एटखे राजाए तेने पोतानी पुत्री नो सर्व वृत्तांत कही संज्ञखाब्यो ॥ १५ ॥ जो तमे मने श्चा कुकमाने श्चापीद्यो तो हुं मेरूपर्वत समान श्वरू जालं, वखी एम पण जाणीशके तमे मारी पुत्रीने जीवित दान श्चाप्युं. ॥ १६ ॥

> मानीश पाम तुमारमो, जिहां लगी तारकमाल ॥ मोहने चोथा उल्लासनी, जाखी ए त्रीजी ढाल ॥ वि०॥ १९॥

श्चर्य ॥ वखी ज्यां सुधी श्चा तारा मंडख हे त्यां सुधी हुं तमारो जपकार मानीश. मोइन विजयजी महाराजे चोथा जन्नासनी त्रीजी ढाल कही ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

शिवनट नृपने विनवे, नगणो एह विहंग ॥ श्रम मन श्राजानो धणी, एह वे प्रगट श्रजंग ॥ १ ॥ देतां मन वेहेतुं नश्री, तुमने नान कहाय ॥ इहां वाघ तेम जहां नदी, तेह बन्यो वे न्याय ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ इवे शिवकुमर नट कहे हे के हे राजन ! श्रा पश्चीने तमे पश्ची जाएशो नही. श्रमारा मनमां तो खात्री हे के ते श्राजानगरीनो स्वामिज हे ॥ १ ॥ ते पश्चीने श्रापतां श्रमारूं मन कबुख करतुं नश्ची. परंतु श्रापने ना कहेवाती नश्ची. श्रमारे तो एक बाजु ए वाघ श्रने बीजी बाजुए जरपूर नदी एवो दाखें बन्यों हे. ॥ १ ॥

शिवमाला नृपने कहे, ए माटे बहु देश ॥ किथा वैरी साहिबा, करीने कोनी कलेश ॥ ३ ॥ पण में पुत्री तुम तणी, करी सखी हित आण ॥ तेहथी देतां एहने, न करूं ताणा ताण ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ वसी शिवमादाए राजाने कहां के ए पद्दीने माटेज श्चमे श्चनेक देशना राजार्जनी साथे खडाइ र्जंकरी वेर बांध्या है ॥ ३ ॥ परंतु तमारी पुत्रीनी साथे मारे हेत थवाथी में तेने मारी बेहेनपणी करी है तेथी तमारी पुत्रीने श्चापतां मने कांइ खेंचताण नथी. ॥ ४ ॥

> क्षेत्र जार्च पुर धणी, यार्च क्रोड कछाण ॥ रूडे यतने राखजो, ए श्राजा महिराण ॥ ५ ॥ जाणी विहंग म जूलशो,श्रहो मोटा श्रवनीश ॥ तुम पुत्रीनी एहथी, याये सयल जगीश ॥ ६ ॥

श्चर्य ।। हे राजाजी ! श्चाप सुखेथी तेने लड़ जार्च. तेनाथी कोड कह्याण प्रगट थजो. तमे तेने यतना पूर्वक राखजो. ए श्चाजापुरीना महाराजा हे ॥ ७ ॥ हे महाराजाधिराज ! ते पद्दी हे एम जाणी जुलावो खाशो नही. तमारी पुत्रीनी सर्वे श्चाशा एनाथी फलीजूत थशे. ॥ ६ ॥

यही सिपंजर क्कडो, श्राव्यो नृप निज धाम ॥ हाथो हाथ सुता जाणी, जइ समप्यों ताम ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ पांजरा सहित कुकडाने खड़ने राजा पोताने मेहेल श्राव्यो श्रने प्रेमला लहीने हाथो हाथ तेले सॉप्यो. ॥ ७ ॥

॥ ढास ४ थी॥ ॥ ढेडो नांजी ए देशी॥

॥ धण रंग राति हारे एम कुर्कटने समजावे ख्रति मद माती ॥
नृप पुत्रीए पंजर हुंती, लेइ कुर्कट कर धरी ।। जांख्युं एम मुज सोखे
वरसे, तुं हीज मख्यो सासरी ।। १॥ सुण पंखी तुंज नगरी केरो,जूपति
मुज वाल मिर्ज ॥ पण में दुमक रतन दृष्टांते, हाथे ख्राव्यो गमिर्ज ॥ ध० ॥१॥
अर्थ ॥ प्रेमला लहीए पांजरामांथी कुकडाने लड़ हाथ जपर धारण करी तेने कहां के ख्राज सोल
वरपे मारा सासरी ख्रामांथी कोइ जो मने मह्युं होय तो तुंज मह्यो हे रंगमां रिसली ख्रने मदमां
मातेली कुर्कटने ए प्रमाणे समजावे हे ॥ १ ॥ हे पद्यी । तारा नगरनो राजा ते मारो स्वामिनाथ हे परंतु
जिल्लारीना हाथमां ख्रावेलुं रतन जेम रहे नहीं तेम में तेने गुमाव्यो हे ॥ १ ॥

तेहने विरहे तनथी बाहिर, निकलीयुं पांसली छं॥ तोही पण मुज अवधि गणतां, हजीअलगण निव मिल्रिं॥ ध०॥३॥ गयो विठोहो देइ मुजने, पाठी खबर न खीधी॥ रे पंखी में ताहरा नृपनी, एवफीशी चोरी कीधी॥ ध०॥४॥ अर्थ॥ तेना वियोगथी मारा शरीरनी सर्वे पांसली छं शरीर बहार तरें छे. वली मुदत वीत्या ठतां पण हजी सुधी ते आवीने मने महयो नथी॥ ३ ॥ मने ठेह दक्ने जे चाह्यो गयो ते पाठी अत्यार सुधी मारी खबर पण तेणे लीधी नहीं. हे पहीं! में ते तारा राजानी एवडी मोटीशी चोरी कीधी हशे? ॥४॥ परणीने कुष्टी जणी सोंपी, एशी इक्जत खाटी ॥ महारो जनम कीयो श्रकीया रथ,केणे ए शिखवी पाटी ॥ घ० ॥ ५ ॥ जो घर जार वेहेवा कायर, कां कयों कर मेखावो ॥ परणतां वेंतज केम मुज उपर, श्राव्यो चित्त श्रजावो ॥ घ०॥६॥

श्चर्य ।। मारी साथे खन्न करीने कोढी आने मने सोंपी. एमांते एए आवरू शुं वधारी? मात्र मारो जन्मारो श्चश्चतार्थ कर्यो. आवी शिक्षा ते कोए तेने आपी हशे! ॥ ५ ॥ जो घर संसार चढाववाने कायर हतो तो मारी साथे हस्त मेढाप शामाटे कर्यों ? वढी परिए ने तरतज मारी छपर चित्तनो अज्ञावों केम कर्यों ? ॥ ६ ॥

रे पंखीमें पियुडा सरखो,निव निरख्यो निरमोही॥कागलनुं पण मलवु टाब्युं, जे दिन हुंती विठोही ॥ घ० ॥ ७॥ किहां श्राजा किहां नगरी माहारी, मनडुं पण निव पहोंचे ॥ कंते कीधुं ते न करे वैरी, जंडुं निव श्रालोचे ॥ घ० ॥ ०॥

श्रश्री। हे पही! में मारा नाथ समान कोइ निर्मोही दीठो नही. जे दिवसथी तेणे मारो त्याग कर्यो ते दिवसथी कागत्वश्री मलवानुं पण टली गयुं हे ॥ ७ ॥ क्यां आजापुरी श्राने क्यां मारी विमलापुरी? मन पण दोडीने पहोंची शके नहीं. वधारे शुं कहुं? स्वामिए कर्युं ते वेरीपण न करे. जरा पण जंडो विचार कर्यो नही. ॥ ए॥

वाबेसर इहां स्रावी न शके, में पण तिहां न जवाय ॥ एम निरधारी नाह विहूणी, मुजने केम दिन जाय ॥ घ०॥ए॥ नही जगमां कोइ प्रजुनो वाहाखो, जइने तस समजावे ॥ हृदय कठोरस्यां एवा नरनां, करुणा किमपि न स्रावे ॥१०॥

श्चर्य ॥ मारो वहालो श्वहीं श्चावी शके नही अने माराथी त्यां जवाय नहीं. श्चावी रीते श्चाधार वि-नानी, नाथ वगरनीना मारा दिवसो केम जाय ? ॥ ए ॥ कोइ पए प्रजुनो वाहालो जगत्मां हशे के जइने मारा नाथने समजावे. एवा पुरुषना हृदय ते केवां कठोर हशे के तेने करुए। कोइ पए रीते श्चावती नथी र ०

सोक्षे वरसे मन निव जीनुं, छे तेह्वोने तेह्वो ॥ सोक्षे सान संजाक्षे सहुको, पण ए किन्न छे केह्वो ॥ ध० ॥ ११ ॥ एहने माटे माहरे ताते, मुजने घणी चय चाकी ॥ पण एकांत तणी वातडीयुं, एके नावी स्त्राकी ॥ ध० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ सोख वरस थया इतां तेनुं मन जरा पण पखह्युं नथी. ते जेवो हे तेवोज है. खोकोमां केहे-वत है के सोखे वरसे सहु कोइने सान श्चावे परंतु श्चातो कोइ जुदी रीतनो कहण है ॥ ११ ॥ एने माटे मारा पिताए मने बहु बहु रीते कष्ट श्चाप्युं. परंतु मारी श्चने तेनीवचें एकांतमां जे वातो थइ हती ते मारा बचावमां कांइ पण काम श्चावी नहीं.॥ १२ ॥

करतां नेह जगत्मां सोहिखो,पण दोहिखं निरवहि ।। जे निसनेही थी बांधवं मनकुं, ते फोगट छःख सहि वं ॥ध०॥१३॥ तुं पंखी वे तेहना घरनो, तिणे मुज ततुं रोमांच्युं ॥ पोतानो जाणी तुज आगल, पियुंनु पोथुं वांच्युं ॥ ध० ॥१४॥ श्रर्थ ॥ जगत्मां स्नेह करवो ते सेहेलो छे परंतु तेने नजाववो ते मुस्केल छे वली स्नेह विनानानी साथे मनने वलगाडवुं ते मिथ्या छःख सहन करवा जेवुं छे ॥ १३ ॥ हे पद्दी तुं एना घरनो होवाथीज मारूं शरीर रोमांच थयुं. तने पोतानो जाणीने तारी श्रागल मारा स्वामिनाथनो वृत्तांत कह्यो ॥ १४ ॥

तुज दी हे मारा जुःख नाहां,तुज दी हे पियु दी हो ॥ तारा राजा सरखो रखे जो,तुं पण थातो धी हो ॥ ध० ॥१५॥ कुर्कट एम पोतानी की तिं, निसुणे सामुं निहासी ॥ पण खेचर माटे ते पाहो, नशके उत्तर वाली ॥ ध० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ तने देखवाश्चीज मारा छुःख नाश पाम्यां. वस्ती तने देखीने हुं एम जाणुं हुं के में मारा स्वा-मिनाश्चने दीठा; परंतु एटखुं कहुं हुं के तुं पण तारा राजानी जेम मने विश्वासघाती श्वतो नही ॥ १५॥ श्चा प्रमाणे कुकडो पोताना गुणानुवाद सांजसतो तेना सन्मुखज जोइ रह्यो हे. परंतु पोते पह्नी होवाश्ची एक पण उत्तर तेणीने सामो श्चापी शकतो नश्ची. ॥ १६॥

दंपती मांहो मांहे मखीयां, फली मनोरय माला॥ चोषी ढाल चोषे उल्लासे, कही मोहने सुविशाला॥ ध०॥ १५॥ अर्थ॥ आ प्रमाणे बंने वर बहु अरस परस मह्यां. तेमनी मनोरय माला फली जूत थरु. कि मोहन विजयजी ए चोथा उल्लासने विषे चोथी ढाल अति विशाल पणे कही।॥ १५॥

॥ दोहा ॥

तव शिवमाला एहवे,श्रावी प्रेमला पास ॥ लेह रमामयो कुकडो, ग्रांट्यो घणो सुवास ॥ १ ॥ मेवा सुक्या श्रागले, किथी जिक्त पंतुर ॥ गाइ वाइ रीजन्यो, पंत्नीने ससनुर ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एवा अवसरमां शिवमाला प्रेमला लहीनी पासे आवी. तेणीए कुकडाने हाथमां लड़ रमाड्यो, अने तेनी आसपास सुगंधी पदार्थोनो इंटकाव कर्यो ॥ १ ॥ वली पहीनी आगल नव नवा मेवा सुकवा पूर्वक प्रशंसवा योग्य तेनी जक्ति करी. पत्नी गायन गाइ वाजिंत्रो वगाडी पहीने आनंद पूर्वक रीफव्यो.१

> नट पुत्री कहे प्रेमला, निसुणो माहरी वात ॥ चार मास लगी राखजो, तुमे ए पंत्री जात ॥ ३ ॥ जेणे दिन श्रमे चालग्रुं, इहांश्री नट समवेत ॥ ते दिन लेइश कुकमो, ए मुज तुज संकेत ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ त्यार बाद शिवमालाए प्रेमला लहीने कहां के मारी जिनंति ए हे के हवे चार मास सुधी श्चाप क्हीने पोतानी पासे राखवो ॥ ३॥ पही जे दिवसे श्चमे सर्वे नटो श्वर्हीश्चाश्री प्रयाण करीए ते दिवसे श्चा कुकमो श्चापनी पासेश्री लङ्जहां. श्चावो करार मारी श्चने तमारी वच्चे हे. ॥ ४॥

तिहां लगी सुपरे राखजो,नयणां त्रागल एह ॥ नित प्रते लेइश शुद्धि हुं, त्रावी एणे गेह ॥ ५ ॥ चिहुं मासे तुम तणी, एह जो पूरे होंश ॥ तो तुम त्रम फगमो नही, कहुं करी एहना सूंस ॥ ६ ॥ श्रर्थ ॥ तथी चार मास सुधी श्राप पोतानी नजर पासेज तेने रूडी रीते राखजो. हुं पण निरंतर श्रा घेरज श्रावी तेनी खबर खेती रहीश ॥ ५ ॥ जो चार मासनी श्रवधिमां तमारो मनोरथ एनाथी परिपूर्ण याय तो एनाज सोगंद खाइने कहुं हुं के पढ़ी श्रमारी श्रने तमारी वचे कांइ वांधो पडवानो नथी. ॥६॥

गइ शिवमाखा एम कही, निज थानक पुर मांहि॥ कुर्कट कर धरी प्रेमखा, करे बांहिनी डांहि॥ उ॥

श्रर्थ ॥ ए प्रमाणे वातचित करी शिवमाखा पोताने स्थानके गइ. श्रेहीं प्रेमखा खड़ी कुकडाने हाथमां खड़ उत्र जाया हाथनी कर्या करे जे. ॥ उ॥

॥ ढाख ५ मी ॥ ॥ जटीयाणीनी ॥ देशी ॥

कुर्कटना मुख सामुं हो नित नित जुए प्रेमसा, से जंगा निश्वास ॥ श्रांसुडा नयणाथी हो वरसावे प्रेम प्रकाशयी,करी करी विरह विखास ॥ कुणारे॥ कामण गारा प्यारा हो हवे न्यारा मुजधी कां रहो, निपट श्राटारा होय॥ सारीसर श्रमुकारा हो जलधारा वरसे श्रंबरे,पियु विण वारे कोय श

श्रर्थ ॥ हवे प्रेमला लागी निरंतर कुकडाना मोढानी सामुं जोइ जोइने छंडा निसासा मुके हे. विशेष प्रेमनो प्रकाश करती तेमज वियोगना छःखने गाती श्रकी श्रांखमांश्री श्रांसुनो वरसाद वरसावे हे. ॥१॥ हे मारा वहाला कामणगारा हवे माराश्री न्यारा शामाटे रहो हो ? तमे खरेखरा हठीला श्रांखहो. काम देवना बाणनी जेवी श्राकाशमांश्री मेघ जलनी धारा वरसी रही हे तेनाश्री श्रतां विरहना छःखने नाश्र विना कोण टाली शके तेम हे. ॥ १॥

उत्तरवासी कासीहो, श्रासरासी जासीने घटा, हृदय विफासी श्राय ॥ चपसा ए जबकारा हो करवासा कमसा पुत्रनी, विरहणीये न सहाय ॥ कु॰ ॥ ३ ॥ जेम जेम जलधर गाजे हो, तेम पियुको साजे कां नही,परिहरी प्रमदा पूर ॥ इण टाणे जो विराजे हो मुजने तो निवाजे साहिबो,इण कृतु नही पंगुर॥कु०॥॥॥

अर्थ ॥ उत्तर दिशामांथी आवती अत्यंत काली एवी मेघनी घटाने देखीने मारू श्रंतःकरए फाटी जाय हे. वली कमला पुत्रनी तलवार जेवी फबकारा मारती विजलीने देखीने आ विरहिएीने न सहन याय एवी व्यथा याय हे ॥ ३ ॥ जेम जेम आ वरसाद गर्जना करे हे तेम तेम पोतानी प्रमदाने तजीने दूर गयेलो एवो मारो स्वामिनाश्र शुं शरमातो नहीं होय ? आ समये जो मारो नाथ आहीं विराजतो होय तो मने अनेक रीते तृष्ठ करी दे. तेथी तेना विना मने आ कृतु सुंदर लागती नथी. ॥ ४ ॥

ए जील्ली यह जिल्ली हो तनु वल्ली चूटे पियु विना, निरखी एकसी गेह ॥ ते माटे पंखीमाहो तजी बीमा पीमा वारी ए, करी क्रीमा नव नेह ॥ कुणाए॥ शिवमाखा जे बाखा हो इहां वचन रसाखां कही गइ, बह्यां में पंखी तेह ॥ आव्या हो हवे हाथे हो मुज साथे न करो आंतरो, माथे वरसे मेह ॥ ६॥

श्चर्य ॥ श्चा तमाराजं तो जाएँ मने घरमां एकछी देखीने श्चर्यात् स्वामि विनानी देखीने जिखडीजंनी जेम मारी शरीररूप वेखने चुंटीज खेंग्ने. ते कारएपथी हे पद्दीराज! शरम ग्रोडीने स्नेह युक्त कीमा करीने मारी व्यथाने दूर करो ॥ ५ ॥ शिवमाखा नटनी कुंवरी जे श्वर्ही श्वजीष्ट वचनो कहीने गई ते सर्वे हे पद्दीराज! में मारा मनमां धारण करी राख्यां हे. तेथी हवे हाश्यमां श्वाच्या हो तो मारी साथे श्वांतरोशुं काम राखो हो? जुर्ज सो खरा मारा माथा जपर जे दुःखनो वरसाद पडे हे ते. ॥ ६॥

एम कुर्कट नित निसुणे हो न जणावे एके आंकडो,एवडो वको गंजीर ॥जावी जपर आणी हो एम जाणी ताणी धीरता, धन्य चंद वकवीर ॥ कुण ॥ उ॥ बिणमे पियु करी जाणे हो बिण मांहे जाणे क्र्कडो, पासे राखे तास ॥ पुष्य तणे संजोगे हो मन जाट्यो आट्यो एहवे, जत्तम आसो मास ॥ कुण ॥ ए॥

श्चर्य ॥ श्चा प्रमाणे निरंतर प्रेमखा खड़ीनां वचनो कुकडो सांजले हे, परंतु एक पण श्चरूर तेना जन-रमां खखी जणावतो नथी, एवो महागंजीर श्वयो हे. पोते जिवतव्यता जपर दृष्टि राखी धीरज राखीने रह्यो हे. धन्य हे शुरवीर चंद राजाने ॥ ९ ॥ ऋणमां तेने पोतानो स्वामिनाथ गणे हे, वली वेहेम श्चावे हे तो ऋणमां कुकडो मानी खे हे तो पण पोतानी पासेज राखे हे. एम करतां पुण्यना संयोगे मनने गम-तो प्वो जत्तम श्चाश्विन मास वेहो. ॥ ए ॥

विमला चल फरसेवाहो अति चपला हुइ प्रेमला, संग सली परिवार ॥ अण चिलो तिहां आव्यो हो परदेशी एक निमित्तिन, कवि कुल शिर शिलगार ॥ कुणाणा प्रणमी पदकज तेहना हो एम प्रेमला लही विनवे, अहो पंडित कहो मुज॥ वीनडीन मुज वाहालो हो इहां किए दिन आवी मसे,राजी करीश हुंतुज॥कुण। १०॥

श्रर्थ ।। एवामां श्री विमलाचल तीर्श्वाधिराजने फरसवाने माटे सखीर्चना परिवार सहवर्तमान प्रेमला लढ़ी उद्यक्त श्रइ. ते समये उचितो, एक परदेशी निमित्तीर्च कविकुलना शृंगार रूप त्यां श्रावी पहोंच्यो ।। ए ।। ते निमित्तीयाना चरण कमलने नमस्कार करी प्रेमला लढ़ी तेने पुढ़वा लागीके हे पंडितजी मार्ग स्वामिनाथ जे मने ढोडीने चाड़्यो गयो ढे ते श्रहींया क्ये दिवसे मने श्रावीने मलशे. ए वातनो खुलास खरेखरो करशो तो हुं श्रापने राजी करीश. ॥ १०॥

जोशीमो मन होंदो हो स्वरधारी जोइने कहे, सुण पुत्री सुविसास ॥ श्राज तथा के कांसे हो तुज श्राजापतिजो मसे, तो कहेजे सावाश ॥ कु०॥ ११ ॥ हुं पण ए तुज कहेवा हो श्रण तेड्यो श्राव्यो हुं इहां नाणीश कोइ संदेह ॥ हुं तुज कारण ज्योतिष हो करणाटे जणवाने गयो, श्राव्यो हुं श्राजेज गेह॥कु०॥ १॥

श्रर्थ ॥ जोशीए होंश पूर्वक स्वर साधीने प्रेमला लहीने कहां हे सुखमां विद्यास करनारी बेहेन! तारो पित जे श्राजानगरीनो राजा हे ते जो श्राजे श्रयवा काले तने श्रावीने मले तो मने साबाशी श्रापजे. ॥ ११ ॥ हुं पए श्रहींश्रा तारो तेडाव्या विनानो तने श्रा हकीकत कहेवाने माटेज श्राव्यों तेथी मारा कहेवामां जरापए शंकाधारए करीश नहीं. तारेज माटे ज्योतिष विद्या जएवा सारू हुं कर्णाटक देश गयो हतो ते जाणीने श्राजेज घेर श्राव्यों हुं. ॥ १२ ॥

में जे निमित्त प्रकारयुं हो तेह खोटुं कहीए नही होये, करमुज व चन प्रमाण ॥ स्वन्नी प्रेमला लानी हो, निसुणीने हरखी चित्तमां, दीधुं दान विहाण ॥ कु० ॥ १३ ॥ नैमित्तिकने विसर्क्ते हो अनुमति लेइ तातनी, पिंजर कीधुं संग ॥ थोडीशी सहीजश्रीहो पुंडरगिरि जपर चढी, प्रेमला परम जमंग ॥ कु० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ में जे जोश जोश्ने तने वचन कह्यां है ते रितमात्र पण श्चमत्य श्रवानां नथी. मारां वचनने प्रमाण करजे. पही प्रेमखाखड़ी स्वेद्धा पूर्वक वर्त्तती ते निमित्तीयानां वचनो सांजिद्धी मनमां बहुज हर्ष-पामी श्चने जोशीने तेणे सारीरीते दक्षणा श्चापी. ॥ १३ ॥ पही निमित्तीयाने विदाय करीने श्चने पोताना पितानी श्चाङ्घाखड़ने पांजरू पोताना हाश्चमां खीधुं; श्चने थोडी सखीर्जनी साथे पुंडरिगरि जपर प्रेमखा खड़ी श्चत्यंत जमंगजर युगादिनाश्चनी सेवा करवामाटे चढी. ॥ १४ ॥

कर उपर खइ धरी इहो पिंजरथी काढी कूकमो, नृप पुत्री म तिमंत ॥ जेम जेम गिरिवर निरखे हो मन हरखे तेम तेम पंखीयो, खेखे दिवस गणंत ॥ कु० ॥ १५ ॥ देहरो शिवपद शेहरो हो निरखी जेमला, जेट्या देव अगादि ॥ सारी श्रष्ट प्रकारी हो जिन पूजा ख हीए करी, वारी सयल विषाद ॥ कु० ॥ १६ ॥

श्रर्थ ॥ पांजरामांथी पद्दीने काढीने बुद्धिशाखी एवी प्रेमसा सन्नीए पोताना हाथ उपर धारण कर्यो. पद्दीराज जेम जेम गिरिराजने निरस्ते हे तेम तेम पोताना मनमां बहुज हर्ष पामेहे श्रने श्राजनोज दिन्यस मारे तो सेस्ते श्रयो एम माने हे. ॥ १५ ॥ मोक्तपदना शिखर समान देरासरने जोतांज प्रेमसा सन्नी श्रतिहर्षवंत श्रक्त तेणीए श्री युगादि देवना दर्शन कर्या. वसी सर्व मनना संताप दूर करीने श्री जिनराजनी श्रष्ट प्रकारी पूजा बहुज जाव पूर्वक करी. ॥ १६ ॥

दीठडुं दरिशण मीठडुं हो पंखीने प्रथम जिणंदनु, सफल कर्यो अवतार॥ पांचमी ढाल प्रकाशीहो ए मोहने चोथा जल्लासनी, पुष्य सदा सुखकार॥कु०॥१७॥

अर्थ ॥ वली पद्मीए पण प्रथम जिनें इतुं अत्यंत भीवुं एवं दर्शन करीने पोतानो अवतार सफल कर्यों. आ प्रमाणे चोथा उद्धासनी पांचमी ढाल कहीं. किन मोहन विजयजी कहे वे के पुष्यज सदा सुखने करनार वे. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

सेवी मरूदेवी सुतनुं, वीरस्तुषा बहुजाव ॥ श्रावी देहरा बाहिरे, कर धरी पंखी राव ॥ १ ॥ प्रति जिन मंदिरमां जइ, जेट्यां बिंब श्रपार ॥ जिक्क युगति निज शक्ति वश, कर्यो सफल श्रवतार ॥ १ ॥ श्चर्य ॥ मरु देवीना पुत्र श्री क्षपत्रजिएंदनी सेवा बहु जावपूर्वक कर्या पत्नी वीरसेन राजा पुत्रनी स्त्री प्रेमखा खत्नी हाथ जपर पद्दीराजने धारण करी देरासरनी बहार श्चावी. ॥ १ ॥ तेणीए दरेक जिन मंदि-रमां जर्द श्चनेक जिनराजनां बिंबोना दर्शन कर्यो. पोतानी शक्ति मुजब विधि पूर्वक जिक्त करी पोतानो श्चवतार सफल कर्यों. ॥ २ ॥

श्रावी जिहां राजादनो, लही तजी खल खंच ॥ पड्युं पत्र लेइ कुकडे, शोजावी निज चंच ॥ ३ ॥ एम सकल विधि साचव्यो, श्रावी जिन गृह द्वार ॥ सूर्यकुंड जोवा जणी, पहोति नारी ते वार ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ पठी प्रेमला लही पोताना मनमां लेशमात्र खलखंच विनानी ऐवी ज्यां रायएनुं जाडहे त्यां श्चावी ते स्थले कुकराए नीचे परेलु पांदडुं पोतानी चांचमां लक्ष्ने पोतानी चांचने शोजावी. ॥ ३ ॥ एम एम सर्व विधि विधान करीने जिनराजना मंदिरना घार पासे श्चावी. पठी सूर्यकुंड जोवानेमाटे तरकाल ते तरफ प्रेमला लही चाली. ॥ ४ ॥

दीठो छंड सोहामणो, कमल कोश सोहंत ॥ जाणुं स्वर्गशिरि जणी, काठी दंत हसंत ॥ ५ ॥ पूरण निर्मल जल जर्युं, उंडत्तणथी उंम ॥ सदा जयों ए जाणीए, समता रसनो छंम ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ तरतज श्चिति मनोहर एवोकुंड दीठो तेमां कमलना दांडार्ज श्चत्यंत शोजा युक्त हता ते जाएं स्वर्गनी लक्षी तरफ दांत काढीने इसता होय एम दिसता हता. ॥ ५ ॥ ते कुंड समुज्त्र्यी पए जंडो एवो संपूर्ण निर्मल जलग्री जरेलो हतो. जाएं साक्षात् समता रसनोज कुंम होयनी एवो देखतो हतो. ॥६॥

तस उपकंठे प्रेमला, रही निहासे नीर ॥ निसुणो जविइहां पंखीर्ड, कहेवो थयो वडवीर ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ तेना कांठा जपर जजेखी प्रेमखा खड़ी ते कुंडनुं निर्मख जख जुर्ज हे. एवामां हे जन्यजीवो ! तमे सांजखो के ते पद्दी राज केवो वडवीर थयो ? ॥ ७ ॥

> हाल ६ छी. ॥ जमरानी देशी ॥

॥ महारारे जाइ कीरका, गुण मानो लाल ॥ कली काची मत तोम, श्रितिगुणमानो लाल ॥ ए देशी ॥

कुर्कट देखी कुंमने मन मान्युं लाल, चिंते चित्त मजार श्रिति मन मान्युं लाल ॥ सोल वरस वही गया, ॥ मण्॥ किहां स्त्री किहां घरबार, ॥ श्रण्ण ॥ १ ॥ किहां लगी रहीश हुं पंखीयो, ॥ मण्॥ धिम् धिम् ए श्रवतार ॥ श्रण्ण माता पण वेरण यह,॥ मण्॥ सही संसार श्रसार ॥ श्रण्ण १॥ श्चर्य ॥ सूर्यकुंडने देखतांज कुकडो बहुज खुशी थयो ते पोताना मनमां विचारवा खाग्यो के श्चावी स्थितिमां मारां सोखवर्ष तो वीती गया. क्यां मारीस्त्री श्चने क्यां मारा घरबार हे ॥ १ ॥ हुं हवे क्यां सुधी पद्मीरूपे रहीश १ मारा श्चा श्चवतारने धिकार होजो विद्यी मारी माता पण जारी संपूर्ण कुस्मन थइ खरेखर हवे मने श्चा संसार बहुज सार विनानो खागे हे ॥ २ ॥

क्षेत्र नट मुजने फर्या, ॥ म०॥ पुर पुर देश विदेश ॥ श्र०॥ हजी-श्रन श्राव्यो कर्मनो, ॥ म०॥ पार किशो लवसेश ॥ श्र०॥ ३॥ फीटी नर थयो कुकनो, ॥ म०॥ श्रवकर जोवण हार ॥ श्र०॥ शी हवे मनुष्यपणा तणी, ॥ म०॥ धरवी होंश लगार॥ श्र०॥ ४॥

श्चर्य ॥ नाटकीयार्छ मने साथे खड़ने देशो देश श्चने शेहेरे शेहेर फर्या, तो पण इजु मारां कर्मनो खेशमात्र पार श्चाच्यो नही. ॥ ३ ॥ हुं मनुष्य फीटीने निरंतर जकरमाने खोखनारी कुकडो थयो. हवे मारे मनुष्य थवानी खगारपण होंश शीरीते धारण करवी. ॥ ४ ॥

प्रमदा कने पंखी थके, ॥ म०॥ निशि वासर केम जाय ॥ थ्र०॥ देखी फोगट फुरबुं, ॥ म०॥ चिंत्युं किमपि न थाय॥ थ्र०॥ ५॥ एतें योवन निर्गम्युं, ॥ म०॥ शो इवे होरो उघाम ॥ थ्र०॥ लाग्यो काने दैवने, ॥ म०॥ कोइक पूरो चाड ॥ अ०॥ ६॥

श्चर्य ॥ वखी मारी पत्नीनी पासे पश्चीरूपे रही दिवस अपने रात्रि हवे केवी रीते जहो. माटे हवेतो फो-कट फुरापो करवानो हे. कारणके धारेखुं कांइ अतुं नथी. ॥ ५ ॥ मारी युवावस्था तो सर्व एखे गइ. हवे आ वातनो पण हयो निवेडो आवहो तेनी खबर पडती नथी. मने खागे हे के मारो कोइ पूरो चाकियो दैवना कानमां मारे माटे जंजेर्या करेहे. ॥ ६ ॥

जीव्युं ए इया कामनुं, ॥ म०॥ खोटीए गर्दत श्राश ॥ श्र०॥ जो फंपा त्रकं कुममां, ॥ म०॥ तो हुटे छुःख पास ॥ श्र०॥ ७॥ के हनी वधू केहनी पुरी, ॥ म०॥ केहश्री माया मोह ॥ श्र०॥ जोतां कोइ कोइनुं नहीं, ॥ म०॥ केहना योग विडोह ॥ श्र०॥ ७॥

श्रर्थ ॥ इवे श्रावीरीते जीववुं ते पए शुं कामनुं हे? इवे मनुष्य श्रवानी श्राशा ते गईन श्राशा समानहे खरीवाततो ए हे के कुंममां फंपापातकरूं तो मारा छःखनुं बंधन बुटे. ॥ ९ ॥ श्रा स्त्री कोनी श्रिश श्रा नगरी कोनी ? वसी कोनी साथे मायाके मोह राखवो ? तेमज कोनो संबंध श्रने कोनो वियोग ? खरूं जोतां कोइनुं खागतुं नथी ॥ ए ॥

जो कोइ न थयो आपणो, ॥ म० ॥ केहना राग विराग ॥ अ० ॥ सहुं वे स्वारथनुं सगु, ॥ म० ॥ अहो जवजस्रि अताग ॥ अ० ॥ ए ॥ आसोची एम कुकडे, ॥ म० ॥ कुंडमां जंपादीध ॥ अ० ॥ देखी नारी विसखी कहे, ॥ म० ॥ जुंमा ए शुं कीध ॥ अ० ॥ १० ॥

चंदराजानो रास.

श्चर्य ॥ ज्यारे कोइपण मारूं श्वयुं नही त्यारे मारे कोनी साथे रागके वैराग धारण करवो. मने तो सर्वे स्वार्थयुक्त सगपण संबंध लागे छे. श्वर्हो ! श्चा संसार समुद्र ताग न पामी शकाय तेवो छे ॥ ए ॥ एवो वि- चार करीने कुकडाए कुंडमां फंपापात कर्यों. ते देखतांज प्रेमला खड़ी फांखी पनी गई अने बोली के हे भूंडा ! श्चा ते तें शुं कर्युं ? ॥ १०॥

हुं शिवमालाने किस्यो, ॥ म० ॥ जहने देहश जवाव ॥ अ० ॥ कर्युं अविचार्युं पंत्नीये, ॥ म० ॥ योडादिनने मेलाप ॥ अ० ॥ ११ ॥ मं दिर जहने निज तातने, ॥ म० ॥ वदन देखाडी केम ॥ अ० ॥ तुज गति ते गति महारी, ॥ म० ॥ प्रेम परीक्षा एम ॥ अ० ॥ १२ ॥

श्चर्य ॥ हवे हुं श्वहींथी जईने शिवमाखाने तारे माटे शुं जवाब दश्श. श्वहो ! श्वा पद्धीये थोड़ा दि-वसनोज मेखाप करी घणुंज श्वविचार्युं कर्युं. ॥ ११ ॥ वद्धी घेर जश्ने मारा पिताने पण शुं जोश्ने हुं मोवुं देखामीश. तेथी हवे जे तारी गति तेज मारी गति समजुं ढुं. श्वावे समयेज प्रेमनी परीक्षा श्वायठे.॥१॥।

न करी वात जंपा जरी, ॥ म० ॥ लडीए पण ताम ॥ श्र० ॥ पकड्यो पडतो कुकनो, ॥ म० ॥ श्रद्ध श्रद्ध मोह विराम ॥ श्र० ॥ १३ ॥ पंखी रूप थावा तणो, ॥ म० ॥ माये बांघ्यो जेइ ॥ श्र० ॥ लव जब करतां नोकथी, ॥ म० ॥ तूट्यो दोरो तेइ ॥ श्र० ॥ १४ ॥

श्रर्थ ॥ प्रेमखा बह्नीए पए तत्काख कांइ पए वार नही खगाडतां तेनी पुंठेज कुंडमां पकतुं मुक्युं श्रने कुकडाने पडतो पकडी खीधो. श्रहो श्रहो ! मोहनो विखास चमत्कारिक हे ॥ १३॥ चंद राजाने पहि बनाववा माटे तेनी विमाताए जे दोरो मोके बांध्यो हतो ते दोरो कुंममां पमतुं मुकतां फपा फपीमां श्रुटी गयो.॥ १४॥

प्रगट्यो छए चिंत्यो तिहां, ॥ म० ॥ चंद निरंद सरूप ॥ छ० ॥ शा-सन सुरिये उद्धर्या, ॥ म० ॥ राणी तेम वली जूप ॥ छ० ॥ १५ ॥ छाण्या कुंमधी वाहिरे, ॥ म० ॥ स्त्रीए उंसल्यो कंत ॥ छ० ॥ सफस जली छाशा फली, ॥ म० ॥ दंपती हरस्र छनंत ॥ छ० ॥ १६ ॥

श्चर्य ।। तेज वखते त्यां कुंडमां उचितो चंद राजा, राजाने स्वरूपे प्रगट थयो. शासन देवीए ते राजा श्वने राणी बंनेने कुंडनी बहार काट्यां ॥ १५॥ जेवा कुंडथी बहारखी श्वाव्यां के तरतज प्रेमसा स्वट्टीए पोताना पितने उससी काट्यो. ते दंपतीनी सर्वे श्वाशा फसी भूत थइ. श्वने जेनुं वर्णन न करी शकाय तेवो हर्ष त्यां प्रगट थयो. ॥ १६॥

मनुजपणुं चंदे बह्युं, ॥ म०॥ पसरी मंगस माल॥ २०॥ वर्षी चोथा जल्लासनी,॥ म०॥ पत्रणी मोहने ढाल॥ २०॥ १०॥

अर्थ ॥ चंद राजाए मनुष्य पणुं प्राप्त कर्युं. जेथी अत्यंत सुखनी श्रेणि प्रगट श्रइ चोत्रा उद्वासने विषे मोहन विजयजी ए बठी ढाल कही. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

तीर्थ निवासी देव गण, हुंता समिकत दृष्टि ॥ तेणे चंदनी जपरे, करी कुसुमनी वृष्टि ॥ १ ॥ वृजी चंदननी जटा, हरख्या सुर तिरियंच ॥ तिहुष्यण कल्लोक्षे चट्यो, तीर्थ प्रजाव जदंत ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ तीर्थना निवास करनारा सर्वे देवतार्छ समिकतदृष्टि हता. तेमणे चंद राजानी छपर पुष्पनी वृष्टि करी ॥ १ ॥ चंदराजानी छपर बावना चंदनना रसनो देवतार्छए छंटकाव कर्यो जेनी सुगंधीश्री सर्व देवतार्छ तथा तिर्थचो जे हाजर हता ते हर्ष पाम्या त्रण जुवनने विषे तीर्थाधिराजनो महिमा श्र- तिशय वृद्धि पाम्यो ॥ २ ॥

धन धन सुरज कुंड जल, कलिमल मल हरणार ॥ दीघो चंद जणी करी, मानवनो श्रवतार ॥ ३ ॥ प्रीतमने कहे प्रेमला,करी घुंघट पट लाज ॥ महाराज गिरि राजधी, सिध्यां सघला काज ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चा पंचम काल-कित्युग मध्येना पापी जीवोना मेलने नाश करनार एवा सूर्य कुंडना जलने श्चितिशय धन्य वाद घटे हे के जेना प्रजावश्ची चंद राजाने फरीने मनुष्यनो अवतार प्राप्त श्रयो ॥ ३ ॥ त्यार पही प्रेमला लही घुंघटमां रही मर्यादा पूर्वक चंद राजाने कहेता हवां के हे महाराज श्चापणा सर्व मनोरश्चो गिरिराजना पसायश्ची सिद्ध श्रया ॥ ॥ ॥

स्नान करी ए कुंडमां, पूजो क्रषज जिएंद ॥ सिंचो जिक्त रसे करी, समिकत तरूनो कंद ॥ ए ॥ स्नान करीने चंद नृप,पेहेरी जज्ज्वस धोत ॥ श्राव्यो श्रादि जिनासये, जिहां रतन जयोत ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ श्रा सूर्थ कुंडमां प्रथम स्नान करी, देवाधिदेव श्री क्रपन्न परमात्मानी श्राप पूजा करो श्रने ते प्रमाणे परमात्मानी जिक्त करवा रूप रसनुं सिंचन, सम्यग् दर्शन रूप वृक्तना मूखमां करो ॥ ए ॥ त्यार पठी चंद राजा सूर्थ कुंडना जख्यी स्नान करी निर्मेख श्वेत वस्त्रो धारण करी ज्यां रत्नोनी कांति प्रकाश करी रही है एवां श्री श्रादिनाथना मंदिरमां श्राच्यो. ॥ ६ ॥

दंपतीये पूजा रची, ड्रव्य तणी बहु जेद ॥ प्रारंजे हवे जावनी, पूजा विरमी खेद ॥ ७ ॥

अश्र ।। श्रनंतर बंने स्त्री जत्तीरे श्री जिनराजनी श्रनेक प्रकारथी इव्य पूजा करी. तदनंतर परिश्र-मने शांत करी जाव पूजानो नीचे मुजब प्रारंज करता हवा. ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

॥ वण जारारे ॥ ए देशी ॥

जीनरायारे जय तिहुं ऋण प्रतिपाल, शांति सुधामय चंदलो ॥ जीन-रायारे जिन जन स्थाशा विश्राम, तुं सुरतरु प्रगट्यो जलो ॥ जी० ॥१॥

॥ जी० ॥ तुज पद पंकज सीन, सकस पुरंदर मधुकरा ॥ जी० ॥ ॥ जी० ॥ तुज गुण श्रनंता श्रनंत, श्राणा जगत् सचराचरा ॥ जी० ॥ १॥

श्चर्य ॥ हे जिनराज ! तुं त्रण जुवननो पायनार हो, श्चमृतमय शांतिने प्रसरावनार चंद्रमा हो, वढ़ी हे जिनराज ! जन्य जनोनी श्चाशार्डने फर्विज्ञृत करावनार कहप वृक्ष समान तुंज साक्षात् प्रगट श्रयो हो ॥१॥ हे जिनराज ! सर्वे इंद्रो तमारां चरण कमत्वने विषे ज्ञमरनी जेम लीन श्रया हे वढ़ी हे नाथ ! श्चापना श्चनंतथी पण श्चनंत गुणो हे. वढ़ी श्चापनी श्चाक्षाने स्थावर श्चने जंगम बंने स्वरूप वाढ़ें जगत् श्चाएंड रीते श्चंगीकार करे हे. ॥ १॥

॥ जी० ॥ तुज श्रजिधान कुलीश, जेदे कर्म महीधरा॥ जी०॥ ॥ जी०॥ तुं श्रनुजन रस सिंधु, देन श्रवर हिल्लर सरा ॥ जी०॥ ३॥ ॥ जी०॥ तुं केवल जग चक्क, खजुश्रा धाता हिर हरा ॥ जी०॥ ॥ जी०॥ तुज गुण न लख्या जाय, जो मिशी कीजे सागरा॥ जी०॥ ४॥

अर्थ ॥ हे जिनराज ! आपनां नाम रूप वज्र कर्म रूपी पृथ्वीने विदारण करी नांखे हे. वली हे प्रजु ! तुं आत्माना अनुजव रसनो महासागर हो अने हिर हरादि अन्य देवो हिहरां खाबोचीयां जेवा है॥३॥ हे जिनराज! तारूं केवल ज्ञान ते त्रण जगत्ना चक्कु रूप सूर्यथी पण अधिक हे. जेनी पासे ब्रह्मा, विष्णु अने शंकर ते आगीया कीडा समान हे. वली हे नाथ ! जो समुद्धना पाणीने शाही रूप करीए तो पण तेटली रूशनाइथी पण तमारा गुण लखीशकाय नहीं अर्थात् आपना गुण पार न पामी शकाय तेटला हे. ॥ ४॥

॥ जी० ॥ तुं पंचानन रूप, वासी शिव गिरि कंदरा ॥ जी० ॥ ॥ जी० ॥ रहे तारे दरबार, यह श्रच्युतायज किंकरा ॥ जी०॥४॥ ॥ जी० ॥ तुं प्रञ्ज गंध गजेंड, श्रन्य सुरासुर सिंधुरा ॥ जी० ॥ (पाठांतर) श्रन्यते जुंडने सुकरा ॥ जी० ॥

॥ जी० ॥ श्रादि गरूड तुज जाण, त्रासे कर्मना विषधरा ॥ जी० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ हे जिनराज ! मोक् रूप पर्वतनी गुफाने विषे तुं केशरी सिंह समान हो. वसी तारी हजुरमां श्चन्युत दे व लोकना इंज्ञ्रादि लड़ने सर्वे इंज्रो किंकर रूपे हे ॥ ५ ॥ हे जिनराज ! तुं गंध हित समान परमेश्वर हो श्चने बीजा देव दानवो मात्र हित समान हे (पाठांतरे) बीजार्ज भूंड श्चने स्त्रार समान हे. वली हे प्रजु ! तुं रूप गरूडनी पासे कर्मरूप सर्पो त्रास पामी श्चावी शकता नश्ची. ॥ ६ ॥

॥ जी० ॥ तुजने प्रणमे स्वामी, न नमे छुजे कंधरा ॥ जी० ॥ ॥ जी० ॥ तजी तुज सुरतरू ठांहि,सेवे कोण कोइ जंखरा ॥जी० ॥ऽ॥जी०॥ उपशमे जब दव ताप,तुज श्राराधन जखधरा ॥जी०॥ ॥ जी० ॥ तुं रोहणाचल श्रृंग, सर्व सहा तुं वसुंधरा ॥ जी० ॥७॥ व्यर्थ ॥ हे जिनराज ! तमारा चरणमां जे नमस्कार करे ठे ते बीजानी पासे पोतानी डोक नमाववाने इज्ञताज नथी. वा हे प्राप्त ! तुं रूप कहप वृद्धनी ग्रांयाने तजीने एवो कोण मूर्ख ने के जे कांखरानी ग्रांयाने सेवे ॥ ए ॥ हे जिनराज ! तारी सेवना रूप वरसादथी आ संसार रूप दावानक्षनो ताप शांत आय ने हे नाथ ! तुं रोहणगिरिना शिखर समान ने अर्थात् सर्व गुण रूप रत्नोनी खाण ने वा सर्व जपसर्ग परिसद्द सहन करवाने पृथ्वी समान ने ॥ ए ॥

॥ जी० ॥ तुं श्रष्टापद एक (पाठांतरे) तुं जग श्रेष्टा एक, ताहरी शक्ति श्रपरंपरा ॥ जी० ॥ जवोजव ताहरी जिक्त, मुजे देजो जिनेसरा ॥ जी० ॥ ए॥ जी० ॥ इत्यादिक स्तुति कीध, चंदे मन श्रुद्धे तिहां ॥ जी० ॥

॥ जी० ॥ फरी फरी चिंते निरंद, किहां गिरिवर वली हुं किहां ॥ जी०॥१०॥ अर्थ ॥ हे जिनराज ! कर्मरूप सिंहने पण नाश करवाने अष्टापद समान हो. (पाठांतर) तुं जगत्ने विषे एकज सर्वथी श्रेष्ठ हो. तारी शक्ति पार न पामी शकाय तेवी हे. हे नाथ ! मारी मात्र एकज विनंति हे के तारी जिक्त मने जवो जवने विषे होजो ॥ ए ॥ ए प्रमाणे शुद्ध मनथी चंदराजाए प्रजुनी स्तुति करी. वली चंद राजा वारंवार मनमां विचार्या करे हे के क्यां हुं पामर अने क्यां आ गिरिराज. ॥१०॥

॥ जी० ॥ स्थाव्यो देहरा बहार, चारण रूपि तिहां वांदिया ॥ जी० ॥

॥ जीव् ॥ निसुणी बिलत उपदेश,राजा राणी श्राणंदिया ॥ जीव्यारशा

॥ जी० ॥ शैल प्रदक्तिणा दीध, शिव वरवा फेरा फियों ॥ जी० ॥

॥ जी० ॥ जूपे क्षेखे कीघ, जे मानवपणुं ऋणुसर्यो ॥ जी० ॥ ११ ॥

श्रर्थ ॥ पढ़ी दंपती देरासरनी बहार आन्यां एटखे चारण मुनिराजनां दर्शन थतां तेमने बंनेए वांद्या ते चारण मुनिनो मनोहर उपदेश सांजली राजा श्रने राणी हर्ष पाम्यां ॥११ ॥ श्रनंतर गिरिराजनी प्रदिक्षण दीधी ते जाणे शिव बहुने वरवा फेरा फरता होयनी एवी रीते राजाए मनुष्य जवफरी प्राप्त करी पोतानो श्रवतार सफल कर्यो. ॥ ११ ॥

॥ जी० ॥ दीधी दासीए दोकि, मकरध्वजने वधामणी ॥ जी० ॥

॥ जीव ॥ विहंग मटी थया चंद, कुंम प्रजावे ख्राफणी ॥ जीव ॥ १३॥

॥ जी० ॥ विमल पुरीनो इश, हरख्यो श्रसंत्रव संत्रवी ॥ जी०॥

॥ जीव ॥ दासी पामी दान, जाणीए यह कमखा नवी ॥ जीव ॥ १४॥

श्रश्रे॥ एवा श्रवसरमां दासीए दोडीने मकरध्वज राजाने वधामणी श्रापीके सूर्य कुंडना प्रजावशी पोतानीज मेखे पद्दी ते पद्दीपणुं मटाडी चंदराजा श्रया है ॥ १३ ॥ विमखापुरीनो महाराजा श्रा श्रसंज-वित वातने संजवित जाणीने घणुंज हर्ष पाम्यो तेणे दासीने बहुज दान श्राप्युं जेशी दासी ते साहात् खक्की समान श्रह गृह. ॥ १४॥

॥ जी० ॥ विस्तरी पुरमां वात, रंज्या नरनारी सहु ॥ जी० ॥

॥ जीवा। घर घर वेहेचे लोक, धाइ वधाइ बहु बहु ॥ जीव ॥१५॥

॥ जी० ॥ चंद जणी नरनारी, जोवाने उत्सुक थया ॥ जी० ॥

॥ जी० ॥ प्रगट्या नव नव रंग, जब प्रजुजीनी थइ दयां ॥ जी० ॥१६॥

श्चर्य ॥ कुकडो ते चंदराजा श्वयो श्चा वात नगरमां फेलातांज सर्व स्त्री पुरुषोनां मन बहुज खुशी श्वयां. घेरेघेर लोको दोडी दोडीने वधामणी श्चापतां साकर प्रमुख वेहेंचतां हतां ॥१५॥ नगरना लोको चंद-राजाने जोवाने बहुज जत्सुक श्रया. श्चनेक रीते श्चानंदोत्सव प्रजुनी कृपानो वरसाद वरसतां श्रव् रह्यो

॥ जीव ॥ मोहने चोथे उल्लास, ढाख कही ए सातमी ॥ जीव ॥

॥ जीव ॥ श्रागख चंदनी वात, निसुणो जविक सुधासमी ॥ जीव ॥ १९ ॥

श्चर्य ॥ किव मोहनविजयजीए चोथा जहासने विषे सातमी ढाल कही. वसी श्चागल जपर श्चमृत समान चंदनी कथा हे ते हे जन्य जीवो! सांजलो. ॥ १९ ॥

॥ दोहा॥

मकरध्वज महीयख पति, तेमहीज प्रेमला मात ॥ निसुणी हरख्यां चित्तमां, प्रगट्यो जे जामात ॥ १ ॥ तेमाव्या मंत्री सकल, कह्युं सकल विरतंत ॥ सहु कदंब कुसुम परे, थया सहर्ष ध्यनंत ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ सोरठनो पित मकरध्वज राजा तथा तेनी पटराणी प्रेमखानी माता पोतानो जमाइ प्रगट थत चित्तमां श्रत्यंत हर्ष पाम्यां ॥ १ ॥ सर्वे मंत्रीचेने बोखावी सर्वे वृत्तांत कह्योः ते सांजदी कदंब वृद्धनां पुष्पनी जेम सर्वे प्रफुक्षित थयां श्रर्थात् बहुज हर्ष पाम्यां ॥ २ ॥

शिव नटवरने नरवरे, तेंडाव्यो श्रित हेत ॥ विहंग मीटी थयो चद नृप, पूरव पुष्य संकेत ॥३॥ थयो हर्ष मुज प्रमुखने, ते सवि तुज उपगार ॥ तुंज हूती सघक्षेश्यमे, बहेणुं होशे निरधार ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ तदनंतर राजाए शिव कुमर नटने बहुज हेतथी तेमावी, पूर्व पुष्यना पसायथी पद्दी मीटीने राजा चंद थया ए सर्व वृत्तांत कह्यो ॥ ३ ॥ हुं विगेरेने जे हर्ष थयो ते सर्वे तमारोज उपगार हे. तमारी परत्वे श्रमारे सर्वेने निश्चयथी खेणुं हे. ॥ ४ ॥

तेडाव्या आव्या तरत, चंद तणा सामंत ॥ उन्नत स्वामिनी सुणी, रोम कुप उल्लसंत ॥ ५ ॥ शणगारी विमलापुरी, पट कुले बहु रंग ॥ फुली जाड्यका तणी, संध्या जाणे अजंग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ चंद राजाना सामंतोने बोखाववाथी तेर्ड पण तरत पोताना स्वामिनो अन्युदय सांजाती तेर्ड-नी रोमराजी विकस्वर यतां आब्या ॥ ५ ॥ विमखापुरी नगरीने अनेक रंगी वस्त्रोनां तोरण प्रमुखयी शाणगारी. जेथी जादरवा मासनी संध्याना रंगनी जेवो सुशोजित देखाव यह रह्यो. ॥ ६ ॥

मकरध्वज गिरिवर चढ्यो, खइ बहु परिवार ॥ श्रानंदे नृप चंदश्री, मख्या सहु परिवार ॥ ॥

अर्थ ॥ मकरध्वज राजा पोताना मोटा परिवारने साँचे खइ गिरिराज छपर चढ्यो. त्यांजइ आनंद पूर्वक सर्वे परिवार चंद राजानी साथे जेटतो हवो. ॥ ७ ॥

॥ ढाख ए मी ॥ ॥ खंजाती सोहखनी ॥ ए देशी॥

मकरध्वज महीपाल, चंद संगाथे हो श्रीजिन जेटीयाजी ॥ कीधी जिक्त श्रदोष, जब जब केरांहो पातिक पातिक नीठीयाजीं ॥ १ ॥ प्रेमला प्रणमी पाय, मात पिताने हो विनये विनवेजी ॥ जे में पराखों कंत, ते तुम पुण्ये हो एह पामी हवेजी ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ मकरध्वज राजा, चंद राजानी साथे श्री जिनराजने जेटता हवा. तदनंतर परमात्मानी सर्व प्रकारनी जिक्त करी तेर्डए श्रनेक जवोनां पापनो नाश कर्यो ॥ १ ॥ प्रेमखा खड़ी पोतानां मातिपताने प्राणाम करी विनयपूर्वक कहेवा खागीके श्रापना पुष्यना पसायथी मारा स्वामिनाथने में मेखन्या. ॥ २ ॥

ए आजा अवनीश, वीर नृपतिनो हो अंगज गुण निलोजी॥ रिव कुंड जलने प्रजाव, कुर्कट मिटीने हो अयो अवनीतिलोजी॥३॥ जोवोए तुम जामात, नयणा निहाली हो सुपरे उल्लोजी॥ सरिखा सरिखो संसार, पण नहीं कोइ हो एहना सारिखोजी॥४॥

श्रम्री ॥ तेर्च श्रान्ता नगरीना राजा है श्रमे वीरसेन राजाना गुणवंत पुत्र है. सूर्य कुंडना जलना प्रना-वश्री कुकडा मटीने पृथ्वीना तिलक समान पुरुष श्रया है ॥ श्रा श्रापना जमाइराजने नेत्रोश्री नि-हालीने जुर्च श्रमे जत्तम रीते तेनी जलखाण करोः संसारमां सरखे सरखा श्रमेक हे परंतु एमना सरखो तो कोइ पण जगत्मां नथी. ॥ ४ ॥

प्रज्ञए मुज जगमांहि, शशिनी कलाथी हो कीधी उजलीजी ॥ ए सेट्ये गिरिराज, माहारी एहनी हो खाश सिव फलीजी ॥ ५ ॥ पुत्री वचन ख्रवधार, विस्मय पामो हो सोरठनो धणीजी ॥ नयण सलुणे सेहेज, जरी जरी जोवे हो ख्राजापति जणीजी ॥ ६॥

अर्थ ॥ आ जगत्मां परमात्माना पसायथी चंद्रमानी कलाथी पए मने तो जन्वलता प्राप्त थइ. वली गिरिराजनी सेवाथी तो मारी सर्वे आशार्ड फलीग्रत थइ ॥ ए ॥ पुत्रीनां वचन मनमां ध्यानमां लेतां मकरध्वज राजा घणोज आश्चर्य पाम्यो. वली पोताना प्रेम जरेलां नेत्रोथी वारंवार आजापित चंद राजने निरखवा लाग्यो. ॥ ६ ॥

हरखेशुं मोतीए वधावि, ससरो जमाइ हो श्राबिंगी मखाजी ॥ बेहुना श्रातम प्रदेश, जाणीए सघखाउँ मांहोमांहि मखाजी ॥ ॥ ॥ चंद तणा सामंत, खबी खबी खाग्या हो चरणे बहु दिसेजी ॥ कहे श्रम परीका कीध, सही तुमे स्वामि हो एम पंखी मिसेजी ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ चंद राजाने हर्षथी मोतीए वधावीने, सासरो श्चने जमाइ श्चरस परस श्चाखिंगन देवा पूर्वक जेट्या, ते वखते बंनेना सर्व श्चात्म प्रदेशो जाणे एक बीजानी साथे एकत्र थइ गया होय तेम जास्युं ॥९॥ ते पत्नी चंद राजाना सामंतो श्रात्यंत प्रेम पूर्वक पोताना राजाना चरणमां नमवा खाग्या अने कहां के हे नाथ ! तमे पत्नी रूपे थड़ श्रमारी खरे खरी परीका करी. ॥ ए ॥

नट कुल प्रणमी पाय, चंद निरंदनी हो कीरित उच्चरीजी ॥ वर्त्या प रमानंद, दश दिशे वातो हो खिणेकमे विस्तरी जी ॥ ए ॥ वाजते मं गल तूर, गिरिवरहुंती हो बेहुं नृप उतर्या जी ॥ प्रथमदो कहपना इंद्र, निज परिवारे हो जाणीए परवर्या जी ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ नटनो समुदायपण चंदराजाने प्रणाम करी तेनी कीर्त्ति फेखावता हवा. श्रा बनावश्री परम श्रानंद वरती रह्यो श्रने दशे दिशामां श्रा सर्व वात क्षणवारमां फेखाई गइ. ॥ ए ॥ मंगख वाजित्रो वा-गतां श्रकां गिरिराज जपरश्री बंने राजार्ज नीचे जतर्था. ते जाणे पेहेखा वे देवखोकनां इंडो पोत पोताना परिवारे परवरेखा जतर्था होयनी एम लागतुं हतुं. ॥ १०॥

जावे कमता शैल, प्रञ्ज गुण स्तवता हो आव्या तलहटी जी ॥ गज आरूट्यो चंद, हय गय रथनी हो हुइ आर्जेटीजी ॥११॥ हयवर चट्यो विमलेश, रथ आरूटी हो लही प्रेमला जी ॥ नर नारीना बृंद, आ गल हुवा हो याता स्नेहला जी ॥ ११ ॥

श्रर्थ ॥ श्रितिशुत्र श्रध्यवसाये पर्वतथी जतरतां, प्रञ्जना गुणनी स्तवना करता तलेटीए आव्याः चंद-राजा हस्तिजपर आरूढ थयाः ते वखते हाथी, घोडा श्रने रथनी बहुज जीड हती. ॥ ११ ॥ एक सुंदर घोडाजपर मकरध्वज राजा आरूढ थयोः प्रेमला लही रथमां बेठीः ते वखते स्त्री पुरुषोनां टोले टोलां बहुज स्नेह जरेलां श्रंतःकरण्यी श्रागल पाउल जोतां चालतां हतां ॥ १२ ॥

गुहिरा घुरे रे निसाण, एकत्व हुआ ही हरखें ननो मही जी॥ प वने पताका अनंत, स्वेद कणवारे हो जन नारही रही जी॥ १३॥ वाजे ताख कंसाख, पग पग आवे हो रंगवधामणा जी॥ गुडी युं चढी आकाश, जाणीए नाचे हो दृंद अपञ्चर तणाजी॥ १४॥

श्चर्य ॥ डंका निशान गंजीर नादयी वागता होवायी आकाशयी ते पृथ्वी सुधी हर्ष उवाइ रह्यो, श्चर्यात् आकाश पृथ्वी एक रूप थयां. वली ध्वजाउं अनेक होवाथी अने पवनथी फडफडाट करती जन समुदायना परशेवाना टीपाने सुकवती हती. ॥ १३ ॥ मृदंग अने कडतालादि वागते वरघोनो चाहयो. पगले पगले वधामणीउं हर्षजर आवती हती. नटीयो आकाशमां उंचे नाचती हती ते जाणे अप्सराना वृंद नाचता होय तेवी लागती हती. ॥ १४ ॥

नेरी जंगल जणकार, तेणे दिक्कन्या हो लहे बिघरत्वता जी ॥ गिरि कंदरा सर्वत्र, श्रगणित पामीहो ग्रुचि मुखरत्वता जी ॥ १५ ॥ बेहुं शिर सोहे ठत्र, चामर जोमी हो दीपे छजली जी ॥ इणे उन्नवे पुरमांहि, कीधो पेसारो हो हरखे गल गली जी ॥ १६ ॥ श्रर्थ ॥ जेरी श्रने सुंगखना श्रवाजथी जाए दिशि कुमारिकार्च बेहेरी यह गइ श्रने पर्वतनी गुफार्च सर्वे, वाजिंत्रोना नादथी पवित्र यह गइ एम खाग्युं, ॥ १५ ॥ बनेना शिर छपर छत्र शोजतुं हतुं श्रने छ- ज्ञ्वल चांमरो बंने वाजुए बनेने वींकातां हतां. श्रावी रीतना छेह्नव सहित बने जणार्डए हर्षथी गल गला थतां नगरमां प्रवेश कर्यो ॥ १६ ॥

मकरध्वज नृपचंद, निजगृह श्राव्या हो मनहे गह गही जी ॥ श्रातमी ढाल रसाल, चोथे उल्लासे हो मोहन विजये कही जी ॥ १९॥ श्रर्थ ॥ मकरध्वजराजा श्रने चंदराजा मनमां हर्षथी गह गहता पोताना मेहेले श्राव्या. एवी रीते चोथा उल्लासमां रसाल श्रातमी ढाल मोहनविजयजीए कही ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

अर्थी सिव संतोषिया, देइ दान अनंत ॥ अर्थिणीए निव डेल रुया, निज घर आव्या कंत ॥१॥ संतोष्यो शिवकुमरने, देइ धण कण कोम ॥ खिणमांहि एहवो कर्यों, नृप कोइ नकरे होड ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ दानना क्षेनारार्जने श्चनेक रीतना दान श्चापी एवातो सर्वेने तृप्त कर्याके तेमनी स्त्रीर्ज ज्यारे पोताना नाथ घेर श्चाव्या त्यारे जंक्षसी शकी नहीं ॥ १ ॥ वली शिवकुंवर नटने तो कोडोगमे धन धान्य एक क्षणवारमां श्चापी एवो बनाव्योके कोइ राजापण तेनी साथे रीष्ट्रिमां होड करीशके नहीं ॥श।

चंदे निज सामंतने, श्रिधिक वधारा दीध ॥ सेवकता मांहे थका, मित्र समाणा कीध ॥ ३ ॥ जेहने जे देवुं घटे, दीधुं ते हने तेम ॥ दाता नर देतां थकां, पाबुं जोवे केम ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ पठी चंदराजाए पोताना सामंतोने विशेष रीते श्राप्युं ते एटखे सुधीके सेवकनी स्थितिमांश्री केरवीने मित्र समान बनावी दीधा ॥ ३ ॥ जेर्जने जे जे प्रमाणे श्रापत्रुं उचित हतुं तेर्जने ते ते प्रमाणे दान श्राप्युं. शुं दातार पुरुष दान देवाने तैयार श्रया पठी श्रापतां पाढुं वाखी जुऐंगे? ॥ ४ ॥

पहोत्यां संहु निज निज एहे, करता नवल टकोल ॥ चंद सुजश प्रगट्यो जगत, शशि ज्युं कलाथी सोल॥५॥कंचुकी पहेरे प्रेमला,

पण जुजयुगन समाय॥ हियनामां हि वध्यो हरख, चिहुं दिशि पसर्यो जाय॥६॥ श्रर्थ ॥ श्रनेक प्रकारना नवा नवा श्रानंदना कक्षोखश्री ज्ञावता सर्वे पोतपोताने घेरगयाः चंदरा- जानो यश जगत्मां, चंद्र सोख कलाश्री जेम, तेम प्रगट श्रयो ॥ ५॥ श्रहींश्रा प्रेमला लज्ञीए कांचली पेहेरवामांडी परंतु हर्षश्री ते एटली फुली गइ के बने जुजार्डमा कांचली श्रावीशकी नहीं. वली पो-ताना श्रंतःकरणमांनो हर्ष एटलो तो वधीगयो के ते बहार निकली चारे दिशामां फेलाइ गयो ॥ ६॥

जल गत शफरी जेम करी, श्रांसुथी द्रगतात ॥ कहे सुताने हृदयमां, रही हुतीजे वात ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जलमां रेहेनारी मांग्रली जिंजाइ होय तेवी मकरध्वज राजानी आंखो आंसुयी जिंजातां, पो-ताना हृदयमां जे वात हती ते प्रेमला लज्जीने कहेवाने पोते तैयार थयो ॥ ७ ॥

॥ ढाख ए मी ॥ ॥ गोकुख गामने गोंदरे ॥ ए देशी ॥

प्रेमला लाजी जाणी कहे रे, एम मकरध्वज वसुधार ॥ गुणवंती रे ॥ महारा श्रवगुण तुं सुतारे, कोइ नाणीश हृदय मोजार ॥ गुणाप्रेणार॥ सोलवरस तुज उपरे रे, में तो न धर्यों मोह लिगार ॥ गुण॥ निपट श्र जाएयुं में कर्युं रे, ए तो न लहाो में उंनो विचार ॥ गुण॥ प्रेण॥ १ ॥

श्चर्य ॥ मकरध्वजराजाए कहुं के हे बेटा ! प्रेमला लड़ी तुं गुणवंतीजो तेथी मारा जे जे दोषो तारी परत्वे थयाजे ते तारा हृदयमां कदापि संजारती नहीं ॥ १ ॥ सोलवर्ष सुधी तारी छपर में जरापण स्नोह धर्यों नहीं तेथी मने हवे छंडो विचार करतां एम लागेजे के ते खरेखरी में जूल करी. ॥ २ ॥

कही तुजने विषकन्यका रे, नित कुष्टी वचने एम ॥ गु०॥ न करत कह्युं जो मंत्रीतणुं रे, तो बुटत पातिक केम ॥ गु०॥ प्रे०॥ ३॥ तें मुजने घणुं ए कह्युं रे, बेजी चंद नृपति जरतार ॥ गु०॥ तो पण हुं मानतो नहीं रे, श्रहो छुर्जन वचन विकार ॥ गु०॥ प्रे०॥ ४॥

श्चर्य ॥ में तने ए कोढीश्चाना कहेवाथी निरंतर विषकन्या कही. परंतु जे मंत्रीए कहां ते में न मान्युं होत तो ते मारां छष्ट कृत्यनां पापथी हुं केवीरीते छटत. ॥ ३ ॥ तें तो मने घणीवार कहां हतुं के चंदराजाने ते मारो स्वामिने; परंतु छर्जनोनां वचनोनो विकार मारा मनमां एटलो तो थयो हतो के ते तारीवात हुं मानतोज नहोतो. ॥ ४ ॥

तुजने परणी जे गयो रे, इवे डंबरूयो रूडे एह ॥ गु० ॥ ए नर किहां किहां कोढीयो रे, पड्यो अंतर जबधर त्रेह ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ ५ ॥ रे वहे तुज जाम्यनो रे, किणे पाम्यो न जाये पार ॥ गु० ॥ वीडमीया जे मेलो थयो रे, करीगणे सफल अवतार ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तारी साथे जे खर्न करीने जतो रहेखो तेने हवे हुं रूडी रीते उंखखी शक्यों हुं. क्यां ए पुरुष अने क्यां आ कोढी इं. बंनेमां फरकतो वरसाद अने काकल जेटलो है. ॥ ए ॥ हे पुत्री! तारां जाग्यनो कोइ पार पामी शके तेम नथी. लांबा वखतथी वियोगी अयेलानो जे फरी मेलाप अयो तेथी तारो अवतार सफल अयो है. ॥ ६ ॥

तुं हवे कोइ तणुं कह्युं रे, मननाणीश कहुं तुं एह ॥ गु० ॥ हुं ययो काचो जे काननो रे, कर्युं निपट अजाएयुं तेह ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ ७ ॥ कहे पुत्री एम सांजली रे, इहां तातजी नहीं तुम दोष ॥ गु० ॥ कीधां कर्मन बुटीए रे, कुण आणे कुण्यी रोष ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ हुं तने कहुं हुं के हवे तुं कोइनां वचनो मनमां खावीश नही. हुं ज्यारे काचा काननो श्रयो त्यारेज में खरे खरी जूलकरी. ॥ ७ ॥ ते सांजली प्रेमलालहीए कहुं के हे पिताजी एमां तमारो कांइ-

पण दोष नथी. जे कर्म कर्यो होय तेनाथी कोइ रीते जोगन्याविना बुटातुं नथी. एवं जे जाणनार होय ते बीजानी उपर केम रोष करे. ॥ ए॥

ए पियु तुम पुण्ये मह्यो रे, हुं तो ग्रणविहुणी कोण मात्र ॥ ग्र०॥ तात कुतात होवे नही रे, सुत होवे पात्र कुपात्र ॥ ग्र०॥ प्रे०॥ ए॥ जेणे फुर्जन जोलव्या रे, होजो तेहनुं पण कह्याण ॥ ग्र०॥ ते विण कह्यों केम माहरी रे, जगमांहे होवती जाण ॥ ग्र०॥ प्रे०॥ १०॥

श्चर्य ॥ श्चापनांज पुष्यना पसायथी ए मारा स्वामि मह्या हुं तो गुणविनानी कांइपण हिसाबमां नथी. मावतर कुमावतर थतांज नथी. जो के पुत्र पुत्रीतो पात्र कुपात्र थाय है. ॥ ए ॥ जे छर्जनोए तमने जोखव्या तेनुं पण कह्याण थजो कारणके जो तेम न थयुं होततो मारीपण जगत्मां आवी कीर्ति केम फेलात? ॥ १०॥

पण रखे हवे कहे। कोइने रे, मुज हुंती न धरशो कुजाव ॥ गु० ॥ पर खजो मुज पतिने वली रे, हजी इण कांठे हे नाव ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ ११॥ मकरध्वज कहे वहे रे, ए जाखे घणुं शुं विशेष ॥ गु० ॥ ए नृप चंद पति ताहरो रे, नथी एहमांहि मीनने मेष ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ परंतु रखे हवे कोइना केहेवाथी मारा छपर श्चराव करशो नही. मारा पितनीपण परीका क-रजो. कारणके हजु श्चा कांठे नावडे त्यां सुधी सारूं डे. ॥ ११ ॥ मकरध्वज राजाए कहां के हे पुत्री ! हवे वधारे शुं कहे डे? श्चा चंदराजा तारो पितज डे तेमां जरापण मीन के मेप नथी. ॥ १२ ॥

विमलाथी आजालगी रे, विचमां हे जे जे देश ॥ गु० ॥ आज थकी में तेहनो रे, सही थाण्यो चंदनरेश ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ १३ ॥ तुं जले कुलमां जपनी रे, थयो माहरो जे एह जामात ॥ गु० ॥ कविमुखे अथवा शा स्त्रमां रे, घणी रहशे जुग जुग वात ॥ गु० ॥ प्रे० ॥ १४ ॥

श्रर्थ ॥ विमलापुरीथीते श्राजापुरी सुधीमां जे जे देशके ते सर्व देशनो श्राजथी चंदराजा धणीके एम में श्रंगीकार कर्युं के ॥१३॥ तुं श्रमारा कुलमां जत्पन्न थई ते घणुंज जत्तम थयुं के तारे लीधे मारो ए जमाइ थयो. कविना मुखमां श्रथवा शास्त्रमां श्रावात जुगे जुग विद्यमान रहेशे ॥ १४॥

दीधो उतारो चंदने रे, नृषे सुंदर मंदिर मांहि ॥ ग्र० ॥ जोजन यु गति जल्ली करी रें, बहु वरसे मनने उठाहि ॥ ग्र० ॥ प्रे० ॥ १५ ॥ पति प्रमदा मन रंगथी रे, बहु विलसे नवल संयोग ॥ ग्र० ॥ दोगं इक सुरनी परे रे, नर जवना माणे जोग ॥ ग्र० ॥ प्रे० ॥ १६ ॥

श्रश्री॥ पत्नी चंदराजाने मकरध्वज राजाए सुंदर मेहेखमां निवास करन्योः श्रमे घणे वरसे मनना छ-त्साह पूर्वक श्रमेक प्रकारनी जुगतिश्री नवनवी रसवती वालां जोजन तैयार करान्यां. ॥ १५ ॥ बंने स्त्री जर्तार नवो संयोग श्रया पत्नी मनमां श्रत्यंत हर्ष पूर्वक सुखिवलास जोगवेते, ते जाणे दोगंछक देवनी जेम मनुष्य जवमां संसारना जोग जोगवेते ॥ १६ ॥ चंद समो निव को थयो रे, एहवो जूतस मांहि जूपास ॥ गुणा नवमी ए चोथा जुलासनी रे, कही मोहन विजये ढास ॥ गुणा प्रेण ॥ १९॥ श्रूर्थ ॥ चंदराजा सरखो आ पृथ्वीना तसमां बीजो कोइपण राजा थयो नथी. ए प्रमाणे चोथा ज्ञान सनी नवमीढास कवि मोहनविजयजीए कही. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

एक दिन चंद निरंदथी, करे गुह्य विमखेश ॥ कहोजी किए कीघो हतो, एम तुम कुक्कड वेश ॥ १ ॥ केम तुमे इहां श्राव्या हता, ययो केम इहां विवाह ॥ सांजलवा संबंध ए, वे मुज मन जल्लाह ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ एक दिवस चंद राजानी साथे मकरध्वज राजा गुद्ध वातो करवा बेठा. विमलापुरीना स्वामिए कह्युं के हे जमाइराज ! श्चापने कुकमानो वेष कोणे प्राप्त कराव्यो ॥१॥ तमे विमलापुरी केवी रीते श्चाव्या हता. वली श्चहींश्चा तमारो विवाह केम श्रयो ए सर्व वृत्तांत जाणवानो मारा मनमां बहुज उत्साह हे.१

चंद कहे निसुणो नृपति, मुज विमात छरवार ॥ वधु संग क्षेत्र श्रंबरे, . खबकार्यो सहकार ॥ ३ ॥ कपटे हुं कोटर रह्यो, क्रमतो तरू श्रा-काश ॥ चार घडी मांहि इहां, श्राव्यां श्रमे श्रनयास ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ चंदराजाए कहां के हे राजन् मारी जेरमान मा छःखे वारवा योग्य हे. ते पोतानी वहुने साथे खड़ आंबाना वृक्त जपर बेटी अने आम्न वृक्तने आकाशमां जडाड्युं ॥ ३ ॥ हुं ते वखते आम्न वृक्तना कोटर (बखोख)मां संताइ रह्यो. अनुक्रमे ते वृक्त आकाशमां जडतुं, चार घडी मात्रमां तेनाथी अनायासे अमे अहीं आव्या. ॥ ४ ॥

तुम पुत्री सिंहस सुतन, तणो सगन दिन तेह ॥ मुजने हिंसके जोसन्यो, जाने परणी एइ ॥ ५ ॥ शमस्याये समजी खरी, तुम पुत्री तिण वार ॥ श्रमे त्रिहुं तरूवर चढी, पहोता श्राजा सार ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ते दिवसे तमारी पुत्रीनी साथे सिंदखरायना पुत्रना लग्न थवाना इता. ते समये हिंसक मंत्रीए मने जोखन्यों, जेथी तमारी पुत्रीनी साथे में जाकुती परणेतर कर्यु ॥ ५ ॥ तमारी पुत्री श्चने मारा मेला-पना प्रसंगमां में जे जे शमस्यान करी इती ते सर्वे ते समजी इती. पढ़ी श्चमे तो त्रणे जणां वृक्ष जपर चढी श्चाजापुरीए पहोंच्या. ॥ ६ ॥

कपट प्रगट थये जननिये, मुजने कयों विहंग ॥ गिरि फरसे नर पद खखुं, थयो श्रम तुम सुप्रसंग ॥ ७॥

श्रर्थ ॥ मारूं कपट प्रगट थतांज मारी विमाताए मने पद्दी बनावी दीधो. ते श्रा गिरिराज फरसनथी हुं मनुष्य थयो श्रने श्रापनो तथा मारो रुडो प्रसंग थयो ॥ ७ ॥

॥ ढाल २० मी ॥

॥ जीणा मारूजीनी कर इखडी ॥ ए देशी ॥

निसुणी वचन तृप चंदनां, मकरध्वज मन मांहि निज श्रवगुणे विख-खाणो होराज ॥ श्रहो श्रहो कुष्टीने कहे, निपुण हतो पण हुं इहां तो निपट ठगाणो हो राज ॥ १ ॥ पातिक किहां ए ढूटतो, काचे इण सश्रश्यारे हणतो जो ए कन्या हो राज ॥ हो जो सचिव तणुं जहुं, एहने पण उगारी राखी कीरति धन्या हो राज ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ चंद राजानी हकीकत सांज्ञितीने मकरध्वज राजा पोताना मनमां बहुज फंखवाणो पनयो श्रने विचार करी कोढीश्राने कहेवा लाग्योके श्ररे रे ! हुं बहुज चतुर हतो परंतु ताराश्री हुं श्रत्यंत ठगायो ॥ १ ॥ जो एवा निर्माहय पुरावाश्री में ए कन्याने मारी नखावी होत तो ए महा पापश्री केवी रीते ब्रटी शकत? परंतु ए प्रधाननुं सारूं श्रजो के तेणे युक्तिश्री पुत्रीनुं संरक्षण कराव्युं श्रने मारी कीर्तिने निष्कलंक रखावी. ॥ २ ॥

कुष्टी जुष्टी वे केहवो, कीधीए विष कन्या हुउँ छाप निराक्षो होराज ॥
पुत्री वचन निव मानतो, ययो ए कपट उघामो छाज जराक्षो हो राज ॥ ३॥
पातिक बानुं निव रहे, छाफणीए जेम छावे ढढतुं ढाक्षे पाणी हो राज ॥
छाज ए कुष्टी प्रमुखनी,छंतर गतिनी वातो चंद नृपतिषी जाणी हो राज ॥ ४॥

श्चर्य ॥ वली ए छ्ष्ट कोढी उपण एवो कपटी के मारी पुत्रीने विष कन्या उरावी पोते श्चलग श्रइ जत्तो. हुं ते वलते तो पुत्रीनुं कह्यं मानतो न हतो परंतु सघलुं कपट संपूर्ण रीते श्चजवालामां श्चाब्युं. पाप फूटयुं ॥ ३ ॥ पाप प्रगट श्रया विना रहेतुंज नश्ची. जेम पाणी पोतानी मेलेज ढालमां ढली पडे बे तेम पाप पोतानी मेलेज प्रगट श्वइ जाय बे. ए कोढी श्चा विगेरेनी श्चंतर्गत कपटनी वातोनी माहितगारी श्चाजेज चंद राजा पासेशी मने श्वइं॥ ४ ॥

तागी मननी श्रांतमी, चंद हवे चित्त विसयो, चातक जेम जलधारा हो राज ॥ तेड्या कारागारथी, प्रेमला लही ताते पांचे तेह ठगारा हो राज ॥५॥ कोपी भुकुटी वांकी करी,जूपे सिंहल नृपने त्रटकीने बोलाव्यो हो राज ॥ रे पापी तें मुज थकी, वेर वसाव्युं मसली पेटतें शूल उपाव्युं हो राज॥६॥

श्रश्री। मारा मनमां हवे लेश मात्र ज्ञांति रही नथी. जेम चातक पश्चीना मनमां वरसाद तेम मारा मनमां चंद राजा वसी रह्या हे. श्रा प्रमाणे निश्चय श्रया पत्नी मकरध्वजराजाए बंदीखानामांश्री ते पांचे हिंदा ते तेडाच्या ॥ ए॥ तेर्ज श्राच्या एटले मकरध्वज राजाए श्रात्यंत कोध युक्त श्रव्ह मुकुटी चडावी सिंहल राजा परत्वे त्रटकीने कह्यं. हे छुष्ट पापी तें मारी साथे जे वेर बांध्युं हे ते पेट चोलीने शुल छत्पन्न करवा जेवुं कर्युं हे. ॥ ६ ॥

कहे रे मुज पुत्री तणो, फोकट कपट करीने केम तें अरथ बिगाड्यों हो राज ॥ एहराी कुमति तुज उपनी, मुजने ते छहवीने सूतो सिंह जगाड्यो हो राज ॥ ७ ॥ अयुगत तुज मुख निरखवुं, मुज तनुजा पीडाए तुजने होवे तमासो हो राज ॥ धिग् तुज माय जे तुज जा्यो, सिह तो इण छरमतिथी जीवीश तीन पंचासा हो राज ॥ ० ॥

श्चर्य ॥ हे पापी ! तें विना कारणे कपट करीने मारी पुत्रीना हितने शामाटे नुकसान कर्युं. तने एवी माठी बुद्धि केम जत्पन्न थड़ ? मने जे तें छःख पमाडयुं ते सूता सिंहने बेमीने जगाडवानुं काम कर्युं बे॥ ॥ तारूं मुख जोवुं ते पण श्चयुक्त बे. कारणके मारी दीकरीने पीमा श्वाय तेमां तारा मनने तमासा जेवुं खागे. धिकार बे तारी माताने के तने जन्म श्चाप्यों. श्वावी माठी बुद्धिश्ची मने खात्री बे के तारूं वेहेखुं मोत श्चावशे. मात्र दोढसो वर्ष जीवीश. (श्वाटखुं श्वायुष्य ते काखमां बहुज श्वहप समजवुं)॥ ए॥

वधक पुरुषने तेडीया,वध करवा ते पांचे जूपे तेहने आप्या हो राज ॥ बोख्यो चंद नृपति तेहवे, समय ते केम करी चूके जे करी मोटा थाप्या हो राज॥ए॥ अहो राजन् एह उपरे,आपणे शरणे जे आव्या कहो ते केम हणाये होराज॥ शुंडुं जो करीए जुंडा थकी, जुंकानो रूकानो किण विध नेद जणाये होराज॥ १०॥

श्चर्य ।। राजाए तत्काल वध करनारा चंडालोने बोलाज्या श्चने ते पांचेनो वध करवाने तेर्चने सोंप्या ए समये तरतज चंद राजाए कहां. किव कहे हे के जेने कुदरते मोटा बनाज्या हे ते पोतानी महत्वता बताववानो समय श्चावे केम तेनो लाज लीधा विना रही शके? ॥ ए ॥ चंद राजाए कहां हे राजन श्चाप विचारशोके जेर्च श्चापणे शरणे श्चाव्या तेर्चने केवी रीते हणी शकाय? जो छंकानी साथे श्चापणे शरणे श्चावेलानुं तेना जेवा थइ तेनुं छुंडुं करीए तो सारा नहारानो जेद केवी रीते जाणी शकाशे? ॥ १० ॥

ए उपगारी छापणा, एहनी तो बिहारी तुम छम जे हित जोड्यो हो राज ॥ छवगुण उपर गुण करे, तेहने किण ही प्रस्तावे कोणे निव कुवलोड्यो हो राज ॥ ११ ॥ जो एहने उगारशो, तो जगमां तुम केरो वधशे सुयश घणेरो हो राज ॥ जाणशे तो घणुं ए चयुं, एहवुं हवे निव करशे देशे जो मनमां फेरो हो राज ॥ ११ ॥

श्रिश्री। श्रापणे तो हवे एवोज विचार करवो के तेर्छतो श्रापणा खरेखरा छपकारी, एटछुंज नहीं पण तेर्छने धन्यवाद घटे हे के तेर्छने खीधे श्रापणो श्रारसपरस संबंध जोडायो. वली नीति शास्त्रमां पण श्रवगुण छपर गुण करनार पुरुषने कोइ पण रीते कोइ पण मनुष्ये कवखोडयो नथी ॥ ११ ॥ जो श्राप ए खोकोने बचावशो तो जगत्मां श्रापनो बहुज यश गवाशे ए खोको पण पोताना मनमां विचार करशे तो तेर्छने माथे थवामां बाकी रही नथी जेथी हवे पही श्रादुं काम कदापि करशे नही.॥ १२ ॥

तुम पुत्री करमे नकी, शुं करे एह बिचारा मुख तो एहनुं जोवो हो राज ॥ कोढी पण सुत पहनो, ते माटे एह जपर स्वामी सुप्रसन्न होवो हो राज ॥ १३ ॥ कहां न खोपाणुं चंदतुं, जाणीए हाथ मेखावा मांहे नृपे एइ दीधा हो राज ॥ चंद कीरति जग विस्तरी, सिंहख स्रादि पांचे तिहां निरबंधन कीधा हो राज ॥ १४ ॥

श्रर्थ ॥ खरेखरूं विचारीए तो तमारी पुत्रीनांज माठां कर्मना छदयथी श्रा सघलुं बन्युं हे. ए बिचारा शुं करी शके तेम हे? ए रांकातोनुं मोढुं तो जुछं केवा निर्माहय जेवा दीसे हे? वसी तेनो दीकरो पण कोढीछं हे, माटे तेछेना छपर दया लावी हे राजन श्राप तेछेना छपर सारी रीते प्रसन्न श्राणं ॥ १३ ॥ चंदराजानां वचनो कोइ पण रीते लोपी शकायां नही श्रने जाणे हस्त मेलाप वखते राजाए तेछेने सोंपी दीधा होय श्रश्मीत् चंदराजाने श्र्यणं कर्या होय तेवी रीते तेछेने मुक्त कर्या. श्रा बिनाथी चंदराजानी कीर्त्ति जगत्मां बहुज फेलाइ. सिंहल राजा प्रमुख पांचेने केदथी मुक्त कर्या. ॥ १४ ॥

पियुंनुं देखाडवा पारखुं, स्थावी प्रेमखा लही चंद तणो पद धोयो हो राज ॥ ठांट्यो कनकध्वज जाणी, तति खण जोता मांहि तेहना कुष्टने खोयो हो राज ॥ १५ ॥ देवे चंदनी उपरे, वृष्टि करी कुसुमनी जय जय शब्द उचारी हो राज ॥ कनकध्वज प्रणमी कहे, धन्य धन्य वीर नृपतिना सुत जग उपगारी हो राज ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ पोताना स्वामिनी महत्वतानी परीक्षा बताववा सारूं प्रेमदा छहीए तरतज आवीने चंद राजा ना चरणनुं प्रकासन कर्युं अने ते प्रकासन करेखा जसनो कोगलो कनकथ्वज कोढिआ उपर अंत्यों के जेना प्रजावधी जोत जोतामां तेनो कोढ नाश पाम्यो ॥१५॥ ते वखते देवताए जय जय शब्दनो उचार करी चंद राजानी उपर पुष्पनी वृष्टि करी. कनकथ्वज कुमारे पण प्रणाम करी कह्यं के हे वीरसिंह राजाना पुत्र, जगत्ना उपकारी तमने धन्य ने धन्य ने. ॥ १६॥

दास यया सिव चंदना, पियुथी प्रेमखा खड़ी नित नित रहे रसखीनी हो राज॥ दसमी चोथा जल्लासनी, मोहन विजये जांखी ढाख ए निपट नगीनी हो राज॥१९॥ अर्थ॥ ते सर्वे जणा चंद राजाना सेवक थया. प्रेमखा बड़ी पोताना पितनी साथे निरंतर सुख विदास जोगववा खागी. ए प्रमाणे चोथा जल्लास मध्ये दसमी ढाख मोहनविजयजी महाराजे बहुज सुंदर कही १९

॥ दोहा ॥

सन्मानी सिंहस नृपति, चंदे दीधी शीख ॥ सिंहसपुर पहोता सुखे, देतां चंद आशीष ॥१॥ एहवे समये चंद नृप, निशामध्य सुपवित्त ॥ चिंतवतां श्रोवी चढी, गुणावसी निज चित्त ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ सिंहल राजाने सन्मान पुर्वक चंद राजाए विदाय कर्या, श्चने ते सर्वे चंद राजाने त्याशीरवाद श्चापीने सिंहलपुरे सुखेश्री पहोंच्या ॥ १ ॥ इवे ते समये एक पवित्र रात्रिने विषे चंद राजाने विचार करतां तेना हृदयमां गुणावली चढी श्चावी ॥ २ ॥ हुं तो इहां विमलापुरी,सुखे रहुं निरबीह ॥ पण कुणविध जाता हरो, गुणावलीना दीह ॥ ३ ॥ वीवमतां कुर्कटपणे, कोल कर्योमें तास ॥ जो हुं मानव पद लहीश, (तो) मलीश प्रथम उल्लास ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ हुं तो श्चर्ही श्चा विमदापुरीमां निर्ज्ञयपणे श्चत्यंत सुखमां रहुं हुं. परंतु गुणावखीना दिवसो श्चाजापुरीमां केवी रीते जाता हशे १॥ ३॥ हुं कुकडापणे ज्यारे तेणीनाथी हुटो पडयो हतो त्यारे में तेणीने वचन श्चाप्युं हतुं के ज्यारे हुं मनुष्यपणुं प्राप्त करीश त्यारे तनेज प्रश्नम श्चानंद सहित मखवा श्चावीश.॥ ॥॥॥

एतो हुं जुखी गयो, प्रेमखा खही प्रसंग ॥ इवे जो तेहने जह महुं, तो जीवितनो रंग ॥ ५ ॥ चाहे तेहने चाहिये, ज्यां खगी घटमें प्राण ॥ सयण जणी संजारवो, एह नेह नीसाण ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ए जे में वचन श्चाप्युं हतुं ते तो प्रेमला लहीनी साथे सुल विलासमां रेहेवाथी हुं जुली गयो, परंतु हवे पण जो हुं तेने जड़ने मलुं तोज मारा जीवतरने रंग हे ॥ ए ॥ जे श्चापणी चाहना राखे तेनी श्चापणे ज्यां सुधी श्चापणा शरीरमां प्राण होय त्यां सुधी चाहना राखवी जोइए. वली सज्जनने संजारवा तेज प्रेमनी निशानी हे. ॥ ६ ॥

प्रात थयो जग्यो तपन, सख्यों नरिंदे सेख ॥ गुणावसीनी जपरे, खाजा प्रेष्यो प्रेष्य ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ प्रातः काख थयो अने सूर्योदय थयो एटखे चंदराजाए गुणावली छपर कागख खरूयो अने कासदने आपी आजापुरी तेने विदाय कर्यो. ॥ ७ ॥

॥ ढाख ११ मी॥

॥ थारी सुरतनी विलिहारी हो धणरा होला॥ ए देशी॥ प्रेष्यने कहे नृप चंद हो गुणना लायक, कागल देजो हो हाथ गुणा-विली जी॥ तुं तो न करीश कोइने जाण हो॥ गु०॥ वीरमतीनी हो प्रकृति वे आकुली जी॥ १॥ जइ पुव जे कुशल कल्याण हो॥ गु०॥ दे जे दिलासो हो मीवे बोलनेजी॥ कहे जे रहे जो निश्चित हो॥ गु०॥ आपण मलशुं हो वाजते होलनेजी॥ १॥

अर्थ ॥ दे खेपीआ ! आ कागल तमें गुणावली राणीने हाथों हाथ आपजो तमे समजु हो तेथी एटखुंज कहुं हुं के आ वात कोइने जणावशों नहीं. जो वीरमतीना जाणवामां आ दकीकत आवशे तो तेनो स्वजाव बहु आकलों हे ॥ १ ॥ गुणावलीने तेना क्षेम कुशल पुरुजो अने मीठां वचनोधी दिखासों आपजों वली तेणीने कहें हुं के हवे तमें निश्चितपणे रहेजो. आपणे मंके धाव देतां एकठा अइशुं ॥ १ ॥

करशुं आजापुरी राज्य हो ॥ ग्र० ॥ छुर्जन रहेशे हो नयणां चोखताजी ॥ सुरज छुंमने प्रजाव हो ॥ ग्र०॥ नर पद पामी हो करुं छुं कल्लोखताजी ॥ ३ ॥ धरजो तुमें चित्त प्रीति हो ॥ ग्र० ॥ सासु शीखे हो रखे विसारताजी ॥ श्रमे तो खिण खिण मामें हो ॥ ग्र० ॥ तमने रहीए नित संजारताजी ॥॥॥

श्रर्थ ।। श्रापणे श्रानापुरीमां राज्य करशुं ते खात्रीश्री मानजो श्रने ते वखते दुर्जन द्वोको जोइने श्रांखो चोखतां बेसी रहेशे सूर्य कुंडना प्रजावश्री हुं मनुष्य पणुं पाम्यो हुं श्रने कह्वोखमां मारा दिवस श्रने रात व्यतीत श्राय है ॥ ३ ॥ तमे श्रमारी उपर श्रांतः करण्यी प्रीति राखजो. वीरमतीनी शिखामण मानी रखे श्रमने जुदीजता नही. श्रमे तो कृणे कृणे निरंतर तमने याद कर्या करीए हीए. ॥ ४ ॥

निरसो फूल गुलाब हो ॥ गु०॥ जनम जूमिनो हो वहालो लागे कांटमोजी ॥ तुम श्रम मलवा मांहि हो ॥ गु० ॥ श्रागे न रह्यो हो विचमां श्रांटमोजी ॥५॥ श्रमने ठे परम श्रानंद हो ॥ गु० ॥ तुमने हो जो हो प्रीतलकी घणीजी ॥ पण तुम मीठां वयण हो ॥ गु० ॥ होंश रहे ठे हो सांजलवातणीजी ॥ ६॥

श्रर्थ ॥ पोतानी जन्म सूमिनुं कांटानुं फाड जेवुं वहाबुं खागे हे तेवुं परग्रमिनुं गुलाबनुं फूल खागतुं नश्री. श्रर्थात् तमे बाह्यावस्थामांथी स्तेही हता तोपए कांटा जेवा श्रयेखा हतां तमारा छपर जेवो राग हे तेवो राग प्रेमला खही गुलाबनां पृष्प जेवी हतां तेना छपर नश्री तेथी निरस खागे हे. हवे तमारा श्रवे श्रमारा मेलापमां जिव्यमां कोइ पए प्रकारनी श्रांटी श्राववानो संजव नश्री॥ ५॥ श्रमने श्रहीं श्रा परम श्रानंद हे श्रने तमारी श्रमारी छपर घणीज प्रीति होय एम चाहीए हीए. वली तमारा बोख बहुज मीहा हे ते सांजलवाने श्रमने बहुज होंश रहा। करे हे.॥ ६॥

सेखे गणशुं ते दीह हो ॥ गु० ॥ जिए दिन होशे हो तुम मेखावकोजी ॥ मनमां जे जे वात हो ॥ गु० ॥ न बने खखतां हो कागल सांककोजी ॥ ७ ॥ कही एम सकल उदंत हो ॥ गु० ॥ प्रेष्य पठायो हो श्राजापुर जणीजी ॥ ते पण कमतो पंथ हो ॥ गु० ॥ जूमि उंखंगी हो जोतामांहि घणीजी ॥ ०॥

श्चर्य ॥ जे दिवसे तमारो श्चने श्चमारो मेलाप श्वरो तेज दिवसने श्चमे धन्य मानिशुं वली श्चमारा मनमां जे जे वातो तमने कंहेवानी हो ते श्चा नानकडा कागलमां ते केवी रीते लखी शकाय ? ॥ ९ ॥ एम सर्व प्रकारनो कहेवा योग्य वृत्तांत कहीने खेपीश्चाने श्चान्तापुरी तरफ रवाने कर्यों खेपीश्चाए पण रस्तो कापवा मांडयो श्चने जोताजोतामां बहु भूमिते खंदांची गयो। ॥ ७ ॥

मासे केते गयो प्रेष्य हो ॥ ग्र० ॥ स्त्राव्यो स्त्राज्ञाहो नगरने स्त्रासनेजी ॥ शोचे चित्त पुर देखी हो ॥ ग्र० ॥ सहोदर सिहतो हो एह कैखासनोजी ॥ । स्त्राव्यो नगरी मोजार हो ॥ ग्र० ॥ ठानो मखीयो हो मंत्रीने जङ्जी ॥ वांच्यो नृपनो खेख हो ॥ ग्र० ॥ धीरज मनमां हो घणीज घणी सङ्जी ॥ १०॥

श्चर्य ॥ केटलाएक महीने ते खेपील श्चाजापुरीए पहोंच्यों. नगरने देखतांज तेना मनमां विचार थवा लाग्यों के शुं श्चा नगर ते कैलासपुरीनो सहोदर (जाइ) हे? खरेखर तेमज जासे हे ॥ ए॥ ते नगरीमां पहोंच्यो एटले तत्काल गुप्त रीते मंत्रीने जड़ने महयो. मंत्रीने राजानो कागल श्चाप्यों जे वांचतांज मंत्रीन ना मनमां श्चरयंत हर्ष थयो श्चने धीरज श्चाबी.॥ १०॥

श्राणो गुणावली पास हो ॥ गु० ॥ कागल श्राप्यो हो हाथ नरेशनोजी ॥ खोळो थइने सहेज हो ॥ गु० ॥ वांचतां हरखी हो नाम प्राणेशनोजी ॥११॥ श्राणंद श्रंग न माय हो ॥ गु० ॥ नयणे जमगी हो प्रेम जलद घटाजी ॥ जाणे वधाव्यो क्षेत्र हो ॥ गु० ॥ श्रांसु मिसथी हो मुक्ता फल उटाजी ॥११॥

श्रर्थ ॥ ते खेपीश्राने मंत्रीए गुणावसीनी पासे श्राष्यो. तेणे गुणावसीना हाश्रमां चंद राजानो कागल श्राप्यो. गुणावसीए जतावसथी पत्र फोडीने वाचतां पोताना प्राणनाथनुं नाम वांची ते बहुज हर्ष पामी ॥ ११ ॥ गुणावसीना श्रंगो श्रंगमां श्रानंद समातो नश्री. तेणीनी चक्षुर्जमांशी प्रेमनी जसधारा बुटी जाणे श्रांसु रूपी मुक्ता फसो (मोती) श्री पत्रने वधावती होय एम जास्युं. ॥ १२ ॥

जाखो पियु नर रूप हो ॥ गु० ॥ तेह हरखनी हो कुण कहीने शकेजी ॥ चिंते गुणावखी एम हो ॥ गु० ॥ थइ हुं अगंजी हो हवे प्रीतम थकेजी ॥१३॥ विनवे सवि कासीद हो ॥ गु० ॥ चंदे मुखथी हो वात जे कही हतीजी ॥ कहे राणी सुण तास हो ॥ गु० ॥ वात किहां इहां रखे करतो उतीजी ॥१४॥

श्चर्य ॥ पोताना पितने पुरुष रूपे श्वयेद्धो जाणीने तेणीने जे हर्ष श्वयो तेनुं वर्णन करवाने कोण समर्थ है? गुणावद्धी मनमां एम विचारवा द्धागीके हवे मारा स्वामिना पसायश्री हुं कोइनाथी गांजी जालं तेम नश्ची ॥ १३ ॥ चंदराजाए जे जे हकीकत गुणावद्धीने कहेवाने कही हती ते सघद्धी खेपीश्चाए गुणावद्धीने कही. पृणावद्धीए खेपीश्चाने कह्यं के श्चा वात तुं श्वर्हीश्चा कोइनी पण पासे प्रगट करतो नहीं।। १४ ॥

सनमान्यो तेह प्रेष्य हो ॥ गु० ॥ पाठो पठाव्यो हो क्षेत्र लखी करीजी ॥ पण नृप चंदनी वात हो ॥ गु० ॥ नगरी मांहे हो घर घर परवरीजी ॥ १५ ॥ कहे जण जण मुख एम हो ॥ गु० ॥ विहंग मटीने हो नर थयो नरवरुजी ॥ पुरनुं पूरण जाग्य हो ॥ गु० ॥ वहेलो आवे हो इहां अलवे सरूजी ॥ १६ ॥

श्चर्य ।। ते खेपीश्चानो बहुज श्चादर सत्कार कर्यो. गुणावलीए तेने पत्र लखी श्चापी विदाय कर्यो. परंतु चंदराजानी वात नगरमां घेर घेर चरचाइ रही ॥ १५॥ दरेक मनुष्य कहेवा लाग्या के श्चापणो राजा जे पही श्रयो हतो ते मटी जइने पुरूष श्रयो हे एम संजलाय हो. हवे जो श्चापणा नगरनुं संपूर्ण जाग्य होय तो श्चापणा कृपावंत राजा श्वहीं वेहेलासर श्चावे. ॥ १६॥

धन धन चंद निरंद हो॥ गु०॥ वासना पसरी हो सुयश सुवासनीजी॥ एह श्रमीश्रारमी ढाल हो॥ गु०॥ मोहने जाली हो चोथा उल्लासनीजी ॥१९॥ श्चर्य ॥ चंद महाराजाने धन्य धन्य हे. एवी जत्तम यशवाखी ह्वा दशे दिशामां पसरी रही. मोहन विजयजी महाराजे चोथा जक्षासनी आ अमीआरमी ढाख कही ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

वीरमतीए एहवी, सण सण खहीते वात ॥ जे हे चंद विम-खापुरी,खह्यो मानव आकार ॥१॥ रोष चढी चित्त चिंतवे, कोण एहवो संसार ॥ जे में कीधो कुकडो, दे तस नर अवतार ॥१॥

श्रर्थ ।। ते समये चालती वात वीरमतीना जाणवामां एवी रीते श्रावीके विमलापुरीमां चंदने मनुष्य पणुं प्राप्त थयुं एम संज्ञलाय हे ॥ १ ॥ वीरमतीने गुस्सो चढ्यो श्रने ते पोताना मनमां विचारवा लागीके एवो ते श्रा संसारमां कोण हे के जेने में कुकड़ो बनाव्यो तेने ते मनुष्यनो श्रवतार श्रापे. ॥ १ ॥

मन पण इहां श्राच्या तणुं,राखे वे वली तेह ॥ त्रूखी हुंज खरी प्रथम, कुशब्यो राख्यो एह ॥ ३ ॥ पावो पुरुष थया पवी, धरे होंश बहु मंद ॥ पापम खाइ पदमशी, हुई दीसे चंद ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ वर्खी ते श्राहीं श्रा श्राववाने होंश धरावे हे एम संज्ञाय है. हुंज प्रथम ज्ञृतीके में एने कु-शक्ष (जीवतो) राख्यो ॥ १ ॥ ते मंद बुद्धिवाक्षो चंद फरी पुरुष थया पही श्रानेक प्रकारनी श्रजिखाषा राखे हे ते जाले "पापम खाइने पदमशी" थयो होय तेनी जेम करवानी धारणा राखे है. ॥ ४ ॥

> मुज सामो थावा करे, जुर्ज जग जलटो न्याय ॥ मोटीना लघु मीनकी,कान करनवा जाय ॥५॥ साहामी विमलपुरी जइ, मोरु

एइनुं मान ॥ न दछं इहां खगी श्राववा, तो मुज खरां वखाए ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जगत्मां श्चवखो न्याय थवा बेठो ठे ते तो जुर्ज-ए चंद मारी सामो थवा मांगे ठे. एतो एना जेवुं समजवुं के-नानी बिखाकी मोटी विखाडीना कान करडवाने दोडती होय ॥ ए ॥ श्वर्हीं यी विमखा- पुरीए तेनी सामीज जङ्, एना श्वजिमानने नरम पातुं श्वने श्वर्हीं सुधी तेने श्वाववा न दुछं तोज मारूं पराक्रम खरे खरूं समजवुं ॥ ६ ॥

श्राज पत्नी निव राखवो, रिपुने यह श्रवुज ॥ एक कला ए पण श्रधिक, शिखवी चंद मुझा ॥ ९ ॥

श्चर्य ॥ इवे पत्नी एवी मंद. बुद्धि नज राखवीके शत्रुने कवजामां श्चान्या पत्नी जीवतो राखवी श्चा एक कखा चंदे मने वधारे शिखवी. ॥ ७ ॥

॥ ढाख १२ मी॥

॥ केशर वरणो हो काढ कसुंबो मारा खाख ॥ ए देशी ॥ पत्रणे सासु हो वहुने तेकी मारा खाख, निरख तुं चंदे हो करी मुज ठेडी ॥ मा० ॥ विमखापुरीए हो मनुष्य थयो ठे ॥ मा० ॥ अमर्ष एहने हो हजी न गयो ठे ॥ मा० ॥ १ ॥ आववा आजा हो उमंग धरे ठे, ॥ मा०॥ निपट ख्रजाएयुं हो मृढ करे हे ॥ मा०॥ नर थया माटे हो थयो ह्युं माटी ॥ मा०॥ नही जाये खाटी हो राख्ये खांटी॥ मा०॥ १॥

श्चर्य ॥ वीरमतीए गुणावलीने बोलावीने कहुं के वहु! तमें ध्यानमां राखजो. चंदे फरी मने इंग्रेडी हे ते विमलापुरीमां हे. मनुष्य थयो हे श्वने हजु तेना मनमांथी श्वजिमान गयुं नथी ॥ १ ॥ ते वली श्वाजापुरीए श्वाववानी होंश धरावे हे. ए धारणा ए मूर्ख माण्स बहुज जूल जरेली राखे हे. ए पुरुष थयो तथी शुं ते एम धारे हे के ए शुरवीर मरद थयो, परंतु मारी साथे विरोध राखीने ते कदापि खाटी जावानो (फावी शकवानो) नथी. ॥ १ ॥

खबर तो एहनी हो यह हशे तुजने ॥ मा० ॥ यह तुं खोटी हो न कहें
मुजने ॥ मा० ॥ एहने पाठो हो खिख तुं कागल ॥ मा० ॥ न कहीश वातो
हो कोइनी ध्यागल॥ मा०॥३॥ यहश जो मुजधीहो हृदयनी उंनी ॥ मा० ॥ तो
मुज सरिखी हो न गणीश जूंडी ॥ मा० ॥ मुकी जो होये हो पियु तुज
हुंडी ॥ मा० ॥ नांखजो कहुं हुं हो जिहां जल कुंनी ॥ मा० ॥ ४॥

अर्थ ॥ ते संबंधी समाचार तारा तो जाणवामां आव्या हरो? परंतु तुं हवे खोटी यह (फरी गइ) डो. तुं मारी आगल कांइ पण वात करती नथी. गमे तेम हो पण तुं तेना जपर फरी कागल लख अने आ वात तुं कोइनी आगल करीश नहीं ॥ ३ ॥ वली कहुं बं के जो तुं पण मारी साथे गूढ हृदयवाली यह शतो जाण जे के मारी जेवी कोइ जूंडी नथी. तेमज जो तारा पितए तारा जपर कांइ हुंडी (संदेसो पत्र रूपे) मोकली होय तो तने खास कहुं बं के तेने तो गटर (जलनी कुंकी) मां फेंकी देजे. ॥ ४॥

विमलपुरीए हो जाइश हुंतो ॥ मा० ॥ श्राजापुरीए हो रहे जे तुं तो ॥ मा० ॥ मंदमतीने हो जइ समजावीश ॥ मा० ॥ तुरतज पाठी हो इहां हुं श्रावीश ॥ मा० ॥ ५ ॥ वहुं तव जाखे हो वीरमतीने ॥ मा० किंदिपत कहें वुं हो श्रयुक्त सतीने ॥ मा० ॥ विहंग जे कीधो हो नर केम थाये ॥ मा० ॥ दीठा विहुणो हो नवि ए मनाये ॥ मा० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ हुं तो हवे विमलापुरीए जड़रा, वली तने कहुं हुं के तारे तो श्चानापुरीमांज रेहेवुं. ए मंद्र बुद्धिवाला चंदने हुं श्चर्हीं श्री जड़ने शिखामण श्चापीने तरतज पाठी श्चर्हीं श्चा श्चावीश ॥ ५ ॥ गुणावलीए तरतज ते सांजलीने वीरमतीने कहुं के हे सासूजी । श्चाप जेवा सतीने एवी श्चयुक्त किस्पत वातो कहेवी योग्य नथी. जेने श्चापेज पद्मी बनाव्यो ते पुरुष केम श्वर शके ? जाते दीठा विना ते मनाय तेम नथी। ॥ ६ ॥

नहीं कोइ अधिकों हो तुमश्री माडी ॥ माणा ए कोइ पिशुने हो वात उकाकी ॥ माण ॥ तमे घर मांहि हो पोषो नवरस ॥ माण ॥ पण ए नमसे हो त्रीजने तेरस ॥ माणाणा नट तो तिहां लगी हो केम करी जाये ॥ माणा तुम विण एह तो हो नर नवि थाये ॥ माणा बाइ कहो कोइने हो न हुर्ग कुसोजा ॥ माणा पाणी पेहेलां हो न कहो मोजा ॥माण्णा

श्रर्थ ॥ वली हे माताजी ! तमाराश्री ते जगत्मां एवो कोण बलीयो हे के एने पुरुष वनावी दे. मने तो कोइ चाडीयाए एवी खोटी वात छमामी होय एम लागे हे तमे पण घरमां बेटां बेटां नवे रसतुं मन गमती रीते पोषण करो हो, परंतु चंद पुरुष थाय ए वात त्रीजने तेरस एकटा थवा जेवी हे ॥ ७ ॥ वली एम तो विचारो के नट लोको त्यां सुधी केवी रीते जइ शके ? वली मने खात्री हे के तमारी कृपा विना ए पुरुष कदापि थइ शके नही. माटे वाइजी ! एम कोइना केहेवाथी तमे श्राडा श्रवला विचार करो नही; (मेला मनवाला थार्ज नहीं) एतो पाणी पेहेलां मोजा छतारवा जेवुं बने हे ॥ ए ॥

हुं तो तुमथी हो न घणुं माही ॥ मा० ॥ करजो कारज हो चित्त अवगाही ॥ मा० ॥ सासुडीने हो करीने डावी ॥ मा० ॥ शीघ गुणा-वसी हो मंदिर आवी ॥ मा० ॥ ए ॥ वीरमतीए हो वेसा साधी ॥ ॥ मा० ॥ बहु सुर तेड्या हो मंत्र आराधी ॥ मा० ॥ चंद छुचिंतन हो वात प्रकाशी ॥ मा० ॥ तव सुर जाखे हो क्षेक विमासी ॥ मा० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ वली हुं कांइ तमाराधी विशेष महापणवाली नथी। परंतु एटलुं कहुं हुं के जे काम करो ते चित्तमां छंडो विचार करीने करजो। ए प्रमाणे पोतानी सासूने गुणावली श्रंतरथी छवेलीने छतावलथी पोताना मेहेलमां श्रावी ॥ ए ॥ हवे वीरमतीए पोतानुं कार्य सिद्ध करवा श्रवसर जोइने मंत्रनुं श्राराधन करी श्रनेक देवोने तेडाव्या। ते देवो श्राव्या एटले तेष्ठनी पासे चंदनुं बुरुं करवा संबंधी वात प्रगट करी। ते सांजली थोडी वार विचार करी देव बोलवा लाग्या। ॥ १०॥

बाइ श्रमधी हो ए निव होवे ॥ मा० ॥ चंदधी विरूठ हो कोण जे जोवे ॥ मा० ॥ सूरज कुंडे हो मज्जन की धो ॥ मा० ॥ थयो नर रूपे हो पुहिन प्रसिद्धो ॥ मा० ॥ ११ ॥ तुमधी श्रमधी हो हवे निव चासे मा०॥ कहीए ठीए साचे हो चावे जासे ॥ मा० ॥ श्रमधी श्रिका हो तस रखवाला ॥ मा० ॥ श्रमे ए वाते हो रहेशुं निराला ॥ मा० ॥११॥

श्चर्य ॥ हे वीरमती ! ए काम अमाराधी हवे बनवानुं नथी. हवे चंदराजानुं बुरू करवाने माटे तेना सामुं पण जोवाने कोण शक्तिवान हे ? तेणे श्री शत्तुंजय उपर सूर्य कुंकमां स्नान कर्यु हे श्वने तेथी पुरूष रूपे अयो हे एटखुंज नहीं पण पृथ्वीने विषे हवे प्रसिद्ध श्रयो हे ॥ ११ ॥ हवे तमारूं के अमारूं कांइ पण जोर तेनी उपर चालवानुं नथी. आ वात अमे स्पष्ट रीते साचे साची कहीएहीए. कारण के तेना रहण करनारा देवो अमाराधी अधिक बलवाला है, तेथी ए वातथी हवे श्वमे तो निराला रेहेशुं. ॥१२॥

कहो तो बीजो हो कारज करीए ॥ मा० ॥ पण ए सामुं हो पगहुं न जरीए ॥ मा०॥ एवको सुतथी हो घरो अजावो ॥ मा०॥ कहीए आजा हो आपी मनावो ॥ मा० ॥ १३ ॥ सुरनी वाणी हो निसुणी राणी माण ॥ साहामुं बमणी हो रोष जराणी ॥ माणा पुनरिप देवे हो छिति समजावी ॥ माण ॥ तो पण ममती हो रासे नावी ॥ माण ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ तमे बीजुं जे कांइ काम बतावो ते सुखेथी करीए, परंतु चंदनी सामुं तो एक डगखुं पण जर-वाने श्चमे शक्तिवान नथी. वली श्चमारी सलाह एवी छे के तमारे पण पोताना पुत्र उपर एवडो श्चजाव राखवानीशी जरूर है ? माटे कहीए हीए के तेने श्चाजानगरीनुं राज्य श्चापी तेनुं मन मनावो ॥ १३ ॥ देवतार्जना कहेलां वचनो सांजलतांज वीरमती तो तेनी सामे छलटी बमणी गुस्से थइ फरीथी देवता-जंए घणी रीते समजाववा मांडी तो पण ते ममतीली होवाथी पोतानो विचार तेणीए फेरवी देवतार्जनी शिखा मण मानी नहीं ॥ १४ ॥

वचन राणीनां हो मुक्यां वहेतां॥ मा०॥ सुरनिज ठामे हो सघला पहोता॥ मा०॥ वीरमतीए हो तेड्यो मंत्री॥ मा०॥ विमलपुरीए हो यह हुं गंत्री॥ मा०॥ १५॥ तुं इहां रहे जे हो धरजे शाता॥ मा०॥ मंत्री पत्रणे हो निसुणो माता॥ मा०॥ एणी वाते हो केम हुं वारू,

॥ मा० ॥ थाजो चिंत्युं हो बाइ तुमारुं ॥ मा० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ देवतार्छए राणीनां वचनोनी दरकार नहीं करतां तेनी वातने ज्वेखीने तेर्छ सर्वे पोतपोताने स्थानके गया. त्यारबाद वीरमतीए मंत्रीने बोलावीने कहां के हुं हवे विमलपुरीजवाने प्रयाण करूं हुं॥१५॥ वीरमतीए मंत्रीने कहां के तमारे श्वर्हाश्चा सुख शांतिश्री रेहेबुं. पठी मंत्रीए कहां के हे माताजी ! जे काम तमे करवा जार्छ हो तेमां हुं तमने शुं काम वारी राखुं ! माताजी ! तमारूं धारेखुं पार पडजो. ॥ १६॥

मंत्री वचने हो हरखी राणी ॥ माणा संचिवने जाणो हो परम प्रमाणी॥माण हास ए बारमी हो चोथे उल्लासे ॥माणा मोहने जाखी हो प्रेम प्रकाशे॥माण्रणा श्रर्थ ॥ मंत्रीनां वचनो सांजली राणी बहु हर्ष पामी श्रने श्रा मंत्री खरे खरो प्रमाणिक हे एम तेनी छपर विश्वास बेहो. चोथा जल्लासमां मोहनविजयजीए बारमी हाल प्रेम पूर्वक कही ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

चंना श्रति पोरस चडी, पुनराकर्षी देव ॥ रस राती काति ग्रही, मद माती स्वयमेव ॥ १ ॥ वार्युं न करे कोइनुं, कही पण न शके कोय ॥ वार्यों न रहे हार्यों रहे, श्राप मती जे होय ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ जेने श्चत्यंत पोरस चडी गयो हे एवी कोध युक्त वीरमतीए फरीथी देवोनुं श्चाकर्षण कर्यु. पोते मदमां हकी गयेली होवाश्ची प्रचंड रौष रसमां लाल चोल यह हाश्चमां तलवार लीधी ॥ १ ॥ किव कहे हे के जे श्चाप मतिला होय हे ते कोइनुं वारेलुं कबुल करता नश्ची. वली तेर्जने कोइ वारी पण शक-ता नश्ची. तेर्ज एवा होय हे के कोइना वार्या रहे नहीं पण हार्याज रहे. ॥ १ ॥

सुर परिवारे परवरी, वीरमती सुविलास ॥ विद्याए श्रंबर पथे, विचरी रोष प्रकाश ॥ ३ ॥ राणी मनमां चिंतवे, चंदने जीतीश प्राज्य ॥ पण जोली क्षेहेती नथी, जे देश्श निज राज्य ॥ ४ ॥ श्रश्री।। देवतार्चना परिवार सहित वीरमती विद्याना बखर्थी श्राकाश मार्गे श्रत्यंत रोपने बतावती श्रागल चाली।। ३ ॥ राणी मनमां विचारे हे के हमणां चंदनो पराजय करी जय मेलवीश. परंतु कि कहे हे के ते मुर्खी जाणती नथीके हमणां मारूं राज्य खोड़ बेसीश.॥ ४॥

जेम निव जाणे रंगिका, तेम त्यांथी सुर एक ॥ आगलथी जइ विनवे, चंद जणी सुविवेक ॥ ५ ॥ महाराजा तुम उपरे, आवे अबे विमात ॥ सावधान रेहेजो तमे, कहुं हुं हानी वात ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जेवी रीते ए वीरमतीना जाणवामां न स्त्रावी शके तेवी रीते एक देवता ते परिवारमांथी गुप्त रीते बढ़ो पड़ी स्त्रगालथी स्त्रावीने चंदराजाने विवेक पूर्वक कहेवा लाग्यो ॥ ए ॥ हे महाराजा! तमारी छपर तमारी छरमान माता चड़ी स्त्रावे हे तेथी हवे तमे सावधान श्रुने रेहेजो. स्त्रा हुं तमने गुप्त जेद करूं हुं ॥ ६ ॥

पुण्य प्रवस हे तुम तणुं, गंजी न शके एह ॥ तो पण रतन तणा यतन, करवा युक्त हे एह ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ जो के तमारूं पुण्य प्रबंख हे तेथी ए तमने हरावी शके तेम नथी, तो पण रत्ननुं जतन करवुं ए बात पण व्यवहारमां करवा योग्य हे. ॥ ७ ॥

॥ ढाल १३ मी ॥

॥ आवोरे उलगाणा ताहरी कांकणीरे कुंबे ॥ ए देशी ॥ सांजली चंद नरेशरू रे, पाम्यो घणुं मनमांहिरे शाता ॥ जाणीजे इहां आवी साहमी, विमाता ॥ सुरवचने नृप पालर्था रे, मोटा हय वर जेहरे ताता ॥ पकनेजे पंलीने लिएमां, उडतारे जाता ॥ १ ॥ चंदे रण रसीयो यह रे, अंगे पेहेथों सन्नाहरे जारी ॥ जगमांहि कोइ प्रगट्यो, जुजो इश्वरावतारी ॥ बांधी घणे कसणे कसी रे, तनुमध्ये तर वार रे सारी ॥ कीधीरे जय वरवा राये, अश्वनी असवारी ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ देवताए कहेली वात सांजलतांज चंदराजाना मनमां श्चरयंत हर्ष श्रयो. तेण मनमां विचार्युंके श्चाखरे मारी जरमान माता मारी सामे श्चावी खरी. तेथी तरतज पोते सारांमां सारां जे श्वश्वरत्नों के जे जडता पंखीने पण इण्वारमां पकडी पाडे एवा श्वश्वोने तैयार कर्या ॥ १ ॥ रण संश्चामनो रसीयो होय तेवीरीते चंदराजाए संरक्षक एवं जारे बरूतर धारण कर्युं. जाणे जगमां बीजो इश्वर प्रगट श्रयो एवो देखावा लाग्यो. मजबुत बंधन सहित केड जपर तलवारने लटकती बांधी; श्चने जय संपादन करवामाटे तरतज तेणे श्वश्वनी जपर स्वारी करी. ॥ २ ॥

मृगया मिस चडी निसर्यों रे, सामंत सात इजार रे संगे ॥ न धरे जे पग पाढा किहए, संगेरे उत्तंगे॥ ख्राव्यो विमक्षपुरी खकी रे, उल्लंघी बहु कोशरे रंगे ॥ निरखेढे वनवामी ख्रामी, नेत्रने प्रसंगे॥ ३॥ एहवे आवती अंबरे रे, वरवीरे निज मायरे दीठी ॥ जाणे क्रोधान खनी, चालती अंगीठी ॥ पण मनमांहे चंदने रे, लागी अमीथी अ नंतरे मीठी ॥ आजानी निरधारे धारी, आवती ए चीठी ॥ ४॥

श्रर्थ ॥ शिकारनुं बहानुं काढी पोताना साते हजार सामंतोने साथे खई ते चडी निकट्यो. सामंतो पण एवा हता के पाठी पानीतो करे नहीं एटखुंज नहीं पण राजानी साथेज संग्राममां होंशायी ब्रुटी पड़े विमखापुरीथी प्रयाणकरी रंगजर बहु कोश सुधी जमीनने कापतां चाह्या श्रावेठे तेवामां एक सुंदर वन्नमां बगीचो दृष्टिए पड़्यो ते जुवे ठे ॥ ३ ॥ एवामां श्राकाशमार्गे ते शुरवीरे वीरमतीने श्रावती दीठी. साहात् क्रोधरूप श्रिवनी सगडी चाली श्रावती होय तेवी देखाइ जोके चंदना मनमांतो ने श्रमृत ककरतां पण श्रत्यंत मीठी लागवामांडी कारणके तेणे निश्ययथी धार्युके श्राजानगरीए श्राववारूप श्रामंत्रणनी ए चीठी श्रावे ठे ॥ ४ ॥

श्रकाए पण श्रावतो रे, साहमो चंद निरंदरे धार्यो ॥ श्रक्षगाश्री श्रा कारो रहीने, राणीए वकार्यो ॥ सुसरो पण नश्री दिसतो रे, श्रावतां सामो तुजने वार्यो ॥ श्रथवा तें हैमाथी सिहतो, कुकडो विसार्यो ॥ ५॥ मुज हुंते श्राजापुरी रे, श्राव्यानी मन होंशरे राखे ॥ पण जूंडा श्रहि वह्नी कहुं हुं, हंटतो न चाखे ॥ जोवे किशुं होडीश नहीरे, तारो तुं इष्ट संजार रे जाखे ॥ क्रत्रीनी वट मुजने जोहं, केहवीतुं दाखे ॥ ६॥

श्चर्य ॥ वीरमती डोसीए पण सामो श्चावें ते चंदज हे एम धारीने श्चाकाशमां हेटेशीज सक्त व-चनो कही चंदने हंहेड्यो. तेणीए कहुं के श्रद्ध्या! मारी सामे श्चावतां तारा सासराए पण तने निवार्यों दिसतों नश्ची, परंतु तुं पण तारा हैयामांथी कुकमापणानी श्चवस्था जृत्वी गयो.॥ ५ ॥ हुं हतां तुं श्चाजा-पुरी श्चाववानी तारा मनमां जे होंश राखे हे, पण जुंडा हजु तने एटलीपण खबर पडती नथी के लंट कदापि नागर वेलनो चारो पामवाने जाग्यशाली श्वताजनश्ची. तोपण हवेतुं शुं जोइ रह्यों हे, हुं कहुं हुं के तारा इष्ट देवने संजार. वली जोजहुंके संग्राममां तुं हित्रयवट पण केवी बतावे हे ? ॥ ६ ॥

चंदकहे हवे मातजी रे, न धरो मुजथी रोषरे वारू ॥ मेंतो काइ न वि
गाडयुं हजी ए, सांजलो तुमारूं ॥ मुजथी एम लफतां थकां रे, लागेढे
मनमांहिरे सारूं ॥ थाउं जीतो वेहेला एहमां, इष्ट द्युं संजारूं ॥ ७ ॥
तुमे जेइहां पगला कर्या रे, करशो ते कांइ नवाइ रे जाणुं ॥ माताजी
तुमचा गुण जीने, केटला वखाणुं ॥ तुमे तो जाणोढो चित्तमांरे, सघ
ला विश्वनो जार रे ताणुं ॥ ठालीए ठकुराइ फोकट, फांट मांहि ढाणुं ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ चंदे कहुं के हे माताजी! इवे मारा छपर तमे रोष राखो नहीं. जरा सांजलों में हजु सुधी तमारूं कांइपण बगाडयुं नथीं. शुं मारी साथे आवीरोते लकतां तमारा मनमां सारूं लागेते? आने जो तमारा मनमां एमज सारूं लागतुं होय तो तमेपण सुखेशी वेहेलां तैयार आर्च. मारे एमां इष्ट देवने शुं

संजारवाने? ॥ ९ ॥ तमे जे अहीं आ सुधी पगतां कर्यों वे तेथी एम जाणुं हुं के कांड्क नवाइ जेंबुं क-रशो. माता! तमारा गुणोनां वलाण ते मारी जीजे केटलां करूं? तमे तमारा मनमां एमज जाणता हशो के आला जगत्नो जार हुंज ताणुं हुं. पण जो एवं अभिमान होयतो ते वाततो "ढाली ठकुराइने फांट मांहि गणुं" ते केहेवतना जेवी है. ॥ ए ॥

चंद वचन निसुणी करी रे, थइ कोघे प्रति श्रंग रे ताती ॥ नांखी रे सुत साहमी पेहेखी, पापणीए काती ॥ खागी चंद सन्नाहमांरे, जाणीए कुसुमनी एकरे पाती ॥ पण छखटीजइ खागी गगने, रंडिकाने ठाती॥ए॥ सा ततिखण धरणी ढखी रे, चंद निरंद समीप रे श्रावी॥ मुठी ते मो तीमां करीने, थोडीसी वधावी॥ विष्णु कुमार नमुचिनी रे, प्रूपे कथा एक वीररे जावी॥ दुर्जनना नियहनी करुणा, चित्तमांहे नावी॥ १०॥

अर्थ ॥ चंदनां वचनो सांजली वीरमतीना श्रंगोश्रंगमां क्रोध जरायाथी ते लाल चोल थड़ गड़. त-रतज तेणीए चंदनी जपर पेहेलांज तलवार फेंकी परंतु ते तलवार चंदना बख्तर जपर लागी ते जाणे पुष्पनी एक पांखडी लागवा जेवुं थयुं. जलटी ते तलवार त्यांथी जल्लीने वीरमती रंडानी लातीमां जर्इने लागी. ॥ ए ॥ तलवार वागतांज वीरमती जमीन जपर ढली पमी. फरी तलवार चंदनी पासे आवी पटले तेने चंदे थोडा मोतीए वधावी. चंदे विष्णु कुमार अने नमूचिनुं दृष्टांत तरतज मनमां एकवार विचार्युं अने तेथी छर्जननो निग्रह करवामां करुणा लाववी ते तेना मनमां आव्युं नहीं. ॥ १०॥

चंदे तव चोटी ग्रहीने, श्राडुं श्रवहुं श्रसंख रे जाही।। क्षेड्ने श्राकाश जंबी, डुष्टिका जग्नाही।। फेरी चक्र तणी परे रे, रजकनां वस्त्र समा नरें वाही।। फटकड्यं क्षेड्र पटकी शिक्षा, जपरे कराली।। ११।। चूर्ण श्रद्ध धरणी पनी रे, चसकी न शकी लगार रे रंगा।। प्राहुणनी श्रद्ध ग्रह्म विये, पाधरी प्रचंगा।। एम जगमां पापी तणां रे, होवे निपट हवाहा रे जुंगा।। रोपाए डुर्गतिमां तेहना, निश्चयशीरे फंगा।। ११॥

श्रर्थ ।। तरतज चंदे तेणीनो चोटलो फालीने श्राडुं श्रवलुं सर्वने जोइने ते छुष्टाने छंचे श्राकाशमां छुणाली; श्रने चक्रनी जेम तेणीने फेरवी वली धोबी वस्त्रने वालीने फीके तेवीरीते तेणीने तरतज बेवडी बालीने मजबुत शिक्षा छपर पटकी. ॥ ११ ॥ ते रंडाना जमीन छपर चूरेचूरा श्रइगया. ते जरापण च-सकी शकी नही. मरीने तरतज छुछी नक्ष्मी ते चंडिका मेमान श्रइ. एवीरीते जगत्मां जे पापी होयछे तेना खरेखरा ग्रंडा हवाल श्रायहे; वली तेर्जनी दुर्गति श्रतां मोटा फंम त्यांपण बनेहे. ॥ १२ ॥

कीधी चंदनी उपरे रे, देवे कुसुमनी वृष्टिरे रूडी ॥ वातलडी रखे को इजी मनमां, जाणताए कूडी ॥ जयजय शब्द सघले थयारे, वीरमती जवसिंधुए बुडी ॥ धर्मीना एम वैरी जाए, आफणीए उनी ॥ १३ ॥ साल निवारी जन्मनो रे, आब्यो नगरी मोकार रे राजा ॥ जीतोना

वजडाट्या गुहिरा, गुंजतां जे वाजां ॥ मकर्ष्वज हर्ख्यो घणो रे, उन्नव कीध विशेष रे ताजा ॥ दीधुं निज नगरीनुं श्चरधुं, राज्यते समाजा ॥ १४ ॥ श्चर्य ॥ तरतज देवोए चंद राजानी उपर पुष्पनी बहुसारी वृष्टि करी. हे श्रोता जनो ! ए वात जराप्ण श्चसत्यने एम मनमां लावता नहीं. चंद राजाने माटे जय जय शब्दो सर्वत्र प्रसरी रह्या श्चने वीरमती जवसागरमां बूडी गरु एवीरीते धर्मी मनुष्योना वैरीछ पोतानीमेलेज नाश पामी जायने ॥ १३ ॥ चंदराजा पोतानुं जन्मनुं साल काढी नांखीने विमलापुरीमां फरीने श्चाब्यो तेवखते नगरने विषे जय मेलव्यानी निशानी रूपे जीतना डंका वगडाववा मांड्या मकर्ष्वज राजापण बहुज हर्ष पाम्यो श्चने मोटो महोत्सव तेणे कर्यो पन्नी पोतानुं श्चर्यराज्य चंदराजाने बहीस कर्युं ॥ १४ ॥

हरखी बाड़ी प्रेमला रे, रहे निशदिन करजोड़ी रे पासे ॥ सांसारिक सुख विलसे पूरां, पुष्यने प्रकाशे ॥ ढाल तेरमी कही रे, हर्ष ययावली हर्षरे थाशे ॥ पजणे मोइन चोथे, चंदने उल्लासे ॥ १५ ॥

श्चर्य। श्चा वृत्तांत जाणी प्रेमला लही श्चत्यंत हर्ष पामी. ते पोताना स्वामिनी हजुरमां रात दिवस विनय पूर्वक रहे हे; वली पुण्यना जदयथी सांसारिक जत्तम प्रकारना जोगविलास संपूर्ण रीते जोगवे हे. सर्वना मनमां हर्ष श्रयो; वली पण विशेषे हर्ष श्वाशे एवी रीते चोश्वा ज्ञासने विषे तेरमी ढाल मोहनविजयजीए कही. ॥ १५॥

॥ दोहा ॥

श्राजा श्रावी कहे विबुध, गुणावलीने ठंक॥ चंदे वीरमती जणी, पोचामी परलोक ॥ १ ॥ निज जुवनकरी सुरगयो, सुणीवचन सुजगीश ॥ इरषित थइ गुणावली, तेडाव्यो मंत्रीश ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ तरतज एक देवताए श्चाजापुरीए श्चावीने गुणावलीने समाचार श्चाप्याके चंदराजाए वीरम-तीने परतोक पहोंचाडीहे. ॥ १ ॥ देवताए श्चापेला जत्तम समाचार सांजलीने गुणावली बहुज इर्ष पामी. श्चने देवता पोताने जुवने गयो एटले गुणावलीए मंत्रीराजने तेमाव्या. ॥ १ ॥

> तस सुरवाणी सविकही, रंज्यो सुमित प्रधान ॥ रे बाइ कीधां तमे, महारां पावन कान ॥ ३ ॥ खोकी मंजारी परे, कुग्रुकन क रती एह ॥ जली थइ जावठगइ, थयुं पवित्र ए गेह ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ मंत्रीने देवताए कहेला समाचार गुणावलीए कह्या ते सांजली सुमित प्रधान श्चानंद पाम्यो. तेणे कह्यंके हे महाराणीजी! श्चापे श्चा समाचारश्ची मारां कान पवित्र कर्या ॥ ३ ॥ लंगडी बिलाकीनी जेम निरंतर श्चामी श्चावी ते श्चपशकुन करती हती. हवे बहु सारूं श्चयुंके श्चापणी महापीडा टली श्चने श्चा घर पवित्र श्चयुं. ॥ ॥ ॥

वात विस्तरी नगरीए, पडह तेण उद्घोष ॥ वीरमतीनी खही खबर, सहु पाम्या संतोष ॥ ५ ॥ गयो शब्य नृपचंद्रनो, निःकं टक थयो देश ॥ इवे आजाए आवशे, निश्चय चंद नरेश॥६॥ श्चर्य ॥ वीरमती मरण पाम्याना समाचारनो ढंढेरो पिटावतांज श्चाजानगरमां ते वात फेखाइ गइ श्चने ते समाचार सांजलतांज सर्वनां मन संतोष पाम्यां. ॥ ५ ॥ चंदराजानुं साल गयुं श्चने देश निष्कंटक श्ययो एवी वात लोकोए करवा मांडी श्चने हवे निश्चयथी चंदराजा श्चाजापुरीए श्चावशे एम लोको बोलवा मांड्या. ॥ ६ ॥

> प्रजा मलीने पाठच्यो, विमलपुरीए प्रेष्य ॥ वेहला चंद पधारजो, वांचीने ए खेख ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ आजापुरीना सर्वे नागरिकोए एकठा यह चंदराजानी जपर एक विनंति रूपे आमंत्रण पत्र आजापुरीए पधारवा लख्यो अने खेपीआने पत्र आपी विमलपुरीए मोकट्यो. ॥ ७ ॥

॥ ढाख १४ मी ॥

॥ श्रजब सुरंगी हो हंजा मारु लोबडी ॥ ए देशी॥

परम सयाणीहो राणी ताम ग्रणावली, हेज जराणी हो जोर ॥ सही य समाणी हो कहुं हु हे कोइ माहरी मेलवे चित्तनो चोर ॥प०॥१॥ नवल नगीनो हो रंगनो जीनो साहिबो, सोरठ रह्यो हो लोजाय ॥ श्रवको चोमासो हो वासो श्रावी घरे करे, कोइ समजावो होयजाय॥प०॥१॥

श्रर्थ ॥ एवा श्रवसरमां अत्यंत डाही श्रने चतुर एवी गुणावली राणी जेना श्रंतः करणमां पोताना प्राणनाथ जपरनो स्नेह श्रत्यंत जोसथी उठली रह्योठे तेणीए पोतानुं सर्व सखी मंडल एकवुं कर्युः श्रने कहेवा लागीके हे बेहेनो तमारामांथी कोइ एवी महारी वहाली बेहेनठे के मारा श्रंतः करणना चोरने मे- खवी (पकडी) श्रापे. ॥ १ ॥ नव नवा रसनो रिसयो श्रने नुतन स्नेह रूपरल एवो मारो नाथ सोरठ देशमां प्रेमना लोजश्री पद्यो रह्यो हे. ते श्रा वखतनुं चोमासुं पोताने धेर श्रावीने करे एवी रीते कोइ जइने तेने समजावो तो सारूं. ॥ १ ॥

बेहेनकी साची हो प्रेमला लड़ी माहरी, मानव कीघो हो कंत ॥ पण एक वाते हो हुइ सोकलकी खरी, जोलव्यो नाह महंत ॥ पण्।३॥ पियुपण दूरे हो रहीने निस्नेही थयो,त्र्यम दोहिलो हो पंथ॥ मनकुं ए मूक्युं हो तिहां जइ पहोचे नहीं, शी इहां शीखुं हो संथ॥ प०॥ ४॥

श्रर्थ ॥ ए प्रेमला लग्नी मारी खरेखर साची बेहेन ने के जेणे मारा पितने मनुष्य बनान्यो परंतु एक वाते तो खरेखरी ते मारी शोकज निवडी ने के जेणीए मारा परमपूज्य स्वामिने जोलवीने कबजामां राख्यों ने ॥ ३ ॥ मारा स्वामिनाथ पण माराथी दूर रेहेवाथी स्नेह रहित थइ गया. वली त्यांजवानो रस्तो पण श्रजाएयो श्रने महाछः खे जवा योग्य ने वली कदाच मनने मोकलवानो प्रयास करूं पण तेनी ए शिक्त एवी नथी के त्यांजइ पहोंचे माटे हवे मारे शुं रस्तो लेवो ते सुक्त नथी. ॥ ४ ॥

श्रधम कहावे हो रहे जो नर घणुं सासरे, एम निव जाणे हो एह ॥ पेहेसी जे परणी हो वहासी घणुं घरणी तो होए,श्रहो केम दाख्यो हो वेह॥ पणाए॥ वहांत्र लागे हो सहीतो जग मांहे नवुं, मूखगुत्रासे हो मंद ॥ कोइन जोवे हो उग्यो पुरो पूनमें, बीजनो चाहे हो चंद ॥ पण ॥ ६॥

श्चर्य ॥ लोकिकमां पण प्वी केहेवत है के जे पुरुष पोताने सांसरे पड़यो रहे ते अधम केहेवाय. ए वात तेर्छ जाणता पण नथी. वली जे पेहेली परणेली स्त्री होय ते स्वामिने बहुज वहाली लागवी जोइए तेम हतां मारा नाथ मने केम हेह देता हशे ? ॥ ए ॥ वली जगत्मां एवी पण रीत हे के नवुं होय ते वधारे वहालुं लागे. श्वने जुनुं होय ते मध्यम रूपे थइ जाय. जुरुने पुनमनो चंदमा संपूर्ण (पुरे पुरो) छगे हे ते वखते कोइ पण तेने जोतुं नथी श्वने बीजनो चंदमा छगे हे त्यारे तेने जोवानी सहु चाहना राखे है. ॥ ६ ॥

प्रेमका प्यारी हो मुजने न्यारी त्रेवकी, दीठो स्यो मुज दोष ॥ साचे हुं चाली हो पेहेलां सासुने कहा, तेणे करी राख्यो हो रोष ॥ प० ॥॥ किंवातो हुउ हो जिणपुर प्रीतम क्रकको, आवतां आवे हो लाज ॥कंत विहुणी हो जुरी केम दिन नीगमुं, कठिन नरोथी हो वाज ॥ प०॥०॥

अर्थ ॥ मारा स्वामिनाथने प्रेमला जपर प्यार थयो अने मारी साथे जुदाइ अइ तेमां मारो शुं दोष तेना मनमां जास्यो हशे ? मने तो एम अनुमान थाय हे के पेहेलां हुं वीरमतीने कहे चालती हती ते कारणथी मारा जपर मारा स्वामिए रोष राख्यो हशे ॥ ७ ॥ अथवा तो मने एम लागे हे के जे नगरमां हुं कूकडो थयो ते नगरे केम जालं एवी रीते छाहीं आवतां मारा स्वामिने शरम लागती हशे ? परंतु हे सिखयो ! मारा नाथने वियोगे हुं छुर्या करूं हुं; हवे मारा दिवसो केम जशे? कठण हृदयना माणसो पासे जोर चालतुं नथी. ॥ ७ ॥

महारी रजनी हो सजनी जीने खंद्युके, कीण रहे माहारे हो संग ॥ एहवी तो मारी हो विरहनी जाला खाकरी, पियुविण पापीडे खनंग ॥ पणाणा नणदीरो वीरो हो खावे शीतलता होए, उषध एहनुं हो एह॥ जाग्य किहांथी हो मननो मेलुको मले, धिग् एकंगो हो नेह ॥ पण ॥ १०॥

चर्च ॥ हे सिखयो ! रात्रिएज मारी खरी बेहेनपणी है के जे मारी साथे के एक पण जीनां वस्त्र सिहत रह्या विना रेहेती नथी. अर्थात् रात्रिए मारां वस्त्र आंसुधी जीनां थड़ जाय है. तेथी तमे जाण शो के पापी अनंगना प्रतापथी मारा पितविना विरहनी ज्वाला मने एटली बधी आकरी थड़ पड़ी है ॥ ए ॥ मारो नणंदनो वीरो आवशे त्यारेज मने शीतलता थशे. मारा विरहाग्निनुं एज औषध है. परंतु एवं मारूं जाग्य क्यांथी होय के मननो मेलापी आवीने जेटे. वली धिकार है एकंगी स्नेहने के तेनो मारा छपर जरा पण स्नेह नथी अने हुं तेने माटे छुर्या करूं हुं. ॥ १०॥

फुरतां एहवे हो आव्यो तिहां एक सुवटो,बोख्यो मधुरे हो साद ॥केणे तुज छहवी हो बाद केम तुं दयामणी,के केणे कीघो हो वाद ॥ प०॥११॥ देवता नामी हो हुं तु पंखी परगडो,कहो कोइ मुजने हो काम ॥ कंत विदेशी हो राणी कहे छु:ख तेनुं, रे खग गुणना हो धाम ॥ प० ॥ १२ ॥ श्रिश्री। गुणावली ए प्रमाणे जुर्या करती हती एवे समये त्यां श्रागल एक सूडो (पोपट) श्रावीने मीठे स्वरं बोह्यो. हे बाइ! तुं बहुज दया जत्पन्न श्राय तेवी लागे छे तने कोणे छहवी छे श्रश्रवा कोइनी साथे तारे कजीयो श्रयो छे? ॥ ११॥ हुं जो के देखीतो पक्ती छं परंतु देवताइ पक्ती छं ते मारा लायक जे कांइ काम होय ते सुखेशी फरमावो. राणीए कहां के हे गुणना स्थान पक्ती राज मारो पित विदेश गयेल छे ते संबंधीज मारे छु:ख छे.॥ ११॥

माहारो संदेसो हो तिहां पहोचाडे कोइनही,इहां पण नावे हो तेह ॥ श्रंतरगतिनी हो झानी विण जाणे नही,दोहिलो नवलो हो नेह ॥ प० ॥ १३ ॥कागल श्रापो हो राणीजी कहे पंखीठ, श्रापीश हाथो हाथ ॥ कागल जीनो हो लखता काजल श्रालंगे, श्रांसुडाने हो साथ ॥ प० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ जेम मारो संदेशो तेनी पासे कोइ पहोंचाडतुं नश्ची तेम त्यांश्ची पण श्चर्हीश्चा कोइ श्वावता नश्ची. मारा श्चंतरंगना स्वरूपने ज्ञानी विना बीजुं कोण जाणी शके तेम हे ? नवो स्तेह जे श्वयेखो हे ते होडवो मुस्केख है ॥ १३॥ पद्मीए कह्युं हे राणीजी ! तमे कागल लखीने मने श्वापो. हुं ते कागल तमारा पतिने हाथो हाथ श्वापीश. पत्नी गुणावलीए कागल लख्यो परंतु श्वांखोमां श्वांसु श्वावते लखेलो होवाश्वी श्वांसुनी साथे काजल सर्यु तेवाज श्वांसुनां टीपां काजलवालां, पत्रमां पड्या. ॥ १४॥

तेहवोज विटी हो दीधो सुवटा जाणी, ते खइ चाल्यो ख्राकाश ॥ देव प्रजावे हो कागल दीधो चंदने, विमलपुरीए सहास ॥ प० ॥ १५ ॥ कागल लीधो हो मांड्यो चंदे वांचवा,वरणन दीसे हो क्यांहि ॥ जिहां तिहां दीसे ही टपकां ख्रांसुडा तणां, समज्यो मनडा हो मांहि ॥प०॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एवी रीते जीनो थयेखो कागल तरतज वालीने ते सूडाने आप्यो सूडो पण लड्ने आकाशम जड्यो. देव प्रजावयी क्लोक वारमां विमलापुरीए आब्यो अने चंद राजाने ते कागल हाथोहाथ आप्यो ॥ १५॥ पक्षीए आपेलो कागल लड्ने चंदे वांचवा मांड्यो परंतु कागल मध्येनो एक पण अक्स बराबर ते वांची शक्यो नही. कागलमां ज्यां देखे त्यां आंसुनां टीपार्च पडेलां हतां. तेथी ते पोताना मनमां खरी वात समजी गयो ॥ १६॥

श्रांसुने श्रामे हो श्रक्तर ए न बिखी शकी, माहारे विरहे हो एम ॥ एम रही गेहे हो एकबर्मी डु:खडुं धरे, जनम नीगमशे हो केम ॥पण ॥१९॥ तिहां हवे जाउं हो थाउं श्राजानो धणी,राणीनी करवी हो चिंत॥ कण कण मांही हो हवे तो मुजने सांजरे, बाखपणानी हो प्रीत ॥ पण॥१०॥

श्चर्य ॥ मारा वियोगना कारएश्री आंसुनी धारा पत्र खखती वखते वेहेती हरो तेथी ते एक पए आहर बरावर खखी राकी नथी. आवी रीते घरमां एकखी रहीने ते महा छःखने धारए करी रही हे. हवे एनो जन्मारो केवी रीते जहों ? ॥ १९ ॥ हवे हुं पए त्यां जइ आजापुरीनो स्वामि (राजा) आछं हवे गुए। वखीनी फिकर मारे राखवी घटे हे. वखी मारा मनमां तेएीनी साथे बचपएनी प्रीति होवाश्री ते इए इस्ले मने सांजर्यां करे हे. ॥ १० ॥

कागस दी हो जाणे राणीने महयो, चंद धरानो हो पास ॥ मोहने जासी हो चौदमी चोथा उल्लासनी, निपट संयोगी हो डास ॥ प० ॥ १ए॥

श्चर्य ॥ पृथ्वीपित चंद राजाए जेवो कागल दीठो तेवो वांचतांज जाऐ ते राएीने श्चापो श्चाप महयो होय तेवो तेने जास थयो. एवी रीते चोथा जल्लास मध्ये चौदमी ढाल मोहन विजयजीमहाराजे खरे-खरी संयोगी स्वरूपनी कही. ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

प्रमदा पत्र श्राव्या पढी, चंद ययो चल चित्त ॥ उमाह्यो श्राजा जणी,जन्म जूमि सुपवित्त ॥१॥ पत्रणे लही प्रेमला,पतिने लही उदास ॥ कहो स्वामी तुम वदननी,केम नविन श्राजास ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ गुणावसीनो पत्र श्चाच्या पत्नी चंद राजानुं चित्त चसायमान श्रयुं. पोतानी पवित्र जनमञ्जूमि श्चाजापुरी तरफ मननुं श्चाकर्षण श्रयुं ॥ १ ॥ तरतज प्रेमसासङीए पोताना पतिने चदास देखीने पुज्युं के हे स्वामिनाश ! श्चापना मुखनी कांति श्चाजे नविन प्रकारनी केम खागे हे ? ॥ २ ॥

> सहीतो निजपुर सांजर्युं, श्रयवा प्रथम जे नार ॥ सोरठमीनी गोठडी,नगमी पियु निरधार ॥३॥ चढी ग्रणावसी चित्तजो,तो इहां तेडो स्वाम ॥ तास वचन सोपीश नहीं, यह रहीश तस पाम ॥ ४॥

श्रर्थ ॥ मने तो एम जासे हे के श्रापने पोतानुं नगर सांजरी श्राव्युं श्रथवा तो प्रथमनी परणेखी गुणावली याद श्रावी हे पियुजी श्रापने निश्चयथी श्रा सोरठनी प्रियानी गोष्टि नज गमी ॥ ३ ॥ जो श्रापना श्रंतःकरणमां गुणावली वसी होय तो तेने हे नाथ ! श्रहीं तेडावो तेणीनुं वचन हुं लोपीश नहीं एटखुंज नहीं पण तेनी तावेदार थड़ने रहीश ॥ ४ ॥

सोंप्यो देशज मुज पिता, राज्य तमारे हाथ ॥ मोढे श्राव्यो कोलीई,केम मूको हो नाथ ॥५॥ चंद कहे चंडानने,प्रजा श्ररा-जक तत्र ॥ ते माटे जावुं श्रवस्य, श्राव्युं तिहांथी पत्र ॥ ६॥

अर्थ ॥ मारा िवताए पोताना आखा देशनुं राज्य आपना हाथमां सोंप्युं हे तथी ते मोढे आवेदा को-दीआने तजवानी केम इहा राखो हो ॥ ए ॥ चंद राजाए कह्युं के हे चंद्रमुखी ! त्यां आपणुं राज्य अने प्रजा, राजाविनाना होवाथी मने तेडाववानो पत्र आव्यो हे तथी मारे अवस्य जवुं जोइए ॥ ६ ॥

> सीमाडा ठेड्या घणां, वीरमतीए जेह ॥ तिहां जइने रे रागिणी, वश करवा ठे एह ॥ ७॥

श्चर्य ॥ वली हे प्रेमी प्रिया ! वीरमतीए श्चापणा राज्यनी साथे संबंध राखता सीमाडाना धणां राजा-जैने जेंडेड्या जे तथी ते सर्वेने पण वश करवी जरूर है। ॥ ॥

॥ ढाख १५ मी ॥

॥ राज गोडी पासजी हो दरिशन ताहारो ॥ ए देशी ॥ राज एम प्रेमलाने समजावी, राज पुरगमननी वात जणावी ॥ राज नृप चंद समो नहीं कोइ ॥ ए आंकणी ॥ राज जह सुसराने जणाव्युं, राज निज नगरीथी तेंडुं जे आव्युं ॥ १ ॥ राज तिहां प्रजा वाटनी जोवे, राज जह मलीए हुकम जो होवे ॥ राज नगरी किसी नृप पाखे, राज तृण नर पण केंत्रने राखे ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ एवी रीते प्रेमला लडीने पोताना नगरे जवानी वात चंद राजाए विस्तार पूर्वक कही. (किव कहे हे) श्रहो चंद राजा समान बीजो कोइ नश्ची. पही चंद राजाए पोताना सासरा पासे श्रावीने कहां के श्राजापुरीश्वी श्रत्रे, मने तेडाववानो मारी प्रजानो पत्र श्राव्यो है ॥ १ ॥ वली हे राजन् ! मारी प्रजा पण मारी राह जोइ बेठी है. जो श्रापनो हुकम होय तो हुं त्यां जइने तेडेने मलुं. वली राजानी विना नगरीनुं संरक्षण केवी रीते रही शके ? एक तणखला जेवो स्वामि होय तोपण ते पोताना केत्रने जालवी शके. ॥ १ ॥

राज सुख खद्यो इहां में जगीशे, राज मुखे कहेतां कारमुं दिसे॥ राज हुं तो तोख तमारो प्रसिद्धो, राज मुजने तमे मोटो कीथो॥३॥ राज तिहां गया विण नवि चाखे, राज वसी विठडवुं पण साखे॥ राज मनुज थयो इहां रहीने, राज प्रजु पाम चडावुं हुं कहीने॥४॥

श्चर्य ॥ वली हे राजन् में श्चापना प्रतापे श्चहीं संपूर्ण सुख मेलव्युं; जेनुं वर्णन श्चापनी हजुरमां करवुं ते ठीक खागतुं नथी. परंतु एटखुं तो प्रत्यक्ष रीते श्चापे मने मोटो करवामां पोतानुं महत्वपणुं वतावी श्चाप्युं हे ॥ ३ ॥ वली हे राजन् ! त्यां गया शिवाय जेम चाले तेम नथी तेमज श्चहींथी जदुं ते पण साहयाविना रेहेतुं नथी. कारण के श्चहींश्चा रेहेतांज हुं मनुष्य थयो. ए श्चापनो मोटो जपगार मारा जपर हे ॥ ४ ॥

राज तुम सौजन्य पणाइ, राज निव विसरे क्षणेक कदाइ॥ राज श्रंतर कोइ मत करजो, राज सेवकने चित्तमां धरजो ॥ ५॥ राज कागल खखजो संजारी, राज रखे मुकता चित्तथी विसारी ॥ राज मुज श्रवगुण मत जो जो, राज तमे मोटा हो जारी हो जो॥ ६॥

अर्थ ॥ वली हे राजन् ! आपनी सक्जनता एटली विशाल हे के ते एक इल्लार पण कदापि विसरी शकाय तेवी नश्री आप मारे माटे लेश मात्र जुदाइ राखशो नही अने आ सेवकने चित्तमां निरंतर संजारी राखशो ॥ ५ ॥ वली हे राजन् ! मने निरंतर याद लावी मारी छपर पत्र लखशो परंतु अनेक कामोने लीधे रखे मने पोताना चित्तश्री विसारी देता. वली मारी अनेक जुलो आपनी प्रत्ये यइ हे तेथी ते मारा अवगुणने ध्यानमां लेशो नही. आप वडील हो अने तेवी रीते हवे पठी पण सुरबी पणे रहे जो. ॥ ६ ॥

राजचंद तणी सुणी वाणी, राज सुसरानी नयण जराणी॥ राज राज्या दिके परचाव्यो, राज तोये श्राजापित वश नाव्यो॥॥ राज मकरध्वज तव जाखे, राज गज विफर्यों ते कोणराखे॥ राज बांध्ये कणबीए खेती, राज कहो चंदजी थाये केती॥ (पाठांतरे) नथी तुमथी हरकत होती॥ छ॥

श्चर्य ॥ चंदराजानां वचनो सांज्ञित तेना सासरानी श्चांखमां श्चांसु जराइ गयां तेणे विचार कर्यों के जमाइराजचंदने श्चापणुं राज्य देवा प्रमुखनी खाद्धचमां नांख्यों तोपण ते श्चापणे वश श्रयानही श्चर्यात् श्चित्रे रह्या नहीं. ॥ ७ ॥ पठी मकरध्वज राजा बोख्याके विफरेखा (मदमां श्चावेखा) हाश्चीने कोण कबजे राखीशके तेमछे. विद्याशुं बांध्ये कणबीए श्चर्यात् खेजुत उपर शिरजोरी करवाश्ची सारी खेती श्चर शके तेमछे. श्चने कदाच् श्वाय तोपण हे चंदराय तेमां केटलो खाज श्वाय? (बीजो पाछ) हे चंदराय तमारे माटे तो एम छे के श्चमें तो तमने हरकत करीए तेवा नश्ची. ॥ ए॥

राज जूषण पेहेर्याजे मांगी, राज रहे किण विधे श्रवधि श्रवांघी ॥ राज मन मान्योवे सोदो, राज नश्री तमश्री हरकत होदो ॥ ए॥ राज कुमी बुद्धि उपजावी, राज तमे जाशो हाथ वोमावी॥ राज पण जो हैमाथी जाउं, राज तो जाणीए सबस कहावो॥ १०॥

श्चर्य ॥ वद्धी जे श्चान्त्रवणो मांगीने पेहरवा श्चाणेद्धां होय ते कामनी मुदते विते केवीरीते राखीश काय? माटे हे चंदराय तमारे माटे तो मन मानमान्यो सोदोछे नथी तमने हरकत करवी के नथी श्च-धिकारथी तमे खलचार्छ तेवा. ॥ ए ॥ वद्धी तमे जे श्चर्हींथी जवा संबंधी विपरित बुद्धि जत्पन्न करी तेथी श्चमारो हाथ छोडावीने तोजशो परंतु ज्यारे श्चमारा हैया(श्चंतः करण)मांथी जार्छ त्यारेज श्च-मेतो तमने बलवान मानीए ॥ १०॥

राज जे परदेशी कहाया, राज तेहथी खोटी माया ॥ राज रह्याछो तमे इहां श्रवशे, राज खरूं प्राहुणडे घर न वसे ॥११॥ राज परदेशी शशकने कोशी, राज एता कोइना हुश्रा न होसी ॥ राज जोखवे करी करी वाने, राज तोही चंद नृपति नविमाने ॥ ११॥

श्चर्य ॥ वली परदेशीनी साथे जे प्रीति करवी ते तदन खोटी रीतिके. वली तमेपण श्चर्हाश्चा कवशे रह्याको, कांइ खुशीथी रह्या नथी. तेथी श्चमे तो दवे समज्याके कांइ प्रादुणाथी घर वसे नहीं ॥ ११ ॥ वली हे चंदराय! परदेशी, ससलो श्चने कोसवालो ए कोइना श्रया नथी श्चने श्वशे पण नहीं. एवीरीते चंदराजाने श्चनेक रीते जोलववनी युक्ति करी परंतु चंदराजा कोइरीते रेहेवानी हा पामता नथी. ॥१२॥

राज चलचित्त निरखी जमाइ, राज करी दीधी ससरे सजाइ॥ राज इरख्यो खाजानो स्वामी, राज विमलेशनी शीखजे पामी॥ १३॥ राज खाल्यो चंदते खाप छतारें, राज निज सामंतने छपचारे॥ राज मुकी जनके स्वही, राज तेडावी प्रेमला लही॥ १४॥ श्रर्थ ॥ एवीरीते घणी मेहनतकयी जतां पण पोतानो जमाइ जंचा मनवासो थयो जे श्रने गयाविना रहेशे नही एम मकरध्वज राजाने साग्युं त्यारे तरतज तेणे विदायगीरीनी तैयारी करवा मांडी. ए तैयारी देखीने चंदराजा बहुज खुशी श्रया श्रने ससराजी हवे रजा श्रापशे एवो निश्चय श्रयो ॥ १३ ॥ पत्नी चंदराजा पोताने जतारे श्राव्या श्रने पोताना सामंतोने सर्व हकीकत जणावी तैयारी करवा कहां. श्रहींश्रा मकरध्वज राजाए पण शुद्ध श्रंतःकरणवासी प्रेमसा सहीने पण तेडावी ॥ १४ ॥

राज मात तात कहे सुण बेटी, राज श्रमवहाखी तुं गुण पेटी ॥ राज श्रमे चंदने घणुं वाह्यो, राज पण श्राजा नगरी छमाह्यो ॥ १५॥ राज ताहरूं मनडुं छे केवुं, राज संगे थावुं के इहां रे हेवुं ॥ राज बाबी कहे महाराया, राज जिहां काया तिहां ए छाया ॥ १६॥

श्चर्य ॥ मात पिताए कहुं के हे बेहेन! तुं तो एक गुणनीज पेटी शे श्वने श्वमने बहुज वाहखी ही तेथी तुं श्वहींज रहेतो सारुं एवी धारणाथी चंदरायने श्वहीं रहेवा घणी रीते समजाव्या परंतु तेना मनमां श्वाजानगरीए जवानी पुरी छखट श्वइ हे. ॥ १५ ॥ हवे तारा मनमां शुं हे १ तारे तेमनी साथे जिल्लानो विचारहे के श्वहींश्वा रहेबुंहे १ ते सांजली प्रेमका बहीए कहुंके हे पूज्यपिता! ज्यां काया होय यांज हाया होय ए न्याये मारे वर्त्तबुंहे. ॥ १६ ॥

राज चूकी तेम नहीं चूकूं, राज हवे श्रक्षगो पियु केम मूकुं॥ राज पंदरमी ढाल सुहासे, राज कही मोहने चोथे जल्लासे॥ १९॥

श्चर्य ॥ वली हे पिताजी! हुं जेम एक वखत जूली हती तेम हवे जूल करवानीज नथी; हवे मारा नाथने कदि श्चलगो मुकवानीज नथी. एवी रीते मोहन विजयजी महाराजे चोथा ज्ञासमां पंदरमी- ढाल हर्ष सहित कही. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

पित श्रनुरागी प्रेमला, जनके क्षेष्ट सुसंध ॥ जाएयुं जननीए तदा, श्रालिक सुता संबंध ॥ १ ॥ प्रसवे जननी जो कोइ, प्रसवो सुत निरवाण ॥ पण प्रसवो पुत्री रखे, पीयर विमुखी जाण ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ ज्यारे मात पिताए प्रेमलां लड़ी श्चने चंदरायनी वचे स्नेह संबंध संपूर्ण जोयो श्चने पुत्री ते-णीना पित जपर संपूर्ण रक्तवे एम माताए जाएयुं एटले तेणीए विचार्युके पुत्रीनो संबंध खोटोवे श्चर्यात् पुत्री परणे एटले सासरेज जाय. ॥१॥ जो कोइ माता जन्म श्चापो तो पुत्रनेज जन्म श्चापजो पुत्रीने जन्म न श्चापताः पुत्री तो पोताना पियरथी विमुखीजवे. पोताना घरनुं सारुं चाहे ॥ १॥

> नवसे छिहताए शते, तात तणो श्रावास ॥ पियरनी वेरण होवे, पहोते श्रीतम पास ॥ ३ ॥ सुतान जाणे दोहिसम, पीयरनी ति सएक ॥ सुब्ध रहे नित सासरे, श्रहो प्रगट श्रविवेक ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ सो दीकरी इं होय तेथी कांइ बापनुं घर जघानुं रहे नही एटखुंज नहीं पण पितनी साथे प्रीतिमां जोडातां कोइ प्रसंगे एवं पण बने के पियरनी वैरी घइ जाय. ॥ ३ ॥ वली पीयरमां छःखी अन्वस्था होय तोपण दीकरी ते तरफ खड़ जवानी वृत्तिश्री खेशमात्र ध्यान आपती नधी. पोताना सासरी आमांज खुब्धरहे हे. आ केवो प्रत्यक्त अविवेक हे? ॥ ४ ॥

मात पिताए मनथकी, सुपरे करी विचार ॥ प्रेमखाने संप्रेमवा, करी सजाइ सार ॥ ५ ॥ दान सखी वसना जरण, सेज सुवास स्थादार ॥ इत्यादिक पुत्रीजणी, सोंप्या करी मनोहार ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ एवी रीते श्चनेक प्रकारे विचार बतावी प्रेमला लहीनां माता पिताए तेणीने सासरे वोलाववा सारू सर्व प्रकारनी जत्तम तैयारी करवा मांडी. ॥ ए ॥ जत्तम वाहनो, सुशील सखीजं-दासीजं-सुंदर व-स्त्राप्तरणो, ज्त्रीपलंगादि, श्चासनो, जत्तम गंधवाला पदार्थों, मेवा मीठाइ विगेरे श्चनेक प्रकारना जातां इत्यादि मनोहर पदार्थो पोतानी पुत्रीने श्चाणामां श्चाप्या. ॥ ६ ॥

चंदराय पण एइवे, चंचल चढी तुखार ॥ मलवा मकरध्वज जणी, स्राव्यो तिहां दरबार ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ एवा श्चवसरमां चंदरायपण महातेजस्वी घोडा उपर बेसीने मकरध्वज राजाना दरबारमां तेने मखवा सारू श्चाव्योः ॥ ७ ॥

॥ ढाल १६ मी ॥

॥ कानुडोतो विण वजाडे ए देशी ॥

सासु ससरे चंद नृपतिने, लही सोंपी लाजा ॥ महाराज तमे छुशसे केमे, पोंहचो नगरी छाजा ॥ १ ॥ ए छमपुत्री प्रेमला लही, सोंपी त मने स्वामी ॥ एइनी लाज तमारे हाथे, कहीए हे शिरनामी ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ चंदरायना सासु ससराए जेनाथी श्रत्यंत लाज थयो हे एवी प्रेमला लही चंदरायने सोंपीने श्राज्ञीर्वाद श्राप्यों के तमे कुशल देमें श्राजा पुरीए पहोंचजों ॥ १ ॥ हे राजन्! प्रेमला लही हवे श्रापने स्वाधीन करीहे तेथी श्रमे हवे विनंति करीए हीएके एनी लाज तमारा हाथमां हे. ॥ २ ॥

ए वे लामकवाइ श्रलहती, नरही श्रलगी कथारे ॥ जो एहमां कोइ चूक पड़े तो, मन नविश्राणजो त्यारे ॥३॥ मूकतां एहने एम परदेशे, श्रम म नमुं निव चाले ॥ पण पियु संगे जातां श्राडी, जीजलडी कोण घाले ॥ ४॥

श्रर्थ ॥ ए लाडकवाइने एटलुंज नही पण पोतानी मरजी प्रमाणे वर्त्तनारी ने. श्रमाराथी कदापि श्रलगी रही नथी. जो कोइ प्रसंगे तेनामां जूल श्रावीजायतो श्रापतो दरगुजरज करजो. ॥ ३ ॥ तेने श्रा प्रमाणे परदेश मोकलतां श्रमारूं मन कबुल करतुं नथी. परंतु ज्यारे तेणीने पोताना स्वामिनी साथे जबुंने त्यारे तेमां कोण श्राडीजीज चलावे?॥ ४ ॥

वेहेला मलजो वम जेम फलजो, रखे जो कहीए दिसारो॥ए सोरठनुं राज्य तुमारूं, हे निश्चय श्रवधारो॥४॥ माये पुत्री हृदय श्रालिंगी हो शीखलडी वारु ॥ पीयरनी तो लज्जा बेटी, सासरडे तुज सारू ॥ ६॥

श्चर्य ॥ हवे श्रमारी विनंति एवे के तमे वेहेला वेहेला मलवा पधारजो. वटवृक्ष्नी जेम तमारी वि-शालता श्रजो. श्रमने रखे विसारता; श्रमे श्रा सोरठ देशनुं राज्य तमारूंज वे एम निश्चयथी श्रवधा-रजो. ॥ ५ ॥ माताए प्रेमला ल्लाने पोताना हृदयनी साथे श्रालिंगन श्रापी सारी शिखामण श्रापतां कह्युं के जे दीकरी पोताने सासरे सारू केहेवरावे ते पीयरनी लाज वधारनारी समजवी. ॥ ६ ॥

जालवजे मन शोक सहुनुं, नथी सुसरोने सासु॥चालजे मन प्रीतमनां पूंठे, रोष न धरजे फांस् ॥ ७ ॥ जाणुंढुं श्रमे तुं ठे माही, कोइ विधि निवचूके ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म हैयाथी, जोलपणे मत मूके ॥ ७ ॥

श्रर्थ ।। नथी तारे सासरो के सासु तेथी तेर्जना मन कांड् साचववानां नथी. परंतु तारी जे जे शोको होय तेर्जनां मन जालवजे. तारा स्वामिनाथ जे जे स्वाझा करे ते श्रंतःकरण्यी पालजे श्रने विनाकारणे कोड्ना जपर गुस्सो करीश नही. ॥ ७ ॥ वली श्रमे जाणीएकी एके तुं खरेखरी उहापणवालीको तेथी श्रवसरे करवा योग्य एवं कांड्पण काम चूकतेवी नथी. परंतु स्त्रा एक श्रमारी खास जलामण के के कोड्पण वखते सुदेव, सुगुरु श्रने सुधर्मनी बाबतमां कोड्पण फसावनार श्रावे तो ते वखते जोली श्रइ जूल करीश नही.॥ ७ ॥

दान पुष्यमु शुं तुज कहीए, एहतो तुज ने कीडा ॥ कोइ प्राणी मात्र जणीतुं, रखे उपजावती पीमा ॥ए॥ जेम रुद्धं जाणे तेम करजे, रहेजे तुं अवरुंधी ॥ दीधी शेन तणी शिखामण, ते तो जांपा सुधी ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वदी दान देवारूप पुष्यनां काम माटे तने शिखामण आपवानी नथी। एतो तारी निरंतरनी बीढ़ा है; व्यसनहे ते साथे कोइ प्राणीमात्रने रखे तुं छःख आपती। ॥ए॥ दुंकामां एटखुंज कहीए हीएके जेम सारुं खागे तेम करजे अने कोइनी साथे विरोधमां पडीश नहीं. कारणके अमे गमे तेटली शिखामण आपीए तोपण शिखामण प्रमाणे नहीं चालनारने तो "शेठनी शिखामण कांपासुधी" ए कहेवत प्रमाणे थाय हे. परंतु तुं तो जेम बंनेनी शोजावधे तेम करजे। ॥ १०॥

एम कही माये प्रेमला लही, आंसूडे न्हवरावी, पुत्रीए पण विव्रमवा गति, सकल पुरीए जणावी ॥ ११ ॥ सहीतं सुरंगी लघुवय संगी, प्रे मला कंते लागी ॥ तार स्वर निसुणीने तेहना, सुरनी निद्धा जागी ॥११॥

श्वर्थं ॥ ए प्रमाणे शिखामण आपतां प्रेमदा दाठीने तेणीनी माताए अश्रुपात करतां न्हवरावी दीधी-पुत्रीए पण पोताने वियोगथी यतुं छःख आखा नगरमां खोकोना जाणवामां आवे तेम फेलावी दीधुं-॥ ११ ॥ बाङ्यावस्थाथी प्रेमना रंगे रंगाइ गयेखी छत्तम सखीठं प्रेमला दाञ्चीने जेटीपडीने छंचा स्वरथी एवी रीते रूदन करवा लागीके ते स्वर सांजलीने देवतार्जनी निजापण जती रही (देवोने निजा होती नथी परंतु वियोग समयना रुदननी प्रचुरता जणाववामाटे अतिशयोक्ति मूकेलीठे). ॥ १२ ॥

www.jainelibrary.org

प्रेमलाने वीव्यवा वेला, खेचर रह्या रथ खेंची ॥ तेह समय वर्णवता सुरगुरु, केरी पण मत वेंची ॥१३॥ हली मली सहु कोइना मननी, साथे सुखडी लीधी ॥ सहु नयण्थी उदर जरीने, प्रीति सुधारस पीधी॥ १४॥

श्रर्थ ॥ प्रेमला लहीनो वियोग यती वखते जे करुणारस उहातो हतो ते जोतां विद्याधरोनां विमानो पण स्थंनाइ रह्यां. विशेषतो शुं कहीए पण ते समयनुं वर्णन करवाने बृहस्पित बेसे तो तेनी बुद्धिपण धुं- चवणमां पढे तेम हतुं. ॥ १३ ॥ सर्वनी साथे दलीमलीने तेर्चना श्रंतःकरणनी प्रेमरूप सुखडीनो सर्व कोइए श्ररस परस स्वादलीधो एटलुंज नहीं परंतु श्ररस परसनी प्रेममय दृष्टिमेलाप रूप श्रमृत रसनुं पान सर्वेए तृष्ट्यतां सुधीकर्युं. ॥ १४ ॥

चंद ललाटे तिलक कंकुनु, करी तंडुल प्रतिजावी ॥ मानुंए निषधाचल जपर, चंडकला मली आवी ॥१५॥ पूरव पुष्यना पिंक सरिखुं, नाली केर फल दीधुं ॥ चंदे प्रेमलाए परियाणुं, आजा साहामुं कीधुं ॥ १६॥

श्रश्री।पत्नी चंदराजाना ललाटमां कंकुनुंतिलक करी उपर चोखा चोड्या ते जाणे निषधाचल पर्वत उपर चंद्रकलाऐ देखाव श्रापवा रूप जास थयो. ॥ १५ ॥ पत्नी हाथमां श्रीफल श्राप्युं ते जाणे पूर्वना पुण्यनुं पिंक श्राप्युं होय तेवो देखावथयो. तेथतांज चंदराय श्रने प्रेमलालज्ञीये श्राजापुरी तरफ प्रयाण कर्यु १६

वागी जेरी तबल नफेरी, थयो मकरध्वज संगे ॥ आव्यो विमलपुरीने चलटे, चंद घणे मन रंगे ॥ १७ ॥ करे प्रशंसा पुरजन सघला, गीत

युवतीये गाठयो ॥ प्राहुणडो कोइ चंद सरिखो, निवजाण्यो कोइ आठयो॥ १०॥ श्रश्रं॥ ते वखते प्रयाण समयना डंका-ढोख-निशान-जेरी नफेरी श्रादि वाजिंत्रो वागवा माड्यां. मकरध्वज राजापण साथे वोखाववा गया एम चाखता चाखतां विमला पुरीना चौहटामां चंदराजा हर्षजर श्राव्या ॥ १९॥ ते समये नगरना सर्वे लोको तेनी प्रशंसा करवा लाग्या. सुंदरील गीत गावा लागी. लोको बोलवा लाग्याके चंदराजा समान कोइ मेमान श्रात्यार सुधी विमलापुरीमां श्राव्या नथी ॥ १०॥

श्राजा जूपित प्रेमला लही, जोडी ए चिरंजीवो ॥ वेहेलां एह पधारजो पुरमां, करशुं मंगल दीवो ॥ १ए॥ चंद नृपित एम श्रिधक महोत्सव, श्रीसिद्धाचल श्राट्या ॥ स्वसुरादिक जन व्रजयी पेहेला, श्रीजिनपित गुण जाट्या ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ चंदराजा श्चने प्रेमला लड़ीनी जोडी चिरंकाल रहेजो एम लोकोए श्चाशीरवाद श्चाप्यो वली विनंति करीए बीए श्चा नगरमां श्चाप वेहला वेहेला पधारजो तमो पधारतां श्चमो मंगलदीवो करां हां. ॥ १ए ॥ ए प्रमाणे महा महोत्सव प्रवर्त्तते चंदराजा श्री सिद्धाचस गिरिराज समीपे श्चाव्या श्चने ससरा प्रमुख सर्वे परिवारथी जुदा पडतां पेहेलां तेमणे श्री जिनराजना गुणोनुं स्तवन कर्यु ॥ २० ॥

कहे मोहन इहां चोये जल्लासे, सुललित सोखमी ढाले॥ मानव जब सुकीयारय कीधो, श्री श्री चंद जुपाले॥ ११॥

श्चर्य ॥ मोहन विजयजी महाराजे श्चा चोत्रा उद्वासमां सुद्धवित सोवमी ढाव कही जेमां कहुंके श्री चंदराजाए पोतानो मनुष्य जब सुकृतार्थ कर्योः ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

जेटी विमलाचल विमल, तलहटीए नृपचंद ॥ श्रावीने कीधां विदा, स्वसुरादिक सानंद ॥ १॥ मकरध्वज विमलापुरी, पोहतो मांगी शील ॥ चाल्यो चंद नरिंदवर, श्राजाप्रति सहरीष ॥ १॥

श्चर्य ॥ पवित्र सिद्धगिरिराजने जेटीने तखेटीए श्चावतां चंदराजाए मकरध्वज राजा प्रमुख सर्वने श्चानंद सहित विदाय कर्याः ॥ १ ॥ मकरध्वज राजा रजा खड्ने विमलापुरीए श्चाव्याः पत्नी चंदराजाए हर्ष सहित श्चाजापुरी तरफ प्रयाण कर्युः ॥ २ ॥

> पजिणे चंद यश शिवकुंबर, नित करें नाटारंज ॥ प्रतिदिन पं थते स्रतिक्रमे, वाजत मंगल जंज ॥ (पाठांतर) देखत स्रवनी श्रचंज ॥ ३ ॥ जोतां देश विदेश बहु, मेली सैन्य स्रनंत ॥ प्र तिपुर नृपति श्रंगजा, पग पगचंद परणंत ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ रस्तामां शिवकुंवर नट चंदराजाना यशोगान करेबे. निरंतर नाटारंत्र करेबे. दररोज मार्गने मंगल जंजावाजते जेलंबेबे श्वने जगत्ना श्वाश्चर्यकारी पदार्थो श्ववलोकन करता चाह्या जाय बे. ॥३॥ श्वनेकदेशिवदेश जोता जोता श्वने श्वगणित सैन्य एकतुं करता चाह्या जायबे श्वने दरेक शेहेरना राजानी पुत्रीने चंदराजा डगले मगले परणता ॥ ४॥

श्राव्यो पोतनपुर वरे, चंद कटक सरतीर ॥ खीलाधर पण तेह जदिन, श्राव्यो एहे गुहीर ॥ ५ ॥ पति श्रनुमति खीलावती, चंदनोतयों धीर ॥ संतोष्यो जोजन विधे, जिमनीये वीर ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ पोतनपुर नगरे श्चाञ्याः चंदराजानुं सैन्य सरोवरना किनारा छपर छतर्यु. लीखाधर पण तेज दिवसे परदेश गयेलो पोताने घेर श्चाञ्यो ॥ ५ ॥ पतिनी श्चाङालङ्गे वर्तनारी लीखावतीए महा धैर्यवंत चंदराजाने पोतानेघेर श्चामंत्रण कर्युः श्चने ते धर्मनी बेहेने पोताना शुरवीर धर्मबंधुने श्चनेक प्रकारना जोजनादिकश्ची संतोष पामवा रूप कार्य कर्युः ॥ ६ ॥

नृप सासरवासोकरी, श्राव्यो सैन्य मोजार ॥ श्रद्ध निशाये जे थयो, ते सुखो श्रधिकार ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ चंदराजाएपण पोतानी धर्म जिंगनीने (खीदावतीने) करीयावर रूप मुल्यवान वस्तुर्छ श्रापी, पढ़ी पोताना सैन्यमां श्राच्योः बाद श्रर्धरात्रिये जे वृत्तांत बन्युं ते सर्वे श्रधिकार हे श्रोताजनो ! तमे सांज्ञदो ॥ ७ ॥

॥ ढाख १७ मी ॥ ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥

सुरपित सुर समुदायमारे, एहवे पत्रएयु वचन्न ॥ जंबु त्ररतमांहे वसेरे, चंद महीधर धन्य रे ॥ शील सेवो सदा ॥ १ ॥ नरने जास प्रसादेरे, डुःखन होवे कदा ॥ ए आंकणी ॥ नर सुर जगत् अनेक हे रे, चंद समो नहीं कोय ॥ निज दारा संतोषी होरे, ए सरीख़ा कोणहोयरे॥ शिख हो।शा अर्थ ॥ देवलोकमां इंदमहाराजाए देव सजामां एवं कहां के जंबुदीपना जरत केत्रमां आकालमां चं दराजा वसे हे तेने धन्य हे. (किव कहे हे के हे जन्य जीवो तमे निरंतर शियल वतनं सेवन करो तेना पसायथी तमने कदापि छुःख प्राप्त अशे नही. ॥ १ ॥ जगत्मां देवो अने मनुष्यो पारवगरना हे परंतु चं-दराजा समान, मात्र पोतानी स्त्रीमांज संतोषी एवो ब्रह्मचर्य पालनार कोइ नथी. ॥ १ ॥

माये विहंग कयों हतो रे, पण निज शिख प्रजाव ॥ सिद्धाचल फरसे थयो रे, पाठो वली नरराव रे ॥ शील० ॥ ३ ॥ शियल चूकावे जे एहनो रे, ते नही कोइ संसार ॥ मेरु चलेतो एचलेरे, जाणो सहु निरधार रे ॥ शील० ॥ ४ ॥ श्रर्थ ॥ पोतानी चरमान माताए पही बनान्यो हतो परंतु पोताना शियलना प्रजावश्री सिद्ध गिरिराजनो फरस थतांज पाठो मनुष्य रूप थयो छे ॥ ३ ॥ श्रा संसारमां तेना शियलवतमां जंग करावे तेवो कोइ देखातो नथी. तमे सर्वे खात्रीथी मानजो के जो मेरु पर्वत चलेतोज ते चलायमान थाय. ॥ ४ ॥

एक सुर श्रण सहतो थको रे, चंदतणी सुप्रशंस ॥ श्राव्यो शियल चुकाववारे, निशि पोतानपुर श्रंश रे ॥ शील ॥ ५ ॥ रजनी मध्यने श्रवसरे रे, कीधो ले चरी वेश ॥ निरखी त्रिजुवन मन चले रे, मायारूप विशेष रे ॥ शील ॥ ६ ॥ श्रर्थ ॥ ते सजामध्येनो एक देव इंड्नांवचनो रूप चंदराजानी प्रशंसाने नही सहन करवाथी श्रर्थात् ते वचनो छपर तेने श्रद्धानहीं बेसवाथी, चंदराजाने शियलथी छष्ट करवा सारु ते ते रात्रिए पोतन पुर नगरे श्राव्योः ॥ ५ ॥ मध्यरात्रिने समये तेणे एक विद्याधरीनो वेश धारणकर्यो; श्रने महा मोहजनक एवी तो शरीरनी सोंदर्यता रची के ते देखतांज त्रणज्ञवनना पामरजीवोनां मन चली जायः ॥ ६ ॥

रुदन करे उंचे स्वरे, रही एकांत प्रदेश ॥ निसुणी चंद नरेसरु रे, श्रचरिज सह्यो सुविशेष रे ॥ शीस ॥ ॥ ॥ कुण जुःखणी रणमां रने रे, एकसी माजम रात ॥ खड्ग सङ्ने एकसो रे, चास्यो चंद विख्यात रे ॥ शीस ॥ ॥ ॥ ॥

श्चर्य ।। ते स्थलना एकांत जागमां बेसीने तणीए छंचे स्वरे एवंतो रुदन करवा माड्युं के चंदराजाने ते सांजलतांज श्रत्यंत श्चाश्चर्य जत्पन्न थयुं. ॥ ९ ॥ श्चावी घोर श्रंधारी मध्यरात्रिए श्चा जंगलमां रमेबे एवी कोण छुखीयारी हहो. मारे तेनो तपास करवो जोइए एवो निश्चयकरी हाथमां खड़ लइ चंदराजा चाहयो.

शब्दे शब्दे निकुंजमां रे, आव्यो नारी समीप ॥ दिठो मदन दिपाखिका रे, फगमग जूषण दीप रे ॥ शीखण ॥ ए ॥ कहे नरवर विनता करे रे, केम ए वनो आकंद ॥ कहे मुजने शंकीश मारे, टाखीश हुं छु:ख फंद रे ॥ शीखणारणा अर्थ ॥ क्यांथी शद्ध आवेडे एम आवता शद्धनी दिशाने साधतो वननी घटामां ते स्त्रीनी पासे आव्यो. तेनी समीपे आवतां ते स्त्री साक्षात् कामदेवनी महाज्योति रूप दिवाखी सहश अने सुंदर अखंकारोधी विज्वित अयेखी दीडी. ॥ ए ॥ चंदराजाए कहांके हे स्त्री आवीरीते अत्यंत जोरधी रुदन करवानुं शुं कारणुडे १ मारीपासे कांइपण शंका नहीं राखतां कहीदे हुं तारुं छु:ख टाखीश ॥ १०॥

एम निसुणी सुर छपदिशे रे, सुणो श्राजापित वात ॥ हुं हुं खेचर पुत्रिका रे, श्रकथठे मुज श्रवदात रे ॥शीखणा११॥ खेद धरे खटपट करेरे, मुजथी श्रित जरतार ॥ कपटकरी परहरी गयो रे, श्राज ए वनह मोजार रे ॥शीखणा१श॥

श्रर्थ ॥ ते सांज्ञदीने देवताए कहुं के हे आजानगरीना राजा मारी हकीकत ध्यान दर्शने सांज्ञद्यो. हुं विद्याधरनी पुत्री हुं. मारूं कृतांत केहेवा योग्यनथी. तोपण ॥ ११ ॥ हकीकत एवी हे के मारो पित मारी छपर बहुज गुरुसे थयो है; अने तथी मारी साथे बहुज कपटथी वरतेहे. ते आ वनमां मने तजी दर्शे चाहयो गयोहे. ॥ ११ ॥

कोइ न करे तेम करी गयो, प्रीतम कपट जंगार ॥ हुं श्रवला हवे माहरो रे, जारो केम श्रवतार रे, ॥ शील० ॥ १३ ॥ मुजकरुणावस्र सांजलीरे, श्राव्यातमे महाराज ॥ जो तमे मजने संग्रहो रे, तोजगवाधरो लाजरे ॥ शील० ॥

श्चर्य ॥ जगत्मां कोइ नकरे तेवुं ए करीने चाहयो गयो. ते कपटनो जंमारहे. हुं श्चबला होवाथी हवे मारो श्चवतार केवीरीते जारो. ॥ १२ ॥ मारो दयाजनक स्वर सांजलीने तमे श्चहीं पधार्याहो. तेथी जो हवे श्चाप मने श्चंगीकार करशो तो जगत्मां श्चापनी कीर्त्ति बहुज वधशे ॥ १४ ॥

साची निवहों जो क्तियता रे, तो मत केहे जो नाकार ॥ राखो मुजपित करीरे, नकरो विचार खगार रे ॥शीखणा१५॥ पातिक प्रार्थना जंगनु रे, जाणो प्राणा धार ॥ शरण श्राव्याने जवेखशों रे, बांधों जो तरवार रे ॥ शीखण ॥ १६॥

श्चर्य ॥ जो आप क्तियपणानुं अिन्नमान राखता हो तो मने नाकारो करता नही. मने पोतानी अ-र्धांगनाकरीने राखो अने ते बाबतमां जरापण बीजो विचार करो नही. ॥ १५ ॥ हे प्राणाधार! कोइनी प्रार्थना जंग कर्यानुं पाप अतिशय हे ते आपजाणोहो माटे जो तरवार बांधता होतो शरणे आवे-खीने तजशो नही. ॥ १६ ॥

जननी कोइ ग्रुराजणे रे, तुमजेवा महीपाल ॥ सतरमी चोथा जल्लासनी रे, पत्रणी मोहने ढाल रे ॥शील० ॥१९॥

श्चर्य ॥ तमारा जेवा शुरवीरने हे राजन् कोइकज माता जन्म श्चापेने एवीरीते चोत्रा छहासमां मोन् हन विजयजीए सतरमी ढाल कही. ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

वनिता वचन सुणीकरी, कहें चंद मतिवंत ॥ एवं म कहें तुं मा नुनी, श्रयुक्त वचन श्रनंत ॥ १ ॥ स्त्री जे परनर जोगवे, तेमें केम संग्रहाय ॥ मीतुं पण एतुं थयुं, उत्तम जने नजमाय ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ ते स्त्रीनां एवां वचनो सांजलीने बुद्धिशाली चंदराजाए कह्यं के हे स्त्री श्चावा अत्यंत श्चघ-टीत वचनो तुं बोल नहीं ॥ १ ॥ जे स्त्रीने बीजो पुरुष जोगवेठे ते स्त्रीने हुं केवीरीते श्चंगीकार करी-शकुं? जोजन गमे तेवुं मीठुं होय पण जो ते एठुं श्चयुं तो उत्तम मनुष्य ते खाय नहीं ॥ १ ॥ बोट्युं श्रवरनुं श्रादरे, के बिल जुक् शियाल ॥ मृगपित ते करि वर जखे, श्राप जरीने फाल ॥ ३ ॥ घेली सुंदर वदनथी, तुन्न वचन म प्रकाश ॥ कहेतो तुज पित मेलवुं, कोइ करी श्रायास ॥ ४ ॥

श्रर्थ ॥ बीजानुं बोटेलुं तेतो कागडो-कुतरोके शियाल खायः परंतु केशरीसिंह तो शिकार करीने ज-त्तम हस्तिनुं जहण करेते. ॥ २ ॥ हे गांडी! आवा सुंदर मुखर्थी एवा तुझ वचन बोख नहीं. तुं जो हजी कहेतो कोश्पण प्रकारे मेहेनत करी तारा स्वामिने मेलवी आपुं. ॥ ४ ॥

> जे जगमां श्रकुक्षीन नर, ते परस्री रत होय ॥ पण उत्तम कुख उपजी, निंदित नकरे कोय ॥५॥ सुणी वचन एम खेचरी, रोष करी कहे एम ॥ जोतुं मुज नहीं श्रादरे, तोतुं क्षत्रिय केम ॥ ६॥

श्चर्य ॥ जगत्मां जे कुलीन पुरुषो केहेवाय है तेर्ड परस्त्री लंपट होताज नथी. परंतु जेर्ड छत्तम कु-लमां छत्पन्न श्वयेला होयहे तेर्ड कोइपए प्रकारनुं निंदा करवा योग्य काम करताज नथी. ॥ ५॥ चंदरा-जानां एवां वचनो सांजली खेचरीए गुस्से श्रइने कह्यं के हे राजा जो तुं मने श्चंगीकार नहीं करीश तो तुं क्षत्रिय केम केहेवाइश. ॥ ६॥

स्त्री हत्यापातिक तने, देइश श्रहो राजन् ॥ नहीं तो कहुं बु माहरुं, वचन श्रनोपम मान ॥ ७॥

श्चर्य ॥ हे राजन् हवे छेवटे तने कहुं हुं के तुं जो मने नहीं श्चंगीकार करतो हुं श्चात्मघात करीश श्चने तेश्री तने स्त्री हत्यानुं पाप लागशे तेश्री मने श्चंगीकार करवारूप मारूं श्चनोपम वचन तुं कबुलकर. 9

॥ ढाल १७ मी ॥

॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

विद्याधरीने नृप कहे, रे सुजगे सुणवात ॥ मोरा खाल ॥ स्त्री वध पातिकथी घणो, शील जंग उतपात ॥ मो० ॥ १ ॥ खूलो ललना विषयनो ॥ ए श्रांकणी ॥ चंद चंद श्रमुकार ॥ मो० ॥ जास प्रशंसे सुरवरा, धन एहनो श्रवतार ॥ मो० ॥ सु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ विद्याधरीने चंद राजाए कहुं के हे सुजगे ! मारी वात सांजल. स्त्री वधना पापथी शियलना जंगनुं पाप अतिशय मोटुं के स्त्रीनो विषय लुलोनिमीहय के कवि कहे के चंद राजा चंजसमान निर्मल के. जेनी इंज पण प्रशंसा करे के तेना अवतारने धन्य के ॥ १ ॥ १ ॥

वैदेही रघुपति तणी,श्रपहरीने दश कंध ॥ मो० ॥ हेमपुरी करथी गमी,जाणे सहु संबंध ॥ मो० ॥ छू० ॥ ३ ॥ पांचाखी पद्मोत्तरे, श्रपहरी यश इयो लीध ॥ मो० ॥ साहामी श्रमर कंकापुरी, जिटल विलेपन कीध ॥ मो० ॥ छू० ॥ ४ ॥ श्रर्थ ॥ रामचंद्रजीनी पत्नी सीतानुं रावणे हरण करवाथी सुवर्ण लंका गुमाववानो समय आव्यो इ

वृत्तांत सर्व कोइ जाणे हे ॥ ३ ॥ औपदीनुं पद्मोत्तर राजाए हरण करीने शुं यश संपादन कर्यो ? जखटी अमरकंका नगरी गुमावतां कृष्णे स्त्रीनो वेश धारण करावी होडयो ॥ ४ ॥

श्रहस्या माटे इंद्रने,शाप्यो गौतमे जाण ॥ मो० ॥ हरि दशशत जगनो थयो, कहे एम प्रगट पुराण ॥ मो० ॥ स्नू० ॥ ५ ॥ जस्मतो जस्मांगद थयो, तुहिन कन्याने हेत ॥ मो० ॥ एतो जाणे हे सहु, शैविमत संकेत ॥ मो० ॥ सू० ॥६॥

श्चर्य ॥ वली पुराएमां पए प्रगट कथा हे के श्वहत्या साथे इंदे व्यजिचार करवाथी गौतम किए तेने शाप दीधो हतो जेथी इंद हजार योनिवालो थयो ॥ ए ॥ वली हिमाचलनी पुत्री छपर जस्मांगद कामांध थयेलो होवाथी ते जस्म थइ गयो एवी शिवपुराएनी वात सहु कोइ जाएं हे. ॥ ६ ॥

एम परदारा छादर्ये, केणे कीधी लील ॥ मो० ॥ सुखीया ते नर जाणजे, जे कोइ पालरो शिला ॥ मो० ॥ लू० ॥ ७ ॥ जवसागर फरवा तणी, परस्त्री बेकी समान ॥ मो० ॥ परणीता परिहारते, हे शिव लिब्ध निदान ॥ मो० ॥ लू० ॥ छ॥ छर्ष ॥ एवी रीते परस्त्रीने छंगीकार करवाथी संसारमां कोण सुखी घयुं हे? सुखीयातो तेज पुरुषो हे के जेले निरंतर शियलत्रत पाले हे ॥ ७ ॥ जवसमुद्धमां हुबी रेहेवा माटे परस्त्री ते लंगर समान हे, छने परणेलीनी साथे पण ब्रह्मचर्यनुं पालवुं हे ते मोह प्राप्त करवानुं कारण हे ॥ ० ॥

परनारी जारी शिखा, बुडाड्या नर कोम ॥ मो०॥ जब कूपकनो तेह्यी,पाम्या नही कांइ ठोम ॥ मो०॥ खू०॥ ए॥ पररमणीना प्रसंगयी,खहे छुःख खित कुमार ॥ मो० ॥ तेह्वो मूरख हुं नहीं, जे रफखुं संसार ॥ मो० ॥ खू० ॥१०॥ ख्र्ये ॥ परनारी रूप महाजारी शिखाए आ संसार समुद्रमां कोनोनरोने बुनाडेखा ने जेर्च हजु सुधी तेमांथी बुटकारो मेखववाने शक्तिवान थया नथी ॥ ए॥ परस्त्रीनी आसक्तिथी जेवुं छुःख खित कुमारे प्राप्त कर्युं, तेवुं छुःख संपादन करवा अने संसारमां रफखवा हुं तैयार थार्च एवो हुं मूर्ख नथीं।॥ १०॥

तुज पातिकथी बीहते, केम कीजे व्रत जंग ॥ मो० ॥ पावक पुःख एक जव तणो,जव जव पुःख श्रनंग ॥ मो०॥ खू० ॥११॥ तुं मुज बेहेनी धर्मनी, श्रयवा धर्मनी मात ॥ मो०॥ तुं उत्तम कुखनी सुता,न घटे ए तुज वात ॥ मो०॥खू०॥११॥ श्रर्थ ॥ तुं श्रात्म हत्या करीश ए पापथी बीक धारण करीने हुं मारा व्रतनो जंग केवी रीते करी शकुं ? श्रप्तितुं पुःख एक जब माटे वे श्रने कामाशिनुं पुःख जवो जब प्राप्त थाय वे ॥ ११ ॥ तुं मारी धर्मनी बेहेन वो श्रयवा धर्मनी माता वो. वेयटे कहुंबुं के तुं उत्तम कुखनी पुत्री होवाथी तने श्रावी वात करवी घटती नथी. ॥ ११ ॥

नृप वचने सुर हरखीयो, विरमी खेचरी रूप ॥ मो० ॥ सुर रूपे परगट थयो, पाम्यो विस्मय जूप ॥ मो०॥ळू०॥१३॥ सुर कहे श्रहो श्राजा धणी,जेम प्रशंस्यो इंद ॥ मो० ॥ दीठो में तुज तेहवो, सुप्रसन्न मुख श्ररविंद ॥ मो० ॥ ळू० ॥ १४ ॥ श्रर्थ ॥ चंदरायनां श्रावा वचनोथी देवता हर्ष पाम्यो ते विद्याधरीनुं रूप फेरबी देव रूपे प्रगट थयो जेथी राजा श्रत्यंत स्थार्थ्य पाम्यो ॥ १३ ॥ देवताए कहुं के हे स्थात्रा नगरीना स्वामी जेवी इंड महा-राजे तमारी प्रशंसा करी तेवाज कमलना जेवा प्रसन्न मुखवाला तमे शियलवंत हो एवी मने खात्री सह.१४

जननी धन्य जे तुज जाखो, पुत्र रत्न शीखवंत ॥ मो० ॥ न ठछो मुज माया थकी, धीरज गिरथी श्वनंत ॥ मो० ॥ सू० ॥ १५ ॥ कुसुम वृष्टि देवेकरी, नृपना प्रणमी पाय ॥ मो० ॥ सुर पहोतो निज थानके, हर्ष हृदय न समाय ॥ मो० ॥ सू० ॥ १६ ॥

हुष हृदय न समाय ॥ मो० ॥ लू० ॥ १६ ॥ श्रायं ॥ तमारी माताने धन्य हे जेए श्राया शियलवंत पुत्र रत्नने जन्म श्राप्योः तमे मारी रचेली मायाना फंदमां न फस्या तथी तमारूं धैर्य मेरू पर्वतथी पए घणुं मोदुं हे ॥ १५ ॥ पही देवताए तेना लपर पुष्पनी वृष्टि करी श्राने राजाने नमस्कार करी श्रांतःकरएमां श्रात्यंत हर्ष धारए करतो देवता पोताने स्थानके पहोंच्योः ॥ १६ ॥

श्राव्यो प्रेमला सिन्नधे, तत्क्षण चंद जूपाल ॥ मो० ॥ चोथा उल्लासे श्रहारमी, मोहने पत्रणी हाल ॥ मो० ॥ लू० ॥ १९ ॥ श्रर्थ ॥ चंदराजा पण तरतज प्रेमला लड़ी पासे श्राव्याः ए प्रमाणे चोथा उलासमां श्रहारमी हाल मोहनविजयजीए कही ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

प्रात हुर्ग उदयो तपन, चंद जूप कुल जाण ॥ शीख खद्दी मुख बेद्देननी, श्राजा कर्युं प्रयाण ॥ १ ॥ साध्या पंथे जनपद घणां, प्रणमाव्या नृप कोिन ॥ परणी तरूणी सात,सेंदेव वधूनी जोिन ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ प्रातःकाल थयो श्चने सूर्योदय थतांज पोताना कुलने विषे सूर्य समान एवा चंदराजाए ली-क्षावती बेहेननी रजा लड़ श्चाप्रापुरी तरफ प्रयाण कर्युं ॥ १ ॥ रस्ते जतां श्चनेक देशोने साधतां क्रोडो राजाने ताबे कर्या. वली देवांगना सददा एवी सातसो स्त्रीर्छ साथे पाणि प्रहण कर्या. ॥ २ ॥

> एम अधिके आमंबरे, वाजते विजय निसाण ॥ दीठा नयणे अनुक्रमे,आजापुरी अहि'ठाण ॥३॥ पामी शुद्धि गुणावली,हरस्यो सुमति प्रधान ॥ पुर अधिकारी प्रमुखयी, जेट्यो शशि राजन ॥ ४॥

श्चर्य ॥ एम श्चर्यंत श्चाडंबर सहित विजयना मंका वगडावतां श्चानुक्रमे तेलंनी दृष्टिए श्चाजापुरीनां ऐंधाए प्राप्त थयां ॥ ३ ॥ गुए।वस्ती राए।ने समाचार मस्तांज ते श्चने सुमित प्रधान श्चर्यंत हर्ष पाम्यां श्चने नगरनी प्रजा तथा सर्व श्चिकारी मंमसने साथे स्वरं मोटा श्चाडंबर सहित सामैयुं स्वरं श्चावीने चंद रायनी सर्वेए जेट सीधी। ॥ ४ ॥

सनमानी सघली प्रजा, चंदे लह्या आनंद ॥ क्रशस प्रश्न पाम्या सकल, उदित उल्लास आमंद ॥ ५ ॥ घर घर ययां वधामणां, प्रगट्यो प्रेम अंकूर ॥ यह फरी आजापुरी, आव्ये चंद सनूर ॥ ६ ॥ श्चर्य ॥ चंदराजाए श्चानंद सहित सर्व नागरिक जनोनुं सन्मान कर्युं. पठी देम कुशलनां प्रश्नो पुरुता श्चरयंत श्चानंदोत्सव प्रगट थयो ॥ ए ॥ घरे घर श्चानंदनी वधाइल थइ. प्रेमना श्रंकुरा श्चरस परस प्रगट थया, श्चने चंद राजा श्चाववाथी श्चाजापुरी पण फरीने तेजोमय थइ. ॥ ६ ॥

> नरनारी नृप निरखवा, टोबे मख्या श्रनंत ॥ नृप पुर पेसारो करे, जह बिरूद बोबंत ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ नरनारीना श्चरणित समुदाय चंद रायने निरखवा ठामे ठाम एकत्र श्वया श्चने चंदराजाए जाट चारणो बिरूदावली बोखते नगरने विषे प्रवेश कर्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल १ए मी ॥ ॥ जुंबखनानी देशीमां ॥

पूरमां पेसारो कयों रे, जूपे हर्ष श्रतीव ॥ सुरंगव धामणां ॥ जेम श्रसंख्य प्रदेशथी रे, घट मांही जेम जीव ॥ सु०॥ १॥ मुख श्रागल रथ सातसें रे, चाले चौटा विचाल ॥ सु०॥ जिन मत नयसाते तणारे, सात सयां चक्रवाल ॥ सु०॥ १॥

श्चर्य ॥ चंद राजाए हर्षजर श्चाजानगरीमां जेम श्चसंख्य श्चात्म प्रदेशवालो जीव शरीरमां प्रदेशो सिहत प्रवेश करे तेवी रीते प्रवेश करतो हवो ॥ १ ॥ वली सामैयामां चौटा मध्येश्री सातसो रथो श्चागल चालता हता ते जाणे स्याद्वाद मतना सात नयोना प्रकारांतरे श्वयेला सातसो जेदना जेवा शोजता हता ॥ १ ॥

हलक्या मदफर गजतणा रे,करता श्रक्षिकंकार ॥ सु०॥ सुणीये सुयश मृदंगना
रे, प्रगट्या मधुर धोंकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ चपल तुरंगम कुदतारे,कीरित नदीना
तरंग ॥ सु० ॥ पंच रंग नेजा फरहरे रे, जेवा विजयना श्रंग ॥ सु० ॥ ४ ॥
श्रिश्री ॥ जेना कुंजस्थलमांथी मदफरी रह्यो वे अने जेनी फरता जमरार्ज गुंजारव करी रह्या वे एवी
हाथीर्जनी शोजा विशेष वे वली सुंदर यशनो श्रवाज करता एवा मधुर स्वरवाला मृदंगोनो नाद पण
संजलाय वे ॥ ३ ॥ श्रत्यंत वेगवाला श्रश्यो कुदी रह्या वे ते जाणे कीर्त्ति रूपी नदीना मोजा जबलता
होय तेवा जासे वे वली विजयना श्रंगजृत एवा पंचरंगी वावटार्ज वाम वाम फरकी रह्या वे. ॥ ४ ॥

दीपे पायक दल जालुं रे, नौतम ज्योतिष चक्र ॥ सु० ॥ चंद विराजे तेहमां रे, लंढन रहित व्यवक्र ॥ सु० ॥ ५ ॥ त्रंबालु गुजे घणा रे, जल धर ध्वनि श्रनुकार ॥ सु० ॥ मंगल तूर जिल्ली रवेरे, वरसे वसु जलधार ॥ सु० ॥ ६ ॥

श्चर्य ।। सुशोजित एवं पायदल जाएं नवीन ज्योतिष चक्र-मंडल होय तेवं जासमान श्वर रह्यं हे तेमां लंडन वगरनो तथा सरल एवं। चंमराय चंडमानी जेवो बिराजे हे ॥ ए ॥ मेघना गर्जारवनी जेम नोबतो गडगडी रही हे, तेमज मंगलमय वाजित्रोनो ध्वनि तमराचना ध्वनि जेवो श्वर रह्यो हे. ते साथे सिक्तीनो वरसाद वरसे हे ॥ ६ ॥

पग पग प्रणमे पुरजनारे, कहे सहु यइ वाचाल ॥ सु० ॥ जोतां अमे चातुक परे रे, तुम आगमनी वाट ॥ सु० ॥ ७ ॥ आज कृतारथ सहु ययारे, देखी नवल देदार ॥ सु० ॥ तमे स्वामी चिर प्रतपजोरे, प्रजाना प्राणाधार ॥ सु० ॥०॥ अर्थ ॥ नागरिकजनो पगले पगले प्रणम करतां, सर्वे वाचाल थइ कहेता हवा के हे महाराज ! अमे चातुक पही वरसादनी जेम तेम आपनी राह जोइ बेठा हता ॥ ७ ॥ आपना पधारवाधी आपनुं देदीप्य मान स्वरूप जोइने अमे आजे सर्वे कृतार्थ थया ठीए हे महाराज ! आप दीर्घकाल प्रकृष्ट पणे तपजो— आपनो प्रताप वधजो. आप प्रजाना प्राणाधार ठो. ॥ ए ॥

चंद प्रजा सनमानतो रे, गजस्थित देतो दान ॥ सु० ॥ नाखे मनु पीयुष वटा रे, नगरी प्रते बहु मान ॥ सु० ॥ ए ॥ जोसी टोलीये मली रे, गाय मधुरां गीत ॥ सु० ॥ सुर गायनी एहवी रे, न लहे गाननी रीत ॥ सु० ॥ १० ॥ ऋर्ष ॥ चंद राजा पण प्रजाने सन्मान आपतां हित जपर बेठा बेठा याचकोने दान वरसावी रह्या है. ते जाणे नगरमध्ये बहुमान पूर्वक अमृतनो छंटकाव करतो होय तेवुं खागतुं हतुं ॥ ए ॥ कुमारिकार्ण टोखा बंध एकत्र मखी मधुर गीतो गाय छे. ते एवां तो सरस रीते गाय छे के देवकुमारी एण ते गायननी रीति जाणती न होय तेवुं खागे छे. ॥ १० ॥

वत्र सुरडु कल्याणनो रे, चामर वत्र ससंत ॥ सु० ॥ श्रानंद फल श्रमानतो रे, श्रवनिपति सोहंत ॥ सु० ॥ ११ ॥ मोती वधावे मानुनी रे, जे स्वांते जत्पन्न ॥ सु० ॥ जाणीए पुत्र जनक प्रते रे, श्रावी मसे श्रासन्न ॥ सु० ॥ ११ ॥ श्रर्थ ॥ कस्याण रूपी कस्प वृद्ध जेवा वत्र श्रमे चामरो महा तेजस्वी रूपे फरकतां हतां. तेना श्रानंद रूपी फलोने श्रवनिपति श्रास्वादन करतो शोजतो हतो ॥ ११ ॥ सुघड स्त्रीचे स्वाति नद्द्यना जत्पन्न श्रयेसा मोतीचित्री वधावती हती. ते जाणे पुत्र पितानी पासे जइ तेने जेटतो होय तेवा दिसता हता. ११

एम आमंबरे आवीयो रे, जूपति निज दरबार ॥सु०॥ राज सजाए विराजीयो रे, निषधे जेम दिनकार ॥ सु० ॥ १३ ॥ सामंत सवि कीथा विदारे, आपापणे आवास ॥ सु० ॥ मंत्री प्रमुख विसर्जियारे, सनमानी सुविखास ॥ सु० ॥१४॥

श्चर्य ॥ ए प्रमाणे महा श्चाडंबर सहित चंदराय पोताना दरबारमां श्चावतो हवो. जेम निषध पर्वतमां सूर्य प्रवेश करे तेवी रीते राज सजामां राजा विराजमान श्वतो हवो ॥ १३॥ श्चानुक्रमें राजाए श्चानंद सहित सजाने सन्मान श्चापी सर्वे सामंतोने विदाय कर्या. जेड पोत पोताना श्चावासे गया. त्यार बाद मंत्री विगेरे सर्वने विसर्जन करी सजा बरखास्त करी. ॥ १४॥

श्राव्यो निज श्रंते छरे रे, सतसया परिवार ॥ सु० ॥ प्रणमी नारी गुणावसीरे, प्रमुदित थयो जरतार ॥ सु० ॥ १५ ॥ दीधां युवतीयो जणीरे, मंदिर श्रतिहि छत्तंग ॥ सु० ॥ जोजन जक्ते गुणावसीरे, पति संतोष्यो सुरंग ॥ सु० ॥ १६ ॥ श्रर्थ ॥ पत्री राजा पोताना श्रंतःपुरमां श्राच्यो सातसे राणीं चेने परिवारे परवरेसा एवा राजाने गुणावसीए प्रणाम करतांज ते श्रत्यंत हर्ष पाम्यो ॥ १५ ॥ सर्व राणीं चेने श्रत्यंत सुंदर श्राने चेचा एवा राज

मेहेलोमां वास स्थान आप्यां. अनुक्रमे गुणावलीए पोताना स्वामिने हर्ष सहित षट्रस युक्त जोजन पानथी संतुष्ट कर्याः ॥ १६॥

रंगरसी घरे श्रावीयारे, श्री श्रीचंद जूपास ॥ सु०॥

मोहने चोथा जल्लासनीरे, कही जंगणीशमी ढाख ॥ सुण ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एवी रीते रंगरखीआते श्रीचंद महाराजाए पोताने घेर वास कर्यो. कवि मोहन विजयजीए चोथा उक्षासनी उंगणीशमी ढाल कही. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

सुंदर विनता सातसे, थकी चंद खयखीन ॥ बनी प्रीत पयनीर सम, श्रथवा जल जेम मीन ॥ १ ॥ न जणावे स्त्री सातसें, शोक संबंध लगार ॥ यावा नहींदे श्रहिचता, निपुण जिहां जरतार ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चर्यंत रूपवंत एवी सातसो राणीचे साग्चे राजा प्रेममां मशगुख थतो हवो. तेचेनी प्रीति छ्घ श्चने पाणीनी जेवी श्वश्चवा जल श्चने मीनना जेवी श्वरू रही ॥ १ ॥ सातसो स्त्रीचेमांश्री कोरू पण श्चरस परस पोतानी वचे शोक संबंध हे एवं जरा पण देखामती न हती. तेमज ज्यां पति चतुर होय त्यां श्चरूचित्राव पण केम चत्पन्न थवा दे ॥ २ ॥

जोवानी स्त्री सातसो, पण मनथी थइ एक ॥ मस्ती बहु मन एक मन थयुं, ए कोइ अधिक विवेक ॥ ३ ॥ इसे रमे कीडा

करे, पितश्री सहु एक रंग ॥ एक नावे वेठां थकां, मूरख करे कुढंग ॥॥॥ अर्थ ॥ दृष्टिए सातसो राणी ए पढे, परंतु मनमां तो जाणे एकज होय तेम खागतुं हतुं. अनेक मन एकत्र थह एक मन थह गयुं ते कोइ छत्कृष्ट विवेक समजवो ॥ ३ ॥ पितनी साथे एक रंग सिहत सर्वे राणी इसतां, रमतां, जोग विखास प्रमुख अनेक कीडा करे हे. एक नावमां बेठा पही जे मूर्ख होय तेज एक बीजाथी विरुद्ध वर्त्तन करे. ॥ ॥ ॥

चंदे पटराणी करी, गुणावलीने ताम ॥ प्रेमला लही प्रमुख सवि, राजी यह नियाम ॥ ॥ विलसे विविध शृंगार रस, चतुरा संगे चंद ॥ राज काज तेम निर वहे, जन पामे आनंद ॥ ६॥

अर्थ ॥ पठी चंद राजाए गुणावलीने पटराणी करी स्थापी. जेथी प्रेमला लड़ी विगेरे सर्वे निर्मल अंतःकरण पूर्वक हर्ष पामी ॥ ए ॥ अनुक्रमे चंद राजा चतुर राणी साथे शृंगार रस युक्त अनेक प्रकारे जोग विलास जोगवे हे. वली राज्य संबंधी काम काज पण तेवी रीते चलावे हे के जेथी प्रजाना मनने संपूर्ण संतोष याय हे. ॥ ६ ॥

एक दिन चंद गुणावली, करे वचन रस केलि॥ ते रसनी श्रागल सुधा, मुकी जे श्रवहेलि॥ ७॥

श्चर्य ॥ एकदा चंदराजा श्चने गुणावली राणी वाणी विलास रूप कीडा करतां इतां. ते रसनी पासे श्चमृत पण तजी देवानी इञ्चा श्राय एवी मजा पडती इती. ॥ ७ ॥

चंदराजानो रास.

॥ डाख २० मी ॥ ॥ वीकासेण मारुं॥ ए देशी॥

प्रितमजी हो, कहे कर जोडी ग्रणावली॥ हो साहिबा॥ निसुणो प्रितम मुज बोख ॥ सेंण मीठां वेण वाला॥ प्रितम०॥ काड्यां किठन में तुम विना हो साहिबा, वरस गया जे सोख ॥ से०॥ १॥ प्री०॥ याजो प्रेमलानुं जलुं॥ हो साहिबा॥ रेहे जो श्रचल गिरिराज॥ से०॥ प्री० जे तुम दीठां लोयणे हो॥ सा०॥ मुज जीवन शिरताज॥ से०॥ श॥

श्चर्य ॥ इवे गुणावली चंद राजाने बेहाय जोडी प्रणाम करी केहेवा लागीके हे स्वामिनाय ! मारी विनंति सांजलो. में श्चापनी विना सोल वरस महा मुशीबते काढ्यां हे ॥ १ ॥ हे नाय ! प्रेमला लहीतुं पण जलुं थजो. तेमज हे मारा प्राणना शिरताज ! ते सिद्ध गिरिराज पण श्चचल रहेजो के जेना पसाय- श्री में श्चापने फरीश्री नजरे दीहा. ॥ १ ॥

प्रीण ॥ हुं जो गइ विमलापुरी हो ॥ साण ॥ सासूने लगवाम ॥ सेण ॥ प्रीणा तो तुमे पराखा प्रेमला हो ॥ साणा ए मुज मान जो पाड ॥ सेण ॥३॥ प्रेमदाजी हो ॥ चंद हसी कहे रे प्रिये हो॥साणालह्यो जे पंखी स्वतार

॥से आप्रेगा खेखे ते गणजो वसी हो ॥ साव ॥ ते पण तुम उपगार ॥ से व ॥ श्राध्य ॥ वसी हे स्वामि ! सासुनी संगाथे हुं जे विमदापुरी गइ अने साथे गुप्त रीते आवी तमे जे प्रेमदा स्वीने पराष्या ते सर्वे तमे मारो उपकार मानजो एम इसीने कहां ॥ ३ ॥ पत्नी चंदराजाए इसीने कहां हे प्रेमदा ! में जे पंखीनो अवतार धारण कर्यो ते तमारा उपकारनी गणतरीना खेखामां गणजो ॥ ॥ ॥

प्री० ॥ जाखे गुणावली हेजथी हो ॥ साणान होत विहंग आकार ॥ से० ॥ प्री० ॥ तो गिरिवर केम फरसता हो ॥ सा० ॥ केम तरता संसार ॥ से०॥४॥ प्री० ॥ अवग्रण पण ग्रण ग्रण जाणजो हो ॥सा०॥ रखे कोइ धरता रोष ॥ से० प्री० ॥ जतम जन तुम सारिखा हो ॥ सा०॥ वदे नही पर दोष ॥ से० ॥६॥

ऋर्थ ॥ गुणावलीए कह्यं हे नाथ ! जो आप पद्दी न थया होत तो गिरिराजनी फरसना पण तमने क्यांथी थात अने संसार समुद्रने पण केवी रीते तरत ? ॥ ए ॥ माटे हे नाथ ! अमारा अवगुणने पण गुण तरीके मानजो. लेशमात्र गुस्सो धरता नहीं वली तमारा सरखा जत्तम मनुष्यो कदापि बीजानो दोष होय ते मनमां लावेज नहीं ॥ ६ ॥

प्री०॥ हुं थइ मितनी पातली हो ॥ सा०॥ करजो गुन्हो बगसीस ॥ से०॥ प्री०॥ नयणां न देती सूकवा हो ॥ सा०॥ त्रांसु सासू निशदिश ॥ से०॥५॥ प्री०॥ ए सोहणे मिलती रखे हो ॥ सा०॥ चढती कहिंचे रखे चित्त ॥ से०॥ प्री०॥ एहने जली दीधी सजा हो ॥ सा०॥ हो जो कुशल तुम नित ॥ से०॥ श्रांशी वली हे प्राणनाथ! हुं श्रकलमां मंद थइ तथी माराथी जे गुह्रो थयो ते माफ करजो ए

सासुए निरंतर तमे गया पठी एक पण दिवस मारी आंखोना आंसु सुकावां दीधां नथी।। 9 ।। वली हे नाथ ! ए स्वप्नामां पण सामी मली सारी नथी अने हैयामां पण याद आवता हितकारी नथी. तेने तमे जे शिक्षा आपी ते रूडुंज कर्युं हे. तमारूं निरंतर सारूं होजो.।। ए ।।

प्री०॥ जे दिनथी तमे विठड्या हो ॥ सा०॥ शिवमालाने साथ॥ से०॥ प्री०॥ ते दिनथी गति माहरी हो ॥ सा०॥ जाणे ठे जगनाथ॥ से०॥ ए॥ प्री०॥ खावुं हुं छाजथी हो ॥ सा०॥ मनुष्यणीने उंछ ॥ से०॥ प्री०॥ रखे तमे करीने मानता हो ॥ सा०॥ कहे ते साकर घोछ ॥ से०॥ १०॥ खर्ष ॥ वछी हे स्वामि ! जे दिवसथी में छापने शिवमाछाने सोंप्या हता ते दिवसथी मारी जे गति हाल हवाछ थया ठे, तेमात्र त्रिछोकनो नाथज जाणे ठे॥ ए॥ हे नाथ ! हुं छाजथीज हवे मनुष्यनी हारमां छावुं हुं एम मानजो छा वात हुं तमने जा मनाववाने खातर साकरना रसनी जेम मीठी मीठी कहुं हुं एम रखे मानता ॥ १०॥

त्री ।। चंद कहे रे श्रंगने हो ॥ सा ।। तुं मुज जीवन मूल ॥ से ।। त्री ।। ।। जाणुं ढुं तुं माहरी हो ॥ सा ।। ढे साची श्रनुकूल ॥ से ।। ११ ॥ प्री ।। ।। तुम माटे इहां श्रावीयो हो ॥ सा ।। विमलपुरीश्री एम ॥ से ।। प्री ।। ।। लघु वय संगी जे विठड्या हो ॥ सा ।। तेहने न मलीए के म ॥ सें ।। ११ ॥ श्रश्री ॥ चंदराये कहुं हे प्यारि ! तुं तो मारा जीवतरनुं मूल हो । तुं मारीज हो श्रने खरेखरी मने सानुकुल हो एम मानुं हुं ॥ ११ ॥ तेशीज हे प्यारि ! विमलापुरीश्री तमारे माटेज श्रहीं श्राव्यो. जे बाल वयना सोबतीनो वियोग श्रयो होय तेनो मेलाप करवा मनराजी केम न होय ? ॥ ११ ॥

प्री० ॥ निरवहजो रूडी परे हो ॥ सा० ॥ ए सघलो घर जार ॥ से०॥ प्री० ॥ देशो तमे जमग्रुं श्रमे हो ॥ सा० ॥ तुम सम नहीको संसार ॥ से० ॥ १३ ॥ प्री० ॥ नाह वचने रंजी घणुं हो ॥ सा० ॥ वनिता ग्रणनी गेह ॥ से०॥ प्री०॥ कीधी सजा दरवारमां हो ॥ सा० ॥ चंद नृपे ससनेह ॥ से० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ हे प्यारि ! हवे घरनो सघछो कारजार तमे रूमी रीते चलावजो. श्चमे तो तमे जे श्चापशो ते जमगुं. तमारी समान श्चमारे जगत्मां बीजुं कोइ वहालुं नश्ची ॥ १३ ॥ स्वामिनां वचनश्ची गुणनुं साहात् गृह एवी गुणावली बहुज हर्ष पामी. त्यार बाद चंद राजाए स्नेह सहित मोटो दरबार जर्यो. ॥ १४ ॥

प्री० ॥ श्राट्या सचिव महेसरा हो ॥ सा० ॥ तेमज पंकित परिवार ॥ से० ॥ प्री० ॥ हाख हुकम सहु शिर धरे हो ॥सा०॥ साचवे नृप श्राचार ॥ से०॥१५॥ प्री० ॥ हित श्राणी सहुनो कह्या हो ॥ सा० ॥ चंदे निज श्रवदात ॥ से० ॥ प्री० ॥ चे श्राशिष् सहु सजा हो ॥ सा० ॥ धन्य नृप पुण्य विख्यात ॥ से०॥१६॥ श्रर्थ ॥ ते वखते राज्य सजामां प्रधान विगेरे महान् ऐश्वर्यवाद्या तथा पंडितो परिवार सहित श्राव्या सर्वे राजानो हुकम मस्तके चडावता हता राजा पण पोतानो विवेक-श्राचार साचवता हता ॥ १५ ॥ चंद

राजाए सजामां पोतानो सर्व वृत्तांत प्रेम सहित कह्यो. ते सांजलीने सज्य जनो राजाने आशीरवाद देवा लाग्या अने कहेवा लाग्याके आपने घन्य वाद घटे हे. आपनुं पुख्य जग प्रसिद्ध हे. ॥ १३॥

प्री० ॥ स्रोक सकल सुखीया थया हो ॥ सा० ॥ पेखी पुह्वी पाल ॥ से० ॥ प्री० ॥ मोहने चोथा उल्लासनी हो ॥ सा० ॥ जाखी वीशमी ढाल ॥ से० ॥ २९ ॥ श्रर्थ ॥ पृथ्वी पित चंदरायने तेजस्वी स्वरूपे निहालीने नगरना सर्वे लोको श्रत्यंत सुखी थया. एवी रीते मोहन विजयजीए चोथा उल्लासनी वीशमी ढाल कही. ॥ १९ ॥

॥ दोझा ॥

सात सयां श्रंते उरी,पित रंजनने काज ॥ दाखेनव नव चातुरी, हाव जाव करी लाज ॥ १ ॥ गीत कवित्त प्रहेलिका, गाहा दोधक ठंद ॥ निसुणी वनिता वचनथी, चंद लहे सानंद ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चंतःपुरनी सातसो राणीं पोताना स्वामिनाथने रंजन करवा माटे नवा नवा प्रकारना शृंगार रसनी चतुराइ जरेखा हाव जाव मर्यादा पूर्वक बतावे हे ॥ १ ॥ जुदी जुदी राणीं जेना मुखयी संगीत, किवत्त श्चरूर तथा मात्रा मेखना जुदा जुदा गाया, दोधक विगेरे हंदो सांजवीने चंदराजा श्चानंद प्राप्त करता हता। ॥ १ ॥

नित नित विससे विविध सुख, सांसारिक मन रंग ॥ जोग छदय ज्यां स्वर्गी हुवे, त्यां स्वर्गी राज्य श्राजंग ॥ ३ ॥ चंद जाणी निव विसर्थों, नट वरनो छपगार ॥ संपत्तिमां गुण सांजरे, श्रहो छत्तम श्राचार ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ चंदराजा विविध प्रकारना संसारी सुख निरंतर हर्ष सहित जोगवे हे. ज्यां सुधी जोगनो छदय होय त्यां सुधी राज्य श्चर्जगपणे पाले ॥ ३ ॥ नटराय शिवकुमर चंद राजाना मनमांश्री विसर्यो न होतो तेना छपगार तेने याद श्चावता हता. संपत्ति प्राप्त श्वतां करेला गुण सांजरे तेज छत्तमनी रीति हे. ॥॥।

निर्गुणी जन गुण निव गणे, गुणवंत गुणना दास ॥ गुणी तणे कारण गगन, दिनकर करे प्रकाश ॥ ५ ॥ गाम सीम आपी घणां, कर्यो प्रसन्न नदेश ॥ चंदे निज जशघी कर्या, उज्वल देश विदेश ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ निर्गुणी मनुष्यो करेखा उपकारने संजारताज नथी. श्चने गुण्वंत होय हे तेनो गुण्ना दास होय हे एवा गुणीने खातरज सूर्य श्चाकाशमां प्रकाश करे हे ॥ ५ ॥ नटराय शिव कुंवरने गाम गरास श्चनेक प्रकारथी श्चापीने बहुज प्रसन्न कर्यो. एवी रीते श्चनेक प्रकारे यशः कीर्त्ति संपादन करी देश विदेशमां उज्वखता मेखवी. ॥ ६ ॥

राजा राज्य प्रजा सुखी, छुःख नही खवखेश॥ नर सुर तिरि सहुको कहे, जय जय चंद नरेश॥॥॥

श्रर्थ ॥ उत्तम न्यायथी राज्य पासतां राजा श्रने प्रजा बंने सुखी थया लेश मात्र इःख रह्यं नही. देव, मनुष्य श्रने तिर्थेच सुधां सर्वे चंद महारायनो जय जय बोखता हता ॥ ७ ॥

॥ ढाख ११ मी ॥

॥ आवी धुतारा नंदना रे, ते घूत्युं गोकुल गाम ॥ ए देशी ॥ प्रेमला लही गुणावली बेहुनो, वधते रंग सदीव ॥ व० ॥ जाणे बे कायाने अलगी, पण जाणे एक जीव ॥ प० ॥ गोठी सलुणी आवी बने तो, जो होवे पूरण जाग्य ॥ जो० ॥ ए आंकणी ॥ प्रीतमली बेहु नयणां जेवी, अथवा जारंम अंग ॥ अ० ॥ तेम ए बेहुनुं चित्त बंधाणुं, पूरव लिखित प्रसंग ॥ पू० ॥ गो० ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ गुणावली श्चने प्रेमला लब्बी बंनेनो प्रेम निरंतर हर्ष पूर्वक वधतो हतो. बंने जणा मात्र शरीर जुदा श्चने जीव एक एवी रीते रेहेता हता. किव कहे वे के ज्यां उत्तम जाग्य होय त्यांज गोष्ट सुंदर बनी श्चावे वे ॥ १ ॥ ए बंने जणी जेंने श्वंतःकरण प्रेमश्ची एवं तो एक मेक श्वयुं के जाणे बंने चक्षुर्जना जेवी तथा जारंक पद्दीना शरीर जेवी तेमनी प्रीति श्वरु पूर्व कर्मना संयोगश्चीज श्चा बनाव बन्यो हतो. २

त्र्पति पण ए बेहुनी उपर, राखे सरखो जाव ॥ रा० ॥ हुई सुदृष्टिना जामण हुंती, रस गोरसनो जमाव ॥ र० ॥ गो० ॥ ३ ॥ सुरपुरथी सुरकोइ चवीने, उदर दरी उत्पन्न ॥ ऊ० ॥ राणी गुणावलीए शुज दिवसे, प्रसब्यो पुत्र रतन्न ॥ प्र० ॥ जो० ॥ ४ ॥

श्रिश्री ।। राजापण बनेना उपर सरखो राग राखतोः एवी रीते उत्तम एवी समान दृष्टिना मेखवणश्री प्रीतिरूपी रसना गोरसनो सारो जमाव श्रयोः ॥ ३ ॥ देव खोकमांश्री कोइ देव चवीने गुणावली राणीनी उदर रूपी कुखमां उत्पन्न श्रयोः राणी गुणावलीए शुजदिवसे पुत्र रखने जन्म श्राप्योः ॥ ४ ॥

दीधी वधामणी चंद नृपतिने, दासीए परम श्रनुप ॥ दा० ॥ सुतजन्मे राजाए तेइने, कीधी कमला रूप ॥ कीवागोवाया इरख्यो चंद तनुज मुख देखी, जेम दरिझीने निधान ॥ जेव ॥ (पाठांतरे) समर्प्या श्रर्थीने

दान ॥ स० ॥ दीधुं नद्दत्र तणे अनुसारे, गुण शेखर अतिधान॥गु०॥गो०॥६॥ अर्थ ॥ पुत्रनो जन्म यतांज चंदराजाने दासीए पुत्र जन्मनी छत्तम अनुपम वधामणी आपी जे सां- जलीने राजाए दासीने अलंकारो विगेरे आजुषणो आपी लक्षी सहश बनावी दीधी. ॥ ५ ॥ जेम दिर- दीने निधान प्राप्त यतां ते जेवो हर्ष पामे तेम चंदराजा पुत्रनुं मुख देखी हर्ष पाम्यो. पठी याचकोने बहुज दान आप्या. अनंतर नक्त्रने अनुसारे पुत्रनुं "गुणशेखर" एवं नाम पाइ्युं. ॥ ६ ॥

वाघे पुत्र दिवाकर सरिखो, रुपे रित पित जोम ॥ रु० ॥ मात पिताना मनोरथ पूरे, सुत सुरतरुनो होम ॥ सु० ॥ गो० ॥ ९ ॥ प्रेमलाए पण प्रसद्यो बालक, तेपण रुप निधान ॥ ते० ॥ मणि शेखर नामे ह ल्लाप्यो, बेहु सुत प्रेम समान ॥ बे० ॥ गो० ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ श्चनुक्रमे ते पुत्र साहात् कामदेव सरखो रूपवंत सूर्यनी जेम दिवसे दिवसे प्रकाशमां वधवा लाग्यो. कहपवृक्तना छोडवा समान ते पुत्र माता पिताना मनोरश्रो परिपूर्ण करवा लाग्यो. ॥ ७ ॥ प्रेमलालहीए पण जाणे रूपनो जंडार होय एवा बालकने जन्म श्चाप्यो. तेनुं नाम मणिशेखर पाडयुं. चं-दराजा बंने पुत्रो छपर सरखो प्यार राखे छे. ॥ ए ॥

बेहु सुत चंद जहांगे बेसे, खेसे खेस विशास ॥ खे० ॥ मान सरोव रने उपकंठे, जाणीए युगस मरास ॥ जा० ॥ गो० ॥ ए ॥ रिपुने शस्य सहोदर बेहु, अथवा निज कुस यंज ॥ अ० ॥ जेसा मित श्रुत ज्ञान तणी परे, करता शास्त्र अजंग ॥ क० ॥ गो० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ बंने पुत्रो चंदरायना खोलामां बेसे छे श्चने विविध प्रकारनी क्रीडा करे छे. जाए मान सरोव-रना कांठा जपर इंसनुं जोडलुं होय तेवा शोजे छे. ॥ ए ॥ चंदरायना छुस्मनोने तो श्चावंने पुत्रो शह्य जेवा लागता इता. पोताना कुटुंबना मनुष्योने स्थंजरूप श्चाधारज्ञत लागता इता. बंधु छं मित ज्ञान श्चने श्चतज्ञाननी जेम साथे रहीने श्चस्खिलपणे शास्त्रनो श्चन्यास करता इता. ॥ १०॥

वृद्धिव्रते पाम्याते अनुक्रमे, खेलावे केकाण ॥ खे० ॥ खीखाते जोवे थिर राखी, रथने अंबरे जाण ॥ र० ॥ गो० ॥ ११ ॥ गज असवारी करी केवारे, बेहुं रमे वन आराम ॥ बे० ॥ निज आसननी राखे ते वारे, शंका श्रति संत्राम ॥ शे० ॥ गो० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ श्चनुक्रमे वयमां मोटा श्वता श्रतां बंने जाणार्ज श्वश्व खेखवा खाग्या ते जोवा सारू सूर्यपण जाणे श्चाकाशमां पोताने रश्चने स्थिर राखी ते खीखा जोतो होय एवं खागतुं हतुं. ॥ ११ ॥ केटखीएकवार हिस्त जपर स्वारी करी बंने बंधुर्ज वनमां बगीचामां रमत रमेबे ते देखीने देवखोकनो स्वामि इंड रखेने श्चाबंने बंधुर्ज मारू सिंहासन खड़खे एवी शंका राखे बे. ॥ १२ ॥

चंद तणो शासन त्रिहुं खंडे, पाम्यो श्रित विस्तार ॥ पा० ॥ जाणीए जिल्लो केशव प्रगट्यो, श्रितुली बल शिरदार ॥ श्र० ॥ गो० ॥ १३ ॥ नृपथी कोइ नरह्यो श्रितमी, कुणराण कुणराव ॥ कु० ॥ विण ज्यमे धरणी वश्र श्रावी, केवल शील प्रजाव ॥ के० ॥ गो० ॥ १४ ॥

श्रर्य ॥ चंद राजानी श्राण त्रणे खंडमां विस्तार पूर्वक प्रवर्त्तवा खागी. जाणे बीजो कृष्ण वासुदेव श्रत्यंत बखवाननो पण शिरदार, जत्पन्न श्रयो एवं खागवा मांडयुं ॥ १३ ॥ चंदराजाने कोइ राजा के राणो न नम्यो एवं रह्यं नही. श्रश्योत् सर्वे नम्याः छद्यम विना मात्र ब्रह्मचर्यना प्रजावश्री श्रिखिख पृथ्वी स्वाधीन श्रइ. ॥ १४ ॥

नर सुर श्रसुर खेचरने जूचर, खोपी न शके खीइ ॥ खो० ॥ पण वि मखाचलना ग्रण गातां, न रहे क्रण एक जीइ ॥ न० ॥ गो० ॥ १५ ॥ जूपे निज यश पूंज सरिखा, नियजाव्या प्रासाद ॥ नि० ॥ बिंब प्र तिष्टा स्पष्ट करावी, सुनिपति पासे जल्लास ॥ सु० ॥ गो० ॥ १६ ॥ श्चर्य ॥ मनुष्यो, देवतार्च, श्चसुरो, विद्याधरो तेमज सर्व पृथ्वीवर्ती जीवो चंदराजानी श्चाइाने लोपी-शकता न इता तेवो प्रवल प्रचावन्नतां, विमलिगिरि राजना गुण गावामां एक इणवारपण जीज बंध रेहेती न इती. ॥ १५ ॥ राजाए पोताना यशःकीर्त्तिना पूंज समान महाविशाल श्चर्ने जन्य जिन मंदिरो वंधाच्या तेमां सुविहित श्चाचार्यो पासे श्चंजन शिलाका पूर्वक जिन बिंबोनी स्थापना हर्ष सहित करावी. १६

जे जे पुण्य तणी हे करणी, तेह करे महीपाल ॥ ते० ॥ मोहन विजये चोथे छल्लासे, कही एकवीशमी ढाल ॥ क० ॥गो०॥१९॥

श्चर्य ॥ श्चनुक्रमे जे जे पुण्यनां कार्यो हतां ते सर्वे चंदराजाए कर्याः ए प्रमाणे चोत्रा उद्घासमध्ये ए-कवीशमी ढाख मोहनविजयजी महाराजे कहीः ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

छोइवे कानन पालके, विनव्यो नृपति सकाज ॥ समवसर्या कु सुमाकरे, मुनिसुत्रत जिनराज ॥१॥ ते निसुणी वन पालको, दीधो सन्दमी पूर ॥ प्रगट्यो हृदये चंदने, श्रमुजवनो श्रंकूर ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ एवा श्चववरमां वनपालके श्चावीने चंद महाराजा जे निरंतर धर्म करणी कार्यो मांज काल निर्गमता हता तेने विनंति करीके हे महाराज ! श्चापणी कुसुम वाटिकामां श्री मुनिसुवत जगवान समो सयीछे. ॥ १ ॥ ते वधामणी सांजलतांज वन पालकने लक्कीवंत बनावी दीधो तत्काल चंदरायना ह्द-यमां (श्चात्म स्वरूपना) श्चनुज्ञवनो श्चंकुरो प्रगट श्रयो ॥ १ ॥

शण गार्या गज रथ तुरी, तेम आजा नर नार ॥ ससनुरि अंते जरी, पुत्रादिक मनोहार ॥ ३ ॥ सामैयु सुंदर सज्युं, गुहिर तूर निर्घोष ॥ सामंबर नृप परवर्यों, करवा समिकत पोष ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ पत्नी सामैयुं तैयार करवा श्चाङ्गा करतां, हाथीलं, घोडालं श्चने रथो तेमज श्वाजा पुरीना ना-गरिकजनो, कान्ति युक्त सातसो राणीलं श्चने मनोहर पुत्रो विगरे सर्व लक्तम सामग्रीवालुं सामैयुं सक्त कर्युं. डंकानिशान श्चने वाजीत्रोना चित्ताकर्षक नाद श्ववा लाग्या. एवी रीते सम्यग् दर्शनने पुष्ट करवा श्चामंबर सहित राजा समवसरण तरफ चाह्यो ॥ ३॥ ४॥

समवसरण निरक्यो नयण, साध्या श्रजिगम पंच ॥गढ लही शिवपद दृढ कर्यों, चंदे थइ रोमांच ॥ ५ ॥ परपद निसरणी गणी, चढ्यो चंद सोपान ॥ जेट्यो श्रति जकते करी, केवल ज्ञान निधान ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ ज्यारे चंदराये समवसरण दीवुं त्यारे तरतज तेणे पांच श्चिजिंगम जे राजा ए बन्नादितजनवा प्रमुख करवा जोइए ते साचव्या—तजी दीधा;श्चने समवसरणना त्रणे गढने निहाखतांज चंदरायने रोमांच ययो—रोमराजी हर्षश्ची विकस्वर श्वतांज मोक्तपद हढ कर्युं ॥ ७ ॥ समवसरणना पगश्चीश्चाने मोक्तपदनी निसरणी मानी चंदराय पगश्चीए चड्यो श्चने केवलज्ञान जंडार श्रीमुनिसुव्रत महाराजने श्चत्यंत जिक्त पूर्वक जेटतो हवो. ॥ ६ ॥

चंदराजानो रास.

नरनारी निज निज सत्ता, शोजावी सानंद ॥ चंदचकोर तृणीपरे, निरखे जिन मुख चंद ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ सर्व पुरुष तथा स्त्रीर्ड पोतपोतानी सजामां त्यानंद सहित बेसी सजाने शोजावता हवा. ते समये चकोर समान चंदराय, जिनराजना चंद्र समान मुखनी सन्मुख निरख्या करतो हतो. ॥ ७ ॥ ॥ ढाख २२ मी ॥

॥ श्वरिषक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ इतन रसोली रे नवली परषदा, श्रद्जुत रस श्रिजलाषी रे ॥ जिवक थया कृष्णसारतणी परे, प्रजु सन्मुख मुख रागी रे ॥ १ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चे देशना, लोका लोक विहारी रे ॥ श्रध्यातम पट साध ननी तुरी, जवतह ठेद कुठारी रे ॥ श्री० ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ ज्ञान रसनुं पान करवाने श्चरयंत तृषातुर श्रयंती एवी जन्य श्चात्मार्चनी नवी पर्षदा जे श्चा-श्चर्य जत्यन्न करे तेवा रसनीज श्चजित्वाषा राखनारी है ते सर्वे हिरण जेम चंद्रमा सन्मुख जोया करे है तेम जगवंतना मुखनी सन्मुख श्चरयंतरा गसहित जोइ रह्या है. खोकना स्वरूपना जासक, ज्ञान स्वरूपे सर्व व्यापक, एवा श्रीमुनिसुन्नत जिनराज, जन्य श्चात्मार्चना श्चर्यात्म स्वरूप रूप वस्त्र जत्पन्न करवाने तुरी समान श्चने तेर्चना जव-संसाररूप वृद्यने हेदवाने कुहाडा समान देशना श्चापे है ॥ १ ॥ १ ॥

करीए जीव सत्तावन हेतुथी, कहीए कर्मते तेह रे ॥ झानावरणादि मूल प्रकृति कही, श्रव संख्याए श्रवेह रे॥ श्री० ॥ ३॥ जूखो चे तन निकेतन स्वजावनो, वैजावे तव श्राव्यो रे॥ कर्म वर्गणाने जध् घरे पड्यो. जमनो श्रवसर फाव्यो रे॥ श्री० ॥ ४॥

श्रश्री। श्रा संसारी जीव ए मिथ्यात्व, १२ श्रविरित, २ए कषाय श्रने १ए योग एवा सत्तावन कर्म-बंधना हेतुथी जे बांधेने ते कर्म केहेवायने ए श्रात्मासाथे बंधाता कर्मनी मूल प्रकृति श्रानने तेनां नाम. १ ज्ञानावराष्ट्रीय कर्म, १ दर्शनावराष्ट्रीय कर्म, ३ वेदनीय कर्म, ४ मोहनीय कर्म, ए श्रायु कर्म, ६ नाम कर्म, ७ गोत्र कर्म, ए श्रंतराय कर्म। ॥ ३ ॥ श्रनादि कालश्री श्रा जीव पोताना शुद्ध स्वजावनी जूल मांडवाथी विजाव स्वरूपमां श्रयडायो जेथी कर्मनी वर्गणा रूप घरमां वास करी रह्यो श्रने तेज कार-णश्री तेना छपर जड-पुक्तल फावी शक्यो। ॥ ४ ॥

निवजो रेहेतारे तेह्यी श्रणावर्या, च्यारज श्रात्म प्रदेश रे ॥ जीवए खेहे तोरे सद्य श्रजीवता, नही श्रचरिज लवलेशरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ तेणे ज्ञानादिक गुण गयों विसरी, पसरी श्रग्रुऊ परनाली रे ॥ मिन्न तमांहे पाम्यो मगनता, पंके उग्रं गज मधुपाली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जो चार श्चारम प्रदेश तेनाथी त्यावरण पाम्याविना न रही शक्या होत तो त्या जीव अवस्य श्चजीवपर्णंज-जमता पामीजातः तेमां खेशमात्र संशय करवानो नथी। ॥ ए ॥ एवी रीते स्ना जीव उपर जडनुं बलवधवाथी पोताना ज्ञानादिक जे गुणो ते तदन विसरी गयो; श्रने पोते श्रशुद्ध प्रनालिकामा प्रवर्त्तवा लाग्योः जेम मदजरता हाथीना मदरूपी कादवमां जमरानी श्रेणि श्रानंदपामे तेम श्रा जीव मिथ्यात्व जावमां मग्न श्रइ रह्योः ॥ ६॥

गोलक श्रसंख्या एक वालाग्रमां, गोलके श्रसंख्य निगोद रे॥ एकेक निगोदेरे जीव श्रनंतहे, तिहां निज श्रादि विनोद रे॥ श्री०॥ ७॥ जव ज्रम एहवारे श्रतिही सूक्षा हे, श्रजिनमती निव जाणे रे॥ एम करतां व्यवहारनी राशिमां, श्राव्यो कोइक टाणे रे॥ श्री०॥ ७॥

अर्थ ॥ जगवंते कहुं के हे जन्यजीवो! एक वालना अत्यंत सूक्ष जागमां असंख्याता गोलाहे, ते मध्येना प्रत्येक गोलामां असंख्य निगोदहे, प्रत्येक निगोदमां अनंताजीवहे. ते दरेक जीवनो आदि निवास त्यांज हे. ॥ १॥ ए आदि निवास रूप अन्यवहार राशिमां जवज्रमणता एवी मोटीहे के जेनुं स्वरूप बहु सूक्ष समज वालुं हे. जिनेश्वर जगवानना मतने नहीं जाणनारा ए स्वरूपने जाणताज नथी, एवी रीते अन्यवहार राशिमां जटकतो(जवितन्यताना योगे) कोइक अवसरे न्यवहार राशिमां आ जीव आन्यो।॥।।।

कर्म विटंब्यो रे जम्यो जब चक्रमां, एकेंडियादिक कुछ पामीरे ॥ एम परिच्रमणा रे काल श्रनादिनी, करता नरही कोइ खामीरे ॥ श्री० ॥ ए ॥ श्रारे बेठा रे वारानी परे, लह्यो मानव श्रवतार रे ॥ हार्यो ते पण श्रद्युज सामग्रीए, सेवी विषय विकार रे ॥ श्री० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एवी रीते कर्मनी विकंवनाथी जब चकमां जमतां एकेंदि प्रमुख चोरासी खाख जीवा योनिमां बहुज जटक्यो एवी रीते अनादि काखश्री परिज्ञमण करतां तेना छपर छःख पडवामां कोइ प्रकारे खामी रही नही ॥ ए ॥ जेम श्रेणिबंध बेठेखा माणंसो पोतानो वारो आवे त्यारे पामी शके तेम जिवतन्य ताना योगे मनुष्य अवतार पाप्त करवानो वारो आव्यो ते मनुष्य अवतार पण विषय विकार प्रमुख अशुज सामग्रीना योगथी सेवन करी हारी गयो ॥ १०॥

ठाक्यो महा मद तेह्यकी चढी, मनना हाथमां बाजी रे॥ साहमी तेह्यी कषायादिक तणी, जन्मत्तता चढी वाजी रे॥ श्री०॥ ११॥ ममता गणिकारे श्रणिका श्रङ्गाननी, खीधो तेणे पण घेरी रे॥ परवश प्राणी रे जाणी निव शके, जे ठे जवनी फेरी रे॥ श्री०॥ ११॥

श्चर्य ॥ श्चित्रमान रूप हिंत छपर चढतां तेनो ज्ञाक वध्यो. एम थतांज सघछी बाजी मनना कबजामां गइ. संकहप वध्यो, कुतर्कनुं प्रवत्न थयुं तेथी कषायादिकैनी छन्मत्तता श्चश्वना वेगनी जेम छछटी वधती गइ ॥ ११ ॥ एवी रीते श्वज्ञाननुं प्रवत्नपणुं वधतां तेना दख मध्येनी सर्वने श्चाकर्षण करनारी ममता वेस्याए श्चा जीवने ताबे करी छीधो. एवी रीते तेनाथी परवश थतां श्चा जीवने जव चक्रमां श्चनंता काल परिज्ञमण करवुं पडशे ते वात ते जाणी शकतो नथी. ॥ १२ ॥

श्चाप न जाणे रे श्चाप स्वरूपने, पर परणीतने प्रवाहे रे ॥ कूकर निज

प्रतिरूप खर्खी जसे, दर्पणना ग्रह मांहे रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥ राय्यो कुगुरु कुदेव कुधमेथी, सुगुरू तत्त्वादि जवेखी रे ॥ खोका खोक प्रदेश विषे थयो, ए चेतन बहु जेखी रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ पर पुर्गिलिक स्वरूपमां श्चाजीव मशगुल थतां तद्रूप प्रवाहमां तिणातां जेम कुतरो श्चारि सामां पोतानुं प्रतिविंव देखी सामो बीजो कुतरो है एम मानी तेना सामो जसे है परंतु श्चा पोतानुं प्रति बिंव है तेम जाणतो नथी, तेवी रीते पोताना स्वरूपने जाणतो नथी ॥ १३ ॥ शुद्ध देव, गुरू, धर्मने तजीद्द, कुदेव, कुगुरू श्चने कुधर्ममां राची रह्यो. एम श्वतां लोका लोकना प्रदेशने विषे श्चा जीवे श्चनंता जव कर्या. ॥ १४ ॥

तेजस कार्मण नावाए चढयो, रागादिक ते जमावे रे ॥ जीम जवो दिध हुंती प्राणी छै, जिन मत घाट न पावे रे ॥ श्री० ॥ १५ ॥ निमित्त प्रयोगे रे श्रविरति श्रणुसर्यों, देशविरिति मांहि पेसे रे ॥ व्रत पोसह पञ्चख्खाण पूजादिके, कर्म संजारने खेसे रे ॥ श्री० ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ एवी रीते श्चा संसार समुद्र जे महा जयंकर तथा विशाख है तेमां तेजस श्चने कार्मण रूप नावमां चढतां, राग देषादि पवनोश्ची समुद्रमां जमावतां श्चा प्राणी जिनेश्वर जगवानना मत रूप श्चाराने पामतो नथी ॥ १५ ॥ एवी रीते संसारमां श्चनंता काख सुधी परिच्रमण करतां, जब परिणितनो परिपाक थतां, सुदेव, सुगुरूनो संयोग थवा रूप निमित्तना बखथी श्चा जीव सम्यग् दर्शन पाम्यो; श्चनुक्रमे श्चविरिपणामां रेहेतां सद्गुरूना जपदेशथी देशविरितपणुं धारण करे एटखे बत-पच्चरकाण-पोसह-जिनरा-जनी पूजा प्रमुखथी कर्मनी जाड्यताने खसेडी नाखे-कर्म पातखा करी नांखे ॥ १६ ॥

हींगलीर्रं रमती बालिका, जेम निज पित सुख पावे रे ॥ तेम द्वादश ब्रत खेखो खेखतां, श्रमुक्रमे संयम श्रावे रे ॥ श्री० ॥ १७ ॥ साधे जो श्रप्रमत्तपणा थकी, प्राणादि पंच समीरो रे ॥ रेचक पुरक कुंजक श्रद्भयसे, साष्टांग योग सधीरो रे ॥ श्री० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ जेम ढींगखा ढींगखी पणे वर वहुनी रमत रमतां वाख कुमारिका श्चनुकमे पोताना पितनुं सुख पामे हे तेम बार व्रत रूप खेखोमां रमणता करतां श्चनुक्रमे श्चा जीवने संयम प्राप्त श्वाय हे ॥ १९ ॥ श्चनु क्रमे श्चप्रमत्त पणे प्राण-श्चपान-उदान-उपान-समान ए पांचे वायुने साधतां, रेचक, पुरक श्चने कुंजक रूप प्राणायामनो श्चन्यास करे तो ते धैर्यवंत श्चातमा श्रष्टांग योग सिद्ध करे ॥ १० ॥

लागें ताली रे तारा दृष्टियी, धरे श्रमृत श्रनुष्टान रे॥ श्रावे चिदा-नंद गेह स्वजावमां, लहे केवल परधान रे॥ श्री०॥ १ए ॥ थइने श्रक्षेशीरे हेतुविना तिहां, एरंम बीज दृष्टांते रे ॥ पामे पंचम गति श्रवगाहना, थइ परमातम प्रांते रे॥ श्री०॥ २०॥

श्चर्य ॥ एवी रीते तारा दृष्टिश्री मांडी आठे दृष्टिए वर्त्ततां अमृत कियामां प्रवर्त्ते तो शुद्ध आतम स्व-

रूपना गृहमां प्रवेश करी प्रधान केवल झान प्राप्त करे ॥ १ए॥ पठी अलेशीपणुं प्राप्त अतां, कर्म बंधना हेतुनो अजाव थतां, एरंडना बीजने दृष्टांते, ठेवटे परमात्म स्वरूप अश्र मोश्चगतिमां सीधुं उर्क्ष गमन करी। जागनी पोताना शरीरनी अवगाइनामां स्थिति करे.॥ २०॥

एम जाणीने रे धर्म समाचरो, जेह वे श्रहिंसा मूल रे॥ शिव सुख साधन एह विना नथी, राख जो करी श्रवकूल ॥ श्री० ॥ ११ ॥ शांति सुधारस मांहे जील जो, थाजो तत्त्व निदर्शी रे ॥ खेहेजो चिदानंद नित्यानंदता, कर कंकण शी श्रादर्शी रे॥ श्री० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ श्री जगवंत कहे हे के हे जन्य प्राणी ! श्रावी रीते संसारनुं स्वरूप जाणीने धर्म जे श्रिहंसा मूल हे तेनो आदर करो. ए धर्म विना मोक्त सुखनुं बीजुं एक पण साधन नथी. माटे श्रिहंसा धर्मने सानुकुल राखजो. श्रिशीत् श्रिहंसामय वृत्ति करजो ॥ २१ ॥ शांतरसरूपी श्रमृत रसमां स्नान करजो. तत्त्व स्वरूपना ज्ञाता थजो. जेथी चिदानंद स्वरूप जे निरंतर श्रानंद रूप हे ते प्राप्त करशो. हाथमां कंकण होय तेने जोवा सारू श्रारिसानी शी जरूर हे. ॥ ११ ॥

श्रहो जिब प्राणी रे एम जाणी करी, करो श्रनुजवधी प्रसंग रे ॥ चोथा उल्लासनी ढाल बाबीसमी, कहे मोहन मन रंग रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥ श्रर्थ ॥ हे जन्य प्राणीर्ज ! श्रा प्रमाणे श्रात्म तत्त्व स्वरूपने जाणीने तेना श्रनुजवनो प्रसंग साधो एवी रीते चोथा उल्लासनी बाबीसमी ढाल मोहन विजयजीए हर्ष सहित कही ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

जिन वाणी श्रमिरस श्रवण, पात्र जरी जरी चंद ॥ पाइ चिद् इानी जणी, कर्यो घणो सानंद ॥ १ ॥ रोम रोम जल्लसित थया, वाध्यो रंग वैराग ॥ पामी श्रवसर विनवे, जिनजीने महाजाग ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ श्चम्रत रस रूप जिनेश्वर जगवाननी वाणी कर्ण रूप पात्रमां चंद राजाए वारंवार जरी जरीने पोताना श्चंतरात्माने पाइ श्चने घणोज श्चानंद जत्पन्न कर्यो ॥ १ ॥ पोताना रोमराय (साडात्रण क्रोड) विकस्वर श्रयाः वैराग्य रंग वध्यो एटखे महा जाग्यना स्वामि चंदराये जिनराजने नीचे प्रमाणे विनंति करी.२

> विजननीये मुज वश कयों, फियों नटोने संग ॥ मकरध्वज धूव कर चढयो,थयो नर सुगिरि प्रसंग ॥३॥ कपट कर्युं केम हिंसके,

केम सिंहस सुत रोग ॥ पटराणी थी केम थयो, मुजथी करी संयोग ॥॥॥ श्रर्थ ॥ हे प्रजु ! मारी जरमान माताए मने पंखी रूपे परवश करी दीधो, नटोनी संगे हुं चोमेर फर्यों, मकरध्यजनी पुत्रीना हाथ जपर चढी जत्तम गिरिराजने जेटतां फरी पुरुष थयो;वसी ॥ ३ ॥ हिंसक मंत्रीए मारी साथे कपट आचरण कर्युं, सिंहस रायना पुत्रने रोग थयो, अने मारी गुणावसी पटराणी साथे मने फरी मेसाप थयो, ते सर्वेनो—॥ ४ ॥

एह कथा मुज श्रासचो, प्रजो त्रिजगदाधार ॥ तुम सम कोण

मिलरो वली, संशयनो हणनार ॥५॥ थया थरो जे थाय हे, जे जे जगत् स्वजाव ॥ ते प्रजुषी हाना नहीं, तमे जबसागर नाव ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जे खुद्धासो होय ते ते सर्व वृत्तांत हे त्रण जगत्ना श्चाधार रूप प्रजु ! मने शिघ्र जणाववा कृपा करो श्चा मारा संशयोने दूर करनार श्चापनी समान मने बीजो कोण मद्धनार हे ॥ ५ ॥ श्चा जग त्ने विषे जे जे वस्तु स्वजाव थया हे, याय हे श्चने थशे ते सर्वे हे प्रजु ! श्चापनाधी प्रह्वन्न नथी श्चाप तो संसार समुद्धमां नाव हो ॥ ६ ॥

एहवी नृपनी विनती, श्रवधारी श्ररिहंत ॥ चंदादिकना पूर्व जव, एम जपदेशे श्रनंत ॥ ७॥

श्चर्य ॥ ए प्रमाणे चंदरायनी विनंति श्रीमुनि सुव्रत परमात्माए सांजलीने चंदराय प्रमुखना पूर्व जवनो वृत्तांत विस्तारथी प्रञु प्रकाशवा खाग्या. ॥ ७ ॥

॥ ढाल १३ मी॥

॥ रहो रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

जंबुद्धीपना जरतमां, वैदर्ज देश प्रसिद्ध ॥ खाख रे ॥ वासुगे निज शिरे जेहने, मणि मानीने लीध ॥ खा० ॥ १ ॥ जयो जयो ज्ञान जि-णंदनो, विधि हर हरिनो स्यो नाण ॥ खा० ॥ सकख मरण गज चर-णमां, थाये निमग्न परिमाण ॥ खा० ॥ जयो० ॥ १ ॥

चर्च ॥ स्त्रा जंबुदीपना जरत देत्रमां वैदर्ज नामनो प्रसिद्ध देश हे. ते जाऐ शेष नागे तेने मिएरूप धारीने पोताना मसक जपर धारए कर्यो होय तेवो शोजे हे. श्री जिनराजनुं ज्ञान जयवंतु वर्त्ते हे. ब्रह्मा, विष्णु स्त्रने शंकरनुं ज्ञान तेनी पासे शा हिसावमां हे. जेम हाश्रीना पगद्धामां सर्व प्राणी मात्रना पगद्धा समाइ जाय तेम जिनराजना ज्ञानमां बीजा सर्वना ज्ञाननो समावेश श्रइ जाय हे. ॥ १ ॥ १ ॥

तिहां नगरी तिलकापुरी, मदनज्रम जिहां जूप ॥ ला० ॥ तस श्रिर गिरिदरिए वसे, जेम जल बीष्मे कूप ॥ ला० ॥ ज० ॥ ३ ॥ कमल माला तस गेहनी, जेहनी स्तुति न कराय ॥ छा० ॥ एहनी देहनी सौम्यता, मेहनी तमी ते थाय ॥ ला० ॥ ज० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ ते देशनी तिखकापुरी नामनी राज्यधानीमां मदन ज्रम नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेना शत्रुष्ठं ग्रीष्म क्रतुमां कुवाना पाणीनी जेम पर्वतनी गुफामां जङ्ने संताङ् रह्या हता ॥ ३ ॥ तेने कमख-माखा नामनी पटराणी हे, तेनी प्रशंसा करी न शकाय एवी श्चदूखुत हे. तेणीना शरीरनी कान्ति वर्षा क्रतुमां प्रकाशती विजलीना सदृश हे. ॥ ४ ॥

तिलक मंजरी तेहनी सुता, सुरतरू मंजरी जेम स खा॰ ॥ कीधो बाख पणा यकी, वैष्णव मतथी प्रेम ॥ ला॰ ॥ ज॰ ॥ ५ ॥ धर्म अधर्म जाणे नहीं, नगणे प्रदा श्रप्तदा ॥ ला० ॥ देव वहे जिन धर्मश्री, एह मिथ्याख प्रत्यक्त ॥ ला० ॥ ज० ॥ ६॥

श्चर्य ॥ तेने तिखकमंजरी नामनी कहपवृद्धनी मांजर जेवी पुत्री हती. तेणीए बाझ्यावस्थात्री वैष्णव मत छपर राग धारण कर्यो हतो ॥ ५॥ ते धर्मके श्चधर्म कांइ पण जाणती न होती; तेम जद्ध श्चज्ञ- हनो विचार पण करती नहोती. जिनधर्म छपर देप राखती हती. श्चा प्रमाणे तेणीने प्रगट मि- ध्यात्व प्रवर्त्ततुं हतुं.॥ ६॥

चंदन विमुखी मिक्का, थाए मतीने जूल ॥ ला० ॥ तो स्युं कांइ घटी गयुं, चंदन केरं मूल ॥ ला० ॥ ज० ॥ ७ ॥ किणही तेम कुमतीए, निंचो जो जिन धर्म ॥ ला० ॥ जिन मतनुं बिगडयुं किस्युं, सामुं ते बांधे कमे ॥ ला० ॥ ज०॥७॥

श्चर्य ॥ जेम बुद्धिना ज्ञम थकी माखी चंदन वृक्त्थी विमुख थड़ चंदन वृक्त्ने तजीदे तेथीशुं चंदनना वृक्त्नी किंमतमां न्यूनता थाय हे ? नथीज थती-तेम कोइ मनुष्य माठी बुद्धिथी जिन धर्मनी निंदा करे तो शुं तेनी निंदाथी जिनधर्मने नुकशान थाय हे ? बिखकुख नुकशानी थतीज नथी। छखटां ते माठा कर्मनो बंध करे हे ॥ १ ॥ १ ॥ ।

मये सींची जेम विषलता, तृप पुत्री वधे तेम ॥ खा० ॥ लागे न जिन मत वासना, खसणमें मृग मद जेम ॥ खा० ॥ ज० ॥ ए ॥ पुत्री सुबुद्धि प्रधाननी, रूपमती श्वजिधान ॥ खा० ॥ साथे कर्यो स्तन पानने, समकित रसनुं पान ॥ खा० ॥ ज० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ जेम विष वेदी, मिद्राना सिंचनथी तेम मिथ्यात्वना बोध रूप जद्धश्ची राजानी पुत्र मिथ्यात्व-मां वृद्धि पामी. तेथी द्यसणमां जेम कस्तूरीनी सुगंध प्रवेश करे नहीं तेम तेणीना श्चंतःकरणमां जिनमतनी वासना द्यागी नही ॥ ए ॥ राजाने सुबुद्धि नामनो प्रधान हतो. प्रधानने रूपमती नामनी पुत्री हती. तेणी ए स्तनपाननी साथेज समिकत रसनुं पान कर्युं हतुं. ॥ १० ॥

कल्पलता पीयूषथी, वाघे तेम वधे तेह ॥ ला० ॥ साध्वी संगतिथी थयो, शास्त्राज्यासनो स्नेह ॥ ला०॥ज०॥११॥ जीवादिक नवतत्त्वना, धार्या हृदये जेद ॥ ला० ॥ जिन पूजादिकने विषे, न धरे मनमां खेद ॥ ला० ॥ ज० ॥ ११ ॥

श्रर्थ ॥ जेम कल्पवृक्तनी वेदि श्रमृत सिंचनथी तेम ते प्रधान पुत्री सम्यग् दर्शनमां वधती हती. तेणीने साधवीर्जना सत्संगथी शास्त्रना श्रन्यास जपर प्रेम वध्यो ॥ ११ ॥ जीव-श्रजीव-पुष्य-पाप-श्राश्रव-संवर-निर्जरा-वंध-मोक्त-ए नव तत्त्वना विस्तारथी जाव तेणे हृदयमां धारण कर्या श्रर्थात् नव तत्त्वनुं विज्ञान थयुं. जेथी जिन पूजा प्रमुख कार्यो खेदविना श्रत्यंत हर्षथी करवा लागी. ॥ १२ ॥

साधु तथा साध्वी प्रते, जो वहोरावे श्राहार ॥ ला० ॥ तो मंत्रीनी पुत्रिका, जोजनश्री व्यवहार ॥ ला० ॥ ज० ॥१३॥ त्रूप सुता मंत्री सुता, एक दिन लि-खित प्रजाव ॥ ला०॥ वाल क्रीमा करतां थकां,वेहुनो हुर्ड मिलाव ॥ला०॥ज०१४॥ श्चर्य ॥ मंत्रीनी पुत्रीए साधु तथा साध्वीने श्चाहारथी प्रतिखाल्या शिवाय जोजन ग्रहण करवुं नहीं एवो नियम धारण कर्यु हतुं ॥ १३ ॥ राज पुत्री तथा प्रधान पुत्रीने एक दिवस जवितव्यताना योगे बाख क्रीडा रमत गमत करता करतां बंनेनी वचे स्नोह संबंध थयो. ॥ १४ ॥

श्रांता जो एक एकथी, एके क्षण कोइ जाय ॥ खा०॥ तो ते बेंहु बाखा प्रते, किख्प थइने विहाय ॥ खा० ॥ ज० ॥१५॥ प्रेम वही तिण पुत्रीए, कीधो रहस्य विचार ॥ खा० ॥ केम करी बनहो श्रापणे, परणे जिल्ल जरतार ॥ खा०॥ज०॥१६॥ श्रर्थ ॥ ते स्नेह एटखो तो वध्योके जो एक बीजाथी एक क्षण पण विखुटा पडे तो, अरस परस बंनेने एक क्षण पण कहपना जेवडी मोटी थइ पडे ॥ १५ ॥ प्रेमना गाढ बंधनथी बंने पुत्री उंप एवी रीते गुप्त विचार कर्यों के जो आपणे बंने जुदा जुदा पितनी साथे परणशुं तो आपणो स्नेह केवी रीते टकी शकशे. १६

एक पीछ श्रापणे परणवो, ए तुज मुज संकेत ॥ ला० ॥ मोहने ढाल त्रेवीशमी, चोये छल्लासे सहेत ॥ ला० ॥ ज० ॥ १७ ॥ श्राच्ये ॥ तेथी राजपुत्रीए कहुं के आपण बंनेए एक पितनेज परणवो. आ मारी अने तारी वचे गुप्त निश्चय है. एवी रीते चोथा छल्लासमां त्रेवीसमी ढाल मोहन विजयजीए हेतथी कही. ॥ १९ ॥

॥ दोइा ॥

एक वर वरवानो कयों, बेहुए चित्त हढाव ॥ वधी सुरंगी गो ठडी, श्रवे न रह्यो श्रटकाव ॥ १ ॥ प्रथम न जाणी सचिवनी, पुत्रीए वशनेह ॥ जे शिवमतनी रागिणी, हे नृप पुत्री एह ॥२॥

श्चर्य ॥ बंने जाणी छेए एक वर पराणवानो निश्चय कर्या पठी तेर्च बंनेनी वचे सुरंगी गोष्ठि वधवा मांडी कोइ वातमां रंचमात्र जुदापणुं रह्यं नहीं ॥ १ ॥ प्रधाननी पुत्रीए स्नेहार्धीन श्रवाश्री श्चा राजपुत्री शिवमतनी रागिणी के एम प्रथमश्रीज जाणी शकी नहीं ॥ १ ॥

> रेहेते रेहेते उंखखी, श्राचरणे श्रत्यंत ॥ पूरी जिनमत देषणी, श्रवगुण जरी श्रनंत ॥३॥ पण नाणे कहीये मुखे, सचिव सुता सुविशेष ॥ जाणे फांटो पडे, प्रीतिमांहे खबसेश ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ धीमे धीमे तेना श्चनेक प्रकारना श्चा चरणो जोता जोतां श्चा राजपुत्री जिनमतनी संपूर्ण दे-िषणी, श्चनंत श्चवगुणनी जरेली हे एम तेणीने जास्युं ॥ ३ ॥ एटलुं हतां प्रीतिमां खेशमात्र त्रुट न पडे तेटला सारू प्रधानपुत्री विशेष कालजी राखीने ते वात पोताना मुखमां लावती न इती. ॥ ४ ॥

श्रावे गुरुणी साधवी, मंत्री पुत्री श्रागार ॥ रूपमती तव सुजतो, वहोरावे श्राहार ॥ ५ ॥ विधिपूर्वक करे वंदना, जाउं खि मकी त्यांहि ॥ एम निरखी नृप श्रंगजा, श्रणख वहे मन मांहि ॥ ६ ॥ श्रश्रं ॥ प्रधानपुत्रीने घेर गुरूणी-साधवीजी ज्यारे वहोरवा श्रावे त्यारे कहपे तेवो श्राहार रूपमती ते साधवीने वहोरावे. ।। ए ।। रुपमती साधवीजीने विधि पूर्वक वंदना करती हती अने खडकी सुधी वो-खाववागइ एम राजपुत्रीए जोतांज तेणीना मनमा इर्घ्या आववा खागी. ॥ ६ ॥

> बेसाडी मंत्री सुता, जाणी नृप बाला ताम ॥ निंदे साध्वीने घणुं, द्विज रागी निकाम ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ पत्नी दिज रागिणी तिखक मंजरीए रूपमतीने पोतानी पासे बेसाडीने ते साध्वीनी विनाकारणे निंदा करवा मांडी ॥ ७ ॥

॥ ढाख २४ मी ॥

॥ ते तरीश्रा जाइ ते तरीया ॥ ए देशी ॥ मान तुं बेहेनी मुज शिखडली, मत जाणीश कोइ गगो रे ॥ रूडुं क कहेतां जो तारा मनमां, जुंडुं खागे तो लागो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ एतो श्रज्जा श्रति निरखज्जा, एहना संगन कीजे रे ॥ एहवी श्रग्रुचिने

श्चापणे मंदिर. पेसवा पण नवि दीजे रे ॥ माण ॥ २ ॥

श्चर्य ॥ हे बेहेन ! हुं तने जे शिखामण आपुंड ते साची मानजे, तेमां कोइपण प्रकारे कपट सम-जीश नहीं. हुं तने रूंगु कहुं हुं तारा जलामाटे कहुं हुं तेम उतां तने मानुं लागे तो जले लागों. ॥ १ ॥ ए आरजार्ज तो अत्यंत निर्धक्त होय हे, एनो संग करवो योग्य नश्री. एवी अशुचि वालीने आपणा मं-दिर-घरमां पेसवापण न देवी जोइए. ॥ २ ॥

वाहिरषी दीसे बगध्यानी, पण मनमां हुवे कपटी रे ॥ धुलीलीए श्रापणने एतो, नांखी जुकी चपटी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ हींडे एवी थइ मस मुंकी, नहीं एहवी धुतारी रे ॥ मांहो मांहे संजेका लगाडे, जेहवी कलहा गारी रे॥मा०॥४॥

श्रर्थ ॥ ए श्रारजार्छ जपरथीतो बगध्यानी होयडे श्रने श्रंतरमां बहुज कपटी होय डे. श्रापणा जपर एक कामण करवानी चपटी जुकी नांखीने श्रापणने परवश करीनांखे डे. ॥ ३ ॥ एवी काखा मन-वाखीर्छ ठाम ठाम जटके डे, एना जेवी कोइ धुतारी समजवी नहीं जाणे क्षेशना श्रागार-घर जेवीर्छ ते श्रंदर श्रंदर ठाम ठाम कजीया करावे डे. ॥ ४ ॥

हापा नगारीए हापा करीने, सघली नारी धुती रे ॥ नगरीनी नारी छ एइथी रही नथी श्रवृती रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ शाता पुछे लटपट मांडे, नयणां राखे हे ठीरे ॥ जाणीए जइ केदारे जिल्ली, कांकण पेहेरी बेठी ॥ मा० ॥ ६ ॥

श्रर्थ ॥ ए ढाखपा कुटनारी छए सघले ठेकाणे ढोंग धतूरा करीने सघली स्त्री छी जी वीधी छे श्रा नगरनी स्त्री छी को इपण एनाथी ठगायाविना रही नथी. ॥ ॥ जे होय तेने "केम शातामां छो" एम पुढे, लटपट करे श्रने श्रांखो नींची ढाले, एवं लागे के जाणे केदारनाथमां जइ मीनीबाइ कंकण पेहेरीने बेठा. जाणे जोला जगत थइ गया. ॥ ६॥ रहवासे निव उदर जराणुं, त्यारे शिष मुंगाव्युं रे ॥ खाद्यच माटे तुजने एणे, सामुं श्रावी जणाव्युं रे ॥ माण ॥ ९ ॥ श्रापण रूडा कुखनी पुत्री, एहने पगे केम श्राडीए रे ॥ देखी पेखीने एम सजनी, कूपक मांहि न पगीए रे ॥माण॥ण॥ श्रार्थ ॥ ज्यारे घरमां बेठा कोइ रीते पेट न जरायुं त्यारे माथुं मुंडाव्युं; पोतानी खाद्यचने माटे छद्यटां सामा श्रावीने एणे तने जणावी. ॥ ९ ॥ श्रापणे तो उत्तम कुद्यनी पुत्री ठीए श्रापणाश्रीते एना पगने केम श्राडाय, जाणी जोइने हे शाणी बेहेन! कुवामां शामाटे पडवुं जोइए ? ॥ ० ॥

एहवी जेखी चार मखेतो, नगर वसावे फेरी रे॥ हाथमां घाखी जोली जाजन, जटके होरी होरी रे॥ मा०॥ ए॥ मांगी खाये फांद पंपोले, मांड वधारे का यारे॥ तें जे ऐहने कीधी गुरुणी, करम उदय कोइ आया रे॥ मा०॥ १०॥ अर्थ ॥ एवी आरजार्ड जो चार एकठी थाय तो बीजा नगरने वसावर्ड होय तो वसावे. एतो हाथमां जोली पातरां छठावीने होरीए होरीए जटके हे.॥ ए॥ एने तो मांगीने खांडुं अने पोतानी फांद पंपालवी अने बेठां बेठां हारीरने वधार्खुं तें जे अने गुरुणी बनावी ते तो कोइ पाठलां कर्म तने उदय आव्यां लागे हे.॥ १०॥

एकदिन तुं जो निव वहोरावे, घर घर जूरुं बोसेरे॥वली तारा साते परियाना, जिल्ली उखेला खोसेरे ॥ मा०॥ ११ ॥ पहनी ठायाए उत्ती रहुं तो, हुं तो पापे जराउं रे ॥ इहां तो एहने आववा नहीं खुं, एहनुं कांइ न धराउं रे॥मा०॥१२॥ अर्थ ॥ जो एकज दिवस तुं एने वहोराव नहीं तो तारूं घेर घेर जइने वांकुं बोले एटलुंज नहीं परतुं तारा साते परियाना उत्ती उभी उखेला बोले ॥ ११ ॥ जो हुं तो एनी ज्ञायामां उत्ती रहुं तो पापे जराउं आहीं आतो एने आववाज न दुंग हुं कांइ एनी दरकार राखती नथी। ॥ १२ ॥

ए कोइनी न हुइ न होवे, वारूं हुं ते सांक रे ॥ जेहनी संगति कोइने न गमे,
ते संगति नहीं वारू रे ॥मा०॥१३॥ एम निंदा साध्वीनी निसुणी, बोले मंत्री
बेटी रे ॥ रे बेहेनी म्हारी गुरुणीने, निपट कां नांखो उठेटी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥
श्रिष्ठी ॥ ए आरजा कोइनी घइ नथी अने यतीज नथी. तेटलाज सारूं हुं तने वारूं हुं; शिखामण
आएं हुं. जेनी सोबत कोइने गमे नहीं तेनी सोबत करवी सारी नथी. ॥ १३ ॥ एवी रीतनी साध्वीनी
निंदा सांजलीने मंत्री पुत्री बोलीके हे बेहेन! मारी गुरुणीने आम डेकतुं शामाटे उलेडी नांखेडे! ॥१४॥

सूधा पंचमहाव्रत पाखे, चाखे निरितचारे रे ॥ ए तो संवेग सरोवर हंसी, न करे लोज केवारे रे ॥मा०॥ १५॥ हुं तो एहना एक अक्तरनी, ठीशंगण नवी थाउं रे॥ ए गुरुणी उपगारनी उपर, हुं बिलहारी जाउं रे॥ मा०॥ १६॥

श्चर्य ॥ ए तो उत्तम पांच महाव्रत पाले हे श्वने पोतानो सघलो श्वाचार श्वितचार रहित पालतां वर्ते हे. ए तो मोक्ताजिलाष रूप सरोवरनी हंसलीहे. कोइ वलत लोज तो करतीज नथी. ॥ १५॥ हुं तो एना एक श्वक्ररना ज्ञान रूप उपकारनो बदलो वाली शकुं तेम नथी. एना उपगार उपर तो हुं बिद्धारी जाउं हुं. ॥ १६॥

मुजने जो एहना अवग्रण जासे, नरकमां ठाम न होवे रे ॥ तुं जे ए हनुं विरूठं कहे हे, मेलते एहनो धोवे रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ गुरूषीए मारी पशुता टाली, नारी ठेंले छाणी रे ॥ याजो एहने कल्याण अ होनिशि, अविचल एहनी वाणी रे ॥ मा० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ जो मने एनामां अवगुण है एम खागरो तो मने नर्कमां पण हाम मखवानुं नथी, श्रर्थात् नर्कश्री पण नीची गतिमां जाइरा. श्रने तुं जे एनुं वांकुं बोले हे ते तो तुं एना मेल धोत्रे हे ॥ १९ ॥ ए मारी गुरूणीए मारूं पशुपणुं मटाडीने मने स्त्री जातिनी हारमां श्राणीहै. एनुं हमेशां कहवाण श्राजो श्रने श्रेनो जपदेशपण अविचल रेहेजो ॥ १० ॥

एहनी चेली हुं जनमजनमनी, हे परमेश्वर साखी रे ॥ हाल चोवीशमी चोथे छ्लासे, मोहन विजये जाली रे ॥ मा० ॥ १ए ॥ अर्थ ॥ हुं परमेश्वरनी शाहीए कहुं हुं के हुं तो एनी जवोजवनी चेली हुं. एवी रीते चोथा छ्लासमां मोहनविजयजीए चोवीशमी ढाल कही. ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

प्रणम्या योग्य प्रवर्तिनी, पुण्य पात्रहे एह ॥ बाइ एम नविनिं दीए, एइथी धरीए नेह ॥ १ ॥ जो ए रूषिणी निंदीए, पुण्य मूल कुमलाय ॥ तटिनी तट तरू मूल जेम, सहेजे विलये जाय ॥ १ ॥ अर्थ ॥ वली हे बेहेन! ए साध्वी नमस्कार करवा योग्यहे. ए पुष्यतुं पात्र हे. एनी आ प्रमाणे निंदा नहीं करतां एना छपर तो पवित्र स्नेह राखवो जोइए ॥ १ ॥ जो ए साध्वीनी निंदा करीए तो जेम न-दीना तट छपर छगेला बुक्को, पुरनी बखते मूल्यी छखडीजाय तेम आपणुं पुण्यरूपी मूल कुमलाइ जाय. १

ते दिन एम कही श्रितिकम्यो, गइ नृप पुत्री गेह ॥ बीजे दिन श्रावी वली, मंत्री गृह ससनेह ॥ ३ ॥ बेहु सही क्रीडा करी, बेठी मंदिर बार ॥ प्रोये सुता श्रमात्यनी, निज मोतीनो हार ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ ते दिवसतो ए प्रमाणे वातो करतां वीती गयो. पत्नी राजपुत्री पोताने घेर गइ. वखी बीजे दिवसे स्नेह सहित राजपुत्री मंत्रीने घेर श्चावी. ॥ ३ ॥ बंने सखी रमत गमत करीने घरना बारणा पासे बेठी. ते वखते मंत्री पुत्री पोतानो मोतीनो हार परोववा बेठी. ॥ ४ ॥

कर्ण काली बहु मूलनी, मूकी थाली मांहि ॥ बेहु सजनी वातो करे, क्षण घाले गले बांहि ॥ ५ ॥ आवी साध्वी वहोरवा, थयो जाम मध्यान ॥ पय प्रणमी मंत्री सुता, पडिलाजे पकवान ॥ ६॥

श्रर्थ ॥ बहु मूह्यवाली काननी जाल हती ते तेवखते शालमां मुकीने बंने बेहेनपणीर्छ वातो करती हती. हाणेकमां एक बीजाना गलामां हाथ नांखती हती. ॥ ५॥ ज्यारे मध्यान्हनो पहोर श्रयो त्यारे साध्वी वहोरवा श्रावी. ते वखते मंत्री पुत्रीए छन्ना श्रई नमस्कार करी पकवान साध्वीने वहोराव्युं. ॥६॥

चंदराजानो रास-

घृत खेवा यहमां गइ, मोती काखि उवेख ॥ साध्वीथी नृप पुत्रीए, करी कुबुद्धि विशेष ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ पढ़ी घी वहोराववा सारू मोतीनी कालने त्यां पडती मुकी, घी लेवा सारू घरमां गइ एट-सामां राजपुत्रीए साध्वी परत्वे श्चर्यंत कुबुद्धि प्रवक्तीवी. ॥ ७ ॥

॥ ढाल १५ मी॥

॥ सुण बेहेनी पियुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

मंत्री पुत्री घृत साध्वीने, जावे चढी वहोरावे रे ॥ ग्रुरुणीजी जसे गेह पधार्या, ए दिन सेखे छावेरे ॥ मं० ॥ १ ॥ तुम जेवाने मुखे ववराये, वस्तु ते गणीए सेखे रे ॥ जे कोइ जगमां होवे छाजानी, ते तुम ग्रुणने उवेखे रे ॥ मं० ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ मंत्रीनी पुत्री घी खावीने जत्तम जावना ए चढीने साध्वीने वहोरावती हती. तेणीए कहुं हे गुरुणीजी आपज्ञ पंचार्याः आजनो दिन खेले थयोः ॥ १ ॥ जे वस्तु तमारा जेवाना मुखबीव पराय ते वस्तु खेले थइ एम गणुं इं. जे खोको जगत्मां अज्ञानीडे तेज तमारा गुणोनी स्ववगणा करे हे. १

एहवे श्राष्वती नृप पुत्री, नयणो मांडी श्रामी रे॥ साध्वीनी साडीने पखवट, जाखी खेश्र वखगामी रे॥ मं०॥ ३॥ रूपमतीए तखी साध्वीए, कपट कला निव जाणी रे॥ खमकी खगण पहोंचामी गुरुणी, सचिव सुताहित श्राणी रे॥मं०॥४॥

श्चर्य ॥ एवे समये ते श्चदेखी देषी राजपुत्रीए पोतानी श्चांखो वांकी राखीने साध्वीना कपडाना पाल-वनी साथे मोतीनी कालने वलगाडी दीधी. ॥ ३ ॥ रूपमतीए तेमज साध्वीए राजपुत्रीनुं श्चा कपट ज-रख्नुं कार्य जाएयुं नही. पत्नी हितनी कामी एवी मंत्रीपुत्री गुरुणीने खडकी सुधी वोलाववा गइ. ॥ ४ ॥

पाठी हारने प्रोववा बेठी, थालमां जालिन दीठी रे ॥ एहांसि नकरो नृप कन्ये, हांसि श्रवरशुं नीठी रे ॥ मं० ॥ ५॥ जालि बीजी पण ल्यो जोइए तो, शुं करशो एक राखी रे ॥ वेतरशो पण निव वेतराउं, न गलाये जीवती मांखी रे ॥ मं० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ फरी मंत्री पुत्री हार परोववा बेठी, एटलामां थालमां कालि देखी नही, एटले कहुं के बे-हेन! श्चावी ते हांसि थाय, शुं बीजी हांसि करवानी नथी? ॥ ए ॥ एक काल राखीने शुं करशोः श्चा बीजी काल पण जोइए तो सुखेथी हथोः तमे बेतरवा धारशो पण हुं बेतरानं तेवी नथीः कांइ जीवती मांखी ते गलाय बे. ॥ ६ ॥

कहे नृप पुत्री सुणतुं बेहेनी, में नथी कीधी हांसि रे ॥ एवी हांसि न करे कोइ, थाये जेहथी विखासी रे ॥मं०॥७॥ काखितो तारी गुरुणीए खीधी, न यणे निरखी में तो रे ॥ हसते हसते मारे माथे, चोरी नांखी तें तो रे ॥ मं०॥०॥ श्रर्थ ॥ पढी राजपुत्रीए कहुं हे बेहेन! में तारी मस्करी करीज नथी. वखी एवी मस्करी करायज नहीं के जेमांथी विखवाद उन्नो थाय. ॥ ३ ॥ वसी तारी गुरुणीएज ए फाख उपाडी खीधी तेमें मारी आंखेज दीवुं वे. अने तुं तो इसता इसतामां मारा माथा उपर चोरीनी आख नांखेंवे. ॥ ए ॥

चोरे कोइ पकडाये कोइ, जलटी गति कोइ तारी रे ॥ तारा सम में लीधी होयतो, विनती मान तुं मारी रे ॥ मं० ॥ ए ॥ बोली सचिव सुता निसुणीने, नृप कन्याने निठोली रे ॥ मुज गुरुणीने कलंक तुं देती, रहे बाइ तुं अणबोली रे ॥ मं० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ कोइक चोरी करे श्रने कोइकना माथा जपर श्राल चडे, श्रातो तारी रीतज जलटी है। हुं तो तारा समखाजं हुं, में तो लीधीज नथी, श्रा वात साचीज मानजे। ॥ ॥ ते सांजलीने मंत्री पुत्रीए, राजकन्याने उपको देतां कहां के हे बेहेन! मारी गुरुणीने शामाटे श्रावुं कलंक श्रापे हे ? तुं बोहया-विमा बेसी रहे. ॥ १०॥

क्षेवा देवा पाखे ताहरे, पहथी एवको शो खांटो रे ॥ अघटित क हेतां तुज जीजकीए, कांइन जांगे कांटो रे ॥ मं० ॥ ११ ॥ तृष पण ए न लहे पण दीधुं, शुं करे कालिने क्षेट्र रे ॥ एषेतो परिहरी यही दिक्का, मणि माणिकनी पेट्रे ॥ मं० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तारे एनी साथ कांइपण लेवा देवा शिवाय, तुं एना जपर आवसी शामाटे अंटस राखे हे. विश्वी आवं अघटित बोलतां तारी जीजे कांटो केम जांगतो नथी। ॥ ११ ॥ जे दीघाविना तरखखा मान्त्रने पण लहे नहीं ते कालि लड़ने शुं करे, कारण के एणे हीरा माणेकनी पेटी जेने पण तजी दड़ने दीहा अहण करी है. ॥ ११ ॥

ए वत धरणी सूधी करणी, एहनो ज्रम कोइ नाणे रे ॥ योगी वानव जमता सरखी, रखे एहने करी जाणे रे ॥ मं० ॥ १३ ॥ एहना जप शम जूषण आगल, ए जूषण किण गणती रे ॥ एहवी महासती जनी वातो, कहीए नही आणबनती रे ॥ मं० ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ एतो एवा उत्तम व्रतने धारण करनारी हे, एनी करणी मात्र श्रेष्ठ हे. एना उपर कोइने शं-कापण आवे नही. एने तुं जोगी अने रखकता ब्राह्मण जेवी रखे जाणती. ॥ १३ ॥ एना उपशम रूप जूषण पासे आ जादि जूषण शुं गणतरीमां हे. एवी महा सती उना संबंधमां नहीं बनेती वातो कदापि न केहेवी जोइए. ॥ १४ ॥

धन सामु निव जोवे थुंकी, पगला मांडे जोय फुंकी रे ॥ निव दीठी कोइ मितनी दुंकी, में तुज जेवी श्रचूकी रे ॥ मं० ॥ १५ ॥ न्यास रिये पण गांठ न राखे, जाये तेवारे चाखे रे ॥ हाथ न फासे दीधा पाखे, तो तुं एम कां जाखे रे ॥ मं० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ए साध्वी धननी सामुं तो युंकीने पण जोवे नही. जमीन जपर पग पण जमीन जोइने मुके, रखे पग नीचे धननो स्पर्श थाय. में ताराजेवी दुंकी बुद्धिवाखी कोइ दीठी नहीं. आ वातमां हुं जख़तीज नथी. ॥ १५ ॥ वस्त्रने ठेमे पण गांठ राखता नथी. खाय पण क्यारे के ज्यारे मांगी खावे त्यारे; दीधा-विना हाथमां पण फाखे नही. तो पठी तुं श्राम शामाटे बोखेडे, ॥ १६ ॥

कहें नृप पुत्री रुपमतीने, जो कह्युं मारुं न माने रे ॥ श्रापण बेहुं व सतीए एहनी, जइने जोइए ठाने रे ॥ मं० ॥ १७ ॥ ए पासे जो जा बि खें तो मुज शाबाशी दीजे रे ॥ श्रापण वात ए साची कीजे, जेम मुजधी तुं पति जे रे ॥ मं० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ पत्नी तिलक मंजरीए रुपमतीने कहां, हे बेहेन! जो तुं मारुं कहां साचुं न मानती हो तो, श्चापणे बंने तेना जपाश्चये जइ ज्ञानी रीते तपास करीए. ॥ १९ ॥ एनी पासेथी जो फालि कढावुं तो मने तुं शाबाशी श्चापजे. मारे तो जे वात साची जे तेज केहेवानीजे, जेश्री तने मारी जपर विश्वास बेसे.॥१०॥

ते बेहु कन्या साध्वी वस्ती, श्रावी हसती इसती रे॥

हाल पचवीशमी मोहने जाखी, चोथे उल्लासे उलसती रे ॥मं०॥१ए॥ श्रर्थ ॥ ते वंने कन्यार्ड साध्वीने जपाश्रे इसती इसती श्रावी. एवी रीते चोथा उल्लासमां मोइन वि-जयजी ए पचवीशमी हाल कही ॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

ह्या पिथकी पिनकमी, साध्वी किया पात्र ॥ आखो ए हे गो चरी, जोजन जाका मात्र ॥ १ ॥ एहवे ते बेहु कन्यका, आवी वसती मोजार ॥ सचिव सुताए साचट्यो, बंदनादि व्यवहार ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ ते समये किया पात्र साध्वी वहोरवा सारूजतां लागेली ईर्यापिश्वकी किया, शरीरने जातुं श्रापवा जोजन लेवा जे गोचरी सारु गया हता, ते पडिकमतां हतां. ॥ १ ॥ एटलामां ते बंने कन्यार्ड जपाश्रय मध्ये श्रावी. मंत्री पुत्रीए साध्वीजीने वंदना करवा प्रमुख जिचत व्यवहार सर्वे कर्यों. ॥ १ ॥

मोहडे देइ मुह्पति, साध्वी कहे ते वार ॥ बाहिर बेसो बेहु तमे, करवो हे श्राहार ॥३॥ श्रक्तर जो क्षेवो होए, तो पडलो घनी एक ॥ श्राज करंता एषणा, श्रमुर थयुं हे हेक ॥४॥

श्रर्थ ॥ साध्वीजीए पोताना मुखपासे मुह्पत्ति राखीने कहां के श्रामारे श्राहार करवो हे तेथी हमणां तमे बंने बहार बेसो. ॥ ३ ॥ वली जो तमारे श्रद्धर लेवो होय तो एक घडी सुधी वार खमजो. श्राज श्रमने एपणा समिति शोधतां बहुज श्रसुर श्रयुं हे. ॥ ४ ॥

मंत्री पुत्री ततक्काणे, जइ बेठी एकांत ॥ नृपपुत्री जाए नही, हियडे कपट अनंत ॥ ५ ॥ बाहिर बेहेनी केम गइ, कामठे व सती मांहि ॥ आणी आलयमां फरी, सचिव सुतायही बांहि ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तत्काख प्रधाननी पुत्रीतो एकांतमां छेटे जइ बेठी. परंतु राजपुत्री तेणीना अंतःकरणमां अ-त्यंत कपट होवाथी ते दूर गइ नहीं ॥ ए ॥ राजपुत्रीए मंत्री पुत्रीपासे आत्री कहां के हे बेहेन! तुं ब-हार केम गइ. कामतो जपाश्रयमांज छे एम कही मंत्रीपुत्रीनो हाथ काखी फरी तेणीने जपाश्रयमां खावी. ६

साध्वी मन संशय धरे, ऐम केम बेहु एह ॥ श्राज तो कोइक वातनो, दीसे वे संदेह ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ श्चावी दील चाल देखी साध्वी मनमां विचारवा लाग्याके बंने जणीर्ड श्चाम केम करती हशे. श्चाजे कोइ बाबतनो तेर्जना मनमां संशय जत्पन्न थयो जणाय हे. ॥ ७॥

॥ ढाल १६ मी॥

॥ कोइ राखेरे सूर सुजट कोइ राखे रे ॥ ए देशी व ॥ बोली नृपनी पुत्रिका रे, श्रद्धा सुण सुज वाणी रे ॥ कहुं हु एकांते तुजने रे, राखतुं ताहरुं पाणी रे ॥ १ ॥ कोइ कोइने रे, कूडु कलंक न देशो रे ॥ ए श्रांकणी ॥ एहवुं तुजने वहोरवुं रे, केम गुरुणीए ज णाव्युं रे ॥ गोचरी करतां चोरवुं रे, एहवुं उदय केम श्राव्युं रे ॥ को०॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ एवामां राजपुत्रीए कहुं के हे आरजा! हुं तमने गुप्तरीते कहुं हुं के हवे तमारी शोजा जेम रहे तेम करो तो सारू (किव कहे हे के) हे जब्य जीवो! कोइना छपर जहुं आख न मूकशो ॥ १॥ गोचरी वहोरवा जइए ते वखते खाग पड़े तो चोरीपण करी देवी एवं कइ गुरुणीए तने शिखव्यं हतुं. आजे चोरवानुं मन केम थयुं?॥ २॥

घृतसेवा घरमां गईरे, रूपमती एम जोसी रे ॥ सीधी जासि तें एहनी रे, ते हवे जरता जोसी रे ॥ को० ॥ ३ ॥ दीठे नयणे माहरे रे, पण हुं तो नवी चे तीरे ॥ त्यारे जो जानत एवछं रे, तुजने जवा न देती रे ॥ को० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ जे वखते श्चा सरख मनवाली रूपमती तमने घी वहोराववा सारू लेवा घरमां गइ ते वखते पातरा कोलीमां घालतां तमे तेनी कालि लइ लीधी छे ॥ ३ ॥ ते वखते हुं श्चांखश्ची जोती हती, परंतु हुं एम नहोती जाणतीके तमे चोरीजशो. जो एवं जाणती होततो कदापि तमते जवा देत नही. ॥ ४ ॥

नहींतो हुं स्थाने कहुं रे, थइने मुखनी फोरी रे ॥ पण तुज चेलीए माहरे रे, माथे चढावी चोरी रे ॥ को० ॥ ८ ॥ बेहेनी जूजुं रखे मानती रे, ते माटे हुं न बोली रे ॥ पण हवे घरघर ताहरो रे, देइश पनदो खोली रे ॥ को० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ मारे आटला वाचाल थड़ने शामाटे तमने केहेबुं जोड़ए? परंतु हुं शुं करूं तमारी चेलीये फा-खिनी चोरी मारे माथे नांखी तेथी मारे कहेबुं पमे छे. ॥ ५ ॥ मारी बेहेनने ते वखते खराब लागशे ते कारणथी ते वखते हुं बोली नहीं, परंतु हवे तो हुं एवातनो पडदो-गुप्तजेद घेर घेर तमारो प्रगट करीश.६

साध्वी कहे एम कां कहे रे, रे मुग्धे आएजाएयुं रे ॥ में तो विना आहारश्वीरे, बीजुं कांइ नश्री आएयुं रे ॥ को० ॥ ७ ॥ संशय हो यतो सुखे जुर्ज रे, ए त्रिपणी ए जोली रे ॥ जाली किसी वसी हुं किसी रे, ए मुज न खपे जोली रे ॥ को० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ पत्नी साध्वीए कह्यं के हे जोखी कन्या! आवं जाएयाविनानं केम बोखेंडे. में त्यांथी आहार सिवाय बीजुं कांइपए आएयं नथी. ॥ ७ ॥ जो तारा मनमां शंका होय तो सुखेथी आ तरपणी तथा फोखी तपासो. मोतीनी काखि केवी अने हुं केवी! हे जोखी! ए काखि अमने खेवी खपे नही. ॥ ए ॥

नृप पुत्री रोषे चठी रे, न कर श्रक्को मुज खोटी रे ॥ श्राप जली सनिघे कहुं रे, मुज बेहेनीनी श्रकोटी रे ॥ ए ॥ जांकी मांकी कोली जूए रे, नृप पुत्री सु प्रसिद्धि रे ॥ सामीए वलगाकी जिहां रे, जालितिहांथी लीधी रे ॥कोण।१०॥ श्रथं॥ पठी राजपुत्री कोध चढावीने बोली, हे श्रारजा! मने जूठी पाक नहीं. हे बाइ! हुं तने कहुं हुं के हवे जली थइने मारी बेहेननी श्रकोटी श्रापीदे.॥ ए॥ पठी राजपुत्री खुझीरीते तो कोलीने चारे बाजुए श्राम तेम जोवामांडी. पठी तरतज साडीना पालव छपर ज्यां श्रकोटी बलगाडी हती त्यांथी

तरतज सङ् सीधी ।। १०॥

राता सह साधा ॥ १० ॥

श्रापी सचिव पुत्री प्रते रे, साध्वी जाणी श्रवहेसी रे ॥ श्राज पठी तुं एह ने रे,

बेसीशमां कहुं जेसी रे ॥ को० ॥ ११ ॥ रुपमती कहे नृपसुते रे, ए सवी क
रणी तारी रे ॥ किहेंचे चोरी करे नहीं रे, जड़क गुरुणी मारी रे ॥को०॥१२॥
श्रिश्री ॥ तरतज सादवीनी श्रवहेसणा करी, श्रकोटी मंत्री पुत्रीने श्रापी; श्रने कहुं के श्राज पठी हवे
कोइ पण दिवस तुं श्रेनी साथे बेसीशमां ॥ ११ ॥ पठी रूपमतीए कहुं के हे तिसक मंजरी! श्रा काम
ताराजके मारी निर्मस श्रंतःकरणवासी गुरुणी कदाि कोइपण प्रकारनी चोरी करेज नहीं ॥ १२ ॥
गुरुणीजी एह तुं कह्युं रे, रखे मनमांहि श्राणो रे ॥ एके मिथ्यात्वी एहमां रे,
रखे मनमांहि श्राणो रे ॥ को० ॥ १३ ॥ पयप्रणमी गुरुणी तणां रे, रुपमती गुरे

श्रावी रे ॥ तृप पुत्री घणीए कला रे, कीधी पण निव फावी रे ॥ कोण ॥ १४ ॥ श्रश्रं ॥ हे गुरुणीजी ! एतुं बोलेलुं स्त्राप मनमां जरापण लावशो नही. एतो हड हमती मिथ्यात्वी हे. एनामां साची समजण रित मात्र नथी. ॥ १३ ॥ पही गुरूणीना चरणमां नमस्कार करी रूपमती पोताने घेर श्रावी श्रने राजपुत्रीए श्रनेक कपटकला करी परंतु ते लेशमात्र तेमां फावीनही ॥ १४ ॥

हवे श्रालोचे प्रवर्त्तनी रे, नृप पुत्रीए कर्युं काचुं रे॥ पए नगरीना लोकने रे, हियमे वसहो साचुं रे॥ को०॥ १५॥ रोषवहो तिहां साध्वीए रे, कीधो निज गले फांसो रे॥ चारित्रिया पए क्रोधथी रे,न विचारे निज वांसो रे॥ को०॥१६॥ श्रर्थ ॥ हवे साध्वी मनमां विचारवा लाग्या के राजपुत्रीए मारा माथा जपर जुटुं श्राल मुक्युं ते वातमां ते फाबी तो नहीं, परंतु नगरीना लोकोना मनमां तो साचुंज लागहो ॥ १५॥ पत्री साध्वीए तो क्रोधने वहा थह गलामां फांसो घाहयों. (किव कहे हे) चारित्र धारए करनारा पए क्रोधने वहा थतां परिणामशुं श्रावहो ते विचारता नथीं. ॥ १६॥

पानीसण सुरसुंदरी रे, श्रावी ततक्तण दोनी रे ॥ फांसो साधवी कंग्रथीरे, करूणा श्राणी ग्रेमी रे ॥ को० ॥१९॥ श्राहार कराव्यो पाडोशणे रे, श्रमणीने समजावी रे ॥ साध्वी पण समजी करी रे, समताने घेर श्रावी रे ॥ को० ॥१०॥ अर्थ ॥ एवे समये पामोशमां सुरसुंदरी नामनी एक श्राविका रेहेती हती ते तरत दोमी आवी अने तेणीए करुणायुक्त अंतःकरण्यी साध्वीना गद्धामांथी फांसो काढी नांख्यो ॥ १९ ॥ ते पाडोशण सुर सुंदरीए, साध्वीने बहु बहु रीते समजावीने आहार कराव्यो. साध्वीने पण धीमे धीमे समजण आवतां कोध शांत थड़ ते समताना घरमां आवी. ॥ १० ॥

संयम पासे जावथी रे, अनुजव विजव विसासे रे॥ जाखी ढाल ठवीशमी रे, मोहने चोथा उल्लासे रे॥ को०॥ १ए॥ अर्थ ॥ साध्वीए निर्मल जावथी चारित्र आराधन करवा मांम्युं अने अनुजवरूप वैजवनो विलास करती हवी. एवी रीते चोथा उल्लासमां ठवीशमी ढाल मोहन विजयजीए कही।॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

बेहु कन्याने परस्परे, छहनिश वचन संवाद ॥ जिन मत शैवी मत तणो, चाख्यो जाय विवाद ॥१॥ कोइ कोइना धर्मने, माने नही खगार ॥ बेहुं ए छवसर साचवे, निज निजना छाचार ॥ १ ॥

श्चर्य ।। ते बंने कन्यार्छने निरंतर वाणी संवाद यतो हतो तेमां जिन मत स्त्रने शिवमत संबंधी विवाद चाह्याज करतो हतो ।। १ ॥ बंने मांथी कोइ पण एक बीजाना धर्म छपर श्रद्धा करती नहती, एटखुंज नहीं पण श्रवसर श्रावे दरेक पोतपोताना श्राचारने साचवती हती. ।। १ ॥

> पहवे नृप वैराटनो, जित शत्रु वक्वीर ॥ शुरसेन तेहनो तनुज, सुरगिरि सम वक्षीर ॥३॥ तेणे मंत्री मोकख्यो, जिहां तिसका-पुर नाह ॥ करवा तिसक मंजरी थकी, शुरसेन विवाह ॥ ४॥

श्रर्थ ॥ एवा श्रवसरमां वैराट देशनो महा शुरवीर जित शत्रु नामनो राजा हतो तेने मेरू पर्वत समान महा धैर्यवंत शूरसेन नामनो पुत्र हतोते शूरसेननो विवाह, तिखकापुरीना राजानी पुत्री तिखक मंजरीनी साथ्रे करवा सारू, पोताना मंत्रीने, मदन ज्रमराजानी पासे मोकल्यो. ॥ ३॥ ४॥

> पूठे जनक सुता प्रते, पाणि ग्रहण खरूप ॥ हरखित यह पुत्री कहे, तातने वचन श्रनूप ॥५॥ जो मंत्रीनी पुत्रिका, वरए वरे सुजाण ॥ तो माहरे पण एहवर, वरवो करुं प्रमाण ॥ ६॥

श्चर्य ॥ ते श्चान्यो एटले राजाए पोताना पुत्रीने लग्न संबंधी हकीकत केहेवा बोलावी, राजाए शुरसेन संबंधी वात केहेतांज तिलकमंजरीए पोताना पिताने हर्ष सहित कह्युं के जो रूपमती ए वरने वरवाने कबुल करे तो मारे पण एनी साथे लग्न करवा प्रमाण है ॥ ए ॥ ६ ॥

श्रमे बेहु बाखापण थकी, कीधो वे संकेत ॥ मसी बेहु जणीए एकवर, वरवो वधते हेत ॥ ७॥

अर्थ ॥ बाह्यावस्थायी अमे बंने बेहेनपणीलेए एवो गुप्त रीते निश्चय कर्यो हे के आपण बंने जणी ले ए एकज वरने वरवो जेथी आपणा स्नेहमां पण वृद्धि आय. ॥ ९॥

॥ ढाल २७ मी॥

॥ कायापुर पाटण रूथको ॥ ए देशी ॥

श्चापणा प्रकृत पुरुष प्रते, नाखे मकरध्वज राय रे॥ श्चाव्यो हे सचिव वैराटथी, करीए तस कवण उपाय रे॥ श्चाव॥ रे॥ माहरी ताहरी पुत्रीए, मन धर्यो एक प्रश्चार रे ॥ कहे तो बेहुनो एक वरथकी, करीए विवाह निरधार रे ॥श्चाव॥ राज्य श्चिम श्चाव तो संज्ञाती मकरध्वज राजाए पोताना प्रधानने बोलाबी कहुं के वैराटना राजानो प्रधान श्चाव हो। हे तेनी हकीकत सांज्ञातो श्चान त्याव कार्य करो। १ ॥ मारी श्चने तमारी पुत्री, बंने ए एक पितनी साथे लग्न करवानो निश्चय कर्यो हे तेथी तमारो श्चिमपाय होय तो बंनेना एक वरनी साथे लग्न करीए, ॥ २ ॥

नृप त्राणी ताम मंत्री कहे, तेडो वैराट वकील रे ॥ लगननो दिवस निरधोरी ए,माहरी नथी कोइ ढील रे ॥श्राणा३॥ तेडी वैराटनो मंत्रवी,नृप कहे श्राणी उन्नाह रे ॥ मेलट्यो श्रमे शुरसेनथी, बेहु सुता केरो विवाह रे ॥ श्राण ॥॥॥ श्रथं ॥ मंत्रीए कक्षं के हे महाराज ! ते वैराटना प्रधानने बोलाबो श्रने लग्नना दिवसनो निरधार करो. मारी ते बाबतमां कोइ पण प्रकारनी ढील नथी ॥ ३ ॥ पत्री वैराटना मंत्रीने बोलाबी राजाए जिलाई पूर्वक कक्षं के श्रमे श्रमारी तथा प्रधानजीनी पुत्री एम बंने कन्यार्जनो शुरसेननी साथे विवाह संबंध कबुल करीए ठीए. ॥ ॥॥

खग्ननो दिवस निश्चय करी, श्रावीर्ड मंत्री वैराट रे ॥ जइ जित शत्रुने विनटियो, पाणि प्रहण तणो घाट रे ॥ श्रावाध्या दोय गोरी तणो वालहो, थारो
कुंवर शुरसेन रे ॥ जान बहुमानहुंती सजी, उजली सागर फेन रे ॥ श्राव ॥६॥
श्राव्य ॥ पठी लग्ननो दिवस नकी करीने वैराटना मंत्रीए श्रावीने जित शत्रु राजाने लग्न संबंधी सर्वे
हकीकत निवेदन करी ॥ ५॥ श्रापणो कुंवर शरसेन वे श्रीर्डनो प्राण्नाथ थरो एवं धारी लग्न सारू
तैयारी करवा मांडी. समुद्रना उज्वल फीण जेवी जलकादार जाननी सामग्री तैयार करी. ॥ ६॥

श्रावी तुरत तिखकापुरी, सुरसेनो वरराज रे ॥ नृप सुता मंत्री पुत्री वरी, मन तणां सिधलां काज रे ॥श्राणाणा बेहु सुसरे मली दायजो,देइ गज,वाजी रथ जोय रे ॥ तुरत संप्रेडी खेइ सासरे, नृपति मंत्री सुता दोय रे ॥ श्राण ॥णा श्रर्थ ॥ पत्री गुरसेन वरराजा जान सहित तिलकापुरीए श्राज्या. राजपुत्री श्रने मंत्री पुत्रीनी साथे पाणि ग्रहण कर्युं. पोताना मनना धारेलां कार्य सिद्ध कर्यो ॥ ७ ॥ बंने ससराप, हाथी, घोडा, रश्रनी जोडी विगेरे जे जे करीश्रावर कर्यों ते सर्वे सहित राजपुत्री तथा मंत्री पुत्रीने तेमने सासरे बोलाववामां श्रावी ॥ ० ॥

कंत साथे बेहु आवीर्ड, नगर वैराट मोजार रे ॥ सासुए सद्य वहुरोजणी, सों प्यो यह तणो जार रे ॥ आजाणा विलसे सुख विषयना कंतथी, ते बेहु वाध ते वेश रे ॥ कहीए खोपे नही कुछ बधू, सासूससरानो निर्देश रे ॥ आजारणा अर्थ ॥ पोताना स्वामिनाथनी साथे बंने पित्तर्ज वैराट नगरमां आवी. तेर्ज सासरामां रेहेतांज थोडा वखतमां सासुए बंने बहुजंने गृह संबंधी सर्वे कारजार सोंपी दीधो ॥ ए ॥ पोताना स्वामिनाथनी साथे बंने जाणीलं मन गमता जोग विद्यासनां सुख जोगवे हे. बंनेनी रूप कान्ति वधती जाय हे. बंनेमांथी कोइ सासु ससरानी आज्ञा द्योपती नथी. ॥ १०॥

पण बेहु मांहो मांहे होवे, वचन विवाद काइ वार रे ॥ चित्त न मसे एक एकनुं,दोहिलो शोक व्यवहार रे ॥ आठ॥११॥ शोकथी शूली रूडी कही,नही इहां मीनने मेष रे ॥ बेहु जो बेहेन सगी हं होवे,तोही पण वहे दे षरे ॥आठ११॥ अर्थ ॥ आवां सुख जोगवता हतां कोइ काइ वखत अंदर अंदर बंने जणी होने वाद विवाद यतो हतो. शोकना व्यवहारनो संबंध दोहिलो होवाथी एक बीजानुं मन एक बीजानी साथ मखतुं न होतुं ॥ ११ ॥ शोक करतां शूली जली ए वातमां लगार पण मीन-मेष नथी (ज्योतिष जोवानुं नथी) बंने सगी बेहेनो होय अने तेले पण जो शोक थाय तो देषी थया विना रहे नहीं. ॥ १२ ॥

दोइ कोइ एक वस्तुनो, चित्तमां धरे श्रजिलाष रे ॥ एहज कारण वैरनुं, हे बहु शास्त्रनी शाख रे ॥ श्रा०॥१३॥ शोकनो संबंध दोहिलो,कलह करता दिन जाय रे ॥ बोले मोसाने कोसें घणुं, रोष हियडे न समाय रे ॥ श्रा० ॥ १४ ॥ श्रर्थ ॥ एक वस्तुना वे जणा श्रजिलाषी श्राय तो एवी श्रजिलाषा बनी रेहेतां वैरनुं कारण जत्पन्न श्राय. एवी बहु शास्त्रोनी शाही हे ॥ १३ ॥ शोक संबंध श्रत्यंत छःखकारक हे तेना दिवसो क्षेश मांज जाय है वंने जणीड एक बीजा परत्वे जुहां श्राल श्रने मेहेणां मारे हे हैयामां कोध समातो नथी।

जेह ने दोय होवे कामिनी,तास फोकट श्रवतार रे॥इश पण पार्वती जान्हवी, श्रादरी जमेय संसार रे॥ श्रा०॥ १५॥ सुर नृप प्रेम खुब्ध थको, बेहु जणी राखे समान रे॥ जाखवे चित्त बेहुए तणां,जेम तंबोक्षी निज पान रे॥श्रा०॥१६॥ श्रिथं॥ जे जे वे स्त्रीं होय तेनो मनुष्य श्रवतार नकामो गयो एम समजवुं. शंकर पण पार्वती श्रने गंगानी साथे परणवाथी संसारमां जटक्या करे हे॥ १५॥ शुरसेन राजा तो प्रेममां श्रासक्त बंने पित-रंने सरखी रीते राखे हे. बंनेनां मन जेम तंबोखी पानने साचवे तेम, साचवे हे.॥ १६॥

चोथे उद्घासें सत्तावीशमी, मोहने वर्णवी ढाख रे ॥ जविक जन चित्त दइ सांजलो, आगल वात रसाल रे ॥ आ० ॥ १९॥ श्रर्थ ॥ एवी रीते चोथा उद्घासमां मोहन विजयजीए सतावीशमी ढाफ कही. हे जन्यजीवो ! तमे ध्यानपुर्वक सांजल जो. आगल वात बहुज रसाल हे ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

तिलक मंजरीना तातने, रमती किणे आखेट ॥ काबर एक पर द्वीपनी,आवी कीधी जेट ॥१॥स्याम शिखा नयणां आरूण,चंचा कनक समान ॥ पांखो विच विच सित असित, वाणी पियूष पान ॥१॥ श्चर्य ॥ तिसक मंजरीना पिताने कोइ वाघरी-पारधीए एक पर दीपनी रमत करती काबरने साबी जेट करी ॥ १ ॥ ते काबरने कासी शिखा इती. तेनी बंने आंखो राती इती. चांच सुवर्णनी जेबी इती. पांखोनी वचे वचे घोसा अनेक सींसोटा इता. अने तेनी वाणी अमृतपान जेबी इती. ॥ २ ॥

काव्य कथा दोहा जाणी, घणी सुरंगी देह ॥ रीजयो जूपित पंखणी, राखी सोवन गेह ॥३ ॥ पुत्रीने रमवा जाणी, मुकी पुर वैराट ॥ तिलक मंजरी हरखी घणुं, देखी पंखणी घाट ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ ते कविता बोखती, वार्त्ता कहेती श्चने दोहा गाती. तेनुं शरीर सारा रंगवाखुं हतुं तेथी तेना जपर राजा बहु राजी श्वयो श्चने तेणीने सुवर्णना पांजरामां राखी ॥ ३ ॥ पोतानी पुत्रीने रमत गमतमां श्चानंद श्ववाने माटे राजाए तेने वैराट नगर मोकखी. तिखकमंजरीए काबरनी सौंदर्यता देखीने मनमां बहुज हर्ष पामी. ॥ ४ ॥

सदा रमाडे तेहने, पोषे नवस आहार ॥ नापे रूपमती प्रते, रमवाने कोइ वार ॥५॥ रूपमती मागे यदा,कहे नृप पुत्री एम॥ पीयर हुती पंखणी, तुं न मंगावे केम ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तिखक मंजरी तेने हमेशां रमामती हती, नवा नवा खान पानथी पोपण करती हती. परंतु कोइ पण वखत रूपमतीने ते कावर रमत गमत सारू आपती न होती ॥ ए ॥ ज्यारे कोइ वखत रूपमती ते कावरनी मागणी करती त्यारे तिखक मंजरी कहेतीके पोते पण पोताना पियरथी शामाटे एवी पिक्तणी मंगावीए नहीं. ॥ ६ ॥

माहारे ताते मोकसी, ए रमवाने काज ॥ पियरथी मंगावतां, केम तुज आवे खाज ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ मारा पिताए मने रमवा सारू ए काबर मोकली छे. ते प्रमाणे तने पण पोताने पियरथी एवी काबर मंगावतां शुं शरम आवे छे ? ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० मी॥

॥ राग सोरठ सामेरी ॥ धनधन संप्रतिसाचो राजा ए देशी ॥ मंत्री इहिता श्रति विलखाणी, सोकलडीने मोसे रे ॥ पण जोली मनमां निव जाणे, विणसे जे कारज रोषे रे ॥ १ ॥ जाणे रे नही कोइ कमेनी गतिने॥ ए श्रांकणी ॥ काबर एक मंगाववा कारण, पियर मुकयो कागली रे ॥ मंत्रीए पुत्रीना श्रक्तर वांची, शोक संबंध श्रटकली रे ॥ जाण्श॥

श्चर्य ॥ रूपमती पोतानी शोक तिखकमंजरीना मेहेणांथी जांखी पडी गइ. परंतु सरख मनवादी ते एम न समजी शकी के रोष करवाथी पोतानुं कार्य बगमे हे. (किव कहे हे के) कर्मनी गतिने कोइ जाणी शकतुं नथी ॥ १ ॥ रूपमतीए एक काबर मंगाववा माटे पोताने पियर कागल खख्यो. मंत्रीए पोतानी पुत्रीना श्चरूरो वांचतांज शोकना देषना कारणथी पत्र श्चान्यानुं कली लीधुं. ॥ २ ॥

वनमां गीरमां पुरमां काबर, जोइ पण निव लाधी रे॥ तात विचारें नही मुकुंतो, न रहे सुतानी बाधी रे॥ जाण्॥ ३॥ कोसी पंखणी एक कर आवी, नीक्षे वरणे रूडी रे॥ अणजाएयो अलगायी जाणे, एह हे जे सुंदर सूडी रे॥ जाण्॥ ४॥

श्रर्थ ॥ मंत्रीए वनमां, पर्वतमां तथा शेहेरमां एम ठाम ठाम कावर माटे खोख कढावी परंतु जोइए तेवी हाथ खागी नहीं. वखी तेणे विचार्युं के जो नहीं मोकखं तो पुत्रीनुं पण रहेशे नहीं ॥ ३ ॥ प्रयास करतां एक कोसी जातनी पहिणी खीखा रंगवाखी अने मनोहर हाथ खागी अजाप्यो होय, ते ठेटेथी एमज जाणे के आतो सुंदर पोपटमी ठे. ॥ ४ ॥

कंचन पिंजर मांहे घाली, पुत्रीने पहोंचामी रे ॥ रूपमतीए पिंजरश्री काडी, खोले लेइ रमाडी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ राखे पिंजर जतन करीने,रक्तक एक तस राख्यो रे ॥ दासीए तिलक मंजरीने जइने, जेद पंखणीनो जाख्यो रे ॥ जा०॥६॥ अर्थ ॥ सुवर्णना पिंजरमां कोसीने मुकीने ते पांजरू पुत्रीने पहोंचाडयुं. रूपमतीना हाथमां आवतांज

स्त्रिया। सुविणना पिजरमा कासान मुकान ते पाजरू पुत्रान पहाचाडेयु. रूपमताना हाथमा आवताज तेणे पोताना खोलामां लड़ने तेने रमाडवा मांडी ॥ ५ ॥ कोसीने सारी रीते सार संजाल पूर्वक पांज-रामां राखी, तेनुं रक्षण करवा एक माणस राख्योः स्त्रा पिक्षणी संबंधी सघली वात एक दासीए तिलक मंजरीने कही. ॥ ६ ॥

शोके पियरथी पंखिणी श्रणावी, निसुणी रोष जराणी रे॥ पारकी श्रांजी देखी न शके, श्रहो कांइ श्रकह कहाणी रे॥ जा०॥ ९॥ कोइ दिन शोक बेहु मली बेठी, निज निज पंखी वखाणे रे॥ कोसी नाणी पण जाणीए श्राखो, वीठी चढावी ठाणे रे॥ जा०॥ ०॥

श्रर्थ ॥ पोतानी शोके पियरथी एक पिहाणी मंगावी ए वात सांजादीने तिलक मंजरी बहु कोध युक्त थड़ गइ. बीजानी शोजा जे आंखे न देखी शकाय ए पण एक न कही शकाय एवी केहेवत है ॥ ९ ॥ कोइ एक दिवस बंने शोक्यो एकटी बेसी पोतपोताना पद्मीना वखाण करे है; कोसी जोके समजणवाली हती; जाणे हांणा लपर वींही चढावीने आखो होय तेवुं थयुं. ॥ ० ॥

एक कहे मारी काबर रूनी, एक कहे मुज कोसी रे ॥ जेम एक प्राहक छावे वलगे, पामोशी बेहु दोशी रे ॥ जा० ॥ ए ॥ कहे बेड जणाउं जोइए केनी, पंखिणी मीठुं बोक्षे रे ॥ वादे चढी इं होड्या परठी, निज निज पिंजर खोले रे ॥ जा० ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ एके कह्यं के मारी काबर सारी छे त्यारे बीजी ए कह्यं के कोसी सारी छे. जेम एक घराक श्चावतां बंने दोशी वाणीया तेने वलगी पक्ती पोताना मालना वलाण करे तेना जेवुं श्ववा मांडयुं ॥ ए ॥ बंने जणीउने एवी होड करवा मांडी के जोइए कोनी पिक्तणी वधारे मीवुं बोले छे एवी रीते वाद विवाद करतां सरत करी श्रवे पोत पोताना पांजरां खोटयां ॥ १० ॥

कावर जेम बोले नर वाणी, तिलक मंजरी तेम कुदे रे ॥ रूपमती बोलावे कोशी, जेह हे पिंजर जुदे रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ बोलावे पण किमही न बोले, नरनी वाणी कोशी रे ॥ रूपमतीए मनमां जाएथुं, ए तो फुटरी फोसी रे ॥ जा० ॥ ११ ॥

श्चर्य ।। जेम जेम कावर मनुष्यनी जापा बोखवा लागी तेम तेम तिलक मंजरी हर्षथी कुदवा मांमी. श्चर्सीत्रा रूपमतीए पण जुदा पांजरामांहेनी कोशीने बोखाववा मांमी ।। ११ ॥ रूपमतीए कोशीने मनुष्यनी वाणी बोखवा श्चनेक प्रयास कर्या पण ते कोइ रीते बोखी नहीं तेथी तेणे मनमां जाएयुं के श्चातो मात्र रूपाली हे परंतु माख वगरनी है. ॥ १२ ॥

खीजवे सोकन रूपमतीने,कांट हसाडे पनोसी रे॥ मारी काबर उपर उवारी, नांखु एहवी कोसी रे॥ जा०॥१३॥ रूपमती हती घणीए नाही,पण पंखीशी रोषी रे॥ त्रागल जावी कोट न समजे, कुण जाणे कुण जोशी रे॥ जा०॥१४॥ अर्थ॥ तिलक मंजरी रूपमतीने खीजववा लागीके आम पाडोशी हसे एवं शुं काम करे हे ? क्यां काबरने क्यां कोसी ? मारी काबर उपर एवी कोसीने तो जवारी जाज. आर्थात् तेनी आगल ते कशा खेलामां नथी॥ १३॥ रूपमती घणीज डहापण वाली हती परंतु पंखी उपर तेने गुस्सो चमयोः जावी आगल कोइनी समजण कामनी नथी. पही कोण झाताके कोण जोशी ?॥ १४॥

रक्तके कही घणुं ए वारी, वात तुं न कर कुमोसीरे ॥ तो पण रूपमतीए को-सीनी, पांखो नांखी खोसी रे ॥१५॥ जोर न चाल्यु कांइ पंखीनुं, सोल पहोर छु:ख पावी रे ॥ पहोती परज्ञव श्रार्त्तध्याने, स्त्री श्रवतारे श्रावी रे ॥ जा० ॥१६॥ श्रवं ॥ कोसीना रखवाले रूपमतीने बहु बहु रीते वारीने कहुं के श्राम गुस्सो करी परिणाम खराब श्रावे एवं शुं काम करो हो परंतु रूपमतीए ते वात नहीं मानतां कोसीनी पांखो खेंची नाखी ॥ १५॥ पहीनुं कांइ पण जोर चाल्युं नहीं. तेणे सोल पहोर सुधी छु:ख जोगव्युं अने श्रंते आर्त्तध्यानमां मरण पामी परज्ञवमां स्त्रीना अवतारमां जन्म थयो. ॥ १६॥

गिरि वैताढ्ये गगन बह्नजपुर, पवन वेग नृप धन्य रे ॥ वेगवतीनी राणीनी कूखे, ते कोसी उत्पन्न रे ॥ जाण् ॥ १७ ॥ वीरमती तेणे पुत्री प्रसवी, बहु कोडे हुलरावी रे ॥ वीर नृपतिने श्राजा पुरीए, श्रानंदे परणावी रे ॥ जाण् ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ कोसीनो जीव वैताट्य पर्वत जपर गगन वहाजपुर नामना नगरना पवन वेग नामना राजानी वेगवती राणीनी कुले पुत्री पणे जत्पन्न श्रयो ॥ १९ ॥ ते पुत्रीनुं नाम वीरमती पाडयुं. तेने बहु रीते खाम खमावी जोरी श्रने मोटी श्रतां श्राजानगरीना वीरसेन राजानी साथे श्रानंद जर परणावी. ॥ १० ॥

> अपन्नर दत्त विद्यार्च साधी, कीधुं राज्य सुसाखी रे ॥ अग्रविशमी चोथे जल्लासे, मोहने ढाल ए त्राखी रे ॥ जा० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ अप्सराए आपेदी विद्यार्थ साधीने तेणीए बहु सारी रीते राज्य कर्यु. एवी रीते मोहन विज-यजीए चोथा उद्यासमां अञ्जवीशमी ढाख कही. ॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

रूपमतीनी दासीए, श्राणी मन जपगार ॥ संजलाव्यो कोसी जणी, महामंत्र नवकार ॥१॥ कोसी बाहिर परववी, रूपमती मन श्राप ॥ पंत्री वध कीधा तणो, मांडयो पश्चाताप ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ कोसीना मरण समये रूपमतीनी दासीए पोताना मनमां छपकारनी बुद्धिए कोसीने नवकार महामंत्र संज्ञाबाव्यो ॥ १ ॥ कोसी मरण पाम्या पठी तेने बहार परव्वी दीधी. पठी रूपमतीना मनमां पश्चिणीनो वध करवा संबंधीनो पश्चाताप थवा मांमयो. ॥ २ ॥

> तिखक मंजरी मिथ्यात्वणी, जन्मथी छुष्ट स्वजाव ॥ कोशीक गति दी वे वध्यो, जिन मत निंदा दाव ॥३॥ रेरे रूपमती निसुण, एहवो तुज जिन धर्म ॥ मुखे पुकारे वे दया, एहवां करी कुकर्म ॥४॥

श्रश्री। तिखक मंजरी जे मिथ्यात्वणी हती श्रने जेनो जन्मश्रीज इष्ट खजाव हतो तेणे कोसीना श्रावा हाख करवामां श्राव्या ते देखी जिनमतनी निंदा वधारे करवानुं सूच्युं ॥ ३ ॥ हे रूपमती तुं सां-जख ! शुं श्रावो तारो जिनधर्म हो, के श्रावां कुकर्म करीने मात्र मोढेशीज दयानो पोकार कर्या करे हे.

> पंखी वधतां पापणी, केम चाख्या तुज हाथ ॥ हुंतो कहीए नवि हणुं, पहवा जीव स्थनाथ ॥५॥ शोक तणे वचने खह्यो, रूपमती विषवाद ॥ वाध्यो बेहु शोक्यो जणी, निज निज धर्म विवाद ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ हे पापिणी ! श्चावी रीते पंखीनो नाश करवामां तारा हाश्च केवी रीते चाली शकया. हुं तो क-दापि एवा श्चनाश्च-निरपराधी जीवनीहिंसा करूंज नहीं ॥ ५ ॥ तिलक मंजरीना श्चावां सख्त वचनथी रूपमतीने बहुज खेद श्रयो. बंने शोकयोनीवचे पोत पोताना धर्म संबंधी बहुज तकरार वधी पमी. ॥६॥

वारे घणुं ए वाखहो, तेम विमणी छं थाय ॥

जेम पावक ज्वाला वधे, जेम जेम घृत सिंचाय ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ बंने राणी छने सुरसेने बहु बहु रीते वारी परंतु बंने जाणी छ विशेषे विशेषे विशेषे अइ. जेम श्चिमां घी नाखतां ज्वाद्या वधे तेना जेवी तेछनी दशा थइ. ॥ ७ ॥

॥ ढाल १ए मी ॥

॥ बापड़ ही रे जीजनली तुं कां निव बोसे मीतुं ॥ ए देशी ॥ रूपमती घणुं ए पस्ताये, कोशिकने छःख देश ॥ पण कीधुं अणकीधुंन होवे, नान कहाये केश् रे ॥ बापडला रे जीवनला तुं करजे काम विमासी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विहंडे जातुं आवतुं विहंडे, कर्मए करवत कासी रे ॥ बाण ॥श॥

श्रर्थ ॥ रूपमतीए कोसीने छःख दइ मारी नांख्या पठी घणो पस्तावो कर्यो परंतु जे कर्यु ते श्रण कर्यु थइ शकतुं नथी ते वातमां कोइथी कांइ पण कही शकाय नहीं (किव कहे हे) हे रांक जीव ! तुं जे काम करते विचारीने करजे ॥ १ ॥ कर्मनो एवो स्वजाव हे के जेम कासीनुं करवत जतां श्रावतां मस्तकने कांपे तेम कर्म पण जतां श्रावतां विडंबना करे हे ॥ १ ॥

रूपमती जे मंत्री पुत्री, पंखी पातिक पुरी ॥ पण हे जिनमतनी आराधक, नहीं कोई वाते अधूरी रे ॥ बा॰ ॥३॥ पूरव देशे आजा नगरी, वीरसेन धृत धरणी ॥ चंद थकी पण अधिकी सुंदर, चंडावती तस घरणी रे ॥ बा॰ ॥ ४॥ अर्थ ॥ प्रधान पुत्री रूपमतीए जो के पंखीनो घात करी पूर्ण पाप बांध्युं परंतु ते जिनमतनी आराधक इती, अने ते वातमां कोई पण रीते अपूर्ण न होती ॥ ३ ॥ पूर्व देशमां आजा नगरीना राजा वीरसेननी चंड थकी पण अधिक कान्ति वाली चंडावती नामनी राणीना ॥ ४ ॥

जोगवी जीवित पूरण रीते, रूपमती कोइ दिवसे ॥ आजाए चंडावती उदरे, रूने रिख्खे निवसे रे ॥ बा० ॥५॥ पूरण मासे अंगज प्रसव्या, चंद नाम तस दीधुं ॥ करो विधे अथवा करो अविधे, न मिटे धर्म जे कीधुं रे ॥ बा० ॥६॥ अर्थ ॥ उदरमां रूपमतीनो जीव पूर्ण आयुष्य जोगवीने कोइक दिवसे शुज ग्रहूर्ते गर्जमां आव्यो ॥ ५ ॥ पूर्णमास थतां चंडावतीए पुत्रने जन्म आप्यो तेनुं नाम चंद पामयुं. किव कहे हे के विधिपूर्वक के अविधिपूर्वक धर्म जे कर्यु होय ते निष्फल थतुंज नथी. ॥ ६ ॥

हुतो जे कोसी रखवालो, ते थयो सुमित प्रधान ॥ जे पंखीनी करूणा श्राणी, एतस फल श्रमलान रे ॥ बा० ॥ ७ ॥ जे पोसाल तणी पाडोसण, सुर सुंदरी हित करणी ॥ तेह थइ नृप चंद एताहरी, प्रथम गुणावली घरणी रे ॥ बा० ॥०॥ श्रर्थ ॥ जे कोसीनो रखेवाल हतो, तेनो जीव सुमित प्रधान थयो मात्र पंखीना उपर दयाना परिणाम होवाशीज तेने श्रावुं निर्मल फल प्राप्त थयुं ॥ ७ ॥ जे उपाश्रयनी पाडोसण, साध्वीने हितनी करनारी सुरसुंदरी हती, ते हे चंदराजा ! तमारी प्रथमनी पटराणी गुणावली थइ ॥ ० ॥

राज सुता जे तिलक मंजरी, हुती मिन्ना पन्नी ॥ विमल पुरीए जूपति पुत्री यह ते प्रमला लन्नी रे ॥ बा० ॥ए॥ अज्जा जीव ययो कनकध्वज, पूरव रोषे कोढी ॥ कोइ अज्ञानी किमपि न जाणे, कर्म तणी गति पोढी रे ॥ बा०॥१०॥

श्चर्य ॥ राजपुत्री तिलक मंजरी जे मिथ्यात्वपद्दी हती ते विमलापुरीना राजानी प्रेमला लझी नामनी पुत्री श्चरू ॥ ए ॥ साध्वीनो जीव गुस्सो चढवाने लीधे गले गले फांसो नांखवाश्ची कोढी कनकध्वज थयो. विचारोके श्चरूतानी जीव कर्मनी श्चावी गहन गति केवी रीते जाणी शके? ॥ १० ॥

धावए किपला जीव काबरनो,जेणे वहवाम लगामी ॥ नटवर जीव हे शुरसेन-नो, पराखो जे वेहु लामी रे ॥ बा० ॥११॥ रूपमतीनी पूर्वे दासी,तेह थइ नट बाला ॥ कर्म प्रवाह जेणे दिस चाल्या, नगणे नदी नाला रे ॥ बा० ॥ १२॥ श्चर्य ॥ काबरनो जीव ते किपद्धा धाव पणे जत्पन्न श्रयोः जेणे वढवाम जमावीः शुरसेननो जीव जे बंने कुंवरीनो स्वामि हतो ते नटवर शिव कुंवर श्रयो ॥ ११ ॥ रूपमतीनी दासीनो जीव नटनी कुमारी शिव माखा श्रइः कि कहे बे—कर्मनो प्रवाह जे दिशाए चाह्यो ते दिशाए चाह्योजः ते नदीर्छ के नाखां कांइ पण हिसाबमां गणतो नथीः ॥ १२ ॥

कुष्टीनो हिंसक जे मंत्री, ते काबर रखवालो ॥ पारन आवे पूरव जवनो, जेम गहीलीनो गवालो रे ॥ बाण।१३॥ श्री मुनि सुव्रत जिनजीए जाख्या,एम पूरव जव सहुना ॥ रे आजापित समज समजतुं, कहीए तुज किंबहुना रे ॥बाण।१४॥ अर्थ ॥ काबरना रक्तको जीव, कोढीआ कनकध्वजनो हिंसक मंत्री थयो. जेम घेली स्त्रीना गोटा-खानो पार आवतो नथी तेम पूर्वे करेलां जवोजवनां कर्मनो पण पार आवतो नथी ॥ १३ ॥ एवी रीते श्री मुनि सुव्रत जिनराजे सर्वेना पूर्व जवनो वृत्तांत कह्यो. पठी कह्यं के हे चंदराजा ! तमे समजो सम-जो. वधारे हवे तमने शुं बोध आपीए. ॥ १४ ॥

पांखो उखेड्यानो कोसीए, सीधो वैर प्रसिद्धो ॥ इह जव तुंजने वीरमतीए, मंत्रे कुकड कीधो रे ॥ बा० ॥ १५ ॥ कीधुं कर्म जे उदये आवे, तिहां नहीं कोइनो चारो ॥ काढ्यो ठे एम सधक्षे जीवे,आप आपणो वारो रे ॥बा०॥१६॥

श्चर्य ॥ कोसीनी पांखो परजवमां तमे खेंची काढी हती तेनुं वेर श्चा जवमां प्रसिद्ध रीते खीधुं, तेज कोसीना जीव वीरमतीए श्चा जवमां तमने मंत्रश्री कुकडो बनावी दीधो हतो ॥ १५॥ करेखां कर्म छद्यमां श्चावे तेमां कोइनो छपाय नश्री. सर्व जीव पोतपोतानां कर्मने श्चनुसारे कर्मनां फख वारा प्रमाणे जोगवे हे-ए सार है. ॥ १६॥

पूर्व जवे साध्वीने चोरी, दीधी यह निःशंकी ॥ प्रेमला लही तो केहेवाणी, विष कन्याथी कलंकी रे ॥ बाणारणा पूर्वे जेम कोसीक रक्तकनो,कांइ न रह्यो काल्यो ॥ गुणावलीनो एणे जव पण, वीरमतीथी न चाल्यो रे ॥ बाण ॥रणा

श्चर्य ॥ पूर्व जनमां साध्वीना छपर निःशंकपणे चोरीनुं कलंक मुक्युं तो श्चा जनमां प्रेमला छड़ी विष कन्या तरीके कलंकवाली केहेवाणी ॥ १७ ॥ पूर्व जनमां जेम कोसीना रखेवालनुं रूपमती पासे कांइ चाह्युं नही. तेम गुणावलीनुं पण श्चा जनमां वीरमती पासे कांइ चाह्युं नही. ॥ १० ॥

दासीए कोसी निजामी, पूर्व जवे मन रंगे ॥ इह जव शिव मालाए कुर्कट, दीधो प्रेमला संगे रे ॥ बा० ॥१ए॥ चंद नरेशे सुमति निशेषे, हियमा मांहि श्राप्लो ॥ पूरव जव श्रधिकारने जाएयो, श्री जिनजीये वखाप्लो रे ॥ बा०॥१०॥

श्चर्य ॥ पूर्व जवमां करूणा सहित दासीए जेम कोसीनी महामंत्र नवकारनुं स्मरण श्चापी निजामी तेम श्चा जवमां शिवमाखाए प्रेमखा खड़ीना संगमां कुकडाने श्चापी सारवार करावी ॥ १ए ॥ चंदराजा तथा सुमित प्रधाने श्री मुनि सुत्रत जिनराजजीए पूर्व जवनो जे जे श्वधिकार वर्णव्यो ते सर्वे पोत पो-ताना हृदयमां धारण कर्यो। ॥ १० ॥

श्री जिनराज तणा चरणांबुज, प्रणम्या चंद जूपाते ॥ मोइन कहे रस चोथा उद्घासनी, उंगण त्रीशमी ढाते रें ॥ बा० ॥ ११ ॥ श्रर्थ ॥ चंद राजाए श्री मुनि सुन्नत स्वामिना चरण कमखमां नमस्कार कर्योः एवी रीते मोहन क्जि-यजीए चोथा उद्वासमां जंगणत्रीसमी ढाख रस युक्त कहीः ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

जिन वाणी निसुणी करी, चंद थयो बहु दक्त ॥ मिटि च्रान्ति नयणे निरित्त, पूरव जव प्रत्यक्त ॥ १ ॥ कर जोडी ठोकी कपट, तोडी माया फंद ॥ दोकी जावेथी नमें, श्री श्री ज्ञान दिणंद ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ जिनेश्वर जगवाननी वाणी सांजलीने चंद राजा बहु डाह्यों थयो, इहापोह करतां जाति स्मरण कान थतांज पोतानो पूर्व जव प्रत्यक्ष देखतां शंका टली गइ॥ १॥ कपट विना-सरख श्चंतःकरणथी हाथ जोडी तथा मायानी जाल त्रोडीने शीव्रपणे श्री क्वान सूर्य रूप जिनराजने जावथी नमस्कार करवा लाग्यो.॥ १॥

तुज जेवो तारक मछो, जव सागरनो पार ॥ जो स्वामि पामुं नही, तो मुज कवण आधार॥३॥कीधो मुज पोता तणो,देखाकी जव जीति ॥ इवे प्रजु मुजथी पाखवी, पोता वटनी रीति ॥ ४ ॥

श्चर्य ।। हे जिनराज ! जनरूपी सागरनो पार पमाडनार तमारा जेवा तारक प्राप्त श्रया पत्नी जो हुं संसार समुद्रनो पार पामुं नहीं तो पत्नी मारे कोनो श्चाधार हे ? ॥ ३ ॥ मने संसार संबंधी पडतां छःखोनुं स्वरूप बताबी जनश्री बीतो करी पोतानो बनाच्यो माटे हे प्रजु ! हवे पोतापणानी रीति पण पाडावी पडारो ॥ ४ ॥

पूरे गज पाठा हठे, साहामा चाले मीन ॥ जल पण पोतावट गणे, नगणे दीन खदीन ॥५॥ जिन कहे देवाणु प्रिये, मा पडि वंध करेह ॥ खनुमति खेइ कुटंबनी, चारित्र चित्त धरेह ॥ ६॥

श्रर्थ ॥ नदीना पूरमां हाथी घसकाइ जाय श्रने माठला सामे पुरे चाले एवं बने ठे; ज्यारे जल पण पोतापणुं ठोकतुं नथी, तो श्राप जेवाए दीन के तवंगर नहीं जोतां पोता पणुं साचववं जोइए ॥ ५॥ श्री जिनराजे कहुं के हे देवाणु प्रिय ! चंदराय ! प्रतिबंध करो नहीं. कुटुंबनी संमति लड़ने चारित्र हद-यमां धारण करजो. ॥ ६ ॥

करी प्रज चरणे वंदना, आव्यो जूपति गेह ॥ चरण करण गुण उपरे, प्रगट्यो पूरण नेह ॥ ७ ॥

श्रर्थ ॥ प्रजुना चरण कमलमां नमस्कार करी राजा जेना हृदयमां चारित्र धर्म छपर संपूर्ण प्रेम छत्पन्न अयों है एवो, पोताने घेर श्राब्योः ॥ ७ ॥

॥ ढाख ३० मी ॥

॥ थिर थिर रे चंदला मकरिश विद्याणुं ॥ ए देशी ॥ देवी ग्रुपावली प्रेमला लही, ए बेहु चंदे तेडी रे ॥ मांडी एकांते वैराग्यनी वातो, विषय कथा नवि ठेमी रे ॥१॥ थिर थिर रे चेतर संयम पंथे,
जूसे कां श्राठ्ये बाजी रे॥पति परनीनुं मन जो राजी,शुं करशे त्यां काजीरे ॥१॥
श्रर्थ ॥ चंद राजाए गुणावसी देवी तथा प्रेमसा सही, ए बंने राणीर्डने बोसावीने तेर्डनी साथे जोग विसासनी वातो नहीं करता एकांत वैराग्यनी वार्तार्ड करवा मामी (किव कहे हे) हे चेतन! संयम
मार्गमां स्थिर था. बाजी जे हाथमां श्रावी हे ते जीतवामां शुं काम जूस करे हे? जो पति पत्नीनुं मन
राजी होय हे तो काजी वचमा पडी शुं करी शकेहे.॥ १॥ १॥

रे वितते स्थमे संयम खेशुं, श्री पुरूषोत्तम पासे रे ॥ तृप्त थयुं मन राज्य खीखाथी, जिन वाणी विश्वासे रे ॥ थि० ॥ ३ ॥ जीवित श्रंज-खिना जख सरखुं, श्रथवा जखनो परपोंटो रे ॥ काया श्रसती माया जेवी, करवो जरुंसो ते खोटो रे ॥ थि० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ दे विनयवंत स्त्रीर्च ! हवे श्चमे पुरुषोत्तम जत्तम एवा श्री मुनि सुत्रत स्वामि पासे चारित्र प्रहण करशुं. जिनेश्वर जगवाननां वचन जपर श्रद्धा श्ववाश्री हवे राष्य जोगश्री श्रमारूं मन तृप्त श्रवाश्री ते जपर जदासीनता श्रद्ध हो ॥ ३ ॥ श्रायुष्य श्रंजितमां राखेला पाणी सरखुं श्रश्रवा जलना परपोटा सरखुं है; वित्री शरीर व्यक्तिचारिणी स्त्रीनी प्रीति जेवुं हे. तेनो जरोंसो करवो तेज खोटुं हे. ॥ ४ ॥

मांस रूचिर गाराथी कीधी, खडकी द्यान जींतडली रे ॥ नसनी वली-इं रोमने घासे, ढाइ काष्टा फुंपडली रे ॥ थि० ॥ ५ ॥ जोजन पुरणीए पूरायें, पवनने यंत्रे यंत्री रे ॥ श्राज्यंगनादिके लीपी तो पण, श्रवधे न रहे उत्ती रे ॥ थि० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ मांस श्चने खोद्दी रूप गाराथी श्चा हांड पिंजर रूप जींत छजी करेखी-चणेखी हे तेमां नस रूप विद्वी जोइए त्यां गोठवण करी वाख रूपी घासथी श्चा कायारूप छुंपभी हाइ हे ॥ ए ॥ जोजन रूपी पुरणीथी तेने पुरवामां श्चावे हे श्वने पवन रूपी थांजखाथी तेने टकावी राखवामां श्चावे हे तथा स्नान विद्वेपनादिथी खिपवामां श्चावे हे तो पण मुदत पुरी श्वतां टकी शकती नथी. ॥ ६॥

कागलने नावमले बेसी, केम उंमे जल तरीए रे॥ तेम ए काया केम ठहराये, ए फुस्तर जब दरीए रे॥ थि०॥ ७॥ मेलो आपण-डो वार अनंती, हुवो नाव्यो ठेहडलो रे॥ अथिर ए मेलो केम करी ठाजे, गहिली माथे बेहडलो रे॥ थि०॥ ०॥

अर्थ ॥ कागलनी होडी बनावी तेमां बेसीने जंडा एवा समुद्रने केवीरीते तरी शकीये ? ते जेम तरी शकाय नहीं तेम आ जवरूपी समुद्र आवी कायामां स्थिर रही केवी रीते तरी शकीये ? ॥ आपणो अरस परस मेखाप अनंतीवार थयो हे तेनो कोइ वखत अंत आव्यो नहीं. तेथी आवा प्रकारना मेखा-पश्ची सर्युं ? तेवो मेखाप घेलीना माथा उपरना पाणीना बेडां जेवो हे. ॥ ०॥

जे घरणी, धरणी नृपकरणी मणि कणाकोिन कमावे रे ॥ जेह जिहां होवे तेह तिहां रहे, कोइ किण संग न छावे रे ॥ थि०॥ ए ॥ जगत् तणी स्थिति क्षणिक देखीने, थयो हुं जववैरागी रे ॥ यो श्रमित तो खेउं दीका, जिन वचने रह लागी रे ॥ थि० ॥ १० ॥

श्रर्थ ॥ स्त्री, पृथ्वी, राज्य जोग विखास, हीरा माणेक श्रने कोटि गमे जब्य जे जे प्राप्त श्रायके ते-ज्यांनुं त्यांज रहे के, मरण समये कांइपण साथे श्रावतुं नथी. ॥ ए॥ जगत्नी रचना श्रावीरीते क्णन-श्वर देखवाथी हुं संसारथी वैराग्य पाम्यो हुं हवे जो तमे मने रजा श्रापो तो हुं चारित्र धारण करूं. जिनराजनां वचनमां मने गाढ प्रेम थयो के. ॥ १०॥

कहेशो तो पण न करो तो पण, मारे संयम खेवो रे ॥ कोइने कह्यो केम न खाये, मुखे श्राव्यो जे मेवो रे ॥ थि० ॥ ११ ॥ राणीए वचन सुणी वालमनां, राखवा घणुं कीधी रे ॥ वार्यो नरह्यो तव करजोकी, संयम श्रनुमति दीधी रे ॥ थि० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ तमे रजा श्चापशो श्चश्चवा नहीं श्चापो तोपण मारे तो संयम खेवो है शुं मुखनी पासे श्चावीने पडेखो मेवो माणस जूल्यो हतां वीजाना ना कहेवाथी न खाय? ॥ ११ ॥ बंने राणीलंप पतिनां वचनो सांजिक्षी तेने संसारमां रेहेवा बहुज विनंती करी; श्चनेक रीते वारता हतां कबुख न कर्युं त्यारे वे हाथ जोडी संयम खेवानी श्चनुमित श्चापी ॥ १२ ॥

राज्य श्राजानगरी तृप चंदे, गुणशेखरने दीधुं रे ॥ मिण शेखरा दिक श्रवरसुतोनुं, मनडुं राजी कीधुं रे ॥ श्रिष्ण ॥ १३ ॥ सातसे राणी सुमति मंत्रीश्वर, शिवनट सकल सुवेशुं रे ॥ विनवे चंद जणी क रजोडी, श्रमे पण संयम लेशुं रे ॥ श्रिष्ण ॥ १४ ॥

श्रर्थ ॥ चंदराजाए श्राजा नगरीनुं राज्य गुणशेखरने श्राप्युं श्रने मिणशेखर प्रमुख बीजापण राज्य कुमारोने वाजबी रीते गरास श्रापीने सर्वना मनेन संतोष पमाङ्यो. ॥ १३ ॥ सातसे राणीचं, मंत्रीश्वर सुमित श्रने शिवकुमार नट तथा शिवमाखा विगेरे चंदराजाने विनंति करवा खाग्या के श्रमे पण श्रापनी साथे संयम खेशुं. ॥ १४ ॥

हरख्यो चंद करी आडंबर, दीक्षा हित परवरी है ।। नृप चढते प रिणामे चढीयो, सिंहवली पाखरी है ।। थि॰ ॥ १५ ॥ श्रीमुनिसुवत चरणे आञ्यो, प्रजुजीए पण समजाञ्यो रे ॥ तेम चंदादिक जाव चारित्रीये, जाव अधिक मन आञ्यो रे ॥ थि॰ ॥ १६ ॥

श्चर्य ॥ पठी चंदराजा महा श्चामंबर सहित हर्षवंत थइ दीका खेवा तैयार थयो. राजाना चारित्र प-रिणाम जत्तरोत्तर वधवा खाग्या. एक तो सिंह श्चने वखी तेने पालर्यो एटखे पठी शोजामां कचाश रहे ? ॥ १५ ॥ पठी चंदराजा श्रीमुनिसुव्रतस्वामिनीपासे श्चाव्या. तेर्जने परमात्माए जत्तम बोध श्चाप्यो। जे सांजाबी चंद प्रमुख जाव चारित्रवंतोना जाव श्चिक वधवा खाग्या। ॥ १६ ॥ चंदने धन्य इंद्रादिक जाखे, निर्त्वीने धन्य करणी रे ॥ थि० ॥ १५ ॥ श्रिश्रमी ढाक्षए चोथे छद्वासे, कही मोहने जवतरणी रे ॥ थि० ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ समवसरणमां इंजादि देवो चंदराजाना उत्तम चारित्र परिणाम जोइ तेनी करणीने धन्यवाद देवा लाग्या. एवी रीते आ चोथा छद्यासमां त्रीशमी ढाख मोहन विजयजीए जवथी तरवा रूप कही. १९ ॥ दोहा ॥

गुणशेखर मणिशेख रे, निरखीतात वैराग ॥ दीका खेवा श्र वसरे, कृत महोत्सव महाजाग ॥१॥ सहु सुत करजोनी कहे,

श्रद्धो प्रज जगदाधार ॥ शिवसुख श्रर्थी प्रूपने, दीजे संयम जार ॥ १ ॥ श्रश्च ॥ गुणरोखर तथा मणिरोखरे पितानो श्रद्धत वैराग्य देखी दीका लेवाने श्रवसरे ते महा जाग्य-शाली हैए मोटो महोत्सव कर्यो ॥ १ ॥ चंदराजाना बने पुत्रोए विनंती पुर्वक कह्यं के हे त्रण जगत्ना श्रा-धार प्रज ! मोक सुखना श्रर्थी एवा श्रमारा पिताने चारित्र श्रापो ॥ १ ॥

कांसा पात्रे नीरकण, जेम करी निव ठहराय ॥ विषय रंगथी नृप ह दय, किमही निव जेदाय ॥ ३ ॥ सुतने वचने जगद्गुरु, तेमी चंद नरेश ॥ उपदिशे सांजल नृपति, दोहिलोठे रूपि वेश ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ जेम कांसना पात्र जपर पाणीनुं टीपुं कोइरीते टकी शकतुं नथी तेवी रीते चंदरायानुं श्चंतःक-रण विषयरूप रंगयी लेशमात्र रंगातुं नथी. ॥ ३ ॥ चंदरायना पुत्रोनी विनंति सांजली, जगद्गुरू श्री जिनराजे चंदरायने पोतानी पासे बोलावी कहुंके हे राजन् ! श्चा मुनिनो वेश धारण करवो ते महाख्ष्कर हे.ध

> परिषद् सहचा कठन हे, संयम खांका धार ॥ करवो दांतेमीणने, लोहचणा श्राहार ॥ ५ ॥ ५ संयम वेसु कवस, प्रथम यकी

कहुं तुज ॥ व्रतगिरिशिखरथी बहु पड्या, कही दाखुं हुं गुज्ज ॥ ६ ॥ श्चर्य ॥ हे राजा ! चारित्रमां परिषद्द सहन करवा बहुज मुक्तिख हे, वखी संयम तखवारनी धार जेवुं

श्चर्य ॥ ह राजा ! चारित्रमा पारषह सहन करवा बहुज मुष्किल ठ, वला सयम तलवारना घार जबु हे तथा श्चा चारित्र पालवुं ते मीणना दांते खोढाना चणा चाववा जेवुं हे. ॥ ५ ॥ श्चा संयम पालवुं ते रेतीना कोलीया खावा जेवुं हे ए वात हुं तने प्रथमश्रीज कहुं हुं. वली खरेखरो मर्म ए कहुं हुं के श्चा चारित्ररूपी पर्वतना शिखर छपरश्री लश्चहीने श्चनेक जनो पड़ी पायमाल श्रया हे. ॥ ६ ॥

चंदकहे छाहो जगद्गुरु, हे दृढ चित्त मुज हेव ॥ करो प्रसाद बत गुण रतन, जतन करी स्वयमेव ॥ ७ ॥

श्चर्य ॥ ते सांजली चंदराये विनंति करीके हे जगद्गुरु ! मारूं जिस खरे खरूं दृढ हे. माटे मारा छ-पर कृपा करी मने व्रत जे महा गुण्रूपी रत्नोहे ते श्चापो, तेनुं हुं यत्ना पूर्वक प्रतिपादन करीश ॥ ॥ ॥ हाल ३१ मी ॥

॥ बीण वजावी कानुनेजी, ए देशी ॥ चंदे जूषण परिहर्यां जी, जाणी जार समान ॥ कीथो वस्त्र छतारतेजी, स्रहि कंचुकी स्रातुमान ॥ १ ॥ स्रातुप्रव योगे स्रादर्युजी, शुरू किया स्रातुष्टान ॥ ए स्रांकणी ॥ खंचन कीथो केशनोजी, चंदे यह स्रातुकुल ॥ नारुया उखेडी जाणीएजी, ए तो कर्म तरुनां मूल ॥ स्रव ॥ १ ॥

श्चर्य ॥ पत्नी 'वंदराजाए पोताना शरीर छपर धारण करेखां आजूपको बोजा समान जाणीने तजी दीधां जेम सर्प कांच्खीने तजी दे तेवीरीते वस्तादि आजूषको छतारतां देखाव थयो. आत्मस्वरूपना अनुज्ञवने योगे शुक्क किया-अनुष्ठाननो आदर कर्यों ॥ १ ॥ पत्नी केशनो खोच चंदराजाए कर्यों तेजाले सानुकुखताए कर्मरूपी वृद्धनां मूखो छखेडी नांख्या होय तेवुं जणायुं. ॥ १ ॥

ग्राञ्यो चंदने मस्तके जी, श्री जिनजीये वास ॥ शिववधु वश करवा जाणी जी, चुर्ण ए कीध प्रकाश ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ धर्मध्वजने मुह्पतिजी, श्रापे चंदने नाथ ॥ श्रंतर वैरी जीतवाजी, जाणे खद्ग खेटक प्रद्युं हाथ ॥ श्र० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चनंतर श्रीजिनराजे चंदराजना मस्तक छपर वासकेप कर्यो. तेजाणे शिववधुने वहा करवा चूर्ण डांटयुं होय एवो प्रकाश थयो. ॥ ३ ॥ पडी प्रशुजीए चंदराजाने छीरो तथा मुहपत्ति श्चाप्यां ते श्चंतरंग शत्रुखेने जीतवा हाथमां तखवार तथा ढाख श्चाप्यां होय तेवुं जणायुं. ॥ ४ ॥

श्री चंदराज रूषी थयाजी, मुनि सुत्रत छपदेश ॥ नर सुरे कीधी वंदनाजी, कहे धन धन सकख सुरेश ॥ श्रव ॥ ५ ॥ सुमित मंत्रीए जावथीजी, खीधो संयम जार ॥ राज क्रिसिनुं मंत्रीपणुंजी, तेणे राख्नुं करी निरधार ॥ श्रव॥६॥ श्रर्थ ॥ श्री मुनिसुत्रतस्वामिना छपदेशे श्री चंदराय राजिष थया. मनुष्य श्रने देवता सर्वेप वंदना करी. देवोना स्वामि सर्व इंजोए धन्यवाद श्राप्योः ॥ ५ ॥ सुमित मंत्रीए पण जावपूर्वक चारित्र श्रंगी-कार कर्यु. तेर्डए संयम खीधाथी राजिष चंदरायनुं मंत्रीपणुं निश्चय पूर्वक साचव्युं. ॥ ६ ॥

दीका सीधी शिव नटेजी, नटगित परही मेला। सोक वंशना श्रमनोजी, सही मांड्यो ड्रिंग्ट खेल ॥ अ०॥ ७॥ गुणावसी वसी प्रेमसाजी, शिवमाला मनु हार ॥ बीजी पण वसी राणीएजी, तिहां सीधो संयम जार ॥ अ०॥ ०॥

श्चर्य ॥ शिवकुंवर नटे पण नटपणुं तजीने दीक्षाखीधी. चीदराज खोकरूपी वांसना श्चय्रज्ञागने प्रा-सकरवाने श्चित छुघट एवो खेख शरुकर्योः ॥ ७ ॥ राणी गुणावखी तथा प्रेमखाखडी श्चने सुंदर नटवी शिवमाखा तथा बीजी पण राणीलेए चारित्रधर्म श्चंगीकार कर्यों. ॥ ० ॥

आजापुरथी स्वामिएजी, विधियी कीध विदार ॥ चंद महाक्ष्वी परवर्याजी, खेइ आपणो परिवार ॥ अ०॥ ए॥ गुणशेखरादि संप्रेमवाजी, आव्याज्यां खगी सीम ॥ श्री जिनराज तणा मुखेजी, घणे श्रंगीकर्या व्रतनीम ॥अ०॥१०॥

कर्ष ॥ पर्छी चंदराजर्षि पोताना परिवारनी साथे परवरेखा आजापुरीथी विधिपूर्वक विद्वार करवाने तैयार थवा ॥ ए ॥ गुणशेखर प्रमुख राज्यमंडख ज्यां सुधी राज्यनी सीमामी दतो त्यां सुधी वोखायवाने आव्या. ते वखते श्री जिनराजना मुखयी अनेक खोकोप व्रतनियम अंगीकार कर्या. ॥ १०॥ रायक्ति करीवंदनाजी, गुण शेखरादिक ताम ॥ करजोमीने विनवेजी, सहु निज निज क्षेत्र नाम ॥ श्रव ॥ ११ ॥ माथा जतारी संचर्याजी, राज्य तज्युं तृण जेम ॥ पण श्रमचा मनडा थकीजी, तमे वीसरशो केम ॥ श्रव ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ पठी गुणशेखर प्रमुख सर्व समुदाये राजिषने वंदना करी; श्चने दरेकजण पोतपोताना नाम-पूर्वक बेहाश्वजोडी विनंति करवा लाग्या. ॥ ११ ॥ श्चमारा जपरयी राग तजीदङ् श्चापे विहार कर्यो ए-दक्षंज नहीं पण राज्यनेपण तणखलानी जेम तजी दीधुं परंतु श्चमारा मनमांथी तमे विसरावाना नश्ची.१२

श्यावजो वेहेखा वंदाववाजी, रखे मुकोजी विसार ॥श्रंगतणा मखनी परे जी, तमे परिहरी मांड्यो विहार ॥ श्र० ॥ १३ ॥ धर्माशिष देइ कहेजी, राजकृषि विणी वार ॥ धर्मोद्यम करजो सहुजी, ए श्रिथर जाणी संसार ॥ श्र० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ श्रमारी विनंति ए छे के श्रमने फरी दर्शननो खाज श्रापवा पधारजो. श्रमने मनमांथी वि-सारी देता नहीं श्रापे तो शरीरना मेखने तजी देवानी जेम सर्वने तजी दई विहार शरू कर्यो छे. ॥१३॥ पढ़ी राजार्ष सर्वने धर्मखाजरूप श्राशिर्वाद दई बोह्याके तमे सर्वे श्रा संसारने इाएजंगुर जाएीने धर्मने विषे जद्यम करजो. ॥ १४॥

मात पितासुत केहनाजी, केहना राज्य जंडार ॥ म धरशो प्रतिबंध कोइथीजी, नित पालजो कुल आचार ॥ अ० ॥ १५ ॥ चंद मुनिनी शिखथीजी, पुत्रादिक परिवार ॥ आंसु वमता आवीयाजी, एम आजानगरी मकार ॥ अ० ॥ १६ ॥

श्रर्थ ॥ कोना माबाप-कोना पुत्र श्रने कोना राज्य जंकार हे. सर्वे श्रनित्य होवाश्री कोइनीसाथे प्र-तिबंध गाढ स्नेदबंधन करशो नही. निरंतर कुखाचारमां वर्तजो. ॥ १५ ॥ एवीरीते चंदराजिंग श्रापेष्टी शिखामण ग्रहण करीने पुत्रादि गुणशेखर विगेरे सर्व परिवार श्रांसु पडता श्राजानगरीमां श्रान्या. ॥१६॥

> चंद महामुनि जगजयोजी, उपशम धरी सुविशाल ॥ मोहने चोथा उल्लासनीजी, कही एकत्रीशमी ढाल ॥ अ०॥ १९॥

श्रर्थ ॥ श्रनुक्रमे चंद राजिष विशाख छपशम रसने धारण करता जगत्मां जयवंता प्रवर्त्या. एवीरीते चोश्रा उद्वासमां एकत्रीशमी ढाख मोइन विजयजीए कही. ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

महाक्षी श्रीचंदवर, विरमी सकल संताप ॥ स्थविर समीपे श्रन्यसे, चारित्र किया कलाप ॥ १ ॥ सुमतिरुषि शिवकुंवर क्षि, करे शास्त्र सु प्रसंग ॥ राज क्षिना विनयमां, नित प्रते रहे श्रजंग ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ तदनंतर मद्दिष चंदराये सर्व संतापने शांतकरी चारित्र किया विधिनो स्थिविर मुनिपासे श्रन्यास करवा मांड्यो. ॥ १ ॥ सुमतिरूपि श्रने शिवकुंवर रूपिएपण शास्त्रनो श्रन्यास करवा मांड्यो. तेर्जना राजर्षिना विनयमां निरंतर श्रानंगपणे प्रवर्त्तवा खाग्या. ॥ १ ॥ गुणाविधी आदे सकल, साधवीनो परिवार ॥ विन येप्रवर्तणीनी कने, शिखे मुनि आचार ॥ ३ ॥ एम सहुए पठनादिके, रहे सदा लय लीन ॥ चढते परिणामे करी, तप जप किया नवीन ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ गुणावली प्रमुख सर्व साध्वीनो परिवार विनंय पूर्वक झानवंत वृद्ध साध्वीर्च पासे मुनिनो श्चा-चार शिखवा लाग्यां. ॥ २ ॥ एवीरीते सर्वेजणां निरंतर शास्त्राज्यासमां लयलीन थयां, श्चने परिणामनी चढती धाराए नवीन तप-जप-क्रियामां प्रवर्त्तवा लाग्यां. ॥ ४ ॥

> संयम सिंहपरे यहा, पासे थइने सिंह ॥ कहींए कोइ लोपे नही, श्री जिन श्राणा लीह ॥ ५ ॥ श्रुत सागर तरतां थकां, सेखे ययो प्रयत्न ॥ करतसे श्रावीने चढयुं, श्रध्यातमनुं रत्न ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ केशरीसिंहनी जेम संयम प्रहण करीने, तेवीजरीते चारित्रने पालता हता श्चने कोश्पण श्री जिनराजनी श्चाझारूपी मर्यादाने जरापण जलंघता न हता. ॥ ए ॥ श्चतसिद्धांतरूपी समुद्रने तरतां श्वकां करेखो प्रयत्न सफल थयो. एवी रीते के दथेलीना तलीश्चामां श्वध्यात्मरूपी रत्न श्चावीने प्राप्त थयुं. ॥६॥

> परनिंदा तेम आप्प थुइ, स्वप्रघोष हठ वाद ॥ एइ निवारीने रमे, गुणठाणे अप्रमाद ॥ ७॥

श्रर्थ ॥ पारकी निंदा तेमज पोतानीस्तुति, वखी पोतानी बडाइ तथा इट सहित वादविवाद ए सर्वेनो त्याग करीने श्रप्रमत्त नामना सातमा गुए ठाएे रमतो करवा खाग्या ॥ ७ ॥

॥ ढाख ३१ मी ॥ ॥ वाघाना जावननी देशी ॥

श्रीचंदराय क्रषी ग्रुज संयम, निरतिचारे पाक्षेहे ॥ ससनेहा जविजन, परमनाण खप कीजीए ॥ ए श्रांकणी ॥ ए षट्कायमें दयापरिणामे, निज निज रूप निहासेहे ॥ स० ॥ १ ॥ पुद्गस दसे खुंत्या चेतनने, मूल ग्रुणे यही श्राणे रे ॥ स० ॥ जेद विकान थकी समता ग्रुण, निज हेतुश्रा करी जाणे हे ॥ स० ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ श्री चंदराजिं उत्तम प्रकारनुं संयम निरितचारपणे पाले हे. वली ह कायनेविषे द्यापिणा-ममां वर्त्ततां दरेकने पोत पोताना स्वरूपथी जुवे हे. हे धार्मिक स्नेहवंत जन्यजनो परमज्ञान—केवलक्षाननो खप—मनोरथ करो ॥ १ ॥ पुजलना गाढ संबंधवाला दलमां खुची गयेला श्रात्माने मूल चारित्र गुणोवडे प्रहण करीने बहार लावेहे श्रने जेद विज्ञान—जमश्री चेतन जिन्नहे एवं प्रकृष्ट ज्ञान थवाथी समता प्रमुख गुणने पोताना हेतस्वी करी जाणे हे. ॥ १ ॥

थाठे प्रवचन माता केरा, खेखा मांहि खेखे हे ॥ स॰ ॥ खंतितणे खड़गे करी सहज, मोह महामद ठेखे हे ॥ स॰ ॥ ३ ॥ अंतर संवे

गनी तटिनीए, परमानंद घनजीसे है ॥ स० ॥ काया रथने सुविधे आप्यो, योग पंथने चीसे है ॥ स० ॥ ४ ॥

श्चर्य ॥ श्चान प्रवचनरूपी माताना लोखामां निरंतर रमत गमत करे ने श्चने इमारूपी तखवार हा-श्चमां खड़ने सेहेज स्वजावे महामदरूपी मोहनो पराजय करे ने ॥ ३ ॥ श्चंतरंग संवेगरूपी नदीमां पर-मानंदना समूहरूप श्चात्माने नवरावेने एवी रीते कायारूपी रश्चने झान, दर्शन, चारित्र योगरूपी पंथना चीखामां छत्तम विधिपूर्वक श्चाखा ने ॥ ४ ॥

जैन विवेक शैक्षिणी खीधी, श्रानुजन रसनी कुंपी है ॥ स० ॥ सुजग सं तोषतणा मंदिरमां, कायिक जानने सुंपीहे ॥ स० ॥ य ॥ पंच मेरू समपंच महाव्रत, श्रातुख बक्षे उपाडे हे ॥ स० ॥ पंच करण पंचान ननी परे, छाने संवर बाडे हे ॥ स० ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ जैन धर्मना विवेक रूपी पर्वतमांथी श्चनुजवरूपी रसनी कुपी प्राप्तकरी श्चने सौजाग्यवंत सं-तोषरूपी मंदिरमां श्वायिक जावने ते सुप्रत करी. ॥ ए ॥ पांच मेरू समान पांच महात्रतने श्चतुङ्य बक्ष-वडे करी छपाने हे. श्चने पांच करणने सिंहनी जेम संवर रूपी वाडमां खावे हे. ॥ ६ ॥

परिषद्धी आतम ग्रण पृष्टि, मुक्तिनी प्राप्ति विचारे है ॥ स० ॥ जेम जेम तापादिक सद्दनधी कंचन, जूषणपणुं निरधारे है ॥ स० ॥ उ ॥ जेम जेम शांति रसे हृदयमें, आत्म प्रदेशने जेदे है ॥ स० ॥ तेम तेम ताम्रता खजी चिडूपा, परम मंगलता वेदे है ॥ स० ॥ उ ॥

श्चर्य ॥ बाबीस परिषद् सद्दन करवाथी श्चात्म गुणनी पुष्टि तथा मुक्तिनी प्राप्ति थाय एम विचारे हे कारण के सुवर्ण जेम ताप प्रमुखयी विशेष शुद्ध थाय तेम श्चात्मा पण कष्टो सम्यक् प्रकारे सद्दन कर-वाथी निर्मेख थाय हे ॥ ७ ॥ जेम जेम इदयमां शांत रस न्यापवाथी श्चात्म प्रदेशो जिंजाय तेम तेम त्रांबु स्वरूप चिद्वप-श्चात्मानुं पखटाइ सुवर्ण रूपी परम-प्रकृष्ट शुद्ध स्वरूप श्चात्मा श्चनुजवे हे. ॥ ७ ॥

क्वानादिक गुणे नित्यानंदे, श्वानंदता विधि जाणे है ॥ स० ॥ परमानंद तणी चासणीर्ड, करीं करीं सुजग प्रमाणे है ॥ स० ॥ ए ॥ क्वपक श्रेणि तणी रूषि राये, रमवा मांकी बाजी है ॥ स० ॥ मोह जोहनी श्वजंग जे सेना, ते पण नाठी खाजी है ॥ स० ॥ १० ॥

अर्थ । ज्ञानादिक गुणोथी नित्य आनंदमां वर्त्ततां आनंद खरूपनी विधि जाणे हे अने तेवी परमा-नंदनी चासणी बनावी शुद्धारम रूपी सुवर्णनी परीक्षा करे हे ॥ ए ॥ तदनंतर राजर्षिए क्षपक श्रेषिरूप रमवानी बाजी मांडी. अने तेम करतां मोहरूपी योद्धार्जनी आजंग सेना हतीते खजवाइने नासी गइ. १०

कर्म प्रदेश घन घाती संकुच्या, परम प्रदेशे उद्घसियो है ॥स०॥ जाणी प्रजाते रिव जेम आगम, दर्श निशातम खिसयो है ॥ स०॥ ११॥

एकादस चिकण गुण ठाणुं, लंध्यो लाघव योगे हे ॥ स० ॥ इहां चढता प्राणी केइ पडीया, नडीया मिथ्या जोगे हे ॥ स० ॥ ११ ॥

श्चर्य ॥ पठी घन घाती जे चार कर्म तेना दलीयां संकोच पाम्यां, जेथी निर्मेख श्चारम प्रदेशनो उद्घास वधवा मांडयो. ते जेम प्रजात समये सूर्यनो उदय श्वतां रात्रिनो प्रसरेखो श्चंधकार खसी जाय तेम श्युं ॥ ११ ॥ श्चर्मीश्चारमुं उपशांत मोह नामनुं चिकणुं गुणठाणुं तेतो मात्र खाघव योगथी उखंधी गया. श्चा गुणठाणे चडेखा प्राणी कहक पडी गया श्चने मिथ्या जोगमां फसाइ गया हे. ॥ ११ ॥

द्वादश गुण ठाणे स्थिति मात्रा, श्रमित्य दशा गुण जाव्या है ॥ स०॥ राजक्षि तेरमे गुण स्थानक, शैक्षेशीए श्राव्या है ॥ स०॥ १३॥ घाती कर्म तणा श्रावरणा, जे यह गया परमाणु है ॥ स०॥ कार्य तजी पामी कारणता, धन्य एइ गुणठाणुं है ॥ स०॥ १४॥

श्रर्थ ॥ बारमा गुणस्थानके श्रनित्यता गुण रूप जावना जावतां श्रंतर्मुहूर्त्त मात्र स्थिति करी राजिषं तेरमा गुणस्थानक-सयोगी केवली पणाने प्राप्त करता हवा ॥ १३ ॥ घाती कर्मना जे श्रावरण हतां ते संपूर्ण नारा पामी गयां. जेथी तेर्ननामां कार्यनी शक्ति जेहती ते मटीजतां मात्र कारणता रही. श्रा गुणठाणाने घन्य हे ॥ १४ ॥

उदयो केवल नाण दिवाकर, यथाख्यात ग्रेण प्रगट्यो है ॥ स० ॥ लोकाकाश प्रकाश थयो तव, श्रात्म प्रबल दल उलट्यो रे ॥ स०॥१५॥ संसारी प्राणीना दीठा, गत्यादिक ग्रेण जारी है ॥ स० ॥ जाणी कर्म तणी विचित्रता, सघली भ्रान्ति निवारी है ॥ स० ॥ १६ ॥

श्रश्री ॥ श्रा गुण्ठाणे केवल कानरूपी सूर्यनो छदय श्रयो; वली यश्राख्यात चारित्र रूपी गुण प्रगट श्रयो. ज्यारे लोककाशने विषे रहेला समस्त पदार्थोनो प्रकाश श्रयो त्यारे श्रात्मानुं प्रवल सैन्य छठलवा मांक्युं ॥ १५ ॥ केवल कानना प्रजावश्री संसारना सर्व प्राणी मात्रना गति प्रमुख जावनुं जाण्पणुं श्रयुं, जेशी कर्मनी श्रात्यंत विचित्रता जाणी, सर्व ज्ञान्ति मात्रनुं निवारण कर्युं, ॥ १६ ॥

दीठी समिकत दृष्टि देवे, घाती कर्मनी क्तपणा रे ॥ स०॥ केवल क्रान उदय श्रमुमानी, कीधी कर्मनी रचना है ॥ स०॥ १७॥ चंद केवली कमलासन वेसी, श्रक्षत देशना दीधी है ॥ स०॥ जिवके विषय तृषा उपशमवा, श्रति श्रादरशी पीधी है ॥ स०॥ १०॥

श्चर्य ॥ ते समये समिकत दृष्टि देवताए घाति कर्मनो नाश जाणी, श्चनुमानथी केवलक्षाननो छद्य जाणी लीघो, पत्नी पोताने योग्य कार्यनी रचना करी ॥ १७ ॥ तदनंतर देवे रचेला कमलासन छपर केवली चंद राजर्षिए वेसीने श्रञ्जत देशना श्चापी. श्चनेक जन्यजीवोए विषयाजिलाप रूप तृषाने शांत करवा ते देशना रूपी जलनुं श्चत्यंत श्चादर पूर्वक पान कर्युः ॥ १० ॥

जंगम तीरथ छति सुखकारी, श्रीचंद केवल नाणी है ॥ स० ॥ ढाल बत्रीसमी चोथे उल्लासे, मोइन विजये वलाणी है ॥ स० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ अत्यंत सुखना करनारा, केवल ज्ञानी श्रीचंद राजिष जंगम तीर्थ होता हवा एवी रीते चोत्रा स्वासमां बत्रीशमी ढाल मोहन विजयजीए कही. ॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

श्री श्री चंद केवल लही, जूतल करिय विहार ॥ प्रतिबोधे जिव जन जणी, श्राणी मन जपगार ॥ १ ॥ देखे केवल दर्शने, लोकाकार स्वरूप ॥ तेम प्ररूपे जिवकने, मैत्री जाव श्रनूप ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ श्रीचंदराजिंग् केवल कान प्राप्त करी पृथ्वी छपर विहार करी जन्यजनोछपर छपगार कर-वा सारू प्रतिबोध छपदेश श्रापता हवा ॥ १ ॥ केवल दर्शनथी चौद राज लोकनुं यथार्थ स्वरूप देखीने तेज प्रमाणे जन्य जीवोने प्ररूपणा करता हवा. तेवीज रीते श्रमुपम मैत्री जावनो पण छ-पदेश करता हवा. ॥ १॥

> बाखादिक नरने हिते, दिये तेहवा छपदेश ॥ श्रगम श्रगोचर जावना, जेद कहे सुविशेष ॥ ३ ॥ श्राव्या श्रनुक्रमे विहरता, पावन सोरठ देश ॥ फरस्यो विमलाचल विमल, जावी जाव विशेष ॥॥॥

श्रर्थ ॥ बाल प्रमुख-उत्तम, मध्यम, कनिष्टने योग्यता प्रमाखे उपदेश श्रापता इता. वली श्रमम श्रने श्रमोचर जावना विविध प्रकारना जेद विशेष रीते कहेता हता ॥ ३ ॥ श्रमुक्रमे विहार करतां करतां पवित्र सोरठ देशमां पधारी श्रत्यंत निर्मल जाव प्रगट श्रयेक्षो होवाश्री पवित्र विमलाचल गिरि-राजने फरसता हवा. ॥ ४ ॥

ए गिरि जपर मुनि थया, सिद्ध श्चनंतानंत ॥ तीर्थ ए संजार ते, बूटे कर्म छुरंत ॥ ५ ॥ श्री चंद पंचम नाण धर,परम धरम दातार ॥ मास तणी संक्षेषणा, कीधी ए व्यवदार ॥ ६ ॥

अर्थ ।। ए गिरिराज उपर अनंतानंत मुनियो सिद्ध थया. ए तीर्थाधिराजनुं स्मरण करतां छुखेः श्रंत आवे एवां कर्म पण बुटी जाय है ।। ए ॥ परम धर्मना दातार, पंचम ज्ञानना धारक श्रीचंद राजर्षिए एक मासनी संक्षेषणा करी जुल्कृष्ट न्यवद्दार साचन्यो. ॥ ६ ॥

> नोगवी पूरण श्राउखुं, श्रायन त्रीस हजार॥ तेहमां वर्ष सदस्र एक, पाछ्यो संयम जार॥ ॥॥

श्चर्य ॥ त्रीस हजार वर्षनुं संपूर्ण श्चायुष्य चंद राजिषंए जोगव्युं, तेमां एक हजार वर्ष सुधी चा-रित्र पर्याय पाट्यो. ॥ ७ ॥

॥ ढाख ३३ मी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

श्री चंद केवली योग निरूधी, पंचम स्वर स्थिति जाणेजी ॥ शेष कर्म तजी चढया श्रजोगी, चौदसमे ग्रण गणेजी ॥ १ ॥ श्रनंतवीर्य, श्रखेद, श्रतीं द्विय, श्रक्तयता ए चारेजी ॥ जेहमां खोली यइने जरध, करी गति श्री चंद प्यारेजी ॥ १ ॥

श्रर्थ ॥ श्रीचंद केवली सर्व कर्मनो नाश करी, सर्व योगनुं रूंधन करी ज्यां मात्र पांच हस्वाक्टर जेट-खुं काल मान हे एवा चौदमा श्रयोगी गुए स्थानके चड्या ॥ १ ॥ श्रनंत वीर्य १ श्रखेद पणुं, २ श्रर्ती-द्विय पणुंरु, श्रने श्रक्तयता ४ ए चारे मय श्रइने वहाला चंद राजर्षिए छर्ध्व गमन कर्यु.॥ २ ॥

सद्दा सिद्धथी बारह जोयणे, इशिष्य जारा पुन्नीजी ॥ तिहां जोयण चोवीसमे जागे, श्रवगाहना संजववीजी ॥ ३ ॥ ए लोकाय श्रलोक ने श्रागल, इहां ने सकल श्रदेही जी ॥ ज्योति ज्योति मांहे जइ मिलीया, श्री चंद सिद्ध सनेही जी ॥ ४ ॥

श्रश्री ॥ सर्वार्श्र सिद्ध नामना पांचमा श्रमुत्तर विमानश्री बार योजन छपर इषत् प्राग्जारा नामनी पृथ्वी जे सिद्ध शिखा नामे पीसताखीस खाख योजननी छे त्यां एक योजनना चोवीसमा जागे श्रवगाहना करी रह्या ॥ ३ ॥ ए जाग खोकनो श्रयजाग सहुश्री छंचामां छंचो छे तेनी छपर श्रखोक छे खोकाग्रमां सर्व श्रदेही-सिद्ध है ज्योतिमां ज्योति मखे तेवी रीते सिद्धमां श्रीचंद मखी गया ॥ ४ ॥

सादि श्रपर्यवसितता पामी, जब ज्रमणा सवि बुटी जी ॥ पाम्युं पूर्ण निरंजननुं पद, बीखा सहजे श्रखुटी जी ॥ ५ ॥ सुमित साधु शिव साधु गुणावबी, प्रेमला लही साहुणी जी ॥ बही केवस शिव संपद पाम्या, प्रसरी कीर्त्ति प्रगुणी जी ॥ ६ ॥

श्चर्य ॥ सादि श्चपर्यवसितता एटले मोक्त पाम्या ते श्चादि श्चने हवे पठी त्यांथी पडवानुं नथी तेथी श्चनंत एवी सादि श्चनंत स्थिति प्राप्त करी. संसारमां जन्म मरण्यी ब्रुटया पूर्ण निरंजन पद प्राप्त कर्यु श्चनं संसारी लीलानो श्चन्नाव यतां सहज श्चात्म स्वरूपनी लीला श्चलुट पणे प्राप्त श्चरू ॥ ५ ॥ सुमित साधु, शिव साधु, गुणावली श्चने प्रेमला लडी साध्वीर्च केवल कान पामी मोक्त पद पाम्यां. तेर्चनी कीर्त्ते जगमां बहुज प्रसरी ॥ ६ ॥

शिव मालादिक श्रवर साहुणी है, सवह सिद्धे पहोती जी ॥ महा विदेह मांहे श्रवतरी ने, लहेशे ते पण मुक्ति जी ॥ ७ ॥ एहवा शि-यल तणे श्रधिकारे, चंद तणा गुण गायाजी ॥ इणि परे जे पाले ब्रह्मचर्यवत, ते लहे सुख सवायां जी ॥ ० ॥ अर्थ ।। शिवमाखा प्रमुख बीजी साध्वीठं अनुत्तर विमान वासी देवगित पाम्यां. त्यांथी चवी मह विदेहमां अवतरीने मुक्ति प्राप्त करशे ॥ ७ ॥ एवी रीते शियख व्रतना अधिकारने विषे चंद राजाना गुणनी स्तवना करी. ए प्रमाणे जे जे जीवो ब्रह्मचर्य व्रत पाखशे तेर्ज बीजा करतां सवायां सुख मेखवशे.०

नव वाडे करी शील जे राखे, जे विमलाचल फरसेजी ॥ ते नर चंद समोवड थइने, शांति सुधा आकर्षे जी ॥ ए ॥ श्री श्री चंद तणा गुण गाइ, रसना पावन कीधी जी ॥ शीलव्रत हट करवा कारण, त्रविने शिक्षा दीधी जी ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ नववाड करीने जे ब्रह्मचर्य व्रत पाले तथा जे सिट्य गिरिराजने फरसे ते प्राणी चंद राजानी जेवो थड़ शांत रस रूपी श्चमृतनुं श्चाकर्षण करे. श्चजरामर श्वाय ॥ ए ॥ ए प्रमाणे चंद राजाना गुण गाइने श्चा जिव्हा पवित्र करी तेमज जब्य जीवोने पोतानुं शियल व्रत दृढ करवा माटे हितशिक्षा श्चापी.

कोइ सुकविए चरित्र सुणीने, मुज हांसि मत करजो जी ॥ होय अध्यानित पद जो एहमां, ते सज्जन छक्तरजो जी ॥ ११ ॥ नही परि-चय संयोजन गतिमां, मुज किव हाथे त्रीमा जी ॥ मारा मनथी में तो कीधी, जेहवी बालक क्रीडा जी ॥ ११ ॥

श्रर्थ ॥ कोइ पण जत्तमं कि श्रा चिरत्र सांजातीने, कृपा करी मारी हांसि करशो नहीं। परंतु जो तेमां कोइ श्राचित पद केहेवायां होय तो तेनो सुधारीने वांचवा पुर्वक जद्धार करजो ॥ ११ ॥ जत्तम किवमां होय तेवी भारामां, वाक्य रचना, पदलालित्यता, श्रर्थ गौरवता श्रादि लाववानी शक्ति नथी। मारी किवता ते सारा किवनी दृष्टिमां हांसि जेवी हे. तो पण जेम बालक कीडा करे तेवी रीते मारा मनश्री में श्रा रचना करी हे. ॥ १९ ॥

जे में मोटाना गुण गाया, एइज लाज मुज मोटो जी ॥ निंदे जो कोइ मुज कविताइ, तो पण नथी कांइ तोटो जी ॥ १३ ॥ पामे संपद पावन थाये, चरित्रनो सांजलनारो जी ॥ न होये केम तो शुचि कहेणारो, सुगुण हारद श्रवधारो जी ॥ १४ ॥

श्चर्य ॥ में जे कांइ कर्युं ने ते मात्र जत्तम पुरुषना गुण्नी स्तवना करी ने अने तेज खाज मने मोटो थयो ने, एटखं नतां जो कोइ मारी कवितानी निंदा करहो तो तेमां मने कांइ नुकशान नथी ॥ १३ ॥ जो आ चरित्रनो सांजलनारो संपत्ति पामे अने पवित्र थाय तो पन्नी आ चरित्रनो केंद्रेनारो केम पवित्र न थाय अथवा संपत्ति न पामे ? आ वात-हार्दने गुण्वंत पुरूषो मनमां अवधारजो ॥ १४ ॥

काचा पाका महा रूषिना ग्रण, गाता कहो कोण लाजे जी ॥ वांकी तो पण घडंनी पूपा, लागी जुल ते जांजे जी ॥ १५ ॥ तप गञ्चना यक ग्रण गण लायक, विजयसेन सुरींदा जी ॥ प्रति बोध्यो जेणे दिल्लीनो पति, श्रकवरशाह जूमींदाजी ॥ १६ ॥ श्चर्य ॥ महर्षिना गुणो काची रीते के पाकी रीते गावामां कोने खजा आवे ? कोइने आवे नही. गमे तेवी वांकी घडंनी रोटली होय परंतु जूल लागी होय तो ते खाधाश्री जूल मटामे हे ॥ १५ ॥ श्चनेक गुणोना समूहनी युक्त अने तप गञ्चना नायक-आचार्य श्री विजयसेन सूरि श्रयाः जेणे चक्रवर्त्ति समान दिश्चीना पति श्चकब्बर बादशाहने प्रति बोध पमाडयो. ॥ १६ ॥

तास चरण शत पत्र सुमधुकर, कीर्त्ति विजय जवकाया जी ॥ तास शिष्य किव कुल मुख मंगन, मानविजय किव रायाजी ॥ १९ ॥ तस पद सेवक मित श्रुत सागर, लिब्ध प्रतिष्ट कहाया जी ॥ पंग्तित रूप विजय गुण गिरूश्रा, दिन दिन सुयश सवायाजी ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ तेमनां चरण कमलने विषे उत्तम ज्ञमर समान श्री कीर्त्तिं विजय उपाध्याय थया. तेमना शिध्य, किव कुलना मुखना शृंगार रूप श्रीमानविजय किव राय थया ॥ १७ ॥ तेमना चरणना उपासक, मित ज्ञान श्चने श्चत्रज्ञानना सागर तथा लिब्धिए करी प्रतिष्ठित श्चने गुणमां गरिष्ठ एवा पंमित श्रीरूप विजयजी थया. जेमनो उत्तम यश दिवसे दिवसे सवायो थयो. ॥ १०॥

तेहना बालक मोहन विजये, श्राठोतरसो ढाखे जी ॥ गायो चंद च-रित्र सुरंगो, चरित्र वचन परनाखे जी ॥ १ए ॥ कीघो चोघो छन्नास संपूरण, ग्रण वसु संयम (१५०३) वर्षे जी ॥ पोस मास सित पंचमी दिवसे, तरणिज वारे हर्षे जी ॥ १० ॥

श्चर्य ॥ तेमना शिष्य मोहन विजयजीए एकसोने श्चाठ ढाखे करी, पूर्वना चरित्रने श्चनुसारे श्चा चंद राजानुं जत्तम चरित्र गायुं ॥ १ए ॥ श्चा चोत्रो जक्षास हर्ष सहित संवत १९०३ ना पोस सुदी एश्चने रविवारना रोज संपूर्ण थयो ॥ १०॥

राज नगर चोमासुं करीने,गायो चंद चरित्र जी ॥ श्रवण देइश्रोतासांजलहो, याहो तेह पवित्रजी ॥ ११ ॥ जे कोइ जणहो गणहो सुणहो, तस घर मंगल माला जी ॥ दिन दिन वधती वधती थाहो, निर्मल कीर्त्ति विद्याला जी ॥११॥

श्चर्य ॥ राजनगर (अमदावाद) मां चातुर्मास करीने चंद राजानुं चरित्र वर्णव्युं. जे श्रोता ध्यान पूर्वक सांजलको ते पवित्र थको ॥ २१ ॥ जे कोइ स्त्रा चरित्र जाणको गणको तथा सांजलको तेने घेर मंगल माला थको. स्त्रने तेनी कीर्त्तिं दिवस दिवसे वधती वधती निर्मल स्त्रने विस्तीर्ण थको. ॥ २१ ॥

> श्रिषकुं वेतुं जे कदे वाणुं, मिन्ना फुकड तेह जी॥ ध्रुव जेम श्रचल दो जो धरणि तल, चंद तणा ग्रण एहजी॥ १३॥

श्चर्य ॥ त्या चरित्रमां माराधी जे कांइ न्यूनाधिक कहेवायुं होय ते संबंधी हुं मिल्लामि छक्कड मागुं हुं; श्चने चंद राजाना गुण्नुं स्चा चरित्र पृथ्वी छपर ध्रुवना तारानी जेम स्वचल रहेजो एम रहुं हुं. ॥१३॥

॥ कखस ॥

एचरित्र सागर हुंती निरखी, यत्न सुर गिरि श्राचर्यों, चंद नृप संबंध शशि जेम, श्रतिही प्रजाकर उद्धयों ॥ श्री विजय केम सुरींद राज्ये, करी परम गुरू वंदना, कवि रूप सेवक मोहन विजये, वर्णव्या गुण चंदना ॥ १ ॥

अर्थ ।। पूर्वना चरित्ररूप महा सागरमांथी यत्न रूपी मेरू पर्वत वडे मंथन करी, चंद राजाना आ चरित्र रूपी अर्यंत प्रकाश कर, चंद्रने प्राप्त कर्यो. श्री विजय क्रमा सूरिना शासनमां परम कृपावंत गुरू श्री रूपविजयजीने वंदना करी मोहन विजयजीए चंद रायना गुणनुं वर्णन कर्युं. ॥ १ ॥

इति श्री नोहन विजय विरचिते चंदचरित्रे प्राकृत प्रबंधे चंद प्रकटन १, वीरमती वध १, श्राजा गमन ३, संयम प्रहण ४, शिव पद प्राप्ति ५ रूपाजिः पंचितिः कलाजिः समर्थितोऽयं चतुर्थोह्नासः संपूर्णः॥

आ रासमां प्रथम ज्ञ्ञासमां ढाल एकवीश गाथा ५१४, दितीय ज्ञासमां ढाल त्रेवीस, गाथा ५०५, तृतीय ज्ञासमां ढाल एकत्रीस, गाथा ५५३ श्रमे चतुर्थ ज्ञ्ञासमां ढाल तेत्रीस गाथा ५२७, सर्व मली ज्ञास चारमां ढाल एकसो श्राम, गाथा १६७ए हे.

॥ श्री चंदराजानो रास जाषांतर सहित ॥

।। समाप्त ॥